ॐ खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः। शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम् ॥
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां । यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम् ॥
श्री गणेशाय नमः
विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां । कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम् ।
हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखांश्चापं, गुणं तर्जनीं बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे ॥
सर्वमङ्गला पञ्चाङ्गम्
जगल्लग्नम् २।२३।४४
राजा-चन्द्रमा
वर्षा- ०७
मंत्री-गुरु
धान्य- ०५
आर्द्राप्रवेशलग्नम् ८।२४।२४
प्रकाशक
सर्वमङ्गला अध्यात्मयोग विद्यापीठ सह चिदात्मन वेद विज्ञान अनुसंधान संस्थान
सिद्धाश्रम आदिकुम्भस्थली सिमरियाधाम, मिथिलाञ्चल, बेगूसराय, बिहार
निदेशकः- पं. श्री शिवेन्द्र झा, संपादकः- पं. श्री घनश्याम झा, सह संपादकः- पं. श्री विजय कुमार झा,
गणितकर्त्ताः- पं. श्री मुक्ति कुमार झा, पं श्री विनोदानन्द झा, पं० श्री शम्भु कुमार मिश्र
प्रवर्त्तक - स्व. जानकी देवी, स्व. विभा देवी ।
संरक्षक- संत शिरोमणि करपात्री अग्निहोत्री परमहंस
स्वामी चिदात्मन जी महराज
सह संरक्षक- स्वामी रवीन्द्र जी ब्रह्मचारी
विक्रमसंवत्-२०७९-२०८०
शालिवाहन शक- १९४४-४५
लक्ष्मणसंवत्-९१३-१४, सन्-१४३०
ईस्वी सन्-२०२२-२०२३
सहयोग राशि
७५/-

॥ सर्वमङ्गला मिथिला विद्वत्परिषद् विभूति ॥

अध्यक्ष
पं० श्री रामचन्द्र झा
पूर्व कुलपति का. सिं. सं. वि. वि., दरभंगा
राष्ट्रपति पुरस्कार पुरस्कृत

उपाध्यक्ष
पं. श्री देवनारायण झा
पूर्व कुलपति का. सि०. सं. वि० वि०, दरभंगा

पं० श्री उपेन्द्र झा,
पूर्वकुलपति

पं० श्री विद्याधर मिश्र
पूर्व कुलपति
का.सि.सं.वि०वि०, दरभंगा

पं० श्री शिवाकान्त झा
पूर्व कुलपति
का.सि.सं.वि०वि०, दरभंगा

पं० श्री बौआनन्द झा
पूर्व अध्यक्ष
दर्शन विभाग

पं० श्री विद्येश्वर झा
पूर्व वेद विभागाध्यक्ष

पं० श्री सुरेश्वर झा
प्राचार्य व्याकरण विभाग

पं० श्री दिलीप झा
धर्मशास्त्र विभागाध्यक्ष

पं० श्री लक्ष्मीनाथ झा
साहित्य विभाग

पं० श्री दयानाथ झा
व्याकरण विभागाध्यक्ष

पं० श्री श्रवण चौधरी
साहित्य विभाग

१३. पं० श्री राधाकान्त ठाकुर, कुलपति केन्द्रीय वि.वि. तिरूपति
१४. पं० श्री कमलेश झा, अध्यक्ष निगमागम विभाग का.हि.वि.वि.वाराणसी
१५. पं० श्री रामजीवन मिश्र, ज्योतिष विभागाध्यक्ष का.हि.वि.वि. वाराणसी
१६. पं० श्री सुधाकर मिश्र, वेदांग विभाग, सम्पूर्णानन्द संस्कृत वि.वि. वाराणसी
१७. पं० श्री सुन्दरनारायण झा, वेद विभाग ला.ब.शा.रा.सं.विद्यापीठ नई दिल्ली
१८. पं० श्री महेश झा, न्याय विभागाध्यक्ष सदाशिव परिषद जगन्नाथपुरी उड़ीसा
१९. पं० श्री सुरेन्द्र मोहन मिश्र, कुरुक्षेत्र वि.वि. हरियाणा
२०. पं० श्री विनय कुमार झा, वेद विभागाध्यक्ष का.सि.सं.वि.वि. दरभंगा
२१. पं० श्री मनोज कुमार झा, प्राचार्य रा.सं.म.विद्यालय पटना
२२. पं० श्री परमानन्द झा, प्राचार्य नई दिल्ली
२३. पं० श्री रूद्रानन्द झा, व्याकरण विभागाध्यक्ष बरौनी
२४. पं० श्री शशिधर झा, ज्योतिष विभागाध्यक्ष रोसड़ा
२५. पं० श्री गंगाधर ठाकुर, साहित्य विभागाध्यक्ष खम्हार बेगूसराय
२६. पं० श्री सच्चिदानन्द पाठक, पूर्व प्राचार्य तियाय
२७. पं० श्री नित्यानन्द मिश्र, प्रधानाध्यापक भवानीपुर
२८. पं० श्री अवधेश कुमार झा, प्राध्यापक समस्तीपुर
२९. पं० श्री सत्यनारायण मिश्र सत्य, समस्तीपुर

सर्वमङ्गला विद्वत्परिवार

१. पं० श्री विद्यानन्द मिश्र, समसीपुर
२. पं० श्री सुखदेव पाठक, बेगूसराय
३. पं० श्री रामनारायण झा, रूदौली
४. पं० श्री वरूण पाठक, सर्वमंगला काली धाम अहियापुर
५. पं० श्री दिनेश कुमार झा, सर्वमंगला काली धाम अहियापुर
६. पं० श्री विकाश मिश्र, सर्वमंगला काली धाम अहियापुर
७. पं० श्री रंजन शास्त्री, मुज्जफरपुर
८. पं० श्री नारायण झा, सिद्धाश्रम
९. पं० श्री दीपक झा, रानी
१०. पं० श्री रत्नेश्वर पाठक, मालीपुर
११. पं० श्री धीरेन्द्र झा, रूदौली
१२. पं० श्री सनातन भारद्वाज, श्रीधाम बरौनी
१३. पं० श्री राम भारद्वाज, सिद्धाश्रम
१४. पं० श्री रमेश मिश्र, सिद्धाश्रम
१५. पं० श्री लक्ष्मण भारद्वाज, गुरूधाम रूदौली
१६. पं० श्री साकेत कुमार झा, रूदौली
१७. पं० श्री करूणाकर झा, मटिहानी
१८. पं० श्री पद्मनाभ झा, रसलपुर
१९. पं० श्री चन्दन ठाकुर, मेघौल
२०. पं० श्री सुनील मिश्र, चेरियावरियारपुर
२१. पं० श्री रंधीर झा, मंझौल
२२. पं० श्री प्रकाश मिश्र, गढ़पुरा
२३. पं० श्री गौरीशंकर पाठक, सर्वमंगला काली धाम अहियापुर
२४. पं० श्री राजेश कुमार झा, सर्वमंगला कालीधाम अहियापुर
२५. पं० श्री राजकुमार झा, रसीदपुर
२६. पं० श्री सुभाष कुमार पाठक, गौड़ा
२७. पं० श्री सतीश पाठक,

अखिल भारतीय सर्वमङ्गला परिवार

१. स्वामी सुलभानन्दजी, पटना
२. स्वामी नागेन्द्रानन्दजी, पटना
३. स्वामी अभयानन्दजी, पटना
४. स्वामी उमेशानन्दजी, पटना
५. स्वामी माधवानन्दजी, प्रयाग
६. स्वामी गंगानन्दजी, हरिद्वार
७. स्वामी प्रेमतीर्थजी, हरिद्वारा
८. स्वामी उमेशानन्दजी, पुनौराधाम
९. स्वामी सत्यानन्दजी, आश्रम
१०. स्वामी दिनेशानन्दजी, आश्रम
११. स्वामी संजयानन्दजी, आश्रम
१२. स्वामी सदानन्दजी, आश्रम
१३. स्वामी अखिलेश्वरानन्दजी, सीतामढ़ी
१४. स्वामी सुदर्शनानन्दजी, सहरसा
१५. स्वामी प्रद्युम्नानन्दजी, शिवहर
१६. स्वामी निर्मलानन्दजी, शिवहर
१७. स्वामी नन्दकिशोरानन्दजी, शिवहर
१८. स्वामी ध्रुवानन्दजी. राजगीर
१९. स्वामी शिवकुमारानन्दजी, राजगीर
२०. स्वामी अमरेन्द्रानन्दजी, आश्रम
२१. स्वामी कौशलेन्द्रानन्दजी, आश्रम
२२. स्वामी रीतेश्वरानन्दजी, आश्रम
२३. स्वामी राधेश्वरानन्दजी, आश्रम
२४. स्वामी नृपेन्द्रानन्दजी, आश्रम
२५. स्वामी ज्ञानानन्दजी, आश्रम
२६. स्वामी नीरंजनानन्दजी, आश्रम

पं० सं०-७७२/९४-९५
बिहार सरकार

ज्योतिष शोध केन्द्र

(ज्योतिष शास्त्र के संरक्षण, संवर्धन एवं अनुसंधान में कार्यरत स्वयं सेवी संस्था)
बलभद्रपुर, लहेरियासराय, दरभंगा (बिहार)– ८४६००१

पं विश्वनाथ झा "शास्त्री"
निदेशक सह सचिव

पत्रांक : ....
दिनांक : ....

२७. स्वामी विजयानन्दजी, आश्रम
२८. स्वामी उमेशानन्दजी, आश्रम
२९. स्वामी विनयानन्दजी, आश्रम
३०. स्वामी रोचकानन्दजी, आश्रम
३१. श्री सुरेन्द्र चौधरी, अध्यक्ष
३२. श्री राजकिशोर प्रसाद सिंह, महासचिव
३३. श्री दिनेशप्रसाद सिंह, सचिव

श्री काशी विद्वत्परिषद:
वाराणसी

पत्रांक ....
दिनांक : ....

शुभाशीर्वादः ।

३४. श्री नवीन प्रसाद सिंह, कोषाध्यक्ष
३५. श्री राजीव कुमार सिंह
३६. श्री सुशील चौधरी
३७. श्री नीलमणि सिंह
३८. डा० अंजनी प्रसाद सिंह, अधिवक्ता पटना उच्च न्यायालय
३९. श्री इंदु भारती जी, लखनऊ
४०. श्री प्रेम कुमार

ॐ मङ्गलाचरण ॐ

सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके । शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणि नमोऽस्तुते ॥
गुरूभ्यश्च ग्रहेभ्यश्च मया बद्धोऽयमंजलिः । प्रसन्नमनसस्तेन सत्यां कुर्वन्तु भारतीम् ॥
स जयति सिन्दुरवदनो देवो यत्पादपङ्कजस्मरणम् । वासरमणिरिव तमसां राशिन्नाशयति विघ्नानाम् ॥
विनायकं प्रणम्यादौ देवीं वाग्देवतां गुरुम् । संवत्सरफलं वक्ष्ये लोकानां हितकाम्यया ॥
यश्चैत्रशुक्लप्रतिपत्सु धीमान् श्रृणोति वार्षीयफलं पवित्रं । भवेद्धनाढ्यो बहुसस्यभोगी जह्याञ्चपीड़ां तनुजां च वार्षिकीम्॥
प्राप्ते नूतनवत्सरे प्रतिगृहे कुर्याद्ध्वजारोपणं स्नानं मंगलमाचरेद्द्विजवरैः कुर्य्यान्मनोवाञ्छितम् ।
ग्राह्या रौप्यसुवर्णरत्नमणयो वृद्धादिभिः पूजयेच्छ्रोतव्यं द्विजवर्यभाषितफलं श्रेयस्करं पुण्यदम् ॥
शाकस्य श्रवणात् सुपुण्यजननंसंवत्सरस्यआढ्यतां राज्ञोराजकुले जयो विजयते मन्त्री फलं बुद्धिदं ।
धान्यं धान्यपते रसं रसपतेः क्षेत्रेषु वृद्धिस्तथा सस्यं सर्वसुखं च वत्सरफलं संश्रृण्वतां सिद्धिदं ॥
धन्य ई मिथिला धाम, जतय ऐला राम भगवान। धन्य अयाची-मंडन-ज्ञान,भन विद्यापति कवि महान ॥
धन्य कुशेश्वर-विदेश्वर-सिहेंश्वर ओ अभिराम। धन्य *मछैता विषहरि *धाम,धन्य भवानी उगनेश्वर गाम ॥
धन्य मिथि आ मिथिलाधाम,धन्य धन्य विदेहरजधाम। धन्य धरा छथि सीताराम'रमण'करै छथि नमन प्रणाम ॥

-: समर्थका विद्वांस :-

डॉ. भगलु झा,प्रधानाचार्य रा.औ.गौ.सं.महाविद्यालय,अहल्यास्थान, दरभंगा।
डॉ. सदानन्द झा, प्रधानाचार्य ज.ना.अ.ब्र.आ. महाविद्यालय, लगमा, दरभंगा।
डॉ. सीताचरण झा, प्रधानाचार्य मदनेश्वरनाथ सं.महाविद्यालय, मधुबनी।
डॉ. ईन्द्रवल्लव झा, महिया, दरभंगा ।
डॉ. बचनेश्वर झा, प्रधानाचार्य जगदम्बा संस्कृत महाविद्यालय, कोंथु।
डॉ. फणीनद्र नाथ चौधरी,लाल बहादुर शास्त्री सं. विद्यापीठ, दिल्ली।
डॉ. रतीश कुमार झा, लाल बहादुर शास्त्री सं. विद्यापीठ, दिल्ली।
डॉ. दिगम्बर मिश्र उपाचार्य रा.औ.गौ.सं.महाविद्यालय,अहल्यास्थान, दरभंगा।
डॉ. लम्बोदर प्रतिहस्त, प्रा.स.ना.सं.महाविद्यालय, छतौनी मधुबनी।
श्री. रतिकान्त झा,प्रा.शं.कु. वेदपाठशाला,घनश्यामपुर, दरभंगा।
डॉ. राधेश्याम झा,ज.ना.उ.ब्र.सं.महाविद्यालय, लगमा, दरभंगा ।
डॉ. रतन जी झा,गन्धराईन अन्धराठाढ़ी, मधुबनी।
डॉ. विनय कुमार मिश्र, सिरहुल्ल, दरभंगा ।
डॉ. रिपुसूदन झा, महेशवाड़ा, मुजफ्फरपुर।
डॉ. संतोष कुमार पाठक, रहिका, मधुबनी।
श्री गिरीश कुमार झा वारसाम अन्धराठाढ़ी मधुबनी।
श्री दुर्गानन्द झा,त्रीनेत्र ज्योतिष केन्द्र, रायपुर(छ.ग.)।
श्री चतुरानन्द झा, मछैता, दरभंगा ।
श्री धीरज कुमार मिश्र, सकरी, दरभंगा ।

श्री. चन्द्रकान्त झा, बुढ़ानाथमंदीर, भागलपुर।
श्री. मोहन जी झा,मछैता, दरभंगा।
श्री. जयकिशोर झा, कंसी, दरभंगा।
श्री. रंजीत झा, कैथवार, दरभंगा ।
श्री. सरोज कुमार झा, कैथवार, दरभंगा ।
श्री. रोहित मिश्र, पोखरभिण्डा, दरभंगा ।
श्री गंगाराम झा, शास्त्री नगर, कोलकाता।
श्री. सज्जन कुमार झा, रसियारी, दरभंगा
श्री. रामचन्द्र झा, शम्भुआर, मधुबनी ।
श्री. गोविन्द कुमार झा, मछैता, दरभंगा ।
श्री. गोपाल कुमार झा, मछैता, दरभंगा ।

कलिकसंवत् ५१२३, शकाब्द १९४४-४५,
विक्रमसंवत् २०७८-७९, फसली सन्- १४३० साल,
लक्ष्मणसंवत् ९१३-१४, खृष्टाब्दः २०२२-२३ ई.

गुरूमध्यमानेन् :-अनलनाम संवत्सर फलम् ॥
दुर्भिक्षं जायते घोरं धान्योषधि प्रपीडनम् । अनले चानिलो वाति कथितं च तव प्रिये॥

वर्षेश (राजा) चन्द्रफलम्

वृक्षाः सद्बलतां प्रयान्ति विविधा स्फीताभवेन्मेदिनीगावः क्षीरयुता द्विजाबहुधनैरून्मत्तचित्तोध्दृताः।
शस्यानां च विवर्द्धनं जलभयं शीतांशु वर्षाधिपे रोगानां च विनाशनं नरपतिर्दीर्घायुराखण्डले॥

संवाहक (मन्त्री) गुरूफलम्

मेघोऽनेकजलं ददातिबहुशो विप्राः सदा सुस्थिराः पृथ्वी शस्यसमाकुला च नियतं लोकाः प्रमोदाकुलाः।
राजानः सचिवोपकारनिरताः प्रोद्भूत मोदकुलाः कन्दर्पातिकथा प्रवृत्तिमनसाः सम्वाहके चेद् गुरौ॥

पालक - मंगलफलम्

वायुर्वाति महीरूहस्थपतनं तीक्ष्णः सदाहर्पतिः मेघाः निर्जलतां प्रयान्ति विपदो लोकानतिक्रामति।
नाशं यान्ति गजाश्वसिंहमहिषीगोजातयः सर्वदा लोका मन्मथरूग्विमर्दविकलाः क्षोणीसुते पालके॥

मेघेशरविफलम् :- तोयहीनाः सदा मेघा स्वल्पशस्या मही रवौ ॥
तोयेशचन्द्रफलम् :- तोयसंघयुता चन्द्रे शस्यसंघयुता मही ॥

शस्येशशनिफलम्-शनौ शस्याधिपे शस्यनाशस्तोयविशोषणम्। दुःखैर्व्याकुला पृथ्वी गोस्त्रीगर्भविनाशनम्॥
लोकेशमंगलफलम्-कुजे कुचैलिनः क्रूराः कुत्सिताश्च कुचेष्टिताः। धन-धर्म-क्रिया-हीन नित्योत्सवरता नराः॥
संवर्त्तकपुष्करफलम्:-पुष्करे चित्रितं विश्वं चित्रिता जलदाः सदा। चित्रिता तु भवेद्वृष्टिःशस्यवृद्धिस्तु चित्रता॥

* वर्षादिविश्वा *

वर्षा	०७	प्रजावृद्धि	१५	आलस्य	१३	उत्सव	१३	फलोत्पत्ति	०९	जन्म	११
धान्य	०५	प्रजाक्षय	१५	उद्यम	११	पाप	०७	रोग	०९	चौरभय	०३
शीत	०५	विग्रह	११	शान्ति	१३	पुण्य	११	रोगक्षय	०७	चौरोपपशम	०९
तृण	१३	क्षुधा	१३	क्राथ	११	रसादि	०९	आचार	०७	अग्निभय	१५
उष्ण	१७	तृष्णा	०५	दण्ड	०३	उग्र	०३	व्यभिचार	१५	अग्निनाश	०५
वायु	१३	निद्रा	०५	मैत्री	०१	रसोत्पत्ति	०३	मरण	११	बिषभय	१३

* मेषादिराशीनां सफलमायव्ययचक्रम् *

राशिः	मेषः	वृषः	मिथुनः	कर्कः	सिंहः	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनुः	मकरः	कुम्भः	मीन
आयः	१४	०८	११	०५	०८	११	०८	१४	०२	०५	०५	०२
व्ययः	०२	११	०८	०८	०२	०८	११	०२	११	०५	०५	११
फलम्	जय	मानं	मानं	रोगः	लाभ	मानं	मानं	जयः	रोगः	लाभः	लाभः	रोगः

-: पञ्चाङ्ग देखने की विधि :-

इस पञ्चाङ्ग में सर्वप्रथम दण्डात्मक दिनमान उसके बाद तिथि, सूर्यादि दिन का नाम एवं तिथि का दण्डात्मक मान तिथि का घंटा, मिनट उसके बाद नक्षत्र का नाम एवं दण्ड पल एवं घंटा मिनटात्मक मान उसके बाद पूर्वार्ध करण का नाम एवं दण्डात्मक मान उसके बाद मेषादि राशि में चन्द्रमा के भुक्तकाल का दण्डात्मक एवं घंटात्मक मान उसके बाद क्रमशः घंटा मिनटात्मक सूर्योदय एवं सूर्यास्त तथा मिश्रमान कालिक स्पष्टराश्यादि सूर्य का भोगकाल एवं नेपाली एवं अंग्रेजी दिनांक तत्पश्चात् मुहूर्त्त पर्वादि दिये गये हैं। यथा–श्रावणकृष्ण १ गुरूवार को प्रतिपदातिथि का दण्डात्मक मान ४१:२१,रात्रि ०९:४६ तक,नक्षत्र उ.षा. का दण्डपल ४२:४४, रात्रि १०:२० तक, वैधृति योग का दण्डात्मक मान १३:२२,बालव करण १४:४० दण्डात्मक मान ००:३०,चन्द्र का भुक्त धनु राशि में प्रातः ०५:२६ या.,सूर्योदय ०५ बजकर १४ मिनट पर तथा सूर्यास्त ०६ बजकर ४६ मिनट पर। सूर्य मिथुन राशि के २७ अंश ३९ कला ४५ विकला पर भोग कर रहा है,ऐसा समझना चाहिए। नेपाली श्रावण मास के ३० गते तथा अंग्रेजी दिनांक १४ जुलाई समझना चाहिए। उसी पंक्ति में धर्मशास्त्रादि दिया गया है। इस पञ्चाङ्ग के निचले भाग में मिश्रमानकालिक राश्यादि दैनिक स्पष्ट ग्रह एवं दण्डपलात्मक मिश्रमान दिया गया है। तदन्तर दैनिक लग्न सारणी दी गई है । पंडितों को सुलभता के लिए अर्धप्रहरा का घण्टात्मक मान दिया गया है। सुविधा की दृष्टि से प्रतिदिन सूर्योदयकालिक लग्न का समाप्तिकाल मानक समय के अनुसार दिया गया है। साथ ही उपयोगी विविध विषय भी दिये गये हैं।

इस पञ्चाङ्ग में सर्वत्र घट्यादिमान (दण्ड पल) सौरमान (धूपघड़ी अर्थात् स्पष्टसूर्य की घड़ी) के अनुसार दिये गये है। किन्तु उसमें देशान्तर एवं वेलान्तर संस्कार के पश्चात ही घण्टात्मक मान दिये गये हैं। संस्कार की विधि निम्न है। जैसे दिनांक ३१:१०:२०२२ ई.। छठिव्रत का प्रातः कालिकार्धदान। मिश्रमान ४३:३८। ६० दण्ड में इसे घटायें तो १६:२२ बचेगा, जो सूर्योदय का घट्यादि मान है। इसे ४ गुणित करके १० से विभक्त करने पर सूर्योदय का घण्टात्मक सौरमान ०६:३३ मिलता है। इसमें वेलान्तर+१६मि:००से जोड़ें (अर्थात्-१६मि:००से घटायें) तों ६:१७ मिलेगा,जो स्थानीय मध्यम् समय (LMT) का सूर्योदय है। सीतामढ़ी का देशान्तर+०९मिनट४८सेकण्ड है, क्योंकि सीतामढ़ी मानक समय के रेखांश ८२:३०ं से ०२:४२ पूर्व है। अतः स्थानीय मधयम सूर्योदय में ०९मिनट४८सेकण्ड जोड़ने पर भारतीय मानक समय का सूर्योदय ०६:२८ घण्टादि प्राप्त होता है। (दरभंगा का देशान्तर+१३मिनट३६सेकण्ड है, क्योंकि दरभंगा मानक समय के रेखांश ८२:३०ं से ३:२४ पूर्व है। अतः स्थानीय मध्यम् सूर्योदय में १३मिनट३६सेकण्ड जोड़ने पर भारतीय मानक समय का सूर्योदय ०६:३१ घण्टादि प्राप्त होता है। अतः यह दरभंगा का सूयोदय प्राप्त होता है)। (सिमरिया का देशान्तर+१३मिनट५६सेकण्ड है, क्योंकि सिमरिया मानक समय के रेखांश ८२:३०ं से ३:२९ पूर्व है। अतः स्थानीय मध्यम् सूर्योदय में १३मिनट५६सेकण्ड जोड़ने पर भारतीय मानक समय का सूर्योदय ०६:३१ घण्टादि प्राप्त होता है। अतः यह दरभंगा का सूयोदय प्राप्त होता है)। यह सौरपक्षीय सूर्य के केन्द्र का वास्तविक उदयमान है। सूर्य की पहली किरण केन्द्रोदय से ६४ सेकण्ड पहले ही दिख जाती है। वास्तविक सूर्योदय से प्रायः २ मिनट पहले ही वायुमण्डल में अपवर्तन के कारण सूर्यदर्शक तक किरण पहुच जाती है। अतः वास्तविक सूर्योदय से पहले ही भ्रामक सूर्योदय दिखता है, जो आधुनिक विज्ञान पर आधारित दृऽक्पक्षीय पञ्चाङ्ग का सूर्योदय है। फलित के उत्पादक वास्तविक सूर्यादि ग्रह हैं, आभासीय ग्रह नहीं। अतः ज्योतिष में सौरपक्षीय स्पष्टगह ही मान्य हैं।

॥०॥ वर्षफल २०७९-८० ॥०॥

एहि वर्षक नाम आनन्द संवत्सर अछि। जिनकर राजा **चन्द्र** आ मंत्री **गुरु** अछि। पालक **मंगल** आ मेघाधिप **रवि** अछि। तोयाधिप **चन्द्रमा** आ शस्याधिप **शनि** अछि। लोकाधिप **मंगल** आ **संवत्सर** नामक मेघ अछि। जकर फलाफल वर्षा-७ आ धान्य-५ होएत। वर्षलग्न आ जगल्लगन **दुनू** कुण्डलीक ग्रहक अनुसार देश-विदेश दुनू जगह तामसी प्रवृत्तिक लोकक बहुल्यता रहत। देशक दुष्ट आ नीच प्रवृत्तिक लोकक द्वारा अपराध सँ समय-समय पर प्रजामे डरक भय आ तनाव बनल रहत। अन्य प्रकारक नव-पुरान रोग सँ जनता त्रस्त रहत। व्यापारि लोकनि के कठिन परिश्रम केलो उपरांत आयमे न्यूनतम वृद्धि होएत। देशमे चोरी, डकैती, अपहरण, छिनैती आ दुष्कर्म आदि कृत्यक बहुल्यता देखल जाएत। देशक सीमा पर तनाव आ समय-समय पर अप्रिय घटना सेहो देखल जाएत। देशक लोग द्वारा ओछ राजनीति सँ देशक सैन्यबलक न्यूनता आ तामस देखल जाओत आ देशक मान-सम्मान पर आघात पहुँचत। देश मे शिक्षा, यातायात, नव-नव तकनीकि सँ सर्म्बधित अनेक क्षेत्रमे राज्य सरकार आ केन्द्र सरकार द्वारा विचार विमर्श कएल जाएत आओर एकरा विकसित कएल जाएत। केन्द्र सरकार द्वारा गरीब, किसान आ गरीब लोकनि के लेल अनेक तरहक लुभावन प्रस्ताव पारित कएल जाएत। पीयर धातु आ विदेशी मुद्रामे उतार-चढ़ावक स्थिति बनल रहत। पेट्रोल, डीजल, करोशन तेल आ तरलीय पदार्थक दाममे समय-समय पर वृद्धि होएत रहत। देशक कोषमे कमी होएत। जगल्लगन मिथुन होबा सँ सदा युद्धक स्थिति बनल रहत। देशक पूर्व भागमे कृषिक क्षति, देशक उत्तर-दक्षिण भागमे वर्षाधिक्य, पश्चिम भागमे औसतन वर्षा,जलन आ ऊपज अधिक होबाक सम्भावना रहत। देशक मध्य भागमे औसतन उपज होएत। पशुमे पीड़ा अधिक देखल जाएत।

मिथुने बहुलं युद्धं पूर्वस्यां धान्या नष्टता ।
उदग्दक्षिणयोः मेघा बहवोधान्य संग्रहः ॥
पश्चिमायां स्वल्प मेघाः छत्रभंगः च विग्रहः ।
मध्यदेशेर्घ निष्पतिः चतुष्पदसरोगता ॥

॥०॥ सूर्य आर्द्रानक्षत्र प्रवेशक सामान्य फल ॥०॥

एहि वर्ष आषाढ़शुक्ल चौठ उपरांत पंचमी तिथि वृहस्पति दिन अश्लेषा उपरांत मघा नक्षत्र, हर्षण योग, ववकरण, सिंहराशि, वृषलग्न रात्रि ०२:४९ मे सूर्य आर्द्रा नक्षत्र मे प्रवेश करत । तिथि, नक्षत्र, योग, करण आ आर्द्राप्रवेशक लग्नक अनुसार देशक राजा उच्च स्तरीय राजनेताक व्यवहार सँ प्रजामे असंतुष्टि, चोरी-डकैती, अपहरण, व्यभिचार, परस्पर मनमुटाव, अनेक प्रकारक रोग पीड़ा, कष्ट सँ प्रजामे भय आ अशांति बनल रहत । उच्च स्तरीय राजनेताक वियोगक विशेष सम्भावना, उच्च स्तरीय वर्ण वाले जैसे ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि राज्य आ केन्द्र के व्यवस्था सँ पीड़ित होबाक उपरांत स्वकाज कऽ सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करता । गरजक संग वर्षा होएत । धानक उपज बढ़िया होएत । देशक सीमावर्ती देश सँ वाद-विवादक स्थिति बनल रहत ।

॥०॥ मासफल २०७९-८० ॥०॥

श्रावण–एहि मासमे पाँच वृहस्पति आ पाँच शुक्र रहबाक कारण बहुत शुभ फलकारक अछि । रवि १७ जुलाई के कर्क संक्रान्ति किछु भारी पड़त। गेहूँ, चना, जौ, चावल आदि खाद्यान्न आ गुड़, रस पदार्थमे तेजीक प्रभाव रहत। २० जुलाई कऽ पुष्य नक्षत्रक सूर्य मे बढ़िया वृष्टि होबऽक योग प्राप्त भऽरहल अछि। २२ जुलाई कऽआसन्न चन्द्रमा-मंगलक अंशात्मक युति उत्तम वृष्टि कारक अछि। सावनक अमावास्याक फल सेहो शुभफल प्रदान कऽ रहल अछि। शुक्लपक्षमे श्लेषा नक्षत्र का सूर्य ३ अगस्त कऽ आएत । एहि साधारण वृष्टिक योग प्राप्त भऽ रहल अछि । कृतिका नक्षत्रक मंगल गहूम, मूँग, चाउर, राई, मोसरी, तिल, तेल, सरिसो, घी, चाँदी, सूती कपड़ा मे तेजीक योग्य अछि । अमावस्या के वक्री भेल गुरु जनता के कोनो नया कर लगवा सकैत अछि । अनेक प्रकारक बीमारी फैलत । वर्षा साधारण होएत ।

भादव–वृहस्पति आ शनि दुनू ग्रह वक्री चलि रहल अछि । एहि मासमे पाँच शनि पड़ि रहल अछि आ भादवक अमावास्या सेहो शनि दिन पड़त । एहि प्रकार ई मास कई तरहक विपरीत परिस्थितिक सृजन करत । जार-बुखार सँ सर्म्बधित नव-नव बिमारी फैल सकैत अछि । सामान्य जनता के अनेक तरहक परेशानीक सामना करऽ पड़त । रोगाणु सँ युक्त संक्रामक बिमारी फैला कऽ धन-जन के क्षति पहुँचायत । मघा नक्षत्र सिंह राशिक सूर्य संक्रान्ति १७ अगस्त बुध दिन फल मे खाद्यान्नक भावमे मंदी आएत। वर्षाक लेल एकर फल बढ़ियाँ अछि । रोहिणी नक्षत्रक मंगल रुई, कपास सूत वस्त्र रेशम सरिसो, तिल, तेल, लालमिर्च, हींग आ शेयर बाजार मे तेजीक दौर चलत।

आश्विन–बुध, वृहस्पति आ शनि तीनू ग्रह एक संग वक्री चलि रहल अछि । मासक पाँच रवि आ रवि दिनक अमावास्या आ शनिवारी कन्या संक्रान्ति विपरीत परिस्थिति उत्पन्न कऽ देत । अनेक तरहक बिमारी फैलत आ दैवी-प्राकृतिक आपदा सँ धन-जनक क्षति पहुँचि सकैत अछि । १४ सितम्बर के आसन्न उत्तरफाल्गुनी नक्षत्र के सूर्य मे हल्की सँ साधारण वृष्टिक योग प्राप्त भऽ रहल अछि । चना, गहूम, जौ, चाउर आदि अन्नमे तेजी चलत । रुई, कपास क भाव पहिले सस्ता भऽ कऽ फेर महँगा भऽ जाएत । घी, गुड़, चीनी मे तेजी बनल रहत।सोना, चाँदीक भाव सम चलत। शेयर बाजारमे तेजीक रुख बनल रहत। शुक्लपक्षक २८-२९ सितम्बर के आसन्न तेज हवा अथवा तूफानक संग अत्यधिक पानि होएबाक संभावना अछि। भूकम्पादि, समुद्री तुफानक सम्भावना बनि रहल अछि । मासक अन्तमे शेयर बाजार नरम परऽ लागत ।

कार्तिक–मासमे पाँच मंगल, मंगलवारी अमावास्या कऽ सूर्य ग्रहण आ चतुर्ग्रही योग आ गुरु-शनि का वक्री चलब अनिष्टकारी परिणामक सूचना दऽ रहल अछि। भूस्खलन, भूकम्पादि, समुद्री तुफान इत्यादि दैवी-प्राकृतिक कोप सँ धन-जनक हानि संभावित अछि । कोनो अति महत्त्वपूर्ण व्यक्तिक वियोग जन्य दुःखक के सामना करऽ पड़ि सकैत अछि । पाँच सोम रहबाक कारण समय सँ पूर्व सर्दीक अभास होबऽ लागत । तुफानी वर्षा सँ फसलक क्षति भऽ सकैत अछि । गाछक सेहो क्षति पहुँचत । मंगल दिनक संक्रान्ति आगिमे घीक काज करत। गहूम, जौ, चना, नमक, मिर्चाई, धनिया, हरदि, नारियल, सोना, चाँदी, ताँबा, लोहा, जस्ताक भाव समान रहत । राहड़िक भावमे तेजी आएत । घी, तेल, इत्र इत्यादिमे हल्का तेजी रहत। धनतेरस २२ अक्टूबर के शनि मार्गी होकर विपरीत परिस्थितिके धीरे-धीरे संभालऽ लागत। शुक्लपक्ष राहत देबऽ वाला होएत । ३० अक्टूबर कऽ मंगलवक्री भऽ कऽ दुर्भिक्ष आ युद्धकारक अछि । सीमा पर युद्ध जेना वातावरण बनल रहत ।

अग्रहण–पहिने सँ चलल आबि रहल कई विपरीत परिस्थिति धीरे-धीरे सामान्य होबऽ लागत । मास मे पाँच बुध आ पाँच वृहस्पति रहबाक कारण मास मध्यम फलकारक अछि । देशक पश्चिम प्रदेशमे राजनीतिक अस्थिरताक सम्भावना बनत । सत्ताक संघर्ष छिड़त । अग्रहण मासक शुक्रोदय दुर्मिक्षकारक होइत अछि । एकर तात्पर्य होईत अछि कोनो दैवी, प्राकृतिक आपदा सँ खेतमे पड़ल फसलक क्षति होएत। वृहस्पति कऽ वृश्चिक संक्रान्ति होबाकऽ कारणे गुड़, शक्कर, लाल मिर्चाई, लाल चन्दन आ लाल रंगक अन्य सामान्य व नारियल, तिल, तेल, सूत, सरिसो के दाम मे तेजी होबाक सम्भावना अछि । सोना, चाँदी, ताँबा, जस्ता, अलसी, आ ऊनी रेशमी वस्त्र मे तेजी आओत । मकई, बाजरा, कोयला, पत्थर के दाम मे मन्दी आओत । शुक्लपक्षमे २४ नवमबर आ ५ दिसम्बर के आसन्न मौसम करवट लेत । बुध-शुक्रक अंशात्मक युति शुक्ल पक्षक आरम्भमे वर्षा करा सकैत अछि ।

पौष–मासक शुरुआतहि सँ ठंढ़ा अपन रंग देखाबऽ लागत । बादल लागऽलागत। शीत पड़ला सँ फसलके नुकसान पहुँचत। मासमे पाँच शुक्र शुभफल कारक अछि। पहाड़ पर बफबारी होएत तकर असर मैदानी भागमे सेहो देखाई देत । गहूम, चना, मटर, मक्का, कपासक दाम स्थिर रहत । सोना-चानीक दाममे तेजी आओत । गुड़, तेल, शक्कर, सरिसो के दाम मे मन्दी रहत । शुक्लपक्षमे २ फरवरीक आस-पास मौसम खराब होगा जाहिसँ वर्षा होएत आ अत्यधिक ठंड पड़बाक कारणे जन-जीवन अस्त-व्यस्त भऽजाएत। अत्यधिक ठंढ़ा पड़त ।

माघ–एहि मासमे पाँच शनि आ पाँच रवि अछि । शनि दिन अमावस आ मकर संक्रान्ति खप्पर नामक महाभयकारी योग पैदा कऽ रहल अछि । कोनो दैवी-प्राकृतिक आपदा सँ धन-जन के व्यापक क्षति पहुँचि सकैत अछि । बर्फबारी आ भूकम्पक सम्भावना बनि रहल अछि । ठंडा अस्वाभिक आ असामान्य तरीका सँ पड़त जाहिसँ जन-जीवन रुकि सकैत अछि । गहूम, जौ, चना के दाम मे वृद्धि होएत । चीनी, गुड़, तेल के दाममे कमी आओत । सोना मे तेजी आ चाँदी मे मंदी रहत । शेयर बाजारक तेजी रुकि जाएगी । मंगल मार्गी भऽकऽ सीमा पर व्याप्त सैन्य तनाव को कम करेगा ।

फाल्गुन–खूब ठंढ़ी पड़त। मासमे पाँच सोम, सोमवती अमावस्या आ सोमदिन कुम्भ सक्रान्ति रहबाक कारणे शुभफलदायक अछि । पहाड़ी इलाकामे खूब बर्फबारी होएत जाहिसँ मैदानी भागमे खूब सर्दी पड़त। ग्रहक जमावड़ा किछु- न-किछु करामात दिखा सकैत अछि । गहूम, जौ, चना, चाउर, सोना, चाँदी, ऊन आ रेशम के भाव मे मन्दी रहत । रुई, उड़द, मूँग, तेल, सरिसो, राई, सूत, नमक, मिर्चाई, किरानाक समान मे तेजी रहत। दैवी-प्राकृतिक आपदाक सम्भावना बनि रहल अछि । शुक्ल पक्षमे कोनो पैघ अगिन घटना आ विस्फोट इत्यादि सँ धन-जन को विशेषकऽ सैन्यकर्मीके क्षति पहुँचि सकैत अछि।

भाव समान रहत । राहड़िक भावमे तेजी आएत । घी, तेल, इत्र इत्यादिमे हल्का तेजी रहत । धनतेरस २२ अक्टूबर को शनि मार्गी होकर विपरीत परिस्थितिके धीरे-धीरे संभालऽ लागत। शुक्लपक्ष राहत देबऽ वाला होएत । ३ नवम्बवर कऽ मंगलवक्री भऽ कऽ दुर्मिक्ष आ युद्धकारक अछि । सीमा पर युद्ध जेना वातावरण बनल रहत ।

अग्रहण–पहिने सँ चलल आबि रहल कई विपरीत परिस्थिति धीरे-धीरे सामान्य होबऽ लागत । मास मे पाँच बुध आ पाँच वृहस्पति रहबाक कारण मास मध्यम फलकारक अछि। देशक पश्चिम प्रदेशमे राजनीतिक अस्थिरताक सम्भावना बनत । सत्ताक संघर्ष छिड़त । अग्रहण मासक शुक्रोदय दुर्मिक्षकारक होइत अछि । एकर तात्पर्य होईत अछि कोनो दैवी, प्राकृतिक आपदा सँ खेतमे पड़ल फसलक क्षति होएत। वृहस्पति कऽ वृश्चिक संक्रान्ति होबाकऽ कारणे गुड़, शक्कर, लाल मिर्चाई, लाल चन्दन आ लाल रंगक अन्य सामान्य व नारियल, तिल, तेल, सूत, सरिसो के दाम मे तेजी होबाक सम्भावना अछि । सोना, चाँदी, ताँबा, जस्ता, अलसी, आ ऊनी रेशमी वस्त्र मे तेजी आओत । मकई, बाजरा, कोयला, पत्थर के दाम मे मन्दी आओत । शुक्लपक्षमे २४ नवमबर आ ५ दिसम्बर के आसन्न मौसम करवट लेत । बुध-शुक्रक अंशात्मक युति शुक्ल पक्षक आरम्भमे वर्षा करा सकैत अछि ।

पौष–मासक शुरुआतहि सँ ठंढ़ा अपन रंग देखाबऽ लागत । बादल लागऽलागत। शीत पड़ला सँ फसलके नुकसान पहुँचत। मासमे पाँच शुक्र शुभफल कारक अछि। पहाड़ पर बफबारी होएत तकर असर मैदानी भागमे सेहो देखाई देत। गहूम, चना, मटर, मक्का, कपासक दाम स्थिर रहत। सोना-चानीक दाममे तेजी आओत । गुड़, तेल, शक्कर, सरिसो के दाम मे मन्दी रहत । शुक्लपक्षमे २ फरवरीक आस-पास मौसम खराब होगा जाहिसँ वर्षा होएत आ अत्यधिक ठंड पड़बाक कारणे जन-जीवन अस्त-व्यस्त भऽजाएत। अत्यधिक ठंढ़ा पड़त ।

माघ–एहि मासमे पाँच शनि आ पाँच रवि अछि । शनि दिन अमावस आ मकर संक्रान्ति खप्पर नामक महाभयकारी योग पैदा कऽ रहल अछि । कोनो दैवी-प्राकृतिक आपदा सँ धन-जन के व्यापक क्षति पहुँचि सकैत अछि । बर्फबारी आ भूकम्पक सम्भावना बनि रहल अछि । ठंडा अस्वाभिक आ असामान्य तरीका सँ पड़त जाहिसँ जन-जीवन रुकि सकैत अछि । गहूम, जौ, चना के दाम मे वृद्धि होएत । चीनी, गुड़, तेल के दाममे कमी आओत । सोना मे तेजी आ चाँदी मे मंदी रहत । शेयर बाजारक तेजी रुकि जाएगी । मंगल मार्गी भऽकऽ सीमा पर व्याप्त सैन्य तनाव को कम करेगा ।

फाल्गुन–खूब ठंढ़ी पड़त। मासमे पाँच सोम, सोमवती अमावस्या आ सोमदिन कुम्भ सक्रान्ति रहबाक कारणे शुभफलदायक अछि । पहाड़ी इलाकामे खूब बर्फबारी होएत जाहिसँ मैदानी भागमे खूब सर्दी पड़त। ग्रहक जमावड़ा किछु- न-किछु करामात दिखा सकैत अछि । गहूम, जौ, चना, चाउर, सोना, चाँदी, ऊन आ रेशम के भाव मे मन्दी रहत । रुई, उड़द, मूँग, तेल, सरिसो, राई, सूत, नमक, मिर्चाई, किरानाक समान मे तेजी रहत। दैवी-प्राकृतिक आपदाक सम्भावना बनि रहल अछि । शुक्ल पक्षमे कोनो पैघ अगिन घटना आ विस्फोट इत्यादि सँ धन-जन को विशेषकऽ सैन्यकर्मीके क्षति पहुँचि सकैत अछि।

चैत्र–पाथर पड़ला सँ खड़ी फसल के नुकसान पहुँचि सकैत अछि । ग्रहक जमावड़ा निकटतम राशिमे भऽकऽ अनिष्टकारी भऽ सकैत अछि । एहि मासमे किछु विपरीत परिस्थिति पैदा भऽ सकैत अछि । मीन राशिक सूर्य संक्रान्ति शुभफलदायक अछि । सभिक्ष आ सस्तीक वातावरण रहत । खाद्यान्नक भावमे मंदी रहत । तेल, घीक संग्रह केलासँ लाभ होबऽ सम्भावना अछि ।

वैशाख–सामंजस्य बनाकऽ देशके प्रगति पर लऽ जेबाक वातावरण बनत । कीड़ा-मकोड़ा, मूस इत्यादि सँ कृषि उत्पादक के क्षति पहुँचि सकैत अछि । तिल-वस्त्र, कपास, सुपारी, गहूम, अन्य खाद्यान्न, फलक भावमे तेजी रहत । एहि मासमे आँधी-तूफानक संग वर्षा होबऽक संभावना रहत। शेयर बाजारमे किछु तेजी आयत ।

ज्येष्ठ– एहि महिना सामान्य जनताके लेल कष्टकारी रहत । अग्निकांडक छोट-मोट घटना सँ सार्वजनिक सम्पत्तिक नुकसान होएत। जार-बुखार आ अन्य प्रकारक बिमारी फैलबाक सम्भावना रहत। शेयर बाजार मे मजबूती दिखाई देत। धन-जनकी प्रबल हानि सम्भावित अछि। कोनो प्रकारक महामारी सेहो फैल सकैत अछि । वर्षा होबाक सम्भावना अछि।

आषाढ़–एहि मासमे वर्षा होबाक सम्भावना अछि । खाद्यान्न सस्ता रहत । सरकार किछु चिज के निर्यंत्रित करबाक लेल कानून लाबि सकैत अछि । जार-बुखारक नव प्रकारक बिमारी भऽ सकैत अछि । वर्षा भेलासँ लाभ होयत।

॥ राशिफल २०७९-८० ॥

मेष-चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ

एहि राशिवाला जातक के वर्षक प्रारम्भमे राहु द्वितीय, केतु अष्टम, मंगल शनि दशम आ गुरू एकादश भावमे रहत । ग्रहक स्थितिक अनुसार संघर्षक बाद सफलता भेटत, परिवारमे शुभ कार्य होएत, जमिन-जायदादक खरीद-बिक्री होएत। समय-समय पर जातक के स्थास्थ्य मे कमी, पारिवारिक चिन्ता, आन्तरिक मनमुटाव, आर्थिक चिन्ता, अनावश्यक कार्यमे तथा रोगादिमे धनक खर्च होएत। प्रयास केलासँ व्यववाय मे सफलता, नौकरीमे पदोन्नति, प्रतियोगी परीक्षामे सफलात भेटत। पत्नी आ पुत्रसँ समय-समय पर मतभेद बनल रहत। अनावश्यक वाद-विवादक सम्भावना बनल रहत। माता-पिताक स्वास्थ्य उत्तम नहि रहत । विशेष कऽ वर्षक 3,4,6,8 मास खराब रहत । एकर शान्ति लेल राहु, शनि, केतु ग्रहक जप, दान केलासँ लाभप्रद होएत ।

वृष-ई, उ, ए, ओ, वा, वी, वु, वे, वो

एहि राशिवाला जातक के लेल वर्षक प्रारम्भमे राहु प्रथम, केतु सप्तम, मंगल आ शनि नवम आ दशम भावमे रहत । ग्रहक स्थितिक अनुसार धन-धान्यमे वृद्धि, पुत्रक प्राप्ति आ भाग्योदय होएत । पद प्रतिष्ठाक प्राप्ति आ स्वकाजमे सफलता भेटत । घरमे जमीन-जायदाद, गृह निर्माणक कार्य आ शुभ कार्य होएत । कठिन परिश्रम सँ शिक्षा व्यवसाय आदि मे सफलता भेटत । समय-समय पर मानसिक अशान्ति,रोगादिमे धनव्यय, अनावश्यक वाद-विवादक स्थिति आ नौकरीमे असंतुष्टि बनल रहत । समय-समय पर स्वजन आ मित्र लोकनि सँ मतान्तर होएत। विशेष कऽ वर्षक 3,5,7,10 मास खराब रहत। एकर शान्तिक लेल राहु, केतु मंगल, शनि ग्रहक जप आ श्रीदुर्गाकवचक पाठ करब लाभप्रद होएत।

मिथुन-का, की, कु, घ, ङ, छ, के, को, हा

एहि राशिवाला आ लग्नवाला जातक के लेल वर्षक प्रारम्भ मे केतु पृष्ठभाग, शनि मंगल अष्टम भाग, गुरु नवम आ राहु द्वादश भावमे रहत । शनिक अढ़ैयाक प्रभाव रहत। ग्रहक स्थितिक अनुसार स्वकाजमे अरुचि, मानसिक अशान्ति, परिवारमे आंतरिक मतभेद, स्वजन आ मित्रलोकनि सँ विचारान्तर, खरीद-बिक्री आ लेनदेन मे धोखाधड़ी, नीच प्रवृत्ति वाला लोग सँ संगतिक योग अछि। धन-धान्य आ पद-प्रतिष्ठाक विशेष सम्भावना अछि । फरवरी मांस सँ शनिक अढ़ैया समाप्त भऽ जाएत । तकर उपरान्त जातकक कार्यमे सफलता, शुभकार्य, पद-प्रतिष्ठा आदिक प्राप्ति होएत । विशेष कऽ वर्षक 1,3,5 मास खराब रहत। एकर शान्ति हेतु शनि, राहु, केतु ग्रहक जप-दान केलासँ आयु आ स्वास्थ्यक दृष्टिसँ उत्तम रहत ।

कर्क-ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो

एहि राशि आ लग्नवाला जातकक लेल वर्षक प्रारम्भमे केतु पंचम, मंगल शनि सप्तम, गुरु अष्टम, एकादश भावमे रहत । ग्रहक स्थितिक अनुसार स्वास्थ्य सामान्य, परिवारमे विकासकार्य आ शुभ कार्य होएत । शिक्षामे प्रगति, नौकरीमे पदोन्नति, व्यवसायमे उतार-चढ़ावक स्थिति बनल रहत । जनवरी सँ एहि राशिक लेल शनिक अढ़ैया प्रारम्भ होएत । तखन सँ स्वास्थ्य खराब, रोगादिमे धन व्यय, मानसिक अशान्ति, अनेक तरह यात्रा, आलस्य सँ भरल समय रहत । अनावश्यक वाद-विवाद, प्रयास केलासँ स्वकाज मे सफलता आ शुभकार्य होएत । वर्षक 9,11,12 मास खराब रहत । एकर शान्ति हेतु शनि, केतु ग्रहक जप, दान आ हनुमानजीक अराधना कएलासँ लाभ होएत ।

सिंह-मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे

एहि राशि आ लग्नवाला जातकक लेल वर्षक प्रारम्भमे केतु चतुर्थ, मंगल शनि षष्ठ, गुरु सप्तम आ राहु दशम भाव मे रहत । ग्रहक स्थितिक अनुसार स्वास्थ्य सामान्य, परिवारमे मांगलिक कार्य, शिक्षामे सुधार, व्यवसायमे लाभ, नौकरी के अवसर भेटत, सुखद यात्रा, गृह निर्माण, जमीन आ जायदादक खरीद-बिक्री होएत । स्वजन आ मित्रक सहयोग सँ विपक्षी कमजोर पड़त, मुकदमामे सफलता भेटत । वर्षक 3,4,7 मास खराब रहत । घरमे दुर्गाजीक पाठ केला या करबेलासँ लाभ होएत ।

कन्या-टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो ।

एहि राशि आ लग्नवाला जातकक लेल वर्षक प्रारम्भमे केतु तृतीय, मंगल शनि पंचम, गुरु षष्ठ एवं राहु नवम भावमे रहत । ग्रहक स्थितिक अनुसार स्वास्थ्य सामान्य, परिवारमे शुभ कार्य, परिश्रम केलासँ शिक्षा आ व्यापारमे लाभ, मई कऽ राहु मेष आ केतु तुला राशिमे प्रवेश करत । तखन मानसिक अशान्ति, परिवारमे मतभेदक स्थिति, रोगादि मे धनक खर्चा, भागदौड़क स्थिति बनल रहत । वाहन आदि सँ चोट लगबा सँ धनक हानि होएबाक सम्भावन रहत । खराब संगति आ नीच प्रवृत्ति वाला लोग सँ संगतिक योग बनत । जे मान-सम्मान, पद-प्रतिष्ठाक लेल उत्तम नहीं रहत । वर्षक 4,7,8,11 मास खराब रहत । एकर शान्तिक लेल शनि, राहु, केतु, मंगल ग्रहक जप, दान आ हनुमनजीक अराधना कएलासँ लाभ होएत ।

तुला-रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते ।

एहि राशि आ लग्नवाला जातकक लेल वर्षक प्रारम्भमे केतु द्वितीय, २७ मई सँ प्रथम, मंगल शनि चतुर्थ, गुरु पंचम आ राहु अष्टम आ २७ मई सँ सप्तम भावमे रहत । शनिक अढ़ैया चलैत अछि जे १३ फरवरी तक रहत । ग्रहक स्थितिक अनुसार जातक स्वास्थ्य मध्यम, मानसिक, आर्थिक पारिवारिक चिन्ता, परिवारमे आंतरिक मतभेद, वादविवादक सम्भावना, अनावश्यक धनव्यय, भागदौड़ आ कुसंगति आदिक योग अछि। खरीद-बिक्रीमे बेईमानी आ लेनदेन आदिमे सावधानीक जरूरत अछि। वाहन आदि सँ चोट लगबाक सम्भावना अछि । प्रयास केलासँ घरमे शुभ कार्य, शिक्षामे सफलता आ व्यापार लाभकारी होएत। १३ फरवरी सँ शनिक अढ़ैया समाप्त भेला पर जातकक लेल लाभदायक रहत । वर्षक २,३,६,८ मास खराब रहत। एकर शान्तिक लेल शनि, राहु,केतु,मंगल ग्रहक जप,दान आ हनुमनजीक अराधना आ शनिक आराधना कएलासँ लाभ होएत।

वृश्चिक-तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू ।

एहि राशि आ लग्नवाला जातकक लेल वर्षक प्रारम्भमे केतु प्रथम, मंगल शनि तृतीय, गुरु चतुर्थ आ राहु सप्तम भावमे रहत। ग्रहक स्थितिक अनुसार जातकक स्वास्थ्य मध्यम, परिवारते मांगलिक कार्य, वाहन, जमीन आदिक खरीद-बिक्री आ गृह निर्माणक कार्य होएत। शिक्षामे सुधार,व्यवसायमे लाभ आ नौकरीक अवसर प्राप्त होएत। १३ फरवरी सँ एहि राशि आ लग्नवाला जातकके शनिक अढ़ैया प्रारम्भ भऽ जाएत। एहि समयमे जातक के शारीरिक कष्ट, मानसिक चिन्ता, कार्यपूरा होएबा मे देरी, अपन लोकऽ सँ दूरी, अनावश्यक वाद-विवाद आदिक स्थिति बनत। एकर शान्तिक लेल शनि, राहु, केतु ग्रहक जप दान, शनि चालिसाक पाठ, हुनमानजीक दर्शन आ आराधना कएलासँ लाभ होएत ।

धनु-ये, यो, भा, भी, भू, घा, फा, ढा, भे ।

एहि राशि आ लग्नवाला जातकक लेल वर्षक प्रारम्भमे मंगल शनि द्वितीय, गुरु तृतीय, राहु षष्ठ आ केतु द्वादश भावमे रहत । १३ फरवरी तक शनिक साढ़ेसाती रहत । ग्रहक स्थितिक अनुसार जातकके समय-समय पर स्वास्थ्यमे गिरावट आएत । मानसिक, आर्थिक आ पारिवारिक चिन्ता बनल रहत । परिवार, कुटुम्ब, सगा-संबंधी सँ वैचारिक मतभेद होएत । खरीद-बिक्री, लेनदेन आदिमे बेईमानीक सम्भावन अधिक रहत । स्वकाजमे अरुचि रहत । आलस्य सँ भरत समय बितत । कठिन परिश्रम सँ कोनो काजमे सिद्धि भेटत। शनिक साढ़ेसाती समाप्त भेलापर जातकक सभ कार्य सिद्ध होएत ।

मकर-भी, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी ।

एहि राशि आ लग्नवाला जातकक लेल वर्षक प्रारम्भमे मंगल शनि प्रथम, गुरु द्वितीय, राहु प्रथम आ केतु एकादश भावमे रहत । एहि राशिवाला जातकक लेल शनिक साढ़ेसाती रहत । एहि कारण जातकक स्वास्यमे गिरावट आएत । मानसिक चिन्ता, स्वजन आ सगा-संबंधी सँ दूरी बनत । विलम्ब सँ कोनो काज पूरा होएत । अपन कार्यक प्रति अरुचि उत्पन्न होएत । खरीद-बिक्री, लेनदेन आदि कार्यमे सावधानीक जरुरी अछि । स्थान परिवर्तन आ नौकरी सँ असंतुष्टि आ खिन्नता उत्पन्न होएत । कठिन परिश्रम सँ शिक्षामे प्रगति होएत । परिवारमे मांगलिक कार्य आ निर्माण कार्य होंगे । बीमारी मे धनक व्यय होएत । वाहन आदि से सावधानी रखना चाहिए । धार्मिक कार्य सँ रुचि उत्पन्न होएत । एकर शान्तिक लेल शनि, राहु, मंगल ग्रहक जप दान आ हनुमानजीक दर्शन करब श्रेयस्कर होएत ।

कुम्भ-गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सा, दा ।

एहि राशि आ लग्नवाला जातकक लेल वर्ष भरि शनिक साढ़ेसाती रहत। जकर कारण एहि समयमे परेशानी बनल रहत। जाहिसँ स्वास्थ्य मध्यम, आर्थिक, मानसिक आ पारिवारिक चिन्ता बनल रहत। सगा-संबंधी आ मित्र लोकनि सँ वैचारिक मतभेद होएत। माता-पिताक स्वास्थ्यमे गिरावट, व्यापारमे अल्प लाभ, नव व्यापारक योजना बनत परंतु ओ विलंब सँ क्रियान्वित होएत। विपक्षी मजबूत होएत। अनावश्यक वाद-विवादक सम्भावना बनत। न्यायालय आ बिमारीमे धनक खर्चा अधिक होएत। कठिन परिश्रमक उपरांत कोनो काज पूरा होएत। भौतिक सुख सुविधा पर अधिक पैसा खर्च होएत। वर्षक ३,९,११ मास खराब रहत। एकर शान्तिक लेल शनि, मंगल, राहु ग्रहक जप दान आ हनुमानजीक आराधना लाभप्रद होएत।

मीन-दी, दू, ध, झ, ञ, दे, दो, चा, ची ।

एहि राशि आ लग्नवाला जातकक लेल वर्षक आरम्भमे राहु तृतीय, केतु नवम, मंगल शनि एकादा आ गुरु द्वादश भावमे रहत । ग्रहक स्थितिक अनुसार ई वर्ष सामान्यत: शुभ फलदायक रहत । परिवारमे मांगलिक आ विकासक कार्य होएत । शिक्षा मे सफलता, व्यापार लाभप्रद, नौकरीक अवसर प्राप्त होएत । अनेक सुखद आ लाभप्रद यात्रा होएत । स्त्री आ संतान सुखक प्राप्ति होएत । सगा-संबंधी आ इष्टमित्रक सहयोग सँ कोनो काजक सिद्धि होएत । भए-बहिन मे सौहार्द बनल रहत । १३ फरवरी सँ एहि राशिवाला जातकक लेल शनिक साढ़ेसाती प्रारम्भ होएत जे जातक के स्वास्थ्य मे गिरावट, परिवारमे आंतरिक मतान्तर, अनावश्यक धनक खर्चा होएबाक सम्भावना अछि । एकर शान्तिक लेल शनिक जप दान, श्री शनिक चालीसा, हनुमान चालीसाक पाठ आ हनुमानजीक दर्शन कएलासँ लाभ होएत ।

॥०॥ शनि की शाढ़ेसाती विचार ॥०॥

एकराशि पर शनि ढ़ाई वर्ष रहता है। जब शनि जन्मराशि से १२,१,२ स्थानों में हो तो साढ़ेसाती होती है। यह साढ़ेसात वर्ष तक चलती है अतएव इसे शनि की साढ़ेसाती कहते हैं। यह प्राय: कष्टदायक होती है। **यथा-द्वादशे जन्मगे राशौ द्वितीये च शनैश्चरः। सार्द्धानि सप्तवर्षाणि तदा दुःखैर्युतो भवेत्॥** शनि गोचर से बारहवें स्थान पर हो तो सिर पर, जन्म राशि में हो तो हृदय पर,द्वितीय में हो तो पैर पर उतरता हुआ अपना प्रभाव डालता है। जन्म राशि से शनि चतुर्थ, अष्टम हो तो ढ़ैया होती है जो ढ़ाई वर्ष चलती है। यह भी जातक के लिए कष्टकारी होती है। शनि के राशि परिवर्तन के समय यदि चन्द्रमा १,६,११ स्थान में हो तो स्वर्णपाद २,५,९ में हो तो रजतपाद ३,७,१० स्थान में हो तो ताम्रपाद तथा ४,८,१२ में हो तो लोहपाद होता है। स्वर्णपाद सभी प्रकार के सुखों को देने वाला,रजतपाद सुख सौभाग्य देने वाला, ताम्रपाद मध्यम फल देने वाला एवं लौहपाद धान-धान्य का नाशक होता है। यथा-

लौहे धनविनाशः स्यात्सर्व सौख्यं च कांचने । ताम्रे च समता ज्ञेया सौभाग्यं रजतं भवेत् ॥

शनि के नक्षत्रानुसार गोचर विचार -

शनि जिस नक्षत्र पर हो उससे अपने नक्षत्र तक गिनें। यदि वही नक्षत्र हो तो ३ माह १० दिन तक अनेक प्रकार की हानि होगी। दूसरे से पांचवे नक्षत्र तक हो तो १३ माह १० दिन तक कार्य में सफलता एवं विजयश्री की प्राप्ति होती है। ६ से ११ नक्षत्र तक हो तो १ वर्ष ८ माह का समय वायु रोग हृदय रोग एवं देशान्तर भ्रमण आदि होता है।१२ से १५ नक्षत्र तक हो तो १३ माह १० दिन तक शारीरिक कष्ट, मानसिक कष्ट,व्यवसाय में अवरोध एवं पारिवारिक उलझनें बनी रहती है। १६ से १८ नक्षत्र तक हो तो १० माह का समय उत्तम होता है। १९,२० नक्षत्र तक हो तो ६ माह २० दिन का समय उन्नतिकारक एवं सुखदायक होता है। २१,२२ नक्षत्र तक हो तो ६ माह २० दिन का समय अत्यन्त कष्टकारक होता है। २३ से २७ नक्षत्र तक हो तो १६ माह २० दिन तक धन-धान्य एवं व्यापार में लाभ देता है।

संवत् २०७९ में शनि की साढ़ेसाती विचार-शनि मकर राशि में होने से धनु, मकर एवं कृम्भ राशि वाले जातकों के लिए शनि की साढ़ेसाती रहेगी। तथा मिथुन और तुला राशि वाले जातकों पर शनि की ढ़ैया का प्रभाव रहेगा। कुम्भ राशिवाले जातकों के लिए सिर पर,मकर राशिवाले तातकों के लिए हृदय पर तथा धनु राशिवाले जातकों के लिए पैर पर शनि की साढ़ेसाती का विशेष प्रभाव रहेगा। १३ फरवरी से शनि कुम्भ राशि में प्रवेश करेगा। उस समय से धनुराशि की साढ़ेसाती तथा मिथुन, तुला राशि वालों की ढ़ैया समाप्त हो जायेगी। मकर, कुम्भ, मीन राशि वालों की साढ़ेसाती रहेगी,तथा कर्क, वृश्चिक राशि वालों की ढ़ैया प्रारम्भ हो जाएगा। जिन राशि वाले जातको की शनि की साढ़ेसाती तथा ढ़ैया प्रारम्भ होगी उनके लिये समय प्रतिकूल रहेगा। गोचर के अनुसार शनि मेष राशि से दशमें,वृष से नवें, मिथुन से आठवें, कर्क से सातवें, सिंह से छठें, कन्या से पाचवें, तुला से चौथें, वृश्चिक से तीसरें, धानु से दूसरें, मकर से पहलें, कुम्भ से बारहवें, एवं मीन से ग्यारहवें भ्रमण करेगा। **परिहार**-शनि साढ़ेसाती एवं ढ़ैया से युक्त राशि वाले जातकों के लिए समय कष्टकारी रहेगा। इसमें शनिग्रह का जप,शनिस्तोत्र का पाठ, हनुमद् आराधना, सुन्दरकाण्ड का पाठ, पीपल की जड़ में जल दान, तिल के तेल अथवा सरसो के तेल से दीपक ज़लाना आदि कार्य करने से शनिजन्य दोषों की शान्ति होगी। नीला वस्त्र, घोड़े के नाल अथवा नाव के कील की अंगूठी धारण करनी चाहिए । ॐ **शं शनैश्चराय** नमः मन्त्र का जप तथा ॐ **नीलांजनाभं मिहिरस्य पुत्रं ग्रहेश्वरं पाशभुजङ्गपाणिम्। सुरासुराणां** भयदं **द्विबाहुं भजे शनिं मानसपङ्कजेऽहम्॥** इससे ध्यान करता हुआ मनसोपचार पूजन करें। ऐसा करने से शनि जन्य समस्त दोषों का शमन होगा। शनि का पौराणिक मन्त्र है-

नीलाञ्जनसमाभासं रविपुत्र यमाग्रजम् । छायामार्तण्ड सम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम् ॥

सनातनधर्म के समस्त संस्कार शुभ मुहूर्त में ही करने चाहिये।कलियुग में इस प्रथा का लोप हो रहा है।जो संस्कारहीन हैं वे सनातनी कहलाने के अधिकारी नहीं।

षोडश संस्कारों के नाम-

१.गर्भाधान,२.पुंसवन,३.सीमन्तोन्नयन,४.जातकर्म,५.नामकरण, ६.निष्क्रमण,७.अन्नप्राशन,८.चौलकरण (मुण्डन),९.कर्णवेधः, १०.व्रतबन्ध,११.वेदारम्भ (विद्यारम्भः),१२.समावर्तन,१३.विवाह, १४.अग्न्याधान,१५.वानप्रस्थ,१६.अन्त्येष्टि।

प्रथमरजोदर्शनविचार

मास : वैशाख,ज्ये.,श्रावण,आश्विन,अग्र.,माघ फाल्गुन।
तिथि : १,२,३,५,७,१०,११,१२,१३,१५। वार : चं.बु.गु.शु.।
नक्षत्र : अश्वि.रो.मृ.पु.उ.३,ह.चि.स्वा.अनु.श्र.ध.श.रे.।
लग्न : २,३,४,६,७,९,१२ शुभयुक्त एवं दृष्ट ल.राशि।
विशेषतया-प्रथम रजोदर्शन में कुयोग (परिघ,व्यतिपात, वैधृतिआदि) भद्रा,सूर्यचन्द्र ग्रहण,मासान्त,सन्ध्या,निद्रावस्था आदि अशुभ कहा गया है।इन कुयोगो में प्रथम ऋतुमति होने पर गायत्री मन्त्र से तिल,घृत, दूर्वा सहित १०८ आहुति से कुयोग की शान्ति करनी चाहिए।

गर्भाधान में विचारणीयकाल

भद्रा,षष्ठी,अष्टमी,चतुर्दशी,अमावस्या,रिक्तातिथि,प्रातःसायं, संध्या,ग्रहणकाल,सूर्यादि ग्रहों की संक्रान्तिकाल,अशुभवार, श्राद्धदिन एवं रजोदर्शन से चार दिन त्याज्य है। रजोदर्शन के दिन से १६ दिन तक गर्भधारण करने का योग रहता है।तदनन्तर स्त्री सहवास निष्फल होता है।पुत्रप्राप्ति के लिये सूर्य,भौम,गुरुवार विषम नवमांशगत लग्न।रजोदर्शन से समदिन(६,८,१०,१२,१४,१६) उत्तम एवं कन्या प्राप्ति के लिये चंद्र, शुक्रवार समराशि, समनवमांश तथा विषम दिनों (५,७,९,११,१३,१५) में उत्तम होता है। गर्भाधान के समय लग्न एवं त्रिकोण में शुभग्रह की दृष्टि एवं युति होनी चाहिये। षोडशर्तु निशाः स्त्रीणां तस्मिन्युग्मासु संविशेत्।युग्मासु जायन्ते पुत्रास्त्रियोऽयुग्मासु रात्रिषु।।केन्द्रत्रिकोणेषु शुभैश्च पापैस्त्र्यायारिगैः पुंग्रहदृष्टलग्ने।

गर्भाधान मुहूर्त

तिथि : १,२,३,५,७,१०,११,१२,१३,१५। वार : चं.बु.गु.शु.।
नक्षत्र : रो.मृ.उत्तरा ३,ह.स्वा.अनु.श्र.ध.श.

गर्भदत्रमासानामधिपाः

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मासाः
शु.	मं.	गु.	सू.	च.	श.	बु.	गर्भे ल.प.	चं.	सू.	पतयः

पुंसवनमुहूर्त विचार

अथ पुंसवनं कुर्यात्तृतीये मासि पुंस्तिवदम्।
शुक्ले च पूर्वाह्णे चन्द्रतारा बलान्विते।।
गर्भे शुस्यापिते चास्य वस्ये पुंसवनस्य च।
काले यस्मिन्कृतो गर्भः पुमान्भवति निश्चितम्।।
स्त्रीणां सर्वे क्रियारम्भे भर्तृगोचरतः फलम्।
यात्रापुंसवनोद्वाहे विशुद्धिर्योषितः सदा।।

मास : गर्भधारण से तीसरे मास के आरम्भ से मास के अन्त तक।तिथि : १,२,३,५,७,१०,११,१२,१३।वारः सू.मं.गु.।नक्षत्र : अश्वि.मृ.आ.पुन.पु.म.पूर्वा ३,उ.३,ह.अनु.ध.रे. विद्धनक्षत्र त्याज्य।लग्न : २,५,६,८,९,१०,१२ लग्न की शुद्धि अनिवार्य।

सीमन्तोन्नयन मुहूर्त

चतुर्थे मासि षष्ठे वाप्यष्टमे वा तदीश्वरे।
बलोपपन्ने दम्पत्योश्च चन्द्रतारा बलान्विते।।
मासः गर्भधारण से ४,६,८।तिथि :२,३,५,७,१०,११,१३
नक्षत्र : मृ.पुन.पु.ह.मू.श्र.विद्धनक्षत्र त्याज्य।
लग्न : १,३,५,७,९,१२ लग्न की शुद्धि अनिवार्य।

जातककर्मकाल

जातमात्रे पिता कुर्यात्पुत्रस्य मुखदर्शनम्।
स्तनाशनात्पुरो वापि नाभिच्छेदात्पुरोऽथवा।।
एष्वतीतेषु कालेषु शुभयोगे शुभोदये।
जातकर्मक्रिया कुर्यात्पुत्रायुः श्री विवृद्धये।।
अन्य मत- जातमात्रकुमारस्य जातकर्म विधीयते।।
सूतकान्त के पश्चात् ११,१२ वे दिन।
तिथि - १,२,३,५,७,१०,१२,१३,१५। वार : चं.बु.गु.शु.
नक्षत्र : अश्वि.रो.मृ.पुन.पु.उ.३,ह.चि.स्वा.अनु.श्र.ध.श.रे.।
लग्न : २,३,४,६,७,९,१२ लग्न की शुद्धि अनिवार्य है।

सूतिकागृहप्रवेश मुहूर्त

तिथि : १,२,३,५,७,१०,११,१२,१३,१५।
वार : चं.बु.गु.शु.।नक्षत्र : अश्वि.मृ.पुन.पु.उत्तरा ३,चि.स्वा.अनु.श्र.ध.रे.।लग्न : २,३,४,६,७,९,१२।

प्रथम दुग्धपान मुहूर्त

एकत्रिंशदिने चैव पयः शंखेन पाययेत्।
अन्नप्राशन नक्षत्रे दिवसोदय राशिषु
षष्ठीरिक्ताष्टमी चैव वर्ज्यं विष्टिस्थिराणि वै।
तिथि : १,२,३,५,७,१०,११,१२,१३,१५। वार : चं.बु.गु.शु.
नक्षत्र : अश्वि.रो.मृ.पुन.पु.उत्तरा ३,ह.चि.अनु.श्र.ध.रे.।
लग्न : २,३,४,६,७,९,१२।

सूतिकास्नान मुहूर्त

तिथि : १,२,३,५,७,१०,११,१३,१५। वारः सू.च.मं.गु.शु.।
नक्षत्र : अश्वि.म.कृ.रो.मृ.आ.पुन.पु.म.उत्तरा ३,ह.चि.स्वा.वि.अनु.मू.श्र.रे.। लग्न : २,३,४,६,७,९,१२।

लग्न के अनुसार सूतिकागृहविचार

लग्न	मे.,वृ.	मि.	क.सिं	क.	तु.,वृ.	ध.	म.कु.	मी.
सूतिका गृह	[illegible]	अ. कोण	द. दिशा	नै. कोण	प. दिशा	वा. कोण	उ. दिशा	ई. कोण

उपसूतिकाविचार

जन्म के समय मीन और मेष लग्न हो तो दो स्त्रियां, वृष और कुम्भ लग्न हो तो चार,मिथुन-कर्क-धनु-मकर लग्न हो तो पाँच तथा सिंह-कन्या-तुला-वृश्चिक लग्न हो तो तीन स्त्रियां प्रसूति के पास होती है। लग्न में जितने पापग्रह हों या लग्न को जितने पाप ग्रह देखते हों तो उतनी संख्या विधवायें, लग्न जितने क्रुर ग्रह से युक्त एवं दृष्ट हों उतनी कुंवारियां और जितने शुभ ग्रह से युक्त एवं दृष्ट हों उतनी संख्या सौभाग्यवती स्त्रियों की होती है।

जन्म के समय दीपक–बत्ती–तेल आदि का ज्ञान – जन्मकाल में सूर्य जिस दिशा को इंगित करता हो उस दिशा में दीपक होता है।चन्द्रमा से दीपक में तेल का विचार होता है। अर्थात् चन्द्रमा को राशि में प्रवेश होते ही शिशु का जन्म हो तो दीपक तेल से भरा हुआ, चन्द्र राशि के मध्य में हो तो दीपक में आधा तेल, चन्द्र राशि के अन्तिम भाग मेंहो तो दीपक में तेल की मात्रा कम होती है। इसी प्रकार लग्न से दीपक की बत्ती का विचार करना चाहिए अर्थात् लग्न के प्रारम्भ में शिशू का जन्म हो तो बत्ती पूर्ण दीपक, लग्न के मध्य में हो तो बत्ती अर्ध जली हुइ, लग्न के अन्तिम भाग में हो तो सम्पूर्ण बत्ती जली हुइ समझना चाहए। तेल एवं बत्ती का स्पष्ट ज्ञान चन्द्रमा एवं लग्न के अंश के अनुसार होता है।

प्रसूतिनखछेदन मुहूर्तः

नक्षत्र : अश्वि.,रो.,मृ.,पुन.,पु.,उ.३,ह.,चि.,स्वा.,वि., अनु.,ज्ये.,श्र.,ध.,श.।
तिथि : ३,५,७,१०,११,१३।लग्न : ३,५,६,७,८,११।
शुभदिनः पूर्वाह्न।

नामकरण मुहूर्तः

सूतकान्ते नामकर्म विधेयं स्वकुलोचितम्।नामधेयं दशम्यां तु केचिदिच्छन्ति सूरयः।द्वादश्यामाहुरन्ये तु मासे पूर्णे तथापरे।।अष्टादशेऽहनि तथावदन्त्यन्ये मनीषिणः।द्वादशे दशमे वापि जन्मतो दिवसे शुभम्।षोडशे विंशतिश्चैव द्वाविंशे वर्णतः क्रमात्।।
तिथि : १,२,३,५,७,१०,११,१२,१३।वार : चं.बु.गु.शु.
नक्षत्र : अश्वि.रो.मृ.पुन.पु.उ.३,ह.चि.स्वा.अनु.ध.श.रे.।
लग्न : २,४,६,७,९,१२ लग्न अष्टम द्वादशभाव में शुभग्रह स्थित हो २,३,५,९ वें चन्द्रमा एवं ३,६,११ वें भाव में पापग्रह की स्थिति।

दोलारोहण मुहूर्त :

जन्मदिन से १०,१२,१६,२२,३२ वें दिन आरामदेह झूले में झूलाना चाहिये।
तिथि : १,२,३,५,७,१०,११,१३,१५ ।वार : चं.बु.गु.शु.
नक्षत्र : अश्वि.रो.मृ.उत्तरा ३,ह.चि.अनु.अभि. कुयोग वर्जित करना चाहिये।

बालकदन्तजननफलज्ञानार्थचक्र

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
फल	स्वयंनाश	अनुजनाश	भगिनीनाश	मातृनाश	अग्रजनाश	शुभोग	तातसुख	पुष्टी	लक्ष्मी	सौख्य	सौख्य	धनसम्पत्ति

कर्णवेधः मुहूर्त विचार

कर्ण छेदन बालक के जन्म से १२,१६ वें दिन या ६,७,८ वें मास में अथवा विषमवर्ष में शुभ होता है।
मास : चैत्र (मीनस्थ सूर्य त्याज्य) कार्तिक (शु.११ के पश्चात्) पौष (धनु संक्रान्ति वर्जित) फाल्गुन।
तिथि : २,३,५,६,७,१०,१२,१३।वार : चं.बु.गु.शु।
नक्षत्र : अश्वि.मृ.पुन.पु.ह.चि.अनु.श्र.अभि.ध.रे. विद्ध एवं जन्म नक्षत्र त्याज्य।
लग्न : २,३,४,६,७,९,१२ केन्द्र त्रिकोण में शुभग्रह बलवान होना अनिवार्य है।

अन्नप्राशन मुहूर्त विचार :

बालक के जन्म से ६,८ वे मास में तथा कन्या के लिये ५,७ वे मास प्रशस्त कहा गया है।गर्गाचार्य मत के अनुसार बालक को सम मास एवं सम वर्ष में तथा बालिका का विषम मास या विषम वर्षो में अन्नप्राशन कराना चाहिये।युग्मेषु मासेषु च षट्सु पुंसां संवत्सरे वा नियतं शिशूनाम्।अयुग्ममासेषु च कन्यकानां नवान्नसंप्राशन मिष्टमेतत्।।
तिथि : २,३,५,७,१०,१३,१५। वार : चं.बु.गु.शु.।
नक्षत्र : अश्वि.रो.मृ.पुन.उ.३,ह.चि.स्वा.अनु.अभि.श्र.ध.श.रे.।
लग्न : २,३,४,५,७,९,१०,११ लग्न तथा त्रिकोण में शुभ ग्रहयुति एवं दृष्टि शुभकारक।

निष्क्रमण मुहूर्त विचार

बालक के जन्म से ३,४ मास में शुभयोगो में गृह से प्रथम वार निकालना चाहिये।मतान्तर से १२वें दिन भी निर्गम के लिये शुभ कहा गया है।
तिथि : १,२,३,५,७,१०,११,१३,१५।वार : चं.बु.गु.शु.।
नक्षत्र : अश्वि.,मृ.,पुन.,पु.,ह.,अनु.,श्र.,ध.।
लग्न : २,३,४,५,६,७,९,१०,११।

भूम्युपवेशनमुहूर्त विचार

बालक जन्म से ५वें मास में मंगल के बलान्वित होने पर प्रथमवार भूमि पर बालक को बैठाना चाहिए।
तिथि : १,२,३,५,७,१०,११,१३,१५।
वार : चं.बु.गु.शु.। लग्न : २,५,८,११।
नक्षत्र : अश्वि.रो.मृ.उत्तरा ३,ह.अनु.ज्ये.अभि।

चूड़ाकर्म (मुण्डन) मुहूर्तः

गर्भाधान काल से या बालक के जन्म से विषम वर्षो में अपने कुलाचार्य के अनुसार उत्तरायणगत सूर्य में जातक का चौलकर्म संस्कार करना चाहिये।
मास : चैत्र (मीन संक्रान्ति वर्जित) वैशाख, ज्येष्ठ (ज्येष्ठ पुत्र रहित),आषढ (शुक्ल ११ से पूर्व),माघ, फाल्गुन ग्राह्य एवं जन्म मास का त्याग करना चाहिये।
तिथि : २,३,५,७,१०,११,१३ कृ. पंचमी यावत्।
वार : चन्द्र, बुध,गुरु,शुक्र मतान्तर से ब्राह्मणों के लिये रविवार,क्षत्रि के मंगलवार एवं वैश्य एवं शुद्र के लिये शनिवार प्रशस्त मान गया है।नक्षत्र :अश्वि.,मृ.,पुन.,पु., ह.,चि.,स्वा.,ज्ये.,अभि.,श्र.,ध.,श.,रे.।
जन्म नक्षत्र शुभद एवं विद्धर्क्ष का त्याग करना चाहिए।
लग्न : २,३,४,६,७,९,१२।

नूतनाक्षरारम्भ मुहूर्तः

बालक के ५ वर्ष की अवस्था में अपने कुलदेव तथा विघ्नविनाशक गणेश, शारदा एवं गुरु की पूजा कर प्रथम बार अक्षरारम्भ करना चाहिए।
मास : कुभं संक्राति वर्जित उत्तरायण मास।
तिथि : २,३,५,७,१०,११,१२ कृ. पंचमी यावत्।
वार : च.,बु.,गु.,शु।
नक्षत्र : अश्वि.आ.पुन.पु.ह.चि.स्वा.अनु.ज्ये.अभि.श्र.रे।
लग्न : २,३,६,९,१२अष्टमभाव ग्रह रहित होना चाहिए।

विद्यारम्भ मुहूर्तः

मास : फाल्गुन्य के अतिरिक्त उत्तरायण मास ग्राह्य।
तिथि : २,३,५,७,१०,११,१३। वार : सू.,बु.,गु.,शु.।
नक्षत्र : अश्वि.मृ.आ.पुन.पु.श्ले.पू.३,ह.चि.स्वा.श्र.ध.श.।
लग्न :२,३,५,६,८,९,१२ केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रह तथा ३,६,११भाव में पाप ग्रह की स्थिति अनिवार्य।

व्रतबन्ध (यज्ञोपवीत) मुहूर्त विचार

गर्भाधान से या बालक के जन्मदिन से ब्राह्मण बालक का ५ या ८ वर्ष में,क्षत्रिय का ७ या ११ वर्ष में एवं वैश्य बालक का ८ या १२ वर्ष में उपनयन संस्कार कराना चाहिए।कलिकाल में इसका दूना भी मान्य है।
तिथि : २,३,५,१०,११,१२ मतान्तर से ६,१३ ग्राह्य,कृ. पंचमी यावत्।
वार : सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु,शुक्र।
नक्षत्र :अश्वि.रो.मृ.आ.पुन.पु.श्ले.उ.३ह.चि.स्वा.अनु.श्र.ध.श. रे.मतान्तर से ब्राह्मणों के लिए पुन. त्याज्य है।
लग्न : २,३,५,६,९ लग्न की शुद्धि अनिवार्य है।

वाग्दान मुहूर्तविचार

वर कन्या के गुण मिलान हो जाने के उपरान्त कन्या एवं वर के पिता का परस्पर संबंध निश्चित करना ही वाग्दान कहलाता है।
तिथि : १,२,३,५,७,१०,११,१२,१३ कृ. पंचमी यावत्।
वार : चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र।
नक्षत्र : अश्वि.रो.मृ.उ.३,ह.चि.स्वा.अन.मू.श्र. ध. रे।

कन्यावरणमुहूर्त

तिथि : १,२,३,५,७,१०,११,१२,१३।
वार : चन्द्र,बुध, गुरु,शुक्र।
नक्षत्र : कृ.पू.३,स्वा.अनु.श्र.ध. तथा विवाह के सभी नक्षत्र ग्राह्य हैं।
लग्न : सभी लग्न ग्राह्य है किन्तु लग्नशुद्धि अनिबार्य।

वरवरणमुहूर्त

तिथि : १,२,३,५,७,१०,११,१२,१३ ।वार : च.,बु.,गु.,शु।
नक्षत्र : कृ.,रो.,पूर्वा ३,उ.३ कन्या तथा वरवरण में भद्रा, अरिष्टयोग, गुरु,शुक्रास्त,चातुर्मास एवं निर्बलचन्द्र विशेष रुप से वर्जित है।

विवाह मुहूर्त विचार

कश्यप – उत्तरायणगे सूर्ये मीनं चैत्रं च वर्जयेत्। अजगो द्वन्दं कुम्भालीमृगमासगते रवौ।।नारद – माघफाल्गुनवैशाखज्येष्ठमासः शुभप्रदाः।मध्यमः कार्तिको मार्गशीर्षो वै निन्दिता परे।।पौष चैत्रापरार्द्धे स्याच्छुभं सूर्ये मृगाजगे।आद्यात्र्यंश शुचेः श्रेष्ठो मिथुनस्थे मृगीदृशाम्।। अद्भुद् सागरे – कन्यातुलानृमिथुनान्यतिपूजितानि। मध्याःकुलीरझषचापवृष विवाहे।।
राशि : मेष,वृ.,मि.,वृश्चि.,म.,कु. राशिगत सूर्य में
मास : माघ,फाल्गुन, वैशाख,ज्येष्ठ उत्तम, कार्तिक,मार्गशीर्ष मध्यम,पौष मास में मकर का,चैत्र में मेष का सूर्य एवं आषाढ़ में मिथुन के १० अंश तक विवाह में ग्राह्य है।
तिथि : २,३,५,७,१०,११,१२,१३ मतान्तर से १,१५ तिथि ग्राह्य।
वारः : चन्द्र,बुध,गुरु,शुक्र उत्तम,अन्य मध्यम।
नक्षत्र : अश्वि,रो.,मृ.,म.,उ.३,ह., चि.,स्वा.,अनु.,मू., श्र.,रे.,ध.।
लग्न : ३,६,७,उत्तम,२,४,९,१२ मध्यम मतान्तर से १०, ११ शुभ।
वर–कन्या के जन्मलग्न एवं जन्मराशि से ३,६, १०, ११ लग्न विशेष शुभद होता है।
विवाह में त्याज्य योग – विष्कुम्भ, गण्ड, अतिगण्ड, व्याघात, शूल, व्यतिपात,परिघ,ऐंद्र,वैधृति।
लग्नों के अन्धबधिरपंग्वादि ज्ञानचक्र –

प्रतःसाय	दिन	अपराह्न	रात्रि	समय
×	७,८	७,८,९	९,१०	बधिर लग्न
×	१,२,५		३,४,६	अन्ध लग्न
१०,११,१२	११		१२	पंगु लग्न

बधिरअन्धपंगु संज्ञक काल में विवाह कार्य वर्जित है।

वधूप्रवेश मुहूर्तविचार :

नवविवाहिता पिता के घर से प्रथमबार पति के घर में प्रवेश को वधुप्रवेश कहते हैं। यह वधूप्रवेश विवाह के दिन से १६ दिन के भीतर समदिनों (२,४,६,८,१०,१२,१४,१६) में तथा विषम दिनों (५,७,९) में या १६ दिनों के पश्चात् विषम दिनों में या १ वर्ष के अन्दर विषम मासों में, तदन्तर विषम मासों में ५ वर्ष के बाद किसी भी शुभकाल में वधूप्रवेश शुभ होता है।१ वर्ष तक वधुप्रवेश में शुक्र का विचार नहीं करना चाहिये।तदन्तर शुक्र का विचार अनिवार्य है।
मास : वैशाख.,ज्येष्ठ.,आषाढ़ (मिथुनार्क) कार्तिक,माघ,फाल्गुन।
तिथि :१,२,३,५,६,८,१०,११,१२,१३,१५ भद्रा रहित,कृष्णपक्षे ११ या.।
वार : चन्द्र,बुध,गुरु,शुक्र। नक्षत्र : अश्वि.,रो.,मृ.,पु.,म.,उ.३,ह.,चि. ,स्वा,अनु.,मू.,श्र.,ध.,रे.। लग्न : स्थिर एवं शुभ लग्न अनिवार्य।

द्विरागमन मुहूर्त

नवविवाहिता वधू का वधू प्रवेश के बाद पिता के घर लौटकर पुनः पतिगृहगमन द्विरागमन कहलाता है।यह विवाह के बाद १,३,५,७ विषम वर्षो में वर के सूर्य एवं गुरु तथा वर–कन्या दोनों के चन्द्र बल देखकर द्विरागमन करना शुभप्रद होता है।इसमें शुक्र का विचार अनिवार्य होता है।
गुर्विण्या बालकेनापि नववध्वा द्विरागमे। पदमेकं न गन्तव्यं शुक्रे सम्मुख दक्षिणे।।पूर्वमभ्युदिते शुक्रे यायाद्दक्षिणपश्चिमे। पश्चात्भ्यूदिते शुक्रे यायात्पूर्वोत्तरे दिशौ।।पूर्वीस्थिते भृगौ यायान्नवोढा राक्षसे नले।पश्चिमस्थे भृगौ यायात्तद्वदीशन वातयोः।।

शुक्र	पूर्वोदय	पश्चिमोदय
यात्रादि.	द.,प.,नै.,आ.कोण	पू.,उ.,ई.,वा. कोण

तिथि : १,२,३,५,६,७,८,१०,११,१२,१३,१५।वार : च.,बु.,गु.,शु.।
नक्षत्र : अश्वि.रो.मृ.पुन.पु.उ.३,ह.चि.स्व.अनु.मू.श्र.ध.श.रे. भद्रा रहित, कृष्णपक्षे ११ या.। लग्न : २,३,६,७,१२ मतान्तरे ११।
मास : वैशाख,मार्ग.,फाल्गुन उत्तम,माघ मध्यम।परिहार :१) रेवती नक्षत्र से कृतिका के प्रथम चरण तक, कुछ विद्वानों के मत से मृगशिरा नक्षत्र पर्यन्त चन्द्रमा रहने पर शुक्रान्ध रहता है। इस काल में सम्मुख या दक्षिण शुक्र का दोष नहीं होता।२) गुरुशुक्रास्त, सिंहस्थगुरु, अधिमास, दक्षिणायन,तारानिर्बल,चन्द्रनिर्बल आदि दोष रहने पर भी दीपावली में विवाहित स्त्री को पति के घर जाने में दोष नहीं लगता। ३) कन्या के रजोदर्शन के पश्चात् शुक्र दोष नहीं लगता। ४) भृगु,अंगिरा,वत्स,वशिष्ठ,कश्यप,अत्रि और भरद्वाज गोत्र वाले को शुक्र दोष नहीं लगता।

द्वयंग मुहूर्त विचार

द्विरागमन होने के पश्चात् कन्या पिता के घर में कुछ समय रुककर तीसरी बार जब पति के घर जाती है तो वह यात्रा द्वयंग कहलाती है। इस यात्रा में योगिनी, दिक्शूल तथा मासिक राहु का विचार करना चाहिए।द्वयंग में सम्मुख तथा दक्षिण राहु त्याज्य है।
आद्यर्के भ्रमते राहुः पूर्वाशादि चतुष्टये।सम्मुखे दक्षिणे त्याज्यस्तृतीयगमने स्त्रियः।स्पष्टार्थचक्रमिदम्

राहुवासः	पूर्वः	पश्चिमः	उत्तरः	दक्षिणः
सूर्यसंक्रान्तिः	१,५,९	३,७,११	४,८,१२	२,६,१०

तिथि : १,२,३,५,७,१०,११,१३ ।वार : चन्द्र,बुध,गुरु,शुक्र।
नक्षत्र : अश्वि.,मृग.,पुन.,पु.,ह., अनु.,श्र.,रे.,मू.।

प्रथमपुंस्त्रीसमागम मुहूर्त विचार

तिथि : १,३,५,७,१०,११,१२,१३,कृ.प. पचमी पर्यन्त।
वार : चन्द्र,बुध,गुरु,शुक्र।नक्षत्र : रो.मृग.उ.३,ह.स्वा.श्र.ध.श.।
लग्न : १,२,५,७,९,११ लग्न शुद्धि अनिवार्य।

दीक्षाग्रहण मुहूर्त विचार

मास : चै,वै.,श्रा.,आश्वि.,का.,मार्ग.,मा,फा.।अधिमास वर्ज्य।
वार : सूर्य,चन्द्र,बुध,गुरु,शुक्र।
तिथि : २,३,५,७,१०,११,१२ कृ.पक्ष पंचमी तक।
लग्न : २,३,४,५,६,७,९,१२।लग्न शुद्धि अनिवार्य
विशेष : गुरु शुक्र के उदय में,रामनवमी ज्येष्ठ शुक्ल ११, ग्रहण के समस्त काल दीक्षादान में उत्तम होता है।

भूमिक्रयविक्रय मुहूर्त

तिथि : कृ.१,शु.५,६,१०,११,१५। वार : गुरु,शुक्र।
नक्षत्र : मृग.,पुन.,श्ले.,म.,वि.,अनु.,पू.३,मू.,रे.।
विशेष : भद्रा एवं कुयोग त्याज्य।

रोगत्रिनाड़ीज्ञानार्थ चक्र–

प्र.नाड़ी	आ.	पू.फा.	उ.फा.	अनु.	ज्ये.	ध.	श.	भ.	कृ.
द्वि.नाड़ी	पुन.	मघा	हस्त	वि.	मूल	श्रवण	पू.भा.	अश्वि.	रोहि.
तृ.नाड़ी	पु.	श्ले.	चित्रा	स्वा.	पू.षा.	उ.षा.	उ.भा.	रे.	मृग.

उपर्युक्त चक्र में यदि रोगी का जन्म नक्षत्र, चन्द्र नक्षत्र तथा सूर्य नक्षत्र तीनों एक नाड़ी में प्राप्त हो तो उसकी मृत्यु निश्चित है

अकुलविचार

तिथि : १,३,५,७,९,११,१३,१५। वार : र.,च.,शु.,श.।
नक्षत्र : भ.,रो.,पुन.,श्ले.,उ.३,ह.,स्वा.,अनु.,ध.,रे.।

अकुलफल विचार

अकुल संज्ञकवर्ग में यात्रा प्रारम्भ करने वाला विजयी होता है।तिथौ वारे च नक्षत्रे अकुले यायिनो जयः।

कुलगता विचार

तिथि : ४,८,१२,१४ ।वार : मंगल,शुक्र।
नक्षत्र : आश्वि.,कृ.,मृ.,पा.,म.,स्वा.,चि.,वि.,ज्ये.,ध.।
फलं : कुलवाचक तिथादि में यात्रा करने से यात्री पराजित और स्थायी (अभियुक्त) की जीत होती है। संग्रमे यायिनो भंगः स्थायिनोश्च जयो भवेत्।

कुलाकुलगताविचार

तिथि : २,३ ।वार : बुध।नक्षत्र : आ.,मू.,अभि.,श.।
कुलाकुल में वादी एवं प्रतिवादी में सन्धि या मिलाप हो जाता है।सन्धिः स्यादुभयो कुलाकुलगणे भूमिश्चयोर्दुध्यतो।

चैत्रादिद्वादशमासों के स्वामी ज्ञानर्थचक्र

मास	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आश्वि.	का.	मार्ग.	पौ.	मा.	फा.
नाम	वैकुण्ठ	जनार्दन	उपेन्द्र	यज्ञपुरुष	वासुदेव	त्रिविक्रम	योगीश	पुण्डरीक	कृष्ण	अनन्त	अच्युत	चक्रधारी

ट्यूबवेल–बोरिंग–टंकीआदिस्थापन मुहूर्त

नक्षत्र :कृ.,अश्वि.,म.,पू.३,भ.,वि.,मू.।
तिथि :२,४,५,६,७,९,१३,१५ शु.कृ.५ तक। ११,१२।
वार :चन्द्र,बुध,गुरु,शुक्र।लग्न : २,३,४,६,७,९,१०,

चूल्हिकास्थापन मुहूर्त

नक्षत्र : अश्वि.,भ.,वि.,रो.,मृ.,उ.३,कृ.,मू.,पू.षढ़ा,आ.।
वार : सूर्य, मंगल, शनि। लग्नः शुभ लग्न।

चूल्हिकाचक्र – (सूर्य नक्षत्र से अभिष्टनक्षत्र तक गिनें)

स्थान	नक्षत्र	फल
पृष्ठ	६	श्रीलाभ
शीर्ष	४	मृत्युभय
नाभि	८	सुख
गर्भ	५	विनाश
हाथ	२	सुपाच्य
पाद	२	कलत्रमृत्यु

प्रथम–पाककर्ममुहूर्त

तिथिः१,२,३,५,६,७,१०,१३,१५, कृ. पंचमी यावत्।वारःचं.बु.गु.शु.श।नक्षत्र :कृ.रो.मृ.पु.उ.३.वि. ज्ये.श्र.ध.श.रे।लग्नः२,५,८,११ राशिलग्न,जब चतुर्थ स्थान में शुभ ग्रह या ग्रहभाव,सप्तम में बलयुत ग्रह तथा अष्टम में ग्रहनुपस्थिति हो।

सगाई मुहूर्त – मास : वैशाख,ज्येष्ठ,आषाढ,मार्गशीर्ष, माघ,फाल्गुन।तिथि :१,२,३,५,६,७,८,१०,११,१२,१३,१५। वार :सू.बु.श.।नक्षत्र : अश्वि.कृ.आ.पून.पु.श्ले.पूफा.चि.ज्ये. श्र.ध.शत.।विशेषः गुरु शुक्रास्त,वर–वधू के निर्बल चन्द्र,भद्रा, अनिष्टयोगों का त्याग करके निम्न नक्षत्र शुद्धि में पुनर्विवाह करें।सूर्यभात् नक्षत्र गणना और विवाहनन्तर स्पष्टार्थ चक्र –

नक्षत्रक	३	३	३	३	३	३	३	३	३
फल	मरण	धनप्राप्ति	मरण	मरण	पुत्रप्राप्ति	मरण	वैमनस्य	लक्ष्मीप्राप्ति	उन्नति

वृक्षारोपण–मुहूर्त

तिथि : १,२,३,५,७,१०,११,१३,१५।वारः सू.बु.गु.शु.।
नक्षत्र : अश्वि.रो.मृ.पु.उ.३.ह.चि.वि.अनु.मू.अभि.श.रे.।
लग्न : २,३,५,६,७,९,११,१२ राशि।

तृणकाष्ठादि–संग्रह–मुहूर्त

तिथि : १,२,३,५,६,७,८,१०,११,१२,१३,१५।
वार : सू.चं.मं.शु.।नक्षत्र : कृ.रो.आ.पु.म.पूफा.ह.वि. अनु.मू.पूषा.श्र.।स्पष्टार्थ चक्रम् –
सूर्य के नक्षत्र से दिनर्क्ष तक साभिजित गणना

नक्षत्र सं.	६	२	४	४	४	४	४
फल	शुभ	नेष्ट	नेष्ट	शुभ	नेष्ट	नेष्ट	शुभ

जलयन्त्र आदि कर्म–मुहूर्त

तिथि : १,२,३,५,७,१०,११,१३,१५।
वार : सू.चं.बु.गु.शु.।नक्षत्र : पु.श्ले.म.पूर्वा.३.मू.शत.।
लग्न : ४,८,१० (उतरार्द्ध) तथा १२।
रोहिणी नक्षत्र से चन्द्रनक्षत्रावधि गणना करें।
स्पष्टार्थ चक्र –

दिशाएँ	मध्य	पू.	आ.	द.	नै.	प.	वा.	उ.	ई.
नक्षत्रक्रम	३	३	३	३	३	३	३	३	३
फल	श्रे.	श्रे.	ने.	ने.	ने.	श्रे.	ने.	श्रे.	श्रे.

मुकद्दमा दायर करने का मुहूर्त

तिथि : ३,५,८,१०,१३, (शु.) १५।
वार : सू.,बु.,गु.,शु.
नक्षत्र : भ.आ.श्ले.म.पूर्वा.३,ज्ये.मू.।
लग्न : ३,६,७,८,११ लग्न। जब शुभ ग्रह केन्द्र में,पापग्रह ३,६,११वें एवं अष्टमभाव ग्रह रहित होना चाहिए।

व्यवहार–पत्रारम्भ–मुहूर्त

तिथि : १,२,३,५,७,१०,११,१३।वार : सू.चं.बु.गु.शु.।
नक्षत्र : अश्वि.रो.मृ.पुन.पु.उत्तरा.३,ह.चि.अनु.श्र.रे.।
लग्न : १,३,४,६,७,९,१०,१२ ।लग्न शुद्धि अनिवार्य

आवेदन मुहूर्त

तिथि : १,२,३,५,७,१०,११,१३,१५।वारः सू.चं.गु.शु.।
नक्षत्र : अश्वि.रो.मृ.पु.उत्तरा.३,ह.चि.स्वा.अनु.अभि.श्र. ध.श.रे.।

ईंट–निर्माण–मुहूर्त

तिथि : ४,९,१४। वार : सू.म.श.।
नक्षत्र : भ.कृ.म.पूर्वा.३,वि.।लग्न :१,५,८,१०,११।

नवान्नभक्षण–मुहूर्त

मास : वसन्त और शरदृऋतु के मास।
तिथि : २,३,५,७,१०,१३,१५।वार : सू.चं.बु.गु.।
नक्षत्र : अश्वि.मृ.पुन.पु.ह.चि.स्वा.अनु.अभि.श्र.ध.श.रे.
लग्न : २,३,६,७,९,१२,राशिलग्न।
नवान्न भक्षण चक्र –

२७नक्षत्र	५	५	५	५	४	२	१
फल	शुभ	शुभ	शुभ	हानि	शुभ	व्यर्थ	शुभ

धान्य–छेदन मुहूर्त –

तिथि : १,२,३,५,६,७,८,१०,११,१२,१३,१५।
वार : सू.चं.बु.गु.शु.।नक्षत्रः मृ.आ.पु.म.ह.स्वा.मू.श्र.ध.।
लग्न : २,५,८,११राशि तथा जन्म लग्न।

खाद देने का मुहूर्त

तिथि : १,२,३,५,६,७,८,१०,११,१२,१३,१५।
वार : चं.बु.गु.शु.।नक्षत्रः आ.पुन.पु.स्वा.मू.श्र.ध.श.पूभा.।

जल–सिंचन मुहूर्त

तिथि : १,२,३,५,७,१०,११,१३,१५।वार : चं.गु.शु.।
नक्षत्र : अश्वि.रो.मृ.पुन.पु.उत्तरा.३,चि.स्वा.वि.अनु.मू.ध.श. पूभा.रे.। लग्न : ४,८,१२।

बीज वपन मुहूर्त

तिथि : १,२,३,५,७,१०,११,१३।वार : सू.चं.बु.गु.शु.श.।
नक्षत्र : अश्वि.रो.मृ.पुन.पु.म.उत्तरा.३,ह.चि.स्वा.वि.अनु.मू. ध.रे.।लग्न : २,३,६,९।

हलप्रवहण मुहूर्त

तिथि : १,३,५,७,१०,११,१३,१५। वार : चं.मं.बु.गु.शु.।
नक्षत्र : अश्वि.रो.मृ.पुन.पु.उ.३,ह.चि.स्वा.वि.अनु.ज्ये. मू. श्र.ध.श.रे.। लग्न : २,३,६,९,१२आदि लग्न में बलवान् बृहस्पति या शुक्र हो, जलचर राशियों में चंद्रमा हो तथा पापग्रह निर्बल हो।

लागल चक्र–

सूर्य नक्षत्र से अभीष्ट नक्षत्र तक गिनें।

नक्षत्र सं.	३	३	३	५	३	५	३	३
फल	ने.	श्रे.	ने.	श्रे.	ने.	श्रे.	ने.	श्रे.

गृहारम्भः (वास्तु) मुहूर्तः

वैशाख, आषाढ़, कार्त्तिक, मार्गशीर्ष, फाल्गुन, श्रावण (सौरक्रमेण), (मतान्तरेण माघ,ज्येष्ठ) मासेषुः। सम्मुख काल वर्जितसमये। २,३,५,७,१०,११,१२,१३,१५ तिथिषु। शुक्लपक्षे, कृष्णपक्षे ५ यावत्। नक्षत्रः अश्वि.,रो. मृ.,पुन.,पु.,उत्तरा.३,ह.,चि.,स्वा.,अनु.,मू.,श्र.,ध.,श.,रे ।दिन.चं,बु.,गु.,शु.,श। शुद्धे वृषवचक्रे।

गृहप्रवेशमुहूर्तः

वैशाख,ज्येष्ठ,आषाढ,कार्त्तिक,मार्गशीर्ष,माघ, फाल्गुन, श्रावण (सौरक्रमेण) मासेषुः,(मतान्तरेण माघ,ज्येष्ठ) सम्मुखकालवर्जितसमये।२,३,५,७,१०,११,१२,१३,१५तिथिषु। शुक्लपक्षे,कृष्णपक्षे ५ यावत्।नक्षत्रः अश्वि.,रो.,मृ.पुन.,पु., उत्तरा.३,ह.,चि.,स्वा.,अनु.,मू.,श्र.,ध.,श.रे।दिन चं,बु.,गु., शु.,श।दिवारात्रौ।शुद्धसमये।शुद्धकुम्भचक्रे।२,५,८,११ लग्ने पूत्तम्:।३,६,९,१२ लग्नषुमध्यम्। जन्मराशिलग्नाभ्या मुपचय–३,६,१०,११ राश्यंशयोः स्थिर राशौ,लग्नात् १,३,५, ७,९,१०,११ स्थानेषु शुभाः। ३,६,११ स्थनेषु पापाः।४,८, भवने ग्रहरहिते।सम्मुखकालरहित समये शुभः। इष्टिकादि गृहप्रवेशः शुद्धसमये,तृणकाष्ठा दिगृहप्रवेशोऽशुद्ध समयेपि। अग्निभये राजकोपे दैविके प्रकोपेसतियस्मिन् कस्मिन् शुभमुहूर्ते गृहारंभो गृहप्रवेशश्च कार्यं।

गृहारम्भेवत्स चक्र

स्थान	नक्षत्र	फल
सिर में	३	अग्निभय
अग्रपाद	४	शुन्यम्
पृष्ठपाद	४	स्थिरता
पृष्ठ	३	लक्ष्मीप्राप्ति
द.कुक्षो	४	लाभ
पृच्छे	३	स्वामिलाभ
वा.कुक्षो	४	दरिद्रता
मुखे	३	पीड़ा

गृहप्रवेशकुम्भ चक्र

स्थान	नक्षत्र	फल
मुख	१	अग्निभय
पूर्व	४	उद्रसन
दक्षिण	४	लाभ
पश्चिम	४	लक्ष्मीप्राप्ति
उत्तर	४	कलह
गर्भ	४	विनाश
अव.	३	स्थिरता
काष्ठे	३	स्थिरता

कूपचक्रसूर्यभात्

दिशा	नक्षत्र	फल
मध्य	३	शीघ्रस्वादु
पूर्व	३	खण्उजल
अग्नि	३	स्वादुजल
दक्षिण	३	जलहानि
नैऋत्य	३	स्वादुजल
पश्चिम	३	आरोदकः
वायव्य	३	मिश्रा जल
उत्तर	३	मिष्ट
ईशान	३	क्षार

रोहिणीनक्षत्रात्कूपचक्रमिदम्

स्थल	नक्षत्र	फल
मध्य	३	शीघ्रस्वादु
पूर्व	३	निर्जल
अग्नि	३	आशुजल
दक्षिण	३	निर्मल
नैऋत्य	३	स्वादुजल
पश्चिम	३	अभाव
वायव्य	३	निर्मल
उत्तर	३	मधुर जल
ईशान	३	क्षार जल

गुरु शुक्रास्तादि में त्याज्यकर्म –

कुआं,तालाब,बावड़ी,उद्यान,गृहादि के आरम्भ एवं अवस्थान,व्रतारम्भोद्यापन,वधूप्रवेश,षोडशमहादान,सोमयागादि सप्तमी,अष्टमी,नवमी को करिष्यमाण अष्टकाश्राद्ध, प्रथमक्षौरकर्म,नवान्नभक्षण,प्याउ लगाना,नवानश्रौतयज्ञ, प्रथमश्रावणीकर्म,वेदउपनिषद्,महानाम्नीव्रत,काम्यवृषोत्सर्ग,त्रिपिण्डीश्राद्ध,अनैमित्ति शिशुसंस्कार,देवप्रतिष्ठा, दीक्षामन्त्रोपनिषद,उपनयन,पाणिग्रहण,मुण्डन,अपूर्वदृष्ट देवताओं और तीर्थों के दर्शन,सन्यासग्रहण,चातुर्मास्ययाग,राजादर्शन,राज्याभिषेक,सक्रामयात्रा,समावर्त्तन,कर्णवेध एवं दन्तरत्नभूषणादि कर्म गुरु शुक्रास्त में वर्जित है।
नोट : सभी शुभकार्य मुहूर्त में ही करना चाहिये। इस पश्चात में भद्रा,गण्डान्त,बाण,योग,नक्षत्र एवं शुक्रदोष परिहार आदि जितने परिहार हैं उनका उपयोग किंकर्तव्यविमूढ़ की स्थिति में करनी चाहिये।अर्थात् विशेष परिस्थितियों में ही करनी चाहिये।

पृथ्वीशयननक्षत्राणि

सूर्यनक्षत्रात् ५,७,९,१२,१९,२६ मिते चन्द्र नक्षत्रे पृथ्वी शेते।तेषु तड़ागवापीकूपगृहारंभप्रभृतिकार्यं ट्यूब्बेल बोरिंग प्रभृतिस्थापनश्च न कर्त्तव्यम्।

दग्धतिथ्यादि विचार

मीने धनुषि स्थिते सूर्ये द्वितीया,वृषे कुम्भे स्थिते सूर्ये चतुर्थी,मेषे कर्के स्थिते सूर्ये षष्ठी,मिथुने कन्यायां स्थिते सूर्येष्टमी,सिंहे वृश्चिके स्थिते सूर्ये दशमी,तुले मकरे च स्थिते सूर्ये द्वादशी तिथिर्दग्धा भवति।

देवप्रतिष्ठमुहूर्तविचार

मासविचार–प्रायः समस्त देवी देवताओं की प्रतिष्ठा उत्तरायण में होती है,किन्तु वाराह,योगिनी आदि उग्र प्रकृति के देवताओं की प्रतिष्ठा दक्षिणायन में भी करने का विधान है।उत्तरायणे सूर्ये प्रतिष्ठा शोभना भवेत्।दक्षिणायनगे भानौ प्रतिष्ठा नैव शोभना।।मातृ भैरव वाराह नारसिंह त्रिविक्रमाः।महिषासुर हन्त्री च स्थाव्यवै दक्षिणायने।। कुछ आचार्यों के मत में शिव की श्रावण में, दुर्गा की आश्विन में, विष्णु की मार्गशीर्ष में, तथा कुछ विद्वानों के अनुसार पौषमास में सभी देवताओं की प्रतिष्ठा की जा सकती है–श्रावणे स्थापयेल्लिङ्गमाश्विने जगदम्बिकाम्।मार्गशीर्षे हरिं चैव, सर्वान् पौषेति केचन।।वैशाख,ज्येष्ठ,माघ और फाल्गुन मास में देवताओं की प्रतिष्ठा शुभप्रदा होती है।अत्यावश्यक हो तो चैत्रमास में भी प्रतिष्ठा की जा सकती है।चैत्रे वा फाल्गुने वापि ज्येष्ठे वा माघवेपि वा।माघे वा सर्वदेवानां प्रतिष्ठा शुभदाभवेत्।।किसी के मत में विष्णु की स्थापना माघ मास में नहीं करनी चाहिये।माघे कर्तुर्विनाशाय फाल्गुने शुभदा भवेत्।।

तिथि विचार :– शुक्लपक्ष की २,५,६,७,१०,११,१२,१३,१५ में वार सूर्य,चन्द्र,बुध,गुरू,शुक्र,शनि को,आश्वि.,रोहिणी,मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य,उत्तरा.३,हस्त,चित्रा,स्वाति,अनुराधा,श्रवण,शतभिषा और रेवती नक्षत्र में देवताओं की प्रतिष्ठा करनी चाहिये।चरराशि लग्न एवं चरनवमांश को छोड़कर सभी लग्न ग्राह्य है।विशेषकर २,३,६,९,१२ राशि लग्नशुभ हैं।तथापि शुभ युति एवं दृष्टि विचारणीय है – राशयः सफलाः श्रेष्ठाः शुभग्रहयुतेक्षिताः।।

लग्न शुद्धि :– केन्द्र में बुध,शुक्र,गुरू शुभ,२,५,७,९,१० भाव में चन्द्रमा,बुध,गुरू शुभ,३,११ भाव में सभी ग्रह शुभ षष्ठ में पापाग्रह,एवं अष्टम द्वादशभाव में ग्रहभाव अपेक्षित है।तिथ्यभाव में भी देवता के विशेष दिन ग्राह्य हैं।जैसे रामनवमी, कृष्णजन्माष्टमी,गणेश चतुर्थी,शिवरात्रि,दुर्गाष्टमी और महानवमी आदि तिथियों में तत्तद् देवताओं की स्थापना की जा सकती है। क्योंकि–"यद्दिनं यस्य देवस्य तद्दिने तस्य संस्थितिः"। देवशयन, मलमास,गुर्वास्त शुक्रास्त विष्टि व्यतिपात एवं चन्द्रतारा के निर्वलत्व में देव प्रतिष्ठा नहीं करनी चाहिये –"कुजवर्जितवारेषु कर्तुः सूर्यबलप्रदे।चन्द्रताराबलोपेते पूर्वाह्णे शोभने दिने।।"

वर्णानुसारेण तिथिवारादि ज्ञानं चक्रेण स्पष्टम्

वर्णाः	ब्राह्मणः	क्षत्रियः	वैश्यः	शूद्रः
तिथयः	२,३	५,७	१०	१३
वाराः	गुरू,शुक्र	सूर्य,चन्द्र	बुध	शनि
नक्षत्राणि	उत्तरा ३,पुष्य	श्रवण,हस्त,चित्रा	स्वा.अनु. रेवती	अश्विनी
करणानि	बव,बालव	कौलव,तैतिल	गर,वाणिज	गर,वाणिज
राशयः	स्थिर राशि	स्थिर राशि	द्विस्वभाव	द्विस्वभाव

गृहे प्रतिमा विचारः –

"निर्णय सिन्धु"– अङ्गुष्ठ पर्वादारभ्य वितस्तिं यावदेव तु।गृहे प्रतिमा कार्या नाधिका शस्यते बुधैः।।देवी पुराणेसप्ताङ्गुल समारम्य यावच्च द्वादशाङ्गुलम्।गृहेष्वर्चा समाख्याता प्रसादेचाधिका शुभा।। नवाष्टसप्ताङ्गुलिकंलिङ्ग श्रेष्ठमिहोच्युते।षट्पञ्चक चतुर्मानं मध्यमं त्रिविधं स्मृतम्।। त्रिद्व्येकाङ्गुलमानं यन्त्रिविधं तत्कनीयसम्।एवं नवविधं प्राक्तं चरलिङ्गंयथाक्रमम्।।नार्च्यां गृहेऽश्मजन मूर्तिश्च तुरंगुलीतोऽधिका। न वितस्त्यधिका धातु संभवा श्रेय इच्छता।।एवं लक्षणसंपन्ना पारंपर्य क्रमागता।७,८,९ अंगुल की धातु आदि का शिवलिङ्ग तथा प्रतिमा की पूजा शुभ होती है।४,५,६ अंगुल का मध्यम एवं १,२,३ अंगुल का लिङ्ग एवं प्रतिमा की पूजा अशुभ होती है।घर में ४ अंगुल से अधिक पत्थर की मूर्ति की पूजा नहीं करनी चाहिये।नर्मदेश्वर शिवलिंग के लिए छूट है।

शालग्राम परिमाण पूजनदानश्च विवेचनम् :– तत्राप्यामलकी तुल्या पूजा सूक्ष्मैव या भवेत्।यथा यथा शिला सूक्ष्मा तथा स्याच्च महद्फलम्।यः पुनःपूजयेद्भक्त्या शालिग्राम शिलाशतम्। तत्फलं नैव शक्तोऽहं वक्तुं वर्षशतैरपि।।दद्यातीद्भक्ताय यो देवि शालग्राम शिलां नरः।सुवर्णसहितां दिव्यां पृथ्वीदानफलंलभेत्।।

गृहे लिङ्गशालग्रामचक्रादीना सख्यायाःपरिमाणे विचारः– तत्रैव वाराहपाद्मयोः– गृहे लिङ्गद्वय नार्च्यं शालग्राम द्वय तथा द्वेचक्रे द्वारकायास्तु नार्च्यं सूर्यद्वयं तथा।।शक्तित्रयं तथा नार्च्यं गणेशत्रयमेव च।द्वौ शङ्खौ नार्चयेच्चैव भग्नां च प्रतिमा तथा।।नार्चयेच्च तथा मत्स्य कूर्मादि दशकं तथा।गृहेऽग्निदग्धा भग्नांश्च नार्चाः पूज्या वसुन्धरे।। एतासां पूजनान्नित्यमुद्वेगं प्राप्नुयाद् गृही।शालग्रामाः समाः पूज्याः समेषु द्वितयं नहिं।विषमा नैव पूज्यास्तु विषमेष्वेक एवहि।शालीग्राम शिलां भग्नां पूजनीया सचक्रका।।खण्डिता स्फुटिता वापि शालग्राम शिलाशुभा।

देवाना पुनःप्रतिष्ठा कारणम् :– "पदार्थदर्शे ब्राह्मे" खण्डिते स्फुटिते दग्धे भ्रष्टे मान विवर्जिते।यागहीने पशुस्पृष्टे पतिते दुष्टभूमिषु।।अन्य मन्त्रार्चिते चैव पतितस्पर्शदूषितें दशस्वेतेषु नो चक्रुः सन्निधान दिवौकसः।।खण्डित,टूटी,दग्ध,भ्रष्ट,प्रमाण से हीन,याग (पूजा) से हीन,पशु (गर्दभ आदि) से स्पर्श हुई,पतित स्पर्श से दूषित उत्तम भूमि से हीन मूर्ति,जिसे विधि पूर्वक प्रतिष्ठा न की गई हो, ऐसी दश प्रतिमाओं में देवता का सन्निधान नहीं होता "निर्णय सिन्धु"।

खण्डित मूर्ति का विचार :– १. खण्डित मूर्ति यदि काष्ठ की हो तो उसे अग्नि मे समर्पित कर दें।२. यदि पत्थर की हो तो जल में प्रवाह करें और यदि रत्न या धातु की हो तो उसे आगाध जल में डुबो देना चाहिये।जो मूर्ति खण्डित हो गई हो उन खण्डित अंग को वस्त्र आदि से ढककर मूर्ति को सवारी में रखें। तत्पश्चात् उसे गाजे बाजे के साथ किसी शुद्ध जल वाले जलाशय तक ले जाकर जल में डुबो दें। जिस परिमाण की मूर्ति खण्डित हुई हो उसी परिमाण की दूसरी मूर्ति तैयार करके पहली मूर्ति वाले खाली स्थान पर यथा विधि प्रतिष्ठा करनी चाहिये।

अथ महारूद्रादौ शिववास फलम्:– तिथिं च द्विगुणीकृत्य बाणैः संयोजयेत्ततः।सप्ताभिश्च हरेद्भाग शिववासं समुद्दिशेत्।।एकेन वासः कैलाशे द्वितीये गौरीसंनिधौ।तृतीये वृषभारूढः सभायां च चतुष्टये।। पञ्चमे भोजने चैव क्रीडायां च रसात्मके।श्मशाने सप्तशेषे च शिववासः उदीरितः।।कैलाशे लभते सौख्यं गौर्यां च सुखसम्पदः। वृषभेऽभीष्ट सिद्धिः स्यातसभायां सन्ताप कारिणी।।भोजने च भवेत् पीडा क्रीडायां कष्टमेव च।श्मशाने मरणं ज्ञेयं फलमेव विचारयेत।।

अथ शिववास फल चक्रमिदम् :–

शुक्लपक्षतिथयः	कृष्णपक्षतिथयः	शिववासम्	फलम्
१,८,१५	७,१४	श्मशाने	मृत्युः
२,९	१,८,३०	गौरी सान्निधौ	शुभम्
३,१०	२,९	सभायाम्	तापकारकम्
४,११	३,१०	क्रीडायाम्	विशिष्ट कष्टम्
५,१२	४,११	कैलाशे	सुखम्
६,१३	५,१२	वृषे	श्री प्राप्तिः
७,१४	६,१३	भोजने	कष्ट प्राप्तिः

देवप्रतिष्ठामुहूर्त

देवप्रतिष्ठा	वासराः	तिथयः	नक्षत्राणि	लग्नानि
ब्रहमा, इन्द्र प्र.	सू. बु. गु.	शु.२,३,५,६,७, १०,११,१२,१३	रो.मृ.पु.चि.स्वा. अनु.ज्ये.अभि.श्र.	२,५,८,११
दुर्गादि प्र.	सू. गु. शु.	२,३,५,६,७,८, १०,११,१२,१३	मृ.आ.ह.मू.श्र.	३,६,९,१२
रामादि प्र.	च. बु. गु. शु.	शु.२,३,५,७, १०,११,१२,१३	ह.अभि.श्र.	१,३,५, ७,९,११
सूर्य प्र.	सू. चं. बु. गु. शु.	शु.२,३,५,७, १०,११,१३	अश्वि.रो.मृ.पुन.पु. पूफा.,उफा.ह.अनु. ज्ये.रे.	५
गणेश प्र.	सू. मं. शु. श.	शु.२,३,४,५,६, ७,८,१०,११,१२, १३	आ. पूभा.,उभा. श्र. रे.	३,५,८,११
विष्णु प्र.	चं. बु. गु. शु.	कृ.५,८, शु.५, ८,११,१२,१५	अश्वि.रो.मृ. पुन.पु.उत्तरा ३	६
कृष्ण प्र.	बु. गु.	कृ.५,८,शु. २,३,५,७,८, १०,११,१२,१३, १५	भ.रो.मृ.पुन.उ.३ ह.अनु.श्र.ध.रे.	१,३,५,७, ९,११
शिवलिङ्ग प्र.	सू. चं. मं. गु. श.	शु.२,३,५,६,७, १०,११,१२,१३	अश्वि.रो.मृ.आ. पुन.पु.म.पूफा.ह. स्वा.अनु.ज्ये.मु. अभि.श्र.ध.रे.	२,३,५,८, ११
हनुमान प्र.	सू. चं. मं. गु.	शु.२,३,५,६,७, १०,११,१२,१३	आ.ह.स्वा.श्र.	२,५,८,११

कृष्ण पक्षस्य तिथिगणनायां पञ्चदश संख्या संयोज्यास्मिन् चक्रे फलादेशो निर्दिष्टः।शिव प्रतिष्ठायां महामृत्युञ्जय जपे तथा पार्थिव पूजने शिववासः विचारयेत्।नित्यं शिवपूजने न विचारणीयम्।

महापुराणाना श्रवणे मुहूर्तविचारः (देवीभागवते) गुरूभाद्वेद वेदाब्ज शरांगाब्धि गुणैः क्रमात्।धर्मोप्तिरिन्दिराप्राप्तिः कथासिद्धिः परं सुखम्।।पीडाऽथ भूपतिभयं ज्ञानप्राप्ति क्रमात्फलम्।पुराणश्रवणे चक्रं शोधयेच्छिव भाषितम्।।म.अ. ५१ श्लोक ६।

गुरूनक्षत्रादभिष्टदिनावधिगणयेत्तत्फलानि च चक्रेणस्पष्टम्

नक्षत्राणि	४	४	१	५	६	४	३
फलानि	धर्मप्राप्तिः	लक्ष्मीप्राप्तिः	सिद्धिप्राप्तिः	सुखकरः	कष्टकरः	राजभयम्	ज्ञानप्राप्ति

पुराणादिश्रवणे तिथिवारनक्षत्रलग्नादि बोधकचक्रम्

तिथयः	२,३,५,६,१०,११,१३,१५
वासराः	सू,चं,मं,बु,गु,शु
नक्षत्राणि	अश्वि,कृ,रो,मृ,पुन,पु० उ० ३,ह,चि, स्वा,वि,अनु,श्र०,ध०,शत,रेवती
लग्नाः	सर्वे लग्नराशयः

विशेष :– ऐसे लग्न का चयन करें जब पंचम, नवम में पुरूष राशि (१,३,५,७,९,११) हो यह विचार रामायण, महाभारत एवं समस्त महापुराणों के पारायण तथा श्रवण में करना चाहिये।

गण्डमूल विचारः

अश्वि.,आश्ले.,मघा,ज्ये.,मूल एवं रेवती ये छः नक्षत्र गण्ड मूल कहलाते हैं । इन नक्षत्रों में जन्म लेने वाला माता पिता तथा अपना एवं अपने कुल का नाशक होता है । यदि बालक की बाल्यावस्था में किसी प्रकार की क्षति न हो तो आगे चलकर बालक अपने कुल को रोशन करने वाला होता है।गण्डमूल में उत्पन्न बालक को छः मास अथवा २७ दिन तक नहीं देखना चाहिए। तदन्तर नक्षत्र शान्ति कराकर बालक को देखें ।

स्पष्टार्थगण्डमूलफल चक्र –

नक्षत्र / चरण फल	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ
श्ले.	शन्तिदायक	धनक्षति	मातृहानि	पितृहानि
मघा	मातृपक्ष हानि	पितृभय	सुखसम्पत्ति	धनविद्यालाभ
ज्ये. न.फ.	बड़े भाई के लिए नेष्ट	छोटेभाई की हानि	मातृहानि	स्वय की हानि
मूल	पितृहानि	मातृहानि	धननाश	शान्तिदायक
अश्वि.	पितृभय	सुख,ऐश्वर्य	पदप्रतिष्ठा	यशस्वी
रेवती	नृपसमान	पदप्रतिष्ठा	सुख,ऐश्वर्य	अनेक,कष्ट

– मूलवासचक्र –

जन्ममास	वै.,ज्ये., मार्ग.,फा.	चै.,श्रा., का.,पौ.	आ.,आश्वि. ,माघ,भाद्र.
ज.ल. से चन्द्र	२,५,८,११	३,६,९,१२	१,४,७,१०
निवास	पाताल	पृथ्वी	स्वर्ग
फल	शुभ	अशुभ	शुभ

द्विपुष्कर एवं त्रिपुष्कर योग–
तिथि २,६,१२,वार– शनि,मंगल,रवि,मृग.चि.ध.–नक्षत्र के योग से द्विपुष्कर योग एवं उ.फा.,पू.भा.,पुन.कृ.उ.षा. के योग से त्रिपुष्कर होता है । द्विपुष्कर में द्विगुणित एवं त्रिपुष्कर योग में त्रिगुणित शुभाशुभ फल होता है ।

वर्ज्यतिथि –
षष्ठी मे तेल, अष्टमी मे मांस,चतुर्दशी में क्षौर और अमावस्या में स्त्री भोग नहीं करना चाहिये ।

दोषपरिहार–
शनिवार को षष्ठी हो तो तेल लगाने से, आश्विन शुक्ल महाष्टमी को मांस खाने में, शुक्लपक्ष की चतुर्दशी को क्षौर करने से और दीपावली की अमावस्या को स्त्रीसंभोग करने में दोष नहीं होता है ।

पर्वदिन–अमावस्या,अष्टमी,पूर्णिमा,चर्तुथी एवं रविसंक्रान्ति ये पांच पर्वदिन है ।

वारानुसारेण राहुकालविचारः

रविवार	सायं	४:३०	से	सायं	०६:०० तक
सोमवार	प्रातः	७:३०	से	प्रातः	०९:०० तक
मंगलवार	दिन	३:००	से	दिन	०४:३० तक
बुधवार	दिन	१२:००	से	दोपहर	०१:३० तक
गुरुवार	दोपहर	०१:३०	से	दिवा	०३:०० तक
शुक्रवार	दिन	१०:३०	से	दिन	१२:०० तक
शनिवार	दिन	०९:००	से	दिन	१०:३० तक

पञ्चक विचार

धनिष्ठार्द्धोत्तरं पञ्च ऋक्षेष्वेषुत्यजेद् बुधः। याम्यादिगमनं शय्या पूरणं गेहगोपनम्।। स्तम्भोच्छ्रयं प्रेतदाहं तृणकाष्ठादि संग्रहम्।भवेत् पञ्चगुणं चात्र जातं लब्धं मृतं मतम्।

धनिष्ठा के उत्तरर्ध से रेवती तक ये पांच नक्षत्र पञ्चक कहलाते है । इसमें दक्षिण की यात्रा,घर का छाना, शव दाह करना,तृण एवं काष्ठ का संग्रह करना, चारपाई बुनना एवं विवाह का मण्डप छाना वर्जित है । इसमें शुभाशुभ कार्यो का पंचगुण फल होता है ।उक्त नक्षत्रों का पूर्वार्ध दाह एवं तृण संग्रह में अधिक दोषकारक नहीं होता किन्तु धनिष्ठा के संपूर्णकाल निषेध है। पूर्वार्धे नाति दोषाय दाहतक्षणसंग्रहे।यान गोपनशय्यां सम्पूर्ण वासवं त्यजेत् ।।कुछ विद्वान धनिष्ठा नक्षत्र के सम्पूर्ण मान ग्रहण करते है । ''पञ्चभानि धनिष्ठातः पञ्चकं परिकीर्त्यते ।''

पञ्चकपरिहार –वस्वादौ शतभे मध्ये पूर्वादौ चोत्तरान्तके ।पञ्च पञ्च घटी त्याज्यो रेवती सकलं त्यजेत् ।

नक्षत्र	धनि.	शत.	पू.भाद्र.	उ.भाद्र.	रेवती
त्या.घटी	आदि ५	मध्य ५	आदि ५	अन्त ५	सम्पूर्ण

बाणपञ्चकविचार

यत्रायां चौरबाणं तु व्रते रोगं त्यजेत बुधः।विवाहे मृत्युबाणं च नृपाख्यं नृपसेवया।गृहस्याच्छादने वह्निं वर्जयेत्सर्वदा बुधैः।वारके अनुसारबाण की *अशुभता*–मुहूर्तमार्तण्डे– नार्क्यरवारे यदि रोगपञ्चकं सोमेषु राज्यं क्षितिजे च वह्निः।बुधेषु मृत्युः सुरमंत्री चौरे अन्यदिने शुभश्च।।सूर्य,मंगलवार को रोगबाण, सोम को नृप,मंगल को अग्नि, बुध को मृत्यु और गुरुवार को चौर बाण अशुभ होता है। अन्यवारों में शुभ होता है ।

बाणपरिहारः–रोगं चौरं त्यजेद्रात्रौ दिवा राजाग्निपञ्चकम्।उभयोः सन्ध्ययोर्मृत्युमन्यकाले न निन्दितम्।रोग व चोरबाण रात में, नृप व अग्निबाण दिन में और दोनों सन्ध्याओं में मृत्युबाण का त्याग करना चाहिए । अन्य समय में बाण निन्दित नहीं होते ।

स्वयंसिद्ध पांच मुहूर्त – चैत्रशुक्लप्रतिपदा, वैशाख शुक्लतृतीया (अक्षयतृतीया),विजयदशमी, दीपावली, वसन्त पंचमी ये पाँचों सिद्ध मुहूर्त कहलाते हैं ।इन सभी मुहूर्तों में शुभ कार्य करने के लिए तिथि नक्षत्र आदि का विचार अनिवार्य नहीं है ।

राहुपथिकज्ञानार्थचक्र–
धर्मनक्षत्र – अश्वि.,पु.,आश्ले.,वि.,अनु.,ध.,श.।
अर्थनक्षत्र – भ.,पुन.,म.,स्वा.,ज्ये.,श्र.,पू.भा.।
कामनक्षत्र– कृ,आ.,पू.फा.,चि.,मू.,अभि.,उ.भा.।
मोक्षनक्षत्र– रो.,मृ.,उ.फा.,ह.,पू.षा.,उ.षा.,रे.।

यात्रा के शुभाशुभ नक्षत्र विवेचन

सर्व दिग्गमन नक्षत्र : अश्वि.,पुन.,पु.,रे., ह.,श्र.,ध।
सर्वदाशुभ :अश्वि.,पु.,ह.,अनु.।मध्यम :म.उ.३,पू.३ ,ज्ये.मू.श.।

आवश्यक यात्रा में	पू.३	कृ.	म.	भ.	स्वा.	ज्ये.	वि.	आश्ले.	चि.
त्याज्यघटी	१६	२१	११	७	१४	१४	१४	१२	उत्तरार्ध

नक्षत्र दिकशूल

दिशा	पूर्व	पश्चिम	उत्तर	दक्षिण
त्याज्य नक्षत्र	ज्ये.,श्र.	पु.,रो.	उ.फा.,ह.	अश्वि.,पू. भाद्र.

नक्षत्रकालशूल विचार

काल	पूर्वाह्न	मध्याह्न	अपराह्न	रात्रिपूर्व	अर्धरात्रि	रात्रि के उत्तरार्ध
नक्षत्र	कृ.रो. उ.३,वि.	आ.श्ले. ज्ये.मू.	अश्वि.पू.ह. अभि.	मृग.चि. अनु.रे.	भ.,म. पू.३	पुन.स्वा. ध.श.

सर्वविदिकशूल ज्ञानार्थ चक्र

दिशा	पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैर्ऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान
वार	च.,श.	च.,श.	गुरु	गुरु	सू.,शु.	सू.,शु.	मं.,बु.	मं.,बु.

समयशूलज्ञानार्थचक्रम्

पूर्व	पश्चिम	दक्षिण	उत्तर
प्रातःकाल	सायंकाल	मध्याह्नकाल	अर्धरात्रि

तिथिदिक्शूल ज्ञानार्थचक्रम्

दिशा	पूर्व	पश्चिम	उत्तर	दक्षिण
त्या. ति.	१,९	६,१४	२,१०	५,१३

आवश्यकयात्रा में वार दोष परिहार

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
घृत	दुध	गुड़	तिल	दही	यव	उड़द

चन्द्रवासज्ञानार्थचक्रम्

दिशा	पूर्व	पश्चिम	उत्तर	दक्षिण
राशि	१,५,९	३,७,११	४,८,१२	२,६,१०

चन्द्रमा के फल

सम्मुखे चार्थलाभाय दक्षिणे सुखसम्पदः।पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षयः।सर्वेदोषालयं यान्ति पूर्णे चन्द्रे हि सम्मुखे । सम्मुख चन्द्रमा होने पर यात्रा में वर्णित सभी कुयोगों का नाश करता है।करणभगणदोषं वारसंक्रान्तिदोषं,कुतिथिगुलिकदोषं यमयामार्द्धदोषं।कुजशनिरविदोषं राहुकेत्वादिदोषं हरति सकलदोषं चन्द्रमाः सम्मुखस्थः।।

राहुपथिफलविचारः

सूर्ये धर्मगते चन्द्रे धने मोक्षे शुभप्रदः ।
सूर्ये धनगते धर्ममोक्षमार्गे शुभःशशी ।।
कामेऽर्के धर्ममोक्षार्थे सस्यश्चन्द्रो जयप्रदः।
मोक्षेऽर्के धर्मगश्चैव शुभोऽन्यत्र न शोभनः ।।

राहुवारविचार

वार	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राहुवास	पश्चिम	आग्नेय	वायव्य	उत्तर	दक्षिण	नैर्ऋत्य	ईशान

यामार्द्धात्मकराहुविचार

यामार्द्ध का मान १:३० मिनट होता है ।
इसका विचार स्थानीय सूर्योदय से करना चाहिए ।

प्रहरार्द्ध	१	२	३	४	५	६	७	८
राहुवासदिवा	पूर्व	वायव्य	दक्षिण	ईशान	पश्चिम	आग्नेय	उत्तर	नैर्ऋत्य
राहुवासरात्रि	पश्चिम	आग्नेय	उत्तर	नैर्ऋत्य	पूर्व	वायव्य	दक्षिण	ईशान

मुहूर्तराहुविचार

मुहूर्त	१	२	३	४	५	६	७	८
राहुवास	ईशान	दक्षिण	वायव्य	पूर्व	नैर्ऋत्य	उत्तर	आग्नेय	पश्चिम

दिन या रात्रि के १६वां भाग मुहूर्त कहलाता है। (दिनस्य षोडशांशेन मुहूर्तः परिकीर्तितः) मुहूर्त का मान ४५ मिनट का होता है । २४घंटों में राहु ४ बार परिभ्रमण करता है ।उर्पयुक्त विविध प्रकारों से ज्ञातव्य राहु के सम्मुख तिरछा या बायीं ओर संस्थिति होने पर यात्रा,द्यूत (जुआ),चौपड़ का खेल, भाग्य परीक्षण,युद्ध, वादविवाद एवं शास्त्रार्थ आदि कार्य परित्याज्य है ।

काल राहुवास विचार –

पूर्व	अग्नि	दक्षिण	नैर्ऋ.	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	दिशा
शनि	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	सोम	रवि	वार

वारयोगिनीविचार

वार	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
दिशा	पूर्व	उत्तर	आग्नेय	नैर्ऋत्य	दक्षिण	पश्चिम	वायव्य

योगिनीवासज्ञानार्थ चक्रम्

दिशा	पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैर्ऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान
तिथि	१,९	३,११	५,१३	४,१२	६,१४	७,१५	२,१०	८,३०
योगिनी	ब्राह्मी	कौमारी	वाराही	वैष्णवी	इन्द्राणी	चण्डिका	माहेश्वरी	महालक्ष्मी

योगिनी फलविचारः

योगिनी सुखदावामे पृष्ठे वांछितदायिनी ।
दक्षिणे सुखहन्त्री च सम्मुखे मरणप्रदाः ।।

दिग्द्वारराशिलग्न विचार

दिशा	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
शुभ	१,५,९	२,६,१०	३,७,११	४,८,१२
मध्यम	२,६,१०	३,७,११	४,८,१२	१,५,९
भयकारक	४,८,१२	१,५,९	२,६,१०	३,७,११
महाभयकारक	३,७,११	४,८,१२	१,५,९	२,६,१०

दिन के चौघड़िया मुहूर्त

समय सूर्योदय से १:३० घ. प्रति चौघड़िया होता है।
रात्रि चौघड़ियामूहुर्त सूर्यास्त से गणना करनी चाहिए।

रवि	सोम	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
उत्पात	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
चर	काल	उत्पात	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
लाभ	शुभ	चर	काल	उत्पात	अमृत	रोग
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उत्पात
काल	उत्पात	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
शुभ	चर	काल	उत्पात	अमृत	रोग	लाभ
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उत्पात	अमृत
उत्पात	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल

रात्रि के चौघड़िया मुहूर्त

रवि	सोम	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
शुभ	चर	काल	उत्पात	अमृत	रोग	लाभ
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उत्पात
चर	काल	उत्पात	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उत्पात	अमृत
काल	उत्पात	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
लाभ	शुभ	चर	काल	उत्पात	अमृत	रोग
उत्पात	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
शुभ	चर	काल	उत्पात	अमृत	रोग	लाभ

लाभ,शुभ,अमृत, चर ये चार चौघड़िया शुभ एवं अन्य अशुभ होते हैं ।

भद्राविचार

शुक्ले पूर्वार्धेऽष्टमी पंचदश्योर्भद्रैकादश्यौं चतुर्थ्यां परार्धे। कृष्णेऽन्त्यार्धे स्याचृतीया दशम्योः पूर्वेभागे सप्तमीशम्भुतिथ्योः ।

भद्राज्ञानार्थ चक्र

पक्ष	कृष्णपक्ष				शुक्लपक्ष			
तिथि	३	७	१०	१४	४	८	११	१५
पूर्वार्धे	×	भद्रा	×	भद्रा	×	भद्रा	×	भद्रा
उत्तरार्धे	भद्रा	×	भद्रा	×	भद्रा	×	भद्रा	×

भद्रानिवासज्ञान

स्थान	मृत्युलोक	स्वर्गलोक	पाताललोक
चन्द्रराशि	४,५,११,१२	१,२,३,८	६,७,९,१०
भद्रामुख	सम्मुख	उर्ध्वमुख	अधोमुख

मेषवृषभमिथुनालि निस्वर्गे कन्यामृगधनुतौलिनिनागे।कर्ककुम्भहरिमीने मर्त्ये विचरति भद्रा त्रिभुवन मध्ये।स्वर्गे भद्रा शुभं कुर्यात् पाताले च धनागमम् ।मृत्युलोके यदा भद्रा सर्वकार्य विनाशिनि।।सम्मुखे मृत्युलोकस्था पाताले च अधोमुखी।उंर्ध्वस्था स्वर्गगा भद्रा सम्मुखे मरणप्रदा ।।

भद्रापरिहार–दिवाभद्रा यदा रात्रौ रात्रिभद्रा यदादिने।
तदा विष्टि कृते-दोषो न भवेत्सर्वसौख्यदा ।।

सर्वसिद्ध कालहोरा मुहूर्त

यस्य ग्रहस्य वारेषु यत्किञ्चित्कर्मप्रकीर्तितम्। तत्तस्य ग्रहस्य कालहोरायां सर्वे मेव विधीयते।।
षष्ठः षष्ठश्चेतरेषां कालहोराधिपाः स्मृताः । सार्धनाडीद्वयेनेव दिवारात्रं यथा क्रमात् ।।

दिन	हो. १	हो. २	हो. ३	हो. ४	हो. ५	हो. ६	हो. ७	हो. ८	हो. ९	हो. १०	हो. ११	हो. १२	हो. १३	हो. १४	हो. १५	हो. १६	हो. १७	हो. १८	हो. १९	हो. २०	हो. २१	हो. २२	हो. २३	हो. २४
रवि	र.	शु.	बु.	सो.	श.	बृ.	मं	र.	शु.	बु.	सो	श.	बृ.	मं	र.	शु.	बु.	सो.	श.	बृ.	मं.	र.	शु.	बु.
सोम	सो.	श.	वृ.	मं.	र.	शु.	बु.	सो	श.	वृ.	मं.	र.	शु.	बु.	सो.	श.	वृ.	मं.	र.	शु.	बु.	सो.	श.	वृ
मंगल	मं.	र.	शु.	बु.	सो.	शु.	वृ.	मं.	र.	शु.	बु.	सो.	श.	वृ.	मं.	र.	शु.	बु.	सो.	श.	वृ.	मं.	र.	शु.
बुध	बु.	सो.	श.	वृ.	मं.	र.	शु.	बु.	सो.	श.	वृ.	मं.	र.	शु.	बु.	सो.	श.	वृ.	मं.	र.	शु.	बु.	सो.	श.
बृह	वृ.	मं.	र.	शु.	बु.	सो.	श.	वृ.	मं.	र.	शु.	बु.	सो.	श.	वृ.	मं.	र.	शु.	बु.	सो.	श.	वृ.	मं.	र.
शुक्र	शु.	बु.	सो.	श.	वृ.	मं.	र.	शु.	बु.	सो.	श.	वृ.	मं.	र.	शु.	बु.	सो.	श.	वृ.	मं.	र.	शु.	बु.	सो.
शनि	श.	वृ.	मं.	र.	शु.	बु.	सो.	श.	वृ.	मं.	र.	शु.	बु.	सो.	श.	वृ.	मं.	र.	शु.	बु.	सो.	श.	वृ.	मं.

प्रत्येक होरा एक घन्टे = २.३० दण्ड या घटी का होता है,उस वार की प्रवृत्ति काल सामान्यतः स्थानीय सूर्योदय के समय से एक घण्टा तक उसी वार की होरा, उसके बाद दूसरी उसके छठे वार की होरा इस क्रम से दिन रात २४ घन्टे में २४ होराओं का क्रम रहता है।

प्रथमादि मास में बालक के दांत निकलने का फल

मासफल	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
	स्वयं नाश	अनुज नाश	भगिनी नाश	मातृ नाश	ज्येष्ठभ्रातान	सुयोग	तात सुख	पुष्ठत्व	लक्ष्मी प्राप्ति	सौख्यम्	सौख्यम्	धनसम्पत्ति
	अथ जनोः सदशनावोर्च स्वपित्रादिहा।तदर्थशान्तिविधेयः।											

माहेन्द्रादि योगफलम्

न वार – तिथि – नक्षत्रं न योगः करणं तथा ।
शिवस्याज्ञां समासाद्य देवकार्यं विचारयेत् ।।
माहेन्द्रे विजयो नित्यममृते कार्यशोभनम् ।
वक्रे कार्यविनाशः स्याच्छून्ये च मरणं ध्रुवम् ।।
ज्योतिषां ग्रहशास्त्राणां सारमुद्धृत्य यत्नतः ।
क्रियते मिहिरेणेदं नराणां हितकाम्यया ।।

अयं रव्यादिवारेषु माहेन्द्रादियोगः प्रोक्तदण्डप्रमाणकालेन व्यतीतो भवतीति चक्रे विलोकनीयम् ।

ग्रहशान्तिः

हेतु रत्नों का उपयोग उनके लिए है जो यज्ञ (प्राणायाम सर्वोत्तम यज्ञ है–गीता; आदि शङ्कराचार्य ने भी कहा कि यज्ञ शरीर में होता है),दान देने और तप करने में असमर्थ है।सन्ध्यावन्दनादि नित्यकर्म सहित अशुभ ग्रह का वैदिक मन्त्रजप,ब्रह्मचर्यादि यमनियम का कठोरता से पालन,यथाशक्ति प्राणायाम, हविष्य पदार्थ का भोजन (भोजन में लवण, मिर्च,मसाले,तेल,आदि का पूर्ण त्याग), स्वयंपाक,रातभर शवासन,इत्यादि तपश्चर्या एवं सन्यासियों को दानःयह सब ग्रहशान्ति का सर्वोत्तम उपाय है। विगत जीवन में कोई पाप हो गया हो तो बिना प्रायश्चित के ग्रहशान्ति का प्रयास बेकार है। ह्रदयशुद्धि ही ग्रहशान्ति है। पिछले जन्मों के कर्मों में जो बलवान होते हैं वे ही वर्तमान जन्म के कारक हैं तथा वे कर्म (संस्कार) ही जन्मकुण्डली का स्वरूप निर्धारित करते हैं। पूर्वकर्मों का फल ही ग्रहों द्वारा मिलता है। अतः संस्कारशुद्धि ग्रहशान्ति का एकमात्र सही उपाय है। बिना तप के संस्कार नहीं सुधरता।

माहेन्द्रादि योगचक्र

रविवार को सूर्योदय के बाद २ घटी माहेन्द्रयोग,अगली ८ घटी अमृतयोग,आदि है।इसी प्रकार पूरी सारिणी पढ़ें।

चैत्र,वैशाख,श्रावण, भाद्र,माघ,फाल्गुन

रवि	मा २,अ ८,व १०,शू ८,मा २,शू २,अ ६,शू ८,व ६,मा २,व ४,अ २
सोम	मा ४,शू ६,अ ६,व ६,मा २,अ २,शू ४,व २,मा ६,व ८,अ ८,व ६
मङ्गल	व ४,शू २,मा ६,व ४,शू २,अ ४,शू ४,अ ६,व ४,शू २,व ८,अ ६,शू ४,अ ४
बुध	व ४,अ ४,व ६,अ ४,शू २,व ४,मा २,व ४,शू ४,अ ६,शू ६,व ८,अ ६
गुरु	व ६,शू ४,व ४,अ ६,व ६,अ ४,व ४,मा ४,अ २,व ८,अ ४,शू ४,अ ४
शुक्र	शु २,अ १६,व ८,अ २,शू २,व ४,शू ६ अ ६,व ८,अ २,शू २
शनि	शू४,व४,श६,अ४,श२,अ४,शू२,अ४,शू४,व४,अ४,व४,अ६,व४,अ२,शू२

आश्विन,कार्त्तिक, मार्गशीर्ष,पौष

रवि	मा ६,व ८,अ ८,शू २,मा ४,शू ६,व ४,अ ४,व ४,अ ६,शू ४,अ ४
सोम	अ ४,व ४,अ ६,व २२,अ ८,व ७,अ ४,व ५
मङ्गल	मा २,शू ६,अ १०,व ६,शू २,व १२,अ २,शू २,अ ६,व ४,मा ४,व ४
बुध	शू ४,अ ४,मा ६,शू ४,व ६,शू २,व ८,अ ४,व ८,अ ६,शू ८
गुरु	अ ४,व ६,अ ८,शू ४,व ६,शू ४,अ ८,व ६,अ ६,व ६,मा २
शुक्र	अ २,व ६,शू ६,व ६,अ ८,व ६,अ ८,शू ४,मा २,व ६,मा ६
शनि	मा ४,शू ४,अ ८,शू ८,अ ४,शू २,व ११,शू ४,व ७,मा २,शू ६

ज्येष्ठ, आषाढ़

रवि	शू ४,अ ६,व ६,अ ६,शू २,व ४,अ २,शू ४,मा ६,शू ४,व ६,शू २,मा ४,व ४
सोम	व ८,अ ४,शू ६,अ ६,मा ६,व ६,अ ८,व ४,अ ४,शू ४,व ४
मङ्गल	अ४,शू४,व४,श२,अ४,व२,मा८,श२,व६,अ६,शू२,व४,अ२,शू२,अ६,व२
बुध	शू २,व ४,अ ८,व ६,अ ८,शू २,अ १०,शू २,व ८,अ ६,शू २,अ २
गुरु	अ २,शू २,अ ४,व ८,अ ६,शू २,व ६,शू ४,अ ४,शू २,व ६,अ ६,शू ४,व ४
शुक्र	शू ४,अ १४,व ८,अ २,शू २,व ४,शू २,अ ६,शू ६,व ८,मा २,शू २
शनि	शू ४,व ६,अ ६,शू २,व ४,अ ४,शू ६,व ६,अ ४,व ४,अ ४,शू २,अ ४,व ६

मा =माहेन्द्र; व =वक्र; अ =अमृत; शू = शून्य ॥
यात्रादि परमावश्यक कार्य में इस चक्र के शुभ काल (माहेन्द्र, अमृत) में कर्म करें। वक्र एवं

शतपदचक्रम् (होडाचक्रम्)

नक्षत्र वर्ण	चु,चे चो,ल	लि,लु ले,लो	अ,इ उ,ए	ओ,व वि,वु	वे,वो क,कि	कु,घ ङ,छ	के,को ह,हि	हु,हे हो,ड	डि,डु डे,डो	म,मि मु,मे	मो,ट टि,टु	टे,टो प,पि	पु,ष ण,ठ	पे,पो र,रि	रु,रे रो,त	ति,तु ते,तो	न,नि नु,ने	नो,य यि,यु	ये,यो भ,भि	भु,ध फ,ढ	भे,भो ज,जि	खि,खु खे,खो	ग,गि गु,गे	गो,स सि,सु	से,सो द,दि	दु,थ झ,ञ	दे,दो च,चि
नक्षत्र	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू.फ	उ.फ	हस्त	चित्रा	स्वाती	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा	उ.षा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भा	उ.भा	रेवती
राशि	मेष	मेष	मेष १ वृष ३	वृष	वृष २ मिथुन २	मिथुन	मिथुन ३ कर्क १	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह १ कन्या ३	कन्या	कन्या २ तुला २	तुला	तुला ३ वृश्चिक १	वृश्चिक	वृश्चिक	धनु	धनु	धनु १ मकर ३	मकर	मकर २ कुम्भ २	कुम्भ	कुम्भ ३ मीन १	मीन	मीन
वर्ण	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्षत्रिय १ वैश्य ३	वैश्य	वैश्य २ शूद्र २	शूद्र	शूद्र ३ विप्र १	विप्र	विप्र	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्षत्रिय १ वैश्य ३	वैश्य	वैश्य २ शूद्र २	शूद्र	शूद्र ३ विप्र १	विप्र	विप्र	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्षत्रिय १ वैश्य ३	वैश्य	वैश्य २ शूद्र २	शूद्र	शूद्र ३ विप्र १	विप्र	विप्र
वश्य	चतुष्पद	चतु.	चतु.	चतु.	चतु.२ मानव २	मानव	मानव ३ जलचर १	जल.	जल.	वनचर	वन.	वन.१ मानव ३	मानव	मानव	मानव	मानव ३ कीट १	कीट	कीट	मानव	मानव॥ चतु.३॥	चतु.	चतु.१॥ जल.२॥	जल.२ मानव २	मानव	मानव ३ जल.१	जल.	जल.
योनि	अश्व	गज	मेष	सर्प	सर्प	श्वान	मार्जार	मेष	मार्जार	मूषक	मूषक	गो	महिष	व्याघ्र	महिष	व्याघ्र	मृग	मृग	श्वान	वानर	नकुल	वानर	सिंह	अश्व	सिंह	गो	गज
योनिवैर	महिष	सिंह	वानर	नकुल	नकुल	मृग	मूषक	वानर	मूषक	मार्जार	मार्जार	व्याघ्र	अश्व	गो	अश्व	गो	श्वान	श्वान	मृग	मेष	सर्प	मेष	गज	महिष	गज	व्याघ्र	सिंह
राशीश	मङ्गल	मङ्गल	मङ्गल १ शुक्र ३	शुक्र	शुक्र २ बुध २	बुध	बुध ३ चन्द्र १	चन्द्र	चन्द्र	सूर्य	सूर्य	सूर्य १ बुध ३	बुध	बुध २ शुक्र २	शुक्र	शुक्र ३ मङ्गल १	मङ्गल	मङ्गल	गुरु	गुरु	गुरु १ शनि ३	शनि	शनि	शनि	शनि ३ गुरु १	गुरु	गुरु
गण	देव	मानव	राक्षस	मानव	देव	मानव	देव	देव	राक्षस	राक्षस	मानव	मानव	देव	राक्षस	देव	राक्षस	देव	राक्षस	राक्षस	मानव	मानव	देव	राक्षस	राक्षस	मानव	मानव	देव
नाड़ी	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य

① वर्णगुण : वर

कन्या — वर्ण	विप्र	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र
विप्र	१	0	0	0
क्षत्रिय	१	१	0	0
वैश्य	१	१	१	0
शूद्र	१	१	१	१

② वश्यगुण : वर

कन्या — वश्य	चतुष्पद	द्विपद	जलचर	वनचर	कीट
चतुष्पद	२	१	१	0	१
द्विपद	१	२	।	0	१
जलचर	१	।	२	१	१
वनचर	0	0	१	२	0
कीट	१	१	१	0	२

⑤ ग्रहमैत्रीगुण : वर

कन्या — वश्य	सूर्य	चन्द्र	मङ्गल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सूर्य	५	५	५	४	५	0	0
चन्द्र	५	५	४	१	४	।	।
मङ्गल	५	४	५	।	५	३	।
बुध	४	१	।	५	।	५	४
गुरु	५	४	५	।	५	।	३
शुक्र	0	।	३	५	।	५	५
शनि	0	।	।	४	३	५	५

⑥ गणगुण : वर

कन्या — वर्ण	देव	मानव	राक्षस
देव	६	५	१
मानव	६	६	0
राक्षस	0	0	६

⑧ नाडीगुण : वर

कन्या — वर्ण	आदि	मध्य	अन्त
आदि	0	८	८
मध्य	८	0	८
अन्त	८	८	0

अष्टवर्ग–अधिपति

अ	क	च	ट
गरुड़	मार्जार	सिंह	श्वान
त	प	य	श
सर्प	मूषक	मृग	मेष

③ तारागुण : वर

कन्या — वश्य	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१,२,४,६,८,९	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
३,५,७	१॥	१॥	0	१॥	0	१॥	0	१॥	१॥

विवाहलग्न के लग्नेश वा नवांशेश १, ४, ७, १०, ११ में हों तो अनेक दोष नष्ट होते हैं ।

④ योनिकूटगुण : वर

कन्या — योनि	अश्व	गज	मेष	सर्प	श्वान	मार्जार	मूषक	गो	महिष	व्याघ्र	मृग	वानर	नकुल	सिंह
अश्व	४	२	३	२	२	२	२	३	0	१	३	२	२	१
गज	२	४	३	२	२	२	२	२	३	१	२	३	२	0
मेष	३	३	४	२	१	२	१	३	३	१	३	0	३	१
सर्प	२	२	२	४	२	१	१	१	१	२	२	२	0	२
श्वान	२	२	१	२	४	२	१	२	२	१	0	२	१	१
मार्जार	२	२	३	२	१	४	0	२	२	१	३	३	२	१
मूषक	२	२	२	१	१	0	४	२	२	२	२	२	१	१
गो	३	२	३	१	२	२	२	४	३	0	३	२	२	१
महिष	0	३	३	१	२	२	२	३	४	१	२	२	२	१
व्याघ्र	१	१	१	२	१	२	२	0	१	४	१	१	२	१
मृग	३	२	३	२	0	३	२	३	२	१	४	२	२	१
वानर	२	३	0	२	२	३	२	२	२	१	२	४	३	२
नकुल	२	२	३	0	१	२	२	२	२	२	२	३	४	२
सिंह	१	0	१	२	१	१	१	१	१	२	१	२	२	४

⑦ राशिकूटगुण : वर

कन्या — राशि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
मे १	७	0	७	७	0	0	७	0	0	७	७	0
वृ २	0	७	0	७	७	0	0	७	0	0	७	७
मि ३	७	0	७	0	७	७	0	0	७	0	0	७
क ४	७	७	0	७	0	७	७	0	0	७	0	0
सिं ५	0	७	७	0	७	0	७	७	0	0	७	0
क ६	0	0	७	७	0	७	0	७	७	0	0	७
तु ७	७	0	0	७	७	0	७	0	७	७	0	0
वृ ८	0	७	0	0	७	७	0	७	0	७	७	0
ध ९	0	0	७	0	0	७	७	0	७	0	७	७
म १०	७	0	0	७	0	0	७	७	0	७	0	७
कु ११	७	७	0	0	७	0	0	७	७	0	७	0
मी १२	0	७	७	0	0	७	0	0	७	७	0	७

नैसर्गिक ग्रहमैत्री चक्र

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
मित्र	चं. मं. गु.	सू. बु.	सू. चं. गु.	सू. शु.	सू. चं. मं.	बु. श.	बु. शु.
सम	बु.	मं. गु. शु. श.	शु. श.	मं. गु. श.	श.	मं. गु.	गु.
शत्रु	शु. श.	×	बु.	चं.	बु. शु.	सू. चं.	सू. चं. मं.

पंच शलाका चक्र

कृ रो मृ आ पुन पु श्ले — म पूफ उफ हस्त चित्रा स्वा वि — श्र अभि उषा पूषा मू ज्ये अनु

अष्टकूट के योग द्वारा मेलापक सारिणी बनती है।

विवाह में रेखाप्रद ग्रहाङ्क

ग्रह	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श
ग्रहाङ्क	१॥	५	१॥	२	३	२	१॥

=राहुकेतु शनिवत्। सू.श.रा.के. ३,६,८,११; चं.२,३,११; मं.३,६,११; बु.गु.१,२,३,४,५,६,९,१०,११; शु.१,२,३,४,५,८,९,१०,११: इन भावों में स्थित ग्रहों के रेखाप्रद-ग्रहाङ्कों के संयोजन द्वारा विवाहलग्न में ग्रहबल की विंशा (=कुल बलाङ्क) निकालें।

विवाह में रविचन्द्रगुरुशुद्धि

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	गुरु
शुभ	३,६,१०,११	३,६,७,१०,११	२,५,७,९,११
पूज्य	१,२,५,७,९	१,२,५,९	१,३,६,१०
निन्द्य	४,८,१२	४,८,१२	४,८,१२

सूचना : कई पञ्चाङ्गों की मेलापक सारिणियाँ अशुद्ध हैं। मेलापक कम से कम १८ हो तभी विवाह शुभ माना जाता है, किन्तु अनेक पञ्चाङ्गों के मेलापक में १० अङ्कों की भयङ्कर त्रुटि है, जिसका कारण है राशिकूट एवं योनिकूट का मनमाना निर्धारण। उदाहरणार्थ, तुला की कन्या और तुला का ही वर हो तो राशिकूट गुण ७ होगा, किन्तु कुछ पञ्चाङ्ग शून्य दिखाते हैं। कई पञ्चाङ्ग बिना जाँच किये अन्य पञ्चाङ्गों की ही सारिणी उतार लेते हैं! अतः एक पञ्चाङ्ग की त्रुटि अन्य पञ्चाङ्गों में चली जाती है। उदाहरणार्थ, अधिकांश पञ्चाङ्ग महिष योनि की कन्या एवं अश्वयोनि के वर का गुण १ लिखते हैं, जबकि शास्त्रानुसार शून्य होना चाहिये। प्रस्तुत मेलापकचक्र में ऐसा कोई दोष नहीं है। मुहूर्तचिन्तामणि की पद्धति के अनुसार कम्प्यूटर-सॉफ्टवेयर द्वारा यह सारिणी तैयार की गई है। **विवाह का शुद्ध काल** ज्ञात करने के लिए इष्ट मुहूर्तकाल में विभिन्न लग्नों की जाँच ऊपर दी गई 'विवाह में रविचन्द्रगुरुशुद्धि' एवं 'विवाह में रेखाप्रद ग्रहाङ्क' सारिणियाँ प्रयोग करें। 卐

गुण विचार –वर्णादि अष्टकूटों के प्रतिज्ञा क्रमानुसार गुणों का योग ३६ होता है। सम्पूर्ण कूटों का पृथक्–पृथक् अथवा ''गुण सम्पात–कोष्ठक'' के द्वारा विचार करने पर यदि गुण योग १६ आये तो वह निन्दनीय होता है । १७ से २० तक सामान्य, २१ से ३० तक उत्तम,३१ से ३६ तक सर्वोत्कृष्ट होता है । यथा– ज्योतिर्निबन्धे –**गुणैः षोडशभिर्निन्द्यं मध्यमा विंशतिस्तथा। श्रेष्ठं त्रिंशद्गुणं यावत्परतस्तूत्तमोत्तमम्** ।। सामान्यतः १८ गुणों से अधिक गुण मिलने पर मेलापक ग्राह्य होता है । **परिहारः** – मेलापक मे ग्रह मैत्री प्राप्त होने पर वर्ग,वर्ण,योनि, नवपंचम,द्विर्द्वाश, षडाष्टक, नृदूरदोष तथा सभी कूट दोष समाप्त हो जाते हैं । यथा – वृहद्ज्योतिसारे –**न वर्ग वर्णो न गणो न योनिर्द्विर्द्वादशे चैव षडष्टके वा ।ताराविरुद्धे नवपंचमे वा मैत्री यदा स्याच्छुभदोविवाहः ।।भकूट परिहार**– वर कन्या के राशि पतियों के मैत्री न होने पर भी राशिनवांशपति परस्पर मित्र हों तो विवाह शुभदायक होता है। **राशिनाथे विरुद्धेऽपि सबलावंशकाधिपौ ।तन्मैत्रेऽपि च कर्तव्य दाम्पत्योः शुभमिक्षितः** ।। राशि पार्थक्य एवं नक्षत्रैक्य या नक्षत्र भेद और राशि की एकता हो तो ग्रह वैर नगण्य होता है । **गण दोष परिहार** – सद्भकूट, योनिशुद्धि तथा ग्रह मित्रता में से एक भी प्राप्त हो तो कन्या के राक्षस आदि गण दोषों की समाप्ति हो जाती है ।**सद्भकूटं योनिशुद्धिग्रहसख्यं गुणत्रयम्।एष्वेकतमेसद्भावे कन्या रक्षोगणा शुभः।।नाड़ी दोष परिहार**– १.गोदावरी के दक्षिण स्थित नासिक,मुम्बई,पूना,सोलापुर इत्यादि दक्षिणक्षेत्र एवं मैसूर, मद्रास, आन्ध्रप्रदेश आदि समस्त भारत में सभी वर्णो के लिए नाड़ी दोष अविचारणीय होता है । **गोदावरीदक्षिणतो यावद्यमलयानिलः त्यजन्ति तेषु देशेषु नाडैक्यं न करग्रहे** ।२. यदि वर वधू की राशि एक हो और जन्म नक्षत्र मे भिन्नता हो अथवा जन्म नक्षत्र एक हो और राशि में भिन्नता हो तो नाड़ी दोष नगण्य होता है ।३. कृत्तिका,रोहिणी,आर्द्रा,मृगशिरा, पुष्य,ज्येष्ठा,श्रवण,उत्तरा भाद्रपद एवं रेवती नक्षत्र होने पर वर वधू को नाड़ी दोष नहीं होता है ।तदुक्तम् – ज्योतिश्चिन्तामणौ – **रोहिण्यार्द्रामृगेन्द्राग्नि पुष्यश्रवणपौष्णभम् ।अहिर्बुध्न्यर्क्ष मेतेषां नाडी दोषो न विद्यते** ।।४. यदि पुरुष स्त्री दोनों का राशि पति गुरु,बुध,शुक्र में से कोई एक ग्रह हो तो नाड़ी दोष नहीं होता है ।**शुक्रःसौम्यो तथा जीवः एक राशीश्वरो यदि ।नाडीदोषो न वक्तव्यः सर्वथा यत्नतो बुधैः** ।।५. नाड़ी दोष की शान्ति के लिए महामृत्युञ्जय मंत्र का जप करके स्वर्णरत्न अथवा गौ,अन्न,वस्त्र आदि देना चाहिए। **हेमाज्यरत्नगोदानं मृत्युञ्जयजपस्तथा । कुर्याद्वैश्यमुद्वाहे नाडी दोषाऽपनुत्तये** ।।अन्यच्च – **नाडीदोषस्तु विप्राणां वर्णदोषश्च क्षत्रिये । गणदोषश्च वैश्येषु योनिदोषस्तु पादजान्** । *विवाहे में त्याज्य*–① आपस्तम्ब के अनुसार वर वधू का समान गोत्र प्रवर में विवाह नहीं करना चाहिए । यदि ऐसा होता है तो वर वधू से उत्पन्न संतान चांडाल के समान होता है । वर की माता की सात पीढ़ी तक विवाह वर्जनीय है ।② दो सगी बहनों का विवाह, दो सगे भाईयों से नहीं करना चाहिए। दो सगी बहनों का या दो सगे भाईयों का या भाई बहनों का ६ मास के अन्दर विवाह नहीं करना चाहिए । ③विवाह के ६ माह तक घर में मुंडन, यज्ञोपवीत, केशान्त आदि कार्य नहीं करना चाहिए। संवत्सर बदल जाने पर इसका दोष नहीं होता है ।④ सहोदर भाई–बहनों का विवाह एक मंडप में नहीं करना चाहिए । जुड़वा भाई–बहनों का विवाह एक मंडप में किया जा सकता है। किन्तु अलग–अलग माताओं से उत्पन्न भाई–बहनों का विवाह एक मंडप में नहीं करना चाहिए॥

मंगलदोष विचार

आजकल विवाह में भौम चिन्तन विशेष प्रचलित हो गया है। वर कन्या के जन्मकुण्डली या चन्द्रकुण्डली के लग्न, चतुर्थ,सप्तम,अष्टम, द्वादश भावों में अवस्थित मंगल परस्पर कष्टदायक होता है अर्थात् वर के कुण्डली में भौम दोष हो तो कन्या का नाश और कन्या के हो तो वर का नाश होता है। मुहूर्तसंग्रह के अनुसार–

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजः।
कन्या भर्तृविनाशाय भर्त्ता कन्या विनाशकृत ॥

ज्योतिष शास्त्र में मंगल,शनि,सूर्य,राहु,केतु को पापग्रह माना गया है। ये सभी नैसर्गिक रुप से पापी होते हैं तथा अपनी दृष्टि एवं युति द्वारा किसी भी भाव के फल को नष्ट कर सकते है । इन पाँचों पापग्रहों के १,४,७,८,१२ भावों में रहने पर दाम्पत्य जीवन में अनेक बाधायें आती रहती हैं । किन्तु मंगल,शनि,सूर्य,राहु,केतु उत्तरोतर कम अनिष्टकारी होते हैं अर्थात् मंगल सबसे अधिक एवं केतु कम अरिष्ट कारक होता है । इसी प्रकार सप्तम लग्न चतुर्थ,अष्टम एवं व्यय भाव (स्थान) में स्थित पापग्रहों से मंगली योग का प्रभाव भावों के अनुसार उत्तरोतर कम होता है अर्थात् सप्तम में सर्वाधिक एवं द्वादश में सबसे कम प्रभाव होता है । जन्म लग्न एवं चन्द्र राशि एवं शुक्र स्थित राशि से मंगल दोष का विचार होता है । लग्न एवं शुक्र से बनने वाले मंगल दोष की अपेक्षा चन्द्र से बनने वाला मंगल दोष (मंगली) प्रबल होता है । कुछ आचार्यों के अनुसार लग्न एवं चन्द्र से बनने वाले दोष की अपेक्षा शुक्र से बनने वाला मंगल दोष प्रबल होता है । उनका मानना है कि शुक्र रति एवं दाम्पत्य का कारक होता है अतः इससे बनने वाला मंगल दोष विशेष प्रभावकारी होता है ।

–ः भौम दोष परिहार ः–

① यदि वर के जन्म के समय सूर्य,मंगल,शनि,राहु,केतु आदि कोई पापग्रह १,४,७,८,१२ भावगत हो तो कन्या का मंगली दोष समाप्त हो जाता है । इसी प्रकार कन्या के कुण्डली में होने पर वर का दोष मिट जाता है –

शनि भौमोऽथवा कश्चित्पापो वा तादृशो भवेत् । तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत् ।।②यदि वर या कन्या के १,४,७,८,१२ वें शनि हो तो दूसरे का भौम दोष समाप्त हो जाता है । **जामित्रे च यदा शौरिर्लग्ने च हिबुकेऽथवा। अष्टमे द्वादशे वापि भौमदौषो न विद्यते** ।।③ बलान्वित गुरु,शुक्र लग्न या सप्तम में हो तो भौम दोष नहीं होता।④वक्री, नीचस्थ, अस्तंगत अथवा शत्रुक्षेत्री गुरु, शुक्र उपर्युक्त स्थानों में होने पर भौम दोष नहीं होता। यथा–**सबले गुरौ भृगौ वा लग्ने द्यूनेऽथवा भौमें ।वक्रे नीचारि गृहस्थे वाऽस्तेऽपि न कुज दोषः।**।⑤जिस कन्या का भौम दोष हो उसका विवाह ऐसे वर से करें जिसकी जन्म कुण्डली में मंगल दोष का शमन करने वाले योग हों ।⑥शुक्र से १२,७,८ वें पापग्रह हो तो वर कन्या का नाशक होता है । यथा – **शुक्रः खलान्तरगतः सखलः सिताद्वा पापाः व्ययास्तमृतिगा रमणीहराः स्युः**।⑦ गुण की बाहुल्यता होने पर वर कन्या दोनों के भौमजन्यदोष समाप्त हो जाता है । **राशिमैत्रं यदा याति गुणैक्यं वा यदा भवेत् । अथवा गुणबाहुल्ये भौम दोषो न विद्यते** ।।⑧यदि मेषस्थ भौम लग्न में, वृश्चिकस्थ भौम चतुर्थ में,मकरस्थ भौम सातवें, कर्कस्थ भौम आठवें तथा धनुस्थ भौम बारहवें हो तो भौम दोषनहीं होता है । **अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके कुजे । द्यूने मृगे कर्किचाष्टौ भौमदोषो न विद्यते** ।। ⑨ द्वितीय भाव में चन्द्र–शुक्र, गुरु दृष्ट मंगल, केन्द्रस्थ राहु एवं राहु–मंगल युति भौम दोष का शामक होता है ।किन्तु इसका विचार विशेष परिस्थितियों में ही करें ।**न मंगली चन्द्रभृगुर्द्वितीये, न मंगली पश्यति यस्य जीवः । न मंगली केन्द्रगते च राहुर्न मंगली मंगलराहुयोगे** ।। ⑩केन्द्र–त्रिकोण में शुभग्रह तथा ३,६,११ में पापग्रह हों तथा सप्तमेश स्वगृही हो तो मंगल दोष नहीं होता । **केन्द्रकोणे शुभाढ्ये च त्रिषडायेऽप्यसद्ग्रहे। तदा भौमस्य दोषो न मदने मदपस्तथा**।। ⑪कन्या की कुण्डली में विधवा योग हो तो विधुर योग वाले वर के साथ विवाह करने से उनका दाम्पत्य जीवन चिरस्थायी तथा सुखमय होता है ।

श्रावणकृष्णपक्ष

शाके १९४४; संवत् २०७९; फसली १४३०; दिनाङ्क १४:०७:२०२२ ई. ततो दिनाङ्क २८:०७:२०२२ ईस्वी या.। पश्चिमे राहु कालः।
मार्गी पूर्वोदितो मंगलः गुरूः शुक्र,मार्गी बुधःपूर्वास्तः,वक्रीपूर्वोदितो शनिः,ग्रीष्मर्तुःततो ति.४ वर्षाऋतु,सौम्यगोलः,सौम्यायनन्, ततो ति. ४ याम्यायनम्,अयनांश २२:५०:५४।

तिथि वार	तिथ्यन्तः द. प.	तिथ्यन्तः घं. मि.	नक्षत्रान्तः नक्षत्र	नक्षत्रान्तः द. प.	नक्षत्रान्तः घं. मि.	योगान्तः योग	योगान्तः द. प.	करणान्तः क. द. प.	चन्द्रराश्यन्तः रा. द. प.	चन्द्रराश्यन्तः घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू. उ. घं.मि.	सू. अ. घं.मि.	दिनाङ्काः सौ	दिनाङ्काः अं	
०१ गु.	४१:२१	रा.०९:४६	उ.षा	४३:१८	रा.१०:३३	वैधृतिः	१३:२२	बा. १४:४०	ध.००:३०	प्रा.०५:२६	०२:२७:३९:४५	३३:४८	०५:१४	०६:४६	३०	१४	अशून्यशयनव्रतं, शिववास, दक्षिणविनायात्रा श्रवणे ।
०२ शु.	३५:३४	रा.०७:४६	श्रव.	३९:३६	रा.०९:०४	विष्क	०५:५२	तै. ०८:२८	मकर	अहोरात्र	०२:२८:३६:४१	३३:४६	०५:१५	०६:४५	३१	१५	प्रीतियोगमानं ५२:५४,पञ्चकारम्भःरा.०९:०४ उ.,गृहारंभः,पश्चिमांविनायात्रा तृतीयाश्रवणे,मृत्युयोग रा.०७:४६ या.,सर्वार्थसिद्धियोग रा.०९:०४ या.।
०३ श.	३०:१६	सं.०५:२१	धनि.	३५:०५	रा.०७:१७	आयु.	५२:०६	व. ०२:५५	म.०६:२०	दि.०७:४६	०२:२९:३३:३७	३३:४६	०५:१५	०६:४५	३२	१६	श्रीविनयक ४ व्रतं,मासान्तः,भद्रारंभः०२:५५ उपरि ततो भद्रांतः३०:१६ यावत्,सिद्धियोग सं.०५:२१ उ.।
०४ र.	२५:३९	दि.०३:३१	शत.	३३:५१	सं.०६:४७	सौभा.	४६:०७	वि. २५:३९	कुम्भ	अहोरात्र	०३:००:३०:३३	३३:४४	०५:१५	०६:४५	१	१७	दग्ध ति.(२५:३९ उ.), कर्केरवि १४:३९,मु. १५,याम्यायनसंक्रान्तिपुण्यकालं दि ११:०७ उपरिदिने,पुण्याहः,याम्यायनारंभः १४:३९ उ.।
०५ चं.	२२:२०	दि.०२:१२	पू.भा	३२:११	सं.०६:०८	शोभ.	४०:५०	बा. २२:२०	कु.१५:२७	दि.११:२७	०३:०१:२७:२९	३३:४४	०५:१६	०६:४४	२	१८	दग्ध ति.(२२:२० या.), मौनापञ्चमी, श्रीमनसादेव्युत्थापनं,मधुश्रावणीपूजाव्रतकथारंभः, सोमवारी व्रतं, मासादिः।
०६ मं.	१९:०७	दि.१२:५५	उ.भा.	३१:३१	सं.०५:५२	अतिग	३६:२३	तै. १९:०७	मीन	अहोरात्र	०३:०२:२४:२५	३३:४२	०५:१६	०६:४४	३	१९	पश्चिमयात्रा रेवत्याम्, भद्रारंभः१९:०७ उपरि ततो भद्रांतः ४८:१९ यावत्,मृत्युयोग दि.१२:५५ या.,ततो अमृतयोग दि.१२:५५उ. ।
०७ बु.	१७:३१	दि.१२:१६	रेवती	३२:०४	सं.०६:०६	सुकर्मा	२९:३४	व. १७:३१	मी.३२:०४	सं.०६:०६	०२:०३:२१:२१	३३:४०	०५:१६	०६:४४	४	२०	पञ्चकान्तः सं.०६:०६ या.,❋पुष्येरविः ४५:२०, शिववास दि.१२:१६ उ.,पश्चिमयात्रा सप्तम्यां,सिद्धियोग दि.१२:१६ या.,ततो मृत्युयोग दि.१२:१६ उ.।
०८ गु.	१७:१०	दि.१२:०८	अश्वि	३३:५०	सं.०६:४८	धृतिः	३०:२९	ब. १७:१०	मेष	अहोरात्र	०३:०४:१८:१६	३३:३८	०५:१६	०६:४४	५	२१	शिववास दि. १२:०८ या., पूवोत्तरयात्रा अष्टम्यां, मृत्युयोग दि.१२:०८ उ., सर्वार्थसिद्धियोग सं. ०६:४८ या.।
०९ शु.	१८:०९	दि.१२:३३	भरणी	३६:५३	रा.०८:०२	शूलः	२९:०४	कौ. १८:०९	मे.५२:३०	रा.०२:१७	०३:०५:१६:४४	३३:३६	०५:१७	०६:४३	६	२२	अमृतयोग दि.१२:३३ या., भद्रारंभः४९:१५ उपरि।
१० श.	२०:२०	दि.०१:२५	कृति.	३९:१९	रा.०९:०१	गण्डः	२८:३४	ग. २०:२०	वृष	अहोरात्र	०३:०६:१५:१२	३३:३४	०५:१७	०६:४३	७	२३	शिववास दि. ०१:२५ उ.,दक्षिणयात्रा रोहिण्याम्,मृत्युयोग दि.०१:२५ या.,ततो अमृतयोग ०१:२५ उ.,सर्वार्थसिद्धियोग रा.०९:०१ उ,भद्रांतः२०:२० यावत्।
११ र.	२४:०३	दि.०२:५५	रोहि.	४६:११	रा.११:५०	वृद्धिः	२८:५७	वि. २४:०३	वृष	अहोरात्र	०३:०७:१३:३९	३३:३२	०५:१८	०६:४२	८	२४	कामदा ११ व्रतं सर्वेषां, शिववास, पूर्वदक्षिणयात्रा द्वादशीरोहिण्यां ततो पश्चिमांविनायात्रा मृगशिरशि, मृत्युयोग दि.०२:५५ या.।
१२ चं.	२७:५३	दि.०४:२७	मृग.	५२:१८	रा.०२:१३	ध्रुवः	२९:५६	बा. २७:५३	वृ.२५:१८	दि.०३:२५	०३:०८:१२:०६	३३:३०	०५:१८	०६:४२	९	२५	दूर्वादलेन पारणं, प्रदोष १३ व्रतं, सोमवारी व्रतं, पूर्वविनायात्रा त्रयोदश्यां मृगशिरे, मृत्युयोग दि.०४:२७ या., सर्वार्थसिद्धियोग रा.०२:१३ या.।
१३ मं.	३२:४७	सं.०६:२५	आर्द्रा	५८:४६	रा.०४:४८	व्या.	३१:२२	तै. ३२:४७	मिथुन	अहोरात्र	०३:०९:१०:३३	३३:२८	०५:१८	०६:४२	१०	२६	सिद्धियोग दि.०६:२५ या.,भद्रारंभः३२:४७ उपरि।
१४ बु.	३७:५०	रा.०८:२६	पुन.	६०:००	अहोरात्र	हर्षण	३३:०१	वि. ०७:३४	मि ५०:३९	रा.०१:३४	०३:१०:०९:००	३३:२६	०५:१९	०६:४१	११	२७	प्रदोष १४ व्रतं, भद्रांतः०५:१९ यावत ।
३० गु.	४२:३९	रा.१०:२४	पुन.	०५:१६	दि.०७:२२	व्रज्रः	३४:२८	च. १०:१६	कर्क	अहोरात्र	०३:११:०७:२७	३३:२४	०५:१९	०६:४१	१२	२८	श्रावणी ३०, स्नानदानादिः, देवसावर्णिमन्वादिः, शिववास, दक्षिणविना यात्रा प्रतिपदायां, सर्वार्थसिद्धियोग दि.०५:२६ या.।

मिश्रमान कालिक दैनिक स्पष्टग्रहाः

ति	मंगलः	बुधः	गुरूः	शुक्रः	शनिःवक्री	केतुः	मिश्रमान
१	००:०८:५१:०६	०२:२९:०१:०४	११:१५:५२:४३	०२:०३:१९:०१	०९:२६:३९:२६	०६:२७:१७:०७	४६:५४
२	००:०९:३०:५५	०३:००:५६:४७	११:१५:५४:५०	०२:०४:३०:२१	०९:२६:३८:२९	०६:२७:१३:५६	४६:५४
३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१०	[illegible]	[illegible]	११:१६:०८:२८	०२:१४:०३:३९	०९:२६:१६:५९	०६:२६:४८:३०	४६:४७
११	[illegible]	[illegible]	११:१६:०८:५७	०२:१५:१६:१५	०९:२६:०९:३	०६:२६:४५:१९	४६:४६
१२	[illegible]	[illegible]	११:१६:०९:२६	०२:१६:२८:५१	०९:२६:०१:०७	०६:२६:४२:०८	४६:४५
१३	[illegible]	[illegible]	११:१६:०९:५५	०२:१७:४१:२७	०९:२५:५३:११	०६:२६:३८:५७	४६:४४
१४	[illegible]	[illegible]	११:१६:१०:२४	०२:१८:५४:०४	०९:२५:४५:१५	०६:२६:३५:४६	४६:४३
३०	[illegible]	[illegible]	११:१६:१०:५२	०२:२०:०६:४१	०९:२५:३७:२०	०६:२६:३२:३६	४६:४२

दैनिक लग्नसारणी चक्रम्

ति	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिं.अं.	क.अं.	तु.अं.	वृ.अं	ध.अं	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
१	०१:१९	०३:१५	०५:२८	०७:४६	१०:०२	१२:१७	१४:३४	१६:५१	१८:५६	२०:४२	२२:१३	२३:४२
२	०१:१५	०३:११	०५:२४	०७:४२	०९:५८	१२:१३	१४:३०	१६:४७	१८:५२	२०:३८	२२:०९	२३:३८
३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२३:३०
४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२३:२६
५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२३:२२
६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२३:१९
७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२३:१५
८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२३:११
९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२३:०७
१०	००:४४	०२:४०	०४:५२	०७:०७	०९:२५	११:३८	१३:५६	१६:१२	१८:१७	२०:०३	२१:३४	२३:०३
११	००:४०	०२:३६	०४:४८	०७:०४	०९:२१	११:३४	१३:५३	१६:०९	१८:१४	२०:००	२१:३१	२३:००
१२	००:३६	०२:३२	०४:४४	०७:००	०९:१८	११:३२	१३:४९	१६:०६	१८:११	१९:५७	२१:२८	२२:५७
१३	००:३२	०२:२८	०४:४०	०६:५७	०९:१५	११:२९	१३:४६	१६:०३	१८:०८	१९:५४	२१:२५	२२:५३
१४	००:२८	०२:२४	०४:३६	०६:५४	०९:११	११:२६	१३:४३	१६:००	१८:०५	१९:५१	२१:२२	२२:५१
३०	००:२४	०२:२०	०४:३२	०६:५१	०९:०७	११:२२	१३:३९	१५:५६	१८:०१	१९:४७	२१:१८	२२:४७

दैनिक अर्धप्रहरा चक्रम्

वार	दिन का अर्धप्रहरा	रात का अर्धप्रहरा
गु.	दि. ०३:२०-०६:४६।	रा. ११:५८-०१.१६। रा.०३:५२-०५:१४।
शु.	दि. ०८:३८-११:५८।	रा. ०९:२२-१०:४०।
श.	दि.५:१५-६:५६। दि १:४०-३:३१। दि.५:६-६:४५।	रा. ६:४५-८:३। रा.१:१५-२:३३। रा.३:५१-५:१५।
र.	दि. १०:१८-०१:४०।	रा. १०:३९-०१:५७। रा.०१.१५-०३:३३।
चं.	दि. ०६:५७-०८:३८। दि.०३:२२-०५:०२।	रा. १०:४१-१२:००। रा.०२:३८-०३:५७।
मं.	दि. ०६:५७-०८:३८। दि.०१:४१-०३:२२।	रा. ०८:०३-०९:२२।
बु.	दि. ०८:३८-१०:१९। दि. १२:००-०१:४१।	रा.१२:००-०१:१९। रा.०२:३८-०३:५७।
गु.	दि. ०३:२२-०६:४४ ।	रा. १२:००-०१:१९। रा.०३:५७-०५:१९।
शु.	दि. ०८:३७-११:५७ ।	रा. ०९:२१-१०:४०। रा.०२:१६-०३:५७।
श.	दि.५:१७-६:५७। दि १:३७-३:१७। दि.४:५७-६:४३।	रा. ६:४३-८:२। रा.१:१८-२:३७। रा.३:५६-५:१७।
र.	दि. १०:१८-०१:३८ ।	रा. १०.३९-११:५८। रा.०१:१७-०२:३६।
चं.	दि. ०६:५८-०८:३८। दि.०१:३८।	रा. १०:३९-११:५८। रा.०२:३६-०३:५५।
मं.	दि. ०६:५८-०८:३८। दि. ०१:३८-०३:१८।	रा. ०८:०१-०९:२० ।
बु.	दि. ०८:३८-१०:१८। दि. ११:५८-०१:३८।	रा.११:५८-०१:१७। रा.०२:३६-०३:५५।
गु.	दि. ०३:१६-०६:४१।	रा. ११:५७-०१:१६। रा.०३:५४-०५:१६।

तिथिः १ गुरू सूर्योदये

४ | ल | सू ३ बु | २ | १ मं रा | ५ | शु | ६ | १२ गु | के ७ | ९ | चं | ११ | ८ | १० श

वैधव्यहरकुम्भविवाहः- कन्या की जन्मकुण्डली में बालविधवा योग हो तो कन्या के विवाह के पूर्व कुम्भविवाह,विवाहविधि से करके कन्या का विवाह करना चाहिये। कुम्भविवाह से पुनर्भूदोष का शमन हो जाता है।बालवैधव्ययोगे तु कुम्भेषु प्रतिमादिभिः। कृत्वा लग्नं ततः पश्चात्कन्योद्वाहेति चापरे।। स्वर्णाबु पिप्पलानाश्च प्रतिमा विष्णुरूपिणी। तया सह विवाह तु पुनर्भूत्वं न जायते।। विधि-चन्द्र व तारा के बली होने पर,उक्त काल में कुम्भ के साथ एकान्तस्थान में कन्या का विवाह करना चाहिये। तत्र कन्यादानकर्ता पित्रादिकृत नित्यक्रियो भूत्वा शुभविवाहलग्ने अहते वाससी परिधाय एकान्ते शुभासने उपविश्य स्वदक्षिण सालङ्कारा कन्यामुपवेश्य दीपं प्रज्वाल्य स्वस्तिवाचनादिकं कृत्वा सङ्कल्पं कुर्यात्। ॐ अद्येति अमुकगोत्रः अमुकशर्माहम् अमुकगोत्रायाः अस्याः श्री अमुक कन्यायाः यथास्था नस्थित दुष्टग्रहसूचितवैधव्यदोष शान्तिद्वारा श्री परमेश्वरप्रीत्यर्थं सुपूजितकुम्भेन साकं शुभविवाहं करिष्ये। ततः नान्दीश्राद्धान्तं कृत्वा ॐ महीद्यौरित्यादिना कुम्भस्थापनान्ते तत्र वरूणप्रतिमायां वरुणं सम्पूज्य प्रार्थयेत्। ततः पुष्पाञ्जलिः-ॐवरूणाङ्ग स्वरूपस्त्वं जीवनानां समाश्रयः। पतिं जीवय कन्यायाश्चिर पुत्रसुखं कुरू।। ॐ देहि विष्णो वरं देव कन्यां पालय दुःखतः। पतिं जीवय कन्यायाश्चिरं देहि तथा सुखम्।। ततः कन्या कुम्भान्तराले अन्तः पटं धृत्वा "ॐगणानान्त्वे"ति मङ्गलपद्यानां पाठं कृत्वा उत्तरतः पटमपसार्य समजनं कारयित्वाकुशत्रयद्रव्यजलान्यादाय-"ॐ....अमुकगोत्रः अमुकशर्माहम् अस्याः कन्यायाः वैधव्यदोषपरिहारार्थं श्रीपरमेश्वर प्रीत्यर्थं श्री विष्णुवरूणस्वरूपिणे कुम्भाय इमां सालङ्कारां वरार्थिनीम् अमुकनाम्नी कन्यां सम्प्रददे। "इति पठित्वा-ॐगौरी कन्यामिमां श्लक्ष्णां यथाशक्ति विभूषिताम्। ददामि विष्णवे तुभ्यं सौभाग्यं देहि सर्वदा।। इति कन्याहस्तं गृहीत्वा विष्णुरूपी कुम्भाय समर्पयेत्। (सति सम्भवे साधवास्त्रीद्वारा कन्याभाले सौभाग्यसिन्दूररेखा च कारयेत्) ततः अधस्तादुपरिष्टाज्व दशतन्तुकेन सूत्रेण कन्यां कुम्भं च मन्त्रावृत्या परिवेष्टयेत्।➔

तिथिः ८ गुरू सूर्योदये

५ | ल | ३ शु | ६ | सू ४ बु | २ | के ७ | मं १ चं रा | १२ गु | ८ | १० श | ९ | ११

➔तत्र मन्त्रः-ॐ परित्वा गिर्वणो गिरऽइमा भवन्तु विश्वतः।वृद्धामनुवृद्धयो जुष्टा भवन्तु जुष्टयः।।ततः वेष्टितसूत्रात् कुम्भं निःसार्य दक्षिणासङ्कल्पं कुर्यात्।ॐअद्यअस्याः कन्यायाः यथाराशिस्थ स्थित दुष्टग्रह सूचित वैधव्यदोषपरिहारद्वारा सौभाग्यफलप्राप्तये कृतस्य कुम्भ विवाहकर्मणः सादगुण्यार्थम् एतावद् द्रव्यमूल्यकहिरण्यमग्निदैवतं यथानाम्गोत्राय ब्राह्मणाय दक्षिणां दातुमहत्मुत्सृज्ये।ततःॐ यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकिम्।इष्टकामप्रसिद्धयर्थं पुनरागमनाय च।।इति सर्वान् पूजितदेवान् एकदैव विसृज्य यथाशक्ति भूयसीं कूर्यात्।ततः वेस्टितसूत्रात् कुम्भं निःसार्य पवित्रसलिलाशये निःक्षिपेत्।तदनन्तरं शुद्धजलेन समुद्रज्येष्ठेत्यादिमन्त्रैः पञ्चपल्लवैः कन्यामत्रिषित्य विप्रान् भोजयेदिति कुम्भविवाहः।**अथश्रावणमासकृत्यम्**:-नदीनां रजो दोषकथनम्:-सिंहकर्कटयोर्मध्ये सर्वा नद्यो रजस्वलाः।न स्नानादीनि कर्माणि तासु कुर्वीत मानवः।।इदश्च क्षुद्रनदीषु।**अशून्यशयनव्रत**-यह श्रावण कृष्णद्वितीय से मार्गशीर्ष कृष्ण द्वितीया पर्यन्त किया जाता है।इसमें पूर्वविद्धा तिथि ली जाती है।यदि दो दिन पूर्वविद्ध हो या दोनों दिन न हो तो परविद्धा लेनी चाहिये।इसमें शेषशय्यापर लक्ष्मी सहित नारायण शयन करते हैं,इसी कारण इसका नाम अशून्यशयन है।यह प्रसिद्ध है कि इस अवधि में देवता सोते हैं और शास्त्र से यही सिद्ध होता है कि द्वादशी को भगवान्,त्रयोदशी की काम,चतुर्दशी को यक्ष,पूर्णिमा को शिव,प्रतिपदा की ब्रह्मा,द्वितीया की विश्वकर्मा और तृतीया को उमा का शयन होता है।व्रती को चाहिये कि श्रावण कृष्णद्वितीया को प्रातः स्नानादि करके श्रीवत्सचिह्न से युक्त चार भुजाओं से भूषित शेषशय्या स्थितआलक्ष्मी सहित भगवान् का गन्ध का गन्ध-पुष्पादि से पूजन करे।दिन भर मौन रहे।व्रत रखे और सायंकलन पुनःस्नान करके भगवान् का शयनोत्सव मनाये।फिर चन्द्रोदय होने पर अर्घ्यपात्र में जल,फल पुष्प और गन्धाक्षत रखकर "गगनाङ्गणसंदीप क्षीराब्धिमथनोद्भव। भामासितदिगाभोग रामानुज नमोऽस्तु ते।।इस मन्त्र से अर्घ्य दें और भगवान् को प्रणाम करके भोजन करें।इस प्रकार प्रत्येक कृष्णद्वितीया को करके मार्गशीर्ष कृष्ण तृतीया को उस ऋतु में होने वाले(आम,अमरूद और केले आदि)मीठेफल सदाचारी ब्राह्मण को दक्षिणा सहित दे। करोंदे,नीम्बू आदि खट्टे तथा इमली,कैदी,नारंगी,अनार आदि स्त्री नाम के फल न दें।इस व्रत से व्रती का गृहभंग नहीं होता-दाम्पत्यसुख अखण्ड रहता है।यदि स्त्री करे तो वह सौभाग्यवती होती है।**प्रदोषव्रत**-यह प्रत्येक त्रयोदयशी को किया जाता है।परन्तु श्रावण में सोम या शनि प्रदोष हो तो वह विशेष फल देता है।उस दिन ग्राम से बाहर किसी पुष्पोद्यान के शिवमन्दिर में जाकर शिवपूजन करें और दो घड़ी रात्रि जाने से पहले एक बार भोजन कर तो शिवजी प्रसन्न होते हैं।इसके सिवा श्रावण में शिवजी के प्रोत्यर्थ चार सोमव्रत और होते हैं,जो श्रावण के अन्तर्गत ही है।**अमाव्रत**-देशभेद के अनुसार श्रावण कृष्णावस्या को "हरिता" (या हरियाली अमा) कहते हैं।इस दिन किसी एकान्त स्थान के जलाशय पर जाकर स्नान-दानादि करें और ब्राह्मणों को भोजन करावे तो पितृगण प्रसन्न होते हैं।卐 **पतिप्राप्ति मन्त्र-हे गौरि! शङ्करार्धाङ्गि! यथा त्वं शङ्करप्रिया।तथा मां कुरु कल्याणि! कान्तकान्ता सुदुर्लभाम्।**।विधि-भगवती पार्वती की सविधि पूजन कर उपर्युक्त मन्त्र का प्रतिदिन ५ माला जप कन्या को करना चाहिए या ५ लाख जप किसी देवी मन्दिर में ब्राह्मण द्वारा करवाना चाहिए।इससे शीघ्र पति की प्राप्ति होती है।**ॐ क्लीं कात्यायनि महामाये महायोगिन्यधीश्वरि।नन्दगोपसुतं देवि पतिं मे कुरु ते नमः क्लीं ॐ।**।विधि-इस कात्यायनी मन्त्र का ४४ हजार किसी देवी मंदिर में अथवा अपने घर में केले के पत्ते पर बैठकर सविधि जप एवं हवन करने से शीघ्र पति की प्राप्ति होती है।सभी दुर्योग मिट जाते हैं।

श्रावणशुक्लपक्षः

शाके १९४४;संवत् २०७९; फसली १४३०; दिनाङ्क २९:०७:२०२२ ई. ततो दिनाङ्क १२:०८:२०२२ ईस्वी या.। पश्चिमे राहु कालः। शुद्धः।
मार्गी पूर्वोदितो मंगलः शुक्र, मार्गी पूर्वास्तः बुधः ततो ति.२ पश्चिमोदितः, वक्रीपूर्वोदितो गुरुः शनिः, वर्षाऋतु, सौम्यगोलः, याम्यायनम्, अयनांश २४:०५:५४।

तिथि वार	तिथ्यन्तः द. प.	तिथ्यन्तः घं. मि.	नक्षत्र	नक्षत्रान्तः द. प.	नक्षत्रान्तः घं. मि.	योग	योगान्तः द. प.	करणान्तः क. द. प.	चन्द्रराश्यन्तः रा. द. प.	चन्द्रराश्यन्तः घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू. उ. घं.मि.	सू. अ. घं.मि.	दिनाङ्काः सौ	दिनाङ्काः अं	
०१ शु	४६:५२	रा.१२:०५	पुष्य	११:२२	दि.०९:५३	सिद्धिः	३५:३१	किं. १४:३७	कर्क	अहोरात्र	०३:१२:०३:११	३३:२०	०५:२०	०६:४०	१३	२९	दोलोत्सवारंभः,पश्चिमांविनायात्रा पुष्ये,सिद्धियोग रा.१२:०५ या.,मृत्युयोग रा.१२:०५ उ.।
०२ श	५०:०९	रा.०१:२४	आश्ले	१६:४८	दि.१२:०३	व्यति.	३५:५४	बा. १८:४६	क.१६:४८	दि.१२:०३	०३:१२:५८:५५	३३:१६	०५:२०	०६:४०	१४	३०	चन्द्रदर्शनं मु ३० सौम्यश्रृंगं फल साम्यं,शिववास,मार्गीबुधः पश्चिमोदित २५:४५।
०३ र.	५२:२२	रा.०२:१८	मघा	२१:११	दि.०१:४९	वरी.	३५:२४	तै. २१:१६	सिंह	अहोरात्र	०३:१३:५४:३९	३३:१२	०५:२२	०६:३८	१५	३१	मधुश्रावणीव्रतं,पूजनञ्च,पूर्वोत्तरयात्रातृतीया उ.षा.,सिद्धियोग रा.०२:१८ या.।
०४ चं	५३:१६	रा.०२:३९	पू.फा.	२४:२५	दि.०३:०७	परिघः	३४:००	व. २२:४९	सिं.५०:०९	रा.०१:२४	०३:१४:५०:२३	३३:०८	०५:२२	०६:३८	१६	१	अगस्त ०८,सोमवारी व्रतं,श्रीगणेश ४ व्रतं,अमृतयोग रा.०२:१८ उ.,भद्रारंभः२२:४९ उपरि ततो भद्रांतः ५३:१६ यावत् ।
०५ मं.	५२:२४	रा.०२:२०	उ.फा.	२६:२२	दि.०३:५५	शिवः	३१:३४	ब. २३:०५	कन्या	अहोरात्र	०३:१५:४६:०७	३३:०४	०५:२३	०६:३७	१७	२	दग्ध ति.(५२:२४ उ.),नागपञ्चमी,नागपूजन,लघुपञ्चनामानागराजः,श्वेतवर्णो द्वारमुभयतो,गोमयनिर्मिता नागा दूर्वासिन्दूरदुग्धलाजादिभिः पूज्याः,शिववास।
०६ बु.	५१:१०	रा.०१:५१	हस्त	२७:०६	दि.०४:१३	सिद्धः	२८:०९	कौ. २१:४७	कन्या	अहोरात्र	०३:१६:४१:५०	३३:०२	०५:२३	०६:३७	१८	३	दग्ध ति.(५१:१० या.),❋आश्लेषायांरविः४६:०७,गृहप्रवेश सप्तम्याम्,शिववास,पूर्वदक्षिणयात्रा,अमृतयोग रा.०१:५३ या.,ततो सिद्धियोग रा.०१:५३ उ.,थं
०७ गु.	४८:३०	रा.१२:४८	चित्रा	२६:३७	दि.०४:०३	साध्य	२३:४३	ग. २०:०५	क.०२:४०	दि.०६:२८	०३:१७:३७:३३	३२:५८	०५:२४	०६:३६	१९	४	गृहप्रवेश, पूर्वयात्राकन्यांस्थे चन्द्रः ततो पश्चिमांविना यात्रा तुलांस्थे चन्द्रे,अमृतयोग रा. १२:४८ उ., भद्रारंभः४८:३० उपरि । थंसर्वार्थसिद्धियोग दि.०४:१३ या.।
०८ शु.	४४:४५	रा.११:१९	स्वा.	२५:०३	दि.०३:२६	शुभः	१८:२९	वि. १६:३८	तुल	अहोरात्र	०३:१८:३४:५१	३२:५३	०५:२५	०६:३५	२०	५	दक्षिणयात्रा स्वात्यां,अमृतयोग रा.११:१९ उ., भद्रांतः१६:३८ उपरि ।
०९ श	४०:०८	रा.०९:२९	विशा.	२२:४२	दि.०२:३१	शुक्लः	१३:३०	बा. १२:४२	तु.०८:१८	दि.०८:४५	०३:१९:३२:०९	३२:४८	०५:२६	०६:३४	२१	६	गृहप्रवेश दशम्याम्, पश्चिमोत्तरयात्रानवमी अनुराधायाम्,शिववास, सिद्धियोग रा.०९:२९ या., ततो मृत्युयोग रा.०९:२९ उ.।
१० र.	३४:५१	रा.०७:२३	अनु.	१९:३३	दि.०१:१६	ब्रह्मः	०५:५३	तै. ०७:३०	वृश्चिक	अहोरात्र	०३:२०:२९:२७	३२:४४	०५:२७	०६:३३	२२	७	ऐन्द्रयोगमानं ५२:५०,उत्तरयात्रा दशम्यां, अमृतयोग रा.०७:२३ या.ततो मृत्युयोग रा.०७:२३उ.।
११ चं	२९:०१	दि.०५:०४	ज्येष्ठा	१५:५२	दि.११:४९	वैधृति.	५१:१६	व. ०१:५८	वृ.१५:५२	दि.११:४९	०३:२१:२६:४५	३२:४०	०५:२८	०६:३२	२३	८	सोमवारी व्रतं,पुत्रदा ११ व्रतं सर्वेषां,गृहारंभप्रवेशौ मूले,शिववास दि. ०५:०४ उ.,उत्तरयात्राचैकादश्यां,सिद्धियोग दि.०५:०४ या.ततो मृत्युयोग दि.०५:०४ उ.,भद्रारंभः०१:५६फ्र
१२ मं.	२२:५६	दि.०२:३९	मूल	११:४९	दि.१०:१३	विष्क	४३:३९	बा. २२:५६	धनु	अहोरात्र	०३:२२:२४:०२	३२:३६	०५:२९	०६:३१	२४	९	दूर्वादलेन पारणं,प्रदोष १३ व्रतं, शिववास, पूर्वयात्रा, अमृतयोग. दि.०२:३९ या., ततो सिद्धियोग दि.०२:३९ उ.। फ्र उपरि ततो भद्रांतः२९:०१ यावत्।
१३ बु.	१६:४४	दि.१२:११	पू.षा	०७:३७	दि.०८:३२	प्रीतिः	३५:५९	तै. १६:४४	ध.२१:२०	दि.०२:०१	०३:२३:२१:१९	३२:३२	०५:२९	०६:३१	२५	१०	प्रदोष १४ व्रतं,गृहारंभप्रवेशौ त्रयोदशी उ.षा.,शिववास दि. १२:११ या.,मृत्युयोग दि.१२:११ या.। एँ उपरि ततो भद्रांतः३७:४१ यावत् ।
१४ गु.	१०:३६	दि.०९:४४	उ.षा	०३:२८	प्रा.०६:५३	आयु.	२८:२६	व. १०:३६	मकर	अहोरात्र	०३:२४:१८:३६	३२:२८	०५:३०	०६:३०	२६	११	श्रवणामानं ५६:०८,पञ्चकारम्भः रा.०३:५७ उ.,पूर्णिमा व्रतं,गृहारंभ दक्षिणविनायात्रा पूर्णिमायां,मृत्युयोग दि.०९:४४ या. ततो सिद्धियोग दि.०९:४४ उ., भद्रारंभः१०:३६ एँ
१५ शु	०४:४७	दि.०७:२६	धनि.	५६:१३	रा.०४:००	सौभा.	२१:११	ब. ०४:४६	म.२६:४०	दि.०४:११	०३:२५:१६:०५	३२:२४	०५:३१	०६:२९	२७	१२	प्रतिपदामानं ५४:४२,श्रावणी स्नानदानादि पूर्णिमा,हयग्रीवावतारः,रक्षाबन्धनं दि.०७:२६ या.,दोलोत्सवान्तः,गृहारंभः पूर्णिमायां,शिववास दि.०७:२६ उ.,सिद्धियोग दि.०७:२६ उ.।

मिश्रमान कालिक दैनिक स्पष्टग्रहाः

ति	मंगलः	बुधः	गुरुःवक्री	शुक्रः	शनिःवक्री	केतु	मिश्रमानं
१	००:१८:३९:३५	०३:२३:३३:४६	[illegible]:१६:१०:०२	०२:२१:१९:२२	०९:२५:३२:३०	०६:२६:२९:२५	४६:४०
२	००:१९:१६:५५	०३:२५:१३:२६	११:१६:०९:१२	०२:२२:३२:०३	०९:२५:२७:४०	०६:२६:२६:१४	४६:३८
३	००:१९:५४:१६	०३:२६:५३:०६	११:१६:०८:२२	०२:२३:४४:४४	०९:२५:२२:५०	०६:२६:२३:०३	४६:३६
४	००:२०:३१:३७	०३:२८:३२:४६	११:१६:०७:३२	०२:२४:५७:२५	०९:२५:१८:००	०६:२६:१९:५२	४६:३४
५	००:२१:०८:५८	०४:००:१२:२६	११:१६:०६:४२	०२:२६:१०:०६	०९:२५:१३:१०	०६:२६:१६:४१	४६:३२
६	००:२१:४६:१९	०४:०१:५२:०६	११:१६:०५:५२	०२:२७:२२:४८	०९:२५:०८:२०	०६:२६:१३:३१	४६:३१
७	००:२२:२३:४०	०४:०३:३१:४७	११.१६:०५:०१	०२:२८:३५:३०	०९:२५:०३:३०	०६:२६:१०:२१	४६:२९
८	००:२३:००:४१	०४:०५:३८:५८	११:१६:०२:५२	०२:२९:४९:०८	०९:२४:५८:१३	०६:२६:०७:१०	४६:२६
९	००:२३:३७:४२	०४:०७:४६:०९	११:१६:००:४९	०३:०१:०२:४६	०९:२४:५२:५६	०६:२६:०३:५९	४६:२४
१०	००:२४:१४:४३	०४:०९:५३:२०	११:१५:५८:४३	०३:०२:१६:२४	०९:२४:४७:३९	०६:२६:००:४८	४६:२२
११	००:२४:५१:४४	०४:१२:००:३१	११:१५:५६:३७	०३:०३:३०:०२	०९:२४:४२:२२	०६:२५:५७:३७	४६:२०
१२	००:२५:२८:४५	०४:१४:०७:४२	११:१५:५४:३१	०३:०४:४३:४१	०९:२४:३७:०८	०६:२५:५४:२६	४६:१८
१३	००:२६:४२:४८	०४:१६:१४:५३	११:१५:५२:२५	०३:०५:५७:२०	०९:२४:३१:४९	०६:२५:५१:१६	४६:१६
१४	००:२६:४२:४८	०४:१८:२२:०५	११:१५:५०:१९	०३:०७:१०:५९	०९:२४:२६:३३	०६:२५:४८:०६	४६:१४
१५	००:२७:१७:५०	०४:१९:४४:३६	११:१५:४६:०८	०३:०८:२३:४३	०९:२४:२२:१७	०६:२५:४१:५५	४६:१२

दैनिक लग्नसारणी चक्रम्

ति	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिं.अं.	क.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं
१	००:२०	०२:१६	०४:२९	०६:४७	०९:०३	११:१८	१३:३५	१५:५२	१७:५७	१९:४३	२१:१४	२२:४३
२	००:१६	०२:१२	०४:२५	०६:४३	०९:५९	११:१४	१३:३१	१५:४८	१७:५३	१९:३९	२१:१०	२२:३९
३	००:१३	०२:०९	०४:२२	०६:४०	०९:५६	११:११	१३:२८	१५:४५	१७:५०	१९:३६	२१:०७	२२:३६
४	००:०९	०२:०५	०४:१८	०६:३६	०९:५२	११:०७	१३:२४	१५:४१	१७:४६	१९:३२	२१:०३	२२:३२
५	००:०५	०२:०१	०४:१४	०६:३२	०८:४८	११:०३	१३:२०	१५:३७	१७:४२	१९:२८	२०:५९	२२:२८
६	००:०१	०१:५७	०४:१०	०६:२८	०८:४४	१०:५९	१३:१६	१५:३३	१७:३८	१९:२४	२०:५५	२२:२४
७	२३:५७	०१:५३	०४:०६	०६:२५	०८:४०	१०:५५	१३:१२	१५:२९	१७:३४	१९:२१	२०:५१	२२:२०
८	२३:५४	०१:५०	०४:०३	०६:२१	०८:३७	१०:५२	१३:०९	१५:२६	१७:३१	१९:१७	२०:४८	२२:१७
९	२३:५०	०१:४६	०३:५९	०६:१७	०८:३३	१०:४८	१३:०५	१५:२२	१७:२७	१९:१३	२०:४४	२२:१३
१०	२३:४६	०१:४२	०३:५५	०६:१३	०८:२९	१०:४४	१३:०१	१५:१८	१७:२३	१९:०९	२०:४०	२२:०९
११	२३:४२	०१:३८	०३:५१	०६:०९	०८:२५	१०:४०	१२:५७	१५:१४	१७:१९	१९:०५	२०:३६	२२:०५
१२	२३:३८	०१:३४	०३:४७	०६:०५	०८:२१	१०:३६	१२:५३	१५:१०	१७:१५	१९:०१	२०:३२	२२:०१
१३	२३:३४	०१:३०	०३:४३	०६:०१	०८:१७	१०:३२	१२:४९	१५:०६	१७:११	१८:५७	२०:२८	२१:५७
१४	२३:३०	०१:२६	०३:३९	०५:५७	०८:१३	१०:२८	१२:४५	१५:०२	१७:०७	१८:५३	२०:२४	२१:५३
१५	२३:२७	०१:२३	०३:३६	०५:५४	०८:१०	१०:२५	१२:४२	१४:५९	१७:०४	१८:५०	२०:२१	२१:५०

दैनिक अर्धप्रहरा चक्रम्

वार	दिन का अर्धप्रहरा	रात का अर्धप्रहरा
शु.	दि. ०८:४०-१२:०० ।	रा. ०९:२०-१०:४० ।
श.	दि. ५:२०-७:०० । दि. १:४०-३:२० । दि. ५:००-६:४० ।	रा. ६:४०-८:०० । रा. १:२०-२:४० । रा. ४:००-५:२० ।
र.	दि. १०:१८-०१:३६ ।	रा. १०:३९-११:५१ । ०१:१९-०२:३९ ।
चं.	दि. ०७:०८-०८:३९ । दि. ०३:१२-०४:५१ ।	रा. १०:३९-११:५१ । रा. ०२:३९-०३:५१ ।
मं.	दि. ०७:०९-०८:४० । दि. ०१:३७-०३:१६ ।	रा. ०७:५८-०९:१८ ।
बु.	दि. ०८:४१-१०:२० । दि. ११:५९-०१:३८ ।	रा. ११:५७-१२:१७ । रा. ०१:३७-०२:५७ ।
गु.	दि. ०३:१८-०५:३६ ।	रा. १२:००-०२:११ । रा. ०४:०३-०५:२४ ।
शु.	दि. ०८:४१-११:५७ ।	रा. ०९:१७-१०:३८ ।
श.	दि. ५:२६-७:०४ । दि. १:३६-३:१४ । दि. ४:५२-६:३१ ।	रा. ६:३४-७:५५ । रा. १:११-२:४० । रा. ४:०१-५:२६ ।
र.	दि. १०:२१-०१:३७ ।	रा. १०:३६-११:५७ । रा. ०१:१८-०२:३९ ।
चं.	दि. ०७:०६-०८:४४ । दि. ०३:१६-०४:५४ ।	रा. १०:३८-१२:०० । रा. ०२:४४-०४:०६ ।
मं.	दि. ०७:१५-०८:५१ । दि. ०१:३९-०३:१५ ।	रा. ०७:५४-०९:१७ ।
बु.	दि. ०८:५१-१०:२७ । दि. १२:०३-०१:३९ ।	रा. १२:०३-०१:२६ । रा. ०२:४९-०४:१२ ।
गु.	दि. ०३:१२-०६:३० ।	रा. ११:४८-०१:२६ । रा. ०४:०४-०५:३० ।
शु.	दि. ०८:४३-११:५५ ।	रा. ०९:१३-१०:३५ ।

तिथिः १ शुक्र सूर्योदये

५ ल ३ शु
६ सू ४ बु चं २
के ७ मं १ रा
८ १० श १२ गु
९ ११

संस्कृत दिवस- संस्कृतदिवस भारत के चरित्र को उज्जवल तथा विश्ववन्द्य बनाने वाले कारकों का प्रकाशन है। इसीलिए वैदिक काल से ही भारतीय चिन्तकों ने श्रावण शुक्लपूर्णिमा अथवा सम्पूर्ण श्रावणमास को संस्कृतदिवस के रुप में मनाने की परंपरा चला रखी है,इसी परम्परा को उपाकर्म अथवा श्रावणीकर्म के रुप में आज भी संस्कृत के कर्मनिष्ठ विद्वान् मानते आ रहे है मानवता की रक्षा, कदाचार के विरोध में सदाचार की रक्षा एवं विश्वबन्धुत्व जैसे उदात्त लक्ष्यों की सिद्धि के लिए जिन संस्कृत रचनाओं का आविर्भाव हो चुका है उनमें निहित ज्ञान को अक्षुण्ण रखना इस दिवस का मूल प्रयोजन है,साथ ही इस प्रकार की ज्ञान सामग्री के अर्जक ऋषियों,व्याख्याताओं,भाष्यकारों व प्रयोग कर्त्ताओं का संस्कृतदिवस श्रद्धापूर्वक स्मरण करना उन्हें गौरव प्रदान करना भी आज के दिन का प्रमुख कर्तव्य है।इस दिन चारों वेदों, ब्राह्मण,आरण्यक,उपनिषद्,रामायण,महाभारत, पुराण आदिसंस्कृत वाङ्मय के किसी एक ग्रन्थ की पूजा सरस्वती का वाङ्मय विग्रह मानकर करनी चाहिए । आज के दिन प्रमुख रुप से यह घोषणा की जाती है कि भारत तथा विश्व के सर्वाधिक कल्याण के लिए बड़े परिश्रम से प्रकाशित इस सामग्री के ज्ञान को अक्षुण्ण रखा जाय किसी भी विषय या शाखा के ज्ञान को विचार, शास्त्रार्थ, प्रवचन परम्परा चर्चा से यदि जीवित या जाग्रत न रखा गया तो एक और सांस्कृतिक हानि का दुःख, दूसरी ओर उज्जवल भविष्य की संभावना का ह्रास आने वाले पिढीयों को पीड़ित करता रहेगा इसी श्रावणी कर्म या उपाकर्म में पूर्वप्राप्त कल्याणकारी ज्ञान चर्चा को जीवित जाग्रत व सतेज बनाकर रखने का संकल्प किया जाता है संस्कृत दिवस इस सत् संकल्प का पोषक है ।

तिथिः ८ शुक्र सूर्योदये

५ बु ल ३ शु
६ सू ४ २
चं ७ के रा १ मं
८ १० श १२ गु
९ ११

नागपञ्चमीः-यह व्रत श्रावण शुक्ल पञ्चमी को किया जाता है। लोकाचार या देश-भेदवश किसी जगह कृष्ण पक्ष में भी होता है। इसमें परविद्धा पञ्चमी ली जाती है। इस दि न सर्पों को दूध से स्नान और पूजन कर दूध पिलाने से, वासुकी कुण्ड में स्नान करने, निज गृह के द्वार में दोनों ओर गोबर के सर्प बनाकर उनका दधि,दूर्वा,कुशा,गन्ध,अक्षत,पुष्प,मोदक और मालपुआ आदि से पूजा करने और ब्राह्मणों को भोजन कराकर एक भुक्त व्रत करने से सर्पों का भय नहीं होता है।यदि "ॐ कुरुकुल्ये हुं फट् स्वाहा" के परिमित जप करे तो सर्पविष दूर होता है। यथा-श्रावण शुक्लपञ्चमी नागपञ्चमी नागपूजायां परा ग्राह्या यथा चमत्कारचिन्तामणौ पञ्चमी नागपूजायां कार्या षष्ठीसमन्विता। तस्यां तु तुषिता नागा इतरा स चतुर्थिका । इति। अत्र विशेषो-हेमाद्रौ भविष्ये श्रावणेमासि पञ्चम्यां शुक्लपक्षे नराधिप।।द्वारस्योभयतो लेख्या गोमयेन विषोल्बणाः। पूजयेद्विधिवद्वीर दधि दूर्वाङ्कुरैः कुशैः। गन्ध पुष्पोपहारैश्च ब्राह्मणानाञ्च तर्पणैः। ये तस्यां पूजयन्तीह नागान्भक्तिपुरस्सराः। न तेषां सर्पतो वीर भयं भवति कुत्रचित्। नागप्रार्थनमन्त्रः-नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथ्वीमनु ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः। मङ्गलागौरीपूजनम्ः- स्कन्दपुराणे यथा-विवाहनन्तरं चाद्ये श्रावणेशुक्लपक्षके। प्रथमं भौमवारस्य व्रतमेतत्तु कारयेत्। यस्यानुष्ठानमात्रेण अवैधव्यं प्रजायते।। विवाह नन्तरं पञ्चवर्षाणि व्रतमाचरेदिति। उपाकर्म(श्रावणीकर्म) निर्णयः-यथा-अयातःश्रावणेमासे श्रवणर्क्षयुतेदिने। श्रावण्यां श्रावणे मासि पञ्चम्यां हस्तसंयुते।। दिवसे विदधीतैतदुपाकर्म यथोदितम्। ग्रहणसूतकादावपि विचारः-मदनरत्नेऽपि यथा-यदि स्याच्छ्रवणं पर्व ग्रहसंक्रान्तिदूषितम्। स्यादुपाकरणं शुक्ल पञ्चम्यां श्रावणस्य तु।।अपरश्च स्मृतिमहार्णवे यथा-संक्रान्तिर्ग्रहणं वापि यदि पर्वणि जायते। तन्मासे हस्तयुक्तायां पञ्चम्यां वा तदिष्यते।। दोषसंयुक्ते पर्वणि उपाकर्मनिषेधः। अथ चेद्दोषसंयुक्ते पर्वणि स्यादुपक्रिया। दुःखशोकामयग्रस्ता राष्ट्रे तस्मिन्द्विजातयः।। रक्षिकाबन्धनम्ः-तत्तु भद्राशून्यायां श्रावणपूर्णिमायां रक्षिकाबन्धनं कर्त्तव्यम्। इयन्तु पूर्वविद्धैव ग्राह्या। तद्दिने चन्द्रग्रहणे सति भद्रारहिते समये एतेद रक्षिकाबन्धनं कार्यम्। ग्रहणस्य बाधकत्वाभावात्। तथा चोक्तं निर्णयसिन्धौ यथा-नित्येनैमित्तिके जपये होमे यज्ञ क्रियासु च। उपाकर्मणि चोत्सर्गे ग्रहवेधो न विद्यते।। श्रावणी दौर्गनवमी दूर्वा चैव हुताशनी। पूर्वविद्धातु कर्तव्या शिवरात्रिर्बलेर्दिनम्।। भद्रायां द्वे न कर्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा।श्रावणी नृपतिं हन्ति ग्रामं दहति फाल्गुनी।।रक्षाबन्धनं तु कारयेत् चाक्षतैस्तद्वत्सिद्धार्थैर्हेम चर्चितैः।। कार्पासैः क्षौमवस्त्रैर्वा विचित्रैर्मल वर्जितैः। पुरोधा नृपतेरक्षां सम्यग् बध्नीत मानवैः।रक्षाबन्धनमन्त्रः-येन बद्धो बलीराजा दानवेन्द्रो महाबलः।तेनत्वां प्रतिबध्नामि रक्षे माचल माचल।। ब्राह्मणैः क्षत्रियैः वैश्यैः शूद्रैरन्यैश्च मानवैः। कर्त्तव्यो रक्षिकाबन्धो द्विजान् संपूज्य भक्तितः।। अनेन विधिना यस्तु रक्षाबन्धनमाचरेत्। सर्वदोष विनिर्मुक्तः सुखी संवत्सरं भवेत्।। ऋषितर्पण- यह श्रावण शुक्ल पूर्णिमा को यिा जाता है। इसमें ऋक्, यजुः, साम के स्वाध्यायी ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य जो ब्रह्मचर्य, गृहस्थ या वानप्रस्थ किसी आश्रम के हों अपने-अपने वेद, कार्य और क्रिया के अनुकूल काल में अस कर्म को सम्पन्न करते हैं। उस दिन नदी आदि के तटवर्त स्थान में जाकर यथाविधि स्नान करे। कुशानिर्मित ऋषियों की स्थापना करके उनका पूजन, तर्पण और विसर्जन करे और रक्षा-पोटलिका बनाकर उसका मार्जन करें । अदनन्तर आगामी वर्ष का अध्ययनक्रम नियत कर सायंकाल के समय व्रत की पूर्ति करे ।।

भाद्रपदकृष्णपक्ष

शाके १९४४;संवत् २०७९;फसली १४३०;दिनाङ्क १३:०८:२०२२ ई. ततो दिनाङ्क २७:०८:२०२२ ईस्वी या.। पश्चिमे राहु कालः,ततो ति. ६ उत्तरे राहु कालः। शुद्धः ततो ति.६ तोऽशुद्धः। मार्गी पूर्वोदितो मंगलः शुक्रः, मार्गी पश्चिमोदितो बुध,वक्रीपूर्वोदितो गुरूः शनिः,वर्षाऋतु,सौम्यगोलः,याम्यायनं,अयनांश २२:५०:५४।

तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः		करणान्तः	चन्द्रराश्यन्तः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानं	सू. उ.	सू. अ.	दिनाङ्काः	
वार	द. प.	घं. मि.	नक्षत्र	द. प.	घं. मि.	योग	द. प.	क. द. प.	रा. द. प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं.मि.	घं.मि.	सौ	अं
०२श.	५४:५१	रा.०३:२७	शत.	५३:२९	रा.०२:५५	शोभ.	१४:२५	वा. २७:०९	कुम्भ	अहोरात्र	०३:२६:१३:३४	३२:२६	०५:३१	०६:२९	२८	१३
०३र.	५१:०३	रा.०१:५६	पू.भा.	५१:३८	रा.०२:१०	अतिग	१८:१५	तै. २३:०२	कु.३७:०५	रा.०८:२१	०३:२७:११:०३	३२:२६	०५:३१	०६:२९	२९	१४
०४चं.	४८:१४	रा.१२:४९	उ.भा.	५१:२१	रा.०२:०३	सुकर्मा	०२:४६	व. २२:१३	मीन	अहोरात्र	०३:२८:०८:३२	३२:२४	०५:३१	०६:२९	३०	१५
०५मं.	४६:३५	रा.१२:०९	रेवती	५०:५४	रा.०१:५३	शूल.	५४:२३	ब. १९:०३	मी.५०:५४	रा.०१:५३	०३:२९:०६:०१	३२:२४	०५:३१	०६:२९	३१	१६
०६बु.	४६:१०	रा.१२:००	अश्वि	५२:२२	रा.०२:२९	गण्ड.	५१:४१	कौ. १७:०२	मेष	अहोरात्र	०४:००:०३:३०	३२:२२	०५:३२	०६:२८	०१	१७
०७गु.	४७:०३	रा.१२:२१	भरणी	५५:०५	रा.०३:३४	वृद्धिः	४९:५८	ग. १५:२८	मेष	अहोरात्र	०४:०१:००:५८	३२:२२	०५:३२	०६:२८	०२	१८
०८शु.	४९:१४	रा.०१:१४	कृति.	५८:५८	रा.०५:०७	ध्रुवः	४९:१२	वि. १७:०८	मे.११:०३	दि.०९:५७	०४:०१:५८:३९	३२:१८	०५:३२	०६:२८	०३	१९
०९श.	५२:३१	रा.०२:३३	रोहि.	६०:००	अहोरात्र	व्या.	४९:१७	बा. २१:०७	वृष	अहोरात्र	०४:०२:५६:२०	३२:१४	०५:३३	०६:२७	०४	२०
१०र.	५६:४२	रा.०४:१५	रोहि.	०३:५९	दि.०७:१०	हर्षण	५०:०७	तै. २४:३६	वृ.३५:५३	रा.०७:५५	०४:०३:५४:०१	३२:१०	०५:३४	०६:२६	०५	२१
११चं.	६०:००	अहोरात्र	मृग.	०९:४८	दि.०९:३०	वज्र	५१:२५	वि. २९:०८	मिथुन	अहोरात्र	०४:०४:५१:४१	३२:०६	०५:३५	०६:२५	०६	२२
११मं.	०१:३४	प्रा.०६:१३	आर्द्रा	१६:२२	दि.१२:०८	सिद्धिः	५२:५८	बा. ०१:३४	मिथुन	अहोरात्र	०४:०५:४९:२१	३२:०२	०५:३५	०६:२५	०७	२३
१२बु.	०६:४२	दि.०८:१७	पुन.	२२:४५	दि.०२:४२	व्यति.	५४:२६	तै. ०६:४२	मि.०६:१०	दि.०८:०४	०४:०६:४७:०१	३२:००	०५:३६	०६:२४	०८	२४
१३गु.	११:३७	दि.१०:१५	पुष्य	२८:५७	दि.०५:११	वरी.	५५:३१	व. ११:३७	कर्क	अहोरात्र	०४:०७:४४:४१	३१:५८	०५:३६	०६:२४	०९	२५
१४शु	१५:५५	दि.११:५९	आश्ले	३३:२९	रा.०७:०१	परिघः	५६:०२	श. १५:५५	क.३३:२९	रा.०७:०१	०४:०८:४२:३५	३१:५४	०५:३७	०६:२३	१०	२६
३०श.	१९:३३	दि.०१:२७	मघा	३९:०८	रा.०९:१७	शिवः	५५:३७	ना. १९:३३	सिंह	अहोरात्र	०४:०९:४०:२९	३१:५०	०५:३८	०६:२२	११	२७

१३ भाद्रेस्त्रीणांयात्र न शस्त, दधिभाद्रपदे त्यजेत्, गृहारम्भः, पश्चिमयात्र पू.भा.।
१४ धृतियोग ५५:२१, कज्जली ३, विशालाक्षीदर्शनं, सिद्धियोग रा.०१:५६ या.,भद्रारंभः२२:५७ उपरि ततो भद्रांतः५१:०३ यावत्।
१५ शूलयोगमानं ५५:२१, श्रीविनायक ४ व्रतं, बहुला पूजा, भारतीय स्वतंत्रता दिवस, शिववास, अमृतयोग दि.१२:४९ उ.।
१६ पञ्चकान्तः रा.०१:५३ या., मासान्तः, शिववास, मृत्युयोग रा.१२:०१ उ.।
१७ हलधर षष्ठी,✱मघायांसिंहेरविः४२:३२,विष्णुपदीसंक्रान्तिपुण्यकालं दि.घं १२ या.,पुण्याहः, भद्रारंभः४६:१० उपरि।
१८ मासादिः, भद्रांतः१६:३६ यावत्।
१९ मोहरात्रिनिशीथे शक्तिपूजनं जयन्ती व्रतं, श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रतं, शिववास, अमृतयोग रा.०१:१४ उ.।
२० दग्ध ति.(५२:३१ उ.),श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रतं पारणं,श्रीकृष्णपूजनोत्सव व्रतं,शिववास सिद्धियोग ०२:३३ या.,ततो मृत्युयोग ०२:३३ उ.,**सर्वार्थसिद्धियोग (अहोरात्र)।**
२१ दग्ध ति.(५६:४२ या.),भाद्रेरविव्रतम्,पश्चिमांविनायात्रा मृग.,अमृतयोग रा.०४:१५ या.,ततो मृत्युयोग रा.०४:१५ उ.,भद्रारंभः२४:३६ उपरि ततो भद्रांतः५६:४२ यावत्।
२२ शिववास, पूर्वांविनायात्रा मृगशिरशि, सिद्धियोग (अहोरात्र), सर्वार्थसिद्धियोग दि.०९:४८ या.।
२३ जया ११ व्रतं सर्वेषां,शिववास, दक्षिणपश्चिमयात्रा पुन., मृत्युयोग प्रा.०६:१३ या., ततो अमृतयोग प्रा.०६:१३ उ.।
२४ कुष्माण्डेन पारणं, द्वापरयुगादिः, प्रदोष १३ व्रतं, पश्चिमदक्षिणयात्रा मिथुनस्थे चन्द्रः,शिववास,सिद्धियोग दि.०८:१७ या., ततो मृत्युयोग दि.०८:१७ उ.।
२५ प्रदोष १४ व्रतं, दुर्मर १४, श्रीभैरवपूजनं, दक्षिणविनायात्रा त्रयोदश्याम्,भद्रारंभः११:३७ उपरि ततो भद्रांतः४३:४६ यावत्।
२६ बाबागणिनाथजयन्त्युत्सवः, शिववास दि.११:५९ उ., अमृतयोग दि. ११:५९ या.।
२७ भाद्री ३०, कुशी स्नानदानादिः अमावश्या, कुशोत्पाटनं, शिववास दि.०१:२७ या., उत्तरयात्रा पू.फा., अमृतयोग दि. ०१:२७ उ.।

मिश्रमान कालिक दैनिक स्पष्टग्रहाः

ति	मंगलः	बुधः	गुरुःवक्री	शुक्रः	शनिःवक्री	केतु	मिश्रमान
२	००:२७:५२:५२	०४:२१:०७:०७	११:१५:४१:५७	०३:०९:३६:२७	०९:२४:१८:०१	०६:२५:४१:४४	४६:१३
३	००:२८:२७:५४	०४:२२:२९:३८	११:१५:३७:४६	०३:१०:४९:११	०९:२४:१३:४५	०६:२५:३८:३३	४६:१३
४	००:२९:०२:५६	०४:२३:५२:०९	११:१५:३३:३५	०३:१२:०१:५६	०९:२४:०९:२९	०६:२५:३५:२२	४६:१२
५	००:२९:३७:५८	०४:२५:१४:४१	११:१५:२९:२४	०३:१३:१४:४१	०९:२४:०५:१३	०६:२५:३२:११	४६:१२
६	०१:००:१३:०१	०४:२६:३७:१३	११:१५:२५:१२	०३:१४:२७:२६	०९:२४:००:५८	०६:२५:२९:०१	४६:११
७	०१:००:४८:०४	०४:२७:५९:४५	११:१५:२१:००	०३:१५:४०:११	०९:२३:५६:४३	०६:२५:२५:५१	४६:११
८	०१:०१:२३:५०	०४:२९:००:५१	११:१५:१६:०६	०३:१६:५३:३३	०९:२३:५१:१०	०६:२५:२२:४०	४६:०९
९	०१:०१:५५:३६	०५:००:०२:१३	११:१५:११:११	०३:१८:०६:५३	०९:२३:५१:५६	०६:२५:१९:२९	४६:०७
१०	०१:०२:२९:२२	०५:०१:१३:२७	११:१५:०६:१६	०३:१९:२०:१४	०९:२३:४०:३२	०६:२५:१६:१८	४६:०५
११	०१:०३:०३:०८	०५:०२:०४:४१	११:१५:०१:२१	०३:२०:३३:३७	०९:२३:३५:०८	०६:२५:१३:०७	४६:०३
११	०१:०३:३६:५४	०५:०३:०५:५६	११:१४:५६:२६	०३:२१:४६:५९	०९:२३:२९:४४	०६:२५:०९:५६	४६:०१
१२	०१:०४:१०:४१	०५:०४:०७:११	११:१४:५१:३१	०३:२३:००:२१	०९:२३:२४:२०	०६:२५:०६:४६	४६:००
१३	०१:०४:४४:२८	०५:०५:०८:२६	११:१४:४६:३७	०३:२४:१३:४३	०९:२३:१८:५६	०६:२५:०३:३६	४५:५९
१४	०१:०५:१६:११	०५:०५:४९:०७	११:१४:४०:०८	०३:२५:३५:५८	०९:२३:१५:०९	०६:२५:००:२५	४५:५७
३०	०१:०५:४७:५४	०५:०६:२९:४८	११:१५:३३:३१	०३:२६:५८:१३	०९:२३:११:२२	०६:२४:५७:१४	४५:५५

दैनिक लग्नसारणी चक्रम्

मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिं.अं.	क.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
२३:२३	०१:१९	०३:३२	०५:५०	०८:०६	१०:२१	१२:३८	१४:५५	१७:००	१८:४६	२०:१७	२१:४६
२३:१९	०१:१५	०३:२८	०५:४५	०८:०२	१०:१७	१२:३४	१४:५१	१६:५६	१८:४२	२०:१३	२१:४२
२३:१५	०१:११	०३:२४	०५:४०	०७:५८	१०:१३	१२:३०	१४:४७	१६:५२	१८:३८	२०:०९	२१:३८
२३:११	०१:०७	०३:२०	०५:३६	०७:५४	१०:०९	१२:२६	१४:४३	१६:४८	१८:३४	२०:०५	२१:३४
२३:०७	०१:०३	०३:१६	०५:३३	०७:५०	१०:०५	१२:२२	१४:३९	१६:४४	१८:३०	२०:०१	२१:३०
२३:०४	०१:००	०३:१३	०५:२९	०७:४७	१०:०२	१२:१९	१४:३६	१६:४१	१८:२७	१९:५८	२१:२७
२३:००	००:५६	०३:०९	०५:२६	०७:४३	०९:५८	१२:१५	१४:३२	१६:३७	१८:२३	१९:५४	२१:२३
२२:५६	००:५२	०३:०५	०५:२३	०७:३९	०९:५४	१२:११	१४:२८	१६:३३	१८:१९	१९:५०	२१:१९
२२:५३	००:४९	०३:०२	०५:२०	०७:३६	०९:५१	१२:०८	१४:२५	१६:३०	१८:१६	१९:४७	२१:१६
२२:४९	००:४५	०२:५८	०५:१६	०७:३२	०९:४७	१२:०४	१४:२१	१६:२६	१८:१२	१९:४३	२१:१२
२२:४६	००:४२	०२:५५	०५:१३	०७:२९	०९:४४	१२:०१	१४:१८	१६:२३	१८:०९	१९:४०	२१:०९
२२:४२	००:३८	०२:५१	०५:०९	०७:२५	०९:४०	११:५७	१४:१४	१६:१९	१८:०५	१९:३६	२१:०५
२२:३८	००:३४	०२:४७	०५:०५	०७:२१	०९:३६	११:५३	१४:१०	१६:१५	१८:०१	१९:३२	२१:०१
२२:३५	००:३१	०२:४४	०५:०२	०७:१८	०९:३३	११:५०	१४:०७	१६:१२	१७:५८	१९:२९	२०:५८
२२:३१	००:२७	०२:४०	०४:५८	०७:१४	०९:२९	११:४६	१४:०३	१६:०८	१७:५४	१९:२५	२०:५४

दैनिक अर्धप्रहरा चक्रम्

वार	दिन का अर्धप्रहरा	रात का अर्धप्रहरा
श.	दि. ५:३१-७:८। दि.१.३६-३:१३। सं.४:५०-६:२९।	दि.६:२९-७:५१। दि. १.१९-२:४१। सं.४:०३-५:३१।
र.	दि. १०:२२-०१:३६ ।	रा. १०:३५-११:५७। रा.०१:१९-०२:४१।
चं.	दि. ०७:०८-०८:४५। दि ०३:१३-०४:५०।	रा. १०:३५-११:५७ । रा.०२:४१-०४:०३
मं.	दि. ०७:०८-०८:४५। दि. ०१:३६-०३:१३।	रा. ०७:५१-०९:१३ ।
बु.	दि. ०८:४६-१०:२३। दि. १२:००-०१:३७।	रा. १२:००-०१:२३। रा.०२:४६-०४:०९।
गु.	दि. ०३:१४-०६:२८।	रा. १२:००-०१:२३ ।
शु.	दि. ०८:४६-१२:००।	रा. ०९:१४-१०:३६ ।
श.	दि. ५.३३-७:०९। दि.१:३३-३:१। सं.४:४५-६:२७।	दि.०६:२७-७:५०। दि.२:२२-३:४५। सं.५:८-६:३२।
र.	दि. १०:२२-०१:३४ ।	रा. १०:३५-११:५८। रा. ०१:२१-०२:४४।
चं.	दि. ०७:११-०८:४७ । दि.०३:११-०४:४७।	रा. १०:३४-११:५७ । रा. ०२:३४'०४:०६।
मं.	दि. ०७:११-०८:४७ । दि.०१:३५-०३:११।	रा. ०७:४८-०९:११ ।
बु.	दि. ०८:४८-१०:२४ । दि.१२:००-०१:३६।	रा. १२:००-०१:२४ । रा.०२:४८-०४:१२।
गु.	दि. ०३:१२-०६:२४ ।	रा. १२:००-०१:२४ । रा.०४:१२-०५:३६।
शु.	दि. ०८.:४७-११:५७।	रा.०९:१४-१०:३८।
श.	दि.५:३८-७:१३। दि.१:३३-३:०८। सं.४:४३-६:२२।	दि.६:२२-७:४६। दि.१:२२-२:४६। सं.४:१०-५:३८।

तिथिः २ शनि सूर्योदये

५ बुु | ल | ३
६ | सू. ४ शु | २
के ७ | मं १ रा
८ | श १० | १२ गु
९ | ११ चं

जन्माष्टमी-भगवान्श्रीकृष्ण का जन्म भाद्रपदकृष्णअष्टमी बुधवार को रोहिणी नक्षत्र में अर्धरात्रि के समय वृष के चन्द्रमा में हुआ था।अतः अधिकांश उपासक उक्त बातों में अपने-अपने अभीष्ट योग का ग्रहण करते हैं।शास्त्र में इसके शुद्धा और विद्धा दो भेद हैं।सूर्योदय से उदयपर्यन्त शुद्धा और तद्गत सप्तमी या नवमी से विद्धा होती है।शुद्धा या विद्धा भी-समा,न्यूना या अधिका के भेद से तीन प्रकार की हो जाती है और इस प्रकार अठारह भेद बन जाते हैं,परतु सिद्धान्त रूपमें तत्कालव्यापिनी (अर्धरात्रि में रहने वाली) तिथि अधिक मान्य होती है।वह यदि दो दिन हो-या दोनों ही दिन न हो तो (सप्तमीविद्धा को सर्वथा त्यागकर) नवमी-विद्धा का ग्रहण करना चाहिये।यह सर्वमान्य और पापघ्नवत बाल,कुमार युवा और वृद्ध-सभी अवस्थावाले नर-नारियों के करने योग्य है।इससे उनके पापों की निवृत्ति और सुखादि की वृद्धि होती है।जो इसको नहीं करते,उनको पाप होता है।इसमें अष्टमी के उपवास से पूजन और नवमी के (तिथिमात्र) पारणा से व्रत की पूर्ति होती है।व्रत करने वाले को चाहिये कि उपवास के पहले दिन लघु भोजन करे।रात्रि में जितेन्द्रिय रहे और उपवास के दिन प्रातः स्नानादि नित्यकर्म करके सूर्य,सोम,यम,काल,सन्धि,भूत,पवन,दिक्पति,भूमि,आकाश,खेचर,अमर और ब्रह्म आदि को नमस्कार करके पूर्व या उत्तर मुख बैठे,हाथ में जल, फल,कुश,फूल और गन्ध लेकर "ममाखिलपापप्रशमनपूर्वकसर्वाभीष्टसिद्धये श्रीकृष्णजन्माष्टमीव्रतमहं करिष्ये" यह संकल्प करे और मध्याह्न के समय काले तिलों के जल से स्नान करके देवकीजी के लिये सूतिकागृह नियत करे।उसे स्वच्छ और सुशोभित करके उसमें सूतिका के उपयोगी सब सामग्री यथाक्रम रखे।सामर्थ्य हो तो गाने-बजाने का भी आयोजन करे।प्रसूतिगृह के सुखद विभाग में सुन्दर और सुकोमलबिछौने के सुदृढ़ मञ्च पर अक्षतादि का मण्डल बनवाकर उसपर शुभ कलश स्थापन करे और उसी पर सोना,चाँदी,ताँबा,पीतल, →

तिथिः ८ शुक्र सूर्योदये

६ | ल | ४ शु
के ७ | सू ५ बु | ३
८ | २ मं
९ | ११ | १ चं रा
१० श | १२ गु

→ मणि,वृक्ष,मिट्टी या चित्ररूप की मूर्ति स्थापित करे। मूर्ति में सद्यः प्रसूत श्रीकृष्ण को स्तनपान कराती हुई देवकी हों और लक्ष्मी जी उनके चरण स्पर्श किये हुए हों-ऐसा भाव प्रकटरहे। इसके बाद यथा समय भगवान्के प्रकट होने की भावना करके वैद्रिक विधि से, पौराणिक प्रकार से अथवा अपने सम्प्रदाय की पद्धति से पञ्चोपचार,दशोपचार,षोडशोपचार या आचरणपूजा आदि में जो बन सके वही प्रीतिपूर्वक करे। पूजन मे देवकी, वसुदेव, वासुदेव, बलदेव, नन्द, यशोदा और लक्ष्मी-इस सबका क्रमशः नाम निर्दिष्ट करना चाहिये। अथ भाद्रमासकृत्यम्ः-सिंहादिप्रसूतौ शान्तिकथनम्ः-भानौ सिंहगते चैव यस्य गौः संप्रसूयते। मरणं तस्य निर्दिष्टं षड्भिर्मासैर्न संशयः।। तत्र शान्ति प्रवक्ष्यामि येन संपद्यते शुभम्। प्रसूतां तत्क्षणादेव तां गां विप्राय दापयेत्।। ततो होमं प्रकुर्वीत घृताक्तैराजसर्षपैः। आहुतीनां घृताक्तान्नामयुतं जहुयात्ततः "सोपवासः प्रयत्नेन दद्याद्विप्राय दक्षिणाम्" तथा-सिंह राशौ गते सूर्ये गो प्रसूतिर्यदा भवेत्। पौषे च महिषी सूते दिवैवाश्वतरी तथा।। तदाऽनिष्टं भवेत्किञ्चित्तच्छान्त्यै शान्तिकं चरेत्। अस्य वामेति सूक्तेन तद्विष्णोरितिमन्त्रतः।। जुहुयाच्च तिलाज्येन शतमष्टोत्तराधिकम्। मृत्युञ्जयविधानेन जुहुयाच्च तथायुतम्।। श्रीसूक्तेन ततः स्नायाच्छान्तिसूक्तेन वै पुनः। **कृष्णजन्माष्टमीः**-भाद्रकृष्णाष्टम्यां कृष्णस्य पूजनं व्रतञ्च स्त्री पुंससामान्याधिकारमिति समयप्रदीपे। एतच्च नित्यम् अष्टमी कृष्णपक्षस्य रोहिणीऋक्षसंयुता। भवेत्प्रौष्ठपदे मासि जयन्ती नाम सा स्मृता।। रोहिण्यामर्धरात्रे च यदाकृष्णाष्टमी भवेत्। तस्यामभ्यर्चनं शौरेर्हन्ति पापं त्रिजन्मजम्। समायोगे तु रोहिण्यां निशीथे राजसत्तम। समजायत गोविन्दो बालरूपी चतुर्भुजः।। तस्मात्तं पूजयेत्तत्र यथा वित्तानुरूपतः।। इयं चन्द्रोदय व्यापिनी यदा तथा जयन्तीव्रतमुभयदिने चन्द्रोदय व्यापित्वे तूत्तरदिने तथाहि अग्निपुराणे-वर्जनीया प्रयत्नेन सप्तम्यां संयुताष्टमी। स ऋक्षापि न मुहूर्त्तोऽपि यदा कृष्णाष्टमी तिथि। नवम्यां सैव ग्राह्या स्यात्सप्तमी संयुता नहि।। **जन्माष्टमीव्रतपूजने अकरणे दोषः**-अकुर्वैन्निरयं याति यावदिन्द्राश्चतुर्दश। नरो वा यदि वा नारी कृष्णजन्माष्टमी व्रतम्। न करोति तदा घोरा व्याली भवति कानने।। **पारणानिर्णयः**-पारणं तु-तिथिरष्टगुणं हन्ति नक्षत्रञ्च चतुर्गुणम्। तस्मात् प्रयत्नतः कुर्यात्तिथि भान्ते च पारणम्।। पद्मपुराणे यथा-पञ्चगव्यं यथा शुद्धं न ग्राह्यं मद्यदूषितम्। रविविद्धा तथा त्याज्या रोहिण्याऽपि युताऽष्टमी।। यद्युक्तदिने चन्द्रोदय व्यापिनी अष्टमी न चेत्तदा सप्तमीसंयुता ग्राह्या। तदुक्तं विष्णुपुराणे-कार्या विद्धाऽपि सप्तम्या रोहिणी संयुताष्टमी।। तिथिचन्द्रिकायाम्ः-पूर्वविद्धाऽष्टमी या तु उदये नवमी दिने। मुहूर्त्तमपि संयुक्ता सम्पूर्णा साऽष्टमी भवेत्। कला काष्ठा मुहूर्तोपि यदा कृष्णाष्टमी तिथिः। नवम्यां सैव ग्राह्या स्यात्सप्तमी संयुता नहि।तस्मात्प्रयत्नतः कुर्यात्तिथिभान्ते च पारणम्।। अथवा-तिथ्यन्ते चोत्सवान्ते च व्रती कुर्वीत पारणम्। **कुशोत्पाटनम्**ः-भाद्र अमायां कुशोत्पाटनमिति। मरीचि यथा-"मासे नभस्यमावास्या तस्यां दर्भश्चयो मतः। अयातयामास्ते दर्भा विनियोज्या पुनः पुनः।" कुशाग्रे वसते रूद्रः कुशमध्ये तु केशवः। कुशमूले वसेद् ब्रह्मा कुशान् मे देहि मेदिनी।। इति प्रार्थयेत् ॐ हुँ फट् इति मन्त्रेण कुशोत्पाटनं कर्तव्यम्॥

भाद्रपदशुक्लपक्षः

शाके १९४४; संवत् २०७९; फसली १४३०; दिनाङ्क २८:०८:२०२२ ई. ततो दिनाङ्क १०:०९:२०२२ ईस्वी या.। उत्तरे राहु कालः।
मार्गी पूर्वोदितो मंगलः शुक्री, मार्गी पश्चिमोदितो बुधः ततो ति. ५ वक्री बुधः, वक्री पूर्वोदितो गुरु शनिः, वर्षाऋतु, सौम्यगोलः, याम्यायनम्, अयनांश २३:५०:५४।

तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः		करणान्तः	चन्द्रराश्यन्तः		स्पष्टसूर्यः	दिनमान	सू. उ.	सू. अ.	दिनाङ्क		
वार	द. प.	घं. मि.	नक्षत्र	द. प.	घं. मि.	योग	द. प.	क. द. प.	रा. द.प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि.	घं. मि.	सौ	अं	
०१ र.	२१:३९	दि.०२:१९	पू.फा.	४२:३९	रा.१०:४३	सिद्धः	५४:२४	ब. २१:३९	सिं.५८:१३	रा.०४:५६	०४:१०:३८:२३	३१:४६	०५:३९	०६:२१	१२	२८	भाद्रेरविव्रतम्,चन्द्रदर्शन मु. ३० सौम्यश्रृंगं फलं समर्घ, शिववास दि.०२:१९ उ., पूर्वोत्तरयात्राद्वितीया पू.फा., मृत्युयोग दि.०२:१९ या. ।
०२ चं	२२:४३	दि.०२:४५	उ.फा.	४४:५५	रा.११:३८	साध्य	५२:०६	कौ.२२:४३	कन्या	अहोरात्र	०४:११:३६:१७	३१:४२	०५:४०	०६:२०	१३	२९	शिववास दि.०२:४५ या., दक्षिणयात्रा हस्ते, मृत्युयोग दि.०२:४५ या. ।
०३ मं.	२२:२८	दि.०२:३९	हस्त	४५:५३	रा.१२:०१	शुभः	४८:५१	ग. २२:२८	कन्या	अहोरात्र	०४:१२:३४:११	३१:३८	०५:४०	०६:२०	१४	३०	रूद्रसावर्णिमन्वादिः,हरितालिका (तीज) व्रतं,चतुर्थीचन्द्रपूजन (चौठचन्द्र),श्रीगणेश ४ व्रतं,पूर्वदक्षिणयात्रा तृतीयायां,सिद्धियोग दि.०२:३९ या.,भद्रारंभ:५१:४४ उपरि।
०४ बु	२१:००	दि.०२:०५	चित्रा	४५:४०	रा.११:५७	शुक्लः	४४:३४	वि. २१:००	क.१५:४७	दि.१२:००	०४:१३:३२:०५	३१:३४	०५:४१	०६:१९	१५	३१	श्रीगणेशपूजारंभः,*पूर्वफल्गुन्यांरविः ४३:५७, शिववास दि.०२:०५ उ., दक्षिणपश्चिमयात्रा पञ्चम्यां,भद्रांतः२१:०० यावत् ।
०५ गु	१८:१८	दि.०१:०१	स्वा.	४४:२०	रा.११:२६	ब्रह्मः	३९:२६	बा. १८:१८	तुला	अहोरात्र	०४:१४:२९:५८	३१:३०	०५:४२	०६:१८	१६	१	सितम्बर ०१, ऋषिपञ्चमी, सप्तर्षिपूजनं, पञ्चगव्यप्राशनञ्च, शिववास, पश्चिमयात्रा स्वात्यां, सिद्धियोग दि.०१:०१ या.।
०६ शु	१४:३९	दि.११:३५	विशा.	४२:११	रा.१०:३५	ऐन्द्रः	३३:३३	तै. १४:३९	तु.२७:४४	दि.०४:४९	०४:१५:२८:१३	३१:२६	०५:४३	०६:१७	१७	२	लोलार्कषष्ठी श्रीसूर्यपूजनं, शिववास दि.११:३५ या., सिद्धियोग दि.११:३५ या. ततो मृत्युयोग दि.११:३५ उ.,सर्वार्थसिद्धियोग रा.१०:३५ उ.।
०७ श	१०:०९	दि.०९:४८	अनु.	३८:१०	रा.०९:००	वैधृ.	२६:५९	व. १०:०९	वृश्चिक	अहोरात्र	०४:१६:२६:२८	३१:२२	०५:४४	०६:१६	१८	३	पश्चिमोत्तर यात्रा, भद्रारंभ:१०:०९ उपरि ततो भद्रांत:३७:३७ यावत् ।
०८ र.	०५:०५	दि.०७:४६	ज्येष्ठा	३५:३५	रा.०७:५९	विष्क	२६:५९	ब. ०५:०५	वृ.३५:३५	रा.०७:५९	०४:१७:२४:४३	३१:१८	०५:४४	०६:१६	१९	४	नवमीमानं ५४:०७,दग्ध ति.(५४:०७ उ.),भाद्रेरविव्रतम्,दूर्वाष्टमी,श्रीराधाष्टमी,श्रीमहालक्ष्मीव्रतारम्भ,शिववास दि.०७:४६ उ.,सिद्धियोग दि.०७:४६ या.,सर्वार्थसिद्धियोग रा.०७:५९ उ.।
१० चं	५३:०८	रा.०३:००	मूल	३१:३३	सा.०६:२२	प्रीतिः	१२:२७	तै. २३:५३	धनु	अहोरात्र	०४:१८:२२:५३	३१:१४	०५:४५	०६:१५	२०	५	दग्ध ति. (५३:०८ या.),उत्तरयात्रा पू.षा.,अमृतयोग दि.०३:०० या., ततो सिद्धियोग दि.०३:०० उ., ।
११ मं.	४७:१९	रा.०२:४२	पू.षा	२७:२१	दि.०४:४२	आयु.	०४:४९	व. २०:१४	ध.४१:११	रा.१०:१८	०४:१९:२१:१३	३१:१०	०५:४६	०६:१४	२१	६	सौभाग्ययोगमानं ५२:१५,कर्माधर्मा ११ व्रतं सर्वेषां,श्रीहरेःपार्श्वपरिवर्त्तनं,मृत्युयोग रा. ०२:४२ या.,ततो अमृतयोग रा. ०२:४२ उ.,भद्रांभ:२०:१४ उपरि ततो भद्रांत:४७:१९ यावत्।
१२ बु	४०:५५	रा.०२:०९	उ.षा	२३:११	दि.०३:०३	शोभ.	४९:२८	ब. १४:२२	मकर	अहोरात्र	०४:२०:१९:२८	३१:०६	०५:४७	०६:१३	२२	७	कुष्माण्डेन पारणं, श्रीवामनावतारः,श्रीइन्द्रपूजारम्भः,शिववास,उत्तरविनायात्राद्वादशी श्रवणे,सिद्धियोग रा.०२:०९ या., ततो मृत्युयोग रा. ०२:०९ उ.।
१३ गु.	३५:०७	रा.०७:५०	श्रव.	१९:१३	दि.०१:२८	अतिग	४२:०७	कौ.०८:००	म.४७:२७	रा.१२:४६	०४:२१:१७:४२	३१:०४	०५:४७	०६:१३	२३	८	प्रदोष १३ व्रतं,प्रदोष १४ व्रतं, पञ्चकारम्भः दि.०१:२८ उ., शिववास, दक्षिणविनायात्रा श्रवणे, अमृतयोग रा.०७:५० या., ततो मृत्युयोग रा.०७:५० उ.।
१४ शु	२९:५०	स.०५:४४	धनि.	१५:४१	दि.१२:०४	सुकर्मा	३५:०८	ग. ०२:२९	कुम्भ	अहोरात्र	०४:२२:१५:५६	३१:००	०५:४८	०६:१२	२४	९	श्रीअनन्तपूजनं तड्डोरकधारणञ्च, पूर्णिमा व्रतं, श्रीगणेशविसर्जन,भद्रांभ:२९:५० उपरि ततो भद्रांत:५७:३१ यावत्,अमृतयोग सं.०५:४४ या.,ततो मृत्युयोग सं.०५:४४ उ.।
१५ श	२५:१३	दि.०३:५४	शत.	१२:४४	दि.१०:५५	धृतिः	२८:४६	ब. २५:१३	कु.५७:१२	रा.०४:४२	०४:२३:१४:१०	३०:५४	०५:४९	०६:११	२५	१०	अगस्त्यार्घदानं, भाद्री १५, स्नानादानदिपूर्णिमा, शिववास दि.०३:४५ उ., पश्चिमयात्रा प्रतिपदि, मृत्युयोग दि.०३:५४ या.,अमृतयोग दि.०३:५४ उ.।

मिश्रमान कालिक दैनिक स्पष्टग्रहाः

ति	मंगलः	बुधःवक्री	गुरुःवक्री	शुक्रः	शनिःवक्री	केतु	मिश्रमान
१	०१:०६:१९:३७	०५:०७:१०:३०	११:१४:२७:१०	०३:२८:२०:२९	०९:२३:०७:३४	०६:२४:५४:०३	४५:५३
२	०१:०६:५१:२०	०५:०७:५१:१२	११:१४:२०:४१	०३:२९:४२:४५	०९:२३:०३:४८	०६:२४:५०:५२	४५:५१
३	०१:०७:२३:०३	०५:०८:३१:५४	११:१४:१४:१२	०४:०१:०५:०१	०९:२३:००:०१	०६:२४:४७:४१	४५:४९
४	०१:०७:५४:४६	०५:०९:१२:३६	११:१४:०७:४२	०४:०२:२७:१७	०९:२२:५६:१४	०६:२४:४४:३०	४५:४७
५	०१:०८:२६:३०	व५:०९:५३:१८	११:१४:०१:१२	०४:०३:४९:३३	०९:२२:५२:२६	०६:२४:४१:२०	४५:४५
६	०१:०८:५४:४७	०५:०९:२३:४१	११:१३:५२:३१	०४:०४:५४:५५	०९:२२:४८:५२	०६:२४:३८:०९	४५:४३
७	०१:०९:२३:०४	०५:०८:५४:०४	११:१३:४३:५०	०४:०६:००:१७	०९:२२:४५:१८	०६:२४:३४:५८	४५:४१
८	०१:०९:५१:२१	०५:०८:२४:२६	११:१३:३५:०९	०४:०७:०५:३९	०९:२२:४१:४४	०६:२४:३१:४७	४५:३९
१०	०१:१०:१९:३८	०५:०७:५४:४८	११:१३:२६:२८	०४:०८:११:०१	०९:२२:३८:१०	०६:२४:२८:३६	४५:३७
११	०१:१०:४७:५५	०५:०७:२५:१०	११:१३:१६:४७	०४:०९:१६:२३	०९:२२:३४:३६	०६:२४:२५:२५	४५:३५
१२	०१:११:१६:१२	०५:०६:५५:३२	११:१३:०९:०५	०४:१०:२१:४६	०९:२२:३१:०२	०६:२४:२२:१५	४५:३३
१३	०१:११:४४:२९	०५:०६:२५:५४	११:१३:००:२३	०४:११:२७:०९	०९:२२:२७:२८	०६:२४:१९:०५	४५:३२
१४	०१:१२:१२:४२	०५:०५:३९:२६	११:१२:५४:२३	०४:१२:४१:२२	०९:२२:२३:१२	०६:२४:१५:५४	४५:३०
१५	०१:१२:४०:५५	०५:०४:५२:५७	११:१२:४८:२३	०४:१३:५५:३५	०९:२२:१८:५६	०६:२४:१२:४३	४५:२८

दैनिक लग्न सारणी चक्रम्

मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिं.अं.	क.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं
२२:२७	००:२३	०२:३६	०४:५४	०७:१०	०९:२५	११:४२	१३:५९	१६:०४	१७:५०	१९:२१	२०:५०
२२:२४	००:२०	०२:३३	०४:५१	०७:०७	०९:२२	११:३९	१३:५६	१६:०१	१७:४७	१९:१८	२०:४७
२२:२०	००:१६	०२:२९	०४:४७	०७:०३	०९:१८	११:३५	१३:५२	१५:५७	१७:४३	१९:१४	२०:४३
२२:१६	००:१२	०२:२५	०४:४३	०६:५९	०९:१४	११:३१	१३:४८	१५:५३	१७:३९	१९:१०	२०:३९
२२:१३	००:०९	०२:२२	०४:४०	०६:५६	०९:११	११:२८	१३:४५	१५:५०	१७:३६	१९:०७	२०:३६
२२:०९	००:०५	०२:१८	०४:३६	०६:५२	०९:०७	११:२४	१३:४१	१५:४६	१७:३२	१९:०३	२०:३२
२२:०५	००:०१	०२:१४	०४:३२	०६:४८	०९:०३	११:२०	१३:३७	१५:४२	१७:२८	१८:५९	२०:२८
२२:०२	२३:५८	०२:११	०४:२९	०६:४५	०९:००	११:१७	१३:३४	१५:३९	१७:२५	१८:५६	२०:२५
२२:५८	२३:५४	०१:०७	०४:२५	०६:४१	०८:५६	११:१३	१३:३०	१५:३५	१७:२१	१८:५२	२०:२१
२१:५४	२३:५०	०२:०३	०४:२१	०६:३७	०८:५२	११:०९	१३:२६	१५:३१	१७:१७	१८:४८	२०:१७
२१:५१	२३:४७	०२:००	०४:१८	०६:३४	०८:४९	११:०६	१३:२३	१५:२८	१७:१४	१८:४५	२०:१४
२१:४७	२३:४३	०१:५६	०४:१४	०६:३०	०८:४५	११:०२	१३:१९	१५:२४	१७:१०	१८:४१	२०:१०
२१:४३	२३:३९	०१:५२	०४:१०	०६:२६	०८:४१	१०:५८	१३:१५	१५:२०	१७:०६	१८:३७	२०:०६
२१:४०	२३:३६	०१:४९	०४:०७	०६:२३	०८:३८	१०:५५	१३:१२	१५:१७	१७:०३	१८:३४	२०:०३

दैनिक अधप्रहरा चक्रम्

वार	दिन का अर्धप्रहरा	रात का अर्धप्रहरा
र.	दि. १०:२४-०१:३४।	रा.१०:३३-११:५७८। रा.०१:२१-२:४५।
चं.	दि. ०७:१५-०९:१०। दि.०२:५०-०४:१५।	रा. १०:३५-१२:००। रा.०२:५०-०४:१५
मं.	दि. ०७:१५-०८:४०। दि.०१:२५-०२:५०।	रा.०७:४५-०९:१०।
बु.	दि. ०८:४९-१०:२३। दि.११:५७-०१:३१।	रा.११:५९-०१:२४। रा.०२:४९-०४:१४।
गु.	दि. ०३:०६-०६:१८ ।	रा. ११:५८-१-२३। रा.०४:१३-०५:४२।
शु.	दि. ०९:५१-१२:५९।	रा. ०९:०७-१०:३२।
श.	दि.५:४४-७:८।दि.१:३४-३:०८।दि.४:४२-६:१६।	रा.६:१६-७:४२। रा.१:२६-२:५२।रा.४:१८-५:४४।
र.	दि. १०:२६-०१:३४।	रा.१०:३४-१२:००। रा.०१:२६-०२:५२।
चं.	दि.७:१८-८:५१। दि.०३:०३-०४:३६।	रा. १०:३३-११:५९। रा.०२:५१-४:१७।
मं.	दि.०७:१९-०८:०२। दि.०१:४९-०३:१४।	रा.०७:४०-०९:०६।
बु.	दि.०८:५३-१०:२६। दि.११:५६-०१:२९।	रा.११:५७-१:२३। रा.०२:४९-०४:१५ ।
गु.	दि. ०३:०६-०६:१३।	रा.११:५८-०१:२३। रा.०४:१५-०५:४७।
शु.	दि. ०८:५४-१२:०४।	रा. ०९:०६-१०:३३ ।
श.	दि.५:४९-७:२१।दि.१:२९-३:१।दि.४:३३-६:११।	रा.६:११-७:३८। रा.१:२६-२:५३।रा.४:२०-५:४९।

तिथिः १ रवि सूर्योदये

६ बु, ल, ४ शु, के ७, सू ५ चं, ३, ८, मं २, ९, ११, १ रा, १० श, १२ गु

श्राद्धपर्वादि–अमावस्या और पूर्णिमा ये दोनों पर्वतिथियां हैं। इस दिन पृथ्वी के किसी–न–किसी भाग में सूर्य या चन्द्रमा का ग्रहण हो ही जाता है। इससे धर्मप्राण हिन्दू इस दिन अवश्य दान–पुण्यादि कर्म करते हैं।हिमपिण्ड चन्द्र का आधा भाग काला और आधा सफेद है। सफेद पर सूर्य किरण पड़ने से वह प्रकाशित होता है। जब चन्द्रमा क्षीणहोकर नहीं दीखता,तब उस तिथि को अमा कहते हैं और पूर्ण चन्द्र से पूर्णिमा होती है। जिस अमावस्या में चन्द्र की कुछ सफेदी हो, वह सिनीवाली और कोयल के शब्द करने जितनी हो वह कुहू होती है। इसीप्रकार पूर्ण चन्द्र की पूर्णिमा "राका" और कलामात्र कमल की अनुमती के भेद से पूर्णिमा दोनों दो प्रकार की है। चन्द्रमा सूर्य से नीचा है, अतः पूर्णिमा को इसका काला भाग और अमा को सफेद भाग सूर्य की ओर रहने से पृथ्वी पर किये गये दान, पुण्य और भोजनादि के वाष्पसम्भूत अंश सूर्य की किरणों से आकर्षित होकर चन्द्र मण्डल में (जहां पितृगण रहते हैं) चले जाते हैं। इसी कारण अमा को पितृ–श्राद्धादि करने का विधान किया गया है। अमा के दिन चन्द्र का प्रकाशमान भाग सूर्य के आगे आ जाने से सूर्यग्रहण और पूर्णिमाको नीचे गये हुए सूर्य से उठी हुई पृथ्वी की छाया चन्द्र केसामने आ जाने से चन्द्रग्रहण होता है। "लोकान्तर में कहीं भी ग्रहण हुआ होगा–इस सम्भावना से धर्मज्ञ मनुष्य अमा और पूर्णिमा को स्नान–दानादि पुणय कर्म किया करते हैं। ग्रहण तब होता है,जब सूर्य,चन्द्र और पृथ्वी (तीनों) एक सीध में आते हैं,अन्यथा नहीं होता। व्रतादि में अमावस्या परविद्धा (प्रतिपदायुक्त) लेनी चाहिये।चतुर्दशीयुक्त यानी पूर्वविद्धा अमा निषिद्ध मानी गयी है। "पूर्वाह्णे वै देवानाम्,मध्याह्ने मनुष्याणामपराह्णः पितृणाम्" के अनुसार दिन को (लगभग १०–१० घड़ी के) तीन भागों में विभाजित मानकर जप, ध्यान और उपासना आदि के कार्य प्रथम तृतीयांश (लगभग १० घड़ी दिन चढ़े तक) करने चाहिए। सस्कारादि एवं आयुर्बलवित्तादिप्राप्ति ⟶

तिथिः ८ रवि सूर्योदये

६ बु, ल, ४, के ७, सू ५ शु, ३, चं ८, मं २, ९, ११, १ रा, १० श, १२ गु

⟶ के प्रयोगादि "मनुष्यकार्य" दूसरे तृतीयांश (मध्यदिन की लगभग १०घड़ी) में करने चाहिये और श्राद्ध,तर्पण एवं "पितृकार्य" तीसरे तृतीयांश (दिनासमाप्ति से पहले तक की लगभग १० घड़ी) में करनी चाहिये।**हरितालिकाव्रतम्**–भाद्रशुक्लतृतीयायां हरितालिकाव्रतम्।तत्र परा ग्राह्या। मुहूर्तमात्र सत्त्वेऽपि दिने गौरीव्रतं परे।चतुर्थी सहिता या तु सा तृतीया फलप्रदा अवैधव्यकरा स्त्रीणां पुत्रपौत्रप्रवर्धिनी।द्वितीयाशेष संयुक्तां या करोति विमोहिता।सा वैधव्यमवाप्नोति प्रवदन्ति मनीषिणः।भाद्रेमासि सिते पक्षे तृतीयाहस्तसंयुता तदनुष्ठान मात्रेण सर्वपापैः प्रमुच्यते।तत्र मन्त्रेणानेन पूजयेत्–ॐनमः शिवाय शान्ताय पञ्चवक्त्राय शूलिने।नन्दिभृङ्गि महाव्यालगणयुक्ताय शम्भवे।शिवायै हरकान्तायै प्रकृत्यै सृष्टिहेतवे नमस्ते ब्रह्मचारिण्यै जगद्धात्र्यै नमोनमः।संसारभयसंतापात्पाहि मां सिंहवाहिनी।येन कामेन देवि त्वं पूजितासि महेश्वरी।राज्यसौभाग्यसंपत्तिं देहि मामम्ब पार्वति।।चन्द्रदर्शनविचारः–अत्र चतुर्थ्यां सरोहिणीक- चन्द्रपूजन कुर्यात् फलादिकं गृहीत्वा चन्द्रञ्च।पश्येत्तन्मन्त्र–सिंहप्रसेन मवधीत् सिंहो जाम्बवता हतः।सुकुमारक मा रोदीस्तव ह्येषस्यमन्तकः।प्रार्थना–दधिशंखतुषाराभंक्षीरोदार्णवसंभवं।नमामिशशिनंभक्त्या शम्भोर्मुकुट भूषणम्।इति जपेत्।। ऋषिपञ्चमी–भाद्रपदशुक्लपञ्चमी–ऋषिपञ्चमी।सा हेमाद्रिमते परा।अत्र ऋषिपूजनं तु मध्याह्नव्यापिन्यां प्रशस्तम्।सप्तर्षीणा पूजनादिकं कृत्वा प्रार्थयेत्। नभस्ये शुक्लपञ्चम्यामर्चिता ऋषिसत्तमाः।दहन्तु पापं मे सर्वं गृह्णन्त्वर्घ्यं नमो नमः।लोकानां तुष्टिकर्तारो यूयं सर्वे तपोधनाः।नमो वो धर्मविज्ञेभ्यो महर्षिभ्यो नमो नमः।। पञ्चगव्यप्राशनम्–यत्त्वगस्थिगत पाप देहे तिष्ठति मामके।प्राशनात्पञ्चगव्यस्य तुष्टिकर्तारो यूयं सर्वे तपोधना।नमो वो धर्मविज्ञेभ्यो महर्षिभ्यो नमो नमः।।पञ्चगव्यप्राशनम्–यत्त्वगस्थिगत पाप देहे तिष्ठति मामके।प्राशनात्पञ्चगव्यस्य दहत्वग्निरिवेन्धम्।इति मन्त्रेण–गोमूत्रगोमयगोक्षीर गोदधि गोघृतनिर्मित पञ्चगव्य प्राश्य स्नायात्।।**दूर्वाष्टमीव्रतम्**–भाद्रपदशुक्लाष्टमी दूर्वाष्टमी।सा पूर्वाशुक्लाष्टमी तिथिर्या तु मासि भाद्रपदे भवेत्।दूर्वाष्टमी तु विज्ञेयानोत्तरा सा विधीयते।मुहूर्ते रौहिणेऽष्टम्या पूर्वा यदिवापरा।दूर्वाष्टमी तु सा कार्या ज्येष्ठा मूलञ्च वर्जयेत्।इदञ्चव्रतं स्त्रीणां नित्यम्। **पूजनविधि**–यथा भविष्ये–शुचौ देशे प्रजातायां दूर्वायां ब्राह्मणोत्तमा स्थाप्य लिङ्गं ततो गन्धैः पुष्पैर्धूपैस्समर्चयेत्। दध्यक्षतैर्द्विजश्रेष्ठ अर्घ्यं दद्यात् त्रिलोचने।दूर्वाशमीभ्या विधिवत्पूजयेत् श्रद्धयान्वितः।अथ मन्त्र–त्वं दूर्वेऽमृतजन्मासि वन्दितासि सुरासुरैः। सौभाग्य सन्ततिं देहि त्वं जरामराञ्चैन सर्वकार्यकरी भव।यथा शाखाप्रशाखाभिर्विस्तृतासि महीतले।तथा ममापि सन्तानं देहि त्वमजरामरम्।**वामनद्वादशीव्रतम्**–भागवते अष्टमस्कन्धे तु द्वादश्यां वामनोत्पत्तिरुक्त श्रोणायां श्रवणद्वादश्यां मुहूर्तेऽभिजिति प्रभु।ग्रहनक्षत्रतारा द्याश्चक्रुस्तज्जन्म दक्षिणम्।द्वादश्यां सविता तिष्ठन् मध्यन्दिनगतो नृप।विजया नाम साप्रोक्तामस्यां जन्म विदुर्हरे।।विधिकथनम्–नदीनां सङ्गमे स्नायादर्चयेदत्र वामनम्।सौवर्ण वस्त्रसंयुक्त द्वादशाङ्गुलमुच्छ्रितम्।।हिरण्मयेन पात्रेण दद्यादर्घ्यं प्रयत्नतः।नमस्ते पद्मनाभाय नमस्ते जलशायिने।तुभ्यमर्घ्यं प्रयच्छामि बालवामनरूपिणे।नमः कमलकिञ्जल्कपीत निर्मलवाससे।।महा हरिवपुस्कन्धधृतस्कन्धाय चक्रिणे।नमः शार्ङ्गसीरवाण पाणये वामनाय च।।यज्ञभुक्फलदात्रे च वामनाय नमो नमः।देवेश्वराय देवाय देवसंभूति कारिणे।प्रभवे सर्व देवानां वामनाय नमो नमः एवं सम्पूजयित्वा तं द्वादश्यामुदये रवेः।।श्रङ्गार सहितं तन्तु ब्राह्मणाय निवेदयेत्। वामनः प्रतिगृह्णाति वामनोऽहं ददामि ते।।भाद्रशुक्ल चतुर्दश्यामनन्तव्रतकथनम्–तत्र त्रिमुहूर्ताप्यौदयिकी ग्राह्येति माधवः।उक्तम्–उदये त्रिमूहूर्ताऽपि ग्राह्याऽनन्तव्रते तिथिः "मध्याह्ने भोज्यवेलायाम्" कथाया श्रवणात् "उपरि हि देवेभ्यो धारयति" इतिवद्विधि- कल्पनात्।पूजाव्रतेषु सर्वेषु मध्याह्नव्यापिनी तिथिर्निर्णयामृते तु घटिकामात्राऽप्यौदयिकीत्युक्तम्।अगस्त्यार्घदानमन्त्राः–कुम्भयोनि समुत्पन्न मुनीनांमुनि सत्तम।उदयन्ते लङ्काद्वारे अर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।शंख पुष्प फल तोय रत्नानि विविधानि च।उदयन्ते लङ्काद्वारे अर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।काशपुष्पप्रतीकाश वह्नि मारुतसम्भव। उदयन्ते लङ्काद्वारे अर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।प्रार्थनामन्त्रः–आतापी भक्षितो येन वातापि च महाबलः।समुद्रः शोषितो येन स मेऽगस्त्यः प्रसीदतु।।

आश्विनकृष्णपक्षः

शाके १९४४;संवत् २०७९;फसली १४३०;दिनाङ्क ११:०९:२०२२ ई. ततो दिनाङ्क २५:०९:२०२२ ईस्वी। उत्तरे राहु कालः। अयनांश २३:५०:५४।
मार्गी पूर्वोदितो मंगलः शुक्रः ततो ति. १४ पूर्वास्तोः शुक्रः,बुधः ततो ति.७ पश्चिमास्तोः,वक्रीपूर्वोदितो गुरूः शनिः,वर्षाऋतु ततो ति.७ शरदृतः,सौम्यगोलः,याम्यायनं।

तिथि वार	तिथ्यन्तः द. प.	तिथ्यन्तः घं. मि.	नक्षत्र	नक्षत्रान्तः द. प.	नक्षत्रान्तः घं. मि.	योग	योगान्तः द. प.	करणान्तः क. द. प.	चन्द्राश्यन्तः रा. द. प.	चन्द्राश्यन्तः घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू. उ. घं.मि.	सू. अ. घं.मि.	दिनाङ्काः सौ	दिनाङ्काः अं
०१ र.	२१:२४	दि.०२:२४	पू.भा	१०:४१	दि.१०:०६	शूलः	२३:०४	कौ. २१:२४	मीन	अहोरात्र	०४:२४:१२:२४	३०:५२	०५:५०	०६:१०	२६	११
०२ चं.	१८:३८	दि.०१:१७	उ.भा.	०९:२८	दि.०९:३७	गण्डः	१८:१२	ग. १८:३८	मीन	अहोरात्र	०४:२५:१०:३८	३०:४८	०५:५०	०६:१०	२७	१२
०३ मं.	१६:५९	दि.१२:३९	रेवती	०९:२४	दि.०९:३७	वृद्धिः	१४:१२	वि. १६:५९	मी.०९:२४	दि.०९:३७	०४:२६:०८:५२	३०:४४	०५:५१	०६:०९	२८	१३
०४ बु.	१६:३३	दि.१२:२९	अश्वि	१०:११	दि.१०:००	ध्रुवः	११:०५	बा. १६:३३	मेष	अहोरात्र	०४:२७:०७:०६	३०:४०	०५:५२	०६:०८	२९	१४
०५ गु.	१७:२७	दि.१२:५२	भरणी	१२:५४	दि.११:०३	व्या.	०९:००	तै. १७:२७	मे.२८:४९	सं.०५:२५	०४:२८:०५:१९	३०:३६	०५:५३	०६:०७	३०	१५
०६ शु.	१९:३९	दि.०१:४६	कृति.	१६:३३	दि.१२:३१	हर्षण	०७:५७	व. १९:३९	वृष	अहोरात्र	०४:२९:०३:५७	३०:३२	०५:५४	०६:०६	३१	१६
०७ श.	२२:५९	दि.०३:०६	रोहि.	२१:१८	दि.०२:२५	वज्रः	०७:४५	ब. २२:५९	वृ.५३:१०	रा.०३:१०	०५:००:०२:३५	३०:२८	०५:५४	०६:०६	०१	१७
०८ र.	२७:१३	दि.०४:४८	मृग.	२६:५७	दि.०४:४२	सिद्धिः	०८:२१	कौ. २७:१३	मिथुन	अहोरात्र	०५:०१:०१:१२	३०:२४	०५:५५	०६:०५	०२	१८
०९ चं.	३२:०६	रा.०६:४६	आर्द्रा	३३:१२	रा.०७:१३	व्यति.	०९:२९	ग. ३२:०६	मिथुन	अहोरात्र	०५:०१:५९:४९	३०:२०	०५:५६	०६:०४	०३	१९
१० मं.	३७:२०	रा.०८:५३	पुन.	३९:४३	रा.०९:५०	वरी.	१०:५६	व. ०४:५८	मि.२३:०६	दि.०३:११	०५:०२:५८:२६	३०:१६	०५:५७	०६:०४	०४	२०
११ बु.	४२:१७	रा.१०:५३	पुष्य	४६:०२	रा.१२:२३	परिघः	१२:२४	ब. ०९:४९	कर्क	अहोरात्र	०५:०३:५७:०३	३०:१२	०५:५८	०६:०२	०५	२१
१२ गु.	४६:४३	रा.१२:३९	आश्ले	५१:४७	रा.०२:४१	शिवः	१३:३१	कौ. १४:३०	क.५१:४७	रा.०२:४१	०५:०४:५५:४०	३०:१०	०५:५८	०६:०२	०६	२२
१३ शु.	५०:१६	रा.०२:०५	मघा	५६:३९	रा.०४:३९	सिद्धः	१४:०६	ग. १८:१४	सिंह	अहोरात्र	०५:०५:५४:३३	३०:०६	०५:५९	०६:०१	०७	२३
१४ श.	५२:४१	रा.०३:०४	पू.फा.	६०:००	अहोरात्र	साध्य	१३:५३	वि. २१:३०	सिंह	अहोरात्र	०५:०६:५३:२६	३०:०२	०६:००	०६:००	०८	२४
३० र.	५३:५२	रा.०३:३३	पू.फा.	००:३४	प्रा.०६:१४	शुभः	१२:४८	च. २३:३२	सिं.१३:५०	दि.११:३२	०५:०७:५२:१९	२९:५८	०६:००	०६:००	०९	२५

११ प्रतिपदश्राद्धं, महालयारंभः, पितृपक्षीयपार्वणतर्पणारंभः,भाद्रेरविव्रतम्, शिववास दि. ०२:२४, मृत्युयोग दि.०२:२४ या. ।
१२ द्वितीयाश्राद्धं, उत्तरयात्रा तृतीयायां,भद्रारंभः ४७:१२ उपरि,मृत्युयोग दि.०१:१७ या.।
१३ तृतीयाश्राद्धं,श्रीएकदन्त ४ व्रतं,पञ्चकान्तः दि.०९:३७ या.,भद्रांतः१६:५९ यावत्,शिववास दि. १२:३९ उ.,सिद्धियोग दि.१२:३९ या.,सर्वार्थसिद्धियोग दि.०९:३७ उ.।
१४ चतुर्थीश्राद्धं,*उत्तरफल्गुन्यांरविः१७:२७,शिववास,सिद्धियोग दि.१२:५२ या.।
१५ पञ्चमीश्राद्धं, इन्द्रविसर्जनं ।
१६ षष्ठीश्राद्धं,दधिचीप्टानभोजनं,ततो रात्र्यन्ते स्त्रीणां विशिष्टभोजनं (ओठगन),मासान्तः,भद्रारंभः१९:३९ उपरि ततो भद्रांतः५१:१९ यावत्,शिववास दि.०१:४६ या.।
१७ सप्तमीश्राद्धं, श्रीजिमूतवाहन (जितिया) व्रतं,श्रीमहालक्ष्मीव्रतं,श्रीविश्वकर्मापूजा,कन्यायांरविः४२:३१,मु ३०,षडशीतिसंक्रान्तिपुण्यकालं दि.१२ उपरि,पुण्याहः卐
१८ दग्ध ति.(२७:१३ या.),अष्टमीश्राद्धं,श्रीमहालक्ष्मीव्रतपारणं,श्रीजीमुतवाहनव्रतपारणं सायं (०४:४८ उ.),मासादिः,शिववास दि.०४:४८ या.। 卐 शिववास दि.०३:०६ उ.।
१९ मातृनवमी,नवमीश्राद्धं,दक्षिणपश्चिमयात्रा पुन.,अमृतयोग रा.०६:४६ उ.।
२० दशमीश्राद्धं,पश्चियात्रा दशम्यां,भद्रारंभः०४:४३ उपरि ततो भद्रांतः३७:२० यावत्,मृत्युयोग रा.०८:५३ उ. ।
२१ एकादशीश्राद्धं,इन्द्रिरा ११ व्रतं सर्वेषां,शिववास,उत्तरांविनायात्रा पुष्ये,अमृतयोग रा.१०:५३ या.,ततो सिद्धियोग रा.१०:५३ उ.,क्षिणःशुक्रः ०२:०८ अशुद्धारम्भः।
२२ द्वादशीश्राद्धं,गुड़ेन पारणं,शिववास,अमृतयोग रा.१२:३७ उ.।
२३ त्रयोदशीश्राद्धं, प्रदोष १३ व्रतं,भद्रारंभः५०:१६ उपरि,अमृतयोग रा.०२:०५ उ.।
२४ प्रदोष १४ व्रतं,चतुर्दशीश्राद्धं,उत्तरयात्राचतुर्दश्यां,भद्रांतः२१:२८ यावत्,सिद्धियोग रा.०३:०४ या.,पूर्वास्तः शुक्रः०२:०८।
२५ महालया ३०,स्नानदानादिः,पितृपक्षीयपार्वणतर्पणान्तः,शस्त्रदिहतानांश्राद्धं,शिववास,मृत्युयोग रा.०३:३३ उ.।

मिश्रमान कालिक दैनिक स्पष्टग्रहाः

ति	मंगलः	बुधःवक्री	गुरुःवक्री	शुक्रः	शनिःवक्री	केतुः	मिश्रमान
१	०१:१३:०९:०८	०५:०४:०६:२८	११:१२:४२:२३	०४:१५:०९:४८	०९:२२:१४:४०	०६:२४:०९:३२	४५:२६
२	०१:१३:३७:२१	०५:०३:११:५९	११:१२:३६:२३	०४:१६:२४:०१	०९:२२:१०:२४	०६:२४:०६:२१	४५:२४
३	०१:१४:०५:३५	०५:०२:३३:३०	११:१२:३०:२३	०४:१७:३८:१५	०९:२२:०६:०८	०६:२४:०३:१०	४५:२२
४	०१:१४:३३:४९	०५:०१:४७:०१	११:१२:२४:२२	०४:१८:५२:२९	०९:२२:०१:४२	०६:२४:००:००	४५:२०
५	०१:१५:०२:०३	०५:०१:००:३२	११:१२:१८:२१	०४:२०:०६:४३	०९:२१:५७:३५	०६:२३:५६:५०	४५:१८
६	०१:१५:२८:२९	०४:००:२६:४१	११:१२:११:१३	०४:२१:२०:४२	०९:२१:५४:२८	०६:२३:५३:३९	४५:१६
७	०१:१५:५४:५५	०४:२९:५२:४९	११:१२:०४:०५	०४:२२:३४:४१	०९:२१:५१:२१	०६:२३:५०:१८	४५:१४
८	०१:१६:२१:२१	०४:२९:१८:५७	११:११:५६:५७	०४:२३:४८:४०	०९:२१:४८:१४	०६:२३:४७:१७	४५:१२
९	०१:१६:४७:४७	०४:२८:४५:०५	११:११:४९:४९	०४:२५:०२:४०	०९:२१:४५:०७	०६:२३:४४:०६	४५:१०
१०	०१:१७:१४:१३	०४:२८:११:१३	११:११:४२:४१	०४:२६:१६:४०	०९:२१:४२:००	०६:२३:४०:५५	४५:०८
११	०१:१७:४०:४०	०४:२७:३७:२१	११:११:३५:३३	०४:२७:३०:४०	०९:२१:३८:५३	०६:२३:३७:४५	४५:०६
१२	०१:१८:०७:०७	मा४:२७:०३:२९	११:११:२८:२५	०४:२८:४४:४०	०९:२१:३५:४६	०६:२३:३४:३४	४५:०४
१३	०१:१८:२९:१७	०४:२७:१०:३५	११:११:१९:०६	०४:२९:५८:५५	०९:२१:३३:०९	०६:२३:३१:२४	४५:०३
१४	०१:१८:५१:२७	०४:२७:१७:४१	११:११:०९:४७	०५:०१:१३:१०	०९:२१:३०:३२	०६:२३:२८:१३	४५:०१
३०	०१:१९:१३:३७	०४:२७:२४:४७	११:११:००:२८	०५:०२:२७:२५	०९:२१:२७:५५	०६:२३:२५:०२	४४:५९

दैनिक लग्न सारणी चक्रम्

वार	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिं.अं.	क.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
र.	२१:३६	२३:३२	०१:४५	०४:०३	०६:१९	०८:३४	१०:५१	१३:०८	१५:१३	१६:५९	१८:३०	१९:५९
चं.	२१:३२	२३:२८	०१:४१	०३:५९	०६:१५	०८:३०	१०:४७	१३:०४	१५:०९	१६:५५	१८:२६	१९:५५
मं.	२१:२९	२३:२५	०१:३८	०३:५६	०६:१२	०८:२७	१०:४४	१३:०१	१५:०६	१६:५२	१८:२३	१९:५२
बु.	२१:२५	२३:२१	०१:३४	०३:५२	०६:०८	०८:२३	१०:४०	१२:५७	१५:०२	१६:४८	१८:१९	१९:४८
गु.	२१:२१	२३:१७	०१:३०	०३:४८	०६:०४	०८:१९	१०:३६	१२:५३	१४:५८	१६:४४	१८:१५	१९:४४
शु.	२१:१७	२३:१३	०१:२६	०३:४४	०६:००	०८:१५	१०:३२	१२:४९	१४:५४	१६:४०	१८:११	१९:४०
श.	२१:१४	२३:१०	०१:२३	०३:४१	०५:५७	०८:१२	१०:२९	१२:४६	१४:५१	१६:३७	१८:०८	१९:३७
र.	२१:१०	२३:०६	०१:१९	०३:३७	०५:५३	०८:०८	१०:२५	१२:४२	१४:४७	१६:३३	१८:०४	१९:३३
चं.	२१:०६	२३:०२	०१:१५	०३:३३	०५:४९	०८:०४	१०:२१	१२:३८	१४:४३	१६:२९	१८:००	१९:२९
मं.	२१:०३	२२:५९	०१:१२	०३:३०	०५:४६	०८:०१	१०:१८	१२:३५	१४:४०	१६:२६	१७:५७	१९:२६
बु.	२०:५९	२२:५५	०१:०८	०३:२६	०५:४२	०८:५७	१०:१४	१२:३१	१४:३६	१६:२२	१७:५३	१९:२२
गु.	२०:५५	२२:५१	०१:०४	०३:२२	०५:३८	०७:५३	१०:१०	१२:२७	१४:३२	१६:१८	१७:४९	१९:१८
शु.	२०:५२	२२:४७	०१:०१	०३:१९	०५:३५	०७:५०	१०:०७	१२:२४	१४:२९	१६:१५	१७:४६	१९:१५
श.	२०:४८	२२:४४	००:५७	०३:१५	०५:३१	०७:४६	१०:०३	१२:२०	१४:२५	१६:११	१७:४२	१९:११
र.	२०:४४	२२:४०	००:५३	०३:११	०५:२७	०७:४२	०९:५९	१२:१६	१४:२१	१६:०७	१७:३८	१९:०७

दैनिक अर्धप्रहरा चक्रम्

वार	दिन का अर्धप्रहरा	रात का अर्धप्रहरा
र.	दि. १०:२६-०१:३०।	रा. ११:५८-०२:५२।
चं.	दि. ०७:२२-०८:५४ । दि. ०२.०२-०३.३४	रा. १०:३९-११:५८। रा.०२:५२-०७:१९।
मं.	दि. ०७:२३-०८:५४। दि ०१:३०-०३:०२।	रा. ०७:३६-०९:०३ ।
बु.	दि. ०८:५६-१०:२८। दि. १२.००-०१.३२।	रा. १२:००-१:२८ । रा. २:५६-०४:२४।
गु.	दि. ०२:५९-०६:०८।	रा. ११:५९-०१:२७। रा.०४:२३-०५:५३।
शु.	दि. ०८.५६-११.५८।	रा. ०९:०२-१०:३० ।
श.	दि.५.५४-७.२५। दि. १.२९-३.००। सं.४.३१-६.०६।	रा.६:०६-७:३४।रा.१:२६-२:५४।रा.४:२२-५:५४।
र.	दि. १०.२८-०१.३० ।	रा. १०:२९-११:५७। रा. ०१:२५-२:५६।
चं.	दि. ०७.२७-८.५८ । दि.०३.०२-०४.३३।	रा, १०.३१-१२:१०। रा. ०३:०८-०४:३७।
मं.	दि. ०७.२७-८.५७ । दि.०१.२७-०२.५७ ।	रा. ०७:३२-०९:०१ ।
बु.	दि. ०८.५८-१०.२८ । दि.११.५८-०१.२८ ।	रा. ११:५८-०१:२७ । रा. ०२:५६-४:२५।
गु.	दि. ०२.५८-०६.०२।	रा. ११:५८-०१:२७ ।रा.०४:२५-०५:५८।
शु.	दि. ०८.५९-११.५९ ।	रा. ०८:५९-१०:२८ ।
श.	दि.६.००-७.३०। दि. १.३०-३.००।सं.४.३०-६.००।	रा.६:०-७:३०। रा.१:३०-३:०।रा.४:३०-०६:००।
र.	दि.१०:३०-०१.३०।	रा. १०:३०-१२:००।रा.०१:३०-०३:००।

तिथिः १ रवौ सूर्योदये

६ बु | ल | ४
के ७ | सू ५ शु | ३
८ | मं २
९ | ११ | १२ | १ रा
१० श | चं | गु

श्राद्ध-"श्राद्ध" श्रद्धा शब्द से निष्पन्न है स्कन्दपुराण के अनुसार "श्राद्ध नाम इसलिए पड़ा क्यों कि इस कृत्य में श्रद्धा ही मूल (मूलस्रोत) है। ब्रह्मपुराण में श्राद्ध को परिभाषित करते हुए कहा गया है कि "शास्त्रानुमोदित विधान द्वारा पितरों को लक्ष्य करके श्रद्धा पूर्वक किया गया कर्म श्राद्ध है।" याज्ञवल्क्य कृत मिताक्षरा के अनुसार "पितरों को उद्देश्य करके श्रद्धापूर्वक किसी वस्तु का या उनसे संबन्धित किसी द्रव्य का त्याग श्राद्ध है।" वस्तुतः पितरलोग श्राद्ध में दिये गये पितरों से सन्तुष्ट होकर अपने वंशज को जीवन संतति,सम्पत्ति,विद्या,स्वर्ग,मोक्ष तथा सम्पूर्ण सुख एवं राज्य प्रदान करते हैं ।यहां पर मत्स्यपुराण में उठाया गया एक प्रश्न विशेष रुप से उल्लेखनीय है कि "वह भोजन जिसे श्राद्ध में आमन्त्रित ब्राह्मण ग्रहण करते हैं या अग्नि में डाला जाता है क्या उन मृतात्माओं द्वारा ग्रहण किया जाता है जो कि मृत्योपरान्त कर्मानुसार शुभ या अशुभ शरीर धारण कर चुके होंगे ? प्रश्न के साथ ही वहीं पर इसका सटीक उत्तर भी मिलता है कि-पिता,पितामह,एवं प्रपितामह अर्थात् तीन पीढ़ी क्रमशः वसु,रुद्र एवं आदित्य के रुप माने गये हैं। इसलिए जब किसी का नाम-गोत्र एवं सूत्र का उच्चारण करके मन्त्र एवं श्रद्धा के द्वारा जो कव्य प्रदान किया जाता है। वह पितरों के पास ही पहुंचता है। उल्लेखनीय है कि यदि किसी के पिता या पितामह अपने शुभकर्मों के कारण देवता हो गये हैं तो श्राद्ध में दिया हुआ भोजन अमृत हो जाता है और उनके देवत्व की स्थिति में उनका अनुसरण करता है , यदि वे अपने अशुभ कर्मों के फलस्वरुप असुर हो गये हों तो श्राद्ध का वह भोजन उनके अभीष्ट के अनुसार उन्हे सुख पहुंचाता है। यदि वे पशु हो गये हों तो वह उनके लिए घास एवं यदि सर्पादि बन गये हों तो श्राद्ध →

तिथिः ८ रवौ सूर्योदये

७ के | ल | बु ५ शु
८ | सू ६ | ४
९ | ३ चं
श १० | १२ गु | २ मं
११ | १ रा

→ में प्रदान भोजन वायु बन कर उनकी सेवा करता है। वस्तुतः वसु,रुद्र आदित्य आदि ऐसे देवता हैं जो सर्वत्र पहुंच रखते हैं इसलिए पितर लोग जहां भी हों वे उन्हे सन्तुष्टि प्रदान करने की शक्ति रखते हैं। इस प्रकार वसु,रुद्र आदित्य आदि श्राद्ध के अधिष्ठाता देवता हैं। महालयविचार-कर्मकाण्डमार्गप्रदीप के अनुसार शास्त्रों में मनुष्य के लिये दिवे-ऋण,ऋषि-ऋण और पितृ-ऋण-ये तीन ऋण बतलाये गये हैं। इनमें श्राद्ध के द्वारा पितृ-ऋण का उतारना आवश्यक है,क्योंकि लिन माता-पिता ने हमारी आयु,आरोग्य और सुख-सौभाग्यादि की अभिवृद्धि के लिये अनेक यत्न या प्रयास किये उनके ऋण से मुक्त न होने पर हमारा जन्माग्रहण करना निरर्थक होता है। उनपके ऋण उतारने में कोई ज्यादा खर्च हो,सो भी नहीं है केवल वर्षभर में उनकी मृत्यु-तिथि को सर्वसुलभ जल,तिल,यव,कुश और पुष्प आदि से उनका श्राद्ध सम्पन्न करने और गोग्रास देकर एक या तीन,पाँच आदि ब्राह्मणों को भोजन करा देने मात्र से ऋण उतर जाता है,अतःइस सरलता से साध्य होने वाले कार्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिये। इसके लिये जिस मास की जिस तिथि को माता-पिता आदि की मृत्यु हुई हो उस तिथि को श्राद्ध-तर्पण-गोग्रास और ब्राह्मणदि-भोजनादि करना-कराना आवश्यक है,इसमें पितृगण प्रसन्न होते हैं और हमारा सौभाग्य बढ़ता है। पुत्र को चाहिये कि वह माता-पिता की मरण-तिथि को मध्याह्नकाल में पुनः स्नान करके श्राद्धादि करे और ब्राह्मणों को भोजन कराके स्वयं भोजन करें। **आश्विनमासकृत्यम्- महालयः-** पृथ्वी चन्द्रोदये वृद्धमनुःआषाढीमवधिं कृत्वा पञ्चमं पक्षमाश्रिताः। कांक्षन्ति पितरः क्लिष्टा अन्नमप्यन्वहं जलम्॥ब्राह्मे यथा-आश्वयुक्कृष्णपक्षे तु श्राद्धं कार्यं दिने दिने। त्रिभागहीनं पक्षं वा त्रिभागत्वर्धमेव वा॥तथा च प्रतिपदाद्यमावास्यान्तःपार्वण कालो मुख्यः (पक्षपर्यन्तः)।तदशक्तस्य पञ्चम्याद्य मावास्यान्तः।तत्राप्यशक्तस्य अष्टम्याद्यमावास्यान्तः। ततोऽप्यशक्तस्य दशम्याद्यमावास्यान्तः।एतत्पक्ष चतुष्ट्याशक्तेनैकस्मिन्नपि दिने पार्वणं कर्तव्यम्। तथाहि-यो वै श्राद्धं नरः कुर्यादेकस्मिन्नपि वासरे। तस्य संवत्सरं यावत्संतृप्ताः पितरो ध्रुवम्॥या तिथिर्यस्य मासस्य मृताहे तु प्रवर्त्तते। सा तिथिः पितृपक्षे तु पूजनीया प्रयत्नतः।।तथाहि-यो वै श्राद्धं नरः कुर्यादेकस्मिन्नपि वासरे। तस्य संवत्सरं यावत्संतृप्ताः पितरो ध्रुवम्।।या तिथिर्यस्य मासस्य मृताहे तु प्रवर्त्तते। सा तिथिः पितृपक्षे तु पूजनीया प्रयत्नतः।।**श्राद्धकालमाहः**-पूर्वाह्णे दैविकंश्राद्धमपराह्णे तु पार्वणम्। एकोद्दिष्टं तु मध्याह्ने प्राप्तः वृद्धिनिमित्तकम्।। शुक्लपक्षस्य पूर्वाह्णे श्राद्धं कुर्याद्विचक्षणः। कृष्णपक्षेऽपराह्णे च रौहिणं न तु लङ्घयेत्।।**चतुर्दश्यांश्राद्धम्**:-आहवेषु विपन्नानां जलाग्निभृगु पातिनाम्। चतुर्दश्यां भवेत्पूजामावस्यायांतु कामिनी।।चतुर्दश्यां तु यच्श्राद्धं सपिण्डी करणे कृते। तदेकोद्दिष्टविधिना कर्तव्यं शस्त्र घातिनाम्॥न ज्ञायते मृताहश्चेत् प्रमिते प्रेषिते सति। मासश्चेत्प्रतिविज्ञातस्तद्दर्शे स्यान्मृतेऽहनि॥अन्यच्चमरीचिः-श्राद्धविघ्ने समुत्पन्ने अविज्ञाते मृतेऽहनि॥ एकादश्यां तु कर्तव्य कृष्णपक्षे विशेषतः॥आयुः पुत्रान् यशःकीर्तिं तुष्टिं पुष्टिं बलं श्रियम्। पशून् सुखं धनं धान्यं प्राप्नुयात् पितृपूजनात्॥ **जीवत्पुत्रिकामहालक्ष्मी व्रतयोर्निर्णयः**- आश्विन कृष्णाष्टम्यां महालक्ष्मीव्रतम्। लक्ष्मीव्रतं चाभ्युदिते शशांके यत्राष्टमी चाश्विनकृष्णपक्षे। स्त्रियःप्रकुर्वन्ति तदाशु नूनं सूर्योदये जीवत्पुत्रिका स्यात्। पूर्वा वा परविद्धा वा ग्राह्या चन्द्रोदये सदा। त्रिमुहूर्ताऽपि सा पूज्या परतश्चोर्ध्वगा मिनी॥पूर्वेद्युरपरेद्युर्वा प्रदोषे यत्र चाष्टमी। तत्र पूज्यः स नारीभिः पूज्यो जीमूतवाहनः। अर्धरात्रमतिक्रम्य वर्तते चोत्तरा तिथिः। तदा तस्यां तिथौ कार्यं महालक्ष्मीव्रतं सदा॥ मातृनवमीनिर्णयः-इयं नवमी पूर्वाह्णव्यापिनी ग्राह्या। सर्वासामेव मातृणां श्राद्धं कन्यागते रवौ। नवम्यां हि प्रदातव्या ब्रह्मलब्धवरा च सा॥पितृमातृकुलोत्पन्ना या कश्चित्तु मृताःस्त्रियः। श्राद्धार्हा मातरो ज्ञेयाःश्राद्धं तत्र प्रदीयते।

आश्विनशुक्लपक्षः

शाके १९४४; संवत् २०७९; फसली १४३०; दिनाङ्क २६:०९:२०२२ ई. ततो दिनाङ्क ०९:१०:२०२२ ईस्वी या.। उत्तरे राहु कालः ।
मार्गीपूर्वोदितो मंगलः,मार्गीपश्चिमास्तोः बुधःततो ति.४ पूवोदित बुधः,वक्रीपूर्वोदितो गुरूः शनि,मार्गीपूर्वास्तोः शुक्रः,शरदृतः,सौम्यगोलः,याम्यायनं,अयनांश २२:५०:५४।

तिथि वार	तिथ्यन्तः द. प.	तिथ्यन्तः घं. मि.	नक्षत्र	नक्षत्रान्तः द. प.	नक्षत्रान्तः घं. मि.	योग	योगान्तः द. प.	करणान्तः क. द. प.	चन्द्रराश्यन्तः रा. द.प.	चन्द्रराश्यन्तः घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	दिनाङ्काः सौ	दिनाङ्काः अं	
०१ चं.	५३:४५	रा.०३:३१	उ.फा.	०२:५९	प्रा.०७:१३	शुक्लः	११:४३	किं. २४:०४	कन्या	अहोरात्र	०५:०८:५१:१२	२९:५४	०६:०१	०५:५९	१०	२६	शारदीयनवरात्रंभः, कलशस्थापनं श्रीदुर्गापूजनोत्सवः, गजारूढायादेव्या आगमनफलं वृष्टिप्रदम्, दक्षिणयात्रा हस्ते, सिद्धियोग रा.०३:३१ या.,मृत्युयोग रा.०३:३१ उ.।
०२ मं.	५२:२५	रा.०३:००	हस्त	०५:१७	दि.०८:०९	ब्रह्मः	०७:३७	बा. २५:०५	क.३४:४९	रा.०७:५८	०५:०९:५०:०५	२९:५०	०६:०२	०५:५८	११	२७	चन्द्रदर्शन मु.३०,श्रीरेमन्तपूजनं,ब्रह्मचारिणी देवीदर्शनं,द्वितीयां केशसंयमनार्थं पट्टडोरकं,✷हस्तेरविः५०:००,शिववास,अमृतयोग रा.०३:०० या.,ततो सिद्धियोग रा.०३:०० उ.।
०३ बु.	४९:४९	रा.०१:५९	चित्रा	०४:२३	दि.०७:४८	ऐन्द्रः	०३:३३	तै. २३:३७	तुला	अहोरात्र	०५:१०:४८:५७	२९:४६	०६:०३	०५:५७	१२	२८	वैधृतियोगमानं ५५:०४,चन्द्रघंटादेवीदर्शनं,दर्पणं च तृतीयायां चरणरागार्थमलक्तकं, मृत्युयोग ०१:५९ या.।
०४ गु.	४६:१६	रा.१२:३३	स्वा.	०३:१७	दि.०७:२२	विष्क	५२:५१	व. १८:०३	तु.४६:०५	रा.१२:२९	०५:११:४७:४९	२९:४२	०६:०३	०५:५७	१३	२९	कुष्माण्डादेवीदर्शनं,चतुर्थ्यां मधुपर्कं रौप्यतिलकं नेत्रर्थं कज्जलं,श्रीगणेश ४ व्रतं,भद्रारंभ:१७:४६ उपरि ततो भद्रांत:४५:४६ यावत्,सिद्धियोग रा.१२:२१ उ.,वक्री बुधः पूवोदितः ३५:४८।
०५ शु.	४१:४९	रा.१०:४८	विशा.	०१:२२	प्रा.०६:३७	प्रीतिः	४६:२४	ब १३:४८	वृश्चिक	अहोरात्र	०५:१२:४७:४९	२९:३६	०६:०४	०५:५६	१४	३०	अनुराधामानं ५७:११,स्कन्दमातादेवीदर्शनं,यथाशक्त्यलङ्करणं,शिववास,उत्तरयात्रा ज्येष्ठायां,सिद्धियोग रा.१०:४८ उ.,सर्वार्थसिद्धियोग प्रा.०६:३७ उ.।
०६ श.	३६:४२	रा.०८:४६	ज्येष्ठा	५५:०३	रा.०४:०६	आयु.	४०:२२	कौ. ११:१६	वृ.५५:०३	रा.०४:०६	०५:१३:४६:४९	२९:३२	०६:०५	०५:५५	१५	१	**अक्टूबर १०**,कात्यायनीदेवीदर्शनं,**गजपूजाबिल्वाभिमंत्रणश्च**,शिववास,उत्तरयात्रा,अमृतयोग रा.०८:४६ या.। ऍं
०७ र.	३१:०२	रा.०६:३१	मूल	४९:०८	रा.०१:४५	सौभा.	३१:५७	ग. ०३:५२	धनु	अहोरात्र	०५:१४:४५:४९	२९:२८	०६:०६	०५:५४	१६	२	दग्ध ति.(३१:०२ उ.),गाँधी जयन्ती,कालरात्रिदेवीदर्शनं,पत्रिकाप्रवेशः,महारात्रिर्निशापूजा,पूर्वोत्तरयात्रा,भद्रारंभ:३१:०२ उपरि ततो भद्रांत:५८:०३ यावत्,सर्वार्थसिद्धियोग रा.०१:४५ या.।
०८ चं.	२५:०५	दि.०४:०९	पू.षा	४३:५९	रा.११:४३	शोभ.	२४:१७	ब. २५:०५	धनु	अहोरात्र	०५:१५:४४:४९	२९:२४	०६:०७	०५:५३	१७	३	दग्ध ति.(२५:०५या.),**महाष्टमीव्रतं,दीक्षाग्रहणम्,महागौरीदेवीदर्शनं**,शिववास दि.०४:०९ उ.।
०९ मं.	१८:५६	दि.०१:४२	उ.षा	४२:४६	रा.११:१४	अतिग	१६:३०	कौ.१८:५६	ध.००:२६	प्रा.०६:१८	०५:१६:४३:४९	२९:२०	०६:०८	०५:५२	१८	४	**सिद्धदात्रीदेविदर्शनं,महानवमीव्रतं,त्रिशूलिनीपूजा,दीक्षाग्रहणम्**,शिववास दि.०१:४२ या.,भद्रारंभ:०४:४३ उपरि ततो भद्रांत:३७:२० यावत्।
१० बु.	१२:५९	दि.११:२०	श्रव.	३८:४४	रा.०९:३८	सुकर्मा	०८:४६	ग. १२:५९	मकर	अहोरात्र	०५:१७:४२:४९	२९:१६	०६:०८	०५:५२	१९	५	**विजया १० यात्रा,अपराजितापूजा,नवरात्र व्रतपारणं,देवीविसर्जनं,जयन्तीधारणं,गजवाहनायागमने,देव्यागमनफल,शुभवृष्टिकराः,पञ्चकारम्भ:रा.०९:३८ उ.,भद्रारंभ:४०:०६ उपरि।**
११ गु.	०७:१४	दि.०९:०३	धनि.	३५:०५	रा.०८:११	धृतिः	०१:१६	वि. ०७:१४	म.०६:५४	दि.०८:५५	०५:१८:४१:४८	२९:१४	०६:०९	०५:५१	२०	६	शूलयोगमानं ५२:५०,**पाशांकुंशा ११ व्रतं सर्वेषां**,शिववास दि.०९:०३ उ.,भद्रांत:०७:१४ यावत्।
१२ शु.	०२:०१	प्रा.०६:५८	शत.	३१:५९	रा.०६:५८	गण्डः	४७:३०	बा. ०२:०१	कुम्भ	अहोरात्र	०५:१९:४१:१३	२९:१०	०६:१०	०५:५०	२१	७	त्रयोदशीमानं ५५:२४,**श्रीपद्मनाभ १२,गुड़ेन पारणं,प्रदोष १३ व्रतं**,शिववास,मृत्युयोग प्रा.०६:५८ या.।
१४ श.	५३:४१	रा.०३:३९	पू.भा	२९:४४	रा.०६:०५	वृद्धिः	४१:३३	ग. २५:३४	कु.१५:१७	दि.१२:१८	०५:२०:४०:३७	२९:०६	०६:११	०५:४९	२२	८	**प्रदोष १४ व्रतं**, पश्चिमोत्तरयात्रा पू.भा., सिद्धियोग रा.०३:३९ या.,ततो मृत्युयोग रा.०३:३९ उ.,भद्रारंभ:५३:१४ उपरि।
१५ र.	५०:५८	रा.०२:३५	उ.भा.	२८:१५	स.०५:३०	ध्रुवः	३६:१८	वि. २२:३५	मीन	अहोरात्र	०५:२१:४०:०१	२९:०२	०६:१२	०५:४८	२३	९	**स्नानदाव्रतादौ पूर्णिमा, कोजागरा, श्रीलक्ष्मीपूजन**, उत्तरयात्रा हस्ते पूर्णिमायां, अमृतयोग रा.०२:३५ या.,ततो मृत्युयोग रा.०२:३५ उ.,भद्रांत:२२:२० यावत्।

मिश्रमान कालिक दैनिक स्पष्टग्रहाः

ति	मंगलः	बुधः	गुरुःवक्री	शुक्रः	शनिःवक्री	केतुः	मिश्रमान
१	०१:११:३५:४७	०४:२७:३१:५३	११:१०:५१:०९	०५:०३:४१:४१	०९:२१:२५:१८	०६:२३:२१:५१	४४:५७
२	०१:११:५७:५७	०४:२७:३८:५८	११:१०:४१:५०	०५:०४:५५:५७	०९:२१:२२:४१	०६:२३:१८:४०	४४:५५
३	०१:१२:२०:०७	०४:२७:४६:०३	११:१०:३२:३०	०५:०६:१०:१३	०९:२१:२०:०३	०६:२३:१५:२९	४४:५३
४	०१:१२:४२:१७	मा.४:२७:५३:०८	११:१०:२३:१०	०५:०७:२४:२९	०९:२१:१७:२६	०६:२३:१२:१९	४४:५१
५	०१:२०:५१:५४	०४:२८:३६:१२	११:१०:१४:१६	०५:०८:३६:०४	०९:२१:१४:५०	०६:२३:०९:०७	४४:४९
६	०१:२१:१९:३१	०४:२८:२४:१६	११:१०:०५:१२	०५:०९:४३:४०	०९:२१:१२:१३	०६:२३:०५:५६	४४:४६
७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
९	०१:२१:५२:४५	०५:००:५५:२४	११:०९:४६:०३	०५:१२:२२:५२	०९:२१:१०:१९	०६:२३:५६:३५	४४:४२
१०	०१:२२:१०:२२	०५:०१:४०:५८	११:०९:३७:४८	०५:१३:३७:२८	०९:२१:०८:३२	०६:२२:५६:२४	४४:४०
११	०१:२२:२७:५९	०५:०२:२६:३२	११:०९:२८:४३	०५:१४:५२:०४	०९:२१:०६:४५	०६:२२:५३:१४	४४:३८
१२	०१:२२:४५:३६	०५:०३:१२:०६	११:०९:१९:३८	०५:१६:०६:४०	०९:२१:०४:५८	०६:२२:५०:०४	४४:३६
१३	०१:२३:०२:१०	०५:०४:३०:४३	११:०९:१३:००	०५:१७:२१:०५	०९:२१:०३:१७	०६:२२:४६:५३	४४:३५
१४	०१:२३:१४:४४	०५:०५:४४:२०	११:०९:०६:२३	०५:१८:५१:३०	०९:२१:०१:३६	०६:२२:४३:४२	४४:३३
१५	०१:२३:२९:१९	०५:०७:०७:५७	११:०८:५९:४६	०५:२०:१३:५५	०९:२०:५९:५५	०६:२२:४०:३१	४४:३१

दैनिक लग्न सारणी चक्रम्

मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिं.अं.	क.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.	वार
२०:४१	२२:३७	००:५०	०३:०८	०५:२७	०७:३९	०९:५६	१२:१३	१४:१८	१६:०४	१७:३५	१९:०४	चं.
२०:३७	२२:३३	००:४६	०३:०४	०५:२०	०७:३५	०९:५२	१२:०९	१४:१४	१६:००	१७:३१	१९:००	मं.
२०:३३	२२:२९	००:४२	०३:००	०५:१६	०७:३१	०९:४८	१२:०५	१४:१०	१५:५६	१७:२७	१८:५६	बु.
२०:३०	२२:२६	००:३९	०२:५७	०५:१३	०७:२८	०९:४५	१२:०२	१४:०७	१५:५३	१७:२४	१८:५३	गु.
२०:२६	२२:२२	००:३५	०२:५३	०५:०९	०७:२४	०९:४१	११:५८	१४:०३	१५:४९	१७:२०	१८:४९	शु.
२०:२२	२२:१८	००:३१	०२:४९	०५:०५	०७:२०	०९:३७	११:५४	१३:५९	१५:४५	१७:१६	१८:४५	श.
२०:१९	२२:१५	००:२८	०२:४६	०५:०२	०७:१७	०९:३४	११:५१	१३:५६	१५:४२	१७:१३	१८:४२	र.
२०:१५	२२:११	००:२४	०२:४२	०४:५८	०७:१३	०९:३०	११:४७	१३:५२	१५:३८	१७:०९	१८:३८	चं.
२०:११	२२:०७	००:२०	०२:३८	०४:५४	०७:०९	०९:२७	११:४४	१३:४९	१५:३५	१७:०६	१८:३४	मं.
२०:०६	२२:०४	००:१७	०२:३५	०४:५१	०७:०६	०९:२३	११:४०	१३:४५	१५:३१	१७:०२	१८:३१	बु.
२०:०४	२२:००	००:१३	०२:३१	०४:४८	०७:०१	०९:१९	११:३६	१३:४१	१५:२७	१६:५८	१८:२७	गु.
२०:००	२१:५६	००:०९	०२:२७	०४:४३	०६:५८	०९:१५	११:३२	१३:३७	१५:२३	१६:५४	१८:२३	शु.
१९:५७	२१:५३	००:०६	०२:२४	०४:४०	०६:५५	०९:१२	११:२९	१३:३४	१५:२०	१६:५१	१८:२०	श.
१९:५३	२१:४९	००:०२	०२:२०	०४:३६	०६:५१	०९:०८	११:२५	१३:३०	१५:१६	१६:४७	१८:१६	र.

दैनिक अधप्रहरा चक्रम्

वार	दिन का अर्धप्रहरा	रात का अर्धप्रहरा
चं.	दि.७:३०-८:५९।दि.२:५५-४:२४।	रा.१०:२९-११:५९।रा.२:५९-४:२९।
मं.	दि.७:३१-९:००।दि.१:२७-२:५६।	रा.७:२८-८:५८ ।
बु.	दि.९:०१-१०:३०।दि.११:५९-१:२८।	रा.११:५७-१:२६। रा.२:५७-४:२७।
गु.	दि.२:५७-५:५७ ।	रा.११:५७-१:२७। रा.४:२७-५:५७।
शु.	दि.९:०२-१२:०० ।	रा. ८:५८-१०:२९ ।
श.	दि.६:५-७:३३।दि.१:२५-२:५३।दि.४:२१-५:५५।	रा.५:५५-७:२६। रा.१:३०-३:०१।रा.४:३२-६:०५।
र.	दि.१०:३०-१:२६ ।	रा.१०:२७-११:५८। रा.१:२९-३:००।
चं.	दि.७:३५-९:०३। दि.३:०४-४:३२।	रा.१०:२६-११:५७।रा.२:५९-४:२०।
मं.	दि.७:३६-८:०४। दि.१:२८-२:५६।	रा.७:२४-८:५६।
बु.	दि.९:०४-१०:३२। दि.१२:००-१.२८।	रा.१२:००-१:३०। रा.३:०४-४:४२ ।
गु.	दि.२:५१-५:५१।	रा.११:५९-१:३१ । रा.४:३५-६:०९ ।
शु.	दि.९:०४-११:५८।	रा.७:५४-९:२६ ।
श.	दि.६:११-७:३८।दि.१:२६-२:५३।दि.४:२०-५:४९।	रा.५:४९-७:२१। रा.१:२९-३:०१। रा.४:३३-६:११।
र.	दि.११:३३-२:२७।	रा.१०:२७-१२:००। रा.१:३३-३:०६।

तिथिः १ चन्द्रे सूर्योदये

के ७ | ल | ५ बु
८ | सू ६ चं शु | ४
९ | ३
श १० | १२ गु | २ मं
११ | १ रा

कलशस्थापननिर्णयः—आश्विनशुक्लप्रतिपादे कलश संस्थाप्य नवमी पर्यन्त श्रीदुर्गासप्तशतीपाठः कर्तव्यः।कलशस्थापन तच्च पूर्वाह्ने उभयदिने पूर्वाह्ने प्रतिपल्लाभे द्वितीयायुक्तायामेव तत्कार्यम् नत्वमावास्या युक्तायां प्रतिपदि। तिथितत्वचिन्तामणौ यथा—अमायुक्ता न कर्तव्या प्रतिपच्चण्डिकार्चने।मुहूर्त्तमात्रा कर्तव्या द्वितीयायांगुणान्विता।।तत्रपूजनविधिः—स्नानं माङ्गलिकं कृत्वा ततो देवीं प्रपूजयेत्। शुभाभिर्मृत्तिका भिश्च पूर्वं कृत्वा तु वेदिकाम्।।सप्तधान्यं वपेत्तत्र जलकुम्भसमन्वितान्। तत्र संस्थापयेत्कुम्भं विधिना मन्त्रपूर्वकम्।।तत्कुम्भोपरि जीर्णायां नूतनायां वा प्रतिमायां दुर्गामावाह्य प्रत्यहं नवरात्रे सविधि षोडशोपचारैः सम्पूजयेत्।
ततो **संकल्प—ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भागवतो महापुरुस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे** आर्यावर्तान्तर्गतब्रह्मवर्तैकदेशे पुण्य **बिहारप्रदेशे मिथिलांञ्चले....अमुके मण्डले(जिला)...अमुकग्रामे(गाम),स्वगृहे(यदि अपनाघर में हो),अमुक देवालये (यदि मन्दिर में हो)** प्रदेशे बौद्धावतारे वर्तमाने अनल नामसंवत्सरे, **दक्षिणायने,उत्तरगोले,**महामाङ्गल्यप्रदे मासानाम् **उत्तमे आश्विने मासे,शुक्ल पक्षे,प्रतिपदायां तिथौ,चन्द्र वासरान्वितायां,उ.फा नक्षत्रे शुक्ल योगे,किंतु करणे,कन्या राशिस्थिते श्रीसूर्ये,कन्या राशिस्थिते श्रीचन्द्रे,**यथा-यथा राशिस्थितेषु भौम-बुध-गुरु-शुक्र-शनिषु सत्सु शुभे योगे **शुभे करणे एवं गुण-गण-विशेषणविशिष्टायां** शुभपुण्यतिथौ सकलशास्त्र श्रुतिस्मृति पुराणोक्त फलप्राप्तिकामः''अमुकगोत्रोत्पन्नः(यजमानक गोत्र),अमुकशर्मा(यजमानक नाम)अहं **ममात्मनः सपुत्रस्त्री- बान्धवस्य** श्रीनवदुर्गानुग्रहतो ग्रहकृत-राजकृत-सर्वविधपीडा-निवृत्ति-पूर्वकं-नैरुज्यदीर्घायुः पुष्टिः धनधान्यसमृद्ध्यर्थं श्रीनवदुर्गाप्रसादेन सर्वापन्निवृत्ति-सर्वाभीष्ट फलावाप्ति-धर्मार्थ-काम-मोक्ष-चतुर्विध-पुरुषार्थप्राप्त्यर्थं **साङ्गसायुध सवाहनसपरिवार श्रीदुर्गाप्रीतिकामो वार्षिकशरत्कालीन श्रीदुर्गापूजा अङ्गभूतकलशस्थापनं पूजनं च अहं करिष्ये।**
यदि सामाजिकसम्मिलिपूजा हो तो—अमुकग्रामवासीनाम्(गामक नाम)नानानां गोत्राणां सकल जनानामेतत्पूजोप कारकाणामन्यग्रामवासिनां च उपस्थितशरीराविरोधेन श्रीनवदुर्गानुग्रहतो..।

तिथिः ८ चन्द्रे सूर्योदये

के ७ | ल | ५
८ | ६ सू शु बु | ४
चं ९ | ३
श १० | १२ गु | २ मं
११ | १ रा

तदनन्तर जप चण्डीपाठ कुर्यादिति।प्रत्यह पाठादौ पाठान्ते च पाठकैः शत नवार्णमन्त्रजप कार्यम्।**कन्यापूजनम्**:—द्विवर्षमारभ्य दशवर्षान्त यावत् कुमारीवयः शुभफलजनकम्।तथा चोक्तम्—एकवर्षा न कर्त्तव्या कन्यापूजाविधानतः।अज्ञाता सा तु भोगानां गन्धादीनां तु बालिका।।कुमारिका च सा प्रोक्ता द्विवर्षा या भवेदिह।त्रिमूर्तिनी त्रिवर्षा च कल्याणी चतुरब्दिका।।रोहिणी पञ्चवर्षा च कन्यका षष्ठवार्षिकी।चण्डिका सप्तवर्षा च अष्टवर्षा च शाम्भवी।।नववर्षा भवेद्दुर्गा सुभद्रा दशवार्षिकी।प्रतिपदादि नवम्यन्तं क्रमात्ताश्च प्रपूजयेत्।।अत ऊर्ध्वं न कर्त्तव्या कन्या ताश्च विगर्हिताः।एभिश्च नामभिः पूजा कर्त्तव्या विधिसंयुतैः।।ब्राह्मणी सर्वकार्येषु जयार्थे नृपवंशजाम्।लाभार्थे वैश्यवंशोत्थां सुतार्थे शूद्रवंशजाम्।।दारूणे चान्त्यजातानां पूजयेद्विधिना नरः।**अथचण्डीपाठफलमाहः**—वाराहीतन्त्रे यथा—चण्डीपाठफलं देवी! श्रृणुष्व गदतो मम।ग्रहोपशान्त्यै कर्तव्यं पञ्चावृतं वरानने।।महाभये समुत्पन्ने सप्तावृत्तमुदीरयेत्।अर्कावृत्तेः काम्यसिद्धिर्वैरिहानिश्च जायते।। मन्वावृत्त्यारिपुर्वश्यस्तथास्त्रीवश्यतामि यात्।सौख्य पञ्चदशावृत्ताच्छ्रेयमवाप्नाति मानवः।।कलावृत्तात्पुत्रपौत्रधनधान्यादिकं विदुः।राज्ञाभी तिविमोक्षाय वैरस्योच्चाटनाय च।। कुर्यात्सप्तदशावृतं तथा द्वादशकं प्रिये।महाव्रणविमोक्षाय विंशावृतं पठेन्नरः।।पञ्चविंशावर्तनाच्च भवेद्बन्ध विमोक्षणम्।संकटे समनुप्राप्तेदुश्चि कित्सामये तथा।।जातिध्वंसे कुलच्छेदे आयुषो नाश आगते।वैरिवृद्धो व्याधिवधौ धननाशे तथा क्षये।तथैव त्रिविधोत्पाते तथा चैवातिपातके।कुर्याद्यत्नाच्छतावृतं ततः सम्पद्यते शुभम्।।श्रियो वृद्धिः शतावृत्ताद्राज्यवृद्धिस्तथा प्रिये-मनसा चिन्तितं देवि! सिद्ध्येदष्टोत्तराच्छतात्।।शताश्वमेधयज्ञानां फलमाप्नोति सुव्रते।सहस्रा वर्तनाल्लक्ष्मी रावृणोति स्वयं स्थिरा।।भुक्त्वा मनोरथान् सर्वान्नरो मोक्षमवाप्नुयात्।**महाष्टमी निर्णयः**—महाष्टमीव्रतेऽष्टमी नवमी पूजा ग्राह्या।**पाद्मोक्तेः**—अष्टमी नवमीयुक्ता नवमी चाष्टमीयुता।शरन्महाष्टमी पूज्या नवमीसंयुता सदा।।सप्तमीसंयुता नित्यं शोकसन्तापकारिणी।। **स्मृतिसंग्रहेः**—यदा सूर्योदये न स्यात्नवमी चापरेऽहनि।तदाष्टमी प्रकुर्वीत सप्तम्यां सहितां नृप।**महानवमीनिर्णयः**—महानवमी तु पूर्वयुता ग्राह्या।आश्वयुक् शुक्लपक्षे तु अष्टमी मूलसंयुता।सा महानवमीप्रोक्ता त्रैलोक्येऽपि सुदुर्लभा।।तस्मादियं महापुण्या नवमी पापनाशिनी।उपोष्य सुप्रयत्नेन सततं सर्व पार्थिवैः।। नवम्यामपराह्ने तु बलिदानं प्रशस्यते। दशमीं वर्जयेत्तत्रनात्र कार्या विचारणा।।ब्राह्मणेन सदा देयं कुष्माण्ड बलिकर्मणि।श्रीफलं वा सुराधीश छेदं नैव तु कारयेत्।।माषान्नेन बलिर्देयो ब्राह्मणेन विजानता।।**अथविजयादशमीः**—दशम्याम् अपराजितापूजा देवी विसर्जनादि उदयगामिन्यां दशम्याम् एकादशीयुतायामेव। तथाहिनन्दिकेश्वरे-प्रातरावाहयेद्देवींप्रातरेवविसर्ज्जयेत्।ततःप्रातश्चसम्पूज्य प्रातरेव विसर्ज्जयेत्।।सूर्योदये यदा राजन् दृश्यते दशमी तिथिः। आश्विनेमासिशुक्ले तु विजयां तां विदुर्बुध हेमाद्रौ यथा—उदये दशमीकिंचित् सम्पूर्णएकादशी यदि।श्रवणर्क्ष यदा काले सा तिथिः विजयाऽभिधाः ।।**नीलकण्ठदर्शनमन्त्रः**—नीलकण्ठाय भद्राय भद्ररूपायते नमः।भद्रत्वं देहि मे भद्रमाशां पूरय पूरय।।**खञ्जनदर्शनः**—नारायणशरीरोत्थं संवत्सर शुभप्रदः।शालग्राम शिलाकण्ठ खञ्जरीट नमोऽस्तुते।।**शमीग्रहणम्**:—पूर्णाया दशम्यांशमी मर्चयित्वायात्राकरणम्।तत्रमन्त्रः—शमीशमयतेपापं शमीलोहितकण्टका।धारिण्यर्जुनबाणानां रामस्य प्रियदायिनी करिष्यमाणा या यात्रा यथाकालं सुखं मया।तत्र निर्विघ्नकर्त्रीत्वं भव श्रीराम पूजिते।।**श्रीदुर्गागमनागमनयानविचारः**— शशिसूर्ये गजारूढ़ा शनिभौमे तुरंगमे।गुरौ शुक्रे च दोलायां बुधे नौका प्रकीर्त्तिता॥**तत्फलं**—गजे च जलदा देवी क्षत्रभंगस्तुरंगमे।नौकायां सर्वसिद्धिःस्याद्दोलायां मारणं ध्रुवं।**विजयदशम्यां देव्या गमनयान फलं**—शशिसूर्यदिने यदि सा विजया महिषागमने रूजशोककरा शनिभौम दिने यदि सा विजया चरना युधयानकरी विकला।बुधशुक्र दिने यदि सा विजया गजवाहनगा शुभवृष्टिकरा,सुरराजगुरौ यदि सा विजया नरवाहनगा शुभसौख्य करा।

कार्तिककृष्णपक्षः

शाके १९४४; संवत् २०७९; फसली १४३०; दिनाङ्क १०:१०:२०२२ ई. ततो दिनाङ्क २५:१०:२०२२ ईस्वी या.। उत्तरे राहु कालः।

मार्गीपूर्वोदितो मंगलः,मार्गीपूर्वोदित बुधःति.८पश्चिमास्तोः,वक्रीपूर्वोदितो गुरूःशनिः,मार्गीपूर्वास्तोःशुक्रः,शरदृतः,सौम्यगोलःति.८याम्यगोलः,याम्यायनं,अयनांश २२:५०:५४।

तिथि वार	तिथ्यन्तः द.प.	तिथ्यन्तः घं.मि.	नक्षत्रान्तः नक्षत्र	नक्षत्रान्तः द.प.	नक्षत्रान्तः घं.मि.	योगान्तः योग	योगान्तः द.प.	करणान्तः क. द.प.	चन्द्रराश्यन्तः रा. द.प.	चन्द्रराश्यन्तः घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू. उ. घं.मि.	सू. अ. घं.मि.	दिनाङ्काः सौ	दिनाङ्काः अं
०१ चं.	४९:२४	रा.०१:५८	रेवती	२८:१३	सं.०५:२९	व्या.	३१:५३	वा. २०:११	मी.२८:१३	सं.०५:२९	०५:२२:३९:२५	२८:५८	०६:१२	०५:४८	२४	१०
०२ मं.	४९:०३	रा.०१:५०	अश्वि	२८:३०	सं.०५:३७	हर्षण	२८:२६	तै. २०:४३	मेष	अहोरात्र	०५:२३:३८:४९	२८:५४	०६:१३	०५:४७	२५	११
०३ बु.	५०:००	रा.०२:१४	भरणी	३०:०२	सं.०६:१५	व्रज्र:	२६:००	व. १९:३२	मे.४५:४४	रा.१२:३२	०५:२४:३८:१३	२८:५०	०६:१४	०५:४६	२६	१२
०४ गु.	५२:१७	रा.०३:१०	कृति.	३४:११	रा.०७:५५	सिद्धिः	२४:३६	ब. २१:११	वृष	अहोरात्र	०५:२५:३७:३७	२८:४६	०६:१५	०५:४५	२७	१३
०५ शु.	५५:४०	रा.०४:३१	रोहि.	३६:४६	रा.०८:५७	व्यति.	२४:०४	कौ. २४:१४	वृष	अहोरात्र	०५:२६:३७:१७	२८:४२	०६:१५	०५:४५	२८	१४
०६ श.	६०:००	अहोरात्र	मृग.	४१:५०	रा.११:००	वरी.	२४:२२	ग. २७:४०	वृ.०९:१८	दि.०९:५९	०५:२७:३६:५७	२८:३८	०६:१६	०५:४४	२९	१५
०६ र.	००:०१	प्रा.०६:१७	आर्द्रा	४७:३३	रा.०१:१७	परिघः	२५:१८	व. ००:०१	मिथुन	अहोरात्र	०५:२८:३६:३७	२८:३४	०६:१६	०५:४४	३०	१६
०७ चं.	०५:०१	दि.०८:१७	पुन.	५४:०५	रा.०३:५५	शिवः	२६:३६	ब. ०५:०१	मि.३७:२७	रा.०९:१६	०५:२९:३६:१७	२८:३०	०६:१७	०५:४३	३१	१७
०८ मं.	१०:१६	दि.१०:२४	पुष्य	६०:००	अहोरात्र	सिद्धः	२८:०३	कौ.१०:१६	कर्क	अहोरात्र	०६:००:३५:५६	२८:२६	०६:१८	०५:४२	०१	१८
०९ बु.	१५:२२	दि.१२:२७	पुष्य	००:३६	प्रा.०६:३२	साध्य	२९:१३	ग. १५:२२	कर्क	अहोरात्र	०६:०१:३५:३५	२८:२२	०६:१८	०५:४२	०२	१९
१० गु.	१९:५१	दि.०२:१६	आश्ले	०९:०७	दि.०९:५९	शुभः	२९:५७	वि. १९:५१	क.०६:४७	दि.०९:०२	०६:०२:३५:१४	२८:१८	०६:२०	०५:४०	०३	२०
११ शु.	२३:२९	दि.०३:४४	मघा	१२:२१	दि.११:१६	शुक्लः	२९:५६	बा. २३:२९	सिंह	अहोरात्र	०६:०३:३५:१२	२८:१४	०६:२०	०५:४०	०४	२१
१२ श.	२५:५७	दि.०४:४५	पू.फा.	१८:१८	दि.०१:४१	ब्रह्मः	२९:०२	तै. २५:५७	सिं.३४:०१	सं.०५:५८	०६:०४:३५:१०	२८:१२	०६:२२	०५:३८	०५	२२
१३ र.	२७:१३	दि.०५:१५	उ.फा.	२१:०९	दि.०२:५०	ऐन्द्रः	२७:१२	व. २७:१३	कन्या	अहोरात्र	०६:०५:३५:०८	२८:०८	०६:२२	०५:३८	०६	२३
१४ चं.	२७:११	दि.०५:१५	हस्त	२२:४६	दि.०३:२९	वैधृतिः	२४:२१	श. २७:११	क.५२:५८	रा.०३:३४	०६:०६:३५:०६	२८:०४	०६:२३	०५:३७	०७	२४
३० मं.	२६:५५	दि.०५:१०	चित्रा	२३:१०	दि.०३:४०	विष्क	२०:३०	ना. २६:५५	तुला	अहोरात्र	०६:०७:३५:०३	२८:००	०६:२४	०५:३६	०८	२५

१० कार्त्तिके यमुनास्नानं महापुण्यप्रदं,कार्त्तिके अशुद्धद्विदलं त्यजेत्,**पञ्चकान्तःसं.०५:२९ या.**,शिववास,पूर्वविनायात्रा प्रतिपदि अश्वि.,सिद्धियोग रा.०१:५८ या.,ततो मृत्युयोग रा.०१:५८ उ.।

११ ✷चित्रयांरविः२५:२७,उत्तरांविनायात्रा अश्वि.,अमृतयोग रा.०१:५० या.,ततो सिद्धियोग रा.०१:५० उ.,सर्वार्थसिद्धियोग सं ०५:३७ या.।

१२ मृत्युयोग रा.०२:१४ या.,भद्रारंभः१९:३१ उपरि ततो भद्रांतः५०:०० यावत्।

१३ **करक,श्रीकृष्णापिंग ४ व्रतं**,शिववास,पूर्वविनायात्रा पञ्चम्यां,मृत्युयोग रा.०३:१० या. ततो सिद्धियोग रा.०३:१०उ.।

१४ शिववास,पूर्वदक्षिणयात्रा रोहिण्यां ततो पश्चिमांविनायात्रा मृगशिरशि,सिद्धियोग रा.०४:३१ उ.।

१५ **अशोकचन्दन ६ व्रतं**, पूर्वांविनायात्रा मृगशिरशि,अमृतयोग (अहोरात्र)।

१६ दक्षिणयात्रा पुन.,मृत्युयोग प्रा.०६:१७ या.,भद्रारंभः००:०१ उपरि ततो भद्रांतः३३:०० यावत्।

१७ **मासान्तः**,शिववास दि. १०:२४ या.,मृत्युयोग दि.०८:१७ या.,सर्वार्थसिद्धियोग रा.०३:५५ उ.।

१८ **तुलायांरविः०८:३०,मु.३०,धान्यविषुवसांक्रान्तिपुण्यकालं दिवा घं.०९:३२ उ-दि.०३:३० यावति,पुण्याहः,सिमरियाधाम्नि कल्पवासारंभः,कार्त्तिकस्नानारंभः** 卐

१९ मासादिः,भद्रारंभः४७:२१ उपरि । 卐 **कार्त्तिकव्रताकाशदीपदानव्रततुलसीव्रतारंभः**,शिववास दि. १०:२४ या.,मार्गीबुधः पश्चिमातोः १२:२२।

२० शिववास दि. ०२:१६ उ., सिद्धियोग दि.०२:१६ या.,भद्रांतः१९:५१ यावत्। ☸भद्रारंभः२७:१३ उपरि ततो भद्रांतः५७:१२ यावत्।

२१ दग्ध ति.(२३:२९ उ.),**रम्भा ११ व्रतं सर्वेषां**, पूर्वोत्तरयात्रैकादश्याम्,सिद्धियोग दि.०३:४४ या.,ततो सिद्धियोग दि.०३:४४ उ.।

२२ दग्ध ति.(२५:५७ या.),गोवत्स १२,विल्वदलेन वा तुलसीदलेन पारणं, **प्रदोष १३ व्रतं,श्रीधन्वतरिजयन्ती (धनतेरस)**,शिववास दि.०४:४५ या., उत्तरयात्रा पू.फा.,☸

२३ **प्रदोष १४ व्रतं**,हनुमज्जन्मोत्सवः,हनुमद्ध्वजदानंपूजनञ्च,सिद्धियोग दि.०५:१५ या.,सर्वार्थसिद्धियोग दि.०२:५०उ.,भद्रारंभः२७:१३ उपरि ततो भद्रांतः५७:१२ यावत्।

२४ **दीपावली,लक्ष्मीपूजनमुल्काभ्रमणं,श्रीकालीपूजा,✷स्वात्यांरविः४९:०५, सोमवती अमावश्या**,शिववास दि. ०५:१५ उ. ।

२५ कार्त्तिकी ३० स्नानदानादिः,शिववास दि. ०५:१० उ.,मृत्युयोग दि.०५:१० उ., **सूर्यग्रणं स्पर्श. ०४:२७ उ.-मोक्षः सं.०६:२८ या.**।

मिश्रमान कालिक दैनिक स्पष्टग्रहाः / दैनिक लग्न सारणी चक्रम / दैनिक अर्धप्रहरा चक्रम

ति	मंगलः	बुधः	गुरुःवक्री	शुक्रः	शनिःवक्री	केतुः	मिश्रमान	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिं.अं.	क.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.	वार	दिन का अर्धप्रहरा	रात्रि का अर्धप्रहरा
१	०१:२३:४३:५४	०५:०८:२६:३४	११:०८:५३:०९	०५:२१:३६:२१	०९:२०:५८:१४	०६:२२:३७:२०	४४:२९	११:४९	२१:४५	२३:५८	०२:१६	०४:३२	०६:४७	०९:०४	११:२१	१३:२६	१५:१२	१६:४३	१८:१२	चं.	दि.७:३९-०९:०१। दि.०२:५४-०४:२१।	रा.११:२७-१:००। रा.३:०६-४:३९।
२	०१:२३:५८:२९	०५:०९:४५:१०	११:०८:४६:३२	०५:२२:५८:४७	०९:२०:५६:३३	०६:२२:३४:०९	४४:२७	११:४६	२१:४२	२३:५५	०२:१३	०४:२९	०६:४४	०९:०१	११:१८	१३:२३	१५:०९	१६:४०	१८:०९	मं.	दि.७:३९-०९:०५। दि.१:२२-०२:४९।	रा.७:२०-८:५३।
३	०१:२४:१३:०४	०५:११:०३:४६	११:०८:३९:५५	०५:२४:२१:१३	०९:२०:५४:५२	०६:२२:३०:५८	४४:२५	११:४२	२१:३८	२३:५१	०२:०९	०४:२५	०६:४०	०८:५७	११:१४	१३:१९	१५:०५	१६:३६	१८:०५	बु.	दि.०९:०६-१०:३२। दि.११:५८-१:२४।	रा.११:५८-१:३१। रा.३:०४-४:३७।
४	०१:२४:२७:३९	०५:१२:२२:२२	११:०८:३३:१८	०५:२५:४३:३९	मा.९:२०:५३:११	०६:२२:२७:४९	४४:२३	११:३९	२१:३५	२३:४८	०२:०६	०४:२२	०६:३७	०८:५४	१:११	१३:१६	१५:०२	१६:३३	१८:०२	गु.	दि.०२:५१-०५:४५।	रा.११:५७-१:३०। रा.४:३६-५:१५।
५	०१:२४:३७:४९	०५:१३:४३:२२	११:०८:२५:४६	०५:२६:५०:४८	०९:२०:५३:३३	०६:२२:२४:३८	४४:२१	११:३५	२१:३१	२३:४४	०२:०२	०४:१८	०६:३३	०८:५०	११:०७	१३:१२	१४:५८	१६:२९	१७:५८	शु.	दि.०८:०७-११:५१।	रा.९:५१-१०:५४।
६	०१:२४:४७:५१	०५:१५:०४:२१	११:०८:१८:१४	०५:२७:५७:५७	०९:२०:५३:५५	०६:२२:२१:२७	४४:१९	११:३१	२१:२७	२३:४०	०१:५८	०४:१४	०६:२९	०८:४६	११:०३	१३:०८	१४:५४	१६:२५	१७:५४	श.	दि.६:१६-७:४२।दि.१:२६-२:५२।दि.४:१८-५:४४।	रा.५:४४-७:१८।रा.१:३४-३:०८।रा.४:४२-६:१६।
६	०१:२४:५८:०१	०५:१६:२५:२०	११:०८:१०:४२	०५:२९:०५:०७	०९:२०:५४:१७	०६:२२:२१:१६	४४:१७	११:२८	२१:२४	२३:३७	०१:५५	०४:११	०६:२६	०८:४३	११:००	१३:०५	१४:५१	१६:२२	१७:५१	र.	दि.१०:३४-१:२६।	रा.१०:२६-१२:००।रा.१:३४-३:०८।
७	०१:२५:०८:२०	०५:१७:४६:१९	११:०८:०३:१०	०६:००:१२:१७	०९:२०:५४:३९	०६:२२:१५:०४	४४:१५	११:२४	२१:२०	२३:३३	०१:५१	०४:०७	०६:२२	०८:३९	१०:५६	१३:०१	१४:४७	१६:१८	१७:४७	चं.	दि.०७:४२-९:०७। दि.२:४७-४:१२।	रा.१०:२५-१२:०९।रा.३:१७-४:५१।
८	०१:२५:१८:३१	०५:१९:०७:१८	११:०७:५५:३८	०६:०१:११:२७	०९:२०:५५:०१	०६:२२:११:५४	४४:१३	११:२०	२१:१६	२३:२९	०१:४७	०४:०३	०६:१९	०८:३५	१०:५२	१२:५७	१४:४३	१६:१४	१७:४३	मं.	दि.०७:४३-९:१६। दि.१:३१-२:५६।	रा.७:१६-८:५०।
९	०१:२५:२८:४२	०५:२०:२८:१७	११:०७:४८:०७	०६:०२:२६:३६	०९:२०:५५:२३	०६:२२:०८:४४	४४:११	११:१६	२१:१२	२३:२५	०१:४३	०३:५९	०६:१५	०८:३१	१०:४८	१२:५३	१४:३९	१६:१०	१७:३९	बु.	दि.०९:१६-१०:४१। दि१२:०६-१:३१।	रा.११:५८-१:३२।रा.३:०६-४:४०।
१०	०१:२५:३८:५३	०५:२१:४९:१६	११:०७:४०:३६	०६:०३:३३:४७	०९:२०:५५:४५	०६:२२:०५:३४	४४:०९	११:१२	२१:०८	२३:२१	०१:३९	०३:५५	०६:१०	०८:२७	१०:४४	१२:४९	१४:३५	१६:०६	१७:३५	गु.	दि.०२:५०-५:४०।	रा.१२:००-१:३५।रा.४:४५-६:२०।
११	०१:२५:४८:०२	०५:२३:२६:५२	११:०७:३४:२०	०६:०४:४८:४४	०९:२०:५६:०८	०६:२२:०२:२३	४४:०७	११:०८	२१:०४	२३:१७	०१:३५	०३:५१	०६:०६	०८:२३	१०:४०	१२:४५	१४:३१	१६:०२	१७:३१	शु.	दि.९:१०-१२:००।	रा.८:५०-१०:२५।
१२	०१:२५:४९:११	०५:२५:०३:०८	११:०७:२८:०४	०६:०६:०३:४१	०९:२०:५६:३०	०६:२१:५९:१२	४४:०६	११:०४	२१:००	२३:१३	०१:३१	०३:४७	०६:०२	०८:१९	१०:३६	१२:४१	१४:२७	१५:५८	१७:२७	श.	दि.६:२२-७:४६।दि.१:२२-२:४६।दि.४:१०-५:३८।	रा.५:३८-७:१३।रा.१:३३-३:०८।रा.४:४३-६:२२।
१३	०१:२५:५४:२०	०५:२६:४०:०४	११:०७:२१:५०	०६:०७:१८:३८	०९:२०:५६:५२	०६:२१:५६:०१	४४:०४	११:००	२०:५६	२३:०९	०१:२७	०३:४३	०५:५८	०८:१५	१०:३२	१२:३७	१४:२३	१५:५४	१७:२३	र.	दि.१०:३४-१:२२।	रा.१०:२३-११:५८।रा.१:३३-३:०८।
१४	०१:२५:५९:२९	०५:२८:१७:१०	११:०७:१५:३४	०६:०८:३३:३५	०९:२०:५७:०४	०६:२१:५२:५०	४४:०२	१८:५६	२०:५२	२३:०५	०१:२३	०३:३९	०५:५४	०८:११	१०:२८	१२:३३	१४:१९	१५:५०	१७:११	चं.	दि.७:४९-९:११।दि.२:४७-४:११।	रा.१०:२२-११:५७।रा.३:०७-४:४२।
३०	०१:२६:०४:३९	०५:२९:५३:५६	११:०७:०९:२०	०६:०९:४८:३३	०९:२०:५७:३६	०६:२१:४९:३९	४४:००	१८:५२	२०:५८	२३:०१	०१:१९	०३:३५	०५:५०	०८:०७	१०:२४	१२:२९	१४:१५	१५:४६	१७:१५	मं.	दि.७:४८-९:१२।दि.१:२४-२:४८ ।	रा.७:१२-८:४८।

तिथिः १ चन्द्रे सूर्योदये

के ७ | ल | ५
८ | सू ६ बु शु | ४
९ | १२ | ३
श १० | चं | गु | २ मं
११ | १ रा

दीपावलीपर्व तमसो मा ज्योतिर्गमय-दीपावली को दीपमालिका दिवाली कहा जाता है।यह हिन्दुओं के चार प्रमुख त्यौहारों मे एक है।वर्णभेद के अनुसार यह वैश्यवर्ग में आता है किन्तु सभी वर्ग के लोग इसे उत्साहपूर्वक मनाते है।यह सम्पूर्ण भारत मे प्रचलित है।दीपमालिका कार्तिक मास की अमावस्या को मनायी जाती है।इस अवसर पर घरों की सफाई सजावट होती है तथा रात्रि में दीपदान होता है।दीपों की मालाये सजायी जाती है इसीलिये इसका नाम दीपमालिका है।इस दिन कुबेर,महालक्ष्मी तथा सिद्धिदाता गणेश की पूजा होती है।साधक लोग रात्रि पर्यन्त जागरण कर जप,ध्यान एवं मन्त्रसिद्धि करते हैं।कुछ लोग अपना भाग्य आजमाने के लिये द्यूत खेलते हैं।यद्यपि द्यूतक्रीड़ा निषिद्ध कार्य है वेद इसे गर्हित मानता है तथापि यह परम्परा कब से किन परिस्थितियों में प्रारम्भ हुई अज्ञात है अब इसे बन्द कर देना चाहिए।दीपावली त्यौहार पँच दिनों तक मनाया जाता है।प्रत्येक दिनों में अलग-अलग पाच कृत्य होते हैं।यह कार्तिककृष्णपक्ष त्रयोदशी से शुक्लपक्ष की द्वितीया पर्यन्त मनाया जाता है।कार्तिककृष्णपक्ष त्रयोदशी को धनवन्तरी जयन्ती अथवा धनतेरस भी कहते है।चिकित्सक लोग धन्वन्तरि पर्व को सोत्साह मनाते हैं।अन्य लोग इस दिन कोई नयापात्र (बर्तन) आदि खरीदते हैं।इसी दिन से लोग दीप प्रकाश एवं पटाखे छोड़ते हैं।कार्तिककृष्ण चतुर्दशी को नरक चतुर्दशी भी कहते हैं।इसका कारण यह है कि नरक से बचने के लिये यमराज को प्रसन्न रखना पड़ता है।भगवान् विष्णु के वराहवतार में इसी तिथि में नरकासुर की उत्पत्ति हुई थी अतः नरकचतुर्दशी नरकासुर के नाम पर प्रसिद्ध है यह पुराणों की मान्यता है।इस दिन नरक से बचने के लिये तेल मालिश कर स्नान करना चाहिए,सिर पर अपामार्ग (चिचिड़ी) की टहनियों को घुमाना ➔

तिथिः ८ मंगल सूर्योदये

८ | ल ७ | ६ बु
९ | सू शु के | ५
१० श | चं ४
११ | १ रा | ३
१२ गु | २ मं

अथ कार्तिकमासकृत्यम्:-कार्तिकस्नानम्:-मदनपारिजाते-कार्तिकं सकलं मासं नित्यस्नायी जितेन्द्रियः।जपन् हविष्यभुक् शान्तः सर्वपापैः प्रमुच्यते।।सम्पूर्णस्नानाशक्तौ त्र्यहं स्नानं कार्यम्:-काशीखण्डे-वाराणस्यां पञ्चनदे त्र्यहं स्नातास्तु कार्तिके। अमी ते पुण्यवपुषः पुण्यभाजोऽति निर्मला।।कार्तिकस्नानमन्त्रः-कार्तिकेऽहं करिष्यामि प्रातःस्नानं जनार्दन।प्राप्त्यर्थं तव देवेश दामोदर मया सह।।इमं मन्त्रं समुच्चार्य मौनी स्नायाद् व्रती नरः।।अर्घ्यमन्त्रः-व्रतिनः कार्तिके मासि स्नातस्य विधिवन्मम। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं दनुजेन्द्रनिषूदन। नित्यनैमित्तिके कृष्ण कार्तिके पापनाशिने।गृहाणार्घ्यं मया दत्तं राधया सहितो हरे।।इमौ मन्त्रौ समुच्चार्य योऽर्घ्यं मह्यं प्रयच्छति। सुवर्णरत्नपुष्पाम्बुपूर्णशङ्खेन पुण्यवान्।सुवर्णं पूर्णं पृथिवी तेन दत्ता न संशयः।।तुलसीदललक्षेण विष्णोपूजनम्:- तुलसीदललक्षेण कार्तिके योऽर्चयेद्धरिम्।पत्रे पत्रे मुनिश्रेष्ठ मौक्तिकं लभते फलम्।।धात्रीमाहात्म्यम्:-ॐ धात्र्यै नमः-इति सर्वोपचारैः सम्पूज्य नाम मन्त्रेण पूजयेत्। ॐ धात्र्यै नमः।स्वधायै नमः।कमनीयायै नमः।शिवायै नमः।विष्णुपत्न्यै नमः।रमायै नमः।इन्दिरायै नमः।लोकमात्रे नमः। ब्रह्मण्यै नमः।शान्त्यै नमः।मेधायै नमः।गायत्र्यै नमः।सुधृत्यै नमः।विश्वरूपायै नमः। अभिमेधायै नमः।।सूत्रबन्धनम्:-दामोदर निवासायै धात्र्यै देव्यै नमोस्तुते।सूत्रेणानेनबध्नामि धात्रिदेवि नमोस्तुते।परिक्रम्य प्रणमेदिति। धात्रीमूलपूजनान्ते ब्राह्मणभोजनफलमाहः- धात्रीच्छायां समाश्रित्यभुक्ते योऽन्नं हि मानवः।ब्राह्मणान् भोजयित्वा तु वार्षिकं किल्बिषं हरेत्।।धात्रीफलविलुप्ताङ्गो धात्रीफलविभूषितः। धात्रीफलकृताहारो नरो नारायणो भवेत्।।कार्तिककृष्णद्वादशी वत्सद्वादशी।सा पूर्वा। वत्सपूजा वटश्चैव कर्तव्या प्रथमेऽहनि।भविष्ये यथा- सवत्सां तुल्यवर्णाभां शीलिनीं गां पयस्विनीम्। चन्दनादिभिरालिप्य पुष्पमाला भिरर्चयेत्।तत्रार्घ्यमन्त्रः-क्षीरोदार्णव सम्भूते सुरासुर नमस्कृते।सर्वदेवमये मातुर्गृहाणार्घ्यं नमो नमः।।तद्दिने तैलपक्वञ्च स्थालीपक्वं युधिष्ठिर।गोक्षीरं गोघृतं चैव दधि तक्रञ्च वर्जयेत्।। अकाशदीपदानविधिः-स्कन्दे यथा-तुलायां तिलतैलेन सायंकाले समागते। आकाशदीपं यो दद्यान्मासमेकं हरिं प्रति।महतीं श्रियमवाप्नोति रूपसौभाग्यसम्पदः।उच्चैः प्रदीपमाकाशे यो दद्यात् कार्तिके नरः।।सर्वकुलं समुद्धृत्य विष्णुलोकमवाप्नुयात्।।आकाशदीपदानमन्त्रः-ॐदामोदरायनभसि तुलायांलोलयासह।प्रदीपं ते प्रयच्छामि नमोऽनन्ताय वेधसे।।धन्वन्तरिजन्मोत्सवः कार्यः-धन्वन्तरिश्च भगवान्स्वयमेव कीर्तिनाम्ना नृणां पुरुरुजां रुज आशु हन्ति।यज्ञे न भागममृतायुरवरुन्ध आयुश्चवेद मनुशास्त्यवतीर्यलोके। हनुमज्जन्मदिनम्:- व्रतरत्नाकरे- कार्तिकस्यासिते पक्षे भूतायां च महानिशि। भौमवारेऽञ्जनादेवी हनुमन्तमजीजनत्।शौर्यवर्धनाय हनुमच्चरिते वाल्मीकिरामायण सुन्दरकाण्डे द्रष्टव्यम्। कार्तिककृष्णत्रयोदश्यां-सायंकाले अपमृत्युनिवारकं गृहद्वारेर्यमाय दीपदानम्।तन्मन्त्रः-मृत्युना पाशदण्डाभ्यां कालेन श्यामया सह त्रयोदश्यां दीपदानात्सूर्यजः प्रीयतां मम।इति।।कार्तिकस्यासितेपक्षे त्रयोदश्यां निशामुखे।यमदीपं बहिर्दद्यादपमृत्युर्विनश्यति।कार्तिकेत्याज्य वस्तूनि-कार्तिके वर्जयेत्तैलं कार्तिके वर्जयेन्मधु। कार्तिकेवर्जयेत्कांस्यं कार्तिके शुक्त सन्धितम्।कार्तिके वर्जयेत् तद्वत् द्विदलं बहुबीजकम्। माषमुद्गमसूराश्च चणकांश्च कुलित्थकाः। निष्पावा राजमाषाश्च आढक्यो द्विदलं स्मृतम्।नूतनान्यपि जीर्णानि तानि सर्वाणि वर्जयेत्।।

कार्त्तिकशुक्लपक्षः

शाके १९४४; संवत् २०७९; फसली १४३०; दिनाङ्क २६:१०:२०२२ ई. ततो दिनाङ्क ०८:११:२०२२ ईस्वी या. । उत्तरे राहु कालः ।
मार्गीपूर्वोदितो मंगलःति१०वक्रीपूर्वोदितो मंगलः,मार्गीपश्चिमोदितो बुधः,वक्रीपूर्वोदितो गुरूः शनिः,मार्गीपूर्वास्तोः शुक्रः,शरदृतः,याम्यगोलः,याम्यायनं,अयनांश २२:५०:५४।

तिथि वार	तिथ्यन्तः द. प.	घं. मि.	नक्षत्रान्तः नक्षत्र	द. प.	घं. मि.	योगान्तः योग	द. प.	करणान्तः क. द. प.	चन्द्रराश्यन्तः रा. द.प.	घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	दिनाङ्काः सौ	अं
०१ बु.	२३:२५	दि.०३:४६	स्वा.	२२:५८	दि.०३:३५	प्रीतिः	१५:४३	ब. २३:२५	तुला	अहोरात्र	०६:०८:३५:००	२७:५६	०६:२४	०५:३६	०९	२६
०२ गु.	१९:५६	दि.०२:२४	विशा.	२०:२५	दि.०२:३६	आयु.	१०:०६	कौ. १९:५६	तु.०६:०४	दि.०८:५१	०६:०९:३४:५७	२७:५२	०६:२६	०५:३४	१०	२७
०३ शु.	१५:३३	दि.१२:३९	अनु.	१७:५५	दि.०१:३६	सौभा.	०३:४८	ग. १५:३३	वृश्चिक	अहोरात्र	०६:१०:३५:०५	२७:४८	०६:२६	०५:३४	११	२८
०४ श.	१०:२९	दि.१०:३९	ज्येष्ठा	१४:३६	दि.१२:१७	अतिग	४९:३०	वि. १०:२९	वृ.१४:३६	दि.१२:०४	०६:११:३५:१३	२७:४४	०६:२७	०५:३३	१२	२९
०५ र.	०४:५६	दि.०८:२६	मूल	१०:४७	दि.१०:४७	सुकर्मा	४१:४९	बा. ०४:५६	धनु	अहोरात्र	०६:१२:३५:२१	२७:४०	०६:२८	०५:३२	१३	३०
०७ चं.	५३:००	रा.०३:४०	पू.षा	०६:४०	दि.०९:०८	धृतिः	३३:५९	ग. ३०:०९	ध.२०:३६	दि.०२:४२	०६:१३:३५:२९	२७:३९	०६:२८	०५:३२	१४	३१
०८ मं.	४७:०७	रा.०१:२०	उ.षा	०२:२५	दि.०७:२७	शूलः	२६:१२	वि. २०:०४	मकर	अहोरात्र	०६:१४:३५:३७	२७:३४	०६:२९	०५:३१	१५	१
०९ बु.	४१:२८	रा.११:०४	धनि.	५४:३५	रा.०४:१९	गण्डः	१८:३१	बा. १४:१८	म.२५:१५	दि.०४:३५	०६:१५:३५:४५	२७:३३	०६:२९	०५:३१	१६	२
१० गु.	३६:१८	रा.०९:०१	शत.	५१:१९	रा.०३:०२	वृद्धिः	११:११	तै. ०८:५३	कुम्भ	अहोरात्र	०६:१६:३५:५२	२७:३०	०६:३०	०५:३०	१७	३
११ शु.	३२:५०	रा.०७:३९	पू.भा	४८:४९	रा.०२:०३	ध्रुवः	०४:१७	व. ०४:३४	कु.३७:२५	रा.०१:२९	०६:१७:३६:१७	२७:२६	०६:३१	०५:२९	१८	४
१२ श.	२८:१९	सं.०५:५१	उ.भा.	४७:०८	रा.०१:२२	हर्षण	५२:२५	ब. ००:०५	मीन	अहोरात्र	०६:१८:३६:४२	२७:२२	०६:३१	०५:२९	१९	५
१३ र.	२५:३१	दि.०४:४४	रेवती	४६:२९	रा.०१:०८	वज्रः	४७:४१	तै. २५:३१	मी.४६:२९	रा.०१:०८	०६:१९:३७:०७	२७:१८	०६:३२	०५:२८	२०	६
१४ चं.	२४:०१	दि.०४:०९	अश्वि	४७:०१	रा.०१:२१	सिद्धिः	४३:५३	व. २४:०१	मेष	अहोरात्र	०६:२०:३७:३२	२७:१४	०६:३३	०५:२७	२१	७
१५ मं.	२३:४६	दि.०४:०३	भरणी	४८:४८	रा.०२:०४	व्यति.	४१:०६	ब. २३:४६	मेष	अहोरात्र	०६:२१:३७:५६	२७:१२	०६:३३	०५:२७	२२	८

२६ च.मु.४५,महाकविकालिदासजयन्ती,गोविन्दजयन्ती,गोपूजागोक्रीड़ानैव,गोवर्द्धनपूजनोत्सवः,अन्नकूटः,शिववास दि. ०३:४६ उ.,दक्षिणपश्चिमयात्रा स्वा.,ॐ
२७ भ्रातृद्वितीया,श्रीचित्रगुप्तपूजा,माछमरूवावर्जित, शिववास दि. ०२:२४ या., पश्चिमोत्तरयात्रा अनु., अमृतयोग दि.०२:२४ उ., सर्वार्थसिद्धियोग दि.०२:३६ उ.।
२८ शोभयोगमानं ५३:०६,कटुमहुली तृतीया,श्रीगणेश ४ व्रतं,नहा-खय,अरवा-अरबाइन,उत्तरयात्रा,अमृतयोग दि.१२:३९ उ.,सर्वार्थसिद्धियोग दि.०१:३६ या.,भद्रारंभ:४३:०१ उपरि।
२९ प्रतिहारषष्ठी व्रतस्यैकभुक्तादिकं (खरणा), शिववास दि. १०:३९ उ., सिद्धियोग दि.१०:३९ या., मृत्युयोग दि.१०:३९ उ.,भद्रांत:१०:२९ यावत् ।
३० षष्ठीमानं ५४:०४, प्रतिहारषष्ठीव्रतं सायंकालिकार्घदानं, शिववास, अमृतयोग दि.०८:२६ या.,ततो मृत्युयोगदि.०८:२६ उ.,सर्वार्थसिद्धियोग दि.१:४६ या.।
३१ प्रातःकालिकर्घदानपारणञ्च,सामापूजारम्भ, मृत्युयोग रा.०३:४० या.,भद्रारंभ:५३:०० उपरि। ॐ अमृतयोग दि.०३:४६या.,ततो सिद्धियोग दि.०३:४६उ.।
१ नवम्बर ११, श्रवनामानं ५५:५५, गोपाष्टमी, गावादीनांपूजनं, पञ्चकारम्भः रा.०४:५१उ., उत्तरविनायात्रा श्रवणे, सिद्धियोग रा.०१:२० या.,भद्रांत:२०:०४ यावत्।
२ अक्षयनवमी, सतयुगादिः गंगास्नानदानादि, जगद्धात्रीविसर्जन, शिववास ।
३ सिद्धियोग रा.०९:१० या.। 卐 ततो मृत्युयोग रा.०७:३९उ.,भद्रारंभ:०४:३४ उपरि ततो भद्रांत:२०:०४ यावत्।
४ दग्ध ति (३२:५० उ.),व्याघातयोगमानं.५३:४३,देवोत्थान ११ व्रतं सर्वेषां,चातुर्मास्यव्रतसमाप्तिः,रात्रौ ११ व्रतोद्यापनं,भीष्मपंचक व्रतारंभः,सिद्धियोग रा.०७:३९ या.卐
५ दग्ध ति (२८:१९ या.),श्रीदामोदर १२, तुलसीदलेनवापारणं, प्रदोष १३ व्रतं, शिववास, पश्चिमोत्तरयात्रा रेवत्यां । ●सर्वार्थसिद्धियोग रा.०१:०८उ.।
६ प्रदोष १४ व्रतं,श्रीकाशीविश्वनाथप्रतिष्ठादिनं,विद्यापतिस्मृतिदिवस,पञ्चकान्तःरा.०१:०८ या,शिववास दि.०४:४४ या.,पश्चिमांविनायात्रा अश्वि.,सिद्धियोग०४:४९या.,●
७ पूर्णिमा व्रतं, सामाविसर्जनं, पूर्वविनायात्रा अश्वि.,,✵विशाखायांरवि ०६:२९,अमृतयोग दि.०४:०९ उ.,भद्रारंभ:२४:४३ उपरि ततो भद्रांत:५३:५३ यावत्।
८ कार्तिक १५,स्नानदानादि पूर्णिमा,गुरूनानकजयन्ती,सोनपुरमेला,शिववास दि. ०४:०३ उ., मृत्युयोग दि.०४:०३ उ., चन्द्रग्रहणं स्पर्श.दि.०२:०७ उ.मोक्ष सं०६:२८ या.।

मिश्रमान कालिक दैनिक स्पष्टग्रहाः

ति	मंगलः	बुधः	गुरुःवक्री	शुक्रः	शनिःवक्री	केतुः	मिश्रमानं
१	०१:२६:०९:४९	०६:०१:३०:५१	११:०७:०३:०५	०६:११:०३:३१	०९:२०:५७:५८	०६:२१:४६:२१	४३:५७
२	०१:२६:१४:५९	०६:०३:०७:४६	११:०६:५६:५०	०६:१२:१८:२९	०९:२०:५८:२०	०६:२१:४३:११	४३:५६
३	०१:२६:२३:०१	०६:०४:५०:०८	११:०६:५१:३७	०६:१३:३५:२३	०९:२०:५९:३६	०६:२१:४०:०८	४३:५४
४	०१:२६:३१:०३	०६:०६:३२:२०	११:०६:४६:२४	०६:१४:५२:१७	०९:२१:००:५२	०६:२१:३६:५७	४३:५२
५	०१:२६:३९:०५	०६:०८:१४:५१	११:०६:४१:११	०६:१६:०९:११	०९:२१:०२:०८	०६:२१:३३:४६	४३:५०
७	०१:२६:४७:०७	०६:०९:५७:१२	११:०६:३५:५९	०६:१७:२६:०६	०९:२१:०३:२३	०६:२१:३०:३५	४३:४८
८	०१:२६:५५:१०	०६:११:३९:३३	११:०६:३०:४७	०६:१८:४३:०१	०९:२१:०४:३८	०६:२१:२७:२४	४३:४७
९	०१:२७:०३:१३	०६:१३:२१:५४	११:०६:२५:३५	०६:१९:५९:५६	०९:२१:०५:५३	०६:२१:२४:१३	४३:४६
१०	व१:२७:११:१६	०६:१५:०४:१५	११:०६:२०:२३	०६:२१:१६:५१	०९:२१:०७:०८	०६:२१:२१:०३	४३:४५
११	०१:२६:५६:४१	०६:१६:४८:४७	११:०६:१६:१०	०६:२२:३०:३१	०९:२१:०९:०७	०६:२१:१७:५२	४३:४३
१२	०१:२६:४२:०६	०६:१८:३३:१९	११:०६:११:५७	०६:२३:४४:११	०९:२१:११:०६	०६:२१:१४:४१	४३:४१
१३	०१:२६:२७:३१	०६:२०:१७:५१	११:०६:०७:४४	०६:२४:५७:५१	०९:२१:१३:०५	०६:२१:११:३०	४३:३९
१४	०१:२६:१२:५७	०६:२२:०२:२३	११:०६:०३:३१	०६:२६:११:३१	०९:२१:१५:०४	०६:२१:०८:१९	४३:३७
१५	०१:२५:५८:२३	०६:२३:४६:५५	११:०५:५९:१८	०६:२७:२५:१२	०९:२१:१७:०३	०६:२१:०५:०८	४३:३६

दैनिक लग्न सारणी चक्रम्

मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिं.अं.	क.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.	वार
१८:४८	२०:४४	२२:५७	०१:१५	०३:३१	०५:४६	०८:०३	१०:२०	१२:२५	१४:११	१५:४२	१७:११	बु.
१८:४५	२०:४१	२२:५४	०१:१२	०३:२८	०५:४३	०८:००	१०:१७	१२:२२	१४:०८	१५:३९	१७:०८	गु.
१८:४१	२०:३७	२२:५०	०१:०८	०३:२४	०५:३९	०७:५६	१०:१३	१२:१८	१४:०४	१५:३५	१७:०४	शु.
१८:३७	२०:३३	२२:४६	०१:०४	०३:२०	०५:३५	०७:५२	१०:०९	१२:१४	१४:००	१५:३१	१७:००	श.
१८:३३	२०:२९	२२:४२	००:००	०३:१६	०५:३१	०७:४८	१०:०५	१२:१०	१३:५६	१५:२७	१६:५६	र.
१८:२९	२०:२५	२२:३८	००:५६	०३:१२	०५:२७	०७:४४	१०:०१	१२:०६	१३:५२	१५:२३	१६:५२	चं.
१८:२५	२०:२१	२२:३४	००:५२	०३:०८	०५:२३	०७:४०	०९:५७	१२:०२	१३:४८	१५:१९	१६:४८	मं.
१८:२१	२०:१७	२२:३०	००:४८	०३:०४	०५:१९	०७:३६	०९:५३	११:५८	१३:४४	१५:१५	१६:४४	बु.
१८:१७	२०:१३	२२:२६	००:४४	०३:००	०५:१५	०७:३२	०९:४९	११:५४	१३:४०	१५:११	१६:४०	गु.
१८:१३	२०:०९	२२:२२	००:४०	०२:५६	०५:११	०७:२८	०९:४५	११:५०	१३:३६	१५:०७	१६:३६	शु.
१८:१०	२०:०६	२२:१९	००:३७	०२:५३	०५:०८	०७:२५	०९:४२	११:४७	१३:३३	१५:०४	१६:३३	श.
१८:०६	२०:०२	२२:१५	००:३३	०२:४९	०५:०४	०७:२१	०९:३८	११:४३	१३:२९	१५:००	१६:२९	र.
१८:०२	१९:५८	२२:११	००:२९	०२:४५	०५:००	०७:१७	०९:३४	११:३९	१३:२५	१४:५६	१६:२५	चं.
१७:५८	१९:५४	२२:०७	००:२५	०२:४१	०४:५६	०७:१३	०९:३०	११:३५	१३:२१	१४:५२	१६:२१	मं.

दैनिक अधप्रहरा चक्रम्

वार	दिन का अर्धप्रहरा	रात का अर्धप्रहरा
बु.	दि.९:१२-१०:३६।दि.१२:००-१:२४।	रा.१२:००-१:३६।रा.३:१२-४:४८।
गु.	दि.२:४४-५:३४।	रा.११:५८-१:३४।रा.४:४६-६:२६।
शु.	दि.१:१२-११:५८।	रा.८:४६-१०:२२।
श.	दि.६:२७-७:५०।दि.१:२२-२:४५।दि.४:०८-५:३२।	रा.५:३३-७:०९। रा.१:३३-३:०९।रा.४:४५-६:२७।
र.	दि.१०:३७-१:२३ ।	रा.१०:२३-१२:००।रा.१:३७-३:१४।
चं.	दि.७:५१-९:१४।दि.२:४६-४:०९।	रा.१०:२३-१२:००।रा.३:१४-४:५१।
मं.	दि.७:५१-९:१३ ।दि.१:१९-२:४१।	रा.७:०८-८:४५।
बु.	दि.९:१३-१०:३५।दि.११:५७-१:१९।	रा.११:५९-१:३६। रा.३:१३-४:५०।
गु.	दि.२:४२-५:३०।	रा.११:५८-१:३५।रा.४:४९-६:३०।
शु.	दि.०१:१५-०१:२१।	रा.८:४३-१०:२० ।
श.	दि.६:३१-७:५३।दि.१:४१-२:४३।दि.४:०५-५:२९।	रा.५:२९-७:०६। रा.१:३४-३:११ रा.४:४८-६:३१।
र.	दि.१०:३८-१:२२।	रा.१०:२२-१२:००।रा.१:३८-३:१६।
चं.	दि.७:५४-९:१५।दि.२:३९-४:००।	रा.१०:२१-११:५९।रा.३:१८-४:५६।
मं.	दि.७:०५-८:४३।दि.१:१८-२:३९।	रा.७:०५-८:४३।

तिथिः १ बुध सूर्योदये

➔ पिछे पेज का शेष –चाहिए,इसके बाद तिल युक्त जल का तर्पण यमराज के लिये करना चाहिए।चतुर्दशी होने से यमराज के चौदह नाम लिये जाते हैं।यथा–यमाय धर्मराजाय मृत्यवे चान्तकाय च।वैवस्वताय कालाय सर्वभूतक्षयाय च।।औदुम्बराय दध्नाय नीलाय परमेष्ठिने।वृकोदराय चित्राय चित्रगुप्ताय वै नमः।।यमराज के प्रसन्नार्थ कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी के सायंकाल में अकालमृत्यु से बचने के लिये घर से बाहर चौराहें पर चतुर्वर्ति दीपदान करना चाहिए मन्त्रः–मृत्युना पाशदण्डाभ्यां कालेन यमया सह।त्रयोदश्यां दीपदानात्सूर्यजः प्रीयतां मम।।इसी दिन हनुमज्जयन्ती भी होती है अतः प्रातः बेला मे हनुमद्दर्शन भी करना चाहिए।कार्तिककृष्ण अमावस्या अतिमहत्त्वपूर्ण है।इसी दिन को मुख्य रुप से दीपावली की संज्ञा दी गयी है।इस दिन लक्ष्मी की बड़ीबहन दरिद्रा को हटाने के लिये लक्ष्मी पूजा की जाती है।स्त्रियों को स्वयं दीपदान करना चाहिए।व्यापारी लोग विशेष रुप से अपने बही खातें की पूजा करते हैं पुराने खाते बन्द कर नये खाते खोलते हैं।इस दिन सभी को बालक,वृद्ध एवं रोगियों को छाड़कर रात्रि जागरण करना चाहिए, ब्रह्ममुहूर्त मे निद्रा सताती है अतः महिलाये सूप चलनी,ढोलक आदि पीटकर शोरगु करके अपने घर से अलक्ष्मी (दरिद्रा) को भगाती हैं तथा सबको जागने के लिये विवश करती हैं।कार्तिकशुक्ल प्रतिपदा को बलि पूजन किया जाता है।राजा बलि के लिये चन्दन,धूप,दीप,नैवेद्य आदि से पूजन करके प्रार्थना करनी चाहिए जिसका मन्त्र इस प्रकार है–बलिराज नमस्तुभ्यं विरोचनसुत प्रभो।भविष्येन्द्र सुराराते पूजनं प्रतिगृह्यताम्।।बलि प्रतिपदा के दिन द्यूतक्रीड़ा भी होती है।वामन पुराण में इसे द्यूतप्रतिपदा भी कहा गया है।पुराणों के अनुसार इस दिन माता पार्वती ने द्यूतक्रीड़ा में शंकर जी को हराया था,जिससे शिवजी दुखी एवं मा प्रसन्न हुई थी।इसदिन राजा बलि के लिये दीपदान किया जाता है।गोवर्धन पूजा भी इसी दिन होती है।इसी गोवर्धन पूजा को अन्नकूट (अन्न का पर्वत) भी कहा गया है।प्रायः इस समय तक नवीन अन्न आ जाता है।वैदिक काल में इसे ही "नवसस्येष्टि" भी कहा जाता था।कार्तिक शुक्ल द्वितीया को यमद्वितीया या भ्रातृद्वितीया (भैयादूज्ज) भी कहते हैं।यमराज को यमुनाजी इसी दिन निमन्त्रित किया था।इसी से इसे यमद्वितीया कहते हैं।भाइयों को चाहिए वै इस दिन अपने घर भोजन न करके बहन के यहाँ भोजन करें।बहिनों को उन्हें उपहार देना चाहिए।ऐसा करने से सुखशान्ति एवं धन की वृद्धि होती है तथा सर्वदा के लिये यम का भय मिट जाता है ।

तिथिः ८ मंगल सूर्योदये

कार्तिकशुक्लप्रतिपत्पूर्वाः–या कुहूःप्रतिपन्मिश्रा तत्र गाः पूजयेन्नृप।पूजनात् त्रीणि वर्द्धन्ते प्रजा गावो महीपतिः।।गोवर्धनमन्त्रः–गोवर्धन धराधर गोकुल त्राणकारक।बहुबाहुकृतच्छाय गा कोटिप्रदो भव।।गोमन्त्रस्तुः–लक्ष्मीर्या लोकपालानां धेनुरूपेण संस्थिता।घृतं वहति यज्ञार्थे मम पाप व्यपोहतु।।कार्तिकशुक्लद्वितीयायमद्वितीयाः–सा पूर्वविद्धा अपराह्णव्यापिनी ग्राह्या।स्कान्दे यथा–ऊर्जे शुक्लद्वितीयायामपराह्णेऽर्चयेद्यमम्।स्नानं कृत्वा भानुजायां यमलोकं न पश्यति।।अतो यमद्वितीयेयं त्रिषु लोकेषु विश्रुता।तस्यां निजगृहे विप्र भोक्तव्यं न ततो नरैः।।स्नेहेन भगिनी हस्ताद्भोक्तव्यं पुष्टिवर्द्धनम्।वस्त्रालङ्करणादीनि ताभ्यो देयानि यत्नतः।।कार्तिकशुक्लषष्ठी निर्णयः–अत्र षष्ठीतिथिः सूर्यव्रतादौ सप्तमीयुतैव कार्येति यदा सप्तम्याः क्षयावसरे उक्त पुराणान्ते–षष्ठ्याश्चैका कला यत्र तत्र सन्निहितो रविः।तत्र क्रतुशतं पुण्यमष्टम्यां पारणेन तु।।षष्ठी च सप्तमी चैव रात्रिशेषे यदाष्टमी।त्रिस्पृशा नाम सा प्रोक्ता तथा चैकादशी पुनः।।शुद्धैव सप्तमी ज्ञेया उपोष्याः फलकाङ्क्षिभिः अष्टम्यां पारणं कुर्याद् व्रतमेतन्नराधिप।यत्र पञ्चम्यां वृद्धिस्तत्परं षष्ठ्यां क्षयस्तदाऽपि षष्ठीक्षयदिनमेव व्रतम्।कार्तिकशुक्लनवमी कूष्माण्डनवमीः–तत्र कूष्माण्ड दानमुक्तम्।इयं युगादिकी पूर्वाह्णिकी ग्राह्या।अक्षयनवम्यां दानादिकृते अक्षय पुण्यमवाप्तिः।अत्रैव विष्णुत्रिरात्रि व्रतमुक्तं पाद्मे यथा–कार्तिके शुक्लनवमीमवाप्य विजितेन्द्रियः।हरिं विधाय सौवर्णं तुलस्या सहितं विभुम्।पूजयेद्विधिवद्भक्त्याव्रती तत्र दिनत्रयं।ततो यथोक्तविधिना कुर्याद्वैवाहिकं विधिम्।कार्तिकशुक्लैकदश्यां भीष्मपञ्चकव्रतकथनम्ः–भीष्माय अर्घ्य मन्त्रः–पञ्चाह पञ्चगव्याशी भीष्मायार्घ्यंच पञ्चसु।अहःस्वपि तथा दद्यान्मन्त्रेणानेन सुव्रत।सत्यव्रताय शुचये गाङ्गेयाय महात्मने।भीष्मायैतत्प्रादाम्यर्घ्यमा जन्मब्रह्मचारिणे।।वैयाघ्रपद गोत्रायेति वाऽर्घ्यं दत्वा तर्पणं कार्यम्। इद व्रतमेकादशीतः पञ्चदिनात्मक तिथिह्रासेऽपि तस्यानुष्ठानमिति।एकादशीनिर्णयः एकादशी द्वादशी युतैव ग्राह्या।अथैकादश्यां द्वादश्यां वा षोडशोपचारैः विष्णुतुलसीश्च विधिवत्सम्पूज्य प्रबोधयेत्।कार्तिकेशुक्ल पक्षस्य कृत्वा चैकादशीं नरः। प्रातर्दत्वा शुभान् कुम्भान् प्रयाति हरिमन्दिरम्।। अस्यामेव रात्रौ देवोत्थापनंकर्तव्यम्ः– अथविष्णूत्थापनमन्त्राः–विष्णूत्थापनः–

ब्रह्मेन्द्ररुद्रै रभिवन्द्यमानो भवानृषिर्वन्दित वन्दनीयः।प्राप्ता तवेयं किल कौमुदाख्या जागृष्वजागृष्व च लोकनाथ।।मेघा गता निर्मल पूर्णचन्द्रः शारद्यपुष्पाणि मनोहराणि।अहं ददामीति च पुण्यहेतो र्जागृष्व जागृष्व च लोकनाथ ।।उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविन्दत्यज निद्रां जगत्पते।त्वया चोत्थीय मानेन उत्थितंभुवनत्रयं।।उत्तिष्ठ कमला कान्तं लक्ष्यां सह जगतपते।शेषं द्वादशी प्राप्ता तस्यां जागरण कुरू।।सुप्ते त्वयि जगन्नाथः जायते सर्वं प्रलीयते।त्वयि जाग्रनिदेवशः विश्वमेतद तवदुतिष्ठ ति।।एवं देवमुत्थाप्य तदग्रे चातुर्मास्य व्रतसमाप्ति कुर्यात्।उक्तं भारते–चतुर्द्धा गृह्य वै जीर्णं चतुर्मास्यव्रत नरः।कार्तिकेशुक्लपक्षे तु द्वादश्यां तु समापयेत्।।कार्तिकशुक्लचतुर्दशी वैकुण्ठसंज्ञा।सा विष्णुपूजायारात्रिव्यापिनी ग्राह्या।दिनद्वये तदव्याप्तौ निशीथप्रदोषोभयव्यापिनी ग्राह्या।अस्यामेव विश्वेश्वर प्रतिष्ठा दिनत्वा तत्प्रीत्यर्थमुपवास कार्यम्।शुक्लपक्षेचतुर्दश्या मरुणाभ्युदयंप्रति।महादेव तिथौ ब्राह्मे मुहूर्ते मणिकर्णिके।।स्नात्वा विश्वेश्वरो देव्या विश्वेश्वरम पूजयत्।।कार्तिकी पौर्णमासी परा ग्राह्या। "अमापौर्णमास्यौ परे" इति दीपिकोक्तेः।कार्तिक्यां पुष्करे स्नातः सर्वपापैः प्रमुच्यते।माघ्यां स्नातः प्रयागे तु मुच्यते सर्वकिल्बिषैः॥अस्यामेव सायंकाले मत्स्यावतारो जात इत्युक्त पाद्मे कार्तिकमहात्म्ये–वरान्दत्वा यतो विष्णुः मत्स्यरूपीभवेत्ततः तस्यां दत्तं हुतं जप्तं तदक्षय्य फलं स्मृतम्।अत्र कार्तिकेयदर्शनंकाशीखण्डे उक्तम्–कार्तिक्यां कृत्तिकायोगे यः कुर्यात्स्वा मिदर्शनम्।सप्तजन्म भवेद्विप्रो धनाढ्यो वेदपारगः॥

अग्रहायणशुक्लपक्षः

शाके १९४४;संवत् २०७९;फसली १४३०;दिनाङ्क २४:११:२०२२ ई. ततो दिनाङ्क ०८:१२:२०२२ ईस्वी या.। पूर्व राहु कालः। वक्री पूर्वोदितो मंगलः,मार्गीपश्चिमातो बुधः ततो मार्गीबुध ति.११ पूर्वोदितो,मार्गी पश्चिमोदितोः शुक्रः,मार्गी पूर्वोदितो गुरूः शनिः,हेमन्तर्तुः,याम्यगोलः,याम्यायनम्,अयनांश २२:५०:५४।

तिथि वार	तिथ्यन्तः द. प.	तिथ्यन्तः घं. मि.	नक्षत्र	नक्षत्रान्तः द. प.	नक्षत्रान्तः घं. मि.	योग	योगान्तः द. प.	करणान्तः क. द. प.	चन्द्रराश्यन्तः रा. द. प.	चन्द्रराश्यन्तः घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू. उ. घं.मि.	सू. अ. घं.मि.	दिनाङ्काः सौ	दिनाङ्काः अं
०१ गु.	५१:२०	रा.०३:१५	अनु	३७:१४	रा.०९:३७	अतिग	१९:३६	किं. २३:४६	वृश्चिक	अहोरात्र	०७:०७:४८:१९	२६:२४	०६:४३	०५:१७	०८	२४
०२ शु.	४६:२०	रा.०२:१६	ज्येष्ठा	३४:०३	रा.०८:२१	सुकर्मा	१२:४९	बा. २१:०५	वृ.३४:०३	रा.०८:२१	०७:०८:४९:१९	२६:२२	०६:४४	०५:१६	०९	२५
०३ श.	४०:२६	रा.१०:५४	मूल	३१:२०	रा.०७:१६	धृतिः	०५:३०	तै. १३:२३	धनु	अहोरात्र	०७:०९:५०:१९	२६:२०	०६:४४	०५:१६	१०	२६
०४ र.	३५:००	रा.०८:४४	पू.षा	२६:१५	सं.०५:१४	गण्डः	५०:०४	व. ०७:४३	ध.४०:११	रा.१०:४८	०७:१०:५१:१८	२६:१८	०६:४४	०५:१६	११	२७
०५ चं.	२९:०२	सं.०६:२२	उ.षा	२२:०१	दि.०३:३३	वृद्धिः	४२:०७	ब. ०२:०१	मकर	अहोरात्र	०७:११:५२:१७	२६:१६	०६:४५	०५:१५	१२	२८
०६ मं.	२३:१०	दि.०४:०१	श्रव.	१७:५३	दि.०१:५४	ध्रुवः	३४:१८	तै. २३:१०	म.४५:५७	रा.०१:०८	०७:१२:५३:१६	२६:१६	०६:४५	०५:१५	१३	२९
०७ बु.	१७:३६	दि.०१:४७	धनि.	१४:०१	दि.१२:२१	व्या.	२६:४८	व. १७:३६	कुम्भ	अहोरात्र	०७:१३:५४:१५	२६:१५	०६:४५	०५:१५	१४	३०
०८ गु.	१२:३२	दि.११:४६	शत.	१०:३७	दि.१०:५०	हर्षण	११:३९	ब. १२:३२	कु.५४:००	रा.०४:२१	०७:१४:५५:१४	२६:१४	०६:४५	०५:१५	१५	१
०९ शु.	०८:०८	दि.१०:०१	पू.भा	०७:५४	दि.०९:५६	वज्रः	१३:०८	कौ. ०८:०८	मीन	अहोरात्र	०७:१५:५६:२२	२६:१२	०६:४६	०५:१४	१६	२
१० श.	०४:३६	दि.०८:३६	उ.भा.	०६:०४	दि.०९:१२	सिद्धिः	०७:१८	ग. ०४:३६	मीन	अहोरात्र	०७:१६:५७:३०	२६:१२	०६:४६	०५:१४	१७	३
११ र.	०२:०४	दि.०७:३६	रेवती	०५:०६	दि.०८:४८	व्यति.	०२:१७	वि. ०२:०४	मी.०५:०६	दि.०८:४८	०७:१७:५८:३७	२६:१०	०६:४६	०५:१४	१८	४
१२ चं.	००:४४	दि.०७:०५	अश्वि	०५:२०	दि.०८:५५	परिघः	५४:५७	बा. ००:४४	मेष	अहोरात्र	०७:१८:५९:४४	२६:१०	०६:४७	०५:१३	१९	५
१३ मं.	००:३९	दि.०७:०३	भरणी	०६:४९	दि.०९:३१	शिवः	५२:४८	तै. ००:३९	मे.२२:३०	दि.०३:४७	०७:२०:००:५१	२६:०८	०६:४७	०५:१३	२०	६
१४ बु.	०१:५३	दि.०७:३३	कृति.	०९:३४	दि.१०:३७	सिद्धः	५१:४०	व. ०१:५३	वृष	अहोरात्र	०७:२१:०१:५८	२६:०६	०६:४७	०५:१३	२१	७
१५ गु.	०४:२५	दि.०८:३३	रोहि.	१३:३०	दि.१२:११	साध्य	५१:२२	ब. ०४:२५	वृ.४५:३८	रा.०१:०२	०७:२२:०३:०५	२६:०४	०६:४७	०५:१३	२२	८

२४ — श्रीहरिशो व्रतं,कर्णवेध,विवाह द्विरागमन अनु.,पश्चिमोत्तर यात्रा, सर्वार्थसिद्धियोग रा.०९:३७ या.।

२५ — चन्द्रदर्शन मु. ३० सौम्यश्रृंगं फलं समर्घ,विवाह मूले, मुण्डन, द्विरागमन पूर्वोत्तरयात्रा तृतीयायां, शिववास,मृत्युयोग रा.०२:१६ या.।

२६ — शूलयोगमानं ५२:२०,उत्तरयात्रा, सिद्धियोग रा.१०:५४ उ.।

२७ — श्रीगजानन ४ व्रतं,विवाह द्विरागमन पंचम्यां,षाण्मासिकरविव्रतारंभः,अमृतयोग रा.०८:४४ उ., भद्रारंभ:०७:४३ उपरि ततो भद्रांतः३५:०० यावत्।

२८ — सीतारामविवाहोत्सवः,मुण्डन,विवाह दिवारात्रौ,द्विरागमनं,नवान्नपार्वणं, गृहप्रवेश पंचम्यां,,शिववास,पूर्वविना यात्रा श्रवणे,अमृतयोग रा.०६:२२ या.,ततो सिद्धियोग रा.०६:२२ उ.।

२९ — पञ्चकारम्भः दि.०१:५४,शिववास दि. ०४:०१ या.,मृत्युयोग दि.०४:०१ या.,अमृतयोग दि.०४:०१ उ.।

३० — विवाह धनि.,गृहप्रवेश मुण्डन द्विरागमनं सप्तम्यां,नवान्नपार्वण,पश्चिमयात्रा धनि.,सिद्धियोग दि.०१:४७ या.,मृत्युयोग दि.०१:४७ उ.,भद्रारंभ:१७:३६ उपरि ततो भद्रांतः४५:०४ यावत्।

१ — दिसम्बर १२, द्विरागमनं अष्टम्यां,नवान्नपार्वण शत.,शिववास दि. ११:४६ उ.,अमृतयोग दि.११:४६ या.,ततो मृत्युयोग दि.११:४६ उ.।

२ — दग्ध ति. (०८:०८ उ.),उत्तरयात्रा पू.भा., शिववास दि. १०:०१ या.,अमृतयोग दि.१०:०१ या.।

३ — दग्ध ति. (०४:३६ या.),✵ज्येष्ठायांरविः२५:५५,गृहारंभप्रवेशौचैकादश्यां,पश्चिमोत्तरयात्रा रेवत्यां,भद्रारंभ:३३:२० उपरि।

४ — वरीयानयोग ५५:५०,मोक्षदा ११ व्रतं सर्वेषां,गीताजयन्ती, पञ्चकान्तः दि.०८:४८ या.,विवाह दिवारात्रौ,द्विरागमनं द्वादश्यां, शिववास दि.०७:३६ उ.卐

५ — गोमूत्रेण पारणं,प्रदोष १३ व्रतं, विवाह गृहारंभप्रवेश अश्वि.,मुण्डन कर्णवेध पूर्वविनायात्रा त्रयोदश्यां अश्वि.,द्विरागमनं द्वादश्यां,शिववास,मृत्युयोग दि.०७:०५ या.।

६ — प्रदोष १४ व्रतं,शिववास दि. ०७:०३ या.,सिद्धियोग दि.०७:०३ या.। 卐 पश्चिमांविनायात्रा अश्वि.,मृत्युयोग०७:३६या.,भद्रांतः०२:०४ यावत्,मार्गीबुध पूर्वोदित २७:४८।

७ — पूर्णिमा व्रतं,गृहारंभः विवाह द्विरागमन पूर्वदक्षिणयात्रा रोहिण्यां, भद्रारंभ:०१:५३ उपरि ततो भद्रांतः३३:०९ यावत्। ●ततो दक्षिणविना यात्रा,सिद्धियोग दि.०८:३३ या.।

८ — मार्गी १५,स्नानदानादिः,हरिहरक्षेत्र स्नानं,हरिहरनाथपूजनं दर्शनादि,दत्तात्रेयावतारः,विवाह दिवारात्रौ,द्विरागमनं,गृहारंभ पूर्णिमायां,शिववासदि.०८:३३,पूर्वयात्रा रोहि.,●

मिश्रमान कालिक दैनिक स्पष्टग्रहाः

ति	मंगल:वक्री	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमान
१	०१:२२:१८:२३	०७:२१:०४:०६	मी:०५:२७:५५	०७:१६:५४:०१	०९:२२:०१:२६	०६:२०:१४:१८	४३:१२
२	०१:२२:००:२८	०७:२२:१६:०४	११:०५:२८:१३	०७:१८:१४:२६	०९:२२:०५:५०	०६:२०:११:०७	४३:११
३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१०	[illegible]	[illegible]	११:०५:३४:०१	०७:२८:४३:३५	०९:२२:३५:१९	०६:११:[illegible]:४०	४३:०६
११	[illegible]	[illegible]	११:०५:३५:२५	०७:२९:५७:०९	०९:२२:३६:५२	०६:११:४२:२९	४३:०५
१२	[illegible]	[illegible]	११:०५:३७:५५	०८:०१:१०:३३	०९:२२:३८:२५	०६:११:३९:१८	४३:०५
१३	[illegible]	[illegible]	११:०५:३९:५२	०८:०२:२३:५७	०९:२२:३९:५८	०६:११:३६:०७	४३:०४
१४	[illegible]	[illegible]	११:०५:४१:५०	०८:०३:३७:२१	०९:२२:४१:३१	०६:११:३२:५६	४३:०३
१५	[illegible]	[illegible]	११:०५:४३:४८	०८:०४:५०:४५	०९:२३:०२:५५	०६:११:२९:४५	४३:०२

दैनिक लग्नसारणी चक्रम्

ति	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिं.अं.	क.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
१	१६:५२	१८:४८	२१:०१	२३:१९	०१:३५	०३:५०	०६:०७	०८:२४	१०:२९	१२:१५	१३:४६	१५:१५
२	१६:४८	१८:४४	२०:५७	२३:१५	०१:३१	०३:४६	०६:०३	०८:२०	१०:२५	१२:११	१३:४२	१५:११
३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१५:०७
४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१५:०२
५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१४:५८
६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१४:५४
७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१४:४९
८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१४:४५
९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१४:४१
१०	१६:१३	१८:०९	२०:२२	२२:४०	००:५६	०३:११	०५:२८	०७:४५	०९:५०	११:३६	१३:०७	१४:३६
११	१६:०९	१८:०५	२०:१८	२२:३६	००:५२	०३:०७	०५:२४	०७:४१	०९:४६	११:३२	१३:०३	१४:३२
१२	१६:०५	१८:०१	२०:१४	२२:३२	००:४८	०३:०३	०५:२०	०७:३७	०९:४२	११:२८	१२:५९	१४:२८
१३	१६:०१	१७:५७	२०:१०	२२:२८	००:४४	०२:५९	०५:१६	०७:३३	०९:३८	११:२४	१२:५५	१४:२४
१४	१५:५७	१७:५३	२०:०६	२२:२४	००:४०	०२:५५	०५:१२	०७:२९	०९:३४	११:२०	१२:५१	१४:२०
१५	१५:५३	१७:४९	२०:०२	२२:१९	००:३६	०२:५०	०५:०७	०७:२४	०९:२९	११:१५	१२:४६	१४:१५

दैनिक अर्धप्रहरा चक्रम्

वार	दिन का अर्धप्रहरा	रात का अर्धप्रहरा
गु.	दि. ०२:३७-०५:१७।	रा. ११:५७-०१:३७। रा.०४:५७-०६:४३।
शु.	दि. ०९:२२-१२:१० ।	रा. ०८:३८-१०:१९।
श.	दि.६:४४-८:०३। दि.१:१९-२:३८। सं.३:५७-५:१६।	रा.५:१६-६:५७।रा.१:४१-३:२२।रा.५:३-६:४४।
र.	दि. १०:४१-०१:१९।	रा. १०:१९-१२:००। रा.०१:४१-०३:२२।
च.	दि. ०८:०३-०९:२१। दि.०२:३३-०३:५१।	रा. १०:१८-११:५९। रा.०३:२१-०५:०२।
म.	दि. ०८:०३-०९:२१। दि.०१:१५-०२:३३।	रा. ०६:५६-०८:३७ ।
बु.	दि. ०९:२१-१०:३९। दि. ११:५७-०१:१५।	रा. ११:५९-०१:४०। रा.०३:२१-०५:०२।
गु.	दि. ०२:३३-०५:१५ ।	रा. ११:५९-०१:४०। रा.०५:०२-०६:४५।
शु.	दि. ०९:२२-११:५८ ।	रा. ०८:३६-१०:१७।
श.	दि.६:४६-८:४।दि.१:१६-२:३४। सं.३:५२-५:१४।	रा.५:१४-६:५५।रा.१:३९-३:२०।रा.५:१-६:४६।
र.	दि. १०:४०-०१:१६ ।	रा. १०:१७-११५८। रा. ०१:३९-०३:२०।
च.	दि. ०८:०५-०९:२३। दि. ०२:३५-०३:५३।	रा. १०:१६-११:५७। रा.०३:१९-०५:००।
म.	दि. ०८:०५-०९:२३। दि. ०१:१७-०२:३५।	रा. ०६:५४-०८:३५ ।
बु.	दि. ०९:२३-१०:४१। दि. ११:५९-०१:१७।	रा. ११:५७-०१:३८। रा.०३:१९-०५:००।
गु.	दि. ०२:३५-०५:१३।	रा. ११:५७-०१:३८। रा.०५:००-०६:४६।

तिथिः १ गुरू सूर्योदये

९ | ल | ७ के
श १० | सू ८ बु | ६
चं शु
११ | ५
गु १२ | मं २ | ४
रा १ | ३

अथ वर्षपनविधि–(जन्मदिन मनाने की विधि):–धर्मसिन्धु के अनुसारजन्मदिन प्रतिवर्ष जिस मास में जन्म हो उस मास में चान्द्रमान से अर्थात् प्रतिपदादि जो जन्मतिथि हो उसी में मनाना चाहिये। यदि जन्म की तिथि दो दिन हो तो जिसमें जन्मनक्षत्र हो वही तिथि मनाना चाहिये। यह योग सम्भव न हो तो जिस दिन तिथि उदयकालव्यापिनी दो मुहूर्त से अधिक हो उस दिन मनाना चाहिये। जन्ममास अधिमास हो तो उसमें जन्मदिन नहीं मनाना चाहिये। अर्थात् वर्षपन में सदा शुद्धमास की तिथि ही ग्राह्य है। आजकल जन्मदिन अंग्रेजी तारीख से मनाने का प्रचलन हो गया है जो शास्त्र विरूद्ध है। दैनिक दिनचर्या के उपरान्त यजमान कुशासन पर पूर्वाभिमुख होकर हाथ में जल द्रव्यादि लेकर "ॐ अद्येत्यादि सकलाऽरिष्टनिवृत्तये श्री विष्णुप्रीतये आयुरभिवृद्धयर्थं वर्षवृद्धिकर्म करिष्ये"। ऐसा संकल्प कर सर्वप्रथम तिल का उबटन लगावें। तदन्तर तिल युक्त जल से स्नान कर श्रीगणपतिपूजनपूर्वक पश्चात् पूजन,कुल देवता आवाहन "कुल देवतायै नमः" से करें। पुनः गुरूपूजन,जन्मनक्षत्रपति,मातापिता,प्रजापति,सूर्यमार्कण्डेय,व्यास,परशुराम,अश्वत्थामा,कृपाचार्य,बलि,मार्कण्डेय,हनुमान,विभीषण और षष्ठी देवी के नामों से अवाहन कर सविधि पूजन करना चाहिये। षष्ठी देवी को नैवेद्य में पका चावल (भात),दही के साथ अर्पण करें। प्रार्थनामन्त्रः–ॐ मार्कण्डेयाय मुनये नमस्ते महदायुषे। चिरंजीवी यथा त्वं तु मुनीनां प्रवरो द्विज।। कुरूत्वं मुनिशार्दूल तथा मां चिरजीवनम्। नराणामयुरारोग्यैश्वर्य सौख्यसुखप्रदः।। षष्ठीदेवी प्रार्थनाः–जय देवी जगन्मातर्जगदानन्दकारिणी। प्रसीद मम कल्याणि। नमस्ते षष्ठिदेवता।। त्रैलोक्ये यानि भूतानि स्थावराणि चराणि च। ब्रह्मविष्णु शिवैः सार्धं रक्षां कुर्वन्तु तानि मे।। अश्वत्थामादि प्रार्थनामन्त्रः–अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनुमांश्च विभीषणः। कृपः परशुरामश्च सप्तैतेचिरजीविनः।। सप्तैतान्संस्मरेन्नित्यं मार्कण्डेयमथाष्टमम्। जीवेद्वर्षशतं साग्रमपमृत्युर्विवर्जितः।। प्रीयन्तां देवतासर्वा पूजां गृह्णन्तु तां मम। प्रयच्छन्त्वायुरारोग्यं यशस्सौख्यश्च सम्पदः।। मन्त्रहीनं भक्तिहीनं क्रियाहीनं महामुने। यदर्चिता मया देवाः परिपूर्ण तदस्तु मे। प्रार्थना के बाद तिल गुड़ से मिश्रित दूध का पान करना चाहिये। आवाहित प्रत्येक देवताओं के नाममन्त्रों से हवन कर ब्राह्मण भोजन कराना चाहिये। जन्म के दिन नख,बालकटवाना, मैथुन, यात्रा, मांसभक्षण, कलह, हिंसा तथा गर्मजल से स्नान कार्य वर्जित है। खण्डनं नखकेशानां मैथुनाध्वगमस्तथा। आमिषं कलहं हिंसावर्षवृद्धौ विवर्जयेत्।। मृते जन्मनि सङ्क्रान्तौश्राद्धे जन्मदिने तथा। अस्पृश्यस्पर्शने चैव न स्नायादुष्णवारिणा।।

तिथिः ८ गुरू सूर्योदये

९ | ल | ७ के
श१० | सू ८ बु शु | ६
चं
११ | ५
गु १२ | २ मं | ४
१ रा | ३

अथ मार्गशीर्षमासकृत्यम्–चम्पाषष्ठीः–मार्गशीर्षशुक्लाषष्ठी चम्पाषष्ठीति महाराष्ट्रेषु प्रसिद्धा। सोत्तरयुता ग्राह्या। तदुक्तं ब्रह्माण्डपुराणे मल्लारिमाहात्म्ये–मार्गे भाद्रपदे शुक्ला षष्ठी वैधृतिसंयुता। रविवारेण संयुक्ता सा चम्पेतीह कीर्तिता। इयं योगवशेन पूर्वा परा वा कार्या।। इयमेव स्कन्दषष्ठी। सा पूर्वयुता। कृष्णाष्टमी स्कन्दषष्ठी शिवरात्रिश्चतुर्दशी। एताः पूर्वयुताः कार्यास्तिथ्यन्ते पारणं भवेत्।। **पिशाचमोचन श्राद्धविधिः**–मार्गशीर्षशुक्लचतुर्दश्यां पिशाचमोचनतीर्थे श्राद्धं त्रिस्थलीसेतौ भट्टैरुक्तम्। तस्य प्राप्तपैशाच्यस्वपित्राद्युद्देश्यकत्वे पार्वणत्वाद पराह्णव्यापिनी ग्राह्या। **श्रीरामजानकीविवाहपञ्चमीः**–मार्गशुक्लपञ्चमी श्रीरामजानकीविवाह पञ्चमी। इयं पञ्चमी उदयव्यापिनी ग्राह्या। अत्र जनकपुरयात्राप्रसङ्गे बृहद्विष्णुपुराणे–कौसलेन्द्रसरस्नायान् मार्गमासे विशेषतः। मार्गे वै मण्डनं तीर्थे पादप्रक्षालनं सरः।। रामलक्ष्मणसीतानां सरांसि फलदानि वै। विशेषेण महाभागं नवम्यां रामजन्मनि।। जानकीजन्मवारेऽपि विवाहे च तथैव तु। सर्वेषां स्नान दानादि महापुण्य फलप्रदम्।। **दत्तात्रेयोत्पत्तिकथनम्**:–मार्गशीर्ष पौर्णमास्यां दत्तात्रेयोत्पत्तिः। तदुक्तं स्कान्दे सह्याद्रिखण्डे–मार्गशीर्षे तथा मासि दशमेऽह्नि सुनिर्मले। मृगशीर्षयुते पौर्णमास्यां ज्ञस्य च वासरे। जनयामास देदीप्यमानं पुत्रं सती शुभम्।। तद्विष्णुमागतं ज्ञात्वा अत्रिर्नामाऽकरोत्स्वयम्।। दत्तवान् स्वस्य पुत्रत्वाद्दत्तात्रेय इतीश्वरः। इयं प्रदोषव्यापिनीति वृद्धाः।। **अथ शल्योद्धारः**– स्मृत्वेष्टदेवतां प्रश्न–वचनस्याद्यमक्षरम्। गृहीत्वा तु ततः शल्याशल्यं सम्यग्विचारयेत्।। अकचटतपयशहपया वर्णाः पूर्वादि–मध्येषु। शल्यकरा इह नान्ये शल्यगृहे निवसतां नाशः।। प्रश्नाद्ये यदि 'अः' प्राच्यं नरशल्यं तदा भवेत्। सार्द्धहस्तप्रमाणेन तच्च मानुष्यमृत्युकृत्।। आग्नेयां यदि कः प्रश्ने खशल्यं करद्वये। राजदण्डो भवेत्तत्र भयं नैव निवर्तते।। याम्यायां यदि चः प्रश्ने कुर्यादाकटिसंस्थितम् । नरशल्यं गृहेशस्य मरणं चिररोगता ।। नैर्ऋत्यां यदि टः प्रश्ने सार्द्धहस्तादधस्तले । शुनोऽस्थि जायते तच्च बालानां जनयेन्मृतिम्।। तः प्रश्ने पश्चिमायां तु शिशोः शल्यं प्रजायते। सार्द्धहस्तमिते तत्र स्वामिनं नेच्छति ध्रुवम् ।। वायव्यां यदि पः प्रश्ने तुषाङ्गारश्चतुः करे। कुर्वन्ति मित्रनाशश्च दुःस्वप्नदर्शनन्तथा ।। उदीच्यां यदि यः प्रश्ने तदा शल्यं कटेरधः। तद्गृहे निर्धनत्वश्च कुबेर सदृशं यदि ।। ऐशान्यां यदि शः प्रश्ने गोशल्यं सार्धं हस्ततः। तद् गोधनानां नाशाय जायते गृहमेधिनः ।। हपया मध्यकोष्ठे च वक्षो मात्रं भवेदधः। नृकपालमथो भस्म लौहं तत्कुलनाशकृत्।।

स्पष्टार्थचक्रमिदम्:–

अ.	क.	च.	ट.	त.	प.	य.	श.	ह.प.य.	वर्णा.
पूर्व	अग्नि	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	मध्य	दिक्
मनुष्यः	खरस्य	मनुष्यः	शुनः	शिशो:	तुषांगारः	शल्यः	गोशल्यः	नृकपालः	शल्यः
१॥	२	२	१॥	१॥	४	२	१	३	हस्त
मृत्युः	राजभयम्	गृहेश मृत्यु	बाल मृत्यु	गृहेश मृत्यु	दुःस्वप्नम्	दरिद्र	गो.विनाशः	कुलनाशः	फलानि

पौषकृष्णपक्ष

शाके १९४४; संवत् २०७९; फसली १४३०; दिनाङ्क ०९:११:२०२२ ई. ततो दिनाङ्क २३:१२:२०२२ ईस्वी या.। पूर्व राहु कालः।
वक्री पूर्वोदितो मंगलः, मार्गी पूर्वोदितो बुधः गुरूः, मार्गी पश्चिमोदितोः शुक्रः, मार्गी पूर्वोदितो गुरू शनिः, हेमन्तर्तुः, याम्यगोलः, याम्यायनम्, अयनांश २२:५०:५४।

तिथि वार	तिथ्यन्तः द. प.	तिथ्यन्तः घं. मि.	नक्षत्रान्तः नक्षत्र	नक्षत्रान्तः द. प.	नक्षत्रान्तः घं. मि.	योगान्तः योग	योगान्तः द. प.	करणान्तः क. द. प.	चन्द्रराश्यन्तः रा. द. प.	चन्द्रराश्यन्तः घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू. उ. घं.मि.	सू. अ. घं.मि.	दिनाङ्काः सौ	दिनाङ्काः अं	
०१ शु.	०८:०४	दि.१०:०२	मृग.	१८:३०	दि.०२:१२	शुभः	५१:५२	कौ. ०८:०४	मिथुन	अहोरात्र	०७:२३:०४:२०	२६:०२	०६:४८	०५:१२	२३	०९	पौषे कौशिकीस्नानं महापुण्यप्रदं,मुण्डन कर्णवेध विवाह द्विरागमनं मृग.,गृहारंभ द्वितीया मृग.,शिववास दि.१०:०२ या.,पश्चिमाविनायात्रा प्रतिपदि ●
०२ श.	१२:३८	दि.११:५१	आर्द्रा	२४:२१	दि.०४:३२	शुक्लः	५२:५३	ग. १२:३८	मिथुन	अहोरात्र	०७:२४:०५:३५	२६:००	०६:४८	०५:१२	२४	१०	गृहारंभः दक्षिणयात्रा पुनर्वसु,भद्रारंभ:४५:१५ उपरि । ● सिद्धियोग दि.१०:०२ या.ततो मृत्युयोग दि१०:०२ उ.।
०३ र.	१७:५३	दि.०१:५७	पुन.	३०:४३	रा.०७:०५	ब्रह्मः	५४:११	वि. १७:५३	मि.१४:०६	दि.१२:२६	०७:२५:०६:५०	२५:५८	०६:४८	०५:१२	२५	११	श्रीलम्बोदर ४ व्रतं,द्विरागमनं तृतीयायां, पश्चिमांविनायात्रा पुष्ये, शिववास दि. ०१:५७ उ.,सिद्धियोग दि.०१:५७ या.,भद्रांत:१७:५३ यावत्।
०४ चं.	२३:२०	दि.०४:०९	पुष्य	३७:१७	रा.०९:४४	ऐन्द्रः	५५:३०	बा. २३:२०	कर्क	अहोरात्र	०७:२६:०८:०५	२५:५७	०६:४९	०५:११	२६	१२	द्विरागमनं गृहारंभ कर्णवेध पंचम्यां, शिववास दि. ०४:०९ या., पूर्वविनायात्रा पुष्ये, सिद्धियोग दि.०४:०९ उ.,सर्वार्थसिद्धियोग रा.०९:४४ या.।
०५ मं.	२८:३५	सं.०६:१५	आश्ले	४३:२९	रा.१२:१३	वैधृतिः	५६:२८	तै. २८:३५	क.४३:२९	रा.११:५३	०७:२७:०९:२०	२५:५६	०६:४९	०५:११	२७	१३	मृत्युयोग सं.०६:१५ उ.।
०६ बु.	३३:१२	रा.०८:०६	मघा	४९:०२	रा.०२:२५	विष्क	५६:५१	ग. ००:५४	सिंह	अहोरात्र	०७:२८:१०:३५	२५:५५	०६:४९	०५:११	२८	१४	विवाह मघायां,पूर्वयात्रा पू.फा.,अमृतयोग रा.०८:०६ या.,ततो सिद्धियोग रा.०८:०६ उ.,भद्रारंभ:३३:१२ उपरि ।
०७ गु.	३६:५०	रा.०९:३३	पू.फा.	५३:३७	रा.०४:१६	प्रीतिः	५६:२८	वि. ०५:०१	सिंह	अहोरात्र	०७:२९:११:५०	२५:५४	०६:४९	०५:११	२९	१५	सप्तम्यां मेघदर्शनं, मासान्तः, पूर्वोत्तरयात्रा पू.फा., अमृतयोग रा.०९:३३ या.,भद्रांत:०५:५१ यावत्।
०८ शु.	३९:२३	रा.१०:३५	उ.फा.	५७:१०	रा.शे.५:४२	आयु.	५५:१४	बा. ०८:०७	सिं.१०:३३	दि.११:०३	०८:००:१३:११	२५:५२	०६:५०	०५:१०	०१	१६	अपूपाष्टक,✷मूलेधनुषिरविः३०:०२,मु.३०,षडशीतिसक्रांन्तिपुण्यकालं दिवा घ.१२ उपरि दिने,पुण्याहः,अशद्धारंभः,शिववास,अमृतियोग रा. १०:३५ उ.।
०९ श.	४०:३८	रा.११:०५	हस्त	५९:२५	रा.शे.६:३६	सौभा.	५२:५७	तै. १०:०१	कन्या	अहोरात्र	०८:०१:१४:३२	२५:५२	०६:५०	०५:१०	०२	१७	अन्वष्टकाश्राद्धं, मासादिः।
१० र.	४०:३६	रा.११:०४	चित्रा	६०:००	अहोरात्र	शोभ.	४९:४०	व. १०:३६	क.२९:५५	सं.०६:४८	०८:०२:१५:५३	२५:५०	०६:५०	०५:१०	०३	१८	मृत्युयोग रा.११:४३ उ., भद्रारंभ:१०:३६ उपरि ततो भद्रांत:४०:३६ यावत् ।
११ चं.	३९:१८	रा.१०:३३	चित्रा	००:२४	प्रा.०७:००	अतिग	४५:२५	ब. ०९:५७	तुला	अहोरात्र	०८:०३:१७:१३	२५:५०	०६:५०	०५:१०	०४	१९	सफला ११ व्रतं सर्वेषा, शिववास,पश्चिम दक्षिणयात्राचैकादश्यां,सिद्धियोग रा.१०:३३ या.,ततो मृत्युयोग रा.१०:३३ उ. ।
१२ मं.	३६:४८	रा.०९:३३	स्वा.	००:११	प्रा.०६:५४	सुकर्मा	४०:१७	कौ. ०८:०३	तु.४४:०९	रा.१२:३०	०८:०४:१८:३३	२५:४८	०६:५०	०५:१०	०५	२०	विशाखामानं ५८:४१,गोमयेन पारणं, शिववास,अमृतयोग रा.०९:३३ या.,ततो सिद्धियोग रा.०९:३३ उ.।
१३ बु.	३३:११	रा.०८:११	अनु.	५६:४५	रा.शे.५:३३	धृतिः	३४:२१	ग. ०५:०४	वृश्चिक	अहोरात्र	०८:०५:१९:५३	२५:४७	०६:५१	०५:०९	०६	२१	प्रदोष १३ व्रतं,मृत्युयोग रा.०८:११या.,सर्वार्थसिद्धियोग रा.शे.०५:३३ या., भद्रारंभ:३३:११ उपरि ।
१४ गु.	२८:५७	सं.०६:२५	ज्येष्ठा	५३:४३	रा.०४:२०	शूलः	२७:४५	वि. ०१:०८	वृ.५०:४३	रा.०३:०८	०८:०६:२१:१३	२५:४६	०६:५१	०५:०९	०७	२२	प्रदोष १४ व्रतं,दशतारकारंभः रा०३:०८ उ.,अमृतयोग सं.०६:२५ या.,भद्रांत:०१:०८ यावत्।
३० शु.	२३:५५	दि.०४:२५	मूल	५०:०८	रा.०२:५४	गण्डः	२०:३५	ना. २३:५५	धनु	अहोरात्र	०८:०७:२१:१२	२५:४७	०६:५१	०५:०९	०८	२३	पौषी ३०,स्नानदानादिः,शिववास, पूर्वोत्तरयात्रा प्रतिपदि,सिद्धियोग दि.०४:२५ उ.।

मिश्रमान कालिक दैनिक स्पष्टग्रहाः

ति	मंगल:वक्री	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमान
१	०१:१७:३३:३६	०८:१०:२१:५७	११:०५:४७:१४	०८:०६:०६:१९	०९:२३:०८:४१	०६:१९:२६:३७	४३:०१
२	०१:१७:१५:५४	०८:११:२७:५७	११:०५:५०:४०	०८:०७:२१:५४	०९:२३:१४:२४	०६:१९:२३:२७	४३:००
३	०१:१६:५६:१२	०८:१२:३३:५७	११:०५:५४:०७	०८:०८:३७:२९	०९:२३:२०:०८	०६:१९:२०:१६	४२:५९
४	०१:१६:३७:३०	०८:१३:३९:५६	११:०५:५७:३४	०८:०९:५३:०४	०९:२३:२५:५२	०६:१९:१७:०५	४२:५८
५	०१:१६:१८:४८	०८:१४:४५:५५	११:०६:०१:०१	०८:११:०८:३९	०९:२३:३१:३६	०६:१९:१३:५४	४२:५७
६	०१:१६:००:०६	०८:१५:५१:५४	११:०६:०४:२८	०८:१२:२४:१४	०९:२३:३७:२०	०६:१९:१०:४३	४२:५७
७	०१:१५:४१:२४	०८:१६:५७:५३	११:०६:०७:५५	०८:१३:३९:४९	०९:२३:४३:०४	०६:१९:०७:३२	४२:५७
८	०१:१५:२२:३६	०८:१७:३०:३१	११:०६:१२:४०	०८:१४:५७:०६	०९:२३:४८:१५	०६:१९:०४:२१	४२:५६
९	०१:१५:०३:४८	०८:१८:०३:०८	११:०६:१७:२५	०८:१६:१४:२४	०९:२३:५३:२५	०६:१९:०१:१०	४२:५६
१०	०१:१४:४५:००	०८:१८:३५:४५	११:०६:२२:१०	०८:१७:३१:४२	०९:२३:५८:३५	०६:१८:५७:५९	४२:५५
११	०१:१४:२६:१२	०८:१९:०८:२२	११:०६:२६:५५	०८:१८:४९:००	०९:२४:०३:४५	०६:१८:५४:४८	४२:५५
१२	०१:१४:०७:२४	०८:१९:४०:५९	११:०६:३१:४०	०८:२०:०६:१८	०९:२४:०५:५५	०६:१८:५१:३७	४२:५४
१३	०१:१३:४८:३७	०८:२०:१३:३६	११:०६:३६:२५	०८:२१:२३:३६	०९:२४:१४:०५	०६:१८:४८:२७	४२:५३
१४	०१:१३:२९:५०	०८:२०:४६:१३	११:०६:४१:११	०८:२२:४०:५४	०९:२४:१९:१५	०६:१८:४५:१७	४२:५३
३०	०१:१३:२४:०६	०८:२०:३९:०९	११:०६:४७:०१	०८:२३:५७:२७	०९:२४:२५:२८	०६:१९:४२:०६	४२:५३

दैनिक लग्नसारणी चक्रम्

मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिं.अं.	क.अं.	तु.अं	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं
१५:४८	१७:४४	१९:५७	२२:१५	००:३१	०२:४६	०५:०३	०७:२०	०९:२५	११:११	१२:४२	१४:११
१५:४४	१७:४०	१९:५३	२२:११	००:२७	०२:४२	०४:५९	०७:१६	०९:२१	११:०७	१२:३८	१४:०७
१५:४०	१७:३६	१९:४९	२२:०७	००:२३	०२:३८	०४:५५	०७:१२	०९:१७	११:०३	१२:३४	१४:०३
१५:३६	१७:३२	१९:४५	२२:०३	००:१९	०२:३४	०४:५१	०७:०८	०९:१३	१०:५९	१२:३०	१३:५९
१५:३२	१७:२८	१९:४१	२१:५९	००:१५	०२:३०	०४:४७	०७:०४	०९:०९	१०:५५	१२:२६	१३:५५
१५:२७	१७:२३	१९:३६	२१:५४	००:१०	०२:२५	०४:४२	०७:०१	०९:०४	१०:५०	१२:२१	१३:५०
१५:२३	१७:१९	१९:३२	२१:५०	००:०६	०२:२१	०४:३८	०६:५८	०९:००	१०:४६	१२:१७	१३:४६
१५:१९	१७:१५	२०:२८	२१:४६	००:०२	०२:१७	०४:३४	०६:५५	०८:५६	१०:३२	१२:१३	१३:४२
१५:१४	१७:१०	२०:२३	२१:४१	२३:५७	०२:१२	०४:२९	०६:५१	०८:५१	१०:३७	१२:०८	१३:३७
१५:१०	१७:०६	२०:१९	२१:३७	२३:५३	०२:०८	०४:२४	०६:४५	०८:४७	१०:३२	१२:०४	१३:३०
१५:०५	१७:०७	२०:१४	२१:३२	२३:४८	०२:०३	०४:२०	०६:३९	०८:४२	१०:२७	११:५९	१३:२८
१५:०१	१६:५७	१९:१०	२१:२८	२३:४४	०१:५९	०४:१६	०६:३४	०८:३८	१०:२४	११:५५	१३:२४
१४:५६	१६:५२	१९:०५	२१:२३	२३:३९	०१:५४	०४:११	०६:२९	०८:३३	१०:१९	११:५०	१३:१९
१४:५२	१६:४८	१९:०१	२१:१९	२३:३५	०१:५०	०४:०७	०६:२४	०८:२९	१०:१५	११:४६	१३:१५
१४:४७	१६:४४	१८:५६	२१:१४	२३:३०	०१:४५	०४:०२	०६:१९	०८:२४	१०:१०	११:४१	१३:१०

दैनिक अर्धप्रहरा चक्रम्

वार	दिन का अर्धप्रहरा	रात का अर्धप्रहरा
शु.	दि. ९:२४-१२:००।	रा. ८:३६-१०:१८।
श.	दि.६:४८-८:०६। दि. १:१८-२:३६।दि.३:५४-५:१२।	रा. ५:१२-६:५४।रा.१:४२-३:२४।रा.५:०६-६:४८।
र.	दि. १०:४२-०१।१८।	रा. १०:१८-१२:०० ।रा.१:४२-३:२४।
चं.	दि. ८:०६-०९:२३। दि. २:३१-३:४८।	रा. १०:१७-११:५९ । रा. ३:२३-५:०५।
मं.	दि. ८:०६-०९:२३। दि. १:१४-२:३१।	रा. ६:५३-८:३५ ।
बु.	दि. ९:२३-१०:४०। दि. ११:५७-१:१४।	रा. ११:५९-१:४१ ।रा. ५:०५-६:४९।
गु.	दि. २:३१-५:११।	रा. ११:५९-१:४१ ।रा. ५:०५-६:४९।
शु.	दि. ९:२४-११:५८ ।	रा. ८:३४-१०:१६ ।
श.	दि. ६:५०-८:१७ । दि. १:१५-२:३२।दि.३:४९-५:१०।	रा. ५:१०-६:५२। रा.१:४०-३:२२।रा.५:०४-६:५०।
र.	दि. १०:४१-५:१५ ।	रा. १०:१६-११:५८। रा. १:४०-३:२२।
चं.	दि. ८:०७-९:२४।दि.२:३२-३:४९।	रा. १०:१६-११:५८ ।रा. ३:२२-५:०४।
मं.	दि. ८:०७-९:२४।दि.१:१५-२:३२।	रा. ६:५२-८:३४।
बु.	दि. ९:२५-१०:४२ ।दि.११:५९-१:१६।	रा. ११:५७-१:३९।रा.३:२१-५:०३।
गु.	दि. २:३३-५:०९।	रा. ११:५७-१:३९।रा.५:०३-६:५१।
शु.	दि. ९:२५-११.५९।	रा. ८.३३-१०.१५।

तिथिः १ शुक्र सूर्योदये

बु ९ शु, ले, ७ के
श १०, सू ८, ६
११, ५
गु १२, मं २, ४
१ रा, चं ३

भद्राविचार–विष्टि (भद्रा) के स्वामी यमराज हैं अतएव भद्रा से लोग भयाक्रान्त हो जाते हैं। यमराज जहाँ जिस भी नक्षत्र, योग, दिशा आदि के स्वामी होते हैं मनुष्य उसी योग से डर जाते हैं। भरणी नक्षत्र के स्वामी यमराज हैं, विष्कुम्भ योग के स्वामी यमराज हैं तथा दक्षिण दिशा के स्वामी यमराज हैं इसी तरह विष्टिकरण के स्वामी भी यमराज हैं अतएव भय का यही कारण दृष्टि गोचर होता है। विष्टि (भद्रा) करण किन किन तिथियों में रहता है इसे भी जान लेना आवश्यक है। ज्योतिषशास्त्र के मुहूर्त ग्रन्थों में कहा गया है कि प्रत्येक मास के शुक्लपक्ष की अष्टमी तथा पूर्णिमा तिथि के पूर्वार्ध में तथा चतुर्थी एवं एकादशी के उत्तरार्ध में कृष्णपक्ष के तृतीया एवं दशमी तिथि के उत्तरार्ध में तथा सप्तमी एवं चतुर्दशी के पूर्वार्ध में सदैव भद्रा निवास करती है। यह भद्रा प्रायः शुभ कार्यों में त्याज्य है तथापि इसमें जो कृत्य करणीय कहे गये हैं वे इस प्रकार हैं। राजदर्शन, युद्ध, घात, पात, हठ, चिकित्सक बुलाना, जलतरण, शत्रु भगाना, शत्रुहनन, सुघट्ट, रोगदूरीकरण, हाथी, घोड़ा, हिरण, ऊंट आदि का संग्रह, स्त्री सेवन, ऋतु मज्जन, बैल गाड़ीखरीदना, विवाद, गन्ना की पेराई आदि, बध, बन्धन, विषदेना, अग्नि, अस्त्र, छेदन तथा उच्चाटनादि, कार्य भद्रा में सिद्ध होते हैं। इन कार्यों के अतिरिक्त अन्य सभी शुभ कार्य निषिद्ध कहे गये हैं। भद्रा की उत्पत्ति केविषय में मुहूर्त ग्रन्थों में कहा गया है कि देवासुर संग्राम के समय भगवान् शंकर के शरीर से उत्पन्न होकर दैत्यों का विनाश करने वाली, गर्दभ के मुख के समान मुखवाली, कृशोदरी, पूछ से युक्त, सिंह के समान गर्दन वाली, शव को वाहन बनानेवाली, सातहाथ वाली भद्रा को शंकर जी की आज्ञा से देवताओं ने अपने कान के पास स्थापित किया। इसीलिये इसे विष्टि करण कहा जाने लगा। यह स्वरुप से अत्यन्त उग्र, भयंकर मुखवाली, बड़ी भयानक दाढी से युक्त, अग्नि की शिखा से व्याप्त जब पृथ्वी पर आती है तब सभी कार्यों का विनाश कर देती है। यह जब स्वर्ग या पाताल में रहती है तब पृथ्वी वासियों को सुख एवं धन देती है। जब यह पृथ्वी पर हो तब सभी शुभ कृत्यों का त्याग कर देना चाहिए। वशिष्ठादि आचार्यों का मत है कि कुशल चाहने वाला व्यक्ति भद्रा में कोई भी मांगलिक ➔

तिथिः ८ शुक्र सूर्योदये

१०श, ले, ८
११, ९ सू शु बु, ७ के
गु १२, ६
रा १, ३, ५ चं
२ मं, ४

अथ पौषमासकृत्यम्:–अकालवृष्ट्यादिविचारः–स्मृतौ–पौषादिचतुरो मासान् ज्ञेया वृष्टिरकालजा। व्रतयात्राविवाहादि वर्जयेत् सप्तवासरान्।। एतच्च निरन्तरदिनत्रयवृष्ट्यां, तृतीयेन तु सप्ताहमिति वक्ष्यमाणवचनैकवाक्यत्वात्। विशेषमाह–एकेनैकदिनं त्याज्यं द्वितीयेन दिनत्रयम्। तृतीयेन तु सप्ताह त्यजेदाकालवर्षणे।। **ग्रहणादावशुद्धिमाहः**–एकरात्र परित्यज्य कुर्यात्पाणिग्रहं गृहे। प्रयाणे सप्तरात्राणि त्रिरात्रं व्रतबधने।। अन्यमते च–दिग्दाहे दिनमेकश्च ग्रहे सप्त दिनानि च। भूकम्पे च समुत्पन्ने त्रिरात्रं परिवर्जयेत्॥ दृश्यते सिंहिकासूनुरुदितो गगने यदि। यात्रादौ मङ्गले कार्ये सप्तरात्रं विवर्जयेत्।। अरिष्टे त्रिविधोत्पाते सिंहिकासूनुदर्शने। सप्तरात्रं न कुर्वीत यज्ञोद्वाहादि मङ्गलम्॥ दर्शनाद्दर्शना द्राहौःकेतो सप्तदिनं त्यजेत्। यावत्केतूदयस्तावदशुद्धः सः समयो भवेत्।। धूम्रकेतौ समुत्पन्ने ग्रहणे सूर्यचन्द्रयोः। ग्रहाणां संगमे चैव न कुर्यान्मङ्गलक्रियाम्।। **अर्द्धोदयः**–पौषामावस्यामर्धोदयो योगविशेषः। महाभारते यथा–अमार्कपात श्रवणैर्युक्ता चेत्पौषमाघयोः। अर्धोदयः स विज्ञेयः कोटिसूर्यग्रहैः समः।। **तत्फलमाहः**–अर्द्धोदये तु सम्प्राप्ते सर्वं गङ्गासमं जलम्। शुद्धात्मनो द्विजास्सर्वे भवेयुर्ब्रह्मसन्निभा।। यत्किंचिद्दीयते दानं तद्दानं मेरुसन्निभम्।। योग विशेषेण स्नान–जपादि महत्त्वम्–कल्पतरौ भविष्ये–पौषमासि यदा देवि शुक्लाष्टम्यां बुधो भवेत्। तस्यां स्नान जपोहोमस्तर्पणं विप्रभोजनम्।। मत्प्रीतये कृतं देवि! शतसाहस्रिकं भवेत्।। **शङ्खोक्तेयथा**:–अमावास्या त सोमेन सप्तमी भानुना तथा। चतुर्थीभूमिपुत्रेण सोमपुत्रेण चाष्टमी।। चतस्रस्तिथयस्त्वेताः सूर्यग्रहणसन्निभाः। स्नानं दानं तथा श्राद्धं सर्वं तत्राक्षयं भवेत्।। **कुशभेदाः**–कुशाःकाशमया दूर्वा उशीराश्चसकुन्दराः" इति। कुशा कुशकार्यकारिण इति संख्यापरिमाणम्। **निषिद्धकुशानाहः**–लघुहारीते यथा–"चितिदर्भा पथिदर्भा ये यज्ञादिभूमिषु। स्तरणासन पिण्डेषु षट्कुशान् परिवर्जयेत्। पिण्डार्थे ये स्तुता दर्भा यैःकृतं पितृतर्पणम्। मूत्रोच्छिष्टे धृता ये च तेषां त्यागो विधीयते।। कुशाभावे–कुशाः२ शरो गुन्द्रो यवा दूर्वाऽथ बिल्वजाः। गोकेशमुञ्जकुन्दाश्च पूर्वाभावे परः२॥ **गोधूलिलग्नस्यमहत्त्वम्**–यथा मुहूर्तचिन्तामणौ–नास्यामृक्षं न तिथिकरणं नैव लग्नस्य चिन्ता नो वा वारो न च लवविधोर्नो मुहूर्तस्य चर्चा। नो वा योगो न मृतिभवनं नैव जामित्रदोषो गोधूलि सा मुनिभिरुदिता सर्वकार्येषु शस्ता।। **अभिजित् मुहूर्तम्**–दिन मध्यगते सूर्ये मुहूर्ते हि अभिजित् प्रभुः। चक्रमादाय गोविन्दः सर्वान्दोषान्निकृन्तति॥ मानक समय के सूर्योदय एवं सूर्यास्त का औसत '**मध्याह्न**' है, जिससे २४ मिनट (१दण्ड) पूर्व से आरम्भ होकर कुल ४८ मिनट का अभिजित् मुहूर्त होता है। यह सभी शुभ कार्यो के लिये प्रशस्त होता है। **विजयादशमी संज्ञकसिद्ध मुहूर्त**– (मुहूर्तचिन्तामणौ) इषमासि सितादशमी विजयाशुभकर्मषु सिद्धिकरी कथिता। श्रवणर्क्षयुता सुतरां शुभदा नृपतेस्तु गमे जयसन्धिकरी॥ **हृदय रोग निवारण मन्त्रः**–यथा वैदिक ज्योतिष पृ.३१४–ॐसुगो हि वो अर्यमन् मित्र पन्था अनृक्षरो वरूण साधुरस्ति। तेनादित्या अधिवोचता नो यच्छता नो दुष्परिहन्तु शर्म।। इस मन्त्र का प्रतिदिन एक माला जप करने से हृदयरोग, हृदय की दुर्बलता, धड़कन, हृदयशूल, हृदयस्थघाव, हृदयछिद्र आदि रोग नहीं होते यदि हैं तो शमित हो जाते हैं।

पौषशुक्लपक्ष

शाके १९४४; संवत् २०७९; फसली १४३०; दिनाङ्क, २४:११:२०२२ ई. ततो दिनाङ्क ०६:०१:२०२३ ईस्वी या.। पूर्व राहु कालः।
वक्रीपूर्वोदितो मंगलः बुधः, मार्गी पूर्वोदितो गुरूः शनिः, मार्गी पश्चिमोदितोः शुक्रः,हेमन्तर्तुः,याम्यगोलः,याम्यायनम्,अयनांश २२:५०:५४।

तिथि वार	तिथ्यन्तः द. प.	तिथ्यन्तः घं. मि.	नक्षत्र	नक्षत्रान्तः द. प.	नक्षत्रान्तः घं. मि.	योग	योगान्तः द. प.	करणान्तः क. द. प.	चन्द्रराश्यन्तः रा. द.प.	चन्द्रराश्यन्तः घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	दिनाङ्काः सौ	दिनाङ्काः अं	
०१ श.	१८:२३	दि.०२:११	पू.षा	४६:०९	रा.०१:१८	वृद्धिः	१३:००	ब. १८:२३	धनु	अहोरात्र	०८:०८:२१:११	२५:४८	०६:५०	०५:१०	०९	२४	दग्ध ति. (१८:२३ उ.),चन्द्रदर्शन मु.३० सौम्यश्रृंगं फलं समर्घ, शिववास दि.०२:११ उ., उत्तरयात्रा पू.षा.,अमृतयोग दि. ०२:११ या.।
०२ र.	१२:३२	दि.११:५१	उ.षा	४१:५९	रा.११:३८	ध्रुवः	०५:१३	कौ. १२:३२	ध.००:०६	प्रा.०६:०५२	०८:०९:२१:०९	२५:४९	०६:५०	०५:१०	१०	२५	दग्ध ति. (१२:३२ या.),व्याघातयोगमानं ५२०४,क्रिसमस डे (बड़ादिन), शिववास दि.११:५१ या.,पश्चिमांविनायात्रा श्रवणे,सिद्धियोग दि.११:५१ उ.।
०३ चं.	०६:३९	दि.०९:३०	श्रव.	३७:५२	रा.०९:५९	हर्षण	४९:२४	ग. ०६:३९	मकर	अहोरात्र	०८:१०:२१:०७	२५:५०	०६:५०	०५:१०	११	२६	श्रीगणेश ४ व्रतं,पञ्चकारम्भः रा.०९:५९ उ., पूर्वाविनायात्रा श्रवणे,सर्वार्थसिद्धियोग दि.०९:५९ या.,भद्रारंभ:३३:४४ उपरि।
०४ मं.	००:४९	प्रा.०७:१०	धनि.	३३:५४	रा.१०:२४	वज्रः	४१:४५	वि. ००:४९	म.०५:५३	दि.०६:११	०८:११:२१:०५	२५:५१	०६:५०	०५:१०	१२	२७	पंचमीमानं ५४:३१,शिववास, पश्चिमयात्रा धनि.,भद्रांत:००:४९ यावत्।
०६ बु.	५०:२१	रा.०२:५८	शत.	३०:१४	सं.०६:५८	सिद्धिः	३४:२७	कौ. २२:०१	कुम्भ	अहोरात्र	०८:१२:२१:०३	२५:५२	०६:५०	०५:१०	१३	२८	शिववास, पश्चिमयात्रा पू.भा.,अमृतयोग रा.०२:५८ या.।
०७ गु.	४६:०६	रा.०१:१६	पू.भा	२७:३१	सं.०५:५०	व्यति.	२७:४४	ग. १८:१४	कु.१३:११	दि.१२:०६	०८:१३:३१:०१	२५:५२	०६:५०	०५:१०	१४	२९	गुरूगोविन्दसिंहजयन्ती,✷पूर्वाषाढ़ेरविः२९:३२, पश्चिमयात्रा पू.भा.,अमृतयोग रा.११:१६ उ., भद्रारंभ:४६:०६ उपरि ।
०८ शु.	४२:४९	रा.११:५७	उ.भा.	२५:३२	सं.०५:०२	वरी.	२१:३८	वि. १४:२८	मीन	अहोरात्र	०८:१४:३३:०८	२५:५३	०६:४९	०५:११	१५	३०	उत्तरयात्रा रेवत्यां,अमृतयोग रा.११:५७ उ.,भद्रांत:१४:२८ यावत्।
०९ श.	४०:१७	रा.१०:५६	रेवती	२४:२३	दि.०४:३४	परिघः	१६:०९	बा. ११:३३	मी.२४:२३	दि.०४:३४	०८:१५:४५:१५	२५:५४	०६:४९	०५:११	१६	३१	पञ्चकान्तः दि.०४:३४ या.,शिववास, पश्चिमोत्तरयात्रा रेवत्यां ततो पूर्वाविनायात्रा नवम्यां,सिद्धियोग रा.१०:५६ या.।
१० र.	३९:०३	रा.१०:२६	अश्वि	२४:२२	दि.०४:३४	शिवः	११:५०	तै. ०६:४०	मेष	अहोरात्र	०८:१६:५७:२२	२५:५६	०६:४९	०५:११	१७	१	जनवरी ०१ मासारम्भ:२०२३ ई.,विश्वकर्मार्चा,कर्मदशमी,दशतारकान्तोः दि.०४:३४ या.,अमृतयोग रा.१०:२६ या.,ततो मृत्युयोग रा.१०:२६ उ.,सर्वार्थसिद्धियोग दि.०४:३४ या.।
११ चं.	३९:०५	रा.१०:२६	भरणी	२५:३२	सं.०५:०१	सिद्धः	०८:२१	व. ०९:०४	मे.४१:०९	रा.०१:१६	०८:१८:०९:२९	२५:५८	०६:४८	०५:१२	१८	२	पुत्रदा ११ व्रतं सर्वेषां,धर्मसावर्णिमन्वादिः,सिद्धियोग रा.१०:२६ या.,ततो मृत्युयोग रा.१०:२६ उ., भद्रारंभ:०९:०४ उपरि ततो भद्रांत:३९:०५ यावत्।
१२ मं.	३९:५३	रा.१०:४५	कृति.	२८:०१	सं.०६:००	साध्य	०५:५१	ब. ०९:२१	वृष	अहोरात्र	०८:१९:२१:३६	२६:००	०६:४८	०५:१२	१९	३	गोमयेन पारणं,नारायण द्वादशी,शिववास, पूर्वदक्षिणयात्रा रोहिण्यां,अमृतयोग रा.१०:४५, ततो सिद्धियोग रा.१०:४५ उ.।
१३ बु.	४३:०५	रा.१२:०२	रोहि.	३१:४४	रा.०७:३०	शुभः	०४:२३	कौ. ११:२९	वृष	अहोरात्र	०८:२०:३३:४३	२६:०२	०६:४८	०५:१२	२०	४	प्रदोष १३ व्रतं,शिववास, मृत्युयोग रा.१२:०२ या.,सर्वार्थसिद्धियोग रा.०७:३० या.।
१४ गु.	४६:५३	रा.०१:३२	मृग.	३६:३२	रा.०९:२४	शुक्लः	०३:४६	ग. १५:०१	वृ.०४:०८	दि.०८:२६	०८:२१:४५:५०	२६:०४	०६:४७	०५:१३	२१	५	प्रदोष १४ व्रतं,मृत्युयोग रा.०१:३२ या.,ततो सिद्धियोग रा.०१:३२ उ.,भद्रारंभ:४६:५३ उपरि ।
१५ शु.	५१:३२	रा.०३:२४	आर्द्रा	४२:१८	रा.११:४२	ब्रह्मः	०४:०२	वि. १८:५३	मिथुन	अहोरात्र	०८:२२:३७:२७	२६:०४	०६:४७	०५:१३	२२	६	पौषीस्नानदानाव्रतादौ पूर्णिमा,कौशिकीस्नानं,माघस्नानारम्भः,दक्षिणयात्रा पुनर्वसौ,सिद्धियोग रा.०३:२४ उ.,भद्रांत:१९:१२ यावत्।

मिश्रमान कालिक दैनिक स्पष्टग्रहाः

ति	मंगलःवक्री	बुधःवक्री	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं
१	०१:१३:१८:२२	०८:२०:३२:०५	११:०६:५२:५१	०८:२५:१४:००	०९:२४:३१:४१	०६:११:३८:५५	४२:५३
२	०१:१३:१२:३८	०८:२०:२५:०१	११:०६:५८:४१	०८:२६:३०:३३	०९:२४:३७:५४	०६:११:३५:४४	४२:५३
३	०१:१३:०६:५४	०८:२०:१७:५७	११:०७:०४:३१	०८:२७:४७:०६	०९:२४:४४:०७	०६:११:३२:३३	४२:५३
४	०१:१३:०१:१७	०८:२०:१०:५३	११:०७:१०:२१	०८:२९:०३:३	०९:२४:५०:११	०६:११:२१:२२	४२:५४
६	०१:१२:५५:२५	०८:२०:०३:४९	११:०७:१६:११	०९:००:२०:१२	०९:२४:५६:३१	०६:११:२६:११	४२:५५
७	०१:१२:४१:४०	०८:१९:५६:४५	११:०७:२२:०१	०९:०१:३६:४५	०९:२५:०२:४३	०६:१८:२३:०१	४२:५६
८	०१:१२:३२:१४	०८:१९:१२:११	११:०७:२९:२०	०९:०२:५२:०८	०९:२५:०९:१२	०६:११:११:४०	४२:५६
९	०१:१२:२२:४८	०८:१८:२७:३७	११:०७:३६:३९	०९:०४:०७:३१	०९:२५:१५:४१	०६:११:१६:३९	४२:५७
१०	०१:१२:१३:२१	०८:१७:४३:०३	११:०७:४४:५८	०९:०५:२२:५४	०९:२५:२२:१०	०६:११:१३:२८	४२:५८
११	०१:१२:०३:५४	०८:१६:५८:२९	११:०७:५२:१७	०९:०६:३८:१७	०९:२५:२८:३९	०६:११:१०:१७	४२:५९
१२	०१:११:५४:२७	०८:१६:१३:५५	११:०७:५९:३७	०९:०७:५३:४०	०९:२५:३८:०८	०६:११:०७:०६	४३:००
१३	०१:११:४५:००	०८:१५:२९:२१	११:०८:०६:५७	०९:०९:०९:३७	०९:२५:४१:३७	०६:११:०३:५६	४३:०१
१४	मा.१:११:३५:३३	०८:१४:४४:४६	११:०८:१३:१७	०९:१०:२४:२६	०९:२५:४८:०६	०६:१८:००:४६	४३:०२
१५	०१:११:३७:५८	०८:१४:०६:२८	११:०८:२१:४१	०९:११:३९:५३	०९:२५:५४:३९	०६:१७:५७:३५	४३:०२

दैनिक लग्नसारणी चक्रम्

मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिं.अं.	क.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
१४:४३	१६:३९	१८:५२	२१:१०	२३:२६	०१:४१	०३:५८	०६:१५	०८:२०	१०:०६	११:३७	१३:०६
१४:३८	१६:३४	१८:४७	२१:०५	२३:२१	०१:३६	०३:५३	०६:१०	०८:१५	१०:०१	११:३२	१३:०१
१४:३४	१६:३०	१८:४३	२१:०१	२३:१७	०१:३२	०३:४९	०६:०६	०८:११	०९:५७	११:२८	१२:५७
१४:२९	१६:२५	१८:३८	२०:५६	२३:१२	०१:२७	०३:४४	०६:०१	०८:०६	०९:५२	११:२३	१२:५२
१४:२४	१६:२१	१८:३४	२०:५२	२३:०८	०१:२३	०३:४०	०५:५७	०८:०२	०९:४८	११:१९	१२:४८
१४:२०	१६:१६	१८:२९	२०:४७	२३:०३	०१:१८	०३:३५	०५:५२	०७:५७	०९:४३	११:१४	१२:४३
१४:१६	१६:१२	१८:२५	२०:४३	२२:५९	०१:१४	०३:३१	०५:४८	०७:५३	०९:३९	११:१०	१२:३९
१४:१२	१६:०८	१८:२१	२०:३९	२२:५५	०१:१०	०३:२७	०५:४४	०७:४९	०९:३५	११:०६	१२:३५
१४:०७	१६:०३	१८:१६	२०:३४	२२:५०	०१:०५	०३:२२	०५:३९	०७:४४	०९:३०	११:०१	१२:३०
१४:०३	१५:५९	१८:१२	२०:३०	२२:४६	०१:०१	०३:१८	०५:३५	०७:४०	०९:२६	१०:५७	१२:२६
१३:५८	१५:५४	१८:०७	२०:२५	२२:४१	००:५६	०३:१३	०५:३०	०७३५	०९:२१	१०:५२	१२:२१
१३:५४	१५:५०	१८:०३	२०:२१	२२:३७	००:५२	०३:०९	०५:२६	०७:३१	०९:१७	१०:४८	१२:१७
१३:४९	१५:४५	१७:५८	२०:१६	२२:३२	००:४७	०३:०४	०५:२१	०७:२६	०९:१२	१०:४३	१२:१२
१३:४५	१५:४१	१७:५४	२०:१२	२२:२८	००:४३	०३:००	०५:१७	०७:२२	०९:०८	१०:३९	१२:०८

दैनिक अधप्रहरा चक्रम्

वार	दिन का अर्धप्रहरा	रात का अर्धप्रहरा
श.	दि६:५०-८:७।दि.१:१५-२:३२।दि३:४९-५:१०।	रा.५:१०-६:५२।रा.१:४०-३:२२।रा.५:०४-६:५०।
र.	दि. १०:४१-१:१५।	रा.१०:१६-११:५८ रा.१:४०-३:२२।
चं.	दि. ०८:०७-०९:२४। दि.२:३२-३:४९।	रा.१०:१६-११:५८। रा.३:२२-५:०४।
मं.	दि. ०८:०७-०९:२४। दि.१:१५-२:३२।	रा.०६:५२-८:३४।
बु.	दि. ०९:२४-१०:४१।दि.११:५८-१:१५।	रा. ११:५८-०१:४०।रा.०३:२२-५:०४।
गु.	दि. ०२:३२-०५:१० ।	रा.११:५८-०१:४०।रा.०५:०४-०६:५०।
शु.	दि. ०९:२३-११:५७ ।	रा.०८:३५-१०:१७।
श.	दि.६:४१-८:६। दि.१:१४-२:३१।दि.३:४८-५:११।	रा.५:११-६:५३।रा.१:४३-३:२३।रा.५:०५-६:४९।
र.	दि.१०:४०-०१:१४।	रा.१०:१७-११:५९।रा.१:४१-३:२३।
चं.	दि.०८:०६-९:२४। दि.२:३६-३.५४।	रा.१०:१८-१२:००। रा.३:२४-५:०६ ।
मं.	दि.०८:०६-९:२४। दि.१:१८-२.३६।	रा.०६:५४-०८:३६ ।
बु.	दि.०९:२४-१०:४२। दि.१२:००-१:१८।	रा.१०:००-१:४२ रा.३:२४-५:०६।
गु.	दि. ०२:३५-०५:१३।	रा.११:५७-०१:३८।रा.५:००-०६:४७।
शु.	दि. ०९:२३-११:५९।	रा.०८:३५-१०:१६।

तिथिः १ शनि सूर्योदये

१० श, ल ९, ८
११, सू चं बु, ७ के
१२ गु, शु, ६
रा १, ३, ५
२ मं, ४

➔कार्य न करें।यथा–न कुर्योन्मङ्गलं विष्ट्यां जीवितार्थीकदाचन।कुर्वन्नज्ञस्तदा क्षिप्रं तत्सर्वं नाशतां व्रजेत्।।यह विधि वाक्य है।अबप्रश्न उठता है कि एक मास में आठ दिन भद्रा का काल होता है क्या सम्पूर्ण भद्रा काल शुभ कार्यों में निषिद्ध है अथवा भद्रा का कुछ भाग।यदि प्राचीन मान्य आचार्यों को भद्रा का सम्पूर्ण काल त्यागना होता तो अपवाद वचन ही न कहते अन्यथा परिहार वचन,अपवाद वाक्यों का कथन ही व्यर्थ हो जायेगा।भद्रा के अनेक परिहार (अपवाद) वचन ज्योतिष ग्रन्थों मे कहे गये हैं।विधि सूत्रों की अपेक्षा परिहार वचनों को अधिक माना जाता है।भद्रा के विषय में एक अन्तरङ्ग कथन भी है जिसका अर्थ है भद्रा में दो कार्य श्रावणी फाल्गुनी (होलिकादाह) नहीं करना चाहिए।क्योंकि भद्रा की श्रावणी राजा को नष्ट करती है तथा भद्रा की फाल्गुनी अग्निभय।यथा–भद्रायां द्वे न कर्त्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा।श्रावणी नृपतिंहन्ति ग्रामं दहति फाल्गुनी।इस अन्तरङ्ग वाक्य की अपेक्षा अपवाद सूत्र अधिक बली होगा जैसा कि कहा भी गया है।अन्तरङ्गादप्यपवादो बलीयान्।अतएव अब भद्रा के अपवाद वचन है। ① भद्रा दो प्रकार की होती है सर्पिणी तथा वृश्चिकी।शुक्लपक्ष की भद्रा सर्पिणी तथा कृष्णपक्ष की वृश्चिकी कहीं गयी है।सर्पिणी का मुख भाग त्याज्य है तथा वृश्चिकी का पुच्छ भाग।यह मुख अथवा पुच्छ ५,५ घटी होती है।अतः भद्रा के इन भागोंका त्याग कर शेष में सभी शुभ कार्य किये जा सकते है।② ब्रह्मयामल तथा पीयूषधारा में कहा गया है कि यदि दिन में भद्रा का आरम्भ हो रहा हो और वह रात्रि में भी गमन कर रही हो अथवा रात्रि में भद्रा का आरम्भ हुआ हो और वही दिन में भी चल रही हो तो दोनों स्थितियों में भद्रा भद्रदायिनी अर्थात् कल्याण कारिणी बन जाती है।दिनभद्रा यदा रात्रौ रात्रि भद्रा यदा दिवा।न तत्र भद्रा दोषः स्यात्सा भद्रा भद्रदायिनी।।③ आचार्य बृहस्पति का कथन है कि क्रम से प्राप्त भद्रा भी समस्त मांगलिक कार्यों में त्याग करना चाहिए जबकि अक्रम से प्राप्त भद्रा का समस्त शुभ कार्यों में ग्रहण करना चाहिए कारण यह शुभदा होती है।विष्टिस्तु सर्वयात्याज्या क्रमेणैवागता तु या।अक्रमेणागता भद्रा सर्वकार्येषु शोभना।। ④ पृथक् पृथक् राशियों में रहने पर भद्रा क्रमशः स्वर्ग,पाताल तथा मृत्युलोक में रहती है ।

तिथिः ८ शुक्र सूर्योदये

श १० शु, ल ९, ८
११, सू, बु, ७ के
चं १२ गु, ६
रा १, ३, ५
२ मं, ४

सन्तानसम्बन्धिप्रश्न देखें वैदिक ज्योतिष पृष्ठ २५४:–प्रश्न दिन संख्या को ३ से गुणा कर उसमें शुक्ल प्रतिपद से तिथिसंख्या को जोड़े योगफल में २ का भाग दें १ शेष में सन्तान प्राप्ति,० शेष मे सन्तान अभाव।यदि प्रश्न लग्न से पाँचवे भाव पर पापग्रह की युति या दृष्टि हो विलम्ब से सन्तान प्राप्त होता है।प्रश्न से ८वें सिंह,मकर,कुम्भ राशि का सूर्य और शनि हो तो सन्तानाभाव,यदि अष्टमेश अष्टम भाव में हो तो भी सन्तानाभाव एवं प्रश्न लग्न से आठवें बुध हो तो सन्तान अभाव होता है।यदि आठवें में शुक्र और बुध हो तो सन्तान की क्षति एवं आठवें भाव में मंगल हो तो गर्भपात होता है।सन्तानबाधा का ज्ञान एवं उपायः–प्रश्न की तिथि संख्या को ४ से गुणाकर १ जोड़े तदनन्तर उस दिन की वार तथा योग संख्या को जोड़ें पुनः२ से भाग देकर लब्धि संख्या को ३से गुणाकर ४ से भाग दें,१ शेष में पार्थिव पूजन सहित रुद्राभिषेक करें,२ शेष से पूर्वजन्म के दोष से सन्तान प्राप्ति में बाधा,श्रीहरिवंशमहापुराणश्रवण,महारुद्राभिषेक एवं सन्तानगोपालमन्त्र जप द्वारा सन्तान लाभ।३ शेष में सन्तान होगा किन्तु सन्तान सुख नहीं होगा,इसकी शान्ति के लिए दीन (गरीब) की कन्या का गुप्तधन दे कर विवाह करावें।० शेष में सन्तान की शीघ्र प्राप्ति।**गर्भस्थ शिशु का लिंग ज्ञानः**–१.प्रश्न दिन संख्या शुक्ल प्रतिपदा से उस दिन की तिथि संख्या,प्रहरसंख्या,नक्षत्र संख्या को जोड़ें,योगफल में ७ का भाग दें यदि शेष १,३,५,७ रहे तो पुत्र,२,४,६ हो तो पुत्री।२.गर्भिणी नाम अक्षर,प्रश्न की तिथि के योग में १५ जोड़े योगफल में ९ भाग दें,यदि शेष १,३,५,७,९ हो तो पुत्र,२,४,६,८ रहे तो कन्या समझें।३. प्रश्न तिथि वार नक्षत्र तथा गर्भिणी के नामाक्षर को जोड़कर ३ का भाग दें शेष १,३,५ बचे तो पुत्र,२,४,६ बचे तो कन्या,० शेष बचे तो गर्भ पतन।**दोषबाधा का ज्ञान एवं उपायः**–१.प्रश्नकालिक तिथि वार नक्षत्र लग्न प्रहर संख्या को जोड़कर ८ से भाग दें शेष ३,७ में देवबाधा,२,८ में पितृबाधा,४,६ में भूतप्रेतबाधा,१,५ में ग्रहजन्य बाधा होती है।२.प्रश्न काल के वार नक्षत्र तिथि और दिशा की संख्या को जोड़कर उसमें ८ जोड़ें पुनः ४ का गुणाकरें गुणनफल में ७ का भाग दें यदि १ शेष में कुल दोष,२ में ग्राम्यदोष,३ में वन्य दोष,४ में राजकुलजन्य दोष,५ में शत्रुदोष,७ में पक्ति जन्य दोष एव ० शेष में आकाशजन्य दोष होता है।इसकी शान्ति क्रमशः पूजन हवन से,ग्राम्य के चतुष्कोण में हवन से (वास्तु शान्ति से),अतिथि पूजन से,तीर्थक्षेत्र पूजन कराने से,यथाशक्ति दान एव नियमपूर्वक रहने से,गायत्री जप से तथा आकाशजन्य दोष आकाशदीपदान से दूर होता है।**कार्यसिद्धि असिद्धि प्रश्नविचारः**–१.प्रश्नकर्ता से १०८ पर्यन्त संख्या में से कोई अंक लिखवायें या जो समझे बुलवायें उसमें १२ का भाग दें यदि शेष १,७,११ में कार्य विलम्ब से,४,५,८,१० में कार्य की क्षति,२,३,६,११एवं ० से कार्य की शीघ्र सिद्धि होती है।२.प्रश्नकाल की तिथि वार नक्षत्र की संख्या के योग को ३ से गुणा करें उसमें ६ जोड़ें योगफल में ९ का भाग दें,शेष १ में पक्ष में,२ से मास में,३ से २ मास में,४ से ६ मास में,५ से दिन में,६ मे रात में,७ से प्रहर में,८ से घटी में,९ से शीघ्र कार्य की सिद्धि होती है।**प्रवासीप्रश्न विचारः**–१.प्रश्नकर्ता से किसी फल का नाम लिवाये,उस संख्या को ६ से गुणा कर १ जोड़ें योगफल में ७ का भाग दें,शेष १ से प्रवासी मार्ग में,२ से घर के समीप,३ से घर पर,४ से लाभ युक्त,५ से रोगी,६ से पीड़ित एवं ७ या ० से आने की तैयारी में।२.प्रश्नलग्न में गुरु,२ या ३ में शुक्र हो तो प्रवासी विलम्ब से,१,४ में शुक्र हो तो शीघ्र वापस,६,७ में कोई ग्रह हो,५,९ में बुध या शुक्र हो तो शीघ्र वापसी।**रोग आरोग्य एवं मृत्यु का ज्ञानः**–१.रोगी के नामाक्षर को २ गुणा करें और मात्रा को ४ से गुणा कर योग करें तदन्तर ७ का भाग दें।० शेष से मृत्यु,अन्य शेष से जीवित समझें।२.प्रश्न लग्नेश बली एवं अष्टमेश निर्बल हो तो रोगी शीघ्र स्वस्थ इसके विपरीत में रोगी की मृत्यु होती है ।

माघकृष्णपक्षः

शाके १९४४; संवत् २०७९; फसली १४३०; दिनाङ्क ०७:०१:२०२३ ई. ततो दिनाङ्क २१:०१:२०२३ ईस्वी या.। पूर्व राहु कालः ।
मार्गीपूर्वोदितो मंगलः गुरू शनिः,मार्गीपूर्वादितो बुधः,मार्गीपश्चिमोदितोः शुक्रः,हेमन्तर्तुः ततो ति.८शिशिरर्तुः,याम्यगोलः,याम्यायनम् ततो ति.८ सौम्यायनं,अयनांश २२:५०:५४।

तिथि वार	तिथ्यन्तः द. प.	तिथ्यन्तः घं. मि.	नक्षत्र	नक्षत्रान्तः द. प.	नक्षत्रान्तः घं. मि.	योग	योगान्तः द. प.	करण	करणान्तः द. प.	चन्द्रराश्यन्तः रा. द. प.	चन्द्रराश्यन्तः घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू. उ. घं.मि.	सू. अ. घं.मि.	दिनाङ्काः सौ	अं
०१ श	५६:५०	रा.शे.५:३१	पुन.	४८:३७	रा.०२:१४	ऐन्द्रः	०४:५४	बा.	२४:११	मि.३२:०३	रा.०७:३५	०८:२३:२९:४४	२६:०६	०६:४७	०५:१३	२२	७
०२ र	६०:००	अहोरात्र	पुष्य	५५:१०	रा.०४:५१	वैधृतिः	०६:०७	तै.	२४:१५	कर्क	अहोरात्र	०८:२४:२२:००	२६:०६	०६:४७	०५:१३	२३	८
०२ च	०२:१८	दि.०७:४२	आश्ले	६०:००	अहोरात्र	विष्क	०७:२९	ग.	०२:१८	कर्क	अहोरात्र	०८:२५:१४:१६	२६:०८	०६:४७	०५:१३	२४	९
०३ मं	०७:३०	दि.०९:४६	आश्ले	०१:२३	दि.०७:१९	प्रीतिः	०८:३४	वि.	०७:३०	क.०१:२३	दि.०७:१९	०८:२६:०६:३२	२६:०८	०६:४६	०५:१४	२५	१०
०४ बु	१२:०४	दि.११:३६	मघा	०७:१६	दि.०९:४०	आयु.	०९:०३	बा.	१२:०४	सिंह	अहोरात्र	०८:२६:५८:४८	२६:१०	०६:४६	०५:१४	२६	११
०५ गु	१५:३९	दि.०१:०२	पू.फा.	११:०९	दि.११:३८	सौभा.	०९:०९	तै.	१५:३९	सिं.२८:०६	सं.०६:००	०८:२७:५१:०४	२६:१०	०६:४६	०५:१४	२७	१२
०६ शु	१८:०८	दि.०२:०१	उ.फा.	१५:५८	दि.०१:०१	शोभ.	०८:११	व.	१८:०८	कन्या	अहोरात्र	०८:२८:५२:२४	२६:१०	०६:४६	०५:१४	२८	१३
०७ श	१९:१७	दि.०२:२९	हस्त	१८:२९	दि.०२:१०	अतिग	०६:१७	ब.	१९:१७	क.४१:३९	रा.०२:३८	०८:२९:५३:४४	२६:१२	०६:४६	०५:१४	२९	१४
०८ र	१९:०८	दि.०२:२४	चित्र	२०:४८	दि.०३:०४	सुकर्म	०३:२३	कौ.	१९:०८	तुला	अहोरात्र	०९:००:५५:०४	२६:१४	०६:४५	०५:१५	०१	१५
०९ च	१७:४४	दि.०१:५१	स्वा.	१९:५३	दि.०२:४२	शूलः	५४:३९	ग.	१७:४४	तुला	अहोरात्र	०९:०१:५६:२४	२६:१६	०६:४५	०५:१५	०२	१६
१० मं	१५:११	दि.१२:४८	विशा.	१८:४८	दि.०२:१५	गण्डः	४८:५१	वि.	१५:११	तु.०४:०५	दि.०८:२२	०९:०२:५७:४३	२६:१८	०६:४४	०५:१६	०३	१७
११ बु	११:३८	दि.११:२३	अनु.	१६:२२	दि.०१:१७	वृद्धिः	४२:३८	बा.	११:३८	वृश्चिक	अहोरात्र	०९:०३:५९:०२	२६:२०	०६:४४	०५:१६	०४	१८
१२ गु	०७:१५	दि.०९:३८	ज्येष्ठा	१४:०५	दि.१२:२२	ध्रुवः	३५:४१	तै.	०७:१५	वृ.१४:०५	दि.१२:२२	०९:०५:००:२१	२६:२२	०६:४४	०५:१६	०५	१९
१३ शु	०२:३०	दि.०७:४३	मूल	१०:३५	दि.१०:५७	व्या.	२८:१४	व.	०२:३०	धनु	अहोरात्र	०९:०६:०१:३६	२६:२४	०६:४३	०५:१७	०६	२०
३० श	५०:४८	रा.०३:०२	पू.षा	०६:४३	दि.०९:२४	हर्षण	२०:३०	च.	२२:५८	ध.२०:४१	दि.०२:५१	०९:०७:०२:५१	२६:२६	०६:४३	०५:१७	०७	२१

- ७ — दग्ध ति. (५६:५० उ.),माघेकमलास्नान पुण्यप्रदमं, शिववास, पश्चिमयात्रा पुन. ततो पूर्वविनायात्रा पुष्ये, अमृतयोग रा. शे.०५:३१ या.।
- ८ — दग्ध ति. (अहोरात्र), पश्चिमविनायात्रा पुष्ये, सर्वार्थसिद्धियोग रा.०४:५१या.।
- ९ — दग्ध ति. (०२:१८ या.),मृत्युयोग दि.०७:४२ या., भद्रारंभ:३४:५४ उपरि।
- १० — श्रीभालचन्द्र ४ व्रतं,गणेशावतारः,श्रीगणेशपूजनं,शिववास दि.०९:४६ उ.,सिद्धियोग दि.०९:४६ या.,भद्रांत:०७:३० यावत्।
- ११ — *उत्तराषाढ़ेरविः३३:५९, शिववास, पूर्वयात्रा पू.फा. ।
- १२ — शिववास दि. ०१:०२ या., पूर्वोत्तरयात्रा पू.फा., सिद्धियोग दि.०१:०२ या.।
- १३ — सिद्धियोग दि.०२:०१ ततो मृत्युयोग दि.०२:०१ उ., भद्रारंभ:१८:०८ उपरि ततो भद्रांत: ४८:४२ यावत्।
- १४ — श्रीरामानन्दाचार्यजयन्ती,मासान्तः,मकरेरविः ४५:२४,मु.१५,शिववास दि.०२:२९ उ.।
- १५ — धृतियोगमानं ५६:०६, अपूपाष्टका,सौम्यायनसंक्रान्तिपुण्यकालं दि.१२ यावत् दिने,तिलासंक्रान्ति,माघस्नानारम्भः,प्रयागे कल्पवासारम्भः,शुद्धारंभ:शिववास दि.०२:२४ या.।
- १६ — अन्वष्टकाश्राद्धं,मासादिः,अमृतयोग दि.०१:५१ उ.,भद्रारंभ:४६:२८ उपरि ।
- १७ — शिववास दि.१२:४८ उ.,मृत्युयोग दि.१२:४८ उ.,भद्रांत:१५:११ यावत्।
- १८ — दग्ध ति.(११:३८ उ.),षटतिला ११ व्रतं सर्वेषां,विवाहोचैकादश्यां,शिववास,पश्चिमयात्रा,अमृतयोग दि.११:२३ या.,ततो सिद्धियोग दि.११:२३ उ.,सर्वार्थसिद्धियोग दि.०१:१७ या.।
- १९ — दग्ध ति.(०७:१५ या.),गोदुग्धेन पारणं,प्रदोष १३ व्रतं, विवाह मूले,पश्चिमोत्तरयात्रा वृश्चिके चन्द्रः ततो पूर्वोत्तरयात्रा,शिववास दि.०९:३८ या.,अमृतयोग दि.०९:३८ या.।
- २० — चतुर्दशीमानं ५४:०७,प्रदोष १४ व्रत,नक्तव्रतं,नरकनिवारण १४ व्रतं, पूर्वोत्तरयात्रा,अमृतयोग दि.०७:४३ या., भद्रारंभ:०२:३० उपरि ततो भद्रांत:२९:३४ यावत्।
- २१ — माघी ३०,मौनीअमावस्या,प्रयागे गंगायमुना संगमे स्नानं,शिववास, अमृतयोग रा.०३:०२ उ.।

मिश्रमान कालिक दैनिक स्पष्टग्रहाः

ति	मंगलः	बुधःवक्री	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमान
१	०१:११:४०:२३	०८:१३:२८:१०	११:०८:३०:०५	०९:१२:५५:२०	०९:२६:०१:१२	०६:१७:५४:२४	४३:०३
२	०१:११:४२:४७	०८:१२:४९:५१	११:०८:३८:२९	०९:१४:१०:४७	०९:२६:०७:४५	०६:१७:५१:१३	४३:०३
२	०१:११:४५:११	०८:१२:११:३२	११:०८:४६:५३	०९:१५:२६:१४	०९:२६:१४:१८	०६:१७:४८:०२	४३:०४
३	०१:११:४७:३५	०८:११:३३:१३	११:०८:५५:१७	०९:१६:४१:४२	०९:२६:२०:५१	०६:१७:४४:५१	४३:०४
४	०१:११:४९:५९	०८:१०:५४:५४	११:०९:०३:४१	०९:१७:५७:१०	०९:२६:२७:२४	०६:१७:४१:४१	४३:०५
५	०१:११:५२:२३	मा.०८:१०:१६:३५	११:०९:१२:०५	०९:१९:१२:३८	०९:२६:३३:५७	०६:१७:३८:३१	४३:०५
६	०१:११:५६:०९	०८:१०:१८:३१	११:०९:२१:१६	०९:२०:२७:३८	०९:२६:४०:२७	०६:१७:३५:२०	४३:०५
७	०१:११:५९:५४	०८:१०:२०:२७	११:०९:३०:०७	०९:२१:४२:३८	०९:२६:४६:५७	०६:१७:३२:०९	४३:०६
८	०१:१२:०३:३९	०८:१०:२२:२३	११:०९:३९:०८	०९:२२:५७:३८	०९:२६:५३:२७	०६:१७:२८:५८	४३:०७
९	०१:१२:०७:२४	०८:१०:२४:१९	११:०९:४८:०९	०९:२४:१२:३८	०९:२६:५९:५७	०६:१७:२५:४७	४३:०८
१०	०१:१२:११:०९	०८:१०:२६:१४	११:०९:५७:१०	०९:२५:२७:३८	०९:२७:०६:२७	०६:१७:२२:३६	४३:०९
११	०१:१२:१४:५४	०८:१०:२८:०९	११:१०:०६:११	०९:२६:४२:३८	०९:२७:१२:५६	०६:१७:१९:२५	४३:१०
१२	०१:१२:१८:३९	०८:१०:३०:०४	११:१०:१५:१३	०९:२७:५७:३८	०९:२७:१९:२५	०६:१७:१६:१५	४३:११
१३	०१:१२:२७:१०	०८:११:१२:४२	११:१०:२५:४३	०९:२९:१२:१७	०९:२७:२६:३३	०६:१७:१३:०४	४३:१२
३०	०१:१२:३५:३१	०८:११:५५:२२	११:१०:३६:१३	१०:००:२६:५६	०९:२७:३३:४१	०६:१७:०१:५३	४३:१३

दैनिक लग्न सारणी चक्रम्

वार	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिं.अं.	क.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
श.	१३:४०	१५:३६	१७:४१	२०:०७	२२:२३	००:३८	०२:५५	०५:१२	०७:१७	०९:०३	१०:३४	१२:०३
र.	१३:३६	१५:३२	१७:४५	२०:०३	२२:१९	००:३४	०२:५१	०५:०८	०७:१३	०८:५९	१०:३०	११:५९
चं.	१३:३२	१५:२८	१७:४१	१९:५९	२२:१५	००:३०	०२:४७	०५:०४	०७:०९	०८:५५	१०:२६	११:५५
मं.	१३:२७	१५:२३	१७:३६	१९:५४	२२:१०	००:२५	०२:४२	०४:५९	०७:०४	०८:५०	१०:२१	११:५०
बु.	१३:२३	१५:१९	१७:३२	१९:५०	२२:०६	००:२१	०२:३८	०४:५५	०७:०१	०८:४६	१०:१७	११:४६
गु.	१३:१९	१५:१५	१७:२८	१९:४६	२२:०२	००:१७	०२:३४	०४:५१	०६:५८	०८:४२	१०:१३	११:४२
शु.	१३:१४	१५:१०	१७:२३	१९:४१	२१:५७	००:१२	०२:२९	०४:४६	०६:५५	०८:३७	१०:०८	११:३७
श.	१३:१०	१५:०६	१७:१९	१९:३७	२१:५३	००:०८	०२:२५	०४:४२	०६:५१	०८:३३	१०:०४	११:३३
र.	१३:०५	१५:०१	१७:१४	१९:३२	२१:४८	००:०३	०२:२०	०४:३७	०६:४८	०८:२८	०९:५९	११:२८
चं.	१३:०१	१४:५७	१७:१०	१९:२८	२१:४४	२३:५९	०२:१६	०४:३३	०६:४३	०८:२४	०९:५५	११:२४
मं.	१२:५७	१४:५३	१७:०६	१९:२४	२१:४०	२३:५५	०२:१२	०४:२९	०६:३८	०८:२०	०९:५१	११:२०
बु.	१२:५३	१४:४९	१७:०२	१९:२०	२१:३६	२३:५१	०२:०८	०४:२५	०६:३३	०८:१६	०९:४७	११:१६
गु.	१२:४९	१४:४५	१६:५८	१९:१६	२१:३२	२३:४७	०२:०४	०४:२१	०६:२८	०८:१२	०९:४३	११:१२
शु.	१२:४४	१४:४०	१६:५३	१९:११	२१:२७	२३:४२	०१:५९	०४:१६	०६:२३	०८:०७	०९:३८	११:०७
श.	१२:४०	१४:३६	१६:४९	१९:०७	२१:२३	२३:३८	०१:५५	०४:१२	०६:१८	०८:०३	०९:३४	११:०३

दैनिक अर्धप्रहरा चक्रम्

वार	दिन का अर्धप्रहरा	रात का अर्धप्रहरा
श.	दि. ६:४७-८:०५।दि.१:१७-२:३५।दि.३:५३-५:१३।	रा. ५:१३-६:५४। रा.१.३८-३.१९।रा.५:००-५:४७।
र.	दि. १०:४१-०१:१७ ।	रा. १०:१६-११:५७।रा.०१:३८-०३:१९।
चं.	दि. ०८:०५-०९:२३। दि ०२:३५-०३:५३।	रा. १०:१६-११:५७।रा.०३:१९-०५:००।
मं.	दि. ०८:०४-९:२२। दि. ०१:१६-०२:३४ ।	रा. ०६:५५-०८:३६ ।
बु.	दि. ०९:२२-१०:४०।दि.११:५८-०१:१६।	रा. ११:५८-१:३९। रा.०३:२०-०५:४१।
गु.	दि. ०२:३४-०५:१४।	रा. ११.५८-०१:३९ । रा.५:०१-६:४६।
शु.	दि. ०९:२२-११:५८।	रा. ०८:३६-१०:१७।
श.	दि. ६:४६-८:०४ ।दि.१:१६-२:३४।दि.३:५२-५:१४।	रा. ५.१४-०६.५५।रा. १.३९-३.२०।रा.५:०१-६:४६।
र.	दि. १०:३९-०१:१५।	रा. १०.१८-११.५९। रा. ०१.४०-०३:२१।
चं.	दि. ०८:०३-०९:२१। दि.०२:३३-०३:५१।	रा. १०.१८-११.५९ रा. ०३:२१-०५:०२।
मं.	दि. ०८:०३-०९:२२ । दि.०१:११-०२:३८ ।	रा. ०६:५७-०८:३८।
बु.	दि. ०९:२२-१०:४१। दि.१२:००-१०:११।	रा. १२:००-०१:४१ । रा.०३:२२-०५:०३।
गु.	दि. ०२:३८-०५:१६ ।	रा. १२:००-०१:४१। रा.०५:०३-०६:४४।
शु.	दि. ०९:२१-११:५१।	रा. ०८:३७-१०:१७।
श.	दि. ६:४३-८:०२ । दि.१:१८-२:३७।दि.३:५६-५:१७।	रा. ५.१७-६.५७।रा.१.३७-३:१७।रा.४:५७-६:४३ ।

तिथिः १ शनि सूर्योदये

श १० शु ले ८ | ११ सू ९ बु ७ के | १२ गु ६ | रा १ ३ चं ५ | २ मं ४

माघस्नान के लिये ब्रह्मचारी,गृहस्थ,सन्यासी और वनवासी–चारों आश्रमों के,ब्राह्मण,क्षत्रिय,वैश्य और शूद्र चारों वर्णों के,बाल,युवा और वृद्ध–तीनों अवस्थाओं के स्त्री,पुरुष या नपुंसक जो भी हों,सबके लिये सभी समय यथानियम नित्यप्रति माघस्नान करना चाहिए।स्नान की अवधि या तो पौषशुक्ल एकादशी से माघशुक्ल एकादशी तक या पौष शुक्लपूर्णिमा से माघशुक्ल पूर्णिमा तक अथवामकरार्क में (मकरराशि पर सूर्य आयें,उस दिन से कुम्भराशि पर जाने तक) नित्यस्नान करे और उसके अनन्तर यथावकाश मौन रहे।भगवान् का भजन या पूजन करे।यथा सम्भव द्ररिद्रों को भोजन कराये। कम्बल,आसन,रत्न,कपड़े (कुरता, चादर,धोती),उपानह (जूते)। एक या एकाधिक जोड़े को षट्रस भोजन करवाकर "सूर्यो मे प्रीयता देवो विष्णुमूर्तिनिरञ्जनः।" से सूर्य की प्रार्थना करे।इसके बाद उनको अच्छे वस्त्र,सप्तधान्य और तीस मोदक दें।स्वयं निराहार,शाकाहार,फलाहार या दुग्धाहार व्रत अथवा एकभुक्त व्रत करें।इस प्रकार काम,क्रोध,मद,लोभादि त्यागकर भक्ति,श्रद्धा,विनय–नम्रता,स्वार्थत्याग और विश्वास–भाव के साथ स्नान करे तो अश्वमेधादि के समान फल होता है और सब प्रकार के पाप–ताप तथा दुःख दूर हो जाते है।वसन्तपञ्चमी–माघशुक्ल पूर्वविद्धा पञ्चमीकोउत्तम वेदी पर वस्त्र बिछाकर अक्षतों का अष्टदल कमल बनाये।उसके अग्रभाग में गणेशजी और पृष्ठभाग में वसन्त–जौ,गेहूं की बालका पुञ्ज (जो जलपूर्ण कलश में डंठल सहित रखकर बनाया जाता है।स्थापित करके सर्वप्रथम गणेशजी का पूजन करे और पीछे उक्त पुञ्ज में रति और कामदेव का पूजन करें तथा उनपर अबीर आदि के पुष्पोपम छींटे लगाकर वसन्त सदृश बनाये।तत्पश्चात्शुभा रतिः प्रकर्तव्या वसन्तोज्ज्वल भूषण।नृत्यमाना शुभादेवी समस्ताभरणैर्युता।वीणावादनशीला च मदकर्पूरचर्चिता।से रति का और कामदेवस्तु कर्तव्यो रूपेणप्रतिमो भुवि। अष्टबाहुःस कर्तव्यः शङ्खपद्मविभूषणः।कामदेव का ध्यान करके विवध प्रकार के फल,पुष्प और पत्रादि समर्पण करें तो गार्हस्थ्यजीवन सुखमय होकर प्रत्येक कार्य में उत्साह प्राप्त होता है तथा सुख शान्ति प्राप्त होती है।

तिथिः ८ रवौ सूर्योदये

११ ले ९ बु | गु १२ १० सू शु श ८ | रा १ के ७ चं | मं २ ६ | ३ ५

अयमाघमासकृत्यम्–माघस्नानविधिः–तत्र विष्णुः–तुलामकरमेषेषु प्रातःस्नायी सदा भवेत्।हविष्यं ब्रह्मचर्यं च माघस्नानं महाफलम्।।ससंकल्पविधिना अरूणोदये माघस्नानं कर्तव्यम्।चतस्रो घटिकाः प्रातःअरूणोदय उच्यते।यो माघमास्युषसि सूर्यकराभितप्ते स्नानं समाचरति चारुनदीप्रवाहे।उद्धृत्य सप्तपुरूषान् पितृमातृवंश्यान् स्वर्गं प्रयात्यमरदेहधरो नरोऽसौ।।प्रत्यहं स्नानमन्त्रश्च पाद्मेः–दुःखदारिद्र्यनाशाय श्रीविष्णोस्तोषणाय च।प्रातःस्नानं करोम्यद्य माघे पापविनाशनम्।मकरस्थे रवौ माघे गोविन्दाच्युत! माधव।स्नानेनानेन मे देव! यथोक्तफलदो भव।।इमं मन्त्र समुच्चार्य स्नायान्मौनसमन्वितः।। स्नानान्तरं प्रत्यहं सूर्यार्घ्यं दद्यात्।तन्मन्त्रः–सवित्रे प्रसवित्रे च परं धाम जले मम।त्वत्तेजसा परिभ्रष्टं पापं यातु सहस्रधा।।तीर्थविशेषेण स्नान माहात्म्यकथनम्ः–काश्याः शतगुणं प्रोक्तं गङ्गायमुनसङ्गमे। सहस्रगुणिता सापि भवेत्पश्चिम वाहिनी।पश्चिमाभिमुखी गङ्गा कालिन्द्या सह सङ्गता।हन्ति कल्पकृतं पापं सा माघे नृप दुर्लभा।।माघेदेयाः–भविष्ये–तैलमामलकश्चैव तीर्थे देयास्तु नित्यशः।ततः प्रज्वालयेद्वह्निं सेवनार्थं द्विजन्मनाम्।।एवं स्नानावसाने तु भोज्यं देयमवारितम्।भोजयेद् द्विजदाम्पत्यं भूषयेद्वस्त्र भूषणैः।कम्बलाजिन रत्नानि वासांसि विविधानि च।चोलकानि च देयानि प्राच्छादनं पटास्तथा।। माघमासनियमाः–भूमौ शयीतहोतव्यं साज्यं तिलसमन्वितम्।हविष्ये ब्रह्मचर्यश्च माघमासे महाफलम् इति।दानकथनम्ः–अन्नयेश्चैव यथाशक्त्या देयं माघेनराधिपासुवर्णं रक्तिकामात्रं दद्याद्वेदविदे तथा।।धेनुं तिलमयीं राजन् दद्याद्यश्चोत्तरायणे। सर्वान्कामानवाप्नोति विन्दते परमं सुखम्।।माघमासपर्यन्तं स्नानाशक्तौत्र्यहंस्नायात्ः–महामाघीं पुरस्कृत्य स्नायात्तत्रदिनत्रयम्। प्रयागे माघमासे तु त्र्यहं स्नानस्य यत्फलम्।अश्वमेधसहस्रेण तत्फलं लभते भुवि।। षट्तिलकथनम्ः–तिलस्नायी तिलोद्वर्ती तिलहोमी तिलोदकी।तिलभुक् तिलदाता च षट्तिलाः पापनाशनाः।।तद्दानमन्त्रः–देवदेव जगन्नाथ वाञ्छितार्थफलप्रद। तिलपात्रं प्रदास्यामितवाग्रे संस्थितोऽस्म्यहम्।अनेनदानेन वाङ्मनः कायजत्रि विधपापक्षयः ब्रह्मलोकप्राप्तिश्च।गणेशोत्पत्तिः–माघकृष्णचतुर्थी गणेशचतुर्थी। उक्तञ्च।शिवधर्मेः–सर्वदेवमयः साक्षात्सर्वमङ्गलकारकः।माघकृष्ण चतुर्थ्यां तु प्रादुर्भूतो गणाधिपः।।चतुर्थी गणनाथस्य मातृविद्धा प्रशस्यते।इयं चतुर्थी तृतीयायुता ग्राह्या।अस्यां रात्रौ पूजनानन्तर चन्द्रोदये चन्द्रार्घ्यंदेयम्।।यमतर्पणम्ः–माघकृष्णचतुर्दश्यां यमतर्पणम्–हेमाद्रौ यमेन–अनर्काभ्युदिते काले माघकृष्णचतुर्दशीम्।स्नातः सन्तर्प्य तु यम सर्वपापैः प्रमुच्यते।।माघे यत्रकुत्रापि प्रयागस्मरणेन स्नाने गङ्गास्नान फलकथनम्।ब्राह्मे–यत्र कुत्रापि वा माघे प्रयागःस्मरणान्वितः।करोति मज्जनं तीर्थे स लभेत् गाङ्गमज्जनम्।प्रभासखण्डे अपि उक्तम्–माघेमासे च यः स्नायान्नैरन्तर्येण भावतः।पौण्डरीकफलं तस्य दिवसे दिवसे भवेत्।प्रयागस्य प्रधानदेवाः–त्रिवेणीं माधवं सोमं भरद्वाजश्च वासुकिम्।वन्देऽक्षयवटं शेषं प्रयागं तीर्थनायकम्।।प्रयागस्तुतिः–श्रुतिःप्रमाणं स्मृतयः प्रमाणम्,पुराणमप्यत्र परं प्रमाणम्।यत्रास्ति गङ्गा यमुना प्रमाणम्,स तीर्थराजो जयति प्रयागः।।न यत्र योगाचरण प्रतीक्षा,न यत्र यज्ञेष्टिविशिष्टदीक्षा।।न तारकज्ञानगुरोरपेक्षा,स तीर्थराजो जयति प्रयागः।।सितासिते यत्र तरंगचामरे,नद्यौ विभाते मुनिभानुकन्यके।नीलातपत्रं वट एव साक्षात् स तीर्थराजो जयति प्रयागः।।अथ गङ्गायाःद्वादशनामानिनन्दिनी,नलिनी,सीता,मालतीचमलापहा।विष्णुपादाब्जसम्भूता,गङ्गा,त्रिपथगामिनी। भागीरथी,भोगवती,जाह्नवी,त्रिदशेश्वरी।द्वादशैतानि नामानि स्नान काले सदा स्मरेत्।।माघस्नान सूर्योदय से पूर्व किसी नदी या सरोवर में स्नान करने का विधान है माघ स्नान परमपुण्यदायक एवं सर्वपाप नाशक होता है।जो व्यक्ति मास पर्यन्त स्नान व्रत करने में असमर्थ हो वह माघशुक्लत्रयोदशी से पूर्णिमा तक स्नान व्रत,दानादि करने से माघस्नान का सम्पूर्ण फल प्राप्त कर सकते है।षट्तिलाएकादशी–माघशु. एकादशी को षट्तिलाएकादशी होती है।इस दिन तिलजल से स्नान,पिसे हुए तिलों का उबटन लगाने,तिलों द्वारा हवन करने,तिल मिला हुआ जल पीने,तिलों का दान करने एवं तिलों के बने पदार्थों के खाने से पापों का शमन होता है।मौनीअमावस्या–माघ की अमावस्या को सूर्य उदय से पूर्व मौन रहकर गंगा स्नान,सरोवर या कुएं आदि पर स्नान करना चाहिए ।

माघशुक्लपक्षः

शाके १९४४; संवत् २०७९; फसली १४३०; दिनाङ्क २२:०१:२०२३ ई. ततो दिनाङ्क ०५:०२:२०२३ ईस्वी या.। पूर्व राहु कालः ।
मार्गी पूर्वोदितो मंगलः बुधः गुरू शनि, मार्गी पश्चिमोदितोः शुक्रः, शिशिरर्तुः, याम्यगोलः, सौम्यायनम्, अयनांश २२:५०:५४ ।

तिथि वार	तिथ्यन्तः द. प.	तिथ्यन्तः घं. मि.	नक्षत्र	नक्षत्रान्तः द. प.	नक्षत्रान्तः घं. मि.	योग	योगान्तः द. प.	करणान्तः क. द. प.	चन्द्रराश्यन्तः रा. द. प.	चन्द्रराश्यन्तः घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू. उ. घं.मि.	सू. अ. घं.मि.	दिनाङ्क सौ	अं
०१ र.	४४:५५	रा.१२:४१	उ.षा	०२:३६	दि.०७:४५	वज्रः	१२:३४	किं. १७:५२	मकर	अहोरात्र	०९:०८:०४:०६	२६:२८	०६:४३	०५:१७	०८	२२
०२ चं	३९:०७	रा.१०:२१	धनि.	५४:२७	रा.०४:२९	सिद्धिः	०४:४९	बा. १०:०१	म.२५:०६	दि.०४:४४	०९:०९:०५:२१	२६:३०	०६:४२	०५:१८	०९	२३
०३ मं	३३:४०	रा.०८:०९	शत.	५०:५१	रा.०३:०१	वरी.	४९:४०	तै. ०५:२४	कुम्भ	अहोरात्र	०९:१०:०६:३६	२६:३२	०६:४१	०५:१९	१०	२४
०४ बु	२८:४५	सं.०६:११	पू.भा	४७:५०	रा.०१:४९	परिघः	४२:४५	व. ०१:१३	कु.३३:३६	रा.०८:०७	०९:११:०७:५१	२६:३६	०६:४१	०५:१९	११	२५
०५ गु	२४:३६	दि.०४:३०	उ.भा.	४५:४०	रा.१२:५६	शिवः	३६:३०	बा. २४:३६	मीन	अहोरात्र	०९:१२:०९:०६	२६:४०	०६:४०	०५:२०	१२	२६
०६ शु	२१:१४	दि.०३:०९	रेवती	४४:१८	रा.१२:२२	सिद्धः	३०:५६	तै. २१:१४	मी.४४:१८	रा.१२:२२	०९:१३:१२:५२	२६:४२	०६:३९	०५:२१	१३	२७
०७ श	१८:५७	दि.०२:१४	अश्वि	४४:००	रा.१२:१५	साध्य	२६:११	व. १८:५७	मेष	अहोरात्र	०९:१४:१६:३८	२६:४४	०६:३९	०५:२१	१४	२८
०८ र.	१७:५१	दि.०१:४६	भरणी	४४:५५	रा.१२:३६	शुभः	२२:२२	ब. १७:५१	मेष	अहोरात्र	०९:१५:२०:२४	२६:४८	०६:३८	०५:२२	१५	२९
०९ चं	१८:०५	दि.०१:५२	कृति.	४७:०५	रा.०१:२८	शुक्लः	१९:३५	कौ. १८:०५	मे.००:२७	प्रा.०६:४९	०९:१६:२४:१०	२६:५२	०६:३८	०५:२२	१६	३०
१० मं	१९:३४	दि.०२:२७	रोहि.	५०:३३	रा.०२:५०	ब्रह्मः	१७:४८	ग. १९:३४	वृष	अहोरात्र	०९:१७:२७:५६	२६:५६	०६:३७	०५:२३	१७	३१
११ बु	२२:१६	दि.०३:३०	मृग.	५५:०९	रा.०४:४०	ऐन्द्रः	१६:५६	वि. २२:१६	वृ.२२:५१	दि.०३:४५	०९:१८:३१:४२	२७:००	०६:३६	०५:२४	१८	१
१२ गु	२६:१०	सा.०५:०३	आर्द्रा	६०:००	अहोरात्र	वैधृतिः	१७:००	बा. २६:१०	मिथुन	अहोरात्र	०९:१९:३५:२७	२७:०४	०६:३५	०५:२५	१९	२
१३ शु	३०:५२	रा.०६:५५	आर्द्रा	००:४१	प्रा.०६:५०	विष्क	१७:४५	तै. ३०:५२	मि.५०:२०	रा.०२:४२	०९:२०:३३:५०	२७:०६	०६:३४	०५:२६	२०	३
१४ श	३६:०८	रा.०९:०१	पुन.	०६:५३	दि.०९:१९	प्रीतिः	१८:५५	ग. ०३:३४	कर्क	अहोरात्र	०९:२१:३२:१३	२७:०८	०६:३४	०५:२६	२१	४
१५ र.	४१:४२	रा.११:१४	पुष्य	१३:२६	दि.११:५५	आयु.	२०:१९	वि. ०८:५५	कर्क	अहोरात्र	०९:२२:३०:३५	२७:१०	०६:३३	०५:२७	२२	५

२२ श्रवणमानं ५५:५०,शिशिरनवरात्रंरंभः,कलशस्थापनं,पञ्चकारम्भः रा.शे.०५:०३उ.,**विवाह दिवारात्रौ,पश्चिमांवनायात्रा श्रवणे**,मृत्युयोग रा.१२:४१ या.।

२३ व्यतिपातयोग ५२:१६,चन्द्रदर्शन मु. ३० सौम्यश्रृंगं फलं समर्घ,ब्रह्मचारिणी देविदर्शनं,श्रीरेमन्तपूजनं,**विवाह धनि.,मुण्डन कर्णवेध, शिववास**, मृत्युयोग रा.१०:२१ या.।

२४ बदरी ३,कुन्दकुसुमैःपार्वतीपूजनं,चन्द्रघंटादेवीदर्शनं,✺ श्रवणायांरविः३६:४८,सिद्धियोग रा.०८:०९ या. । ✺ ततो अमृतयोग दि.०३:०९ उ.,सर्वार्थसिद्धियोग रा.१२:२२ या.।

२५ कुष्माण्डादेवीदर्शनं,श्रीगणेश ४ व्रतं शुक्लेमध्याह्नव्यापिनी,**विवाह उ.भा.**, शिववास सं ०६:११ उ., भद्रारंभ:०१:१३ उपरि ततो भद्रांत:२८:४५ यावत्।

२६ वसन्तपञ्चमी,श्रीसरस्वतीपूजनं,पश्चिमोत्तराभिमुखहलप्रवाहः,गणतंत्रदिवस,स्कन्दमातादेवीदर्शनं,**विवाहदिवारात्रौ,मुण्डन कर्णवेध,उपनयन,शिववास,देवादिप्रतिष्ठा**,सिद्धियोग दि.०४:३०या।

२७ कात्यायनीदेवीदर्शनं,पञ्चकान्तः रा.१२:२२ या.,**विवाह दिवारात्रौ,मुण्डनं गृहप्रवेश ७,देवादिप्रतिष्ठा,शिववास** दि.०३:०९ या.,उत्तरयात्रा षष्ठम्यां,सिद्धियोग दि.०३:०९ या.।

२८ अचलासप्तमी,कालरात्रिदेवीदर्शनं,महारात्रिर्निशापूजा,पूर्वविनायात्रा अश्वि.,**गृहप्रवेश ७**,भद्रारंभ:१५:५७ उपरि ततो भद्रांत:४८:२४ यावत् ।

२९ भीष्माष्टमी,भीष्मर्पणं,महागौरीदेविदर्शनं,महाष्टमीव्रतं,शिववास दि.०१:४६ उ.,सिद्धियोग दि.०१:४६ या. ।

३० सिद्धदात्रीदेविदर्शनं,महानवमीव्रतं,**विवाह गृहप्रवेश रोहिण्यां**, शिववास दि.०१:५२ या.,दक्षिणयात्रा रोहिण्यां,सिद्धियोग दि.०१:५२ उ.।

३१ **विजया १०**,देवीविसर्जनं,छन्दोगानांमुपनयन,पूर्वदक्षिणयात्रा दशम्याम्, मृत्युयोग दि.०२:२७ उ., भद्रारंभ:५०:५५ उपरि । ✺सर्वार्थसिद्धियोग रा.०४:४० या.,भद्रांत:२२:१६ यावत्।

१ फरवरी०२,दग्ध ति.(२२:१६ उ.),**भौमी ११ व्रतं सर्वेषां,मुण्डन कर्णवेध उपनयन विवाह गृहारम्भप्रवेशौचैकादश्याम्,रात्रौ ११ व्रतोद्यापनं**,शिववास दि. ०३:३० उ.☾

२ दग्ध ति.(२६:१० या.),**गोदुग्धेन पारणं**,शिववास,अमृतयोग सं.०५:०३ उ.। ☾ उत्तरविनायात्रा मृग.,अमृतयोग दि.०३:३० या.,ततो सिद्धियोग दि.०३:३० उ.✺

३ **प्रदोष १३ व्रतं,गृहारम्भप्रवेशौ मुण्डनं कर्णवेध पुनर्वशौ.**,देवादिप्रतिष्ठा,शिववास,दक्षिणयात्रा पुनर्वसो,अमृतयोग रा.०६:५५ उ.,सर्वार्थसिद्धियोग प्रा.०६:५० उ.।

४ **प्रदोष १४ व्रतं,पूर्वविनायात्रा चतुर्दश्यां पुष्ये**,सिद्धियोग रा.०९:०१ या.,ततो मृत्युयोग रा.०९:०१ उ.,भद्रारंभ:३६:०८ उपरि।

५ **माघी पूर्णिमा व्रतस्नानदानव्रतादौ पूर्णिमा,पश्चिमांविनायात्रा पुष्ये**,अमृतयोग रा.११:१४ या.,ततो मृत्युयोग रा.११:१४ उ.,सर्वार्थसिद्धियोग दि.११:५५ या.,भद्रांत:०८:५५ यावत्।

मिश्रमान कालिक दैनिक स्पष्टग्रहाः

ति	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमान
१	०१:१२:४४:१२	०८:१२:३८:००	११:१०:४६:४३	१०:०१:४१:३५	०९:२७:४०:४९	०६:१७:०६:४२	४३:१४
२	०१:१२:५२:४३	०८:१३:२०:३८	११:१०:५७:१४	१०:०२:५६:१४	०९:२७:४७:५७	०६:१७:०३:३१	४३:१५
३	०१:१३:०१:१४	०८:१४:३१:१६	११:११:०७:४५	१०:०४:१०:५४	०९:२७:५५:०५	०६:१७:००:२१	४३:१६
४	०१:१३:०९:४१	०८:१४:४५:५४	११:११:१८:१६	१०:०५:२५:३४	०९:२८:०२:१२	०६:१६:५७:११	४३:१८
५	०१:१३:१८:१५	०८:१५:२८:३२	११:११:२८:४७	१०:०६:४०:१४	०९:२८:०९:१९	०६:१६:५४:०१	४३:२०
६	०१:१३:३०:३९	०८:१६:४०:५२	११:११:३९:५१	१०:०७:५४:४४	०९:२८:१६:४७	०६:१६:५०:५०	४३:२१
७	०१:१३:४३:०३	०८:१७:५३:१२	११:११:५०:५५	१०:०९:०९:१४	०९:२८:२४:१५	०६:१६:४७:३९	४३:२२
८	०१:१३:५५:२७	०८:१९:०५:३१	११:१२:०१:५९	१०:१०:२३:४४	०९:२८:३१:४३	०६:१६:४४:२८	४३:२४
९	०१:१४:०७:५१	०८:२०:१७:५०	११:१२:१३:०४	१०:११:३८:१४	०९:२८:३९:११	०६:१६:४१:१७	४३:२६
१०	०१:१४:२०:१५	०८:२१:३०:०९	११:१२:२४:०९	१०:१३:५२:४४	०९:२८:३६:३८	०६:१६:३८:०६	४३:२८
११	०१:१४:३२:३९	०८:२२:४२:२८	११:१२:३५:१४	१०:१४:०७:१५	०९:२८:५४:०५	०६:१६:३४:५५	४३:३०
१२	०१:१४:४५:०२	०८:२३:५४:४७	११:१२:४६:५९	१०:१५:२१:४६	०९:२९:०१:३२	०६:१६:३१:४५	४३:३२
१३	०१:१४:५९:१६	०८:२५:०५:३१	११:१२:५७:४९	१०:१६:४०:२४	०९:२९:०९:०३	०६:१६:१८:३४	४३:३३
१४	०१:१५:१३:३०	०८:२६:१६:१५	११:१३:०९:१९	१०:१७:५९:०३	०९:२९:१६:३४	०६:१६:२५:२३	४३:३४
३०	०१:१५:२७:४३	०८:२७:२६:५९	११:१३:२०:४९	१०:१९:१७:४२	०९:२९:२४:०५	०६:१६:२२:१२	४३:३५

दैनिक लग्न सारणी चक्रम्

मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिं.अं.	क.अं.	तु.अं	वृ.अं	ध.अं	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.	वार
१२:३६	१४:३२	१६:४५	१९:०३	२१:१९	२३:३४	०१:५१	०४:०८	०६:१३	०७:५९	०९:३०	१०:५९	र.
१२:३२	१४:२८	१६:४१	१८:५९	२१:१५	२३:३०	०१:४७	०४:०४	०६:०९	०७:५५	०९:२६	१०:५५	चं.
१२:२८	१४:२४	१६:३७	१८:५५	२१:११	२३:२६	०१:४३	०४:००	०६:०५	०७:५१	०९:२२	१०:५१	मं.
१२:२४	१४:२०	१६:३३	१८:५१	२१:०७	२३:२२	०१:३९	०३:५६	०६:०१	०७:४७	०९:१८	१०:४७	बु.
१२:२०	१४:१६	१६:२९	१८:४७	२१:०३	२३:१८	०१:३५	०३:५२	०५:५७	०७:४३	०९:१४	१०:४३	गु.
१२:१५	१४:११	१६:२४	१८:४२	२०:५८	२३:१३	०१:३०	०३:४७	०५:५२	०७:३८	०९:०९	१०:३८	शु.
१२:११	१४:०७	१६:२०	१८:३८	२०:५४	२३:०९	०१:२६	०३:४३	०५:४८	०७:३४	०९:०५	१०:३४	श.
१२:०७	१४:०३	१६:१६	१८:३४	२०:५०	२३:०५	०१:२२	०३:३९	०५:४४	०७:३०	०९:०१	१०:३०	र.
१२:०३	१३:५९	१६:१२	१८:३०	२०:४६	२३:०१	०१:१८	०३:३५	०५:४०	०७:२६	०८:५७	१०:२६	चं.
११:५९	१३:५५	१६:०८	१८:२६	२०:४२	२२:५७	०१:१४	०३:३१	०५:३६	०७:२२	०८:५३	१०:२२	मं.
११:५५	१३:५१	१६:०४	१८:२२	२०:३८	२२:५३	०१:१०	०३:२७	०५:३२	०७:१८	०८:४९	१०:१८	बु.
११:५०	१३:४६	१५:५९	१८:१७	२०:३३	२२:४८	०१:०५	०३:२२	०५:२७	०७:१३	०८:४४	१०:१३	गु.
११:४६	१३:४२	१५:५५	१८:१३	२०:२९	२२:४४	०१:०१	०३:१८	०५:२३	०७:०९	०८:४०	१०:०९	शु.
११:४२	१३:३८	१५:५१	१८:०९	२०:२५	२२:४०	०२:५७	०३:१४	०५:१९	०७:०५	०८:३६	१०:०५	श.
११:३८	१३:३४	१५:४७	१८:०५	२०:२१	२२:३६	००:५३	०३:१०	०५:१५	०७:०१	०८:३२	१०:०१	र.

दैनिक अर्धप्रहरा चक्रम्

वार	दिन का अर्धप्रहरा	रात का अर्धप्रहरा
र.	दि. १०:४०-१:१८।	रा. १०:१७-११:५७। रा.१:३७-३:१७।
चं.	दि. ०८:०१-९:२० । दि. ०२:३६-०३:५५।	रा. १०:१८-११:५८ रा.०३:१८-४.५८।
मं.	दि. ०८:००-०९:१९। दि ०१:१६-०२:३५।	रा. ०६:५९-०८:३९ ।
बु.	दि. ०९:१९-१०:३८। दि. ११:५७-०१:१६।	रा. ११:५९-१:३९ । रा. ३:१९-४:५९।
गु.	दि. ०२:४०-०५:२०।	रा. १२:००-०१:४०। रा.५:००-६:४०।
शु.	दि. ०९:१९-११:५९।	रा. ०८:३९-१०:१८ ।
श.	दि. ६:३९-७:५९। दि.०१:१९-२:३९ दि.३:५९-५:२१।	रा.५:२१-७:०० रा.१:३६-३:१५ रा.४:५४-६:३९।
र.	दि. १०:३८-०१:१८ ।	रा. १०:१९-११:५८। रा. १:३७-३:१६।
चं.	दि. ०७:५८-९:१८ । दि. ०२:३८-०३:५८।	रा. १०:१९-११:५८। रा. ३:१६-४:५५।
मं.	दि. ०७:५७-९:१७ । दि.०१:१७-०२:३७ ।	रा. ७:०२-८:४१ ।
बु.	दि. ०९:१८-१०:३९ । दि.१२:००-०१:२१ ।	रा. १२:००-१:३९ । रा. ३:१८-४:५७।
गु.	दि. ०२:४१-०५:२५ ।	रा. ११:५७-१:३५ । रा. ४:५१-६:३५।
शु.	दि. ०९:१६-११:५८ ।	रा. ०८:४२-१०:०२ ।
श.	दि. ६:३४-७:५५। दि. १:१९-२:४० दि.४:०१-५:२६।	रा.५:२६-७:०४ रा.१:३६-३:१४ रा.४:५२-६:३४।
र.	दि. १०:३६-०१:१८।	रा. १०:२१-११.५९ रा.१:३७-३:१५।

तिथिः १ रवौ सूर्योदये

११शु ल ९ बु
१०
गु १२ सू चं श ८
१ रा ७ के
मं २ ४ ६
३ ५

अचलासप्तमी,भानुसप्तमी–यह माघशुक्ल सप्तमी को होती है।प्राणिमात्र की जीवनशक्ति को जीवित रखने वाले प्रत्यक्ष ईश्वर सूर्य–नारायण ने मन्वन्तर के आदि में इसी दिन अपना प्रकाश प्रकाशित किया था अतः यह जयन्ती भी है।इस दिन सूर्य की उपासना के अनेक कृत्य अनेक प्रकार से किये जाते हैं।इस कारण इसको "अर्क–अचला–रथ–सूर्य और भानुसप्तमी आदि कई नाम दिये गये हैं।यह अरुणोदयव्यापिनी ली जाती है।यदि दो दिन अरुणोदयव्यापिनी हो तो पहली लेना चाहिये।स्नान के विषय में यह स्मरण रहे कि जो माघ–स्नान करते हों, वे इसी दिन अरुणोदय (पूर्वदिशा की प्रातःकालीन लालिमा) होने पर स्नान करें अन्य भानुसप्तमी–निमित्त स्नान करने वालों को सूर्योदय के बाद स्नान करना चाहिये।स्नान करने के पहले आक के सात पत्तों और बेर के सात बत्तों को कसुम्भाकी बत्ती वाले तिल–तैलपूर्ण दीपक में रखकर उसको प्रवाह में बहा दे।दिवोदास के मतानुसार दीपक के बदले आक के सात पत्ते सिरपर रखकर ईख से जल को हिलाये और **"नमस्ते रुद्ररुपाय रसानां पतये नमः।वरुणाय नमस्तेऽस्तु"** पढ़कर दीपक को बहा दे।फिर **यद् यज्जन्मकृतं पापं यच्च जन्मान्तरार्जितम्।मनोवाक्कायजं यच्च ज्ञाताज्ञाते च ये पुनः।। इति सप्तविधं पापं स्नानान्ते सप्तसप्तिके।सप्तव्याधिसमाकीर्णं हर भास्करि सप्तमि।।**इनका जप करके माधव और सूर्य का ध्यानकर पादोदक (गङ्गाजल अथवा चरणामृत) को जल में डालकर स्नान करे तो शीघ्र पाप दूर हो जाते है।**दिनत्रयव्रत**–माघस्नान ३० दिनों में पूर्ण होता है,परन्तु इतने समय की सामर्थ्य अथवा अनुकूलता न हो तो माघ शुक्ल त्रयोदशी,चतुर्दशी और पूर्णिमा के अरुणोदय में स्नानादि करके व्रत करे और यथानियम दान पुण्य करे तो सम्पूर्ण माघस्नान का फल मिलता है।

तिथिः ८ रवौ सूर्योदये

११शु ल ९ बु
१०
गु १२ सू श ८
रा १ चं ७ के
मं २ ४ ६
३ ५

तिलचतुर्थी :–माघशुक्लचतुर्थी तिलचतुर्थी।सा प्रदोषव्यापिनी ग्राह्या।काशीखण्डे यथा–माघशुक्लचतुर्थ्यां तु नक्तव्रतपरायणाः।ये त्वां ढुण्ढेऽर्चयिष्यन्ति तेऽर्च्याः स्युरसुरद्रुहाम्।।**वसन्तपञ्चमी**:–माघशुक्ल पञ्चमी वसन्तपञ्चमी तस्यां वसन्तोत्सवारम्भः। अस्यां रतिकामयोः पूजनम्।इयं माधवमते पूर्वा ग्राह्या,हेमाद्रिमतेपरा।दिने सविधि श्रीसरस्वत्याः पूजनं कार्यम्।**अथ माघशुक्ल सप्तमी** :–अरुणोदय व्यापिनी ग्राह्या।तद्दिने सप्तविधपापविनाशाय श्रीसवितृप्रीतये–अरूणोदये स्नानं कार्यम्।तथा च विष्णुः–सूर्यग्रहणतुल्या हि शुक्ला माघस्य सप्तमी।अरूणोदय वेलायां तस्यां स्नानं महाफलम्।।तत्र सप्तार्कपत्राणि सप्तबदरीपत्राणि शिरसि निधाय वक्ष्यमाण मन्त्रेण स्नायात्। यद्यज्जन्मकृते पापं मया सप्तसु जन्मसु।तन्मे रोगञ्च शोकञ्च माकरी हन्तु सप्तमी।।ॐएतज्जन्म कृतं पापं यच्च जन्मान्तरार्जितम्। मनोवाक्कायजं यच्च ज्ञाताज्ञाते च ये पुनः।।इति सप्तविधं पापं स्नानान्मे सप्तसप्तिके।सप्तव्याधि समायुक्ते हर माकरि सप्तमी।। पूर्वोक्ते दानवस्तूनिमहामाघी पूर्णिमायां दानेन महाफलमिति।**अर्घ्यमन्त्रो यथा**:–सप्तसप्तिवह प्रीत समलोकप्रदीपन। सप्तमीसहितो देव गृहाणार्घ्यं दिवाकर।।**भीष्माष्टमी**–माघशुक्लाष्टमी भीष्माष्टमी।तस्यां भीष्म तर्पणम्–माघे मासि सिताष्टम्यां सतिलं भीष्मतर्पणम्।श्राद्धञ्च ये नराःकुर्युस्ते स्युः सन्ततिभागिनः।।**महाभारतेः**–शुक्लाष्टम्यां तु माघस्य दद्याद्भीष्माय यो जलम्।संवत्सरकृतं पापं तत्क्षणादेव नश्यति।। **तर्पणमन्त्रो यथा**–वैयाघ्रपदगोत्राय सांकृत्य प्रवराय च।अपुत्राय ददाम्येतज्जलं भीष्मायवर्मणे।।वसूनामवताराय शन्तनोरात्मजाय च।अर्घ्यं ददामि भीष्माय आबालब्रह्मचारिणे॥ भीष्मः शान्तनवो वीरःसत्यवादी जितेन्द्रियः।आभिरद्भिरवाप्नोति पुत्रपौत्रोचितां क्रियाम्।। जीवत्पितापि कुर्वीत तर्पणं यम भीष्मयोः।।**अथ भीष्मद्वादशीः**– माघशुक्लद्वादशी भीष्मद्वादशी। इयं पूर्वयुता ग्राह्या।त्वया कृतमिदं वीर तव नाम्ना भविष्यति।सा भीष्म द्वादशीत्येषा सर्वपापहरा शुभा।।**माघी पूर्णिमा**:–परयुता ग्राह्या। यथोक्तं ब्रह्मवैवर्ते "भूतविद्धे न कर्तव्ये दर्शपूर्णे कदाचन"।।माघस्थयोश्च जीवेन्दोर्महामाघीति कथ्यते।ज्योतिषे–मेषपृष्ठे यदा सौरिः सिंहे च गुरूचन्द्रमाः। भास्करः श्रवणर्क्षे च महामाघीति सा स्मृता।।**माघीपूर्णिमा**–माघशुक्ल पूर्णिमा को प्रातः स्नान करके विष्णु का पूजन करे, पितरों का श्राद्ध करे, असमर्थो को भोजन,वस्त्र और आश्रय दे,तिल,कम्बल,कपास,गुड़,घी,मोदक,उपानह (जूता),फल,अन्न और सुवर्णादिका यथा शक्ति दान करे और व्रत या उपवास करके ब्राह्मणों को भोजन कराये और सत्यनारायणव्रतकथा सुने।**अथ विवाहे वर्ज्ययोगाः** –व्याघातशूले परिघातिगण्डे गण्डे व्यतीपात पुरन्दरान्ते।पाणिग्रहं यो विदधाति शीघ्रं यमालयं याति स वैधृतो च।यामार्धञ्च व्यतीपातं भद्रा वैधृतिकं तथा।वर्जयेत् सर्वकार्येषु रविदग्धं दिनत्रयम्।**दुष्टयोगनां परिहारः**–यमघण्टे त्यजेदष्टौ मृत्यौ द्वादश नाडिकाः।अन्येषु पापयोगेषु मध्याह्नपरतः शुभम्।परिघार्धं पंचशूले षट् च गण्डाति गण्डयोः।व्याघाते नवनाड्यश्च वर्ज्याः सर्वेषु कर्मसु ।

फाल्गुनकृष्णपक्षः

शाके १९४४;संवत् २०७९;फसली १४३०;दिनाङ्क ०६:०२:२०२३ ई. ततो दिनाङ्क २०:०२:२०२३ ईस्वी या.। पूर्व राहु कालः, ततो ति. ०८ दक्षिणे राहु कालः । मार्गी पूर्वोदितो मंगलः बुध गुरू शनि, मार्गी पश्चिमोदितोः शुक्रः, शिशिरर्तुः, याम्यगोलः, सौम्यायनम्, अयनांश २२:५०:५४ ।

तिथि वार	तिथ्यन्तः द. प.	तिथ्यन्तः घं. मि.	नक्षत्र	नक्षत्रान्तः द. प.	नक्षत्रान्तः घं. मि.	योग	योगान्तः द. प.	करणान्तः क. द. प.	चन्द्रराश्यन्तः रा. द. प.	चन्द्रराश्यन्तः घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू. उ. घं.मि.	सू. अ. घं.मि.	दिनाङ्काः सौ	दिनाङ्काः अं	
०१ चं	४६:४२	रा.०१:१४	आश्ले	१९:५२	दि.०२:३०	सौभा.	२१:३६	बा. १४:१२	क.१९:५२	दि.०२:३०	०९:२३:२८:५७	२७:१४	०६:३३	०५:२७	२३	६	फाल्गुने वाड्मतीस्नानं महापुण्यप्रदं, विवाह मघा.,✷धनिष्ठायांरविः४२:४१, शिववास, सिद्धियोग रा.०१:१४ या.,ततो मृत्युयोग रा.०१:१४ उ.।
०२ मं	५१:३०	रा.०३:०८	मघा	२५:४९	दि.०४:५२	शोभ.	२२:२८	तै. १९:०६	सिंह	अहोरात्र	०९:२४:२७:१९	२७:१८	०६:३२	०५:२८	२४	७	पूर्वयात्रा पू.फा., अमृतयोग रा.०३:०८ या., ततो सिद्धियोग रा.०३:०८ उ.।
०३ बु	५४:३६	रा.०४:२२	पू.फा.	३०:५५	रा.०६:५४	अतिग	२२:३९	व. २३:०३	सिं.४६:५६	रा.०१:१८	०९:२५:२५:४१	२७:२२	०६:३२	०५:२८	२५	८	विवाह उ.षा., पूर्वयात्रा पू.फा., मृत्युयोग रा.०४:२२ या., भद्रारंभः२३:०३ उपरि ततो भद्रांतः५४:३६ यावत्।
०४ गु	५६:५७	रा.शे.५:१८	उ.फा.	३५:००	रा.०८:३१	सुकर्मा	२२:०१	ब. २५:४७	कन्या	अहोरात्र	०९:२६:२४:०३	२७:२६	०६:३१	०५:२९	२६	९	श्रीहेरम्ब ४ व्रतं, शिववास, मृत्युयोग रा. शे.०५:१५ या.।
०५ शु	५७:५७	रा.शे.५:४१	हस्त	३७:५१	रा.०९:३८	धृतिः	२०:३२	कौ. २७:२७	कन्या	अहोरात्र	०९:२७:२४:५१	२७:२८	०६:३०	०५:३०	२७	१०	विवाह दिवारात्रौ, मुण्डन, कर्णवेध, गृहारम्भः, शिववास, पूर्वदक्षिणयात्रा,सिद्धियोग रा.०५:४१ या.।
०६ श	५७:३७	रा.शे.५:३३	चित्रा	३९:२७	रा.१०:१७	शूलः	१८:५९	ग. २७:४७	क.०८:३९	दि.०९:५८	०९:२८:२५:३९	२७:३०	०६:३०	०५:३०	२८	११	दक्षिणयात्रा कन्यास्थे चन्द्रे ततो दक्षिणपश्चिमयात्रा, अमृतयोग रा. शे.०५:३३ या., भद्रारंभः५७:३७ उपरि।
०७ र.	५६:०६	रा.०४:५५	स्वा.	३९:५१	रा.१०:२५	गण्डः	१४:२७	वि. २६:५२	तुला	अहोरात्र	०९:२९:२६:२७	२७:३२	०६:२९	०५:३१	२९	१२	मासान्तः, माघस्नानसमाप्तिः, प्रयागेकल्पवाससमाप्तिः,भद्रांतः२६:५२ यावत्।
०८ चं	५३:२७	रा.०३:५१	विशा.	३९:०३	रा.१०:०५	वृद्धिः	०९:५६	बा. २५:०२	तु.२४:१५	दि.०४:१०	१०:००:२७:१४	२७:३६	०६:२८	०५:३२	०१	१३	शाकाष्टका, अन्वष्टकाश्राद्धं,कुम्भेरविः१७:००,मु.४५,विष्णुपदीसंक्रान्तिपुण्यकालं दिवा घं.०१:०० उपरिदिने,पुण्याहः,शिववास ।
०९ मं	४९:४८	रा.०२:२३	अनु.	३७:१८	रा.०९:२३	ध्रुवः	०४:३६	तै. २१:३८	वृश्चिक	अहोरात्र	१०:०१:२८:०१	२७:४०	०६:२८	०५:३२	०२	१४	व्यातिपातयोग ५३:५६, मासादिः ।
१० बु	४३:२१	रा.११:४७	ज्येष्ठा	३४:३९	रा.०८:१९	हर्षण	५१:४७	व. १६:३५	वृ.३४:३९	रा.०८:१९	१०:०२:२८:४८	२७:४४	०६:२७	०५:३३	०३	१५	विवाह मूले, पश्चिमयात्रा वृश्चिके चन्द्रः ततो पूर्वयात्रा, अमृतयोग रा.११:४७ उ.,भद्रारंभः१६:३५ उपरि ततो भद्रांतः४३:२१ यावत्।
११ गु	४०:१३	रा.१०:३१	मूल	३१:२०	रा.०६:५८	वज्रः	४४:३४	ब. ११:४७	धनु	अहोरात्र	१०:०३:२९:३५	२७:४८	०६:२६	०५:३४	०४	१६	विजया ११ व्रतं सर्वेषां, विवाह मूले, शिववास,पूर्वोत्तरयात्रा।
१२ शु	३४:३६	रा.०८:२६	पू.षा	२७:३३	सं.०५:२७	सिद्धिः	३७:०३	कौ. ०७:२५	ध.४१:३२	रा.११:०३	१०:०४:३०:१३	२७:५०	०६:२६	०५:३४	०५	१७	गोदधना पारणं, विवाह उ.षा., मृत्युयोग रा.०८:२६ या.।
१३ श	२८:४४	सं.०५:५५	उ.षा	२३:२८	दि.०३:४८	व्यति.	२९:११	ग. ०१:४०	मकर	अहोरात्र	१०:०५:३०:५१	२७:५४	०६:२५	०५:३५	०६	१८	प्रदोष १३ व्रतं, नक्तव्रतं महाशिवरात्रिव्रतं, प्रदोष १४ व्रतं, पूर्वविनायात्रा श्रवणे, सिद्धियोग सं.०५:५५ उ.,सर्वार्थसिद्धियोग दि.०३:४८ उ.,भद्रारंभः२८:४४ उपरि ✺
१४ र.	२२:५०	दि.०३:३२	श्रव.	१९:१८	दि.०२:०७	वरी.	२१:१८	श. २२:५०	म.४७:१८	रा.०१:१९	१०:०६:३१:२९	२७:५८	०६:२४	०५:३६	०७	१९	पञ्चकारम्भः दि.०२:०७ उ.,✷शतभिषायांरविः५२:२६, शिवदर्शनं, शिववास दि. ०३:३२ उ. । ✺ ततो भद्रांतः५५:५७ यावत्।
३० चं	१७:०३	दि.०१:१३	धनि.	१५:१७	दि.१२:३१	परिघः	१३:३२	ना. १७:०३	कुम्भ	अहोरात्र	१०:०७:३२:०६	२८:०२	०६:२४	०५:३६	०८	२०	फाल्गुनी ३०, सोमवती अमावस्या, स्नानदानादि, शिववास दि. ०१:१३ या.,सिद्धियोग दि.०१:१३ उ.।

मिश्रमान कालिक दैनिक स्पष्टग्रहाः

ति	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं
१	०१:१५:४१:५६	०८:२८:३७:४३	११:१३:३२:२०	१०:२०:३६:२१	०९:२९:३१:३६	०६:१६:१९:०१	४३:३७
२	०१:१५:५६:०९	०८:२९:४८:२७	११:१३:४३:५१	१०:२१:५५:००	०९:२९:३९:०६	०६:१६:१५:५०	४३:३९
३	०१:१६:१०:२२	०९:००:५९:११	११:१३:५५:२२	१०:२३:१३:३९	०९:२९:४६:३६	०६:१६:१२:४०	४३:४१
४	०१:१६:२४:३५	०९:०२:०९:५५	११:१४:०६:५३	१०:२४:३२:१८	०९:२९:५४:०६	०६:१६:०९:३०	४३:४३
५	०१:१६:४५:०७	०९:०४:१०:३५	११:१४:१९:३१	१०:२५:४१:४७	१०:००:०१:२३	०६:१६:०६:१९	४३:४४
६	०१:१७:०५:३९	०९:०६:११:२५	११:१४:३२:०९	१०:२६:५१:१७	१०:००:०८:४०	०६:१६:०३:०८	४३:४५
७	०१:१७:२६:११	०९:०८:१२:०५	११:१४:४४:४७	१०:२८:००:४७	१०:००:१५:५७	०६:१५:५९:५७	४३:४६
८	०१:१७:४६:४३	०९:१०:१२:४५	११:१४:५७:२६	१०:२९:१०:१७	१०:००:२३:१४	०६:१५:५६:४६	४३:४८
९	०१:१८:०७:१५	०९:१२:१३:२५	११:१५:१०:०५	११:००:१९:४७	१०:००:३०:३१	०६:१५:५३:३५	४३:५०
१०	०१:१८:२७:४७	०९:१४:१४:०४	११:१५:२२:४४	११:०१:२९:१७	१०:००:३७:४८	०६:१५:२०:२५	४३:५२
११	०१:१८:४८:१८	०९:१६:१४:३३	११:१५:३५:२३	११:०२:३८:४७	१०:००:४५:०५	०६:१५:४७:१५	४३:५४
१२	०१:१९:०९:२९	०९:१८:०३:२६	११:१५:४८:२१	११:०३:५२:१७	१०:००:५२:२७	०६:१५:४४:०४	४३:५५
१३	०१:१९:३०:४०	०९:१९:५२:११	११:१६:०१:१९	११:०५:०५:४७	१०:००:५९:४९	०६:१५:४०:५३	४३:५७
१४	०१:१९:५१:५१	०९:२१:४१:१२	११:१६:१४:१७	११:०६:१९:१७	१०:०१:०७:११	०६:१५:३७:४२	४३:५९
३०	०१:२०:१३:०२	०९:२३:३०:०५	११:१६:२७:१५	११:०७:३०:४७	१०:०१:१४:३३	०६:१५:३४:३१	४४:०१

दैनिक लग्नसारणी चक्रम्

मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिं.अं.	क.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
११:३४	१३:३०	१५:४३	१८:०१	२०:१७	२२:३२	००:४९	०३:०६	०५:११	०७:५७	०८:२८	०९:५७
११:३०	१३:२६	१५:३९	१७:५७	२०:१३	२२:२८	००:४५	०३:०२	०५:०७	०६:५३	०८:२४	०९:५३
११:२५	१३:२१	१५:३४	१७:५२	२०:०८	२२:२३	००:४०	०२:५७	०५:०२	०६:४८	०८:११	०९:४८
११:२१	१३:१७	१५:३०	१७:४८	२०:०४	२२:१९	००:३६	०२:५३	०४:५८	०६:४४	०८:१५	०९:४४
११:१७	१३:१३	१५:२६	१७:४४	२०:००	२२:१५	००:३२	०२:४९	०४:५४	०६:४०	०८:११	०९:४०
११:१३	१३:०९	१५:२२	१७:४०	१९:५६	२२:११	००:२८	०२:४५	०४:५०	०६:३६	०८:०७	०९:३६
११:०९	१३:०५	१५:१८	१७:३६	१९:५२	२२:०७	००:२४	०२:४१	०४:४६	०६:३३	०८:०३	०९:३२
११:०५	१३:०१	१५:१४	१७:३२	१९:४८	२२:०३	००:२०	०२:३७	०४:४२	०६:३०	०७:५९	०९:२८
११:०१	१२:५७	१५:१०	१७:२८	१९:४४	२१:५९	००:१६	०२:३३	०४:३८	०६:२५	०७:५५	०९:२४
१०:५७	१२:५३	१५:०६	१७:२४	१९:४०	२१:५५	००:१२	०२:२९	०४:३४	०६:२०	०७:५१	०९:२०
१०:५३	१२:४९	१५:०२	१७:२०	१९:३६	२१:५१	००:०८	०२:२५	०४:३०	०६:१६	०७:४७	०९:१६
१०:४९	१२:४५	१४:५८	१७:१६	१९:३२	२१:४७	००:०४	०२:२१	०४:२६	०६:१२	०७:४३	०९:१२
१०:४५	१२:४१	१४:५४	१७:१२	१९:२८	२१:४३	००:००	०२:१७	०४:२२	०६:०८	०७:३९	०९:०८
१०:४२	१२:३८	१४:५१	१७:०९	१९:२५	२१:४०	२३:५७	०२:१४	०४:१९	०६:०५	०७:३६	०९:०५
१०:३८	१२:३४	१४:४७	१७:०५	१९:२१	२१:३६	२३:५३	०२:१०	०४:१५	०६:०१	०७:३२	०९:०१

दैनिक अर्धप्रहरा चक्रम्

वार	दिन का अर्धप्रहरा	रात का अर्धप्रहरा
चं.	दि. ०७:५४-०९-१५। दि. ०२:३९-०४:००।	रा. १०:२१-११:५९।०३:१५-०४:५२।
मं.	दि. ०७:५४-०९:१६। दि. ०१:२२-०२:४४।	रा. ०७:०६-०८:४४।
बु.	दि. ०९:१६-१०:३८ । दि. १२:००-१:२२।	रा. १२:००-०१:३८। रा.०३:१६-०४:५४।
गु.	दि. ०२:४३-०५:२१।	रा. ११:५७-०१:३४ । रा.०४:४८-०६:३१
शु.	दि. ०९:१४-११:५८।	रा. ०८:४४-१०:२१ ।
श.	दि. ०६:३०-०७:५२।दि.१:२०-२:४२।दि.४:०४-५:३०।	रा.५:३०-०७:०७। रा.१:३५-३:१२।रा.४:४९-६:३०।
र.	दि. १०:३५-०१:११।	रा. १०:२२-११:५९ । रा. १:३६-३:१३।
चं.	दि. १०:३७-०१:२३।	रा. १०:२३-१२:००। रा. ३:१४-४:५१।
मं.	दि. ०७:५१-०९:१४। दि. ०१:२३-०२:४६।	रा. ०७:०९-०८:४६।
बु.	दि. ०९:१३-१०:३६ । दि.११:५९-०१:२२।	रा. ११:५७-०१:३३। रा. ०३:०९-४:४५।
गु.	दि. ०२:४४-५:३४ ।	रा. ११:५८-०१:३४। रा. ०४:४६-०६:२६
शु.	दि. ०९:१२-११:५८।	रा. ०८:४६-१०:२२।
श.	दि. ६:२५-७:४८। दि. १:२०-२:४३। दि. ४:०६-५:३५।	रा.५:३५-६:११।रा. १२:३५-२:११।रा.३:४७-५:२५।
र.	दि. १०:३६-१:२४।	रा. १०:२४-१२:००। रा. १:३६-३:१२।
चं.	दि. ०७:४८-०९:१२। दि. ०२:४८-४:१२।	रा. १०:२४-१२:००। रा. ३:१२-४:४८।

तिथिः १ चन्द्रमा सूर्योदये

ले, ११ शु, ९ बु, गु १२, १० सू श, ८, १ रा, ७ के, मं २, चं ४, ६, ३, ५

कामनापरक रूद्राभिषेक की विधिः– महाशिवरात्रि के दिन भगवान शिव का पूजन एवं रुद्राभिषेक का विशेष महत्व होता है।इस दिन कामनापरकरूद्राभिषेक करने से काये की सिद्धि शीघ्र होती है।धन की इच्छा रखने वाले व्यक्ति को स्फटिक शिवलिंग पर अथवा किसी भी धातु पारद या अन्य नर्मदेश्वर आदि लिङ्गों पर गो दुग्ध से,सुखसमृद्धि की इच्छावाले को पीसे हुए भांग को दूध चीनी एवं मेवे के घोल से,शत्रु विनाश के लिए सरसों के तेल से,पुत्र प्राप्ति हेतु मख्खन या घी से,आयु वृद्धि एवं रिद्धि-सिद्धि के लिए गो घृत से तथा मकान-भूमि,वाहन आदि की इच्छा रखने वाले को शहद से रूद्राष्टाध्यायी द्वारा अभिषेक कराना चाहिए। **शिवलिंग पूजन से ग्रहबाधा की निवृत्तिः–** यदि जन्म कुण्डली में सूर्य से सम्बन्धित्त कष्ट या रोग हो तो आक (श्वेत) पुष्पों पत्तों के द्वारा शिवलिंग पूजन से,यदि चन्द्रमां से सम्बन्धित कष्ट या रोग हो तो शिवलिंग पर काले तिल एवं दुग्ध द्वारा अभिषेक से,मंगल जनित कष्ट एवं रोग हो तो अमृता (गुरुच) के रस से,बुध जनित रोग एवं कष्ट हो तो विदारा के रस से,गुरु जन्य रोग एवं कष्ट हो तो हल्दी मिश्रित दुग्ध से,शुक्र से सम्बन्धित रोग एव कष्ट हो तो गोदूध के छाछ से,शनि से सम्बधित रोग एवं कष्ट हो तो कुशा मिश्रित गंगा जल से रुद्राभिषेक,राहुकेतु जनित्त रोग एवं कष्ट हो तो भांग-धतुरे के रस से अभिषेक करने से व्यक्ति के ग्रह जन्य सभी बाधाएं दुर हो जाती हैं तथा जातक निरोगी हो जाता है।✷ **काम्यप्रयोगे अभिषेकद्रव्यविचार–** लिख्यत्ते च मया द्रव्यमभिषेकात्मक परम्। जलेन वृष्टिमाप्नोति व्याधिशान्त्यै कुशोदकैः।।दध्ना च पशुकामाय श्रिया इक्षुरसेन च।मध्वाज्येन धनार्थी स्यान्मुमुक्षुस्तीर्थवारिणा।।पुत्रार्थी पुत्रमाप्नोति पयसां चाभिषेचनात्।वन्ध्या वा काकवन्ध्या वा मृतवत्सा च याऽङ्गना।।सद्यः पुत्रमवाप्नोति पयसा चाभिषेचनात्।ज्वरप्रकोपशान्त्यर्थं जलधारा शिवप्रिया।।घृतधारा शिवे कार्या यावन्मन्त्रसहस्रकम्।तदा वंशस्य विस्तारो जायते नात्र संशयः।।प्रमेहरोगशान्त्यर्थं प्राप्नुयान्मानसेप्सितम्। केवलं दुग्धधारा च तदा कार्या विशेषतः।।शर्करामिश्रिता तत्र यदा बुद्धिर्जडा भवेत्।श्रेष्ठा बुद्धिर्भवेत्तस्य कृपया शङ्करस्य च।।सार्षपेणैव तैलेन शत्रुनाशो भवेदिह।मधुना यक्ष्मराजोऽपि गच्छेद्वै शिवपूजनात्।।पापक्षयार्थी

तिथिः ८ चन्द्रमा सूर्योदये

ले, गु १२, १० बु, रा १, ११ सू शु श, ९, मं २, ८, ३, ५, चं ७ के, ४, ६

मधुना निर्व्याधिः सर्पिषा तथा।जीवनार्थी तु पयसा श्रीकामीक्षुरसेन वै।। पुत्रार्थीशर्करायास्तु रसेनार्च्चेच्छिवं तथा। महालिङ्गाभिषेकेण सुप्रीतः शङ्करोमुदा।। कुर्याद्विधानं रुद्राणां यजुर्वेदविनिर्मितम्। **शिवरात्रिव्रतनिर्णयः–** फाल्गुनकृष्णचतुर्दशी शिवरात्रिः। सा च निशीथव्यापिनी ग्राह्या।माधवीये-माघमासस्य शेषे या प्रथमा फाल्गुनस्य च। कृष्णाचतुर्दशी सा तु शिवरात्रिः प्रकीर्तिता।। त्रयोदश्यस्तगे सूर्ये चतसृष्वेव नाडिषु।भूतविद्धा तु या तत्र शिवरात्रि व्रतश्चरेत्।। स्मृत्यन्तरेऽपि-निशीथव्यापिनी ग्राह्या शिवरात्रिश्चतुर्दशी।रात्रौ जागरणं यस्मात्तस्मात्तां समुपोषयेत्।। **शिवरात्रिव्रतमाहात्म्यम्–** इदं व्रतं संयोगपृथक्त्व न्यायेन नित्यं काम्यं च। स्कान्दे यथा-परात्परतरं नास्ति शिवरात्रि परात्परम्। न पूजयति भक्त्येशं रुद्रं त्रिभुवनेश्वरम्। जन्तुजन्मसहस्रेषु भ्रमते नात्र संशयः।। वर्षे वर्षे महादेवि! नरो नारी पतिव्रता। शिवरात्रौ महादेवं नित्य भक्त्या प्रपूजयेत्।। अर्णवो यदि वा शुष्येत् क्षीयते हिमवानपि। चलन्त्येते कदाचिद्वै निश्चलं हि शिवव्रतम्।। ममभक्तस्तु यो देवि शिवरात्रि मुपोषकः। गणत्वमक्षयं दिव्यमक्षयं शिवशासनम्। सर्वान् भुक्त्वा महाभोगान् ततो मोक्षमवाप्नुयात्।। अहोरात्रव्रतं कार्यमशक्ते सति नक्तव्रतं कार्यम्। अस्मिन् दिने श्रीसाम्बशिवदर्शनपूजनादिकं सहस्राश्वमेध समं फलम्। रुद्रसूक्तेन पुरुषसूक्तेन वा श्रीशिवषोडशोपचारपूजनं कर्तव्यमिति। तत्रसंकल्पः– ममेहजन्मनि जन्मान्तरे वर्जित सकलपापक्षयार्थमायुरारोग्यैश्वर्यपुत्रपौत्रादिसकलकामना सिद्धिपूर्वकान्तेशिवसायुज्य प्राप्तयेशिवरात्रिदि नोत्सवपूजनं करिष्ये। **शिवपूजनध्यानम्–** ॐ नमस्ते रूद्र मन्यव उतोत इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः। **आसनम्–** ॐ या ते रूद्रशिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि।। **पाद्यम्–** ॐ यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे।शिवां गिरित्र तां कुरू मा हि सी पूरूषञ्जगत्।। **अर्घ्यम् –** ॐ शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामसि। यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मं सुमनाअसत्।। **आचमनम्–** ॐ अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्। अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त् सर्वाश्च यातुधान्योऽधराचीः परा सुव।। **स्नानम्–** ॐ असौ यस्ताम्रो अरूण उत बभ्रुः सुमङ्गलः। ये चैन रूद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशोऽवैषा हेड ईमहे।। **वस्त्रम्–** ॐ असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः।उतैनं गोपा अदृश्रन्न दृश्रन्नुदहार्यः स दृष्टो मृडयाति नः।। **यज्ञोपवीतम्–** ॐ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे। अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नमः।। **गन्धम्–** ॐ प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरार्त्न्योर्ज्याम्। याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो व्वप। **पुष्पमालाम्–** ॐविज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ उत। अनेशन्नस्य या इषव आभुरस्य निषङ्गधिः।। **धूपम्–** ॐ या ते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः। तयाऽस्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परि भुज।। **दीपम्–** ॐ परि ते धन्वनो हेतिरस्मान् वृणक्तु विश्वतः। अथो य इषुधिस्तवारे अस्मन्निधेहितम्।। **नैवेद्यम्–** ॐ अवतत्य धनुष्ट्व सहस्राक्ष शतेषुधे।निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव।। **ताम्बूलम्–** ॐ नमस्त आयुधायानातताय धृष्णवे। उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने।। **प्रदक्षिणा–** ॐ मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम्। मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रूद्र रीरिषः।।**पुष्पाञ्जलिः** –ॐ मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मानो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः। मा नो वीरान् रूद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित् त्वा हवामहे।।

फाल्गुनशुक्लपक्षः

शाके १९४४; संवत् २०७९; फसली १४३०; दिनाङ्क २१:०२:२०२३ ई. ततो दिनाङ्क ०७:०३:२०२३ ईस्वी या.। दक्षिणे राहु कालः। मार्गी पूर्वोदितो मंगलः गुरू शनि बुधः ततो ति ८ मार्गीबुधपश्चिमास्तः, मार्गी पश्चिमोदितोः शुक्रः,शिशिरर्तुः,याम्यगोलः,सौम्यायनम्,अयनांश २२:५०:५४।

तिथि वार	तिथ्यन्तः द. प.	तिथ्यन्तः घं. मि.	नक्षत्र	नक्षत्रान्तः द. प.	नक्षत्रान्तः घं. मि.	योग	योगान्तः द. प.	करणान्तः क. द. प.	चन्द्रराश्यन्तः रा. द. प.	चन्द्रराश्यन्तः घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू. उ. घं.मि.	सू. अ. घं.मि.	दिनाङ्काः सौ	दिनाङ्काः अं
०१ मं.	११:३५	दि.११:०१	शत.	११:३६	दि.११:०१	शिवः	०६:०५	ब. ११:३५	कु.५४:१२	रा.०४:०४	१०:०८:३२:४३	२८:०६	०६:२३	०५:३७	०९	२१
०२ बु.	०६:४१	दि.०९:०२	पू.भा	०८:२४	दि.०९:४४	साध्य	५२:३९	कौ. ०६:४१	मीन	अहोरात्र	१०:०९:३३:२०	२८:१०	०६:२२	०५:३८	१०	२२
०३ गु.	०२:३२	दि.०७:२२	उ.भा.	०६:०३	दि.०८:४६	शुभः	४६:५६	ग. ०२:३२	मीन	अहोरात्र	१०:१०:३३:५७	२८:१४	०६:२१	०५:३९	११	२३
०५ शु.	५७:०१	रा.शे.५:०८	रेवती	०४:२९	दि.०८:०८	शुक्लः	४१:५९	ब. २८:०८	मी.०४:२९	दि.०८:०८	१०:११:३४:१५	२८:१८	०६:२०	०५:४०	१२	२४
०६ श.	५५:५९	रा.०४:४४	अश्वि	०३:५७	दि.०७:५५	ब्रह्मः	३७:५६	कौ. २६:३०	मेष	अहोरात्र	१०:१२:३४:३३	२८:२२	०६:२०	०५:४०	१३	२५
०७ र.	५६:१४	रा.०४:४९	भरणी	०४:३७	दि.०८:१०	ऐन्द्रः	३४:५३	ग. २६:०७	मे.२०:०६	दि.०२:२१	१०:१३:३४:५१	२८:२६	०६:१९	०५:४१	१४	२६
०८ चं.	५७:४७	रा.शे.५:२५	कृति.	०६:३३	दि.०८:५५	वैधृतिः	३२:५१	वि. २७:०१	वृष	अहोरात्र	१०:१४:३५:०८	२८:३०	०६:१८	०५:४२	१५	२७
०९ मं.	६०:००	अहोरात्री	रोहि.	०९:४५	दि.१०:११	विष्क	३१:४९	बा. २८:५४	वृ.४१:५५	रा.११:०३	१०:१५:३५:२५	२८:३४	०६:१७	०५:४३	१६	२८
०९ बु.	००:३४	प्रा.०६:३०	मृग.	१४:०४	दि.११:५४	प्रीतिः	३१:३९	कौ. २९:११	मिथुन	अहोरात्र	१०:१६:३५:४२	२८:३८	०६:१६	०५:४४	१७	१
१० गु.	०४:२८	दि.०८:०३	आर्द्रा	१९:२९	दि.०२:०४	आयु.	३२:१३	ग. ००:३४	मिथुन	अहोरात्र	१०:१७:३५:५९	२८:४२	०६:१६	०५:४४	१८	२
११ शु.	०९:१३	दि.०९:५७	पुन.	२५:३४	दि.०४:३०	सौभा.	३३:२१	वि. ०४:२८	मि.०९:०२	दि.०९:५३	१०:१८:३६:१५	२८:४६	०६:१६	०५:४५	१९	३
१२ श.	१४:३१	दि.१२:०२	पुष्य	३२:०६	रा.०७:०४	शोभ.	३४:४३	बा. १४:३१	कर्क	अहोरात्र	१०:१९:३६:३१	२८:५०	०६:१४	०५:४६	२०	४
१३ र.	१९:५२	दि.०२:१०	आश्ले	३८:३८	रा.०९:४०	अतिग	३६:१२	तै. १९:५२	क.३८:३८	रा.०९:४०	१०:२०:३६:४७	२८:५४	०६:१३	०५:४७	२१	५
१४ चं.	२४:५४	दि.०४:१०	मघा	४४:४२	रा.१२:०५	सुकर्मा	३७:१५	व. २४:५४	सिंह	अहोरात्र	१०:२१:३७:०३	२८:५८	०६:१२	०५:४८	२२	६
१५ मं.	२९:११	सं.०५:५२	पू.फा.	५०:०५	रा.०२:१४	धृतिः	३६:४६	ब. २९:११	सिंह	अहोरात्र	१०:२२:३७:१८	२९:०२	०६:१२	०५:४८	२३	७

२१ सिद्धियोगमानं ५२:५७,च.मु.३०,याम्यश्रृंगं,कल्याणेश्वराज्जनकपुरपरिक्रमारम्भः,शिववास दि. ११:०१,पश्चिमयात्रा पू.भा.,मृत्युयोग दि.११:०१ या.।

२२ मुण्डनं कर्णवेध विवाह उ.भा.,उपनयन तृतीयायां,शिववास दि. ०९:०२ या.,पश्चिमयात्रा द्वितीयायां,सिद्धियोग दि.०९:०२ या.,ततो मृत्युयोग दि.०९:०२ उ.।

२३ चतुर्थीमानं ५६:४२,दग्ध ति.(०३:३२ उ.-५६:४२ या.),श्रीवैनायकी ४ व्रतं,मुण्डनं कर्णवेध द्विरागमनं देवादिप्रतिष्ठा तृतीयायां,अमृतयोग दि.०७:२२ या.,卐

२४ पञ्चकान्तः दि.०८:०८,विवाह दिवारात्रौ,मुण्डन,कर्णवेध,उपनयन,द्विरागमन,देवादिप्रतिष्ठा,उत्तरयात्रा रेवत्यां,ततो पश्चिमांविनायात्रा अश्वि,सर्वार्थसिद्धियोग दि.०८:०८ या.।

२५ शिववास,पूर्वविनायात्रा अश्वि., अमृतयोग रा.०४:४४ या.। 卐 ततो मृत्युयोग दि.०७:२२ उ.,भद्रारंभः३०:३५ उपरि ततो भद्रांतः५६:५२ यावत्।

२६ सिद्धियोग रा.०४:४९ उ.।

२७ विवाह द्विरागमन दक्षिणयात्रा अष्टमी रोहिण्यां,सर्वार्थसिद्धियोग दि.०८:५५ उ.।

२८ शिववास, पूर्वदक्षिणयात्रा रोहि. ततो उत्तरांविनायात्रा मृगशिरसि। 卐सिद्धियोग दि.०९:५७ या.,सर्वार्थसिद्धियोग दि.०४:३० या.,भद्रांतः०९:१३ यावत्।

१ मार्च ०१, मुण्डन कर्णवेध उपनयन विवाह द्विरागमनं गृहप्रवेश देवादिप्रतिष्ठा उत्तरविना यात्रा दशम्यां मृगशिरे,शिववास प्रा. ०३:३० या.,सर्वार्थसिद्धियोग दि.११:५४ या.।

२ गृहारम्भप्रवेश मुण्डन कर्णवेध द्विरागमनं पश्चिमयात्रा पुन.,उपनयन,सिद्धियोग दि.०८:०३ या., भद्रारंभः३६:५० उपरि ।

३ आमलकी ११ व्रतं सर्वेषां,गृहारम्भप्रवेशो,कर्णवेध मुण्डन द्विरागमनश्चैकादश्यां,क्षत्रियवैश्योपनयन,देवादिप्रतिष्ठा,शिववास दि.०१:५७ उ.,卐

४ गोद्धना पारणं,श्रीगोविन्द १२,समुद्रस्नानं,श्रीजगन्नाथदर्शन,प्रदोष १३ व्रतं,✸गृहप्रवेश पुष्ये,पूर्वभाद्रेरविः०७:२०,शिववास,पूर्वांविनायात्रा पुष्ये।

५ प्रदोष १४ व्रतं, शिववाश दि. ०२:१० या.,सिद्धियोग दि.०२:१० या.।

६ पूर्णिमा व्रतं,विवाह पूर्णिमायां,उत्तरयात्रा पू.फा.,अमृतयोग दि.०४:१० उ.,भद्रारंभः२४:५४ उपरि ततो भद्रांतः ५७:०२ यावत्। ●पूर्वयात्रा पूर्णिमायां,मृत्युयोग सं. ०५:४० उ.।

७ फाल्गुनी १५ स्नानदानादिः,कुलदेवताभ्यःसिन्दूरार्पन (पातरिदानं),होलिकादाहः(प्रदोष ०७:२४ या.),कल्याणेश्वरजनकपुरपरिक्रमान्तः,शिववास दि.०५:४० उ.●

मिश्रमान कालिक दैनिक स्पष्टग्रहाः

ति	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं
१	०१:२०:३४:१३	०९:२५:१८:५८	११:१६:४०:१४	११:०८:४६:१७	१०:०१:२१:५४	०६:१५:३१:२०	४४:०३
२	०१:२०:५५:२३	०९:२७:०७:५१	११:१६:५३:१३	११:०९:५९:४८	१०:०१:२९:१५	०६:१५:२८:१०	४४:०५
३	०१:२१:१६:३३	०९:२८:५६:४४	११:१७:०६:१२	११:११:१३:१९	१०:०१:३६:३६	०६:१५:२५:००	४४:०७
५	०१:२१:४०:२३	१०:००:००:५४	११:१७:१९:४६	११:१२:२६:४८	१०:०१:४४:०७	०६:१५:२१:४९	४४:०९
६	०१:२२:०४:१३	१०:०२:०५:०४	११:१७:३३:२०	११:१३:४०:१८	१०:०१:५१:३८	०६:१५:१८:३८	४४:११
७	०१:२२:२८:०३	१०:०४:०९:१४	११:१७:४६:५४	११:१४:५३:४८	१०:०१:५९:०८	०६:१५:१५:२७	४४:१३
८	०१:२२:५१:५३	१०:०६:१३:२३	११:१८:००:२८	११:१६:०७:१८	१०:०२:०६:३८	०६:१५:१२:१६	४४:१५
९	०१:२३:१५:४२	१०:०८:१७:३२	११:१८:१४:०३	११:१७:२०:४८	१०:०२:१४:०८	०६:१५:०९:०५	४४:१७
९	०१:२३:३९:३१	१०:१०:२१:४१	११:१८:२७:३८	११:१८:३४:१८	१०:०२:२४:३८	०६:१५:०५:५४	४४:१९
१०	०१:२४:०३:२०	१०:१२:२५:५०	११:१८:४१:१३	११:१९:४७:४८	१०:०२:२९:०८	०६:१५:०२:४४	४४:२१
११	०१:२४:२८:४३	१०:१४:१६:५१	११:१८:५४:३४	११:२०:५४:१२	१०:०२:३६:३९	०६:१४:५९:३३	४४:२३
१२	०१:२४:५४:०५	१०:१६:०६:५१	११:१९:०७:५५	११:२२:००:३६	१०:०२:४४:१०	०६:१४:५६:२२	४४:२५
१३	०१:२४:१९:२७	१०:१७:५७:५१	११:१९:२१:१६	११:२३:०७:०१	१०:०२:५१:४१	०६:१४:५३:११	४४:२७
१४	०१:२५:४४:४९	१०:१९:४८:५१	११:१९:३४:३७	११:२४:१३:२६	१०:०२:५९:१२	०६:१४:५०:००	४४:२९
१५	०१:२६:१०:११	१०:२१:३९:५१	११:१९:४७:५८	११:२५:१९:५१	१०:०३:०६:४३	०६:१४:४६:४९	४४:३१

दैनिक लग्नसारणी चक्रम्

मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिं.अं.	क.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
१०:३४	१२:३०	१४:४३	१७:०१	१९:१७	२१:३२	२३:४९	०२:०६	०४:११	०५:५७	०७:२८	०८:५७
१०:३०	१२:२६	१४:३९	१६:५७	१९:१३	२१:२८	२३:४५	०२:०२	०४:०७	०५:५३	०७:२४	०८:५३
१०:२६	१२:२२	१४:३५	१६:५३	१९:०९	२१:२४	२३:४१	०१:५८	०४:०३	०५:४९	०७:२०	०८:४९
१०:२३	१२:१९	१४:३२	१६:५०	१९:०६	२१:२१	२३:३८	०१:५५	०४:००	०५:४६	०७:१७	०८:४६
१०:१९	१२:१५	१४:२८	१६:४६	१९:०२	२१:१७	२३:३४	०१:५१	०३:५६	०५:४२	०७:१३	०८:४२
१०:१५	१२:११	१४:२४	१६:४२	१८:५८	२१:१३	२३:३०	०१:४७	०३:५२	०५:३८	०७:०९	०८:३८
१०:११	१२:०७	१४:२०	१६:३८	१८:५४	२१:०९	२३:२६	०१:४३	०३:४८	०५:३४	०७:०५	०८:३४
१०:०७	१२:०३	१४:१६	१६:३४	१८:५०	२१:०५	२३:२२	०१:३९	०३:४४	०५:३०	०७:०१	०८:३०
१०:०३	११:५९	१४:१२	१६:३०	१८:४६	२१:०१	२३:१८	०१:३५	०३:४०	०५:२६	०६:५७	०८:२६
०९:५९	११:५५	१४:०८	१६:२६	१८:४२	२०:५७	२३:१४	०१:३१	०३:३६	०५:२२	०६:५३	०८:२२
०९:५६	११:५२	१४:०५	१६:२३	१८:३९	२०:५४	२३:११	०१:२८	०३:३३	०५:१९	०६:५०	०८:१९
०९:५२	११:४८	१४:०१	१६:१९	१८:३५	२०:५०	२३:०७	०१:२४	०३:२९	०५:१५	०६:४६	०८:१५
०९:४८	११:४४	१३:५७	१६:१५	१८:३१	२०:४६	२३:०३	०१:२०	०३:२५	०५:११	०६:४२	०८:११
०९:४४	११:४०	१३:५३	१६:११	१८:२७	२०:४२	२२:५९	०१:१६	०३:२१	०५:०७	०६:३८	०८:०७
०९:४०	११:३६	१३:४९	१६:०७	१८:२३	२०:३८	२२:५५	०१:१२	०३:१७	०५:०३	०६:३४	०८:०३

दैनिक अर्धप्रहरा चक्रम्

वार	दिन का अर्धप्रहरा	रात का अर्धप्रहरा
मं.	दि. ०७:४७-०९:११ दि. ०१:२३-०२:४७	रा. ०७:१२-०८:४७
बु.	दि. ०९:१०-१०:३४ । दि. १२.१८-०१.४२	रा. ११:५८-०१:३३ रा.२:०८-०३:४३
गु.	दि. ०२:४५-०५:३९	रा. ११:५९-०१:३४ रा. ०४:४८-०६:२१
शु.	दि. ०९:१०-१२:००	रा. ०८:५०-१०:२५
श.	दि. ६:१०-७:४० दि १:२४-२:५० दि ४:१५-५:४०	रा. ५:४०-७:१५ रा.१:३५-३:१० रा. ४:४५-६:२०
र.	दि. १०:३४-०१:२४	रा. १०:२३-११:५७ । रा. ०१:३१-३:०५
चं.	दि ०७:४३-०९:०८ दि ०२:४८-४:१३	रा. १०.२४-११.५८ रा. ०३:०६-४:४०
मं.	दि ०७:४२-०९:०७ दि ०१:२२-०२:४७	रा. ०७:१७-०८:५१
बु.	दि ०८:०८-०९:३३ दि १२:००-०१:२६	रा. १२:००-०१:३३ रा. ०३:०८-०४:४२
गु.	दि. ०२:५२-०५:४४	रा. १२:००-०१:३४ रा. ०४:४२-०६:१६
शु.	दि. ०९:०८-१२:००	रा. ०८:५१-१०:२५
श.	दि. ६:१४-७:४० दि १:२४-२:५० दि ४:१६-५:४६	रा. ५:४६-७:११ रा. १:३१-३:०४ रा. ४:३७-६:१४
र.	दि. १०:३१-०१:२३	रा. १०:२६-११:५९ रा. ०१:३२-०३:०५
चं.	दि ०७:३९-०९:०६ दि ०२:५४-०४:२१	रा. १०:२७-१२:०० रा. ०३:०६-०४:३९
मं.	दि ०७:३९-०८:०६ दि ०१:२७-०२:५४	रा. ०७:२१-०८:५४

तिथिः १ मंगल सूर्योदये

गु शु १२ | ल ११ | १० बु
रा १ | सू चं श | ९
२ मं | ८
३ | ४ | ५ | ६ | ७ के

होलिकोत्सवपर्व–होली जहाँ एक ओर सामाजिक एवं धार्मिक पर्व है,वहीं यह रंगों का त्योहार भी है।बालक से लेकर बूढ़े,नर–नारी सभी इस पर्व को बड़े उत्साह से मनाते हैं और उनमें इतना उमग बढ़ जाता है कि सभी प्राणी मात्र आनन्द मग्न दिखाई देते हैं।यह पर्व सम्पूर्ण भारत देश में मनाया जाता है।इस अवसर पर लकड़ियों तथा कडों आदि का ढेर लगाकर होलिका पूजन किया जाता है,फिर उसमें आग लगायी जाती है।पूजन करते समय अग्रिम मन्त्र पढ़ा जाता है।**असृक्याभयसंत्रस्तैः कृत्वा त्वं होलिबालिशैः।अतस्त्वां पूजायिष्यामि भूते भूतिप्रदा भव।।**इस मन्त्र को पढ़ते हुए होलिकायै नमः कहता हुआ चन्दन आदि से पूजन करके होलिका की परिक्रमा करें। तीन परिक्रमा करनी चाहिए।परिक्रमा करते समय भग,लिंग आदि शब्दों का उच्चारण भी किया जाता है और उसी शब्द के द्वारा वह राक्षसी तृप्ति को प्राप्त करती है।दूसरे दिन जाकर होलिका का भस्म धारण करना चाहिए।भस्म धारण करने का मन्त्र इस प्रकार है। खेत से नवीन अन्न को होलिका में हवन करके प्रसाद लेने की परम्परा भी है।होलिकोत्सव मनाने के सम्बन्ध में अनेक मत प्रचलित है। यथा–मान्यता के अनुसार इस पर्व का सम्बन्ध"काम–दहन" से है। भगवान् शंकर ने अपनी क्रोधाग्नि से कामदेव को इसी दिन भस्म कर दिया था तथा अगले दिन रति की प्रार्थना पर कामदेव को अनंग रुप में जीवित कर दिया था।अतः कामदेव की उत्पत्ति के कारण इस दिन सभी प्रसन्नता से झूम उठते है तथा अनंग पर्व मनाते हैं।दूसरा इस पर्व का सम्बन्ध हिरण्यकशिपु की बहन ढुण्ढा (होलिका) राक्षसी की स्मृति से है।ऐसा कहा जाता है कि हिरण्यकशिपु की बहन होलिका वरदान के प्रभाव से नित्य प्रति अग्नि स्नान करती और जलती नहीं थी।हिरण्यकशिपु ने अपनी बहन से प्रह्लाद को गोद में लेकर अग्नि स्नान करने को कहा।उसने समझा था कि ऐसा करने से प्रह्लाद जल जायेगा तथा होलिका बच निकलेगी।किन्तु हुआ उल्टा,हिरण्यकशिपु की बहन ढुण्ढा (होलिका) तो जल गयी,किन्तु प्रह्लाद जीवित बच गये।तभी से इस पर्व को मनाने की प्रथा चल पड़ी।भविष्यपुराण में कहा गया है कि एक बार युधिष्ठिर ने कृष्ण से

तिथिः ८ चन्द्रमा सूर्योदये

गु शु १२ | ले ११ | १०
रा १ | सू श बु | ९
चं २ मं | ८
३ | ४ | ५ | ६ | ७ के

पूछा कि फाल्गुन की पूर्णिमा को प्रत्येक गाँव एवं नगर में यह उत्सव क्यों होता है,प्रत्येक घर में बच्चे क्यों क्रीड़ामय हो जाते हैं और होलिका क्यों जलाते हैं,उसमें किस देवता की पूजा होती है,किसने इस उत्सव का प्रचार किया,इसमें क्या होता है और यह "अडाडा" क्यों कही जाती है।कृष्ण ने युधिष्ठिर से राजा रघु के विषय में एक किंवदन्ती कही।जो इस प्रकार है–राजा रघु के पास लोग यह कहने के लिए गये कि ढोण्ढा नामक एक राक्षसी बच्चों को दिन–रात डराया करती है।राजा द्वारा पूछने पर उनके पुरोहित ने बताया कि वह एक राक्षसी है जिसे शिव ने वरदान दिया है कि उसे,देवता एवं मानव आदि नहीं मार सकते हैं और न वह अस्त्र–शस्त्र या जाड़ा या गर्मी या वर्षा में मर सकती है,किन्तु शिव ने इतना कह दिया है कि वह क्रीड़ायुक्त बच्चों से भय खा सकती है।पुरोहित ने यह भी बताया कि फाल्गुन की पूर्णिमा को जाड़े की ऋतु समाप्त होती है और ग्रीष्म ऋतु का आगमन होता है,तब लोग हँसे एवं आनन्द मनाये,बच्चे लकड़ी के टुकड़े को लेकर बाहर प्रसन्नतापूर्वक निकल पड़े,लकड़ियाँ एवं घास एकत्र करें,रक्षोघ्न मन्त्रों के साथ उसमें आग लगायें,तब यह राक्षसी भागेगी।तभी से यह परम्परा चल पड़ी है।**होलिकोत्सवः**– फाल्गुनपौर्णमास्यां होलिकोत्सवः।नृपं प्रति नारदवचो भविष्ये–अद्य पञ्चदशी शुक्ला फाल्गुनस्य नराधिप।अभयं चैव लोकानां दीयतां परमेश्वर।।यथाशंकिता लोका रमन्ति च हसन्ति च।दारुजानि च खण्डानि गृहीत्वा सुसमुत्सुकाः।।योधा इव विनिर्यान्तु शिशवः सम्प्रहर्षिताः।सञ्चयं शुष्ककाष्ठानामुपलानाञ्च कारयेत्।।तत्राग्निं विधिवद्हुत्वा रक्षोघ्नैः मन्त्रविस्तरैः।ततः किलकिला शब्दैस्ताल शब्दैर्मनोहरैः।।तेन शब्देन सा पापा होमेन च निराकृता।सा ढुंढाख्या राक्षसी तत्रैव।।सर्वदुष्टापहो होमः सर्वरोगोपशान्तिदः।क्रियतेऽस्यां द्विजैः पार्थ तेन सा होलिका स्मृता इति।।तमग्निं त्रिः परिक्रम्य गायन्तु च हसन्तु च।जलपन्तु स्वेच्छया लोका निःशङ्काः यस्य यन्मतम्।।**होलिकानिर्णयः**–फाल्गुनपौर्णमासी होलिका।सा च सायाह्नव्यापिनी वा प्रदोष व्यापिनी ग्राह्या।सायाह्ने होलिका कुर्यात् पूर्वाह्णे क्रीडनं गवाम्।।प्रदोषव्यापिनी ग्राह्या पौर्णिमा फाल्गुनी सदा।तस्यां भद्रामुखं त्यक्त्वा पूज्या होला निशामुखे।।श्रावणी दुर्गनवमी दूर्वा चैव हुताशनी।पूर्वविद्धैव कर्तव्या शिवरात्रिर्बलेर्दिनम्।।दिनद्वये प्रदोषव्याप्तौ परैव।भद्रायां द्वे न कर्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा।श्रावणी नृपतिं हन्ति ग्रामं दहति फाल्गुनी।।दिनार्धात्परतोऽपि स्यात्फाल्गुनी पूर्णिमा यदि।रात्रौ भद्रावसाने तु होलिका दीप्यते तदा।।**होलिकापूजनमन्त्रः**– असृक्पाभयसंत्रस्तैः कृत्वा त्वं होलिबालिशैः।अतस्त्वां पूजयिष्यामि भूते भूतिप्रदाभव।।**चन्द्रग्रहणे होलिकाविचारः**–सर्वेषामेव वर्णानां सूतकं राहुदर्शने।स्नात्वा कर्माणि कुर्वीत श्रितमन्त्रं विवर्जयेत्।अत्र चेच्चन्द्रग्रहणं तदा ततोऽर्वाङ् निशि भद्रावर्जं पौर्णमास्यां होलिकादीपनम्।अथ परेऽह्निग्रस्तोदयस्तदा पूर्वदिने भद्रावर्जं रात्रि चतुर्थयामे विष्टिपुच्छे वा होलिका कार्या।उक्तञ्चलल्लेन यथा–पृथिव्यां यानि कार्याणि शुभानि त्वशुभानि तु। तानि सर्वाणि सिध्यन्ति विष्टिपुच्छे न संशयः।।प्रसङ्गाद्विष्टिपुच्छन्तु ज्यौतिषे–मेषार्कनखनाडीभ्यो भद्रापुच्छं घटीद्वयम्।क्रमेण धवलेपक्षे व्युत्क्रमेण सितेतरे।।**होलिकादाहे वायुफलमाहः**–पूर्वे वायौ होलिकायां प्रजाभूपालयोः सुखम्।पलायनञ्च दुर्भिक्षं दक्षिणे जायते ध्रुवम्।। पश्चिमे तृणसम्पत्तिरुत्तरे धान्यसम्भवः।यदिशानेऽप्यनावृष्टिरूर्ध्वेराजसमाश्रयेत्।।

चैत्रकृष्णपक्षः

शाके १९४४; संवत् २०७९; फसली १४३०; दिनाङ्क ०८:०३:२०२३ ई. ततो दिनाङ्क २१:०३:२०२३ ईस्वी या.। दक्षिणे राहु कालः ।
मार्गी पूर्वोदितो मंगलः गुरूः शनिः, मार्गी पश्चिमास्तोः बुधः,मार्गी पश्चिमोदितोः शुक्रः, शिशिरर्तुः ततो ति.८ वसन्तर्तुः,याम्यगोलः,सौम्यायनम्,अयनांश २२:५०:५४।

तिथि वार	तिथ्यन्तः द. प.	घं. मि.	नक्षत्रान्तः नक्षत्र	द. प.	घं. मि.	योगान्तः योग	द. प.	करणान्तः क. द. प.	चन्द्रराश्यन्तः रा. द.प.	घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमान द. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	दिनाङ्काः सौ	अं	
०१ बु.	३२:२८	रा.०७:१०	उ.फा.	५४:१९	रा.०३:५५	शूलः	३६:२५	कौ. ००:५०	सिं.०६:०६	दि.०८:७	१०:२३:३७:३३	२९:०६	०६:११	०५:४९	२४	८	चैत्रे लक्ष्मणास्नानं महापुण्यप्रदं,होलिकोत्सवः,(होली),होलीकामस्मधारणं,चैलस्नानं,सप्ताडोरकबन्धनं,विवाह दिवारात्रौ,द्विरागमन,शिववास ❖ ❖ अमृतयोग रा.०७:१० या.,ततो सिद्धियोग रा.०७:१० उ.।
०२ गु.	३४:४०	रा.०८:०२	हस्त	५७:३०	रा.०५:१०	गण्डः	३५:१७	ग. ०३:३४	कन्या	अहोरात्र	१०:२४:३७:४८	२९:१०	०६:१०	०५:५०	२५	९	गृहारम्भः, मुण्डनं, विवाह दिवारात्रौ, द्विरागमन, पूर्वयात्रा, अमृतयोग रा.०८:०२ उ.।
०३ शु.	३५:२९	रा.०८:२१	चित्रा	५९:२२	रा.शे.५:५४	वृद्धिः	३४:०९	वि. ०५:०५	क.२८:२६	सं.०५:३१	१०:२५:३७:४३	२९:१४	०६:०९	०५:५१	२६	१०	दग्ध ति.(३५:२९ उ.),गृहारम्भः,मुण्डनं,कर्णवेध,द्विरागमनं तृतीयायां,पूर्वदक्षिणयात्रा कन्यांस्थे चन्द्रः ततो दक्षिणयात्रा,अमृतयोग रा.०८:२१ उ.,भद्रारंभः०५:०५ उपरि ●
०४ श.	३५:०१	रा.०८:०८	स्वा.	६०:००	अहोरात्र	ध्रुवः	३०:५६	बा. ०५:१५	तुला	अहोरात्र	१०:२६:३७:३८	२९:१८	०६:०८	०५:५२	२७	११	दग्ध ति.(३५:०१ या.), श्रीविकट ४ व्रतं,शिववास,दक्षिणपश्चिमयात्रा चतुर्थियां, सिद्धियोग रा.०८:०८ या.,ततो मृत्युयोग रा.०८:०८ उ.। ●ततो भद्रांतः३५:२९ यावत्।
०५ र.	३३:२०	रा.०७:२८	स्वा.	००:०२	प्रा.०६:०९	व्या.	२६:५०	तै. ०४:११	तु.४७:३५	रा.०१:१०	१०:२७:३७:३३	२९:२२	०६:०८	०५:५२	२८	१२	शिववास, दक्षिणयात्रा स्वा.,अमृतयोग रा.०७:२८ या.,ततो मृत्युयोग रा.०७:२८ उ.।
०६ चं.	३०:३३	सं.०६:२०	विशा.	०३:२८	दि.०७:३०	हर्षण	२१:४८	व. ०१:५७	वृश्चिक	अहोरात्र	१०:२८:३७:२८	२९:२६	०६:०७	०५:५३	२९	१३	अनुराधामानं ५८:०१,विवाह अनुराधायां,पश्चिमोत्तरयात्रा षष्ठी अनुराधायां,सिद्धियोग सं.०६:२० या.,ततो मृत्युयोग सं.०६:२० उ.,सर्वार्थसिद्धियोग दि.०७:३० उ.,▼
०७ मं.	२६:४७	दि.०४:४९	ज्येष्ठा	५५:२६	रा.०४:१६	वज्रः	१५:५९	बा. २६:४७	वृ.५५:२६	वृ०४:१६	१०:२९:३७:२३	२९:३०	०६:०६	०५:५४	३०	१४	मासान्तः,शिववास दि.०४:४९ उ.,अमृतयोग दि.०४:४९ या.,ततो दि.०४:४९ उ. । ▼ भद्ररभः३०:३३ उपरि ततो भद्रांतः५८:४० यावत्।
०८ बु.	२२:०९	दि.०२:५७	मूल	५२:१६	रा.०२:५९	सिद्धिः	०९:३०	तै. २२:०९	धनु	अहोरात्र	११:००:३७:१८	२९:३४	०६:०५	०५:५५	०१	१५	शीतलाष्टमी,मीनेरविः ०७:११, षड्शीतिसंक्रान्तिपुण्यकालं दिवा घं. ०८:५६ उ.०२:५७ यावत् दिने,पुण्याहः,कामख्याकुम्भयोगेः, शिववास दि.०२:५७ उ.,।
०९ गु.	१६:५४	दि.१२:५०	पू.षा.	४८:३३	रा.०१:२९	व्यति.	०२:२७	व. १६:५७	धनु	अहोरात्र	११:०१:३७:१२	२९:३८	०६:०४	०५:५६	०२	१६	वरीयानयोगमनं ५२:३३,मासादिः,सिद्धियोग दि.१२:५१ उ.। ꖿअमृतयोगदि.०८:१२ या.,सर्वार्थसिद्धियोग रा.१०:१२ उ.,भद्रांतः११:१६ यावत्।
१० शु.	११:१६	दि.१०:३४	उ.षा.	४४:३२	रा.११:५३	परिघः	४७:२०	ब. ११:१६	ध.०२:३३	दि.०७:०५	११:०२:३६:५६	२९:४२	०६:०४	०५:५६	०३	१७	शिववास दि.१०:३४ उ.,पश्चिमांविना श्रवणे, सिद्धियोग दि.१०:३४ उ.,सर्वार्थसिद्धियोग रा.११:५३ उ., भद्रारंभः४४:०६ उपरि ।
११ श.	०५:२२	दि.०८:१२	श्रव.	४०:२२	रा.१०:१२	शिवः	३९:३७	कौ. ०५:२२	मकर	अहोरात्र	११:०३:३६:४१	२९:४६	०६:०३	०५:५७	०४	१८	द्वादशीमानं ५४:०३,पापमोचिनी ११ व्रतं सर्वेषां,पञ्चकारम्भःदि.१०:१२ उ.,✵उत्तरभाद्रेरविः२७:५८,शिववास दि.०८:१२ या.,पूर्वविनायात्रा श्रवणे,ꖿ
१३ र.	५३:३२	रा.०३:२७	धनि.	३६:१९	रा.०८:३४	सिद्धः	३१:४९	व. २६:१२	म.०८:२१	दि.०९:२२	११:०४:३६:२६	२९:५०	०६:०२	०५:५८	०५	१९	गोघृतेन पारणं,प्रदोष १३ व्रतं, सिद्धियोग रा.०३:२७ या.,भद्रारंभः५३:३२ उपरि ।
१४ चं.	४८:०३	रा.०१:१४	शत.	३१:५५	सं.०६:४७	साध्य	२४:२०	श. २०:४८	कुम्भ	अहोरात्र	११:०५:३६:१०	२९:५४	०६:०१	०५:५९	०६	२०	प्रदोष १४ व्रतं, पश्चिमयात्रा पू.भा.,भद्रांतः२०:४८ यावत्।
३० मं.	४३:०७	रा.११:१५	पू.भा.	२९:१६	सं.०५:४२	शुभः	१७:१३	ना. १५:३५	कु.१४:५५	दि.११:५८	११:०६:३५:५४	२९:५८	०६:००	०६:००	०७	२१	चैत्री ३०, स्नानदानादिः,शिववास,मृत्यूयोग रा.११:१५ उ.।

मिश्रमान कालिक दैनिक स्पष्टग्रहाः

ति	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमान
१	०१:२६:३५:३३	१०:२३:३०:५१	११:२०:०१:१९	११:२६:२६:१६	१०:०३:१४:१४	०६:१५:४३:३९	४४:३३
२	०१:२७:००:५५	१०:२५:२२:५१	११:२०:१४:४०	११:२७:३२:४१	१०:०३:२१:४४	०६:१४:४०:२९	४४:३५
३	०१:२७:२८:००	१०:२७:१५:०९	११:२०:२९:०९	११:२८:४६:०१	१०:०३:२८:४२	०६:१५:३७:१८	४४:३७
४	०१:२७:५५:०५	१०:२९:०७:२७	११:२०:४३:३८	११:२९:५९:२१	१०:०३:३५:४०	०६:१५:३४:०७	४४:३९
५	०१:२८:२२:०८	११:००:५९:४५	११:२०:५८:०७	००:०१:१२:४२	१०:०३:४०:३८	०६:१५:३०:५६	४४:४१
६	०१:२८:४९:१२	११:०२:५२:०३	११:२१:१२:३६	००:०२:२६:०३	१०:०३:४९:३६	०६:१५:२७:४५	४४:४३
७	०१:२९:१६:१६	११:०४:४४:२१	११:२१:२७:०६	००:०३:३९:२४	१०:०३:५६:३४	०६:१५:२४:३४	४४:४५
८	०१:२९:४३:२०	११:०६:३६:३८	११:२१:४१:३६	००:०४:५२:४५	१०:०४:०३:३२	०६:१५:२१:२४	४४:४७
९	०२:००:१०:२४	११:०८:२८:५५	११:२१:५६:०६	००:०६:०६:०६	१०:०४:१०:२९	०६:१४:१८:१४	४४:४९
१०	०२:००:३९:००	११:१०:१७:०८	११:२२:१०:२४	००:०७:१७:०५	१०:०४:१७:०३	०६:१४:१५:०३	४४:५१
११	०२:०१:०७:२६	११:१२:०५:२१	११:२२:२४:४३	००:०८:२८:०४	१०:०४:२३:३७	०६:१४:११:५२	४४:५३
१३	०२:०१:३५:५२	११:१३:५३:३४	११:२२:३९:०२	००:०९:३९:०३	१०:०४:३०:११	०६:१४:०८:४१	४४:५५
१४	०२:०२:०४:१८	११:१५:४१:४६	११:२२:५३:२१	००:१०:५०:०२	१०:०४:३६:४५	०६:१४:०५:३०	४४:५७
३०	०२:०२:३२:४४	११:१७:२९:५८	११:२३:०७:०४	००:१२:०१:०१	१०:०४:४३:१९	०६:१४:०२:१९	४४:५९

दैनिक लग्नसारणी चक्रम्

मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिं.अं.	क.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
०९:३६	११:३२	१३:४५	१६:०३	१८:१९	२०:३४	२२:५१	०१:०८	०३:१३	०५:५९	०६:३०	०७:५९
०९:३३	११:२९	१३:४२	१६:००	१८:१६	२०:३१	२२:४८	०१:०५	०३:१०	०४:५६	०६:२७	०७:५६
०९:२९	११:२५	१३:३८	१५:५६	१८:१२	२०:२७	२२:४४	०१:०१	०३:०६	०४:५२	०६:२४	०७:५२
०९:२५	११:२१	१३:३४	१५:५२	१८:०७	२०:२३	२२:४०	००:५७	०३:०२	०४:४८	०६:२१	०७:४८
०९:२१	११:१७	१३:३०	१५:४८	१८:०४	२०:१९	२२:३६	००:५३	०२:५८	०४:४४	०६:१८	०७:४४
०९:१७	११:१३	१३:२६	१५:४४	१८:००	२०:१५	२२:३२	००:४९	०२:५४	०४:४०	०६:१५	०७:४०
०९:१३	११:०९	१३:२२	१५:४०	१७:५६	२०:११	२२:२८	००:४५	०२:५०	०४:३६	०६:०९	०७:३६
०९:१०	११:०६	१३:१९	१५:३७	१७:५३	२०:०८	२२:२५	००:४२	०२:४७	०४:३३	०६:०६	०७:३३
०९:०६	११:०२	१३:१५	१५:३३	१७:४९	२०:०४	२२:२१	००:३८	०२:४३	०४:२९	०६:०१	०७:२९
०९:०२	१०:५८	१३:११	१५:२९	१७:४५	२०:००	२२:१७	००:३४	०२:३९	०४:२५	०५:५६	०७:२५
०८:५९	१०:५५	१३:०७	१५:२६	१७:४२	१९:५७	२२:१४	००:३१	०२:३६	०४:२२	०५:५३	०७:२२
०८:५५	१०:५१	१३:०४	१५:२२	१७:३८	१९:५३	२२:१०	००:२७	०२:३२	०४:१८	०५:४९	०७:१८
०८:५१	१०:४७	१३:००	१५:१८	१७:३४	१९:४९	२२:०६	००:२३	०२:२८	०४:१४	०५:४५	०७:१४
०८:४८	१०:४४	१२:५७	१५:१५	१७:३१	१९:४६	२२:०३	००:२०	०२:२५	०४:११	०५:४२	०७:११

दैनिक अधप्रहरा चक्रम्

वार	दिन का अर्धप्रहरा	रात का अर्धप्रहरा
बु.	दि.९:०५-१०:३२। दि.११:५९-०१:२६।	रा.११:५४-०१:२६। रा.०२:५८-०४:२०।
गु.	दि.०२:५२-०५:५०।	रा.११:५८-०१:३०। रा.०४:३४-०६:१०।
शु.	दि.०९:०३-११:५७।	रा.०८:५५-१०:२७।
श.	दि.६:८-७:३६। दि.१:२८-२:५६।४३। दि.४:२४-५:५२।	रा.५:५२-७:२४। रा.१:३२-३:०४। रा.४:३६-६:०८।
र.	दि.१०:३२-०१:२८।	रा.१०:२८-१२:००। रा.१:३२-०३:०४।
चं.	दि.०७:३५-०९:०३। दि.०२:५५-०४:२३।	रा.१०:२६-११:५७। रा.०२:५९-०४:२०।
मं.	दि.०७:३४-०९:०२। दि.०१:२६-०२:५४।	रा.०७:२५-०८:५६।
बु.	दि.०९:०१-१०:२९। दि.११:५७-०१:२५।	रा.११:५८-०१:२९। रा.०३:००-०४:३१।
गु.	दि.०२:५८-०५:५६।	रा.१२:००-०१:३१। रा.०४:३३-०६:०४।
शु.	दि.०९:०२-१२:००।	रा.०८:५८-१०:२९।
श.	दि.६:०३-७:३२। दि.१:२८-२:५७। दि.४:२६-५:५७।	रा.५:५७-७:२७। रा.१:२७-०२:५७। रा.४:२७-६:०३।
र.	दि.१०:२९-०१:२७।	रा.१०:२८-११:५८। रा.०१:२८-०२:५८।
चं.	दि.०७:३०-०८:५९। दि.०२:५५-०४:२४।	रा.१०:२९-११:५९। रा.०२:५९-०४:२९।
मं.	दि.०७:३०-९:००। दि.०१:३०-०३:००।	रा.०७:३०-०९:००।

तिथिः १ बुध सूर्योदये

गु शु १२ | ल ११ सू श बु | १० | रा १ | ९ | मं २ | ८ | ३ | ५ चं | ७ के | ४ | ६

यशस्वी एवं तेजस्वी पुत्र प्राप्ति मन्त्र :– यथा वैदिकज्योतिष पृष्ठ ३१२–इमां त्वमिन्द्र मीढ्वःसुपुत्रां सुभगां कृणु।दशास्यां पुत्राना धेहि पतिमेकादशं कृधि।।इस मन्त्र को प्रातःकाल प्रतिदिन ११ माला जप २१ दिन तक नियम पूर्वक करने से बुद्धिमान्,तेजस्वी,यशस्वी तथा दीर्घायु पुत्र उत्पन्न होता है।जप के उपरान्त अग्रिम उपरोक्त मन्त्र को पढ़ते हुए पति या जपकर्ता आचार्य पत्नी के सिर पर दाहिना हाथ रखकर प्रतिदिन आशीर्वाद दें।अघोरचक्षुरपतिघ्न्येधि शिवा पशुभ्यः सुमनाः सुवर्चाः।वीरसर्देवकामा स्योना शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।।**सुखप्रसवविधिमाहः–**अपामार्गस्य मूलश्च समुत्पाद्य शुभे दिने। अश्वलोम्ना च संवेष्ट्य शिरसा बन्धनात्ततः।।क्षणमात्रेण सा नारी सुखेनैव प्रसूयते।श्वेतं पुनर्नवामूलं चूर्णं योनौ प्रवेशयेत्।क्षणात् प्रसूते सा नारी गर्भेणातिप्रपीडिता।।सबीजं तिन्तिडीवृक्षमुत्पाद्य च प्रयत्नतः।केशेषु ग्रथितं कृत्वा नासाग्रं तत् प्रलम्बयेत्।।घ्रात्वा तद्गर्भिणी सम्यक् शीघ्रमेव प्रसूयते।**वर्ष के अनुसार जातक के शुभाशुभ विवेचनः–**तिथि वारर्क्षयोगानां युति संवत्सरान्वितः।प्रष्टुर्नामाक्षरैर्युक्तस्त्रिहृतः शेषके फलम्।एकेन क्लेशं समता च द्वाभ्यां सुखं त्रिशेषे मुनयोवदन्ति।अभीष्ट संवत् संख्या में प्रश्नकर्ता के नामाक्षर की संख्या प्रश्नकालिक तिथि,वार,नक्षत्र और योग की संख्या को जोड़कर ३ से भाग देने पर यदि १ शेष हो तो क्लेश,२ में समता,३ या ० शेष में सुख एवं शान्ति जानना चाहिए।**शीतलाष्टमी–स्कन्दपुराण के अनुसार–**यह व्रत चैत्रकृष्णपक्ष की अष्टमी से आषाढ़ कृष्णपक्ष की अष्टमी तक किया जाता है।लोकव्यवहार में इस दिन शीतलामाता की पूजा करके बासी भोजन करने की प्रथा है।भगवती शीतला के इस व्रत के प्रभाव से दाहज्वर, पित्तज्वर,विस्फोटक,दुर्गन्धयुक्तफोड़े,नेत्र के समस्त रोग एवं शीतलाजनित समस्त कष्टों का शमन होता है।पूजन के उपरान्त इस मन्त्र से भगवती शीतला का ध्यान करना चाहिए।वन्देऽहं शीतलां देवीं रासभस्थां दिगम्बराम्।मार्जनीकलशोपेतां शूर्पालंकृतमस्तकाम्।**केदारेश्वरदर्शन–**चैत्रकृष्णचतुर्दशी को केदारेश्वर का ध्यान और मनसोपचार पूजन एवं एक भुक्त व्रत करना चाहिये।इस व्रत से केदारेश्वर भगवान [illegible] हैं तथा अन्त में इस व्रत के प्रभाव से व्रती जन्म मरण के बन्धन से मुक्त हो जाता है।

तिथिः ८ बुध सूर्योदये

रा शु १ | ल १२ सू बु गु | ११ श | २ मं | १० | ३ | चं ९ | ४ | ६ | ८ | ५ | ७ के

पितृव्रत–चैत्रकृष्णप्रतिपदा से अमावस्या तक प्रभास्व,बर्हिषद,अग्निष्वात,क्रव्याद,आज्यपति और सुकालिन् नाम के पितरों के पूजन करने से पितृगण सदैव प्रसन्न रहते हैं।**संकष्टचतुर्थीव्रत** (भविष्यपु[illegible])–यदि निकट भविष्य में किसी अमिट संकट की शङ्का हो या पहले से ही संकटापन्न अवस्था बनी हुई हो तो उसके निवारण के निमित्त संकटचतुर्थी का व्रत करना चाहिये।यह सभी महीनों में कृष्णचतुर्थी को किया जाता है।इसमें चन्द्रोदयव्यापिनी चतुर्थी ली जाती है।यदि वह दो दिन चन्द्रोदय–व्यापिनी हो तो प्रथम दिन का व्रत करे।व्रती को चाहिये कि वह उक्त चतुर्थी को प्रातःस्नानादि करने के अनन्तर दाहिने हाथ में गन्ध,अक्षत,पुष्प और जल लेकर "मम वर्तमानागामिसकल संकटनिरसन पूर्वकसकलाभीष्टसिद्धये संकटचतुर्थी व्रतमहं करिष्ये" यह संकल्प करके दिनभर मौन रहे और सायंकाल के समय पुनःस्नान करके चौकी या वेदी पर "तीव्रायै,ज्वालिन्यै,नन्दायै,भोगदायै,कामरूपिण्यै,उग्रायै,तेजोवत्यै,सत्यायै च दिक्षु विदिक्षु,मध्ये विघ्ननाशिन्यै सर्वशक्ति कमलासनायै नमः" इन मन्त्रों से पीठपूजा करने के बाद वेदी के बीच में स्वर्णादिनिर्मित गणेशजी का–१ गणेशायनमः से आवाहन,२ विघ्ननाशिने नमः से आसन,३ लम्बोदराय नमः से पाद्य,४ चन्द्रार्धधारिणे नमः से अर्घ्य,५ विश्वप्रियाय नमः से आचमन,६ ब्रह्मचारिणे नमः से स्नान,७ कुमारगुरवे नमः से वस्त्र,८ शिवात्मजाय नमः से यज्ञोपवीत,९ रुद्रपुत्राय नमः से गन्ध,१० विघ्नहर्त्रे नमः से अक्षत, ११ परशुधारिणे नमः से पुष्प,१२ भवानी प्रीतिकर्त्रे नमः से धूप,१३ गजकर्णाय नमः से दीपक,१४ अघनाशिने नमः से नैवेद्य (आचमन),१५ सिद्धिदाय नमः से ताम्बूल और,१६ सर्वभोगदायिने नमः से दक्षिणा अर्पण करके षोडशोपचार पूजन करें और कर्पूर अथवा घीकी बत्ती जलाकर नीराजन करे।इसके पीछे दूर्वा के दो अङ्कुर लेकर गणाधिपाय नमः२,उमापुत्रायनमः,अघनाशाय नमः २, एकदन्ताय नमः२,इभवक्त्राय नमः २,मूषकवाहनाय नमः २,विनायकाय नमः २,ईशपुत्राय नमः २, सर्वसिद्धिप्रदाय नमः२, कुमारगुरवे नमः २ और गणाधिप नमस्तेऽस्तु उमापुत्राघनाशन।एकदन्ते भवकोति तथा मूषकवाहन।विनायकेशपुत्रेति सर्वसिद्धि प्रदायक।कुमारगुरवे तुभ्यं पूजयामि प्रयत्नतः।।इनमें आरम्भ से १० मन्त्रों द्वारा दो–दो और अन्त के पूरे मन्त्र से एक दूर्वा अर्पण करके यज्ञेन यज्ञ से मन्त्रपुष्पाञ्जलि अर्पण करे और संसारपीडाव्यथितं हि मां सदा संकष्टभूत सुमुख प्रसीद।त्वं त्राहि मांमोचय कष्टसंघान्नमो नमो विघ्नविनाशनाय।से नमस्कार करके श्रीविप्राय नमस्तुभ्यं साक्षाद्देवस्वरूपिणे।गणेशप्रीतये तुभ्यं मोदकान् वै ददाम्यहम्।।से मोदक, सुपारी मूंग और दक्षिणा रखकर वायन (बायना) दे। इसके बाद चन्द्रोदय होने पर चन्द्रमाका गन्ध–पुष्पादि से विधिवत् पूजन करके ॐ ज्योत्स्नायते नमस्तुभ्य नमस्ते ज्योतिषां पते।नमस्ते रोहिणी कान्त गृहाणार्घ्य नमोऽस्तु ते।।से चन्द्रमा को अर्घ्य देकर नमोमण्डलदीपाय शिरोराय धूर्जटेः।कलाभिर्वर्धमानाय नमश्चन्द्राय चारवे।।से प्रार्थना करे।फिर गणेशाय नमस्तुभ्यं सर्वसिद्धिप्रदायक। संकष्टं हर मे देव गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते।। से गणेशजी को तीन अर्घ्य देकर–तिथि नामूल में देवि गणेशप्रियवल्लभे। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं सर्वसिद्धिप्रदायिके।। से तिथि को अर्घ्य दे पीछे सुपूजित गणेशजी का "आयातस्त्वमुमापुत्रममानुग्रहकाम्यया। पूजितोऽसि मया भक्त्या गच्छ स्थानं स्वकं प्रभो।। से विसर्जन कर ब्राह्मणों को भोजन कराये और स्वयं तैलविर्जित एक बार भोजन करे ।

चैत्रशुक्लपक्षः

शाके १९४४;संवत् २०८०;फसली १४३०;दिनाङ्क २२:०३:२०२३ ई. ततो दिनाङ्क ०६:०४:२०२३ ईस्वी या.। दक्षिणे राहु कालः। मार्गी पूर्वोदितो मंगलः शनि गुरूः ततो ति.७ पश्चिमस्तो गुरूः,मा.पश्चिमास्तोः बुधः ततो ति.१० पूर्वोदित बुधः,मार्गी पश्चिमोदितोः शुक्रः,वसन्तर्तुः,याम्यगोलः,सौम्यायनं,अयनांश २२:५०:५४।

तिथि वार	तिथ्यन्तः द.प.	तिथ्यन्तः घं.मि.	नक्षत्र	नक्षत्रान्तः द.प.	नक्षत्रान्तः घं.मि.	योग	योगान्तः द.प.	करणान्तः क. द.प.	चन्द्राश्यन्तः रा. द.प.	चन्द्राश्यन्तः घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू. उ. घं.मि.	सू. अ. घं.मि.	दिनाङ्काः सौ	दिनाङ्काः अं	
०१ बु.	३८:५७	रा.०९:३५	उ.भा.	२६:४१	दि.०४:४०	शुक्लः	१०:३९	किं. ११:०२	मीन	अहोरात्र	११:०७:३५:३८	३०:०२	०६:००	०६:००	०८	२२	दग्ध ति. (३८:५७ उ.),वसन्तनवरात्ररंभः,चन्द्रदर्शनं,**विक्रमसंवत् २०८०आरम्भः**,पश्चिमयात्रा रेवत्यां,अमृतयोग रा. ०९:३५ या.,ततो सिद्धियोग रा.०९:३५ उ.।
०२ गु.	३५:३७	रा.०८:१३	रेवती	२४:५६	दि.०३:५७	ब्रह्मः	०४:४४	बा. ०७:२७	मी.२४:५६	दि.०३:५७	११:०८:३५:२२	३०:०४	०५:५९	०६:०१	०९	२३	ऐन्द्रयोगमानं ५४:५४,दग्ध ति. (३५:३६ या.),रेमन्तपूजा,**पञ्चकान्तः दि.०३:५७ या.**,शिववास,पश्चिमोत्तरयात्रा रेवत्यां, ततो दक्षिणांविनायात्रा अश्वि.,सर्वार्थसिद्धियोग दि.०३:५७ या.।
०३ शु.	३३:२३	रा.०७:१९	अश्वि	२४:१२	दि.०३:३९	वैधृतिः	५५:२२	तै. ०५:४०	मेष	अहोरात्र	११:०९:३४:५०	३०:१०	०५:५८	०६:०२	१०	२४	चन्द्रघंटादेवीदर्शनं,श्रीगौरी ३ व्रतं, पश्चिमांविनायात्रा अश्वि.,अमृतयोग रा.०७:१९ उ.,सर्वार्थसिद्धियोग दि.०३:३९ या.।
०४ श.	३२:१९	रा.०६:५३	भरणी	२४:३८	दि.०३:४८	विष्क	५२:०६	व. ०२:५१	मेष	अहोरात्र	११:१०:३४:१७	३०:१४	०५:५७	०६:०३	११	२५	**श्रीगणेश ४ व्रतं**,सिद्धियोग रा.०६:५३ या.,ततो मृत्युयोग रा.०६:५३ उ.,भद्रारंभ:०२:५१ उपरि ततो भद्रांत:३२:१९ यावत्,,**क्षीणःगुरौ २५:१० अशुद्धारम्भः।**
०५ र.	३२:३३	रा.०६:५७	कृति.	२६:१९	दि.०४:२८	प्रीतिः	४९:५१	ब. ०२:२६	मे.४०:०३	रा.०९:०७	११:११:३३:४४	३०:१८	०५:५६	०६:०४	१२	२६	मीनावतारः,श्रीरामराज्याभिषेकोत्सवः,प्रतिहारषष्ठी व्रतस्यैकभुक्तादिकं (खरणा),शिववास, पूर्वोत्तर यात्रा पंचमी रोहिण्यां, अमृतयोग रा.०६:५७ या.,ततो मृत्युयोग रा.०६:५७ उ.।
०६ चं.	३४:०९	रा.०७:३६	रोहि.	२९:१६	सं.०५:३८	आयु.	४८:३८	कौ. ०३:२१	वृष	अहोरात्र	११:१२:३३:११	३०:२२	०५:५६	०६:०४	१३	२७	गजपूजाबिल्वाभिमंत्रणञ्च,श्रीसूर्यषष्ठीव्रतं सायंकालिकार्घदान,शिववास,पूर्वविनायात्रा षष्ठी मृगशिरशि,सिद्धियोग रा.०७:२६ या.,ततो मृत्युयोग रा.०७:२६ उ.,सर्वार्थसिद्धियोग(अहोरात्र)।
०७ मं.	३६:५१	रा.०८:३९	मृग.	३३:२१	रा.०७:१५	सौभा.	४८:१४	ग. ०४:३०	वृ.०१:१८	दि.०६:२६	११:१३:३२:३८	३०:२६	०५:५५	०६:०५	१४	२८	प्रातःकालिकार्घदानं,पत्रिकाप्रवेशः,महारात्रिर्निशापूजा,उत्तरांविनायात्रा मृगशिरशि,अमृतयोग रा.०८:३९ या.,ततो सिद्धियोग रा.०८:३९ उ.,भद्रारंभ:३६:५१ उपरि,**पश्चिमस्तो गुरौ २५:१०।**
०८ बु.	४०:४२	रा.१०:११	आर्द्रा	३८:३२	रा.०९:१९	शोभ.	४८:४४	वि. ०८:४७	मिथुन	अहोरात्र	११:१४:३२:०५	३०:३०	०५:५४	०६:०६	१५	२९	महाष्टमीव्रतं,मृत्युयोग रा.१०:११ या.,भद्रांत:०८:४७ यावत्।
०९ गु.	४५:२३	रा.१२:०२	पुन.	४५:३०	रा.१२:०५	अतिग	४९:५०	बा. १३:०३	मि.२८:४५	सं.०५:२३	११:१५:३१:३२	३०:३४	०५:५३	०६:०७	१६	३०	महानवमीव्रतं,त्रिशूलिनीपूजा,रामनवमीव्रतं,हनुमद्ध्वजदान,शिववास, दक्षिणांविनायात्रा पुष्ये, मृत्युयोग रा.१२:०२ या.,ततो सिद्धियोग रा.१२:०२ उ.,सर्वार्थसिद्धियोग(अहोरात्र)।
१० शु.	५०:३६	रा.०२:०७	पुष्य	५०:००	रा.०१:५३	सुकर्मा	५१:१४	तै. १८:००	कर्क	अहोरात्र	११:१६:३०:४१	३०:३८	०५:५३	०६:०७	१७	३१	**विजया १०, अपराजितापूजा, देवीविसर्जनं,जयन्तीधारणं,✷ रेवत्यांरविः५५:१०**,पश्चिमाविनांयात्रा पुष्ये,सिद्धियोग रा.०२:०७ उ.,पूर्वोदितोबुधः२८:३९।
११ श.	५५:३३	रा.०४:०५	आश्ले	५७:३४	रा.०४:५४	धृतिः	५२:४६	व. २३:०५	क.५७:३४	रा.०४:५४	११:१७:२९:५९	३०:४२	०५:५२	०६:०८	१८	१	**अप्रैल ०४, कामदा ११ व्रत सर्वेषां**, अमृतयोग रा.०४:०५ या.,भद्रारंभ:२३:०५ उपरि ततो भद्रांत:५५:३३ यावत्।
१२ र.	६०:००	अहोरात्र	मघा	६०:००	अहोरात्र	शूलः	५४:०१	ब. २८:१३	सिंह	अहोरात्र	११:१८:२९:०७	३०:४६	०५:५१	०६:०९	१९	२	श्रीविष्णु १२,गोघृतेनपारणं, शिववास।
१२ चं.	००:५२	प्रा.०६:१०	मघा	०३:४४	दि.०७:१८	गण्डः	५४:४७	बा. ००:५२	सिंह	अहोरात्र	११:१९:२८:१५	३०:५०	०५:५०	०६:१०	२०	३	**प्रदोष १३ व्रतं, चैत्रवली, महावीर जयन्ती**, शिववास, उत्तरयात्रा पू.फा.,मृत्युयोग दि. ०६:१० या.।
१३ मं.	०५:०३	दि.०७:५०	पू.फा.	०९:१६	दि.०९:३१	वृद्धिः	५५:४८	तै. ०५:०३	सिं.२५:२५	दि.०३:५९	११:२०:२७:१३	३०:५४	०५:४९	०६:११	२१	४	प्रदोष १४ व्रतं, शिववास दि. ०७:५० या., पूर्वयात्रा पू.फा.,सिद्धियोग दि.०७:५० या. ।
१४ बु.	०८:११	दि.०९:०४	उ.फा.	१३:५१	दि.११:२०	ध्रुवः	५३:५९	व. ०८:११	कन्या	अहोरात्र	११:२१:२६:२१	३०:५८	०५:४८	०६:१२	२२	५	**पूर्णिमा व्रतं**,पूर्वदक्षिणयात्रा हस्ते,सर्वार्थसिद्धियोग दि.११:२० उ.,भद्रारंभ:०८:११ उपरि ततो भद्रांत:३९:१३ यावत्।
१५ गु.	१०:१६	दि.०९:५४	हस्त	१७:१६	दि.१२:४२	व्या.	५२:१०	ब. १०:१६	क.४८:२०	रा.०१:१८	११:२२:२५:११	३१:०२	०५:४८	०६:१२	२३	६	**चैत्री पूर्णिमा,स्नानदानादौ पूर्णिमा**,हनुमज्ज जयन्ती, शिववास दि.०९:५४ उ., **पूर्वयात्रा, सिद्धियोग दि.०९:५४ या.।**

मिश्रमान कालिक दैनिक स्पष्टग्रहाः / दैनिक लग्नसारणी चक्रम्

ति	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमान	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिं.अं.	क.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
१	०२:०३:०३:१०	११:१९:१८:१०	११:२३:२१:५९	००:१३:१२:०१	१०:०४:४९:५३	०६:१३:५९:०९	४५:०१	०८:४४	१०:४०	१२:५३	१५:११	१७:२७	१९:४२	२१:५९	००:१६	०२:२१	०४:०७	०५:३८	०७:०७
२	०२:०३:२९:३५	११:२१:०६:२२	११:२३:३६:१८	००:१४:२३:०१	१०:०४:५६:२७	०६:१३:५५:५९	४५:०२	०८:४०	१०:३६	१२:४९	१५:०७	१७:२३	१९:३८	२१:५५	००:१२	०२:१७	०४:०३	०५:३४	०७:०३
३–१०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	११:२५:४०:३६	००:२५:४०:०१	१०:०५:५५:०६	०६:१३:२७:२१	४५:२१	०८:०७	१०:०३	१२:१६	१४:३४	१६:५०	१९:०५	२१:२२	२३:३९	०१:४४	०३:३०	[illegible]	०६:२७
[illegible]	[illegible]	[illegible]	११:२६:०३:१६	००:२६:५०:२५	१०:०६:०१:१४	०६:१३:२४:१०	४५:२३	०८:०४	१०:००	१२:१३	१४:३१	१६:४७	१९:०२	२१:१९	२३:३६	०१:४१	०३:२७	०५:०८	०६:२७
[illegible]	[illegible]	[illegible]	११:२६:१८:५६	००:२८:००:४९	१०:०६:०७:२२	०६:१३:२०:५१	४५:२५	०८:००	०९:५६	१२:०९	१४:२७	१६:४३	१८:५८	२१:१५	२३:३२	०१:३७	०३:२३	०४:५४	०६:२३
[illegible]	[illegible]	[illegible]	११:२६:३४:३६	००:२९:११:१४	१०:०६:१३:३०	०६:१३:१७:४८	४५:२७	०७:५६	०९:५२	१२:०५	१४:२३	१६:३९	१८:५४	२१:११	२३:२८	०१:३३	०३:१९	०४:५०	०६:१९
[illegible]	[illegible]	[illegible]	११:२६:५०:१६	०१:००:२१:३९	१०:०६:१९:३८	०६:१३:१४:३८	४५:२९	०७:५३	०९:४९	१२:०२	१४:२०	१६:३६	१८:५१	२१:०८	२३:२५	०१:३०	०३:१६	०४:४७	०६:१६
[illegible]	[illegible]	[illegible]	११:२७:०५:५६	०१:०१:३२:०७	१०:०६:२५:४६	०६:१३:११:२८	४५:३१	०७:४९	०९:४५	११:५८	१४:१६	१६:३२	१८:४७	२१:०४	२३:२१	०१:२६	०३:१२	०४:४३	०६:१२

दैनिक अधप्रहरा चक्रम्

वार	दिन का अर्धप्रहरा	रात्रि का अर्धप्रहरा
बु.	दि.०९:००-१०:३०। दि.१२:३०-०२:००।	रा.११:५९-१:३३। रा.०२:५९-०४:२९।
गु.	दि.०२:५९-०६:०१।	रा.११:५७-०१:२६। रा.०४:२४-०५:५९।
शु.	दि.०८:५८-११:५८।	रा.०९:००-१०:२९।
[illegible]	[illegible]	[illegible]
र.	दि.१०:२७-०१:३१।	[illegible]
चं.	दि.०७:२२-०८:५४। दि.०३:०२-०४:३४।	[illegible]
मं.	दि.०७:२१-०८:५३। दि.०१:२९-०३:०१।	[illegible]
बु.	दि.०८:५४-१०:२७। दि.१२:००-१०:३३।	[illegible]
गु.	दि.०३:०६-०६:१२।	[illegible]

तिथिः १ बुध सूर्योदये

तिथिः ८ बुध सूर्योदये

नवरात्र में दुर्गापूजा का महत्त्व–चैत्रादिद्वादशमास के शुक्ल प्रतिपदा से नवमी पर्यन्त तक नवरात्र होता है। किन्तु भारतीय ज्योतिष के अनुसार वर्ष में सायन पद्धति से (चान्द्रमास) मेषारम्भ,ककोरम्भ,तुलारम्भ तथा मकरारम्भ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इसी में चारनवरात्रचैत्र (वासन्तिक) आषाढ़ (गुप्तनवरात्र) आश्विन (शारदीयनवरात्र) तथा माघ (सारस्वत) शिशिरनवरात्र का विधान है। देवीपुराण के अनुसार नवरात्र में जो व्यक्ति भगवतीदुर्गा का पूजन सविधि करता है। उसके समस्तकष्टों का निवारण होता है। दुर्गा शब्द का शाब्दिक अर्थ है–**दैत्यनाशार्थ वचनो "द" कार परिकीर्तितः। "उ" कार विघ्ननाशस्य वाचको वेद सम्मतः।। रेफो रोगघ्न वचनो गश्च पापघ्न कारकः। मय शत्रुघ्न वचनश्चाकारः परिकीर्तितः।।** अर्थात् दुर्गा शब्द में "द्" कार दैत्यनाशक, "उ" कार विघ्ननाशक,रेफ रोग नाशक, "ग्" पाप नाशक, "आ" भय एवं शत्रु नाशक। नवरात्र में दुर्गा पूजन का विशेष महत्त्व है। धर्मशास्त्रानुसार नवरात्र में कन्या पूजन का भी विशेष महत्त्व है। एक कुमारीपूजन से ऐश्वर्य,दो कुमारीपूजन से भोग एवं मोक्ष,तीनकुमारीपूजन से धर्म–अर्थ–काम की प्राप्ति,चारकुमारी पूजन से पद–प्रतिष्ठा प्राप्ति,पांचकुमारीपूजन से विद्यालाभ, छःकुमारी पूजन से षट्कर्म की सिद्धि,सात कुमारीपूजन से राज्यप्राप्ति,आठकुमारीपूजन से सम्पदा एवं वैभव की प्राप्ति,नौ कुमारी पूजन से पृथ्वी एवं प्रभुत्व की प्राप्ति होती है। **कन्याओं की अवस्थानुसार संज्ञा**–दो वर्ष कन्या की कुमारी संज्ञा,तीन वर्ष की कन्या त्रिमूर्तिनी,चार वर्ष की कन्या कल्याणी,पांच वर्ष की रोहिणी,छह वर्ष की कन्या काली,सात वर्ष की कन्या चन्द्रिका,आठ वर्ष की कन्या शाम्भवी,नौ वर्ष की कन्या दुर्गा एवं दस वर्ष की कन्या की सुभद्रा कहलाती है।

अथ चैत्रमासकृत्यम्–चैत्रशुक्लप्रतिपदि वत्सरारम्भः। तत्रौदयिकी तिथिर्ग्राह्या। व्यवहार में मास चार प्रकार होते हैं। सौर,सावन,चान्द्र और नाक्षत्र। सूर्यसंक्रान्ति के आरम्भ से उसकी समाप्तिपर्यन्त तक "सौर" ,सूर्योदय से अगले सूर्योदय पर्यन्त,अर्थात् एक दिनरात्रि के पूरे समय से ३० दिन का "सावन" ,शुक्ल और कृष्णपक्ष का चान्द्र तथा अश्विनी के आरम्भ से रेवती के अन्ततकके चन्द्र भोग का नाक्षत्र मास होता है। ये सब प्रयोजन के अनुसार पृथक्–पृथक् लिये जाते हैं–यथा विवाहदि में सौर,यज्ञादि में सावन, श्राद्ध आदि में चान्द्र और नक्षत्रसत्र (नक्षत्र–सम्बन्धी यज्ञ,यथा श्लेषा–मूलादिजन्मशान्ति) में नाक्षत्र लिया जाता है। जैसा की गर्ग ने कहा–सौरो मासो विवाहादौ,यज्ञादौ सावनःस्मृतः। आब्दिके पितृकार्ये च चान्द्रो मासः प्रशस्यते। चान्द्र संवत्सर का प्रारम्भ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से होता है। इसका कारण यह है कि कृष्ण पक्ष के आरम्भ में मलमास आने की सम्भावना रहती है और शुक्लपक्ष में नहीं रहती। इस कारण संवत्सर की प्रवृति शुक्ल प्रतिपदा से ही अनुकूल होती है। दूसरा कारण यह भी है कि ब्रह्माजी ने सृष्टि का आरम्भ इसी शुक्ल प्रतिपदा को किया था। **चैत्रे मासि जगद्ब्रह्मा ससर्ज प्रथमेऽहनि। शुक्लपक्षे समग्रन्तु तदा सूर्योदये सति।।** और इसी दिन मत्स्यावतार का आविर्भाव तथा सत्ययुग का आरम्भ हुआ था। **कृते च प्रभवे चैत्रे प्रतिपच्छुक्लपक्षगा। रेवत्यां योगविष्कम्भे दिवा द्वादशनाडिकाः। मत्स्यरुपकुमार्यो च अवतीर्णे हरिः स्वयम्।** इसी महत्व के कारण सम्राट् विक्रमादित्य ने अपने संवत्सर का आरम्भ आज से २०७५ वर्ष पहले चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को ही किया था। संवत्सरो में शालिवाहन शक और विक्रम–संवत्सर–ये दोनों सर्वोत्कृष्ट है। परन्तु शक का विशेषकर गणित में प्रयोग होता है और विक्रम–संवत् का भारत देश में गणित,फलित तथा लोक–व्यवहार और धर्मानुष्ठानों के समय–संकल्प आदि में उपयोग किया जाता है। इसी दिन संवत्सर का पूजन, नवरात्र–घट–स्थापन,ध्वजारोहण,तैलाभ्यङ्ग–स्नान,वर्षेशादि का फल पाठ, अशोक एवं नीम के कोमल पत्रों का प्राशन और प्रपास्थापन आदि लोकप्रसिद्ध और विश्वोपकारक अनेक काम होते हैं। इसके द्वारा सनातनी जनता में सर्वत्रही संवत्सर का महोत्सव मनाया जाता है। **यथा–प्राप्ते नूतनवत्सरे प्रतिगृहं कुर्याद् ध्वजारोपणम्, स्नानं मङ्गलमाचरेद् द्विजवरैः साकं सुपूजोत्सवैः। देवानां गुरुयोषितां च विभवालंकारवस्त्रादिभिः सम्पूज्यो गणकः फलं च श्रृणुयात् तस्माच्च लाभप्रदम् ।।** (उत्सवचन्द्रिका) **। चैत्रशुक्लनवम्यां रामनवमीव्रतम्**– मर्यादापुरूषोत्तमभगवतो रामस्य प्राकट्यदिनम्। सा मध्याह्नव्यापिनी ग्राह्या। श्रीरामंसम्पूज्यार्घ्यंदद्यान्मन्त्रः–ॐ दशाननवधार्थाय धर्मसंस्थापनाय च। राक्षसानां विनाशाय दैत्यानां निधनाय च। परित्राणाय साधूनां जातो रामः स्वयं हरिः। गृहाणार्घ्यं मयादत्तं भ्रातृभिः सहितोऽनघः। **दमनोत्सवः–चैत्रशुक्ल** द्वादश्यां दमनोत्सवः कर्त्तव्यः

वैशाखकृष्णपक्षः

शाके १९४४; संवत् २०८०; फसली १४३०; दिनाङ्क ०७:०४:२०२३ ई. ततो दिनाङ्क २०:०४:२०२३ ईस्वी या.। दक्षिणे राहु कालः ।
मार्गी पूर्वोदितो मंगलः बुधः शनि, मार्गी पश्चिमस्तो गुरूः, मार्गी पश्चिमोदितोः शुक्रः, वसन्तर्तुः,याम्यगोलःततो ति. ९ सौम्यगोलः,सौम्यायनम्,अयनांश २२:५०:५४।

तिथि वार	तिथ्यन्तः द. प.	तिथ्यन्तः घं. मि.	नक्षत्र	नक्षत्रान्तः द. प.	नक्षत्रान्तः घं. मि.	योग	योगान्तः द. प.	करणान्तः क. द. प.	चन्द्रराश्यन्तः रा. द.प.	चन्द्रराश्यन्तः घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	दिनाङ्काः सौ	दिनाङ्काः अं	विवरण
०१ शु.	१०:५७	दि.१०:१०	चित्रा	१९:२४	दि.०१:३३	हर्षण	४९:२०	कौ १०:५७	तुला	अहोरात्र	११:२३:२४:२०	३१:०६	०५:४७	०६:१३	२४	७	दग्ध ति.(१०:५७ उ.),वैशाखे तैलं त्यजेत्,वैशाखे कौशिकी स्नानं महापुण्यप्रदं,शिववास दि. १०:२० या.,दक्षिणयात्रा,सिद्धियोग दि.१०:१० या.,ततो मृत्युयोग दि.१०:१० उ.।
०२ श.	१०:२१	दि.०९:५४	स्वा.	२०:१७	दि.०१:५३	वज्रः	४५:२९	ग. १०:२१	तुला	अहोरात्र	११:२४:२३:११	३१:१०	०५:४६	०६:१४	२५	८	दग्ध ति.(१०:२१ या.),दक्षिणपश्चिमयात्रा स्वा.,सर्वार्थसिद्धियोग दि.०१:५३ या.,भद्रारंभ:३९:२६ उपरि।
०३ र.	०८:३२	दि.०९:१०	विशा.	१९:५९	दि.०१:४५	सिद्धिः	४०:४५	वि. ०८:३२	तु.०५:०२	दि.०७:४६	११:२५:२२:०२	३१:१४	०५:४५	०६:१५	२६	९	श्रीवक्रतुण्ड ४ व्रतं,शिववास दि.०९:१० उ.,सिद्धियोग दि.०९:१० या.,भद्रांत:०८:३२ यावत्।
०४ चं.	०५:३७	दि.०७:५९	अनु.	१८:३४	दि.०१:१०	व्यति.	३५:१०	बा. ०५:३७	वृश्चिक	अहोरात्र	११:२६:२०:५३	३१:१८	०५:४४	०६:१६	२७	१०	शिववास,पश्चिमोत्तर यात्रा,अमृतयोगदि.०७:५९ उ.,सर्वार्थसिद्धियोग दि.०१:१० या.।
०५ मं.	०१:४५	दि.०६:२६	ज्येष्ठा	१६:२३	दि.१२:१७	वरी.	२८:५३	तै. ०१:४५	वृ.१६:२३	दि.१२:१७	११:२७:१९:४४	३१:२२	०५:४४	०६:१६	२८	११	षष्ठीमानं ५५:१७,कोकिलाषष्ठी,शिववास दि.०९:५२ या.,मृत्युयोग दि.०६:२६ उ.,भद्रारंभ:५५:१७ उपरि।
०७ बु.	५१:४०	रा.०२:२३	मूल	१३:१८	दि.११:०२	परिघः	२२:०३	वि. २३:२९	धनु	अहोरात्र	११:२८:१८:३५	३१:२६	०५:४३	०६:१७	२९	१२	शर्करासप्तमी,पूर्वयात्रा सप्तमी पू.षा.,सिद्धियोग रा.०२:२३ या.,ततो मृत्युयोग रा.०२:२३ उ.,भद्रांत:२३:३५ यावत्। ●वैशाखस्नानारंभः,हरिद्वारे कल्पवासारंभः।
०८ गु.	४६:०४	रा.१२:०८	पू.षा	०९:४३	दि.०९:३५	शिवः	१४:४५	बा. १८:५२	ध.२३:४३	दि.०३:११	११:२९:१७:२६	३१:२८	०५:४२	०६:१८	३०	१३	मासान्तः,शिववास,मृत्युयोग रा.१२:०८ या.,ततो मृत्युयोग रा.१२:०८ उ.। 卐वैशाखास्नानारंभ सतुआइन,सोपकरणवारिपूर्णघटदानं,नववर्षारंभः,सौम्यगोलारंभश्च ●
०९ शु.	३९:१८	रा.०९:२५	उ.षा	०५:४४	दि.०८:००	सिद्धः	०७:११	तै. १२:४६	मकर	अहोरात्र	००:००:१६:०४	३१:३२	०५:४२	०६:१८	०१	१४	साध्ययोगमानं ५२:१५,✷आश्विन्यांमेषेरविः२९:२२,मु ३०,यवविषुवसंक्रान्तिपुण्यकालं दिवा घं. १२ उपरि सूर्यास्त यावत दने,पुण्याहः,शकाब्दारंभ १९४५ 卐
१० श.	३३:५८	रा.०७:१६	श्रव.	०१:३३	दि.०६:१८	शुभः	५१:४७	व. ०६:३८	म.२९:३४	सं.०५:३१	००:०१:१४:४२	३१:३६	०५:४१	०६:१९	०२	१५	धनिष्ठामानं ५६:०३,जूड़शीतल,मासादिः,पञ्चकारम्भ:दि.०६:१८ उ.,मृत्युयोग रा.०७:१६ या.,ततो अमृतयोग रा.०७:१६ उ.,भद्रारंभ:०६:३३ उपरि ततो भद्रांत:३३:५८ यावत्।
११ र.	२८:०६	दि.०४:५४	शत.	५३:३८	रा.०३:०७	शुक्लः	४४:०९	ब. ००:५२	कुम्भ	अहोरात्र	००:०२:१३:२०	३१:४०	०५:४०	०६:२०	०३	१६	वरुथिनी ११ व्रतं सर्वेषां,शिववास,मृत्युयोग दि. ०५:५४ या.।
१२ चं.	२२:०८	दि.०२:३०	पू.भा	५०:१४	रा.०१:४४	ब्रह्मः	३७:१०	तै. २२:०८	कु.३६:०५	रा.०८:०५	००:०३:११:५८	३१:४४	०५:३९	०६:२१	०४	१७	कुशोदकेन पारणं,प्रदोष १३ व्रतं,शिववास,पश्चिमयात्रा त्रयोदश्याम्,मृत्युयोग दि.०२:३० या.।
१३ मं.	१७:२८	दि.१२:३७	उ.भा.	४७:२७	रा.१२:३७	ऐन्द्रः	३०:३२	व. १७:२८	मीन	अहोरात्र	००:०४:१०:३६	३१:४८	०५:३८	०६:२२	०५	१८	प्रदोष १४ व्रतं,शिववास दि. १२:३७,सिद्धियोग दि.१२:३७ या.,भद्रारंभ:१७:२८ उपरि ततो भद्रांत:४५:२१ यावत्।
१४ बु.	१३:१४	दि.१०:५८	रेवती	४५:३५	रा.११:५४	वैधृतिः	२४:३३	श. १३:१४	मी.४५:३५	रा.११:५४	००:०५:०९:१४	३१:५२	०५:४०	०६:२०	०६	१९	पञ्चकान्तः रा.११:५४ या.,शिववास दि. १०:५८ उ.।
३० गु.	०९:५२	दि.०९:३९	अश्वि	४४:३५	रा.११:३२	विष्क	१९:१७	ना. ०९:५२	मेष	अहोरात्र	००:०६:०७:५२	३१:५६	०५:४२	०६:१८	०७	२०	वैशाखी ३०,गंगास्नानदाननदौ,शिववास दि. ०९:३९ या.,दक्षिणविना यात्रा प्रतिपदि अश्वि.,सर्वार्थसिद्धियोग रा.११:३२ या.।

मिश्रमान कालिक दैनिक स्पष्टग्रहाः

ति	मंगलः	बुधः	गुरूः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमान
१	०२:११:०७:२९	००:१४:०५:२५	११:२७:२३:४८	०१:०२:४१:४१	१०:०६:३२:१३	०६:१३:०८:१७	४५:३३
२	०२:११:३७:५३	००:१५:१०:४०	११:२७:४१:३२	०१:०३:५१:१८	१०:०६:३८:४०	०६:१३:०५:०[illegible]	४५:३५
३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
११	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१२	[illegible]	[illegible]	११:२९:५०:१७	०१:१४:२०:०४	१०:०७:३१:३८	०६:१२:३६:२९	४५:५२
१३	[illegible]	[illegible]	००:००:००:१३	०१:१५:३०:१४	१०:०७:३६:४९	०६:१२:३३:१८	४५:५४
१४	[illegible]	[illegible]	००:००:१०:०७	०१:१६:४०:२४	१०:०७:४२:००	०६:१२:३०:०८	४५:५६
३०	[illegible]	[illegible]	००:००:२०:०६	०१:१७:५०:३४	१०:०७:४७:११	०६:१२:२५:५८	४५:५८

दैनिक लग्न सारणी चक्रम्

मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिं.अं.	क.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.	वार
०७:४५	०९:४१	११:५४	१४:१२	१६:२८	१८:४३	२१:००	२३:१७	०१:२२	०३:०८	०४:३९	०६:०८	शु.
०७:४१	०९:३७	११:५०	१४:०८	१६:२४	१८:३९	२०:५६	२३:१३	०१:१८	०३:०४	०४:३५	०६:०४	श.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०६:०१	र.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०५:५७	चं.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०५:५३	मं.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०५:५०	बु.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०५:४६	गु.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०५:४३	शु.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०५:३९	श.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०५:३४	र.
०७:०८	०९:०४	११:१७	१३:३५	१५:५१	१८:०६	२०:२३	२२:४०	००:४५	०२:३१	०४:०२	०५:३१	चं.
०७:०४	०९:००	११:१३	१३:३१	१५:४७	१८:०२	२०:१९	२२:३६	००:४१	०२:२७	०३:५८	०५:२७	मं.
०७:००	०८:५६	११:०९	१३:२७	१५:४३	१७:५८	२०:१५	२२:३२	००:३७	०२:२३	०३:५४	०५:२३	बु.
०६:५६	०८:५२	११:०५	१३:२३	१५:३९	१७:५४	२०:११	२२:२८	००:३३	०२:१९	०३:५०	०५:१९	गु.

दैनिक अधप्रहरा चक्रम्

वार	दिन का अर्धप्रहरा	रात का अर्धप्रहरा
शु.	दि.०८:५३-११:५९।	रा.०९:०५-१०:३१।
श.	दि.५:४६-७:११।दि.१:३१-३:४। दि.४:३७-६:१४।	रा.६:१४-७:४०।रा.१:२४-२:५०। रा.४:१६-५:४६।
र.	दि.१०:२४-०१:३०।	रा.१०:३३-११:५९। रा.०१:२५-०२:५१।
चं.	दि.०७:१८-०८:५२। दि.०३:०८-०४:४२।	रा.१०:३४-१२:००। रा.०२:५२-०४:१८।
मं.	दि.०७:१८-०८:५२। दि.०१:३४-०३:०८।	रा. ०७:४२-०९:०८ ।
बु.	दि.०८:५१-१०:२५। दि.११:५९-०१:३३।	रा.११:५७-०१:२२ ।
गु.	दि.०३:०६-०६:१८ ।	रा.११:५८-०१:२३। रा.०४:१३-०६:१८।
शु.	दि.०८:५०-११:५८।	रा.०९:०८-१०:३३।
श.	दि.५:४९-७:२२। दि.१:३४-३:७। दि.४:४०-६:११।	रा.६:११-७:४५।रा.१:२९-२:५५। रा.४:२१-५:४९।
र.	दि.१०:२५-०१:३५ ।	रा.१०:३५-१२:००। रा.०१:२५-०२:५० ।
चं.	दि.०७:१४-०८:४९। दि.०३:०९-०४:४४।	रा.१०:३३-११:५७। रा.०२:४५-०४:०९ ।
मं.	दि.०७:१३-०८:४८। दि.०१:३३-०३:०८।	रा.०७:४६-०९:१० ।
बु.	दि.०८:५०-१०:२५।दि.१२:००-०१:३५।	रा.१२:००-०१:२५। रा.०२:५०-०४:१५ ।
गु.	दि.३:०६-०६:१८।	रा.११:५८-०१:२३। रा.०४:१३-०५:४२।

तिथिः १ शुक्रे सूर्योदये

बु रा १ | ले १२ | ११ श
शु २ | सू गु | १०
मं ३ | ९
४ | ६ | ८
५ | ७ चं के

मंगली दोष की शान्ति – देखें वैदिक ज्योतिष पृष्ठ ३६८,६९

वितते किरणौ द्वौ तावि पिनष्टि पूरूषः । न वै कुमारि तत् तथा यथा कुमारि मन्यसे।।
मा तुष्टे किरणौ द्वौ निवृत्तः पुरूषानृते । न वै कुमारि तत् तथा यथा कुमारि मन्यसे।।
निगृह्य कर्णकौ द्वौ निरायच्छसि मध्यमे । न वै कुमारि तत् तथा यथा कुमारि मन्यसे।।
उतानायै शयनायै तिष्ठन्ती वाव गूहसि । न वै कुमारि तत् तथा यथा कुमारि मन्यसे।।
श्लक्ष्णाया श्लक्ष्णिकायां श्लक्ष्णमेवाव गूहसि । न वै कुमारि तत् तथा यथा कुमारि मन्यसे।।
अवश्लक्ष्णमिव भ्रंश दन्तर्लोममति ह्दे । न वै कुमारि तत् तथा यथा कुमारि मन्यसे।।

जातक की कुण्डली में लग्न तथा चन्द्रमा से १,४,७,८,१२ इन स्थानों में मंगल स्थित हो तो मंगल दोष होता है।जो जातक के दाम्पत्य जीवन में अरिष्टकारक होता है।उपर्युक्त मन्त्रों का २४ हजार जप किसी देवी मन्दिर में करके या ब्राह्मण द्वारा कराकर इन्हीं मन्त्रों से दशांश हवन करने से भौमादिजन्य दोष की शान्ति होती है। जातक का जीवन सुख तथा शान्तिमय व्यतीत होता है।

त्रेतर शान्ति की विधि–यदि तीनपुत्र के पश्चात् पुत्री या तीनपुत्रियों के बाद पुत्र का जन्म हो तो त्रीतरदोष होता है।जो माता पिता और कुल के लिये अरिष्टकारक होता है।अतः इसकी शान्ति कराना चाहिए।बालक के जन्म से ११ या १२ वें या शुभ दिन में त्रीतर शान्ति करानी चाहिये।सर्व प्रथम आचार्य द्वारा संकल्प में "ममसुतत्रयजन्मानन्तरं कन्याजनन सूचितसर्वारिष्टेति" अथवा "कन्यात्रयजन्मानन्तरं पुत्रजननसूचितेति वा निमित्ता नुसारेण संकल्पः" । श्रीगणपतिपूजन,वरुणपूजन तथा नवग्रहपूजन के पश्चात् ग्रहों की उत्तर दिशा में पाँच कलश पर क्रमशः स्वर्ण निर्मित ब्रह्मा,विष्णु,शिव, इन्द्र एव रूद्र की प्रतिमा स्थापित करें।तदन्तर ब्रह्मा की "ॐ ब्रह्मज्ञज्ञानं,विष्णु की ॐ इदं विष्णु,शिव की ॐ त्र्यम्बकं,इन्द्र की ॐ यतइन्द्र और रूद्र की कद्रुद्राय इन मन्त्रों से आवाहन कर पूजन करना चाहिये।" ब्रह्मा विष्णु महेशेन्द्रप्रतिमाः स्वर्णतः कृताः।पूजयेद् धान्यराशिस्थ कलशोपरि शक्तितः।।पञ्चमे कलशे रूद्र पूजयेद्रुद्रसंख्यया।पूजन के अन्त में समिधा घी तिल चरू से १००८ या १०० या ३०० आहुति से हवन करना चाहिये।ब्रह्मादि पञ्च स्थापित देवताओं का हवन उन्हीं के मन्त्रों से कराना चाहिये।ततः–अभिषेक कुटुम्बस्य शान्तिपाठं तु कारयेत्।।ब्राह्मणान्भोजयेच्छक्त्या दीनानाथांश्च तर्पयेत्।कृत्वैवं विधिना शान्ति सर्वारिष्टाद्विमुच्यते।।

तिथिः ८ गुरू सूर्योदये

बु रा १ | ले १२ | ११ श
शु २ | सू गु | १०
मं ३ | ९ चं
४ | ६ | ८
५ | ७ के

वैशाखस्नान–चैत्र शुक्लपूर्णिमा से वैशाख शुक्लपूर्णिमा तक प्रतिदिन प्रातःकाल सूर्योदय से पूर्व किसी तीर्थस्थान नदी या कुआ,बावली सरोवर अथवा अपने घरपर ही शुद्ध जल से स्नान करें और नित्यकृत्य कर के "ॐ नमो भगवते वासुदेवाय" या "ॐ नमो नारायणाय" मन्त्र का यथाशक्ति जप करके एक बार भोजन करें।इक्तीस दिन तक ऐसा क्रम रखने से अनेक प्रकार के रोग और दोष दूर होते हैं एवं प्रभा तथा पुण्य बढ़ता है। **संकष्ट चतुर्थी** – यह व्रत प्रत्येक महीने की कृष्ण चतुर्थी को किया जाता है।इसमें चन्द्रोदय तक रहने वाली चतुर्थी ग्रहण की जाती है।यदि दो दिन ऐसी चतुर्थी हो तो "मातृविद्धा प्रशस्यते" के अनुसार तृतीया से युक्त व्रत करना चाहिये।उस दिन सायंकाल के समय स्नान करके गणेश जी की पूजा करें और चन्द्रोदय होने पर उन्हें अर्घ्य दे।**चण्डिकानवमी**–यह व्रत वैशाख के दोनों पक्षों में नवमी को किया जाता है।इस दिन प्रातः स्नान के पश्चात् लाल धोती पहनकर सुगन्ध–युक्त पुष्पादि से चण्डिका देवी का पूजन करे और पुष्पाञ्जली अर्पण कर उपवास रखे।इस व्रत का सविधि अनुष्ठान करने वाला मनुष्य हंस,कुन्द और चन्द्रमा के समान गौरवर्ण एवं ध्रुव के समान तेजस्वी दिव्य स्वरुप धारण कर उत्तम विमान पर आरूढ़ हो देवलोक में आदर पाता है।**कृष्णैकादशी**–वैशाख कृष्ण की एकादशी का नाम वरूथिनी है।इसका व्रत करने से सब प्रकार के पाप–ताप दूर होते है,अनन्त शान्ति मिलती है और स्वर्गादि उत्तम लोक प्राप्त होते हैं।व्रती को चाहिये कि वह दशमी को हविष्यान्न का एक बार भोजन करें।कांस्यपात्र और मसूरादि अन्नों को ग्रहण न करें।फिर एकादशी को उपवास करें,उसदिन निद्रा आदि का त्याग करें।रात्रि में भगवत् नाम–स्मरण पूर्वक जागरण करें और द्वादशी को पारणा करे।**प्रदोषव्रत** –यह प्रसिद्ध व्रत है।प्रत्येकमास की कृष्ण–शुक्लत्रयोदशी को किया जाता है व्रती को चाहिये कि वह व्रत के दिन सूर्यास्त के समय पुनः स्नान करके शिवजी के समीप बैठकर उनका भक्तिसहित पूजन करे और सूर्यास्त से दो या तीन घड़ी रात्रि व्यतीत होने से पहले ही फलाहार करके शिव का स्मरण करे और ॐ नमः शिवाय मन्त्र का यथा सम्भव जप करे।**अथ वैशाखमासकृत्यम्**– मेषसंक्रमणपुण्यकालकथनम्–निर्णये यथा–मेषसंक्रमणात् प्रागपरा दश घटिकाः पुण्यकालः।**वैशाखे त्याज्यवस्तूनि**–कांस्य मांष मसूरान्नं चणकं कोद्रवं तथा।शाकं मधुपरान्नञ्च पुनर्भोजनमैथुने।।**धर्मघटादिदानकथनम्**–पाद्मे यथा–तीर्थे चानुदिनं स्नानं तिलैश्च पितृतर्पणम्।दानं धर्मघटादीनां मधुसूदनपूजनम्।।माधवे मासि कुर्वीत मधुसूदनतुष्टिदम्।।**वैशाखस्नानमहत्त्वम्**–पद्मपुराणे–तुलामकरमेषेषु प्रातः स्नानं विधीयते। हविष्यंब्रह्मचर्यञ्च महापातकनाशनम्।।**वैशाखेप्रातःस्नानमन्त्रः**–ॐ वैशाखं सकलं मासं मेषसंक्रमण रवेः।प्रातःसनियमः स्नास्ये प्रीयतां मधुसूदन। मधुहन्तुःप्रसादेन ब्राह्मणानामनुग्रहात्।निर्विघ्नमस्तु मे पुण्यं वैशाखस्नानमन्वहम्।।माधवे मेषगे भानौ मुरारे मधुसूदन।प्रातः स्नानेन मे नाथ;फलदो भव पापहन्।।**मासनदीविशेषस्नानम्**:–कौशिकी माधवे स्नायान्माघे वै कमलान्तथा।इच्छावती तथा पौषे चैत्रे वै लक्ष्मणा शुभा।बाङ्मती फाल्गुने शस्ता गण्डकी चाऽपि कार्तिके।मलमासे विशेषेण गैरिका फलदायिनी।।गंगा तु सर्वदाशुभा।।वैशाखे सम्पूर्णस्नानाशक्ता वन्ते त्रयोदश्यादि दिनत्रयेऽपि स्नानस्य विशेषफलमुक्तम्–त्रयोदश्यां चतुर्दश्यां वैशाखे च दिनत्रयम्।अपि सम्यग्विधानेन नारी वा पुरुषोऽपि वा। प्रातः स्नातः सनियमः सर्वपापैः प्रमुच्यते।यदा तु वैशाखो मलमासो भवति तदा काम्यानां तत्र समाप्तिनिषेधात् मासद्वयं स्नानं तन्नियमाश्च कर्त्तव्याः।मासोपवासचान्द्रायणादि तु मलमास एव समापयेत्।**वैशाखे विष्णुतुलसीपूजनम्**:–तुलसी कृष्ण गौराख्या तयाऽभ्यर्च्य मधुद्विषम्।विशेषेण तु वैशाखे नरो नारायणो भवेत्।।माधवं सकलं मासं तुलस्या योऽर्चयेन्नरः।त्रिसंध्यं मधुहन्तारं नास्ति तस्य पुनर्भवः।।**मेषार्के दानविशेषः**–यो मेषस्थेऽर्के ददाति सक्तूनम्बुघटान्वितान्। उद्दिश्य पितृन् देवांश्च सर्वपापैःप्रमुच्यते।**सक्तुदानमन्त्रः**–ॐ सक्तुतो धर्मदानित्यं ब्रह्मणः प्रीतिकारका।त्वद्दानान्मम दुष्कर्मक्षयोऽस्तु सुखमस्तु मे।।प्राजापत्यास्ताः प्रोक्ता सक्तवो यज्ञकर्मणि। तस्मादेषां प्रदानेन प्रीयतां मे प्रजापतिः।

वैशाखशुक्लपक्षः

शाके १९४४;संवत् २०८०;फसली १४३०;दिनाङ्क २१:०४:२०२३ ई. ततो दिनाङ्क ०५:०५:२०२३ ईस्वी या.। दक्षिणे राहु कालः। अयनांश २२:५०:५४।
मार्गीपूर्वोदितो मंगलःशनि,वक्रीपूर्वोदित बुधःततो ति ३ आस्तोः,मार्गी पश्चिमास्तो गुरूः ततो ति.७ पूर्वोदित गुरूः,पश्चिमोदितोः शुक्रः,वसन्तर्तुः,सौम्यगोलः,सौम्यायनं।

तिथि वार	तिथ्यन्तः द. प.	तिथ्यन्तः घं. मि.	नक्षत्र	नक्षत्रान्तः द. प.	नक्षत्रान्तः घं. मि.	योग	योगान्तः द. प.	करणान्तः क. द. प.	चन्द्रराश्यन्तः रा. द. प.	चन्द्रराश्यन्तः घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू. उ घं.मि.	सू. अ घं.मि.	दिनाङ्का सौ	दिनाङ्का अं	विवरण
०१ शु	०७:३३	दि.०८:३७	भरणी	४४:४५	रा.११:३०	प्रीतिः	१४:५२	ब. ०७:३३	मेष	अहोरात्र	००:०७:०६:१५	३२:००	०५:३६	०६:२४	०८	२१	श्रीशिवाजीजयन्ती, चन्द्रदर्शनं, शिववास दि. ०८:३७ उ., सिद्धियोग दि.०८:३७ या., ततो मृत्युयोग दि.०८:३७ उ.।
०२ श	०६:२६	दि.०८:०९	कृति.	४६:०८	रा.१२:०२	आयु.	११:२५	कौ. ०६:२६	मे.००:०६	प्रा.०५:३७	००:०८:०४:३८	३२:०४	०५:३५	०६:२५	०९	२२	शिववास दि. ०८:०९ या., पूर्वदक्षिणयात्रा रोहिण्याम् । 卐 सिद्धियोग रा.०८:५२ या. ततो मृत्युयोग रा.०८:५२ उ.,भद्रारंभः०६:२३ उपरि ततो भद्रांतः३८:२४ यावत्।
०३ र.	०६:३७	दि.०८:१२	रोहि.	४८:४८	रा.०१:०५	सौभा.	०८:५९	ग. ०६:३७	वृष	अहोरात्र	००:०९:०३:०१	३२:०८	०५:३४	०६:२६	१०	२३	अक्षयतृतीया,त्रेतायुगादिः गंगास्नानदानादिः,परशुराम जयन्ती,वीरकुवरसिह जयन्ती,श्रीगणेश ४ व्रतं,सिद्धियोग दि.०८:१२ या.,भद्रारंभः३७:२३ उपरि,वक्री बुधःपश्चिमास्तः४५:२८।
०४ चं	०८:०९	दि.०८:५०	मृग.	५२:४०	रा.०२:३८	शोभ.	०७:३४	वि. ०८:०९	वृ.२०:४९	दि.०१:५४	००:१०:०१:२४	३२:१२	०५:३४	०६:२६	११	२४	मुण्डन द्विरागमनं पूर्वविना यात्रा पंचमी मृगशिरशि, शिववास दि. ०८:५० उ., अमृतयोग दि.०८:५० उ., सर्वार्थसिद्धियोग रा.०२:३८ उ.,भद्रांतः०८:०९ यावत्।
०५ मं.	१०:४७	दि.०९:५२	आर्द्रा	५७:४१	रा.०४:३७	अतिग	०७:०६	बा. १०:४७	मिथुन	अहोरात्र	००:१०:५९:४७	३२:१६	०५:३३	०६:२७	१२	२५	दग्ध ति.(१०:३८ उ.), श्रीशंकराचार्यस्य जयन्तीमहोत्सव,शिववास, मृत्युयोग दि.०९:५२ उ.।
०६ बु.	१४:३८	दि.११:२४	पुन.	६०:००	अहोरात्र	सुकर्मा	०७:२८	तै. १४:३८	मि.४७:०२	रा.१२:२१	००:११:५८:१०	३२:१८	०५:३३	०६:२७	१३	२६	दग्ध ति.(१४:३८ या.),मुण्डनं कर्णवेध द्विरागमनं सप्तम्यां, शिववास, अमृतयोग दि.११:२४ या., ततो सिद्धियोग दि.११:२४ उ.।
०७ गु.	१९:१२	दि.०१:१३	पुन.	०३:३१	दि.०६:५६	धृतिः	०८:२९	व. १९:१२	कर्क	अहोरात्र	००:१२:५६:३२	३२:२०	०५:३२	०६:२८	१४	२७	जहनु ७,गंगास्नानदानादिः, मुण्डनं कर्णवेध द्विरागमनं सप्तम्यां, दक्षिणविनायात्रा पुष्ये,अमृतयोग दि.०१:१३ उ.,सर्वार्थसिद्धियोग दि.०६:५६ या.,भद्रारंभः१९:१२ उपरि ततो ●
०८ शु.	२४:२२	दि.०३:१७	पुष्य	०९:५६	दि.०९:३०	शूलः	०९:५६	ब. २४:२२	कर्क	अहोरात्र	००:१३:५४:४०	३२:२४	०५:३२	०६:२८	१५	२८	द्विरागमनं पुष्ये,✵ भरण्यांरविः१०:२५, पश्चिमविनायात्रा पुष्ये, शिववास दि. ०३:१७ उ., अमृतयोग दि.०३:१७ उ.। ● भद्रांतः५१:४७ यावत्,पूर्वोदितगुरौ ५२:३८।
०९ श.	२९:३०	दि.०५:१९	आश्ले	१६:३१	दि.१२:०७	गण्डः	११:३२	बा. ०१:४५	क.१६:३१	दि.१२:०७	००:१४:५२:४८	३२:२४	०५:३१	०६:२९	१६	२९	जानकीनवमी व्रतं, मैथिलीदिवसः, हनुमद्ध्वजदानं, शिववास दि.०५:१९या., सिद्धियोग दि.०५:१९ या., मृत्युयोग दि.०५:१९ उ.।
१० र.	३४:२२	रा.०७:१५	मघा	२२:५३	दि.०२:३९	वृद्धिः	१२:५७	तै. ०१:५६	सिंह	अहोरात्र	००:१५:५०:५६	३२:२८	०५:३०	०६:३०	१७	३०	जानकीनवमी पारणं,षाण्मासिकरविव्रतविसर्गः,अमृतयोग रा.०७:१५ या.,ततो मृत्युयोग रा.०७:१५ उ.,पुष्टौगुरौ ५२:३८।
११ चं.	३८:२४	रा.०८:५२	पू.फा.	२८:४५	दि.०५:००	ध्रुवः	१३:५६	व. ०६:२३	सिं.४४:५४	रा.११:२८	००:१६:४९:०३	३२:२८	०५:३०	०६:३०	१८	१	मई ०५,विजया ११ व्रतं सर्वेषां,गृहारंभप्रवेशौ मुण्डन विवाह उ.फा., द्विरागमनश्चैकादश्यां, उपनयन, रात्रौ ११ व्रतोद्यापनं, उत्तरयात्रा पू.फा.卐
१२ मं.	४१:२९	रा.१०:०५	उ.फा.	३३:२२	सं.०६:५०	व्या.	१४:१२	ब. ०१:५२	कन्या	अहोरात्र	००:१७:४७:१०	३२:३६	०५:२९	०६:३१	१९	२	कुशोदकेन पारणं,शिववास, पश्चिमदक्षिणयात्रा हस्ते, अमृतयोग रा.१०:०५ या.ततो सिद्धियोग रा.१०:०५ उ.।
१३ बु.	४३:३८	रा.१०:५६	हस्त	३७:०३	रा.०८:१८	हर्षण	१३:३४	कौ. १२:२७	कन्या	अहोरात्र	००:१८:४५:१७	३२:३६	०५:२९	०६:३१	२०	३	प्रदोष १३ व्रतं,मुण्डनं, विवाह त्रयोदश्यां, देवादिप्रतिष्ठा, गृहप्रवेश हस्ते,शिववास,मृत्युयोग रा.१०:५६ या.,सर्वार्थसिद्धियोग रा.०८:१८ या.,भद्रारंभः४४:०५ उपरि।
१४ गु.	४४:०५	रा.११:०६	चित्रा	३९:२९	रा.०९:१६	वज्रः	१२:०२	ग. १३:५२	क.०८:१५	दि.०८:४७	००:१९:४३:२४	३२:४०	०५:२८	०६:३२	२१	४	प्रदोष १४ व्रतं, नरसिंह १४ व्रतं, नरसिंहावतारः, द्विरागमनं पश्चिमयात्रा पूर्णिमायां,मृत्युयोग रा.११:०६ या.,ततो सिद्धियोग रा.११:०६ उ.,भद्रांतः१३:४५ यावत् ।
१५ शु.	४३:२५	रा.१०:४९	स्वा.	४०:३६	रा.०९:४१	सिद्धिः	०९:२९	वि. १३:२५	तुला	अहोरात्र	००:२०:४१:१४	३२:४४	०५:२७	०६:३३	२२	५	वैशाखी १५, स्नानदानव्रतादौपूर्णिमा, कच्छपावतारः, श्रीबुद्धजयन्ती, गृहारंभ विवाह द्विरागमनं दक्षिणयात्रा स्वात्यां,सिद्धियोग रा.१०:४९ उ.।

मिश्रमान कालिक दैनिक स्पष्टग्रहाः

ति	मंगलः	बुधःवक्री	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमान
१	०२:१८:२५:५७	००:२४:०६:४३	००:००:३४:०१	०१:१८:५६:५८	१०:०७:५२:१४	०६:१२:२३:४७	४६:००
२	०२:१८:५८:५१	००:२३:५१:२६	००:००:४७:५६	०१:२०:०३:२२	१०:०७:५७:१७	०६:१२:२०:३६	४६:०२
३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४६:०४
४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४६:०६
५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४६:०८
६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४६:०९
७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४६:१०
८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४६:१२
९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४६:१२
१०	[illegible]	[illegible]	००:०२:४५:१३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४६:१४
११	[illegible]	[illegible]:२२	००:०३:०१:०७	०२:००:००:३७	१०:०८:४०:०५	०६:११:५१:५८	४६:१४
१२	[illegible]	[illegible]:२२	००:०३:१७:०१	०२:०१:०६:५५	१०:०८:४४:२९	०६:११:४८:४७	४६:१८
१३	[illegible]	[illegible]:३३	००:०३:३२:५६	०२:०२:१३:१४	१०:०८:४८:५३	०६:११:४५:३७	४६:१८
१४	[illegible]	[illegible]:३८	००:०३:४८:५१	०२:०३:१९:३३	१०:०८:५३:१७	०६:११:४२:२७	४६:२०
१५	[illegible]	[illegible]:०६	००:०४:००:३३	०२:०४:२२:०१	१०:०८:५७:०३	०६:११:३९:१६	४६:२२

दैनिक लग्न सारणी चक्रम्

मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिं.अं.	क.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
०६:५३	०८:४९	११:०२	१३:२०	१५:३६	१७:५१	२०:०८	२२:२५	००:३०	०२:१६	०३:४७	०५:१६
०६:४९	०८:४५	१०:५८	१३:१६	१५:३२	१७:४७	२०:०४	२२:२१	००:२६	०२:१२	०३:४३	०५:१२
०६:४५	०८:४१	१०:५४	१३:१२	१५:२८	१७:४३	२०:००	२२:१७	००:२२	०२:०८	०३:३९	०५:०८
०६:४१	०८:३७	१०:५०	१३:०८	१५:२४	१७:३९	१९:५६	२२:१३	००:१८	०२:०४	०३:३५	०५:०४
०६:३८	०८:३४	१०:४७	१३:०५	१५:२१	१७:३६	१९:५३	२२:१०	००:१५	०२:०१	०३:३२	०५:०१
०६:३४	०८:३०	१०:४३	१३:०१	१५:१७	१७:३२	१९:४९	२२:०६	००:११	०१:५७	०३:२८	०४:५७
०६:३०	०८:२६	१०:३९	१२:५७	१५:१३	१७:२८	१९:४५	२२:०२	००:०७	०१:५३	०३:२४	०४:५३
०६:२६	०८:२२	१०:३५	१२:५३	१५:०९	१७:२४	१९:४१	२१:५८	००:०३	०१:४९	०३:२०	०४:४९
०६:२३	०८:१९	१०:३२	१२:५०	१५:०६	१७:२१	१९:३८	२१:५५	००:००	०१:४६	०३:१७	०४:४६
०६:१९	०८:१५	१०:२८	१२:४६	१५:०२	१७:१७	१९:३४	२१:५१	२३:५६	०१:४२	०३:१३	०४:४२
०६:१५	०८:११	१०:२४	१२:४२	१४:५८	१७:१३	१९:३०	२१:४७	२३:५२	०१:३८	०३:०९	०४:३८
०६:११	०८:०७	१०:२०	१२:३८	१४:५४	१७:०९	१९:२६	२१:४३	२३:४८	०१:३४	०३:०५	०४:३४
०६:०८	०८:०४	१०:१७	१२:३५	१४:५१	१७:०६	१९:२३	२१:४०	२३:४५	०१:३१	०३:०२	०४:३१
०६:०४	०८:००	१०:१३	१२:३१	१४:४७	१७:०२	१९:१९	२१:३६	२३:४१	०१:२७	०२:५८	०४:२७
०६:००	०७:५६	१०:०९	१२:२७	१४:४३	१६:५८	१९:१५	२१:३२	२३:३७	०१:२३	०२:५४	०४:२३

दैनिक अर्धप्रहरा चक्रम्

वार	दिन का अर्धप्रहरा	रात का अर्धप्रहरा
शु.	दि. ०८:४८-१२:००।	रा. ०९:१२-१०:३६।
श.	दि.०५:३५-७:११ । दि.१:३५-३:११। दि. ४:४७-६:२५।	रा. ६:२५-७:४८।रा.१:२०-२.४३।रा.४:०६-५:३५।
र.	दि. १०:२२-०१:३४।	रा. १०:३५-११:५८। रा.०१:२१-०२:४४।
चं.	दि. ०७:१०-०८:४६। दि. ०३:१०-०४:४६।	रा. १०:३५-११:५८ । रा.०२:४४-४:०७ ।
मं.	दि. ०७:०९-०८:४५। दि. ०१:३३-०३:०९।	रा. ०७:४९-०९:१२।
बु.	दि. ०८:४५-१०:२१। दि. ११:५७-०१:३३।	रा. ११:५८-०१:२१। रा.०२:४४-०४:०७।
गु.	दि. ०३:१४-०६:२८।	रा. १२:००-०१:२३। रा.०४:०९-०५:३२।
शु.	दि. ०८:४६-१२:०० ।	रा. ०९:१४-१०:३७।
श.	दि. ५:३१-७:०८ । दि.१:३६-३:१३। दि. ४:५०-६:२१।	रा. ६:२९-७:५१। रा.१:११-२:४१।रा. ४:०३-५:३१।
र.	दि. १०:२१-०१:३५ ।	रा. १०:३६-११:५८। रा.०१:२०-०२:४२।
चं.	दि. ०७:०७-०८:४४ । दि.०३:१२-०४:४९ ।	रा. १०:३६-११:५८। रा.०२:४२-०४:०४।
मं.	दि. ०७:०६-०८:४३। दि.०१:३४-०३:११।	रा. ०७:५३-०९:१५ ।
बु.	दि. ०८:४३-१०:२०। दि.११:५७-०१:३४।	रा. ११:५९-१:२१ । रा.०२:४३-०४:०५।
गु.	दि. ०३:१६-०६:३२।	रा. १२:००-१:२२। रा.०४:०६-०५:२८।
श.	दि. ०८:४३-११:५९।	रा. ०९:१५-१०:३६।

तिथिः १ शुक्र सूर्योदये

२ शु | ले १ | १२
मं ३ | सू चं बु गु रा | ११ श
४ | १०
५ | ७ के | ९
६ | ८

शकुन के आधार पर वर्षा विचार :- (मयूरचित्रकम् पृष्ठ २१३ से २१७)
१.गौरैया धूल में स्नान करे या चातक बोले तो शीघ्र वर्षा होती है।२.कागज पर लिखने से इंक पसरे देर से सूखे तो वर्षा होती है।३.गाय या गिरगिट सूर्य की ओर देखे,कुत्ता घर से बाहर जाने को अधिक उद्यत हो तो वर्षा होती है।४.पशु,कुत्ता खुरों से मिट्टी खोदे,आधी रात को मुर्गा बोले तो शीघ्र वर्षा होती है।५.लाल चींटी अंडों के साथ ऊपर की ओर चढ़े अथवा शमी वृक्ष पर चढ़े तो वर्षा होती है।६.गोबर में अधिक कीड़ा हो जाए,धूप में तेजी रहे,पपीहा बोले तो शीघ्र वर्षा होती है।७.जहाँ तहाँ बगुला पंख फैलाकर पंक्ति में दिखे तो २-३प्रहरों के बीच वर्षा होती है।८.मक्खी,भ्रमर-पंक्ति में उड़े, गोबर की ओर जाय तो वर्षा होती है।९.मछली जमीन की ओर आने को उद्यत हो और मेढ़क जोर से शब्द करे तो शीघ्र वर्षा होती है।१०.गुड़,नमक,मक्खन(घी),अफीम अनायास पिघले तो वर्षा होती है ।

अक्षय तृतीया में वर्षा परीक्षण -अक्षय तृतीया के दिन में १२ बजे से ६ बजे साय तक को ४ भागों में बाँट दें।प्रथम-१´घ. को आषाढ-पूर्व की हवा बहे,द्वितीय-१´घं. को श्रावण-उत्तर की हवा बहे, तृतीय-१´घं. को भाद्रपद-पश्चिम की हवा बहे।अन्तिम-१´घंटे को आश्विन (मान लें) दक्षिण की हवा बहे तो उक्त महीनों में अच्छी वर्षा होगी।अक्षय तृतीया को दिन रात पूर्व हवा बहे तो घास की हानि, पश्चिम की हवा बहे तो सुख,उत्तर की हवा चले तो वर्षा ऋतु में २१ दिनों तक मेघ गरजता है।चौतरफी हवा बहे तो दुर्भिक्ष होता है।पूर्व-उत्तर की हवा से मेघ,दक्षिण-नैऋत्य की हवा से वर्षा मे रुकावट,पश्चिम की हवा से अच्छी वर्षा होती है।अक्षय तृतीया के बाद ५-७ दिन तक तेज हवा बहे तो सुभिक्ष होता है।फसल अच्छी होती है ।

तिथिः ८ शुक्र सूर्योदये

२ शु | ले १ | १२
मं ३ | सू बु गु रा | श ११
४ चं | १०
५ | ७ के | ९
६ | ८

अक्षयतृतीयाः-वैशाखशुक्लतृतीया अक्षय्यतृतीयोच्यते।सा पूर्वाह्णव्यापिनी ग्राह्या।दिनद्वयेऽपि तद्व्याप्तौ परैव।यदा चतुर्थीयुक्ता अभावे द्वितीया युक्तादपि ग्राह्या।इस दिन व्रती को चाहिये कि वह प्रातः स्नानादि से निवृत्त होकर **"ममाखिलपापक्षयपूर्वकसकलशुभफलप्राप्तये भगवत्प्रीति कामनया देवत्रयपूजनमहं करिष्ये"** ऐसा संकल्प करके भगवान् का यथाविधि षोडशोपचार से पूजन करे उन्हें पञ्चामृत से स्नान करावे,सुगन्धित पुष्पमाला पहनावे और नैवेद्य में नर-नारायण के निमित्त सेके हुए जौ या गेहूं का सत्तू,परशुराम के निमित्त कोमल ककड़ी और हयग्रीव के निमित्त भीगी हुई चने की दाल अर्पण करे।बन सके तो उपवास तथा समुद्रस्नान या गङ्गास्नान करे और जौ,गेहूं,चने,सत्तू,दही चावल ईख के रस और दूध के बने हुए खाद्यपदार्थ (खांड़,मावा,मिठाई आदि) तथा सुवर्ण एवं जलपूर्ण कलश, धर्मघट,अन्न,सब प्रकार के रस और ग्रीष्म ऋतु के उपयोगी वस्तुओं का दान करे तथा पितृश्राद्ध करे और ब्राह्मणभोजन भी करावे। यह सब यथाशक्ति करने से अनन्त फल होता है।**परशुरामजयन्ती**-परशुरामजी का जन्म वैशाखशुक्ल तृतीया को रात्रि के प्रथम प्रहर में हुआ था,अतः यह प्रदोषव्यापिनी ग्राह्य होती है।यदि दो दिन प्रदोष व्यापिनी हो तो दूसरे दिन व्रत करना चाहिये।व्रत के दिन प्रातःस्नान के अनन्तर **"ममब्रह्मत्वप्राप्तिकामनया परशुरामपूजनमहं करिष्ये"** यह संकल्प करके सूर्यास्त तक मौन रखे और सायंकाल में पुनःस्नान करके परशुराम जी का पूजन करे तथा **"जमदग्निसुतो वीर क्षत्रियान्तकर प्रभो।गृहाणार्घ्यं मया दत्तं कृपया परमेश्वर।।"** इस मन्त्र से अर्घ्य देकर रात्रिभर राममन्त्र का जप करे।**गङ्गोत्पत्तिः**-वैशाखशुक्लसप्तम्यां गङ्गोत्पत्तिः।उक्तञ्च पाद्मे-वैशाखे शुक्लसप्तम्यां जह्नुना जाह्नवी पुरा।क्रोधात्पीता पुनस्त्यक्ता कर्णरन्ध्रात्तु दक्षिणात्।तां तत्र पूजयेद्देवीं गङ्गां गगनमेखलाम्।।**नृसिंहजयन्तीः**-वैशाखशुक्ल चतुर्दशी नृसिंहजयन्ती।सा प्रदोषव्यापिनी ग्राह्या।तदुक्तंनृसिंहपुराणे-वैशाखेशुक्लपक्षे तु चतुर्दश्यां निशामुखे।मज्जन्मसम्भव पुण्यं व्रत पापप्रणाशनम्। वर्षे वर्षे तु कर्तव्यं मम सन्तुष्टिकारणम्।।योऽश्वत्थमर्चयेद्देवमुदकेन समन्ततः।कुलानामयुतं तेन तारितं स्यान्न संशयः।।

वैशाखपूर्णिमामहत्त्वम्:- तत्र सङ्कल्पः ओमद्येत्यादिगङ्गास्नानजन्यफलसहस्रगुणाधिकफल प्राप्तिकामो गङ्गायां स्नानं तदन्ते दानञ्च करिष्ये। वैशाखी पूर्णिमा बड़ी पवित्र तिथि है।इस दिन दान-धर्मादि के अनेक कार्य किये जाते है।अतः यह उदय से उदयपर्य्यन्त हो तो विशेष श्रेष्ठ होती है।अन्यथा कार्यानुसार लेनी चाहिये।इस दिन धर्मराज के निमित्त जलपूर्ण कलश और पकवान देने से गोदान के समान फल होता है।यदि पांच या सात ब्राह्मणों को शर्करासहित तिल दे तो सब पापों का क्षय हो जाता है।इस दिन शुद्ध भूमिपर तिल फैलाकर उस पर पूछ और सींगोंसहित काले मृग का धर्म बिछावे और उसे सब प्रकार के वस्त्रों सहित दान करे तो अनन्त फल होता है।यदि तिलों के जल से स्नान करके घी,चीनी और तिलों से भरा हुआ पात्र विष्णुभगवान् को निवेदन करे और उन्हीं से अग्नि में आहुति दे अथवा तिल और शहद का दान करे,तिलके तेल का दीपक जलावे,जल और तिलों का तर्पण करें अथवा गङ्गादि में स्नान करें तो सब पापों से निवृत्त होता है।यदि इस दिन एक समय भोजन करके पूर्णिमा को सत्यनारायण का व्रत करे,तो सब प्रकार के सुख, सम्पदा और श्रेय की प्राप्ति होती है।

ज्येष्ठशुक्लपक्षः

शाके १९४५; संवत् २०८०; फसली १४३०; दिनाङ्क २०:०५:२०२३ ई. ततो दिनाङ्क ०४:०६:२०२३ ईस्वी या.। पश्चिमे राहु कालः।
मार्गी पूर्वोदितो मंगलः बुधः गुरूः शनिः, मार्गी पश्चिमोदितोः शुक्रः, ग्रीष्मर्तु, सौम्यगोलः, सौम्यायनम्, अयनांश २२:५०:५४ ।

तिथि वार	तिथ्यन्तः द.प.	तिथ्यन्तः घं.मि.	नक्षत्र	नक्षत्रान्तः द.प.	नक्षत्रान्तः घं.मि.	योग	योगान्तः द.प.	करणान्तः क. द.प.	चन्द्रराश्यन्तः रा. द.प.	चन्द्रराश्यन्तः घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू. उ. घं.मि.	सू. अ. घं.मि.	दिनाङ्काः सौ	दिनाङ्काः अं
०१ श.	३८:२४	रा.०८:४०	कृति.	०६:०२	दि.०७:४३	अतिग	२९:५८	किं. ०८:२२	वृष	अहोरात्र	०१:०५:०७:३४	३३:३०	०५:१८	०६:४२	०६	२०
०२ र.	३९:४६	रा.०९:१२	रोहि.	०८:२७	दि.०८:४१	सुकर्मा	२८:२३	बा. ०९:०५	वृ.४०:१५	रा.०९:२४	०१:०६:०५:०४	३३:३२	०५:१८	०६:४२	०७	२१
०३ चं	४२:१८	रा.१०:१२	मृग.	१२:०५	दि.०९:०७	धृतिः	२७:४७	तै. ११:०२	मिथुन	अहोरात्र	०१:०७:०२:३४	३३:३४	०५:१७	०६:४३	०८	२२
०४ मं.	४५:२०	रा.११:२५	आर्द्रा	१६:५०	दि.१२:०१	शूलः	२८:०४	व. १३:५१	मिथुन	अहोरात्र	०१:०८:००:०४	३३:३६	०५:१७	०६:४३	०९	२३
०५ बु	५०:३१	रा.०१:२८	पुन.	२२:३०	दि.०२:१६	गण्डः	२९:०३	ब. १७:५६	मि.०६:०५	दि.०७:४२	०१:०८:५७:३३	३३:३८	०५:१६	०६:४४	१०	२४
०६ गु	५५:३४	रा.०३:३०	पुष्य	२८:५१	दि.०४:४८	वृद्धिः	३०:३९	कौ. २३:०३	कर्क	अहोरात्र	०१:०९:५५:०२	३३:४०	०५:१६	०६:४४	११	२५
०७ शु	६०:००	अहोरात्र	आश्ले	३५:२७	रा.०७:२७	ध्रुवः	३२:११	ग. २८:०८	क.३५:२७	रा.०७:२७	०१:१०:५२:२०	३३:४२	०५:१६	०६:४४	१२	२६
०७ श	००:४१	प्रा.०५:३२	मघा	४१:५२	रा.१०:०१	व्या.	३३:४३	व. ००:४१	सिंह	अहोरात्र	०१:११:४९:३८	३३:४२	०५:१६	०६:४४	१३	२७
०८ र.	०५:२६	दि.०७:२५	पू.फा.	४७:४४	रा.१२:२१	हर्षण	३३:५१	ब. ०५:२६	सिंह	अहोरात्र	०१:१२:४६:५६	३३:४४	०५:१५	०६:४५	१४	२८
०९ चं	०९:३४	दि.०९:०५	उ.फा.	५२:४६	रा.०२:२१	व्ज्रः	३५:२२	कौ. ०९:३४	सिं.०३:५९	दि.०६:५०	०१:१३:४४:१४	३३:४५	०५:१५	०६:४५	१५	२९
१० मं.	१२:३३	दि.१०:१६	हस्त	५६:३८	रा.०३:५४	सिद्धिः	३४:५९	ग. १२:३३	कन्या	अहोरात्र	०१:१४:४१:३२	३३:४६	०५:१५	०६:४५	१६	३०
११ बु	१४:३१	दि.११:०३	चित्रा	५९:२२	रा.शे.५:००	व्यति.	३३:४६	वि. १४:३१	क.२८:००	दि.०४:२७	०१:१५:३८:५०	३३:४६	०५:१५	०६:४५	१७	३१
१२ गु	१५:०७	दि.११:१७	स्वा.	६०:००	अहोरात्र	वरी.	३१:२८	बा. १५:०७	तुला	अहोरात्र	०१:१६:३६:०८	३३:४८	०५:१४	०६:४६	१८	१
१३ शु	१४:२५	दि.११:००	स्वा.	००:४७	प्रा.०५:३३	परिघः	२८:१२	तै. १४:२५	तु.४५:५४	रा.११:३६	०१:१७:३३:१८	३३:४८	०५:१४	०६:४६	१९	२
१४ श	१२:३०	दि.१०:१४	विशा.	००:५८	प्रा.०५:३७	शिवः	२३:५४	व. १२:३०	वृश्चिक	अहोरात्र	०१:१८:३०:२८	३३:५०	०५:१४	०६:४६	२०	३
१५ र.	०९:३०	दि.०९:०१	ज्येष्ठा	५८:०८	रा.०४:२८	सिद्धः	१८:४६	ब. ०९:३०	वृ.५८:०८	रा.०४:२८	०१:१९:२७:३८	३३:५०	०५:१३	०६:४७	२१	४

- २० — दक्षिणयात्रा रोहिण्यां, अमृतयोग रा.०८:४० या., सर्वार्थसिद्धियोग दि.०७:४३ उ.।
- २१ — चन्द्रदर्शनं मु. १५ सौम्यश्रृंगंफल महार्घ, **विवाह दिवारात्रौ**, शिववास, पश्चिमांविनायात्रा मृगशिरशि, सिद्धियोग रा.०९:१२ उ.।
- २२ — दग्ध ति.(४२:१८ उ.), **रम्भा तृतीया, पंचाग्नी व्रतं, मुण्डन कर्णवेध उपनयन विवाह** देवादिप्रतिष्ठा, पूर्वविनायात्रा मृगशिरशि।
- २३ — दग्ध ति.(४५:२० या.), **श्रीवक्रतुण्ड ४ व्रतं**,भद्रारंभ:१३:४९ उपरि ततो भद्रांतः ४५:२० यावत्।
- २४ — **मुण्डन, क्षत्रिवैश्योपनयन, शिववास, गृहप्रवेश,देवादिप्रतिष्ठा,** उत्तरविनायात्रा पुष्ये, अमृतयोग रा.०१:२८ उ.।
- २५ — **देवादिप्रतिष्ठा,** शिववसा,दक्षिणांविनायात्रा पुष्ये,सर्वार्थसिद्धियोग दि.०४:३८ या.।
- २६ — **विवाह मघा.,✷रोहिण्यांरविः ५२:०२,** मृत्युयोग (अहोरात्र)।
- २७ — उत्तरयात्रा पू.फा., भद्रारंभ:००:४१ उपरि ततो भद्रांत:३२:२३ यावत्। ꠰ पश्चिमदक्षिणयात्रा,अमृतयोग दि.११:०३ या.,ततो सिद्धियोग दि.११:०३ उ.,भद्रांत:१४:३१ यावत्।
- २८ — शिववास दि. ०७:२५ उ., पूवोत्तरयात्रा पू.फा., सिद्धियोग दि.०७:२५ या.,।
- २९ — **विवाह मुण्डन उपनयन गृहप्रवेश देवादिप्रतिष्ठा दशम्यां,** शिववास दि. ०९:०५ या., दक्षिणयात्रा हस्ते, अमृतयोग दि.०९:०५ उ.।
- ३० — **गंगादशहरा,** गंगास्नानदानादिः, छन्दोगानामुपनयन, पूर्वदक्षिणयात्रा दशम्याम्,मृत्युयोग दि.१०:१६ उ., भद्रारंभ:४३:३२ उपरि ।
- ३१ — **निर्जला ११ व्रतं सर्वेषां,गृहारम्भप्रवेशौ,देवादिप्रतिष्ठा,विवाह दिवारात्रौ,मुण्डन,उपनयन,रात्रौ ११ व्रतोद्यापनं,**शिववास दि. ११:०३ उ.,पूर्वदक्षिणयात्रा कन्यांस्थे चन्द्रः ततो ꠰
- १ — **जून ६, तिलेन पारणं, त्रिविक्रम द्वादशी, प्रदोष १३ व्रतं, गृहप्रवेश देवादिप्रतिष्ठा मुण्डन त्रयोदश्यां,** शिववास पश्चिमयात्रा, अमृतयोग दि.११:१७ उ.।
- २ — **प्रदोष १४ व्रतं, मुण्डन स्वा.** शिववास दि.११:०० या., अमृतयोग दि.११:०० उ.।
- ३ — **अनुराधामानं ५९:०१,पूर्णिमाव्रतम्,** सिद्धियोग दि.१०:१४ या, ततो मृत्युयोग दि.०४:३८ उ., भद्रारंभ:१२:३० उपरि ततो भद्रांत:४१:०० यावत्।
- ४ — **ज्येष्ठी १५, स्नानदानादौपूर्णिमा, सांप्रतिकवैवस्वतमन्वादिः, श्रीकबीरजयन्ती,** शिववास दि.०९:०१ या.,अमृतयोग दि.०९:०१ या, ततो मृत्युयोग दि.०९:०१ उ. ।

मिश्रमान कालिक दैनिक स्पष्टग्रहाः

ति	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमान
१	०३:०४:४४:०१	००:१६:५०:२८	००:०७:३०:१७	०२:२०:१८:१६	१०:०९:४५:३१	०६:१०:५१:३५	४६:४५
२	०३:०५:१८:१८	००:१७:५०:२८	००:०७:४४:१२	०२:२१:१९:१८	१०:०९:४८:१८	०६:१०:४८:२४	४६:४६
३	०३:०५:५२:३५	००:१८:५०:२८	००:०७:५८:०८	०२:२२:२०:२०	१०:०९:५०:४५	०६:१०:४५:१३	४६:४७
४	०३:०६:२६:५२	००:१९:५०:२८	००:०८:१२:०४	०२:२३:२१:२२	१०:०९:५३:१२	०६:१०:४२:०२	४६:४८
५	०३:०७:०१:०९	००:२०:५०:२८	००:०८:२६:००	०२:२४:२२:२४	१०:०९:५५:३९	०६:१०:३८:५२	४६:४९
६	०३:०७:३५:२५	००:२०:५०:२८	००:०८:३९:५६	०२:२५:२३:२६	१०:०९:५८:०६	०६:१०:३४:४२	४६:५०
७	०३:०८:०९:०१	००:२१:५१:१४	००:०८:५६:४१	०२:२६:२१:३९	१०:०९:५९:५९	०६:१०:३२:३१	४६:५१
७	०३:०८:४२:३७	००:२२:५५:००	००:०९:१३:२६	०२:२७:१९:५२	१०:१०:०१:५२	०६:१०:२९:२०	४६:५१
८	०३:०९:१६:१३	००:२३:५६:४६	००:०९:३०:११	०२:२८:१८:०५	१०:१०:०३:४५	०६:१०:२६:०९	४६:५२
९	०३:०९:४९:४९	००:२४:५३:३२	००:०९:४६:५६	०२:२९:१६:१८	१०:१०:०५:३७	०६:१०:२२:५८	४६:५२
१०	०३:१०:२३:२५	००:२५:५४:१८	००:१०:०३:४१	०३:००:१४:३१	१०:१०:०७:२९	०६:१०:१९:४७	४६:५३
११	०३:१०:५७:०१	००:२६:५५:०३	००:१०:२०:२६	०३:०१:१२:४४	१०:१०:०९:२१	०६:१०:१६:३६	४६:५३
१२	०३:११:३०:३६	००:२७:५५:४८	००:१०:३७:११	०३:०२:१०:५८	१०:१०:११:१३	०६:१०:१३:२६	४६:५४
१३	०३:१२:०७:३६	००:२९:५६:२१	००:१०:४७:१०	०३:०३:०५:३७	१०:१०:१२:११	०६:१०:१०:०५	४६:५४
१४	०३:१२:४४:३६	०१:०१:५६:५३	००:१०:५७:०९	०३:०४:००:१६	१०:१०:१३:२५	०६:१०:०४:०४	४६:५५
१५	०३:१३:२१:३६	०१:०३:५४:२५	००:११:०७:०८	०३:०४:५४:५५	१०:१०:१४:३१	०६:१०:०३:५३	४६:५५

दैनिक लग्न सारणी चक्रम

मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिं.अं.	क.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
०५:०२	०६:५८	०९:११	११:२९	१३:४५	१६:००	१८:१७	२०:३४	२२:३९	००:२५	०१:५६	०३:२५
०४:५८	०६:५४	०९:०७	११:२५	१३:४१	१५:५६	१८:१३	२०:३०	२२:३५	००:२१	०१:५२	०३:२१
०४:५४	०६:५०	०९:०३	११:२१	१३:३७	१५:५२	१८:०९	२०:२६	२२:३१	००:१७	०१:४८	०३:१७
०४:५०	०६:४६	०८:५९	११:१७	१३:३३	१५:४८	१८:०५	२०:२२	२२:२७	००:१३	०१:४४	०३:१३
०४:४६	०६:४२	०८:५५	११:१३	१३:२९	१५:४४	१८:०१	२०:१८	२२:२३	००:०९	०१:४०	०३:०९
०४:४२	०६:३८	०८:५१	११:०९	१३:२५	१५:४०	१७:५७	२०:१४	२२:१९	००:०५	०१:३६	०३:०४
०४:३८	०६:३४	०८:४७	११:०५	१३:२१	१५:३६	१७:५३	२०:१०	२२:१५	००:०१	०१:३२	०३:०१
०४:३४	०६:३०	०८:४३	११:०१	१३:१७	१५:३२	१७:४९	२०:०६	२२:११	२३:५७	०१:२८	०२:५७
०४:२९	०६:२५	०८:३८	१०:५६	१३:१२	१५:२७	१७:४४	२०:०१	२२:०६	२३:५२	०१:२३	०२:५२
०४:२५	०६:२१	०८:३४	१०:५२	१३:०८	१५:२३	१७:४०	१९:५७	२२:०२	२३:४८	०१:१९	०२:४८
०४:२१	०६:१७	०८:३०	१०:४८	१३:०४	१५:१९	१७:३६	१९:५३	२१:५८	२३:४४	०१:१५	०२:४४
०४:१७	०६:१३	०८:२६	१०:४४	१३:००	१५:१५	१७:३२	१९:४९	२१:५४	२३:४०	०१:११	०२:४०
०४:१३	०६:०९	०८:२२	१०:४०	१२:५६	१५:११	१७:२८	१९:४५	२१:५०	२३:३६	०१:०७	०२:३६
०४:०९	०६:०५	०८:१८	१०:३६	१२:५२	१५:०७	१७:२४	१९:४१	२१:४६	२३:३२	०१:०३	०२:३२
०४:०५	०६:०१	०८:१४	१०:३२	१२:४८	१५:०३	१७:२०	१९:३७	२१:४२	२३:२८	००:५९	०२:२८
०४:०१	०५:५७	०८:१०	१०:२८	१२:४४	१४:५९	१७:१६	१९:३३	२१:३८	२३:२४	००:५५	०२:२४

दैनिक अधप्रहरा चक्रम

वार	दिन का अर्धप्रहरा	रात्रि का अर्धप्रहरा
श.	दि.५:१८-६:५८। दि.१:३८-३:१८। दि.४:५८-६:४२।	रा.६:४२-८:०१। रा.१:१७-२:३६। रा.३:५५-५:१८।
र.	दि.१०:१८-०१:३८।	रा.१०:३८-११:५८। रा.०१:१७-०२:३६।
चं.	दि.०६:५७-०८:३७। दि.०३:१७-०४:५७।	रा.१०:३९-११:५९। रा.०२:३७-०३:५६।
मं.	दि.०६:५७-०८:३७। दि.१२:००-०१:४१।	रा.०८:०२-०९:२१।
बु.	दि.०३:२२-०६:४४।	रा.१२:००-०१:१९। रा.०२:३८-०३:५७।
गु.	दि.०८:३६-१२:००।	रा.१२:००-०१:१९। रा.०३:५७-०५:१६।
शु.	दि.०८:३६-११:००।	रा.०९:२२-१०:४१।
श.	दि.५:१६-६:५७। दि.१:३७-३:१७। दि.४:५७-६:३८।	रा.६:४४-८:०३। रा.१:१८-२:३७। रा.३:५७-५:१६।
र.	दि.१०:१७-०१:३७।	रा.१०:३९-११:५८। रा.०१:१५-०२:३३।
चं.	दि.०६:५६-०८:३७। दि.०३:१७-०४:५७।	रा.१०:३९-११:५७। रा.०२:३३-०३:५१।
मं.	दि.०६:५६-०८:३७। दि.१२:००-०१:४०।	रा.०८:०३-०९:२१।
बु.	दि.०३:२०-०६:४६।	रा.११:५६-०१:१५। रा.०२:३३-०३:५१।
गु.	दि.०८:३७-१२:००।	रा.११:५२-०१:१०। रा.०३:५२-०५:१४।
शु.	दि.०८:३६-११:५८।	रा.०९:२२-१०:४०।
श.	दि.५:१४-६:५५। दि.१:३५-३:१५। दि.४:५५-६:४६।	रा.६:४६-८:०५। रा.१:१४-२:३३। रा.३:५२-५:१४।
र.	दि.१०:१६-०१:३६।	रा.१०:४१-११:५९। रा.०१:१७-०२:३५।

तिथिः १ शनि सूर्योदये

शु ३ | ल बु गु रा | मं ४ | सू. २ चं १ | १२ | ५ | श ११ | ६ | ८ | १० | ७ के | ९

वशिष्ठ,नारद,कश्यप,वराहमिहिर तथा श्रीपति आदि आचार्यो का कथन है कि गुरु,शुक्र एवं चन्द्रमा के अस्त हो जाने पर उपनयनादि संस्कार,विवाह,वधूप्रवेश,द्विरागमन,गृहारम्भ,गृहप्रवेश,देवप्रतिष्ठा,तीर्थयात्रा वापी,कूप,तालाब,नलकूप,धर्मशाला आदि का निर्माण तथा अन्य कृत्य दीक्षा मन्त्र विद्याध्यन आदि के आरम्भ को वर्जित कर देना चाहिए।इसमें कार्य करने से मृत्यु अवश्यम्भावी है इस स्थिति में यदि कोई राजा शत्रु पर आक्रमण करेगा तो वह स्वयं शत्रु द्वाराबन्दी बना लिया जायेगा।मुहूर्तचिन्तामणि की पीयूषधारा टीका में कहा गया है कि गुरु के अस्त में विवाह करने पर वर की मृत्यु,शुक्रास्त में कन्या की मृत्यु तथा चन्द्रास्त में दोनों की मृत्यु और इन तीनों ग्रहों के बालत्ववृद्धत्व में भी यही स्थिति बनती है।यथा–गुरोरस्ते पतिंहन्यात् शुक्रस्यास्ते तु कन्यकाम्।हन्यादुभौ क्षीणचन्द्रे दृश्यभावे नरन्तथा।ततो बाल्ये च वृद्धत्वे विवाहादि न कारयेत्।। यही बात वशिष्ठ संहिता में भी कहीं गयी है–शुक्रे वास्तंगते जीवे चन्द्रे वास्तमुपानते।तयोबाल्ये च बार्धक्ये शुभकर्म भयप्रदम्।।चन्द्रादि छहों ग्रहों का सूर्य से कितने समीप आने पर अस्त होते है।इसका प्रमाण ज्योतिष ग्रन्थों में इस प्रकार है–दसेन्द्रवः शैलभुवश्च शक्र रुद्राः खचन्द्रास्तिथय क्रमेण।अर्थात् सूर्य से क्रमशः १२ अंश पर चन्द्रमा १७ अंश पर मंगल १४ पर बुध ११ पर गुरु १० पर शुक्र तथा १५ अंश की दूरी रहते शनि अस्त हो जाता है।अब प्रश्न यह है कि जब ग्रह अस्त हो तो क्या वह अपना सम्पूर्ण प्रभावखो देता है और यदि अस्त में प्रभावरहित हो भी जाता है तो बाल एवं वृद्ध होने पर यह दोष क्यों? ग्रहों का अस्तादि होने पर बाल एवं वृद्ध होना भी कहा गया है।कोई भी ग्रह अस्त होने पर कुछ दिन पूर्व वृद्ध तथा उदित होने पर कुछ दिन तक बाल अवस्था में रहते हैं।बालत्व एवं वृद्धत्व कितने दिन का रहता है।इस विषय में विद्वान एक मत नही है तथापि सर्व सम्मत तीन दिन मान्य है।कतिपय आचार्य कालांश के बराबर ग्रहों का बालत्व वृद्धत्व मानते है।भाव कुण्डली विचार में लग्न स्थान को उदय तथा सप्तमभाव की अस्त सज्ञा है।कोई भी ग्रह बाल वृद्ध होन पर भी अपना प्रभाव नष्ट नहीं होते देता है स्वल्पता अवश्य आ जाती है।इसे स्पष्ट रुप से हम इस प्रकार समझ सकते है कि कोई भी ग्रह सूर्य के समीप होने से हमें अपनी इन खुली आखों से नहीं दिखयी देता लेकिन उसकी किरणें पृथ्वी पर आती रहती है तथापि सूर्य के सीधे प्रभाव में आ जाने पर वह अपना स्वाभाविक प्रभाव खो देता है।जब ग्रह सूर्य के समीप १५ अंश तक हो तो अस्त सज्ञा है यदि ५ अंश के मध्य हो तो पूर्ण अस्त कहा जाता है।जो ग्रह सूर्य में अल्पगति हो तथा सूर्य से अंशों में भी कम हो उसका पूर्व में उदय होता है।जो ग्रह सूर्य से अधिक गति वाला हो अंशों में भी अधिक हो उसका पश्चिम में उदय होता है।जो सूर्य से अंशों में अधिक हो परन्तु सूर्य से गति कम हो उसका पश्चिम में अस्त होता है किन्तु जो ग्रह सूर्य से अधिक गतिमान हो परन्तु सूर्य से अंशों में कम हो उसका पूर्व में अस्त होता है।वर्तमान में प्रायः अधिकांश पचाङ्गकार गुरु एवं शुक्र के उदयअस्त को दृश्यगणित (खगोल) की गणनानुसार ५ अंश के मध्य होने पर ही मान रहे हैं जबकि आर्ष ग्रन्थ के मान्यता अनुसार ग्रहों के उदयास्त कालांश के अनुसार ही मानना चाहिये।**दशहराव्रत**–ज्येष्ठशुक्ल दशमी को हस्त नक्षत्र में स्वर्ग से गङ्गा का आगमन हुआ था।अतएव उस दि न गङ्गा आदि का स्नान,अन्न–वस्त्रादि का दान,जप–तप–उपासना और उपवास किया जाय तो दस"ज्येष्ठे मासि सिते पक्षे दशमी हस्तसंयुता।हस्ते दश पापानि तस्माद् दशहरा स्मृता।।प्रकार के पाप (तीन प्रकार के कायिक,चार प्रकार के वाचिक और तीन प्रकार के मानसिक) दूर होते हैं।यदि इस दिन१ ज्येष्ठ,२ शुक्ल,३ दशमी,४ बुध,५ हस्त,६ व्यतीपात,७ गर,८ आनन्द,९ वृषस्थ रवि और १० कन्या का चन्द्र हो तो वह अपूर्वयोग महाफलदायक होता है।इसमें योग–विशेष बाहुल्य होने से पूर्वा या परा का विचार समय पर करके जिस दिन उपर्युक्त योग अधिक हों उस दिन स्नान,दान,जप,तप,व्रत और उपवास आदि करने चाहिये।दशहरा के दिन प्रयाग के दशाश्वमेध में दस प्रकार स्नान करके शिवलिङ्गका दस सख्या के गन्ध,पुष्प,धूप,दीप,नैवेद्य और फल आदि से पूजन करके रात्रि को जागरण करे तो अनन्त फल होता है।**निर्जलैकादशीव्रत** यह व्रत ज्येष्ठशुक्ल एकादशी को किया जाता है।इसका नाम निर्जला है,अतः नामके अनुसार इसका व्रत किया जाय तो स्वर्णादि के सिवा आयु और आरोग्य वृद्धि के तत्व विशेषरूप से विकसित होते हैं।व्यासजी के कथनानुसार यह अवश्य सत्य है कि वृषस्थे मिथुनस्थे वा शुक्लाह्येकादशी भवेत्।जेष्ठमासे प्रयत्नेन सोपोष्या जलवर्जिता।स्नाने वाचमने चैव वर्ज्जीयित्वोदकं बुधः।संवत्सरस्थ च मध्ये एकादश्यो भक्तयुत।तासां फलमवाप्नोति अत्र में नास्ति संशय।अधिमाससहित एक वर्ष की छवीस एकादशी न की जा सके तो केवल लिर्जला करने से हि पूरा फल प्राप्त हो जाता है।निर्जला व्रत करने वाला पुरुष अपवित्र अवस्था के आचमन के सिवा बिन्दुमात्र जल भी ग्रहण न करे।यदि किसी प्रकार उपयोग में ले लिया जाय तो उससे व्रत–भङ्ग हो जाता है।दृढ़तापूर्वक नियमपालल के साथ निर्जला उपवास करके द्वादशी को स्नान करे और सामर्थ्य के अनुसार सुवर्ण और जलयुक्त कलश देकर भोजन करे तो सम्पूर्ण तीर्थो मे जाकर स्नान दानादि करने के समान फल होता है।एक बार बहुभोजी भीमसेन से व्यासजी के मुख से प्रत्येक एकादशी को निराहार रहने का नियम सुनकर विनम्र भाव से निवेदन किया कि'महाराज' मुझ से कों व्रत नहीं किया जाता।दिनभर बड़ी तीव्र क्षुधा बनी ही रहती है।अतः आप कोई ऐसा उपाय बतला दीजिये जिसके प्रभाव से स्वतः सद्गति हो जाय।तब व्यास जी ने कहा कि तुमसे वर्षभर की सम्पूर्ण एकादशी नही हो सकती तो केवल एक निर्जला कर लो,इसी से सालभर की एकादशी करने के समान फल हो जायगा।तब भीम ने वैसा ही किया और स्वर्ग को गये।

तिथिः ८ रवि सूर्योदये

शु ३ | ल बु गु रा | मं ४ | सू. २ | १२ | ५ चं | श ११ | १ | ६ | ८ | १० | ७ के | ९

आषाढ़कृष्णपक्षः

शाके १९४५; संवत् २०८०; फसली १४३०; दिनाङ्क ०५:०६:२०२३ ई. ततो दिनाङ्क १८:०६:२०२३ ईस्वी या.। पश्चिमे राहु कालः।
मार्गी पूर्वोदितो मंगलः बुधः गुरूः शनिः, मार्गी पश्चिमोदितोः शुक्रः, ग्रीष्मर्तु,सौम्यगोलः,सौम्यायनम्,अयनांश २२:५०:५४।

तिथि वार	तिथ्यन्तः द. प.	घं. मि.	नक्षत्रान्तः नक्षत्र	द. प.	घं. मि.	योगान्तः योग	द. प.	करणान्तः क. द. प.	चन्द्राश्यन्तः रा. द.प.	घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू. उ घं. मि.	सू. अ घं. मि.	दिनाङ्काः सौ	अं	
०१ चं	०५:३०	दि.०७:२५	मूल	५३:३२	रा.०२:३८	साध्य	१२:५४	कौ. ०५:३०	धनु	अहोरात्र	०१:२०:२४:४७	३३:५२	०५:१३	०६:४७	२२	५	विल्वमाषाढ़के त्यजेत्,विवाह गृहारम्भ मूले,शिववास दि. ०७:२५या.,उत्तरयात्रा प्रतिपदि,सिद्धियोग दि.०७:२५ या,ततो मृत्युयोग दि.०७:२५ उ.।
०२ मं	००:४५	प्रा.०५:३१	पू.षा	५१:५७	रा.०२:००	शुभ	०६:२२	ग. ००:४५	धनु	अहोरात्र	०१:२१:२१:५६	३३:५४	०५:१३	०६:४७	२३	६	दग्ध ति.(५४:३४ उ.),तृतीयामानं ५४:३४,शुक्लयोगमानं ५२:५६,पूर्वयात्रा पू.षा.,अमृतयोग प्रा.०५:३१ या,ततो सिद्धियोग प्रा.०५:३१ उ.,भद्रारंभ:२८:२३ उपरि ततो एं
०४ बु	४९:२१	रा.१२:५७	उ.षा	४८:०६	रा.१२:२७	ब्रह्मः	५१:५५	ब. २२:२२	ध.०५:५९	दि.०७:३७	०१:२२:१९:०५	३३:५६	०५:१३	०६:४७	२४	७	दग्ध ति.(४९:२१ या.),श्रीविघ्नराज ४ व्रतं,विवाह पंचम्याम्, शिववास, उत्तरविनायात्रा श्रवणे । एं भद्रांतः५४:३४ यावत्।
०५ गु	४४:१५	रा.१०:५४	श्रव.	४४:०२	रा.१०:४९	ऐन्द्रः	४६:२०	कौ. १६:४८	मकर	अहोरात्र	०१:२३:१६:१४	३३:५८	०५:१२	०६:४८	२५	८	पञ्चकारम्भः रा.१०:४९ उ.,विवाह दिवारात्रौ,मुण्डन,*मृगशिरायांरविः ५१:४६,शिववास, दक्षिणविनायात्रा श्रवणे, सिद्धियोग रा.१०:५४ या।
०६ शु	३७:०४	रा.०८:०२	धनि.	३९:४८	रा.०९:०७	वैधृतिः	३६:४२	ग. १०:३५	म.०१:५४	प्रा.०५:५८	०१:२४:१३:१७	३३:५८	०५:१२	०६:४८	२६	९	विवाह धनि,सिद्धियोग रा.०८:०२ या,ततो मृत्युयोग रा.०८:०२ उ.,भद्रारंभ:३७:०४ उपरि ।
०७ श	३१:०४	सं.०५:३८	शत.	३५:४८	रा.०७:३१	विष्क	२९:१४	वि. ०४:०४	कुम्भ	अहोरात्र	०१:२५:१०:२०	३४:००	०५:१२	०६:४८	२७	१०	शिववास सं.०५:३८ उ.,पश्चिमयात्रा पू.भा.,भद्रांत:०४:०४ यावत्।
०८ र.	२५:२१	दि.०३:२०	पू.भा	३२:११	सं.०६:०४	प्रीतिः	२१:५८	कौ. २५:२१	कु.१८:०६	दि.१२:२६	०१:२६:०७:२३	३४:०१	०५:१२	०६:४८	२८	११	शिववास दि. ०३:२० या.,सिद्धियोग दि.०३:२० या।
०९ चं	२०:११	दि.०१:१६	उ.भा.	२९:०६	दि.०४:५०	आयु.	१५:११	ग. २०:११	मीन	अहोरात्र	०१:२७:०४:२५	३४:०२	०५:१२	०६:४८	२९	१२	विवाह दशम्याम्, उत्तरयात्रा रेवत्याम्,अमृतयोग दि.०१:१६ उ.,भद्ररभ:४७:५८ उपरि ।
१० मं	१५:४६	दि.११:३०	रेवती	२६:५२	दि.०३:५७	सौभा.	०९:००	वि. १५:४६	मी.२६:५२	दि.०३:५७	०१:२८:०१:२७	३४:०३	०५:१२	०६:४८	३०	१३	पञ्चकान्तः दि.०३:५७ या.,शिववास दि.११:३० उ.,पश्चिमयात्रा दशम्याम्,मृत्युयोग दि.११:३० उ.,सर्वार्थसिद्धियोग दि.०३:५७ उ.,भद्रांत:१५:४६ यावत्।
११ बु	११:०७	दि.०९:३८	अश्वि	२५:२३	दि.०३:२०	शोभ.	०२:४६	बा. ११:०७	मेष	अहोरात्र	०१:२८:५८:२९	३४:०४	०५:११	०६:४९	३१	१४	अतिगयोगमानं ५६:०३,योगिनी ११ व्रतं सर्वेषां, विवाह उत्तरांविनायात्रा अश्वि, शिववास, अमृतयोग दि.०९:३८ या.,ततो सिद्धियोग दि.०९:३८ उ.।
१२ गु	०९:३९	दि.०९:०३	भरणी	२५:०१	दि.०३:११	सुकर्मा	५५:०३	तै. ०९:३९	मे.४०:१३	रा.०९:१६	०१:२९:५५:३१	३४:०६	०५:११	०६:४९	३२	१५	यवचूर्णेन पारणं,प्रदोष १३ व्रतं,मासान्तः,मिथुनेरविः४२:४५,मु.३०,शिववास दि.०९:०३ या.।
१३ शु	०८:१९	दि.०८:३१	कृति.	२५:५१	दि.०३:३१	धृतिः	५२:१७	व. ०८:१९	वृष	अहोरात्र	०२:००:५२:१९	३४:०६	०५:११	०६:४९	०१	१६	प्रदोष १४ व्रतं,षडशीतिसक्रांन्तिपुण्यकालं,दिवा घं. १२ यावत् दिने,भद्रारंभ:०८:१९ उपरि ततो भद्रांत:३८:१६ यावत्।
१४ श	०८:१४	दि.०८:२७	रोहि.	२७:५६	दि.०४:२०	शूलः	५०:३२	श. ०८:१४	वृष	अहोरात्र	०२:०१:४९:०७	३४:०८	०५:१०	०६:५०	०२	१७	मासादिः, शिववास दि.०८:२७ उ.,सिद्धियोग दि.०८:२७ या.,ततो सर्वार्थसिद्धियोग दि.०४:२० या।
३० र.	०९:२९	दि.०८:५८	मृग.	३१:१८	सं.०५:४१	गण्डः	४९:४६	ना. ०९:२९	वृ.००:०६	प्रा.०५:१२	०२:०२:४५:५५	३४:०८	०५:१०	०६:५०	०३	१८	आषाढ़ी ३०,स्नानदानादिः, विवाहप्रतिपद मृगशिरसि,शिववास दि. ०८:५८ या., मृत्युयोग दि.०८:५८ उ.।

मिश्रमान कालिक दैनिक स्पष्टग्रहाः

ति	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमान
१	०३:१३:५८:३६	०१:०५:५७:५७	००:११:१७:०७	०३:०५:४९:३४	१०:१०:१५:३७	०६:१०:००:४२	४६:५६
२	०३:१४:३५:३६	०१:०७:५८:२९	००:११:२७:०६	०३:०६:४४:१४	१०:१०:१६:४३	०६:०९:५७:३१	४६:५७
४	०३:१५:१२:३६	०१:०९:५९:०१	००:११:३७:०६	०३:०७:३८:५४	१०:१०:१७:४१	०६:०९:५४:२१	४६:५८
५	०३:१५:४८:३६	०१:११:५९:३३	००:११:४७:०६	०३:०८:३३:३४	व.१०:१०:१८:५५	०६:०९:५१:११	४६:५९
६	०३:१६:२४:१४	०१:१२:२९:११	००:११:५९:४९	०३:०९:२७:०९	१०:१०:१८:४७	०६:०९:४८:०२	४६:५९
७	०३:१६:५९:५२	०१:१२:५९:११	००:१२:१२:३२	०३:१०:२०:४४	१०:१०:१८:३९	०६:०९:४४:४९	४७:००
८	०३:१७:३५:३०	०१:१३:२९:११	००:१२:२५:१५	०३:११:१४:१९	१०:१०:१८:३१	०६:०९:४१:३८	४७:००
९	०३:१८:११:०८	०१:१३:५९:११	००:१२:३७:५८	०३:१२:०७:५४	१०:१०:१८:२३	०६:०९:३८:२७	४७:०१
१०	०३:१८:४६:४६	०१:१४:२८:११	००:१२:५०:४२	०३:१३:०१:२९	१०:१०:१८:१४	०६:०९:३५:१६	४७:०२
११	०३:१९:२२:२४	०१:१४:५७:११	००:१३:०३:२६	०३:१३:५५:०५	१०:१०:१८:०५	०६:०९:३२:०६	४७:०२
१२	०३:१९:५८:०१	०१:१५:२६:३३	००:१३:१६:१०	०३:१४:४८:४१	१०:१०:१७:५६	०६:०९:२८:५६	४७:०३
१३	०३:२०:३६:०३	०१:१८:०५:५२	००:१३:२८:१२	०३:१५:२१:४०	१०:१०:१७:२१	०६:०९:२५:४५	४७:०३
१४	०३:२१:१४:०५	०१:२०:४५:११	००:१३:४०:१४	०३:१५:५४:४०	१०:१०:१६:४६	०६:०९:२२:३४	४७:०४
३०	०३:२१:५२:०७	०१:२३:२४:२९	००:१३:५२:१६	०३:१६:२७:४०	१०:१०:१६:११	०६:०९:१९:२३	४७:०४

दैनिक लग्न सारणी चक्रम्

ति	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिं.अं.	क.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.	वार
१	०३:५७	०५:५३	०८:०६	१०:२४	१२:४०	१४:५५	१७:१२	१९:२९	२१:३४	२३:२०	००:५१	०२:२०	चं.
२	०३:५३	०५:४९	०८:०२	१०:२०	१२:३६	१४:५१	१७:०८	१९:२५	२१:३०	२३:१६	००:४७	०२:१६	मं.
४	०३:४९	०५:४५	०७:५८	१०:१६	१२:३२	१४:४७	१७:०४	१९:२१	२१:२६	२३:१२	००:४३	०२:१२	बु.
५	०३:४५	०५:४१	०७:५४	१०:१२	१२:२८	१४:४३	१७:००	१९:१७	२१:२२	२३:०८	००:३९	०२:०८	गु.
६	०३:४१	०५:३७	०७:५०	१०:०८	१२:२४	१४:३९	१६:५६	१९:१३	२१:१८	२३:०४	००:३५	०२:०४	शु.
७	०३:३७	०५:३३	०७:४६	१०:०४	१२:२०	१४:३५	१६:५२	१९:०९	२१:१४	२३:००	००:३१	०२:००	श.
८	०३:३२	०५:२८	०७:४१	०९:५९	१२:१५	१४:३०	१६:४७	१९:०४	२१:०९	२२:५५	००:२६	०१:५५	र.
९	०३:२८	०५:२४	०७:३७	०९:५५	१२:११	१४:२६	१६:४३	१९:००	२१:०५	२२:५१	००:२२	०१:५१	चं.
१०	०३:२४	०५:२०	०७:३३	०९:५१	१२:०७	१४:२२	१६:३९	१८:५६	२१:०१	२२:४७	००:१८	०१:४७	मं.
११	०३:२०	०५:१७	०७:२९	०९:४७	१२:०३	१४:१८	१६:३५	१८:५२	२०:५७	२२:४३	००:१४	०१:४३	बु.
१२	०३:१६	०५:१४	०७:२५	०९:४३	११:५९	१४:१४	१६:३१	१८:४८	२०:५३	२२:३९	००:१०	०१:३९	गु.
१३	०३:१२	०५:०९	०७:२१	०९:३९	११:५५	१४:१०	१६:२७	१८:४४	२०:४९	२२:३५	००:०६	०१:३५	शु.
१४	०३:०८	०५:०४	०७:१७	०९:३५	११:५१	१४:०६	१६:२३	१८:४०	२०:४५	२२:३१	००:०२	०१:३१	श.
३०	०३:०४	०५:००	०७:१३	०९:३१	११:४७	१४:०२	१६:१९	१८:३६	२०:४१	२२:२७	२३:५८	०१:२७	र.

दैनिक अधप्रहरा चक्रम्

वार	दिन का अर्धप्रहरा	रात का अर्धप्रहरा
चं.	दि.०६:५४-०८:३५। दि.०३:१४-५:००।	रा.१०:४१-११:५९। रा.०२:३५-०३:५३।
मं.	दि.०६:५४-०८:३५। दि.०१:३८-०३:१९।	रा.०८:०५-०९:२३ ।
बु.	दि.०८:३५-१०:१६। दि.११:५७-०१:३८।	रा.११:५९-०१:१७। रा.०२:३५-०३:५३।
गु.	दि.०३:१९-०६:४८ ।	रा.१२:००-०१:१८। रा.०३:५४-०५:१२।
शु.	दि.०८:३६-१२:०० ।	रा. ०९:२४-१०:४२ ।
श.	दि.५:१२-६:५४।दि.१:४२-३:२४।दि.५:०६-६:४८।	रा.६:४८-८:०६। रा.१:२८-२:३६।रा.३:५४-५:१२।
र.	दि.१०:१८-०१:४२ ।	रा.१०:४२-१२:००। रा.०१:१८-०२:३६।
चं.	दि.०६:५४-०८:३६। दि.०३:२४-०५:०६	रा.१०:४२-१२:००रा.०२:३६-०३:५४।
मं.	दि.०६:५४-०८:३६। दि.०१:४२-०३:२४	रा.०८:०६-०९:२४ ।
बु.	दि.०८:३५-१०:१७। दि.११:५९-०१:४१	रा.११:५७-०१:१४। रा.०२:३१-०३:४८ ।
गु.	दि.०३:२३-०६:४१।	रा.११:५७-०१:१४ । रा.०३:४८-०५:११ ।
शु.	दि.०८:३५-११:५९।	रा.०८:०६-०९:२३ ।
श.	दि.५:१०-६:५२।दि.१:४०-३:२२। दि.५:०४-६:५०	रा.६:५०-८:०७। रा.१:१५-२:३२। रा.३:४९-५:१०।
र.	दि.१०:१६-०१:४०।	रा.१०:४१-११:५८। रा.०१:१५-०२:३२।

तिथिः १ चन्द्रे सूर्योदये

मं ३ | ल | गु रा
शु ४ | सू २ बु | १ | १२
५ | ११ श
६ | ८ | १०
७ के | ९ चं

शीघ्रपतिप्राप्तिविधिमाह–देखें ज्योतिष पृ.३७०,७१–विनियोग–ॐअस्य अथर्ववेदस्य द्वितीय काण्डस्य षट्त्रिंशत् सूक्तस्य पतिवेदनः ऋषिः।अग्नि सोमः अर्यमा धाता अग्निषोमौ इन्द्रः सूर्यः धनपतिः भगादि देवताः।त्रिष्टुप् भूरिक् अनुष्टुप् निचृतुर उष्णिक् छन्दांसि।शीघ्रपति प्राप्तये विनियोगः।मन्त्र–आ नो अग्ने सुमतिं सं भलो गमेदिमां कुमारीं सहनो भगेन।जुष्टा वरेषु समनेषु वल्गुरोषं पत्या सौभगमस्त्वस्यै।।सोमजुष्ट ब्रह्मजुष्टमर्यम्णासभृतं भगम्।धातुर्देवस्य सत्येन कृणोमि पतिवेदनम्।।इयमग्ने नारीपति विदेष्ट सोमो हि राजा सुभगा कृणोति।सुवाना पुत्रान् महिषी भवाति गत्वा पतिं सुभगा विराजतु।।यथा खरो मघवं चारूरेष प्रियो मृगाणां सुषदा बभूव।एवा भगस्य जष्टेयमस्तु नारीसप्रियापत्या विराधयन्ती।।भगस्य नावमा रोहपूर्णामनु पदस्वतीम्।तयोप प्रतारय यो वरः प्रतिकाम्यः।।आक्रन्दय धनपते वरमा मनसं कृणु।सर्वं प्रदक्षिणं कृणु यो वरः प्रतिकाम्यः।।इदं हिरण्यं गुल्गुल्व यमौक्षो अथोभगः।एते पतिभ्यस्त्वामदुः प्रतिकामाय वेत्तवं।।आते नयतु सविता नयतु पतिर्यः प्रति काम्यः।त्वमस्यै धेह्योषधे।।यदि किसी कुयोग के कारण कन्या की शादी में विलम्ब हो रहा हो तो उपर्युक्त मंत्रों का सविधि ३१ हजार जप तथा दशांश गुग्गुल,दूध,घी,शहद मिश्रित हवनीय पदार्थों के हवन करने से शादी शीघ्र होती है।शीघ्र पत्नी प्राप्ति मन्त्र–विनियोग–ॐ अस्य अथर्ववेदस्य षष्ठकाण्डस्य द्वाशीति सूक्तस्य भग ऋषिः।इन्द्रः देवता।अनुष्टुप् छन्दः।शीघ्र मनोनुकूला पत्नीप्राप्तये इन्द्रदेव उपस्थाने जपे हवने च विनियोगः।मन्त्र–ॐ आगच्छत आगतस्य नाम गृह्णाम्यायतः।इन्द्रस्यवृत्रघ्नोवन्वे वासवस्य शतक्रतोः।। येनसूर्यासावित्रीमश्विनो हतुः पथा।तेनमामब्रवीद् भगो जायामावहतादिती।।यस्तेऽङ्कशो वसुदानो बृहन्निन्द्र हिरण्मयः।तेना जनीयते जायां मह्यं धेहि शचीपते।।शीघ्र योग्य पत्नी प्राप्ति के लिये वर स्वयं अथवा सुयोग्य आचार्य द्वारा उपर्युक्त मन्त्र का ३१ हजार जप तथा पीपल वृक्ष के नीचे दशांश हवन करने से सुयोग्य पत्नी की शीघ्रप्राप्ति होती है।**अपरंच–ॐ क्लीं** पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्।तारिणीं दुर्ग संसारसागरस्य कुलोद्भवाम् क्लीं ॐ।।इस मंत्र का सवा लाख जप करने से या इस मंत्र से दुर्गा सप्तशती का सम्पुट सौ पाठ करने या कराने से शीघ्र पत्नी की प्राप्ति होती है।

तिथिः ८ रवि सूर्योदये

मं ३ | ल | गु रा
शु ४ | सू २ बु | १ | १२
५ | ११ श
६ | ८ | १०
७ के | ९ चं

स्वर द्वारा भविष्य फल–एक अहोरात्र अर्थात् २४ घंटे मे प्रत्येक स्वस्थव्यक्ति के कुल २१ हजार ६०० (प्राण) स्वास चलती है।मुख्यतः नाड़िया ३ है–इडा,पिंगला एवं सुषुम्ना।इडा नाडी को सूर्य नाडी,पिंगला को चन्द्र नाडी तथा सुषुम्ना को राहु नाडी अथवा शम्भु नाडी कहा जाता है।इडा में दाहिनी नासिका चलती है यह पित्त प्रधान नाडी है।पिंगला में बांयी नासिका चलती है यह कफ प्रधान नाडी है तथा सुषुम्ना में दोनों स्वर चलते हैं यह वायु प्रधान नाडी है।प्रत्येक व्यक्ति की नासिका में दो छिद्र होते हैं।वाम स्वर का उदय प्रत्येक मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपद्,द्वितीय, तृतीया,सप्तमी,अष्टमी,नवमी तथा त्रयोदशी,चतुर्दशी एवं पूर्णिमा तिथि में सूर्योदय समय से होता है तथा कृष्ण पक्ष में चतुर्थी,पंचमी,षष्ठी, दशमी, एकादशी तथा द्वादशी तिथि मे सूर्योदय समय में बांया स्वर चलता है जबकि दक्षिण स्वर का उदय शुक्ल पक्ष की चतुर्थी,पंचमी,षष्ठी,दशमी, एकादशी तथा द्वादशी और कृष्ण पक्ष की प्रतिपद्,द्वितीया,तृतीया,सप्तमी,अष्टमी,नवमी तथा त्रयोदशी,चतुर्दशी एवं अमावस्या तिथि में सूर्योदय से होता है।प्रत्येक स्वर एक घंटा पर्यन्त चलता है।इस एक घंटे में २० मिनट पृथ्वी तत्व,१६ मिनट जल,१२ मिनट अग्नि,८ मिनट वायु तथा ४ मिनट आकाश तत्व रहता है।बांया स्वर चलने पर पौष्टिक कर्म,मैत्री कर्म,ईश्वर दर्शन,योगाभ्यास, औषधि सेवन, रसायन कर्म,अलंकार धारण, वस्त्रधारण,विवाहकृत्य दान,गृह निर्माण,गृहप्रवेश,जलाशय या कूप बनवाना,वृक्षारोपण,यज्ञ, अनुष्ठान,सम्मेलन,दूर की यात्रा दक्षिण,पश्चिम दिशा की यात्रा,जल पीना,मूल त्याग आदि कार्य करना हितकर होता है।जबकि दाहिना स्वर चलने पर कठोर कार्य,शस्त्र एवंशस्त्र का अभ्यास,संगीत का अभ्यास,वाहन का अभ्यास,व्यायाम,नौका रोहण,यन्त्रादि का निर्माण,पर्वतारोहण,विषयभोग,संग्राम,क्रय विक्रय,यौगिक क्रिया (हठयोग),राजादर्शन, विवाद,किसी से मिलना,स्नान,भोजन एवं आलेख या पत्र आदि का लेखन कार्य हितकरहोता है।दोनो स्वर चलने पर सन्ध्या वन्दन,ध्यान, भागवतपूजन,समाधि,आदि कार्य उचित है।यदि दाहिना स्वर हो उस समय अग्नि,वायु एवं पृथ्वी तत्व है।उस समय कोई भी (कठोरकार्य) कठिन कार्य करने से सफलता सहज में मिलती है।अभीष्ट कार्य सिद्धि के लिये जिस ओर का स्वर चल रहा हो व्यक्ति को उस ओर करके बात करने से कार्य सिद्ध होता है।पुरूष का दहिना स्वर तथा स्त्री का बांया स्वर हो तो गर्भाधान से उत्तम पुत्र की प्राप्ति होती है।विपरीत होने पर कन्या सन्तति मिलती है।यदि दाहिना स्वर चल रहा हो तथा अग्नि तत्व हो उस समय गर्भाधान से बन्ध्या स्त्री भी पुत्रवती होती है।प्रातः निद्राभंग के समय जिस ओर का स्वर चल रहा हो उसी ओर का हाथ अपने मुख पर फेर कर शय्या पर बैठना चाहिए तथा शय्या से उतरते समय उसी हाथ से पृथ्वी को प्रणाम करके उसी ओर के पैर को पहिले भूमि पर रखना चाहिए।ऐसा नित्य करने से शीघ्र भाग्योदय होता है।शुक्लपक्ष की प्रतिपदा को वाम स्वर का उदय न होकर दक्षिण स्वर का उदय हो तो उस पक्ष में गर्मी से कष्ट या उष्णता,कलह तथा हानि होती है।इसी प्रकार कृष्ण प्रतिपदा को दक्षिण स्वर का उदय न होकर वाम स्वर का उदय हो तो उस पक्ष में शीत विकार,आलस्य तथा हानि होती है।यदि लगातार दो पक्ष यानि १ महीने तक विपरीत स्वर का उदय हो तो स्वयं पर विशेष आपत्ति तथा प्रियजन को कष्ट या मृत्यु होती है।यदि लगातार ३ पक्ष तक विपरीत स्वर चले तो अपनी मृत्यु सन्निकट समझना चाहिए।यदि केवल तीन दिन तक विपरीत स्वर का उदय हो तो कलह या रोग की सम्भावना रहती है।यदि लगातार १ मास तक विपरीत काल में वाम स्वर का उदय हो तो महारोग की सम्भावना होती है।वाम स्वर यदि १ घंटे ३६ मिनट तक चले तो अनचाही वस्तु की प्राप्ति होती है।३ घंटा १२ मिनट तक चले तो पूर्ण सुख की प्राप्ति,यदि दो दिन तक १:३० घंटे क्रम से दोनो स्वर चले तो यश और सौभाग्य की प्राप्ति होती है।यदि दिन में बांयां स्वर तथा रात्रि में दांया स्वर चले तो आयु की वृद्धि होती है। (शेष अगले पृष्ठ पर)

आषाढ़शुक्लपक्षः

शाके १९४५; संवत् २०८०; फसली १४३०; दिनाङ्क १९:०६:२०२३ ई. ततो दिनाङ्क ०३:०७:२०२३ ईस्वी या.। पश्चिमे राहु कालः।
मार्गी पूर्वोदितो मंगलः गुरूः बुध ततो ति.१ बुध पश्चिमास्तः,मार्गी पश्चिमोदितोः शुक्रः,वक्री पूर्वोदितो शनिः,ग्रीष्मर्तु,सौम्यगोलः,सौम्यायनं,अयनांश २२:५०:५४।

तिथि वार	तिथ्यन्तः द. प.	तिथ्यन्तः घं. मि.	नक्षत्र	नक्षत्रान्तः द. प.	नक्षत्रान्तः घं. मि.	योग	योगान्तः द. प.	करणान्तः क. द. प.	चन्द्रराश्यन्तः रा. द. प.	चन्द्रराश्यन्तः घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू. उ. घं.मि.	सू. अ. घं.मि.	दिनाङ्काः सौ	अं	
०१ चं	११:५४	दि.०९:५६	आर्द्रा	३५:४६	रा.०७:२८	वृद्धिः	४९:५६	ब. ११:५४	मिथुन	अहोरात्र	०२:०३:४२:४३	३४:१०	०५:१०	०६:५०	०४	१९	ग्रीष्मनवरात्रारंभः,कलशस्थापनं,चन्द्रदर्शनं मु.१५ सौम्यश्रृंगंफल महार्घ,मैथिलवैवाहिकसभारंभः (सौराठससौलयोः),शिववास दि. ०९:५६ उ.,सिद्धियोग दि.०९:५६ या.फ्र
०२ मं	१५:२७	दि.११:२१	पुन.	४१:१४	रा.०९:४०	ध्रुवः	५०:४९	कौ. १५:२७	मि.२४:५२	दि.०३:०७	०२:०४:३९:३०	३४:१२	०५:१०	०६:५०	०५	२०	श्रीजगन्नाथरथयात्रा,रेमन्तपूजा,पश्चिमयात्रा पुन. ततो उत्तरांविनायात्रा पुष्ये, शिववास अमृतयोग दि.११:२१ या.,ततो सिद्धियोग दि.११:२१ उ.।
०३ बु	१९:५०	दि.०१:०५	पुष्य	४७:२४	रा.१२:०७	व्या.	५२:१२	ग. १९:५०	कर्क	अहोरात्र	०२:०५:३६:१७	३४:१४	०५:०९	०६:५१	०६	२१	श्रीगणेश ४ व्रतं,मुण्डनं तृतीयायां,उत्तरांविनायात्रा पुष्ये,मृत्युयोग दि. ०१:०५ या.,भद्रारंभः५१:१९ उपरि । फ्र ततो मृत्युयोग दि. ०९:५६ उ.,बुधपश्चिमास्तः २३:२५।
०४ गु	२४:४८	दि.०३:०४	आश्ले	५३:५८	रा.०२:४४	हर्षण	५३:५५	वि. २४:४८	क.५३:५८	रा.०२:४४	०२:०६:३३:०४	३४:१६	०५:०९	०६:५१	०७	२२	विवाह मघायां, ✷आर्द्रायांरविः ५३:२४,शिववास दि.०३:०४ उ.,मृत्युयोग दि.०२:४३ या.,सिद्धियोग दि.०२:४३ उ.,भद्रांतः२४:४८ यावत्।
०५ शु	२९:५२	सं.०५:०६	मघा	६०:००	अहोरात्र	वज्रः	५५:३१	बा. २९:५२	सिंह	अहोरात्र	०२:०७:३०:१४	३४:१५	०५:०९	०६:५१	०८	२३	विवाह दिवारात्रौ,शिववास,सिद्धियोग सं. ०५:०६ उ.।
०६ श	३४:३५	सं.०६:५९	मघा	००:२५	प्रा.०५:१९	सिद्धिः	५६:४४	कौ. ०२:१४	सिंह	अहोरात्र	०२:०८:२७:२४	३४:१४	०५:०९	०६:५१	०९	२४	शिववास सं.०६:५९ या.,दक्षिणयात्रा पू.फा.,मृत्युयोग सं. ०६:५९ उ.।
०७ र	३८:४२	रा.०८:३८	पू.फा.	०६:२६	दि.०७:४३	व्यति.	५७:२७	ग. ०६:३९	सिं.२२:४३	दि.०२:१५	०२:०९:२४:३३	३४:१३	०५:०९	०६:५१	१०	२५	दग्ध ति.(३८:४२ उ.),विवाहो सप्तमी उ.फा.,पूर्वदक्षिणयात्रा पू.फा.,सिद्धियोग रा. ०८:३८ उ.,भद्रारंभः३८:४२ उपरि।
०८ चं	४१:४८	रा.०९:५३	उ.फा.	११:३५	दि.०९:४८	वरी.	५७:१५	वि. १०:१५	कन्या	अहोरात्र	०२:१०:२१:४२	३४:१२	०५:१०	०६:५०	११	२६	दग्ध ति.(४१:४८ या.), दक्षिणयात्रा हस्ते,भद्रांत १०:१५ यावत्।
०९ मं	४३:४६	रा.१०:४०	हस्त	१५:४१	दि.११:२६	परिघः	५६:१२	बा. १२:४७	क.२७:११	रा.१२:०२	०२:११:१८:५१	३४:११	०५:१०	०६:५०	१२	२७	शिववास ।
१० बु	४४:२५	रा.१०:५६	चित्रा	१८:४१	दि.१२:३८	शिवः	५४:०६	तै. १३:४५	तुला	अहोरात्र	०२:१२:१६:००	३४:१०	०५:१०	०६:५०	१३	२८	विवाह दिवारात्रौ,मुण्डनं,गृहारंभ स्वात्यां,ततो गृहप्रवेश,दक्षिणपश्चिमयात्रा,अमृतयोग दि. १०:५६ उ.,मैथिलवैवाहिकसभासमाप्तिः(सौराठससौलयोः)।
११ गु	४३:४५	रा.१०:४०	स्वा.	२०:२०	दि.०१:५८	सिद्धः	५१:०१	व. १३:४५	तुला	अहोरात्र	०२:१३:१३:०९	३४:०८	०५:१०	०६:५०	१४	२९	हरिशयन ११ व्रतं सर्वेषां,गृहारम्भप्रवेशौ पश्चिमयात्रा स्वा.,भद्रारंभः१३:५५ उपरि ततो भद्रांतः४३:२५ यावत्।
१२ शु	४१:५२	रा.०९:५६	विशा.	२०:४९	दि.०१:३१	साध्य	४६:५४	ब. १२:३१	तु.०५:४१	दि.०७:२७	०२:१४:०९:५२	३४:०७	०५:११	०६:४९	१५	३०	यवचूर्णेन पारणं,वासुदेव द्वादशी,शिववास, गृहप्रवेश उत्तरयात्रा अनुराधायां,मृत्युयोग रा.०९:५६ उ., सर्वार्थसिद्धियाग दि.०१:३१ उ.।
१३ श	३८:५२	रा.०८:४४	अनु.	२०:०५	दि.०१:१३	शुभः	४१:५६	कौ. १०:२२	वृश्चिक	अहोरात्र	०२:१५:०६:३५	३४:०६	०५:११	०६:४९	१६	१	जुलाई ०७,प्रदोष १३ व्रतं,गृहप्रवेश अनुराधायां,शिववास,पश्चिमोत्तरयात्रा,सिद्धियोग रा.०८:४४ उ.।
१४ र	३४:५५	रा.०७:०९	ज्येष्ठा	१८:२१	दि.१२:३१	शुक्लः	३६:११	ग. ०६:५४	वृ.१८:२१	दि.१२:३१	०२:१६:०३:१८	३४:०५	०५:११	०६:४९	१७	२	प्रदोष १४ व्रतं,पूर्वयात्रापूर्णिमायां,अमृतयोग रा.०७:०९ उ.,सर्वार्थसिद्धियोग दि.१२:३१ उ.,भद्रारंभः३४:५५ उपरि । ፟ፗसिद्धियोग सं.०५:१४ उ.,भद्रांतः०२:३२ यावत्।
१५ चं	३०:०८	सं.०५:१४	मूल	१५:४५	दि.११:२९	ब्रह्मः	२९:४५	वि. ०२:३२	धनु	अहोरात्र	०२:१७:००:००	३४:०४	०५:११	०६:४९	१८	३	आषाढ़ी १५,गुरूपूर्णिमा, स्नानदानव्रतादौ पूर्णिमा, गुरूव्यासयोःपूजनं,गृहारम्भ मूले,शिववास सं. ०५:१४,उत्तरयात्रा,अमृतयोग सं०५:१४ या.,ततो፟ፗ

मिश्रमान कालिक दैनिक स्पष्टग्रहाः

ति	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिःवक्री	केतुः	मिश्रमान
१	०३:२२:३०:०९	०१:२६:०३:४७	००:१४:०४:१८	०३:१७:००:४०	१०:१०:१५:३६	०६:०९:१६:१२	४७:०५
२	०३:२३:०८:१०	०१:२८:४३:०५	००:१४:१६:२१	०३:१७:३३:४०	१०:१०:१५:००	०६:०९:१३:०१	४७:०६
३	०३:२३:४६:११	०२:०१:२२:२३	००:१४:२८:२४	०३:१८:०६:४०	१०:१०:१४:२४	०६:०९:०९:५१	४७:०७
४	०३:२४:२४:१२	०२:०४:०१:४१	००:१४:४०:२७	०३:१८:३९:४०	१०:१०:१३:४८	०६:०९:०६:४१	४७:०८
५	०३:२४:५५:२८	०२:०६:०३:१६	००:१४:५३:५१	०३:१९:३०:०७	१०:१०:१२:२७	०६:०९:०३:३०	४७:०८
६	०३:२५:२६:४४	०२:०८:०४:५०	००:१५:०७:३१	०३:२०:२०:३४	१०:१०:११:०६	०६:०९:००:१९	४७:०७
७	०३:२५:५८:००	०२:१०:०६:२४	००:१५:२१:०३	०३:२१:११:०१	१०:१०:०९:४५	०६:०८:५७:०८	४७:०७
८	०३:२६:२९:१६	०२:१२:०७:५८	००:१५:३४:३५	०३:२२:०१:२९	१०:१०:०८:२४	०६:०८:५३:५७	४७:०६
९	०३:२७:००:३२	०२:१४:०९:३२	००:१५:४८:०७	०३:२२:५१:५७	१०:१०:०७:१३	०६:०८:५०:४६	४७:०६
१०	०३:२७:३१:४७	०२:१६:११:०६	००:१६:०१:३९	०३:२३:४२:२५	१०:१०:०५:४१	०६:०८:४७:३५	४७:०५
११	०३:२८:०३:०२	०२:१८:१२:४०	००:१६:१५:१२	०३:२४:३२:५३	१०:१०:०४:११	०६:०८:४४:२५	४७:०४
१२	०३:२८:४२:२४	०२:१९:४८:०४	००:१६:२३:५६	०३:२४:५६:१८	१०:१०:०२:१४	०६:०८:४१:१४	४७:०४
१३	०३:२९:२१:४६	०२:२१:२३:२८	००:१६:३२:४०	०३:२५:१९:४३	१०:१०:००:०९	०६:०८:३८:०३	४७:०३
१४	०४:००:०१:०८	०२:२२:५८:५१	००:१६:४१:२४	०३:२५:४३:०८	१०:०९:५८:०४	०६:०८:३४:५२	४७:०३
१५	०४:००:४०:३०	०२:२४:३४:१४	००:१६:५०:०८	०३:२६:२९:५८	१०:०९:५५:५९	०६:०८:३१:४१	४७:०२

दैनिक लग्नसारणी चक्रम्

ति	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिं.अं.	क.अं.	तु.अं	वृ.अं	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
१	०३:००	०४:५६	०७:०९	०९:२७	११:४३	१३:५८	१६:१५	१८:३२	२०:३७	२२:२३	२३:५४	०१:२३
२	०२:५६	०४:५२	०७:०५	०९:२३	११:३९	१३:५४	१६:११	१८:२८	२०:३३	२२:१९	२३:५०	०१:१९
३	०२:५२	०४:४८	०७:०१	०९:१९	११:३५	१३:५०	१६:०७	१८:२४	२०:२९	२२:१५	२३:४६	०१:१५
४	०२:४८	०४:४४	०६:५७	०९:१५	११:३१	१३:४६	१६:०३	१८:२०	२०:२५	२२:११	२३:४२	०१:११
५	०२:४४	०४:४०	०६:५३	०९:११	११:२७	१३:४२	१५:५९	१८:१६	२०:२१	२२:०७	२३:३८	०१:०७
६	०२:४०	०४:३६	०६:४९	०९:०७	११:२३	१३:३८	१५:५५	१८:१२	२०:१७	२२:०३	२३:३४	०१:०३
७	०२:३६	०४:३२	०६:४५	०९:०३	११:१९	१३:३४	१५:५१	१८:०८	२०:१३	२१:५९	२३:३०	००:५९
८	०२:३२	०४:२८	०६:४१	०८:५९	११:१५	१३:३०	१५:४७	१८:०४	२०:०९	२१:५५	२३:२६	००:५५
९	०२:२८	०४:२४	०६:३७	०८:५५	११:११	१३:२६	१५:४३	१८:००	२०:०५	२१:५१	२३:२२	००:५१
१०	०२:२४	०४:२०	०६:३३	०८:५१	११:०७	१३:२२	१५:३९	१७:५६	२०:०१	२१:४७	२३:१८	००:४७
११	०२:२०	०४:१६	०६:२९	०८:४७	११:०३	१३:१८	१५:३५	१७:५२	१९:५७	२१:४३	२३:१४	००:४३
१२	०२:१५	०४:११	०६:२४	०८:४२	१०:५८	१३:१३	१५:३०	१७:४७	१९:५२	२१:३८	२३:०९	००:३८
१३	०२:११	०४:०७	०६:२०	०८:३८	१०:५४	१३:०९	१५:२६	१७:४३	१९:४८	२१:३४	२३:०५	००:३४
१४	०२:०७	०४:०३	०६:१६	०८:३४	१०:५०	१३:०५	१५:२२	१७:३९	१९:४४	२१:३०	२३:०१	००:३०
१५	०२:०३	०३:५९	०६:२२	०८:३०	१०:४६	१३:०१	१५:१८	१७:३५	१९:४०	२१:२६	२२:५७	००:२६

दैनिक अर्धप्रहरा चक्रम्

वार	दिन का अर्धप्रहरा	रात का अर्धप्रहरा
चं.	दि. ०६:५२-०८:३४। दि. ०३:२२-०५:०४ ।	रा. १०:४१-११:५९। रा.०२:३२-०३:४९।
मं.	दि. ०६:५२-०८:३४ । दि. ०१:४०-०३:२२।	रा. ०८:०७-०९:२४।
बु.	दि. ०८:३३-१०:१५। दि ११:५७-०१:३९।	रा. ११:५९-०१:१६। रा.०२:३३-०३:५०।
गु.	दि. ०३:२१-०६:५१।	रा. ११:५९-०१:१६। रा.०३:५०-०५:०९।
शु.	दि. ०८:३३-११:५७।	रा. ०९:२५-११:४२।
श.	दि. ५:०९-६:५१। दि. १:३९-३:२१। दि. ५:०३-६:५१।	रा.६:५१-८:०८।रा. १:१६-२:३३ रा. ३:५०-५:०९।
र.	दि. १०:१५-०१:३९।	रा. १०:४२-११:५९। रा.०१:१६-०२:३३।
चं.	दि. ०६:५२-८:३४ । दि. ०३:२२-०५:०४।	रा. १०:४१-११:५८। रा.०२:३२-०३:४९।
मं.	दि. ०६:५२-०८:३४ । दि. ०१:४०-०३:२२।	रा. ०८:०७-०९:२४।
बु.	दि. ०८:३४-१०:१६ । दि. ११:५८-०१:४० ।	रा. ११:५८-०१:१५। रा.०२:३२-३:४९ ।
गु.	दि. ०३:२२-०६:५० ।	रा. ११:५८-०१:१५। रा.०३:४९-०५:१०।
शु.	दि. ०८:३५-११:५९ ।	रा. ०९:२३-१०:४० ।
श.	दि. ५:११-६:५३।दि. १:४१-३:२३।दि. ५:०५-६:४९।	रा.६:४९-८:०६।रा. १:१४-२:३१।रा. ३:४८-५:११
र.	दि. १०:१७-१:४१।	रा. १०:४०-११:५७। रा.०१:१४-०२:३१।
चं.	दि. ०६:५३-८:३५। दि. ०३:२३-०५:०५।	रा. १०:४०-११:५७। रा.०१:१४-०२:३१।

स्वर द्वारा भविष्य फल (पिछें पृष्ट का शेष) वाम स्वर लगातार चार घटे तक चले तो शरीर कष्ट,४ घंटे ४८ मिनट तक चले तो शत्रु बाधा,दो या तीन दिन चले तो महारोग,५ दिन तक चले तो व्याकुलता,१ मास तक चले तो धनहानि होती है।दाहिना स्वर लगातार १ घंटा ३६ मिनट तक चले तो वस्तु हानि,५ घंटा तक चले तो सज्जनों से बैर,८ घंटा २४ मिनट तक चले तो प्रियजनों को कष्ट तथा २४ घंटे तक चले तो मृत्यु की सूचना समझनी चाहिए।कार्य सिद्ध होगा इस प्रश्न में यदि वाम स्वर के पृथ्वी जल तत्व का उदय हो तो कार्य सफल होगा।वाम स्वर हो तत्व पृथ्वी से भिन्न हों तो असफलता।यदि प्रश्न कर्त्ता उत्तर दाता (स्वरज्ञ) के दाहिनी ओर बैठकर प्रश्नकरे तो उसका कार्य सिद्ध होता है।यदि वाम स्वर हो और प्रश्नकर्ता ऊंचे से,सामने से,बांयी ओर से प्रश्न करे तो कार्य सिद्ध होता है।यदि प्रश्न कर्त्ता बांयी ओर से आकर दाहिनी ओर बैठकर प्रश्न करे और उत्तरदाता का वाम स्वर हो तो कार्य का विनाश होगा।प्रश्नकर्त्ता जिस ओर जकर बैठे उसी ओर का स्वर यदि उत्तरदाता का हो तो कार्य सिद्धि होती है परन्तु पृथ्वी या जल तत्व का होना आवश्यक है।रोग के प्रश्न में यदि बांयी ओर से प्रश्न किया जाय और उत्तरदाता का दक्षिण स्वर चल रहा हो तो रोगी का विनाश होता है।इसमें यदि वाम स्वर हो तथा पृथ्वी तत्व हो तो रोगी १ मास में स्वस्थ हो जायेगा।सुषुम्ना स्वर हो शनिवार एवं आकाश तत्व हो तो रोगी की मृत्यु होती है।गर्भ के विषय मे प्रश्न किया जाय तो यदि बन्द स्वर की ओर से प्रश्न किया जाय तो गर्भ है अन्यथा नहीं।यदि प्रश्न कर्त्ता का वाम स्वर हो तथा उत्तर दाता का दक्षिण स्वर हो तो पुत्र अल्पायु योग का है।यदि दोनों का दक्षिण स्वर हो तो पुत्र दीर्घायु होगा।यदि दोनों का वाम स्वर हो तो पुत्री होगी दीर्घायु रहेगी।यदि सुषुम्ना मे प्रश्न हो तो गर्भपात होगा।आकाश तत्व के प्रश्न में भी गर्भपात की स्थितिरहती है।प्रवासी के विषय में प्रश्न होने पर प्रश्न समय वाम स्वर में पृथ्वी तत्व हो तो प्रवास में कुशलता जल तत्व हो तो मार्ग में जल के समीप अग्नि तत्व में प्रवास में कष्ट;वायु तत्व में प्रवासी आगे चला गया है।आकाश तत्व में प्रवासी रोगी है सुषुम्ना नाड़ी तथा आकाश तत्व में प्रवासी की मृत्यु। दक्षिण स्वर पृथ्वी तत्व हो तो प्रवासी अपने स्थान पर स्थिर है।जल तत्व हो तो प्रवासी सुखी,अग्नि तत्व हो प्रवासी रोगादि कष्टों से मुक्त हो गया है।वायु तत्व हो तो प्रवासी अन्यत्र चला गया है।आकाश तत्व हो तो प्रवासी की मृत्यु हो चुकी समझना चाहिए।इस प्रकार स्वर के माध्यम से सम्पूर्ण भूत,भविष्य वर्तमान के प्रश्नों का उत्तर सहजता से लग्न,नक्षत्र,राशि,कुण्डली आदि के ज्ञान बिना दिया जाता है जो सर्वथा समीचीन घटता है।**आषाढमास कृत्य-रथयात्रा**-आषाढ़ शुक्ल द्वितीया को पुष्य नक्षत्र हो तो सुभद्रासहित भगवान् को रथ में विराजित कर यात्रा करावे और वापस पधार आने पर यथास्थान स्थापित करे।उस दिन पुरी में श्रीजगदीशभगवान् को सपरिवार विशाल रथ पर आरूढ करके भ्रमण करवाते हैं उस दिन वहा रथयात्रा अद्वितीय उत्सव होता है।देश देशान्तर के लाखों नर-नारी एपकत्र होते हैं।**व्यासपूजा पूर्णिमा**-आषाढशुक्ल पूर्णिमा को प्रातःस्नानादि नित्य-कर्म करके "गुरुपरम्परासिद्धयर्थ व्यास पूजां करष्ये।से संकल्प करके श्रीपर्णीवृक्ष की चौकी पर तत्सम धौतवस्त्र फैलाकर उस पर प्राग पर (पूर्व से पश्चिम) और उदगपर (उत्तर से दक्षिण) को गन्धादि से बारह-बारह रेखा बनाकर व्यास-पीठ निश्चित करें।और दसों दिशाओं में अक्षत छोड़कर दिग्-बन्धान करें।फिर ब्रह्म,ब्रह्मा,परापरशक्ति,व्यास,शुकदेव, गौडपाद, गोविन्दस्वामी और शंकराचार्य का नाम मन्त्र से आवाहनादि पूजन करके अपने दीक्षागुरु (तथा पिता,पितामह,भ्राता आदि) का देवतुल्य पूजन करें।**गुरुपूजनमन्त्रः**-ॐ गुरूर्ब्रह्मा गुरूर्विष्णुर्गुरूर्देवो महेश्वरः।गुरूः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः।आखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया । चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गरवे नमः ।।

तिथिः १ चन्द्रमा सूर्योदये

मं ४ शु | ले ३ | २ बु | १ गु रा
५ | सू चं | १२
६ | ९ | शश ११
के ७ | ८ | १०

संतान योग विचारः-१· लग्नेश पंचमभावगत और गुरु बलवान हो तो निश्चय पुत्र होता है।२·यदि पचम भाव में गुरु बलवान हो और लग्नेश से युत या दृष्ट हो तो संतान का प्रबल योग होता है।३·केन्द्र एवं त्रिकोण के अधिपति पचमभाव में हो और पंचमेश निर्बल न हो तो संतान सुख होता है।४·पंचम भाव में वृष, कर्क या तुला राशिगत शुक्र या चन्द्रमा हो, शुक्र या चन्द्रमा से दृष्ट हो एव पापग्रहों से दृष्ट या युत न हो बहुपूत्र योग होता है।५·यदि लग्नेश और पंचमेश एक साथ हो,अथवा इन दोनों की परस्पर दृष्टि हो,अथवा स्वगृही मित्रगृही अथवा उच्च का हो तो संतान योग होता है।६·यदि लग्नेश एव नवमेश दोनो सप्तम भाव में हों अथवा द्वितीयेश लग्न में हो तो संतान योग होता है।७·यदि लग्नेश और पंचमेश शुभ ग्रह के साथ केन्द्र मे हो और द्वितीयेश बली हो तो संतान योग होता है।८· यदि पचमेश अथवा नवमेश सप्तम भाव में हो अथवा युग्म राशि में हो और वह चन्द्रमा अथवा शुक्र से दृष्ट या युत हो तो कन्या सन्तति अधिक होती है।९· यदि पंचमेश अथवा नवमेश पुरुषराशि का हो और पुरुष ग्रह से दृष्ट या युत हो तो पुत्र संख्या अधिक होती है ।

वैधव्यदोष शान्ति-विनियोगमन्त्रः-ॐ अस्य अथर्ववेदस्य द्वितीय काण्डस्य त्रयोदशसूक्तस्य अथर्वा ऋषिः।अग्नि बृहस्पति विश्वेदेवाः देवताः त्रिष्टुप् अनुष्टुप् विराट् जगती छन्दांसि। वैधव्यादि दोष परिमार्जने विनियोगः। मन्त्रः-ॐ आयुर्दा अग्ने जरस वृणानो घृत प्रतीको घृतपृष्ठो अग्ने।घृत पीत्वा मधुचारू गव्य पितेव पुत्रानभिरक्षता दिमम्।।परिधत्तनो वर्चसे मं जरामृत्यु कुणुत दीर्घमायुः। बृहस्पतिः प्रायच्छद् वास एतत् सोमायराज्ञे परिधातवा उ।। परीदं वासो अधिथाः स्वस्तयेऽ भूर्गृष्टीनामभिशस्ति पा उ।शत च जीव शरदो पुरूची रायश्चपोषमुप्न संव्ययस्व।। एह्यश्मानमा तिष्ठाश्मा भवतु ते तनूः।कृण्वन्तु विश्वे देवा आयुष्टे शरदः शतम्।।यस्य ते वासः प्रथमवास्यं हरामस्तं त्वा विश्वेऽवन्तु देवाः। त त्वा भ्रातरः सुवृधा वर्धमानमनु जायन्ता वह्वः सुजातम्।।उपर्युक्त मन्त्रों को पीपलवृक्ष के नीचे ११ दिन में २१ हजार जप करें। जप के अन्त में पीपलवृक्ष की ११ वार प्रतिदिन परिक्रमा करें।२१ हजार जप पूर्ण होने पर दशांश हवन कर साठीचावल की खिचड़ी बनाकर इन्हीं मन्त्रों से अभिमन्त्रितकर भोजन करें।ऐसा करने से वैधव्यदोष की शान्ति होती है तथा कन्या को दीर्घजीवी सुन्दरपति की प्राप्ति होती है।

तिथिः ८ चन्द्रमा सूर्योदये

मं ४ शु | ले ३ | २ | १ गु रा
५ | सू बु | १२
६ चं | ९ | श ११
के ७ | ८ | १०

गुणयोगबोधक (मेलापक) चक्र, पार्श्व में कन्या-नक्षत्र, ऊपर वर-नक्षत्र

कन्या \ वर	अश्वि	भर	कृ१	कृ३	रोहि	मृ२	मृ२	आर्द्रा	पुन३	पुन१	पुष्य	आश्ले	मघा	पूफा	उफा१	उफा३	हस्त	चि	चि	स्वा
अश्वि	२८	३४	२७॥	१८॥	२३॥	२३॥	२७	१९	१९	२१॥	३०॥	२५	२१	२७	१८॥	१३	१०	१३	२२॥	२७॥
भर	३३	२८	२९	२०	२३॥	१४॥	१८	२७	२६	२८॥	२१॥	२३॥	२१	१९	२७	२१॥	२०	५	१४॥	२९॥
कृ१	२८॥	२९	२८	१९	११	१८॥	२२	२१	२३	२५॥	२६॥	२२॥	१७॥	२१	२२	१६॥	१७॥	१९	२८॥	१७॥
कृ३	१८॥	१९	१८	२८	२०	२७॥	१९॥	१८॥	२०॥	२२	२३	१९	१८॥	२२	२३	२१	२२	२३॥	२३॥	१२॥
रोहि	२१॥	२२॥	१०	२०	२८	३५	२७	२४॥	२३॥	२५	२५	१२	११॥	२५॥	२७	२५	२५	२०	२०	१५॥
मृ२	२३॥	१४॥	१६॥	२६॥	३६	२८	२०	२६	२४॥	२६	१८	२०	१९॥	१७॥	२५॥	२३॥	२६	१२	१२	२६
मृ२	२६	१८	२०	१७॥	२७	१९	२८	३४	३२॥	१९॥	११॥	१३॥	२३॥	२०॥	२८॥	३०॥	३३	१९	१३	२७
आर्द्रा	१७	२६	२०	१७॥	२३॥	२४	३३	२८	२४	११	१८॥	१२॥	२२॥	२८॥	२१॥	२३॥	२२॥	२६	२०	२६
पुन३	१८	२६	२१	१८॥	२३॥	२३॥	३२॥	२५	२८	१५	२२	१५॥	२१॥	२७॥	२१॥	२३॥	२३॥	२४॥	१८॥	२७
पुन१	२२॥	३०॥	२५॥	२२	२७	२७	२०॥	१३	१६	२८	३५	२८॥	१६॥	२२॥	१६॥	१९॥	१९॥	२०॥	२०	२८॥
पुष्य	३१॥	२३॥	२६॥	२३	२७	१९	१२॥	२०॥	२३	३५	२८	२९	१८॥	१६॥	२५॥	२८॥	२८॥	१२॥	१२	२८
आश्ले	२७	२४॥	२३॥	२०	१३	२२	१५॥	१३॥	१७॥	२९॥	३०	२८	१६	१६॥	१८॥	२१॥	२२॥	२६॥	२६	१४
मघा	२२	२१	१७॥	१९॥	१२॥	२१॥	२४॥	२३॥	२३॥	१६॥	१८॥	१५	२८	३०	२६॥	१७॥	१८॥	२२॥	२५॥	१३॥
पूफा	२६	१९	२१	२३	२६॥	१७॥	२०॥	२९॥	२७॥	२०॥	१४॥	१५॥	३०	२८	३४	२५	२२॥	८॥	११॥	२५॥
उफा१	१७॥	२७	२२	२४	२८	२५॥	२८॥	२२॥	२१॥	१४॥	२३॥	१७॥	२६॥	३४	२८	१९	१७	१५॥	१८॥	२६॥
उफा३	११	२०॥	१५॥	२१	२५	२२॥	३०॥	२४॥	२३॥	१७॥	२६॥	२०॥	१६॥	२४	१८	२८	२६	२४॥	१७॥	२५॥
हस्त	९	२०	१५॥	२१	२६	२६	३४	२४॥	२४॥	१८॥	२७॥	२०॥	१६॥	२२॥	१७	२७	२८	२७	२०	२७॥
चि	१३	४	१८	२३॥	२०	१३	२१	२७	२६॥	२०॥	१२॥	२५॥	२१॥	७॥	१४॥	२४॥	२८	२८	२१	२१
चि	२२॥	१३॥	२७॥	२२॥	१९	१२	१४	२०	१९॥	२०	१२	२५	२४॥	१०॥	१७॥	१६॥	२०	२०	२८	२८
स्वा	२६॥	२९॥	१५॥	१०॥	१५॥	२५	२७	२७	२७	२७॥	२७	१२	११॥	२५॥	२६॥	२५॥	२६॥	१९	२७	२८
वि३	२२॥	२१॥	१९॥	१४॥	९॥	१८॥	२०॥	२०	२१	२१॥	२१॥	१७	१६॥	१८॥	१७॥	१६॥	१८॥	२६॥	३४॥	२०
वि१	१७॥	१६॥	१४॥	१९॥	१४॥	२३॥	१४	१३॥	१४॥	१८	१८	१३॥	२१॥	२३॥	२२॥	१८	२०	२८	२३॥	९
अनु	२४॥	१५॥	१८॥	२३॥	२८॥	२०॥	११	१७	२०॥	२४	१७	१८	२४॥	२२॥	३१॥	२७	२६	११	६॥	२१॥
ज्ये	१३	१७॥	२४॥	२९॥	२२॥	२३॥	१४	३	६	९॥	२०	२४	३२	२४॥	१७॥	१३	१३	२५	२०॥	१६॥
मूल	१३	२०	२४॥	२०	१४	१५	२३	१६	१४	८॥	१७॥	२३	२५	१९	१०॥	१४	१५	२७	२७	२३
पूषा	२५	१९	१८	१३॥	२०	११	१९	२८	२७	२१॥	११॥	१६॥	२०	१८	२६	२९॥	२७	१३	१३	२७
पूषा	२६	२०	१९	१४॥	२१	१२	१८	२७	२६	२१॥	११॥	१६॥	२१	१९	२७	२८॥	२६	१२	१२	२६
उषा१	२४॥	२७	१४	९॥	१२॥	१८	२४	२७	२६	२१॥	२२॥	८॥	११॥	२७	२८	२९॥	२७॥	२१	२१	१८
उषा३,१	२६	२८॥	१५॥	१४	१७	२२॥	२०॥	२३॥	२२॥	२५	२६	१२	५॥	२१	२२	२६	२४	१७॥	२५॥	२२॥
उषा४	२७	२८॥	१५॥	१४	१७	२३॥	२१॥	२३॥	२३॥	२६	२७	१२	५॥	२१	२२	२६	२५	१७॥	२५॥	२३॥
श्र¼	२७	२७	१५॥	१४	१७	२५	२३	२३॥	२३॥	२६	२७	१२	५॥	१९॥	२२	२६	२५	१९	२७	२३॥
श्र१	२७	२८	१२॥	११	१९	२७	२५	२३॥	२३॥	२६	२४	१२	५॥	१९॥	२१	२५	२५	१८	२६	२३॥
श्र२	२६	२७	११॥	१०	१८	२६	२४॥	२३	२३	२६	२४	१२	४॥	१८॥	२०	२४॥	२४॥	१७॥	२५॥	२३
ध	२०	१०	२५	२३॥	२०	१३	११॥	१७॥	१८	२१	१२	२६	१७॥	३॥	११॥	१६	१८॥	१६॥	२४॥	२६॥
ध	२०	१०	२५	२९॥	२६	१९	११॥	१७॥	१८	१४	५	१९	२४॥	१०॥	१८॥	१५	१७॥	१५॥	१७॥	१९॥
शत	१५	२०	२७	३१॥	२४॥	२७	१९॥	१०॥	११॥	७॥	१५	१९	२५॥	१९॥	१२॥	९	७	२२॥	२४॥	१८॥
पूभा३	१६	२४	१९	२३॥	३०॥	२९॥	२२	१५॥	१५॥	११॥	१८॥	१३	१८॥	२४॥	१६॥	१३	१२	१६	१८	२३॥
पूभा१	१४॥	२२॥	१७॥	२०	२७	२६	२५॥	१९	१९	१६	२३	१७॥	१७॥	२३॥	१५॥	१७॥	१६॥	२०॥	१३॥	१९
उभा	२४॥	१६॥	१९॥	२२	२६	१७	१६॥	२६॥	२७	२४	१७	१९	१८॥	१६॥	२६॥	२८॥	२६॥	१०॥	३॥	१९॥
रेवती	२६	२६॥	११॥	१४	१९	२७	२६॥	२६॥	२६॥	२३॥	२६	११	१२	२४॥	२४॥	२६॥	२७॥	१९॥	१२॥	१२॥

कन्या \ वर	वि३	वि१	अनु	ज्ये	मूल	पूषा	पूषा	उषा१	उषा३,१	उषा४	श्र¼	श्र१	श्र२	ध	ध	शत	पूभा३	पूभा१	उभा	रेवती
अश्वि	२२॥	१५॥	२३॥	११	१२	२६	२७	२५॥	२८	२८	२८	२८	२७	२०	२०	१५	१८	१४॥	२४॥	२५
भर	२२॥	१५॥	१३॥	१६॥	२०	१९	२०	२७	२९॥	२८॥	२७	२८	२७	११	११	२१	२५	२१॥	१५॥	२४॥
कृ१	२०॥	१३॥	१८॥	२३॥	२४॥	१८	१९	१४	१६॥	१७॥	१७॥	१४॥	१३॥	२६	२६	२८	२०	१६॥	१८॥	११॥
कृ३	१५॥	१८॥	२३॥	२८॥	१९	१२॥	१३॥	८॥	१४	१५	१५	१२	११	२३॥	३०॥	३२॥	२४॥	१९	२१	१४
रोहि	१०॥	१३॥	२६॥	२१॥	१३	१९	२०	११॥	१७	१६	१६	१८	१७	२०	२७	२५॥	३१॥	२६	२५	१७
मृ२	१८॥	२१॥	१९॥	२१॥	१३	११	१२	१८	२३॥	२३॥	२५	२७	२६	१२	१९	२७	३१॥	२६	१७	२६
मृ२	१९॥	१२	१०	१२	२१	१९	१८	२४	२०॥	२०॥	२२	२४	२३॥	९॥	१०॥	१८॥	२३	२५॥	१६॥	२५॥
आर्द्रा	२०	१२॥	१५	२	१५	२७	२६	२६	२२॥	२१॥	२१॥	२१॥	२१	१६॥	१७॥	१०॥	१५॥	१८	२५॥	२४॥
पुन३	२०	१२॥	१९॥	४	१२	२७	२६	२६	२२॥	२२॥	२२॥	२२॥	२२	१६	१७	१०॥	१६॥	१९	२७	२५॥
पुन१	२१॥	१७	२४	८॥	८॥	२३॥	२३॥	२३॥	२७	२७	२७	२७	२७	२१	१४	७॥	१३॥	१७	२५	२३॥
पुष्य	२१॥	१७	१७	१९	१७॥	१३॥	१३॥	२४॥	२८	२८	२८	२५	२५	१२	५	१५	२०॥	२४	१८	२६
आश्ले	१८	१३॥	१९	२४	२४	१७॥	१७॥	९॥	१३	१४	१४	१४	१४	२७	२०	२०	१४	१७॥	१९	१२
मघा	१७॥	२०॥	२४॥	३१	२५	२०	२१	११॥	६॥	७॥	७॥	७॥	६॥	१८॥	२५॥	२६॥	१९॥	१६॥	१७॥	१२
पूफा	१९॥	२२॥	२०॥	२३॥	१९	१८	१९	२७	२२	२१	१९॥	१९॥	१८॥	४॥	११॥	२०॥	२५॥	२२॥	१५॥	२२॥
उफा१	१८॥	२१॥	२९॥	१६॥	१०॥	२६	२७	२८	२३	२२	२२	२१	२०	१२॥	१९॥	१३॥	१७॥	१४॥	२५॥	२२॥
उफा३	१७॥	१७	२५	१२	१३	२८॥	२७॥	२८॥	२६	२५	२५	२४	२३॥	१६	१६	१०	१४	१६॥	२७॥	२४॥
हस्त	१८॥	१८	२५	११	१३	२७	२६	२७॥	२५	२५	२५	२५	२४॥	१७॥	१७॥	७	१४	१६॥	२६॥	२६॥
चि	२७॥	२७	११	२४	२६	१२	११	२०	१७॥	१८॥	२०	१९	१८॥	१६॥	१६॥	२३॥	१७	१९॥	९॥	१९॥
चि	३४॥	२२॥	६॥	१९॥	२६	१२	११	२०	२४॥	२५॥	२७	२६	२५॥	२३॥	१७॥	२४॥	१८	१२॥	२॥	१२॥
स्वा	१९	७	२०॥	१४॥	२१	२७	२६	१८	२२॥	२२॥	२२॥	२२॥	२२	२४॥	१८॥	१७॥	२४॥	१९	१९॥	११॥
वि३	२८	१६	१६	१९॥	२६	२०	१९	१२	१६॥	१७॥	१७॥	१६॥	१६	३०	२४	२४॥	१९॥	१४	१२	४॥
वि१	१७	२८	२८	३१॥	२२॥	१६॥	१६॥	९॥	१२	१३	१३	१२	१३	२७	२७	२७॥	२२॥	२०	१८	१०॥
अनु	१६	२७	२८	३०	१५॥	१५॥	१५॥	२३॥	२६	२६	२६	२६	२७	१२	१२	२२	२७॥	२५	१९	२६
ज्ये	२०॥	३१॥	३१	२८	१५	१७॥	१७॥	१७॥	२०	२१	२१	२१	२२	२६	२६	२०	१२	९॥	२१	२१
मूल	२७	२१॥	१५॥	१४	२८	२८	२७	२५॥	१६॥	१७॥	१७॥	१७॥	१७	२१	२८	२१	१४	१५	२४	२६॥
पूषा	२१	१५॥	१३॥	१६॥	२८	२८	२७	३३	२४	२३	२१॥	२३॥	२३	८	१५	२३	२९	३०	२२	३०
पूषा	२०	१५॥	१३॥	१६॥	२७	२७	२८	३४	२५	२४	२२॥	२४॥	२३॥	८॥	१५॥	२३॥	२९॥	३०॥	२२॥	३०॥
उषा१	१३	८॥	२१॥	१६॥	२५॥	३३	३४	२८	१९	१८	१८	१६	१५	१६॥	२३॥	२३॥	२९॥	३०॥	३१॥	२१॥
उषा३,१	१७॥	११	२४	१९	१५॥	२३	२४	१८	२८	२७	२७	२५	२४	२५॥	१८॥	१८॥	२४॥	२८॥	२९॥	१९॥
उषा४	१७॥	११	२५	१९	१५॥	२३	२४	१८	२८	२८	२८	२६	२५	२५॥	१८॥	१८॥	२४॥	२८॥	२९॥	२०॥
श्र¼	१७॥	११	२५	१९	१५॥	२१॥	२२॥	१८	२८	२८	२८	२६	२५	२७	२०	१८॥	२४॥	२८॥	२९॥	२०॥
श्र१	१६॥	१०	२५	१९	१५॥	२३॥	२४॥	१६	२६	२६	२६	२८	२७	२७	२०	१८॥	२४॥	२८॥	२८॥	२१॥
श्र२	१६	११	२६	२०	१५	२३	२३॥	१५	२५	२५	२५	२७	२८	२८	२१	१९॥	२५॥	२९॥	२९॥	२२॥
ध	३१	२६	१२	२५	२०	७	७॥	१५॥	२५॥	२६॥	२८	२८	२९	२८	२१	२६	२१॥	२५॥	१४॥	२२॥
ध	२४	२६	१२	२५	२७	१४	१४॥	२२॥	१७॥	१८॥	२०	२०	२१	२०	२८	३३	२८॥	१८॥	७॥	१५॥
शत	२४॥	२६॥	२२	१९	२०	२२	२२॥	२२॥	१७॥	१८॥	१८॥	१८॥	१९॥	२५	३३	२८	१९	९	१७॥	१७॥
पूभा३	१९॥	२१॥	२५॥	११	१३	२८	२८॥	२८॥	२३॥	२२॥	२२॥	२२॥	२३॥	२०॥	२८॥	१९	२८	१८	२३	१९॥
पूभा१	१५	२०	२४	९॥	१६	३१	३१॥	३१॥	२९॥	२८॥	२८॥	२८॥	२९॥	२६॥	१९॥	१०	१९	२८	३३	२९॥
उभा	१३	१८	१८	२१	२५	२३	२३॥	३२॥	३०॥	२९॥	२९॥	२८॥	२९॥	१५॥	८॥	१८॥	२४	३३	२८	३३
रेवती	४॥	९॥	२६	२०	२६॥	३२	३२॥	२३॥	२१॥	२१॥	२१॥	२२॥	२३॥	२२॥	१५॥	१७॥	२१॥	३०॥	३४	२८

षडाष्टक चक्र

मित्र	मे.	मि.	सिं.	तु.	ध.	कु.
	वृश्चि.	म.	मी.	वृ.	क.	कन्या
शत्रु	मे.	मि.	सिं.	तु.	ध.	कु.
	क.	वृश्चि	म.	मी.	वृ.	क.

नवपञ्चम चक्र

मित्र	मे.	वृ.	मि.	सिं.	तु.	वृश्चि.
	सि.	क.	वृ.	ध.	कु.	मी
शत्रु	ध	म.	मी	कु.	क.	क.
	मे.	वृ.	क.	मि.	म.	वृश्चि.

द्विर्द्वादशचक्र

मित्र		शत्रु	
मी.	मे.	मे.	वृ.
वृ.	मि.	मि.	क.
क.	सि.	सि.	क.
क.	वृश्चि.	तु.	वृश्चि
वृश्चि	ध.	ध.	म.
म.	कु.	कु.	मी.

विषकन्या योग विवेचन :– १. यदि शनिवार को आश्लेषा नक्षत्र द्वितीया तिथि का संयोग हो तो उसमें उत्पन्न कन्या विषकन्या होती है। २. रविवार को शतभिषा नक्षत्र और द्वादशी तिथि का संयोग हो तो उसमें उत्पन्न कन्या विषकन्या होती है।३. मंगलवार को विशाखा नक्षत्र और सप्तमी तिथि प्राप्त हो तो उस दिन उत्पन्न कन्या विषकन्या होती है। ५. शुभग्रह से युत या दृष्ट, पापग्रह लग्न में तथा षष्ठ भाव में हो तो ऐसे योग में उत्पन्न कन्या विषकन्या होती है। ६. पंचम भाव में सूर्य, लग्न में शनि एवं नवमभाव में मंगल हो तो ऐसे योग में उत्पन्न कन्या विषकन्या होती है। विषकन्या योग वाली कन्यायें भाग्यहीन, दरिद्र, मृतप्रजा, दुर्वचनी, एवं शोकसंतप्त होती है। **विषकन्या भंग योग –** यदि सप्तम भाव में सप्तमेश, या कोई शुभ ग्रह स्थित हो तो विषकन्या योग भंग (नाश) हो जाता है।

सर्वघातचक्रम् । (रोगार्तेगमनेरणे विचारणीयम्)

राशयः	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
सूर्य घा.	४	८	१२	५	९	१	६	१०	७	११	२	३
चंद्र घा.	१	५	९	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२
मंगल घा.	५	९	१	६	१०	२	७	१	८	१२	३	७
बुध घा.	२	६	१०	३	७	११	४	८	५	९	१२	१
गुरु घा.	६	१०	२	७	११	३	८	१२	९	१	४	५
शुक्र घा.	७	१०	३	८	१२	४	९	१	१०	२	५	६
शनि घा.	३	७	११	४	८	१२	५	९	६	१०	१	२
राहु घा.	८	७	६	४	५	१०	१२	१	२	९	११	३
केतु घा.	८	७	१०	१	११	५	६	४	२	३	१२	९
मास घा.	का.	मा.	पौ.	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.
तिथि घा.	१, ६, ११	५, १०, १५	२, ७, १२	२, ७, १२	३, ८, १३	५, १०, १५	४, ९, १४	१, ६, ११	३, ८, १३	४, ९, १४	३, ८, १३	५, १०, १५
वार घा.	सू.	श.	चं.	बु.	श.	श.	वृ.	शु.	शु.	मं.	वृ.	शु.
नक्षत्र घा.	म.	ह.	स्वा.	ऽनु.	मू.	श्र.	श.	रे.	भ.	रो.	आ.	श्ले.
योग घा.	वि.	शु.	प.	धृ.	प्र.	शु.	शु.	ब्र.	वै.	म.	व्या.	व.
ग्रह घा.	मं.	शु.	बु.	च.	शु.	बु.	शु.	मं.	वृ.	श.	श.	वृ.
घा. घा.	पि.	वा.	स.	क.	पि.	वा.	स.	क.	पि.	वा.	स.	क.
व. घा.	क्ष.	वै.	शू.	वि.	क्ष.	वै.	शू.	वि.	क्ष.	वै.	शू.	वि.
सं. घा.	पु.	स्त्री.	पु.	स्त्री.	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री.	पु.	स्त्री.	पु.	स्त्री
सं. घा.	क्रू.	सौ.	क्रू.	सौ.	क्रू.	सौ.	क्रू.	सौ.	क्रू.	सौ.	क्रू.	सौ.
सं. घा.	च.	स्थि.	द्वि.	च.	स्थि.	द्वि.	च.	स्थि.	द्वि.	च.	स्थि.	द्वि.
व. घा.	रक्त	श्वे.	हरि	पां.	धूम्र	चि.	कृ.	कन.	पी.	कृ.	धू.	श्वे.
लग्न घा.	१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५
प्रहर घा.	१	४	३	१	१	१	४	१	१	४	३	४
चंद्र पु.घा	१	५	९	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२
चंद्रस्त्रीघा.	१	८	७	९	४	३	६	२	१०	११	५	१२

तीर्थयात्रा विवाहन्नप्राशनोपनयनादिषु । मांगल्य सर्वकार्येषु घातचन्द्रं न चिन्तयेत् ।। युद्धे चैव विवादे च कुमारी पूजने तथा । राजसेवाप्रयाणादौ घातचन्द्रं विवर्जयेत् ।।

उषा-४ तथा श्रवण १/१५ भाग मिलकर अभिजित नक्षत्र होता है। गणना की कठिनता के कारण पञ्चाङ्गकार इसे छोड़ देते है, योनिविचार में मुहूर्तचिन्तामणिकार इसका उल्लेख किया है। इस पञ्चाङ्ग की मेलापक सारिणी शास्त्रसम्मत सूक्ष्म गणित द्वारा निर्मित की गई है।

अङ्ग स्फुरण फल

स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल
मस्तक	पृथ्वीलाभ	हस्त	द्रव्य	ग्रीवाधे	रिपुभय
ललाट	स्थानलाभ	वक्ष	विजयध्रुव	पृष्ठ	पराजय
स्कन्ध	भोग	हृदय	सिद्धि	कपोल	वराङ्गना
भ्रूमध्य	सुखलाभ	कटि	प्रमोद, बल	मुख	मित्रलाभ
भ्रूयुग्म	महत्सुख	कटिपार्श्व	प्रीति	बाहु	भोजन
कपाल	शुभ	नाभि	स्त्रीनाश	बाहुमध्य	धन लाभ
नेत्र २	धनलाभ	आंत्रिक	कोशलाभ	वस्ति	अभ्युदय
नेत्रकोण	लक्ष्मी	कुक्षि	सुप्रीति	उर	वस्त्रलाभ
नेत्रसमीप	प्रियमिलन	उदर	कोशलाभ	जानु	शत्रुवृद्धि
नेत्रपक्ष	राज्यलाभ	गुद	वाहन	जङ्घा	स्वामीप्रीति
नेत्रपक्ष २	युद्धजय	ओष्ठ	प्रियवस्तु	पादोपरि	स्थानलाभ
नेत्रकोपाङ्ग२	कलत्र	हनु	भय	पादतल	राजयोग
नासिका २	प्रीति	कण्ठ	ऐश्वर्य	द्विपाद	अलाभ

सैकातिथिवारयुता कृताप्ता शेषे गुणेऽभ्रे भुवि अग्निवासः।

पक्ष	तिथि	वार	वास
शुक्ल	१, ५, ९, १३	रवि, सोम, गुरु, शुक्र	
कृष्ण	२, ६, १०, १४		
शुक्ल	२, ६, १०, १४	रवि, बुध, गुरु	
कृष्ण	३, ७, ११, ३०		
शुक्ल	३, ७, ११, १५	मंगल, बुध शनि	
कृष्ण	४, ८, १२		
शुक्ल	४, ८, १२	सोम, मंगल शुक्र, शनि	
कृष्ण	१, ५, ९, १३		

इन तिथि वारों में भूमि पर अग्निवास शुभ होता है

हवन चक्रं सूर्यभात्त्रित्रिभेचन्द्रे

३	३	३	३	३	३	३	३	३
सूर्य	बुध	शुक्र	शनि	चन्द्र	मंगल	गुरु	राहु	केतु
असत्	सत्	सत्	असत्	सत्	असत्	सत्	असत्	असत्

अग्निचक्रं न दृश्यते॥तदाग्निचक्रं नावलोक्य ग्रहशान्तौ विचारयेत्।अग्नेः अङ्गानं –यतः कण्ठ ततः श्रोत्रं यतो धूमोऽत्र नासिका। यत्राल्पज्वलनं नेत्रं यतोऽङ्गारकस्ततः शिरः।। यत्र प्रज्वलिता ज्वाला जिह्वासौ जातवेदसः। हवनफलं–कर्णे होमे भवेद् व्याधिः नेत्रेऽन्धत्व समीरितं। नासिकायां मनः पीडा मस्तके धन संक्षयं। जिह्वायां सर्वसंपतिर्वीहिहोमे विचारयेत्॥पूर्णायां पूर्णभवनं जयायां सुखवर्द्धनम्। नन्दा च कुरुते सौख्यं रिक्ता सन्तापकारिणी।।

ग्रहों के स्वगृह, उच्चनीच, जाति, वर्ण आदि की सारिणी

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मङ्गल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
स्वगृह	सिंह २०–३०	कर्क	मेष १२–३० वृश्चिक	कन्या २०–३० मिथुन	धनु २०–३० मीन	तुला १५–३० वृष	कुम्भ २०–३० मकर	कन्या	मीन
उच्च	मेष १०	वृष ०–३	मकर २८	कन्या ०–१५	कर्क ५	मीन २७	तुला २०	वृष	वृश्चिक
मूल–त्रिकोण	सिंह ०–२०	वृष २७–३०	मेष ०–१२	कन्या १५–२०	धनु ०–१०	तुला ०–१५	कुम्भ ०–२०	मिथुन	धनु
कालबल	दिन	रात्रि	रात्रि	अहर्निश	दिन	दिन	रात्रि	रात्रि	रात्रि
ह्रस्वादि	ह्रस्व	ह्रस्व	ह्रस्व	ह्रस्व	दीर्घ	ह्रस्व	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ
जाति	क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	वैश्य	विप्र	विप्र	शूद्र	शूद्र	शूद्र
पश्वादि	चतुष्पद	सरीसृप	चतुष्पद	पक्षी	द्विपद	[illegible]	पक्षी	सरीसृप	सरीसृप
लिङ्ग	पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुसक	पुरुष	स्त्री	नपुसक	पुरुष	पुरुष
सौम्यादि	पाप	उभय	पाप	उभय	सौम्य	सौम्य	पाप	क्रूर	क्रूर
वर्ण	रक्तश्याम	गौर	रक्त	दूर्वाश्याम	गौर	श्याम	कृष्ण	कृष्ण	कृष्ण
संज्ञान्तर	वनचर	जलचर	वनचर	ग्रामचर	ग्रामचर	जलचर	वनचर	वनचर	वनचर
लोक	नृलोक	नृलोक	नाग	स्वर्ग	स्वर्ग	नाग	नाग	नाग	नाग
उदय	पृष्ठ	शीर्ष	पृष्ठ	शीर्ष	उभय	शीर्ष	पृष्ठ	पृष्ठ	पृष्ठ
प्रकृति	पित्त	वातकफ	पित्त	कफवात	कफ	कफवात	वात	वात	वात
रस	कटु	लवण	तिक्त	मिश्रित	मधुर	अम्ल	कषाय	कषाय	कषाय
दृष्टि	उर्ध्व	सम	उर्ध्व	तिर्यक	सम	सम	अधो	अधो	अधो
दिग्बल	दक्षिण	उत्तर	दक्षिण	पूर्व	पूर्व	उत्तर	पश्चिम	...	...
पदार्थ	मुक्ता	रजत	ताम्र	स्वर्ण	रत्न	रजत	लौह	अस्थि	अस्थि
अवस्था	वृद्ध	मध्य	युवा	बाल	वृद्ध	मध्य	अतिवृद्ध	वृद्ध	वृद्ध
निवास	मन्दिर	जलाशय	अग्नि–स्थान	क्रीड़ा–स्थान	कोश–आगार	शयन–गृह	उत्कर, वल्मीक	वल्मीक	वल्मीक
स्वरुप	आत्मा	मन	सत्त्व	वाणी	ज्ञान	शुक्र	दुःख	दुःख	दुःख
देवता	अग्नि	जल	कार्त्तिकेय	विष्णु	इन्द्र	इन्द्राणी	ब्रह्मा	सर्प	भैरव
गुण	सात्विक	सात्विक	तामस	राजस	सात्विक	राजस	तामस	तामस	तामस
धातु	अस्थि	रक्त	मज्जा	चर्म	मेदा	वीर्य	स्नायु	मुर्छा	मुर्छा
शान्ति	हरिवंश–श्रव	शिवार्चन	रुद्रा–भिषेक	कन्या–दान	अमाङ्ग	गो–प्रतिमा	मृत्यु–ञ्जय	भुजगदा	ध्वज–गदा
भाग्योदय	२२ वर्ष	२४ वर्ष	२८ वर्ष	३२ वर्ष	१६ वर्ष	२५ वर्ष	३६ वर्ष	४२ वर्ष	४८ वर्ष

वैधव्य योग विचार

–①कन्या की कुण्डली में सप्तमेश आठवें भाव में और अष्टमेश सातवें भाव में हो और पापग्रह से दृष्ट या युत हो तो वैधव्य योग होता है।② जन्म या चन्द्र कुण्डली के सातवें या आठवें भाव में तीन या चार पापग्रह हों तो वैधव्य योग होता है।③ षष्ठेश और अष्टमेश ६ या १२ में हों तो और पापग्रहों से दृष्ट हो तो कन्या पति हन्ता होती है।④ मंगल सप्तम भाव में पापग्रह से दृष्ट हो तो कन्या बाल विधवा होती है।⑤ लग्न या सप्तम में विशेष क्रूर ग्रह हो तो वैधव्य होता है।⑥ मेष या वृश्चिक राशि गत पापयुक्त राहु ८,१२ वें हो तो वैधव्य योग होता है।⑦ चन्द्रमा से सातवें सूर्य,मंगल,शनि,राहु–केतु में से कोई दो ग्रह बैठे हों तो वैधव्य योग होता है।⑧ सप्तमस्थ शनि,भौम या राहु के द्वारा दृष्ट हो तो वैधव्य योग होता है।⑨ सप्तम भाव में दो पापग्रह हो तो वह कन्या कुलक्षणा तथा पतित्यक्ता होती है।⑩ सप्तम तथा अष्टम भाव में पापग्रहों का होना वैधव्य योग का सूचक होता है।

वैधव्य योग परिहार–①दीर्घायु वर से वैधव्य योग वाली कन्या का विवाह करना चाहिए। यथा–संहितासारे– वरायायुष्मते देय कन्या वैधव्य योगजा ।② कुम्भ विवाह, विष्णु प्रतिमा विवाह,वटविवाह से, तथा सावित्र्यादि व्रतों के प्रभाव से वैधव्य योग का नाश होता है। यथा – मार्कण्डेयपुराणे – बाल वैधव्य योगेऽपि कुम्भद्रुमप्रतिमादिभिः। कृत्वा लग्नं रहः पश्चात् कन्योद्वाहेति चापरे ।।

विधुर योग विचार

–①कन्यालग्न में सूर्य अथवा मीनलग्न में शनि हो तो जातक स्त्री का नाशक होता है।②जिस जातक के षष्ठ स्थान में भौम, सप्तम में राहु और अष्टम में शनि हो तो वह स्त्री नाशक होता है।③ शुक्र दूषित या सप्तम स्थान में हो और सप्तमेश पंचम में हो तो पत्नी हन्ता योग होता है।④ द्वितीय या सप्तम में पापग्रह होने से स्त्री से वियोग होता है।⑤ सप्तम में गुरु या पापयुत शुक्र होने पर स्त्री की मृत्यु पूर्व होती है।⑥ शुक्र ३,६,९,१२ राशियों में हो और सप्तम स्थान पापग्रह से युक्त व दृष्ट हो तो स्त्री नाशक होता है।⑦ पंचमेश सातवें में और सप्तम में पापग्रह हों तो विधुर योग होता है।⑧ नीचस्थ या अस्तगत सप्तमेश भी पत्नी से वियोग कराता है।⑨ शुक्र पापग्रहों के मध्य में हो एवं शुभग्रहों से युक्त या दृष्ट न हो तो विधुर होता है।⑩ सप्तम भावस्थ राहु पर दो पापग्रह की दृष्टि हो तो विधुर योग होता है।

॥ अष्टकवर्गे प्रत्येकग्रहाणा रेखाष्टकज्ञानाय सारणीयम् ॥

सूर्याष्टकवर्गाङ्काः ४८

सू	च	मं	बु	वृ	शु	श	ल
१	३	१	३	५	६	१	३
२	६	२	५	६	७	२	४
४	१०	४	६	९	१२	४	६
७	११	७	९	११		७	१०
८		८	१०			८	११
९		९	११			९	१२
१०		१०	१२			१०	
११		११				११	

चन्द्राष्टकवर्गाङ्काः ४९

च	मं	बु	वृ	शु	श	सू	ल
१	२	१	१	३	३	३	३
३	३	३	४	४	५	६	६
६	५	४	७	५	६	७	१०
७	६	५	८	७	११	८	११
१०	९	७	१०	९		१०	
११	१०	८	११	१०		११	
	११	१०	१२	११			
		११					

भौमाष्टकवर्गाङ्काः ३९

मं	बु	वृ	शु	श	सू	चं	ल
१	३	६	६	१	३	३	१
२	५	१०	८	४	५	६	३
४	६	११	११	७	६	११	६
७	११	१२	१२	८	१०		१०
८				९	११		११
१०				१०			
११				११			

बुधाष्टकवर्गाङ्काः ५४

बु	वृ	शु	श	सू	चं	मं	ल
१	६	१	१	५	२	१	१
३	८	२	२	६	४	२	२
५	११	३	४	९	६	४	४
६	१२	४	७	११	८	७	६
९		५	८	१२	१०	८	८
१०		८	९		११	९	१०
११		९	१०			१०	११
१२		११	११			११	

गुरोरष्टकवर्गाङ्काः ५६

वृ	शु	श	सू	चं	मं	बु	ल
१	२	३	१	२	१	१	१
२	५	५	२	५	२	२	२
३	६	६	३	७	४	४	४
४	९	१२	४	९	७	५	५
७	१०		७	११	८	६	६
८	११		८		१०	९	७
१०			९		११	१०	९
११			१०			११	१०
			११				११

शुक्राष्टकवर्गाङ्काः ५२

शु	श	सू	चं	मं	बु	वृ	ल
१	३	८	१	३	३	५	१
२	४	११	२	५	५	८	२
३	५	१२	३	६	६	९	३
४	८		४	९	९	१०	४
५	९		५	११	११	११	५
८	१०		८	१२			८
९	११		९				९
१०			११				११
११			१२				

शनेरष्टकवर्गाङ्काः ३९

श	सू	चं	मं	बु	वृ	शु	ल
३	१	३	३	६	५	६	१
५	२	६	५	८	६	११	३
६	४	११	६	९	११	१२	४
११	७		१०	१०	१२		६
	८		११	११			१०
	१०		१२	१२			११
	११						

लग्नाष्टकवर्गाङ्काः ४९

ल	सू	चं	मं	बु	वृ	शु	श
३	३	३	१	१	१	१	१
६	४	६	३	२	२	२	३
१०	६	१०	६	४	४	३	४
११	१०	११	१०	६	५	४	६
	११		११	८	६	५	१०
	१२			१०	७	८	११
				११	९	९	
					१०	११	
					११		

प्रत्येकरेखाफलज्ञानार्थचक्रं

रे.सं.	फलानि
१	क्लेशः
२	धनहानिः
३	प्रवासकष्टम्
४	समफलम्
५	सुखम्
६	धनप्राप्तिः
७	अभीष्टप्राप्तिः
८	सर्वकार्यसिद्धिः

प्राचीनमते गोचरबलाभावेऽष्टवर्गे शुद्धिरेव । तदुक्तं–अष्टकवर्ग विशुद्धेषु गुरुशीतांशु भानुषु। व्रतोद्वाहे च कर्तव्यो गोचरेण कदाचन्। उपलक्षणमप्युक्तं तत्रैव। अष्टवर्गेण ये शुद्धास्तेशुद्धाः सर्वकर्मसु । सूक्ष्माष्टवर्ग संशुद्धिः स्थूलाशुद्धिस्तु गोचरे ।

पराशर के अनुसार द्वादश लग्नों के शुभाशुभ विवेचन

लग्न	शुभग्रह	अति शुभग्रह	योग कारी	अन्य त्रिकोणपति	त्रिकोणस्य राहु,केतु	पापीग्रह	परमपापीग्रह
मेष	सूर्य,गुरु	×	×	बुध,शुक्र	–	मंगल,शनि	बुध
वृष	बुध	शनि	शनि	बुध,गुरु	–	शुक्र	चन्द्र,गुरु
मिथुन	शुक्र	बुध	बुध	शुक्र,शनि	–	शनि	सूर्य,मंगल
कर्क	चन्द्र	मंगल	मंगल	गुरु,चन्द्र	–	गुरु,शनि	चन्द्र,गुरु
सिंह	सूर्य	मंगल	मंगल	सूर्य,गुरु	–	गुरु,शुक्र,शनि	बुध
कन्या	शुक्र	बुध	बुध	शनि,शुक्र	–	चन्द्रमा,शनि	मंगल
तुला	बुध	शनि	शनि	शुक्र,गुरु	–	सूर्य,शुक्र	गुरु
वृश्चि.	चन्द्र,गुरु	×	×	×	–	मंगल,शनि	बुध
धनु	सूर्य,मंगल	गुरु	गुरु	सूर्य,मंगल	–	चन्द्रमा,शनि	शुक्र
मकर	शनि	शुक्र	शुक्र	बुध,शनि	–	सूर्य,मंगल,बुध	गुरु
कुम्भ	शनि	शुक्र	शुक्र	बुध,शनि	–	मंगल,शुक्र	चन्द्र
मीन	चन्द्र,मंगल	गुरु	गुरु	चन्द्र,मंगल	–	×	सूर्य,शुक्र,शनि

विंशोतरी महादशा कथनम्

इनशशिकुजदैत्या जीवमन्दौ ज्ञकेतू भृगुज इति नवानां कृत्तिकादिक्रमेण । रसदशगिरिधृत्यब्धार्थविंशेन सप्त दशमुनिनखसंख्याः स्युर्दशा मानवानाम् ॥

॥ अथग्रहाणां विंशोत्तरीयमहादशान्तर्दशादिज्ञानाय चक्रमिदम् ॥

सूर्यदशा वर्ष ६	चन्द्रदशा वर्ष १०	भौमदशा वर्ष ७	राहुदशा वर्ष १८	गुरुदशा वर्ष १६	शनिदशा वर्ष १९	बुधदशा वर्ष १७	केतुदशा वर्ष ७	शुक्रदशा वर्ष २०
कृ.उफा.उषा.	रो.ह.श्र.	मृ.चि.ध.	आर्द्रा.स्वा.शत.	पुन.वि.पूभा.	पुष्य.अनु.उभा.	श्ले.ज्ये.रे.	मघा.मू.अश्वि.	पूफा.पूषा.भर
अन्तर्दशादि १८	अन्तर्दशादि ३०	अन्तर्दशादि २१	अन्तर्दशादि ५४	अन्तर्दशादि ४८	अन्तर्दशादि ५७	अन्तर्दशादि ५१	अन्तर्दशादि २१	अन्तर्दशादि ६०
ग्र व मा दि	ग्र व मा दि	ग्र व मा दि	ग्र व मा दि	ग्र व मा दि	ग्र व मा दि	ग्र व मा दि	ग्र व मा दि	ग्र व मा दि
सू ० ३ १८	च ० १० ०	मं ० ४ २७	रा २ ८ १२	गु २ १ १८	श ३ ० ३	बु २ ४ २७	के ० ४ २७	शु ३ ४ ०
च ० ६ ०	मं ० ७ ०	रा १ ० १८	गु २ ४ २४	श २ ६ १२	बु २ ८ ९	के ० ११ २७	शु १ २ ०	सू १ ० ०
मं ० ४ ६	रा १ ६ ०	गु ० ११ ६	श २ १० ६	बु २ ३ ६	के १ १ ९	शु २ १० ०	सू ० ४ ६	चं १ ८ ०
रा ० १० २४	गु १ ४ ०	श १ १ ९	बु २ ६ १८	के ० ११ ६	शु ३ २ ०	सू ० १० ६	चं ० ७ ०	मं १ २ ०
गु ० ९ १८	श १ ७ ०	बु ० ११ २७	के १ ० १८	शु २ ८ ०	सू ० ११ १२	चं १ ५ ०	मं ० ४ २७	रा ३ ० ०
श ० ११ १२	बु १ ५ ०	के ० ४ २७	शु ३ ० ०	सू ० ९ १८	चं १ ७ ०	मं ० ११ २७	रा १ ० १८	गु २ ८ ०
बु ० १० ६	के ० ७ ०	शु १ २ ०	सू ० १० २४	चं १ ४ ०	मं १ १ ९	रा २ ६ १८	गु ० ११ ६	श ३ २ ०
के ० ४ ६	शु १ ८ ०	सू ० ४ ६	चं १ ६ ०	मं ० ११ ६	रा २ १० ६	गु २ ३ ६	श १ १ ९	बु २ १० ०
शु १ ० ०	सू ० ६ ०	चं ० ७ ०	मं १ ० १८	रा २ ४ २४	गु २ ६ १२	श २ ८ ९	बु ० ११ २७	के १ २ ०

योगिनीदशाऽन्तर्दशाज्ञानार्थ चक्रं

मंगला १	पिंगला २	धान्या ३	भ्रामरी ४	भद्रिका ५	उल्का ६	सिद्धा ७	संकटा ८
श्र,आर्द्रा,चि	ध,पुन,स्वा	पुष्,वि,श	अ,श्ले,अनु,पूभा	भ,म,ज्ये,उभा	कृ,पूफा,मूल,रे	रो,उफा,पूषा	मृ,ह,उषा
मा १२ च	मा. २४ सू	मा ३६ बृ	मा ४८ मं.	मा ६० बु.	मा ७२ श.	मा ८४ शु	मा ९६ के
मं. ० १०	पि. १ १०	धा ३ ०	भ्रा. ५ १०	भ. ८ १०	उ. १२ ०	सि. १६ १०	सं २१ १०
पि. ० २०	धा. २ ०	भ्रा ४ ०	भ. ६ २०	उ. १० ०	सि. १४ ०	सं. १८ २०	मं २ २०
धा. १ ०	भ्रा. २ २०	भ. ५ ०	उ. ८ ०	सि. ११ २०	सं. १६ ०	मं. २ १०	पि ५ १०
भ्रा. १ १०	भ. ३ १०	उ. ६ ०	सि. ९ १०	सं. १३ १०	मं. २ ०	पि. ४ २०	धा ८ ०
भ. १ २०	उ. ४ ०	सि ७ ०	सं. १० २०	मं. १ २०	पि. ४ ०	धा. ७ ०	भ्रा १० २०
उ. २ ०	सि. ४ २०	सं. ८ ०	मं. १ १०	पि. ३ १०	धा. ६ ०	भ्रा. ९ १०	भ १३ १०
सि २ १०	सं. ५ १०	मं. १ ०	पि. २ २०	धा. ५ ०	भ्रा ८ ०	भ. ११ २०	उ १६ ०
सं. २ २०	मं. ० २०	पि २ ०	धा. ४ ०	भ्रा. ६ २०	भ. १० ०	उ. १४ ०	सि १८ २०

मंगलामन्त्रः–ॐ ह्रीं मंगले मंगलाये स्वाहा। पिंगलामन्त्रः–ॐ ग्लौं पिंगले बैरिकारिणिप्रसीदफट् स्वाहा।
धान्यामन्त्रः–ॐ श्रीधनदे धान्यै स्वाहा। भ्रामरीमन्त्रः– ॐ भ्रामरिजगतामधीश्वरीभ्रामरी क्लीं स्वाहा।
भद्रिकामन्त्रः– ॐ भद्रिके भद्रदेहि अभद्रं नाशय स्वाहा। उल्कामन्त्रः–ॐ उल्के मम रोगंनाशय जृंभयस्वाहा।
सिद्धामन्त्रः–ॐ ह्रीं सिद्धे मे सर्वमानसं साधय स्वाहा। संकटामन्त्रः – ॐ ह्रीं संकटे मम रोगं नाशय स्वाहा।

भावानां कारकज्ञानचक्रम्

भावाः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
कारकाः	सू.	गु.	मं.	चं.बु.	गु.	मं.श.	शु.	श.	सू.गु.	सू.बु.गु.शु.	गु.	श.

ग्रहाणां नैसर्गिक मित्रसमशत्रु बोधकचक्रं

ग्रहाः	सूर्यः	चन्द्रः	मंगल	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहोः	केतोः
मित्राणि	चं.मं.वृ.	सू.बु.	सू.चं.वृ.	सू.शु.	सू.मं.चं.	बु.श.	बु.शु.	शु.श.	सू.चं.मं.
उदासीनाः	बुधः	मं.गु.शु.श.	शुक्र,शनि	मं.गु.शनि	शनिः	मं.गु.	गुरुः	बु.गु.	शु.गु.
शत्रवः	शु.श.	०	बुधः	चन्द्रः	बु.शु.	सू.चं.	सू.चं.मं.	सू.चं.मं.	श.श.

बाल्याद्यवस्थाचक्रम्

१,३,५,७,९,११ राशिषु	१–६	६–१२	१२–१८	१८–२४	२४–३०	अंशाः
अवस्थानामानि	बालः	कुमारः	युवाः	वृद्धः	मृतः	अवस्थाः
२,४,६,८,१०,१२ राशिषु	२४–३०	१८–२४	१२–१८	६–१२	१–६	अंशाः

पारिजातादिदशवर्गसंज्ञाचक्रं

२	३	४	५	६	७	८	९	१०	वर्गैक्य
पारिजात	उत्तम	गोपुर	सिंहासन	पारावत	गोलोक	ब्रह्मलोक	ऐरावत	श्रीधाम	योगाः

जन्म चन्द्रस्पष्ट से विंशोत्तरी दशा साधन सारणी

(जन्मकालीन चन्द्रमा के राशि, अंश, कला, विकला, के विंशोत्तरी दशा के भुक्त वर्ष मास दिन बोधक सारणी)

	मेष, सिंह, धनु, राशिस्थ चन्द्र				वृष,कन्या, मकर के चन्द्र				मिथुन, तुला, कुम्भ के चन्द्र				कर्क, मीन वृश्चिक के चन्द्र			
अंश	ग्रह	वर्ष	मास	दिन	ग्रह	वर्ष	मास	दिन	ग्रह	वर्ष	मास	दिन	ग्रह	वर्ष	मास	दिन
१	के	०	६	१	सु	१	११	१२	मं	४	०	९	बृ	१३	२	१२
२		१	०	२८		२	४	२४		४	६	१८		१४	०	२४
३		१	६	२७		२	१०	६		५	०	२७		१५	७	६
४		२	१	६		३	३	१८		५	७	६	श	०	११	१२
५		२	७	१५		३	९	०		६	१	१५		२	४	१५
६		३	१	२४		४	२	१२		६	७	२४		३	९	१८
७		३	८	३		४	७	२४	रा	०	५	१२		५	२	२१
८		४	२	१२		५	१	६		१	९	१८		६	७	२४
९		४	८	२१		५	६	१८		३	१	२४		८	०	२७
१०		५	३	०		६	०	०		४	६	०		९	६	०
११		५	९	९	चं	०	९	०		५	१०	६		१०	११	३
१२		६	३	१८		१	६	०		७	२	१२		१२	४	६
१३		६	९	२७		२	३	०		८	६	१८		१३	९	९
१४	शु	१	०	२७		३	०	०		९	१०	२४		१५	२	१२
१५		२	६	०		३	९	०		११	३	०		१६	७	१५
१६		४	०	०		४	६	०		१२	७	६		१८	०	१८
१७		५	६	०		५	३	०		१३	११	१२		०	५	३
१८		७	०	०		६	०	०		१५	३	१८	बु	१	८	१२
१९		८	६	०		६	९	०		१६	७	२४		२	११	२१
२०		१०	०	०		७	६	०		१८	०	०		४	३	०
२१		११	६	०		८	३	०	बृ	१	२	१२		५	६	९
२२		१३	०	०		९	०	०		२	४	२४		६	९	१८
२३		१४	६	०		९	९	०		३	७	६		८	०	२७
२४		१६	०	०	मं	०	४	६		४	९	१८		९	४	६
२५		१०	६	०		०	१	१५		६	०	०		१०	७	१५
२६		१९	०	०		१	४	२४		७	२	१२		११	१०	२४
२७	सु	०	१	२४		१	११	३		८	४	२४		१३	२	३
२८		०	७	६		२	५	१२		९	७	६		१४	५	१२
२९		१	०	१८		२	११	२१		१०	९	२८		१५	८	२१
३०		१	६	०		३	६	०		१२	०	०		१७	०	०

उदाहरण – किसी जातक का जन्म मिथुन के चन्द्र १८ अं ३० क ४१ वि पर है उपर्युक्त सारणी के अनुसार १८ अंश मिथुन राशि के कोष्ठ में राहु की महादशा १५ वर्ष ३ माह १८ दिन फल मिला । पुनः ३० कला फल अनुपात करने पर ८ माह ३ दिन आया ।तदन्तर ४१ विकला का अनुपातिय फल ६ दिन प्राप्त हुआ । सभी का योग करने पर राहु की भुक्त दशा १५ वर्ष ११ माह २७ दिन हुआ । इसको १८ वर्ष राहु की सम्पूर्ण दशा में घटाने पर राहु का भोग्य वर्ष प्राप्त होगा ।

कन्यादान के अधिकारी – पिता, दादा, भाई, चाचा (सगोत्रि नातेदार), मातामह, मामा एवं यज्ञोपवीत से संस्कारित भाई कन्यादान का अधिकारी होता है इनके अभाव में माता ही कन्यादान की अधिकारिणी होती है। धर्म सिन्धु के अनुसार – सर्वाभावे जननीचेच्चैव पूर्वाभावे परःपरः।

अथ ग्रहाणां तात्कालिक मैत्री विचारः–जन्मकालिक ग्रह जिस स्थान में हो उससे २,३,४,१०,११,१२ वें स्थान में स्थित ग्रह तात्कालिक मित्र तथा १,५,६ ७,८,९ स्थान स्थित ग्रह शत्रु होते हैं।

अथ पञ्चधा मैत्री विचारः– नैसर्गिक तथा तात्कालिक दोनो मित्र होने पर अधिमित्र, एक सम और एक मित्र होने पर मित्र, एक शत्रु और एक मित्र होने पर सम, दोनो शत्रु होने पर अधिशत्रु, एक सम दूसरा शत्रु होने पर पञ्चधा मैत्री में शत्रु होता है।

होराचक्रम्

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
अंश १–१५	५ सू.	४ चं.	५ सू.	४ चं.	५ सू.	४ चं.	५ सू.	४ चं.	५ सू.	४ चं.	५ सू.	४ चं.
अंश १५–३०	४ चं.	५ सू.	४ चं.	५ सू.	४ चं.	५ सू.	४ चं.	५ सू.	४ चं.	५ सू.	४ चं.	५ सू.

सप्तमांश चक्रम्

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
अं.क.वि. ४:१७:८	१ मं.	८ मं.	३ बु.	१० श.	५ सू.	१२ बृ.	७ शु.	२ शु.	९ बृ.	४ चं.	११ श.	६ बु.
८:३४:१७	२ शु.	९ बृ.	४ चं.	११ श.	६ बु.	१ मं.	८ मं.	३ बु.	१० श.	५ सू.	१२ बृ.	७ शु.
१२:५१:२५	३ बु.	१० श.	५ सू.	१२ बृ.	७ शु.	२ शु.	९ बृ.	४ चं.	११ श.	६ बु.	१ मं.	८ मं.
१७:८:३४	४ चं.	११ श.	६ बु.	१ मं.	८ मं.	३ बु.	१० श.	५ सू.	१२ बृ.	७ शु.	२ शु.	९ बृ.
२१:२५:४२	५ सू.	१२ बृ.	७ शु.	२ शु.	९ बृ.	४ चं.	११ श.	६ बु.	१ मं.	८ मं.	३ बु.	१० श.
२५:४२:५१	६ बु.	१ मं.	८ मं.	३ बु.	१० श.	५ सू.	१२ बृ.	७ शु.	२ शु.	९ बृ.	४ चं.	११ श.
३०:००	७ शु.	२ शु.	९ बृ.	४ चं.	११ श.	६ बु.	१ मं.	८ मं.	३ बु.	१० श.	५ सू.	१२ बृ.

नवमांशचक्रम्

अंशः	३:२०	६:४०	१०	१३:२०	१६:४०	२०	२३:२०	२६:४०	३०
मेष, सिंह,धनु	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ चं.	५ सू.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ गु.
वृषभ, कन्या,मकर	१० श.	११ श.	१२ गु.	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ चं.	५ सू.	६ गु.
मिथुन, तुला,कुम्भ	७ शु.	८ मं.	९ गु.	१० श.	११ श.	१२ गु.	१ मं.	२ शु.	३ बु.
कर्क, वृश्चिक,मीन	४ चं.	५ सू.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ गु.	१० श.	११ श.	१२ गु.

आत्मकारकग्रहों का विवेचन –

महर्षि जैमिनी के अनुसार – सूर्यादि सात ग्रहों में सबसे अधिक अंशकलाविकला वाला ग्रह आत्मकारक होता है ।उससे न्यून अंश का अमात्यकारक; इसी क्रम से भातृकारक, मातृकारक, पुत्रकारक, जातिकारक तथा स्त्रीकारक होते है।अर्थात् सबसे कम अंशकलाविकला वाला ग्रह स्त्रीकारक होता है। कुछ आचार्यों ने मातृकारक को ही पितृकारक भी माना; अन्य ने राहु सहित ८ ग्रह मानते हुए मातृ के बाद पितृकारक को माना ॥

द्रेष्काण चक्रम्

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
अंश १०	१ मं.	२ शु	३ बु	४ चं.	५ सू.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ गु.	१० श.	११ श.	१२ गु.
अंश २०	५ सू.	६ बु	७ शु	८ मं.	९ गु.	१० श.	११ श.	१२ गु.	१ मं	२ शु	३ बु	४ चं.
अंश ३०	९ गु.	१० श.	११ श.	१२ गु.	१ मं.	२ शु	३ बु	४ चं.	५ सू.	६ बु	७ शु	८ मं

द्वादशांशचक्रम

अं.–क.	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
२–३०	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ चं.	५ सू.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ बृ.	१० श.	११ श.	१२ वृ
५–०	२ शु.	३ बु.	४ चं.	५ सू.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ बृ.	१० श.	११ श.	१२ वृ	१ मं.
७–३०	३ बु.	४ चं.	५ सू.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ वृ.	१० श.	११ श.	१२ वृ	१ मं.	२ शु.
१०–०	४ चं.	५ सू.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ बृ.	१० श.	११ श.	१२ बृ.	१ मं.	२ शु.	३ बु
१२–३०	५ सू.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ वृ.	१० श.	११ श.	१२ वृ	१ मं.	२ शु.	३ बु	४ चं.
१५–०	६ बु	७ शु.	८ मं.	९ वृ.	१० श.	११ श.	१२ वृ	१ मं.	२ शु.	३ बु	४ चं.	५ सू.
१७–३०	७ शु.	८ मं.	९ वृ.	१० श.	११ श.	१२ वृ	१ मं.	२ शु.	३ बु	४ चं.	५ सू.	६ बु.
२०–०	८ मं.	९ वृ.	१० श.	११ श.	१२ वृ	१ मं.	२ शु.	३ बु	४ चं.	५ सू.	६ बु.	७ शु.
२२–३०	९ वृ.	१० श.	११ श.	१२ वृ	१ मं.	२ शु.	३ बु	४ चं.	५ सू.	६ बु.	७ शु.	८ मं.
२५–०	१० श.	११ श.	१२ वृ	१ मं.	२ शु.	३ बु	४ चं.	५ सू.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ वृ.
२७–३०	११ श.	१२ वृ	१ मं.	२ शु.	३ बु	४ चं.	५ सू.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ वृ.	१० श.
३०–०	१२ वृ	१ मं.	२ शु.	३ बु	४ चं.	५ सू.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ वृ.	१० श.	११ श.

त्रिशांश चक्रम

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
अंश	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
स्वामी	मं.	शु.	मं.	शु.	मं.	शु.	मं.	शु.	मं.	शु.	मं.	शु.
अंश	५	७	५	७	५	७	५	७	५	७	५	७
स्वामी	श.	बु.	श.	बु.	श.	बु.	श.	बु.	श.	बु.	श.	बु.
अंश	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८
स्वामी	गु.	गु.	गु.	गु.	गु.	गु.	गु.	गु.	गु.	गु.	गु.	गु.
अंश	७	५	७	५	७	५	७	५	७	५	७	५
स्वामी	बु.	श.	बु.	श.	बु.	श.	बु.	श.	बु.	श.	बु.	श.
अंश	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
स्वामी	शु.	मं.	शु.	मं.	शु.	मं.	शु.	मं.	शु.	मं.	शु.	मं.

जन्मराशि

जन्मलग्नादरिष्टवर्षाणि

जन्मलग्न	वर्षाणि					आयु
मेष	४	११	१६	४४	५८	१००
वृष	१	२८	३३	४४	६१	९०
मिथुन	४	१०	१४	३८	५८	८६
कर्क	५	२५	४०	४८	६२	१००
सिंह	५	१३	२८	३६	४८	६२
कन्या	४	१६	२३	३६	४५	१००
तुला	१५	३१	३५	६२	६४	७५
वृश्चिक	११	२१	३८	५२	६२	१००
धनु	२	१०	१८	३१	४२	६८/८१
मकर	५	१३	३६	५७	६२	९५
कुम्भ	२	२८	३३	४८	६४	९०
मीन	१	८	१३	३६	४८	८३

सूर्यादि ग्रहों से विचारणीय विषय

सूर्य = पिता, आत्मा, प्रताप, आरोग्यता, आसक्ति व लक्ष्मी ।
चन्द्रमा = मन,बुद्धि,राजा की प्रसन्न्ता, माता और धन ।
मंगल = पराक्रम, रोग, गुण, भाई, भूमि, शत्रु और जाति ।
बुध = विद्या, बन्धु, विवेक, मामा, मित्र और वाणी आदि ।
बृहस्पति = बुद्धि, शरीरपुष्टि, पुत्र और ज्ञान ।
शुक्र से = स्त्री, वाहन, भूषण, कामदेव, व्यापार ।
शनि = आयु, जीवन, मृत्युकारण, विपत्ति, भृत्य ।
राहु = पितामह (पिता का पिता) आदि का विचार होता है।
केतु = मातामह (नाना) आदि का विचार होता है ।

अनुष्ठान प्रारम्भ चक्र –सूर्य नक्षत्र से वर्तमान नक्षत्र तक गणना करें –

नक्षत्र	नक्षत्र फल
१ से ३	हानि
४ से ६	सिद्धि
७ से ९	मृत्यु
१० से १३	शत्रु
१४ से १७	कामना पूर्ति
१८ से २०	क्षति
२१ से २३	अभिष्ट सिद्धि
२४ से २७	धनलाभ

ग्रह अरिष्ट निवारणार्थ रत्न धारण विधि

ग्रह	रत्न एवं विकल्प	उपरत्न	लग्न के लिए शुभ	दशान्तर्दशा में धारण लग्न	धातु	अंगुली	रत्ती	दिन	नक्षत्र	समय	फल ग्रहजन्य अरिष्ट एवं रोगों में लाभ
सूर्य Sun	माणिक्य Ruby अकौनमूल	लालड़ी,लालतामड़ा, लालहकीक	१,५,८,९	२,४,१२ लग्न में सूर्य शुभ भाव गत होने पर	स्वर्ण, ताम्बा	दाहिने हाथ की तर्जनी, अनामिका	३,५	रवि· सोम· गुरु·	कृ·,उ·फा·, रविपुष्य·	शुक्लपक्ष, सूर्योदयकाल या सूर्य की होरा में।	सूर्य के अरिष्ट निवारण एवं कुष्ठरोग, हृदयरोग,सिरदर्द,रक्तचाप,नेत्रदोष, रक्तविकार आदि रोगों में लाभ ।
चन्द्रमा Moon	मोती पलाश Pearl	संखमूगा,दूधिया, हकीक,सीप	१,४,८,१२	३,५,६,७	चाँदी	अनामिका	२,४,६,११	सोम	रो·,ह·,श्र·	सायकाल चन्द्र दर्शन के बाद या चन्द्र की होरामें	चन्द्रमाजन्यअरिष्ट,मानसिकरोग,मूच्छा, मिर्गी,उन्माद,दामा,श्वांस,कैंसर आदि।
मंगल Mars	मूँगा खैर Coral	गारनेट,लाह्की, संगसितारा,लालारत्न	१,४,५,९,८	३,१०,११,१२	स्वर्ण, ताम्बा	अनामिका, तर्जनी	६,८,१०,१२	मङ्गल	मृ·चि·धनि·	सूर्योदय के १ घण्टे बाद या मंगल की होरा में।	रक्त,हृदय रोग,वायु,कफ,पित्तादि, उदर विकार, भूतप्रेत बाधा आदि।
बुध Mercury	पन्ना चिड़चिड़ी Emerald	फिरोजा,हाथीदांत, मरगज,ओनेक्स	३,६,७	२,५,८,९,१०,११,१२	स्वर्ण या कांसा	कनिष्ठा	३,५,७	बुध	अश्ले·ज्ये· पू·फा·,पु·रे	सूर्योदय से दो घण्टे बाद या बुध की होरा में।	त्वचा विकार,पथरी,बहुमूत्र,दमा,गुदो रोग,पाण्डु या मानसिक रोग में लाभ।
वृहस्पत्ति Jupiter	पुखराज(Topaz) पीपल	पीला मोती,सुनैला पीला जिरकान	१,४,९,१२	२,३,५,६,११	स्वर्ण	तर्जनी	५,७	गुरू	पुन·पु·वि· पू·भा	सूर्यास्त के १ घण्टे पूर्व या गुरू की होरा में।	मधुमेह,लीवर,पीलिया,प्रेत बाधा।
शुक्र Venus	हीरा Diamond गूलर	सफेद हकीक, स्फटिक,ओपल, सफेद पुखराज	२,३,७,१०,११	४,५,९,६	प्लेटीनम	मध्यमा या कनिष्ठा	३,५	शुक्र	भ·पु· पू·फा· पू·षा	प्रातःकाल या शुक्र की होरा में।	वीर्यविकार,दौबल्य,नपुंसकता,वायु प्रकोप,प्रमेह,श्वेदप्रदर,हृदय रोग, मानसिक कमजोरी आदि।
शनि Saturn	नीलम Sapphire शमी	नीला जिरकान,नीली कटैला,नीला तामड़ा, जमुनिया	२,६,७,१०,११	१,३,१२	पचधातु या लोह	मध्यमा	५,७,९,१२	शनि	पु·स्वा·धनि· चि·उ·भा	सूर्यास्त से २ घण्टे पूर्व या शनि की होरा में।	दमा,क्षय,ग्रन्थीय,अजीर्ण,हृदय रोग, कुष्ठ रोग आदि।
राहु Ascend Node	गोमेद Hessonite दूब	गोमेद रग का हकीक	राहु कुण्डली में केन्द्र,त्रिकोण एवं ३,६,११ भावगत होने पर दशा अन्तर्दशा में धारण करें		अष्टधातु या चाँदी	मध्यमा	७,९	शनि	स्वा·शत आर्द्रा· रवि–पुष्य योग	सूर्यास्त से २ घण्टे पूर्व या शनि की होरा में।	लकवा,त्वचा रोग,मस्तिष्क दुर्बलता,वातजन्य रोग आदि।
केतु Descend Node	लहसुनिया Cats Eyeवैदूर्य, कुश	केतु कुण्डली में केन्द्र,त्रिकोण एवं ३,६,११ भावगत होने पर दशाअन्तर्दशा में धारण करें			पञ्चधातु या चाँदी	मध्यमा	७,९	शनि बुध	अश्वि·म· रविपुष्ययोग	अर्द्धरात्रि के समय या शनि,बुध की होरा में।	वायु विकार,प्रमेह,हृदयरोग,श्वेदप्रदर, मानसिक दुर्बलता,आँत की विमारी ।

नोटः ग्रह शुभ भावगत होने पर दशान्तदेशा कोष्ठ में वर्णित लग्न राशि का रत्न धारण करें जैसे–सूर्य शुभ भावगत हो तो ४,२,१२ लग्न वाले जातक को माणिक्य धारण करना चाहिए। इसी तरह अन्य ग्रहों का भी समझना चाहिए । विशेष रोगादि की परिस्थिति में कष्ट निवारण हेतु दैवज्ञों से परामर्श कर रत्न धारण करना चाहिए।

यन्त्र–मन्त्रादि

लाटरी जीतने का यन्त्र– अनार की कलम से रक्तचदन द्वारा भोजपत्र पर लिखना चाहिए । नेष्ट धातु के यन्त्र में रखकर गुगुल कीधुनी देकर दक्षिण भुजा पर धरण करना चाहिए।लिखने का कम कमिक ढग पर है।चक्रलिखतेसमय उठने न पाये ।

६०	६७	२	७
६	३	६४	६३
६६	६३	८	१
४	५	६२	६५

२४२	२४१	२४०	२३९
२३८	२३७	२३६	२३५
२३४	२३३	२३२	२३१
श्रीं	ह्रीं	सं	छिं

गर्भ रक्षा यन्त्र – अनार की लेखनी से अष्टगन्ध द्वारा भोजपत्र पर लिखें ताबे के यन्त्र में रविवार को धुपबत्ती दिखाकर कमर में बाध लें। उसी दिन रविवार को पुष्य नक्षत्र में लाई हुई काले धतुरे की जड़ को कुंआरी छोटी कन्या के हाथ द्वारा काले सूत से कमर में बंधवाने से गर्भपात नहीं होता ।

सर्वसिद्धि के लिए – इस यन्त्र को ग्रहण या गुरुपूर्णिमा के दिन अष्ट गन्ध से लिख कर पास रखें या गले में धारण करने से सभी कार्यों में सफलता प्राप्ति एवं समस्त कार्य निर्विघ्न होते हैं।

७	१२	१	१४
२	१३	८	११
१६	३	१०	०५

रोगनाश के लिए–यदि किसी का रोग दूर न होता हो तो उसको चाहिए कि इस यन्त्र को शुक्ल पक्ष में रविवार को अष्ट गन्ध से लिखकर चांदी में रखकर गले में डाल लेवें ।

६	१	८
७	५	३
२	९	४

२४९	२५४	२५७	२४२
२५६	२४३	२४८	२५३
२४४	२५९	२४०	२४७
२४१	२४६	२४५	२५५

परदेश गये को वापस बुलाने के लिए – जब किसी का लड़का या नौकर या सबन्धी घर से चला जाये और उसका पता न लगे तो नक्शा चर्खे से बांध कर चर्खे को उलटा चलाएं चर्खे का सुत कन्या के हाथ का हो ।

सन्तान के लिए – यदि किसी को सन्तान न होती हो या लड़कियां अधिक होती हों या संतान होकर मरजाती हो तो इस यन्त्र को पूर्णमासी के दिन अष्ट गन्ध से लिखकर पास रखें ।

८०५	८१८	८१५	८१२
८१६	८११	८०६	८१७
८१०	८१३	८२०	८०७
८१९	८०८	८०९	८१४

विद्या प्राप्ति के लिए– यदि किसी की स्मरण शक्ति निर्बल हो या विद्याध्ययन में मन न लगता हो तो उसको चाहिए कि इस यन्त्र को गुरुवार के दिन लिखकर बालक के गले में डाल देवें, यन्त्र को अष्ट गन्ध से लिखें ।

१२	५	१०
७	९	११
८	१३	६

व्यापार वृद्धि यन्त्रम् – इस यन्त्र को भोजपत्र पर केसर की स्याही एवं अनार की कलम से दीपावली को रात्रि में लिखकर सविधि पूजन कर "ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः" मन्त्र का ११०० सौ जप करें।तदनन्तर यन्त्र को दुकान में रखकर प्रतिदिन पूजन करें।

१६	९	४	५
३	६	१५	१०
१३	१२	१	८
२	७	१४	११

ग	छ	ज	च
छ	न	ज	ठ
ठ	ज	ढ	च
न	छ	ज	ट

दुःस्वप्न नाशक यन्त्रम् – शुभ मुहूत्त में भोजपत्र पर अनार की कलम अष्टगन्ध की स्याही से लिखकर सविधि पूजन कर गले में धारण से दुःस्वप्न दोष दूर होता है।

कामना पूरक यन्त्रम् – इस मन्त्र को लाल चन्दन से बिल्व पत्र पर १०८ बार लिखकर श्रावण मास के सोमवार को शिव लिङ्ग पर चढ़ाने से इच्छा शक्ति एवं मनो कामना पूर्ति होती है।

व	व	क्व	व
प	प	प	प
द	द	द	द
ल	ल	ल	ल

अथ गर्भिणीप्रश्नः – सूर्यभौमगुरुस्पर्शे पुत्रोभवति निश्चितम्।चन्द्रगुरुबुधस्पर्शे कन्या तत्र प्रजायते ।। शनिस्पर्शे गर्भपातौ राहुस्पर्शे सुतासुतौ केतुस्पर्शे भवेत्क्लेशो विचार्येत्व वदेत्सुधी ।

गर्भप्रश्नचक्रम्

बुध	शुक्र	चन्द्र
गुरु	सूर्य	मगल
राहु	शनि	केतु

८	१	६
३	५	७
४	९	२

एकादशीयन्त्रप्रश्न – नवैकपंच त्वरितं वदन्तित्यष्टौ द्वितीये न च कार्यसिद्धिः । रसश्च वेदो घटिकात्रयं च सप्तत्रयं ते कथितं च वार्ता ।

सौभाग्य वृद्धि यन्त्रम् – इस यन्त्र को गुरू पुष्य योग में अष्टगन्ध की स्याही एवं अनार के कलम से भोजपत्र पर लिखकर तथा सविधि त्रिगुणात्मिका दुर्गा की पूजन कर स्त्री धारण करे तो सौभाग्य की वृद्धि होती है।

५	६	३	६
४	४	७	५
६	६	३	५
५	४	७	४

नवग्रहपीडानिवारकमन्त्र धारणम्

८ ॐ ह्रीं राहवे नमः	१ ॐ ह्रीं सूर्याय नमः	७ ॐ ह्रीं शुक्राय नमः
३ ॐ ह्रीं भौमाय नमः	५ ॐ ह्रीं गुरवे नमः	७ ॐ ह्रीं शनये नमः
४ ॐ ह्रीं बुधाय नमः	९ ॐ ह्रीं केतवे नमः	२ ॐ ह्रीं सों सोमाय नमः

एक साथ नवरत्नअंगूठी धारण विधि –

ईशान पन्ना	पूर्व हीरा	अग्नि मोती
उत्तर पुखराज	मध्य माणिक	दक्षिण मूंगा
वायव्य लहसुनिया	पश्चिम नीलम	नैर्ऋत्य गोमेद

वरप्राप्ति हेतु उपायः–

प्रथमविधि– स्वयं कन्या स्नान करके दीपक व धूप जलाकर गन्धाक्षत पुष्प से श्री माँ पार्वती की अर्चना कर वं पं क्लीं का १०८ वार जप करें तदन्तर अधोलिखित मन्त्र का प्रतिदिन प्रातः व सायं पाँच पाँच माला जप करें।यह प्रयोग ४५दिन का है। रजस्वला समय में पाँच दिनों तक बन्द रखें।मन्त्रः– ॐ क्लीं कात्यायनी महामाये महायोगिन्यधीश्वरी क्लीं ॐ दं पं नन्दगोप सुतं देवि पतिं मे कुरूते नमः पं दं अन्त में ७ कन्याओं एवं २ बटुक को खीर व बेसन के बने पदार्थों का भोजन करावें।

८	३	१०	पं ल ह्रीं
९	७	५	ऐं क्लीं प
४	११	६	दं ल प

द्वितीय विधि– इस मन्त्र को कन्या प्रारम्भ कर मृगशिरा नक्षत्र में केला के पत्ते पर प्रतिदिन नौ वार लिखें।यह प्रयोग ७२ दिन का है।५ दिनराजस्वला काल के समय में बन्द रखें।अन्तमें ९ कन्या तथा ५ बटुक को दूध से बने पदार्थों का भोजन करावें एवं वस्त्र,श्रीफल,द्रव्यादि दक्षिणा में दें।लिखे मन्त्र को "ॐ क्लीं पं दं लं" मन्त्र का उच्चारण करते हुए देवी पार्वती के चरणों में अर्पित करें।

वशीकरणमन्त्र –

ॐ नमो महायक्षिणी मम पतिं वश्यं आनय कुरू कुरू स्वाहा इस मन्त्र को गुरू पुष्य योग में या शुभ मुहूर्त्त में ११ माला जप ११ दिन तक करें।तदनन्तर कपूर,चन्दन और तुलसीदल को गो दुध में पीसकर मस्तक पर तिलक लगाने से पति वश में हो जाता है।दूसरी विधि– मन्त्र – भवेत माता भवेत् पिता भवेत् वीर बेताल उठ।अमुक (नाम) की ऐसी लगनी लागे,जैसी कि किसी की न लागी होय।। भज भज देखे मेरा मुख।आवे तो आवे नहीं तो वीर बेताल की चोट खावे।नही तो घर से बाहर आवे।

विधि – यह मन्त्र ग्रहण या दीपावली की रात ११ माला जपकर सिद्ध कर लें। तदनन्तर इस मन्त्र का प्रयोग ११ दिन का है।इसे प्रतिदिन १२ माला जप करने स्त्री या पुरूष वश में हो जाते हैं।

शत्रु बाधा निवारणार्थ मन्त्र एवं विधि– "एक ठों सरसों सोल सोला राई मोरो पटवल कोरो जाई।खाय खाय पड़े भार जे,करे ते मेरे उल्ट विद्या ताही परे" शब्द सांचा पिण्ड काचा,तो हनुमान का मंत्र सांचा पिण्ड काचा,तो हनुमान का मंत्र साचा,फुरो मंत्र ईश्वर वाचा।यह सावर मन्त्र है जैसा मन्त्र लिखा उसी तरह मंत्र पढ़े।किसी तरह के मन्त्र में हेर फेर करने पर अरिष्ट होने की सम्भावना रहती है।इसे ग्रहण दीपावली या विजयादशमी के दिन १००८ वार जप कर सिद्ध करने के उपरान्त प्रयवेग करें।यह गुरू पुष्य के योग दिन से प्रारम्भ कर नौ दिन तक १००८ वार जप करें।अन्त में राई नमक तथा शत्रु का पता के साथ मंत्र से अभिमंत्रित कर १०८ वार अग्नि में डालें।इससे शत्रुकृत बाधा दुर हो जायेगा।

पशुरोग शमन का मन्त्र –

अर्जुनः फाल्गुनो जिष्णुः किरीटी श्वेतवाहनः। वीभत्सुर्विजयी पार्थः सव्यसाची धनंजयः।।कपिध्वजो गुडाकेशो गांडीवी कृष्णसारथिः । एतान्ययुर्ननामानि गवां कोष्ठें च यो लिखेत् ।।न तत्र पशुरोगादि शुभं शीघ्रं प्रजायते ।।इस मंत्र को गुरुपुष्य में, हस्तार्क में या शुभमुहूर्त में लिखकर गोशाला में रखने से पशु रोग की शांति होती है ।

–: सिद्ध्यादि योग चक्रम् :–

दिन	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
सिद्धयोगाः	३;८;१३	१;६;११	३;८;१३	२;७;१२	५;१०;१५	१;६;११	४;९;१४
अमृतयोगाः	५;१०;१५	५;१०;१५	२;७;१२	१;६;११	३;८;१३	४;९;१४	१;६;११
सर्वार्थसिद्धयोगाः	अश्वि·पु·;ह·	रो·;मृ·;पु·,अनु·	अश्वि·	रो·;मृ·; ह·	अश्वि·,पुन·,पु·;अनु·	अश्वि·पुन·अनु·	रो·;स्वा·
मृत्युयोगाः	१;६;११	२;७;१२	१;६;११	३;८;१३	४;९;१४	२;७;१२	५;१०;१
राज्यप्रदयोग	xx	xx	४;९;१४	xx	xx	xx	४;९;१४
मधयमयोगः	१२	११	१०	३	६	२	७

–: अर्धप्रहरबोधक चक्रम् :–

दिन	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
दिने	४,५	२,७	२,६	३,५	७,८	३,४	१,६,८
रात्रौ	४,६	४,७	०,२	५,७	५,८	०,३	१,६,८

–: तारा चक्रम् :–

तारा	जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेमः	प्रत्यरिः	साधाकः	वधाः	मित्रम्	अतिमित्रम्
नक्षत्राणि	१,१०,१९	२,११,२०	३,१२,२१	४,१३,२२	५,१४,२३	६,१५,२४	७,१६,२५	८,१७,२६	९,१८,२७
फलानि	मध्यम्	शुभम्	अशुभम्	शुभम्	अशुभम्	शुभम्	अशुभम्	शुभम्	शुभम्
दनानि	शाकम्	००	गुडम्	००	लवणम्	००	तिलाः	००	००

जन्म नाम ग्राम नक्षत्रद्वाऽभीष्ट दिनावधी गणयित्वा नवभिर्हरेत् । शेषं तारा स्यात्। तत्र २,४,६,८,९ ताराः शुभदाः । १, तारा मध्यमा । ३,७ अशुभदा । विशेषः-पञ्चमतारा आवृत्तिवशेन धनदा १ सुखदा २,मृत्युदा च भवेत्तेन प्रत्यरितारायाः केवलं तृतीयावृत्तेस्तारा अशुभा,तत्र दानं कार्यम् ।

अंगो पर छिपकली गिरने का फल (पल्लीपतन)

:स्त्री पुरूष दोनों के पेट, नाभि,छाती के सिवा उसके ऊपर मस्तक पर्यन्त किसी भाग पर छिपकली गिरे तो दोनो को शुभ होता है। स्त्री के वायें अंगो पर छिपकली का गिरना शुभ होता है। इसी प्रकार गिरगिट के अंगो पर चढ़ने का फल होता है। छिपकली तथा गिरगिट के अंग से स्पर्श होने पर पहने हुए कपड़े सहित स्नान करना चाहिये। मृत्युयोग जन्मनक्षत्र भद्रा, व्यतिपात, वैधृति एवं अष्टम चन्द्र के समय छिपकली का गिरना विशेष अशुभ होता है। १,२,३,५,६,१०,११,१२,१३ तिथियों में सोम,बुध,गुरू,शुक्र वारों को अ·रो·पुन·पु·उफा·हस्त·चित्रा·स्वा·अनु·मू·ध·शत· और रेवती नक्षत्रों में छिपकली गिरना और गिरगिट का चढ़ना शुभ होता है।दोष शान्ति के लिए मृत्युञ्जय मंत्र का जप, होम,तिल,स्वर्णदान या घी का छायापात्र दान करना चाहिये।

स्थान	मस्तक	केशान्त	ललाट	दा·कान	वा·कान	नाक	मुख	नासाग्र	कपोल	ठोढ़ी	गर्दन	भौंह	भौंहमध्य
फल	राज्यप्रा·	अतिकष्ट	वंधु	आयुवृद्धि	लाभ	सौभाग्य	सुभोजन	व्यविग्रह	शुभ	हनुभय	शुभ	धनहानि	धनलाभ
स्थान	नेत्र	कण्ठ	गर्दनपिछे	उत्तरोष्ठ	अधरोष्ठ	कन्धा	दायींभुजा	वांयीभुजा	हथेली	करतलपृष्ठ	द·मणिव·	वा·मणिव·	गुल्फ
फल	धनप्रा·	शत्रुनाश	बुद्धिनाश	धननाश	लाभ	विजय	नृपतुल्यता	राजभय	वस्त्रलाभ	व्यय	मनस्ताप	कीर्तिनाश	धनलाभ
स्थान	हृदय	स्तन	उदर	कटिभाग	नाभि	जांघ	नितम्ब	घुटना	दांयापैर	बांयापैर	पदमध्य	पदतल	पादागुलि
फल	धनलाभ	दुर्भाग्य	लाभ	अश्वलाभ वाहनलाभ	इष्टसिद्धि	सुखप्रा·	अर्थवृद्धि	प्रियागम	भ्रमण	क्लेश	स्त्रीनाश	लाभ	शुभ

छींक फल

– छिक्का प्रायः सब दिशाओं की नेष्ट होती है।गौ की छींक मृत्यु सूचक होती है।मदिरा के योग से अथवा "छौंक सूंघनी छलकर लीन्हीं।पीनस,सर्दी,घास फल हीनीं।। छींक पीठ की कुशल उचारे।बांई कारज सबै संवारे।। सम्मुख छींक लड़ाई भाषै,छींक दाहिनी द्रव्य विनाशे ।। ऊँची छींक कहे जयकारी,नीची छींक हेये भयकारी। अपनी छींक महादुःखदायी,ऐसी छींक विचारोभाई ।। कन्या, विधवा, मालिन, धोबिन, रजस्वला, वेश्या, चर्मकारी की छींक विशेष अशुभप्रद होती है।भोजनान्त में छींक होय तो दूसरे दिन प्रिय भोजन प्राप्ति होती है । शयन, भोजन, ओषधि सेवन,अध्ययन तथा दान के समय छींक शुभ होती है और सन्ध्यावन्दन जपादि के समय में छींक शुभाशुभ नहीं होती।

जन्मलग्न कालिक ग्रहों का भावफल (स्त्रियों के लिये)

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	कुज	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रा·के·
१ तनु	विधवा	अल्पायु	विधवा	पतिव्रता	पतिव्रता	पतिव्रता	दरिद्रा	पुत्रनाश
२ धन	दुःख	पुत्रवती	दुःखिता	सौभाग्यवती	सौभाग्यवती	सौभाग्यवती	दुःख	दरिद्रा
३ सहज	पुत्रवती	धनाढ्या	पुत्रिणी	धनवती	पुत्रवती	पुत्रवती	लक्ष्मीवती	धनवती
४ सुहृद्	दरिद्रा	दुर्भगा	अल्पसन्तति	सुखी	सुखी	सुखी	अल्पदुग्धा	पुत्रनाश
५ सुत	सन्ताननाश	कन्याधिक	पुत्रमरण	उत्तमफल	उत्तमसुख	उत्तमसुखी	रोगिणी	मरण
६ रिपु	धनवती	विधवा	धनयुक्त	क्लेशप्राप्ति	धनवती	दरिद्रा	धनवती	धनाढय
७ पति	रोगिणी	प्रवासिनी	स्वामीनाश	क्षय	भयबन्धन	पतिप्रिया	वैधव्य	धनहानि
८ मृत्यु	विधवा	अतिकष्ट	धनवती	स्वजनवियोग	स्वजनवियोग	मरण	बहुतसन्तान	मरणान्त
९ धर्म	धर्मनिष्ठा	पुत्रवती	कर्मकारिणी	उत्तमभोग	धर्मवृद्धि	धर्मवृद्धि	बन्ध्या	बन्ध्या
१०कर्म	परिश्रमी	व्यभिचारिणी	मृत्यु	धनवती	पतिधनी	पतिधनी	पापिनी	विधवा
११ आय	पुत्रवती	लक्ष्मीवती	पुत्रवती	सुखी	आयुष्मती	पुत्रवती	धनवती	सौभाग्यवती
१२ व्यय	अतिव्ययी	दिनान्धा	वन्ध्या	सुपुत्रवती	सुशीला	पतिव्रता	अतिव्ययी	व्यभिचारिणी

जन्मलग्न कालिक ग्रहों का भावफल (पुरुषों के लिये)

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि,राहु,केतु
१ तनु	शरीरपीड़ा	सुखी	रक्तविकार	सुखी	कान्तिमान्	सुखी	दुःख
२ धन	क्रोधी/धनहानि	अतिलाभ	दुःख	अतिलाभ	धनलाभ	लाभ	धन का नाश
३ सहज	नीरोगी	निर्दय	क्रोधी/ सुखी	धनवृद्धि	सुबुद्धि	कृश,कामी	स्त्रियों का प्रिय
४ सुहृद्	अतिकष्ट	सुखभोग	कष्ट	सुखभोग	सुखी	भोग	अति पीड़ा
५ सुत	दुःख	अधिकपुत्र	सन्तानहानि	अल्पपुत्र	पुत्रवान्	पुत्रयुक्त	सन्तान हानि
६ शत्रु	शत्रुकानाश	रोग	शत्रुनाश	बहुरोग	विकलता	बुद्धिहीन	शत्रु
७ स्त्री	कुस्त्रीप्राप्ति	सुन्दर स्त्री	स्त्रीनाश	सुन्दर स्त्री	सुखी	चतुर	रोगी निर्धन
८ मृत्यु	रोगी	रोगी	दुष्टबुद्धि	अनिष्ट	पीड़ा	रोगी	क्लेशित
९ धर्म	अधर्मी	धर्मात्मा	अधर्मी	धर्मरत	भाग्योदय	धर्मात्मा	दुष्ट बुद्धि
१० कर्म	सुखी	यश	उपकारी	कीर्तिलाभ	सत्कर्म	धनवान्	सम्पत्तिमान्
११ आय	राजमित्र	धनलाभ	लाभ	ज्ञानी	धनवृद्धि	गुणी	कीर्तिमान्
१२ व्यय	दुःस्वभाव	नेत्रपीड़ा	पापी	निर्धन	दुर्बल	दुखीकामी	आलसी

शत्रु विजयी बगलामुखी मन्त्र

अन्यायपूर्वक शत्रु तंग कर रहा हो,राजकीय कोप हो अथवा गुप्त शत्रु सता रहा हो तो इन संकटो से मुक्ति हेतु बगला महाविद्या की उपासना गुरू के सान्निध्य में रहकर सतर्कतापूर्वक इन्द्रिय निग्रह के साथ पीत वस्त्र धारण कर पुरश्चरण करना चाहिए। मन्त्र है–'ओं ह्रीं वगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशाय ह्रीं ओं स्वाहा।' विधान–पीताम्बर धरो भूत्वापूर्वाशामिमुखः स्थितः।लक्षमेकं जपेन्मत्रं हरिद्रागन्धि मालया।।ब्रह्मचर्य रतो नित्यं प्रयतो ध्यान तत्परः।।प्रियङ्गुकुसुमेनाऽपि पीत पुष्पैश्च होमयेत्।ध्यान–सौवर्णा सन संस्थितां त्रिनयनां पीतांशु कोल्लासिनीं।हेमाभाङ्ग रुचिं शशाङ्कमुकुटां सच्चम्पक स्रग्युताम्।हस्तैर्मुद्गर पाश वज्ररसनाः संबिभ्रतीं भूषणैः व्याप्ताङ्गीं वगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनी चिन्तयेत्।।

सभी रोगों के झाड़ने का मन्त्र –

ॐ ऐं श्रीं ह्रां ह्रीं हूं स्फ्रें ख्फ्रें ह्सौं हस्फ्रें ह्स्त्रौं ॐ नमो हनुमते मम परस्य च क्षय–कुष्ठ–गण्डमाला–स्फोटकं क्षतज्वर–मैकाहिकं द्वयाहिकं त्र्याहिकं चातुर्थिकं सन्ततज्वरं सान्निपातिक–ज्वरं भूतज्वरं मन्त्रज्वरं–शूल–भगन्दर–मूत्रकृच्छ्र–कपालशूल–कर्णशूलऽक्षिशूलोदरशूल–हस्तशूल–पादशूलादीन् सर्वव्याधीन् क्षणेन भिन्धि भिन्धि छिन्दि छिन्दि नाशय नाशय निकृन्तय निकृन्तय छेदय छेदय भेदय भेदय महावीर हनुमन् ह्रां ह्रां घे घे ह्रीं ह्रीं हूं हूं फट् स्वाहा।

भूत–प्रेत आदि झाड़ने का मन्त्र –

ॐ ऐं श्रीं ह्रां ह्रीं हूं स्फ्रें ख्फ्रें ह्सौं हस्फ्रें ह्स्त्रौं ॐ नमो हनुमते महाबल पराक्रम मम परस्य च भूत–प्रेत–पिशाच–शाकिनी– डाकिनी–पूतना–मारी–महामारी–कृत्या–यक्ष–राक्षस–भैरव–वेताल–ग्रह – ब्रह्मग्रह–ब्रह्मराक्षसादिकजात –क्रूरबाधान् क्षणेन हन हन जृम्भय जृम्भय निरासय निरासय वारय वारय बन्धय बन्धय नुद नुद सूद सूद धनु धनु मोचय मोचय मामेनं च रक्ष रक्ष महामाहेश्वर रूद्रावतार हाहाहा हूं हूं हूं हुं हुं हुं घे घे घे हूं फट् स्वाहा।

सभी प्रकार के भय एवं विष झाड़ने का मन्त्र–

ॐ ऐं श्रीं ह्रां ह्रीं हूं स्फ्रें ख्फ्रें ह्सौं हस्फ्रें.ह्स्त्रौं ॐ नमो हनुमते मम परस्य च महाभयानि सर्प–व्याघ्र–तस्कर–जलाग्नि–निष–जङ्गम–स्थावर–सहज–कृत्रिमोपविष–महासङ्ग्रामारण्य–वाद–विवाद–शस्त्राऽस्त्राग्न्यादिकानि संहर संहर विनाशय विनाशय दुःखं संत्रासय संत्रासय त्रोटय त्रोटय भंज भंज भंजय भंजय स्तम्भय स्तम्भय कुण्ठय कुण्ठय मोचय मोचय वानर–ऋक्ष–महावीर मामेनं च रक्ष रक्ष हाहाहा हूं हूं हूं घेघेघे हूं फट् स्वाहा।

स्वप्न विचार –

स्वप्न	कीचड़ मे फंसना	धनुष खींचना	कुत्ता देखना	कैंची देखंना	खाई देखना	लाठी देखना	चश्मा लगाना	रूई देखना
फल	कष्ट,व्यय	लाभप्रद यात्रा	उत्तममित्र प्राप्त	घर में कलह	धन एवं प्रसिद्धि	नामकरे	विद्वत। वढ़े	स्वस्थ होना
स्वप्न	दरवाजाबन्द देखना	दलदल देखना	सुपारी देखना	धुआँ देखना	रोटी खाना	प्रकाश देखना	सीढ़ी देखना	बड़ीदीवार देखना
फल	परेशानियाँ	व्यर्थ चिंता	रोग से मुक्त	हानि, विवाद	पदोन्नति, धनलाभ	उच्चकोटि का साधु	सुख सम्पति वढ़े	सम्मान मिले
स्वप्न	सुराही देखना	घर बनाना	घास का मैदान	घोड़ा देखना	मोती देखना	मुर्दे से बात करना	बाजार देखना	झरना देखना
फल	बुरा संग	प्रसिद्धि प्राप्त	धन एकत्र करना	संकट दूर होना	लड़की पैदा हो	मुराद पूरी हो	दरिद्रता दूर हो	दुःखदूर हो
स्वप्न	दीवाल में कील ठोकना	पत्थर देखना	तलवार देखना	सिंहासन देखना	चादर देखना	दिया जलते देखना	आकाश देखना	कुएँ का पानी देखना
फल	बुद्धि से लाभ	विपति,मित्र शत्रु बने	युद्ध में विजय	अत्यधिक सुख	बदनामी	आयुवृद्धि	ऐश्वर्यवृद्धि, पुत्रलाभ	विविध लाभ, विजय
स्वप्न	रत्न या नगीना देखना	धूप देखना	सूखा बाग देखना	नदी में तैरना	अपनी मृत्यु	वृक्ष पर चढ़ना	सर्प का काटना	पर्वत पर चढ़ना
फल	दुःख,भय,व्यय	पदोन्नति,लाभ	विपत्ति में पड़ना	शुभ	रोग मुक्ति	लाभ	पर्याप्त धन मिलना	लक्ष्य की प्राप्ति

मृत्यु सूचक स्वप्न–१.जो मनुष्य लाल,श्वेत वस्त्र अथवा विष्ठा मूत्र का वमन देखें,उसकी आयु १० माह समझनी चाहिए। २. यदि व्यक्ति स्त्री को काले अथवा लाल वस्त्र पहने हुए हंसते,अपनी दाहिनी ओर जाते हुए देखे तो उसकी मृत्यु निकट समझनी चाहिये।३. यदि व्यक्ति भयानक काले रंग के व्यक्ति को हथियार लिये वा पत्थर से मारता हुआ देखे तो उसकी भी मृत्यु सन्निकट समझें। ४. यदि व्यक्ति नग्न संन्यासी को नाचता,हंसता तथा क्रूर दृष्टि से अपनी ओर आता देखे तो समझना चाहिये की मृत्यु शीघ्र होगी। ५. काले वस्त्र पहने और लोहे का डंडा हाथ में लिए काला पुरुष सम्मुख खड़ा दिखे तो तीन महीने की आयु जाननी चाहिये। ६. जो व्यक्ति स्वप्न में काले रंग की स्त्री को अपने दोनों बांहे से पकड़े तो उसकी आयु छः महीने की होती है। ७. जो व्यक्ति स्वप्न में अपने शरीर को गन्ध,पुष्प आदि से विभूषित देखे तो उसकी आयु ८ माह की होती है। ८. यदि व्यक्ति राख के ढेर अथवा दीपक के ऊपर खड़े हुए देखे तो उसकी आयु आठ माह की होती है। ९. यदि व्यक्ति अपने मस्तक या शरीर पर सूखी लकड़ी अथवा तृण रखा हुआ स्वप्न में देखे तो अपनी आयु छः माह की समझनी चाहिए है।१०. श्रृंगाल, कुत्ता,शूकर,राक्षस,असुर,पिशाच,भूत-प्रेत,पतंग, कुरंग अथवा श्येन पक्षी में से किसी का दर्शन स्वप्न में करे या इन्हें खाते हुए देखे तो उसकी आयु एक वर्ष की होती है। ११. यदि व्यक्ति स्वप्न में अपने मुख का सभी दांत गिरा हुआ देखे तो अपनी आयु पूर्ण समझें। १२. स्वप्न में बन्दर के पीठ पर चढ़कर पूरब की यात्रा करे तो अपनी आयु पांच दिन का जानें। १३. यदि व्यक्ति स्वप्न में गधा या भैंस की पीठ पर चढ़कर दक्षिणदिशा की यात्रा करे तो अपनी मृत्यु सन्निकट समझे।

विवाह के समय कन्या के ऋतुमती होने पर विचार :- यज्ञपार्श्वः -विवाहे वितते यज्ञे होमकाले उपस्थिते। कन्यामृतुमती दृष्टवा कथं कुर्वीत याज्ञिकः।।स्नापयित्वा तु तां कन्यामर्चयित्वा यथाविधि। युंजानामाहुतिं हुत्वा ततस्तन्त्रं प्रवर्तयेत।।यज्ञपार्श्व ने बताया है कि कर्तव्य विवाह विधान यज्ञ व होम काल के समय ऋतुमती कन्या को देखकर याज्ञिक कैसे करते हैं।उस कन्या को स्नान कराकर यथोक्त विधि से पूजन करके तथा 'युजाने' को आहुति देकर विवाह कार्य करना चाहिये।निर्णयसिन्धौ-अलाभे सुमुहूर्तस्य रजोदोषे ह्युपस्थिते।श्रियं सम्पूज्य विधिवत्ततो मंगल माचरेत।।निर्णय सिन्धु में बताया है कि मंगल कार्यों में कन्या के पुष्पवती होने पर अच्छे मुहूर्त की प्राप्ति न हो तो लक्ष्मीजी की विधिवत पूजा कराने के पश्चात् मांगलिक कार्य कराना चाहिये।

रोगकष्टावली चक्र

नक्षत्रों में उत्पन्न रोग के कष्टप्रद दिन,परिहारार्थ दानवस्तु जपमन्त्र

नक्षत्र	कष्ट दिन	चरणानुसार कष्टदिन १	२	३	४	दान वस्तु	जप संख्या सहस्त्र	जपनीय मन्त्र
अश्वि·	९	९	११	१०	२०	स्वर्ण,घृत	५	अश्विनातेजसा·अथवा महामृत्युञ्जय मन्त्र·
भ·	११	०	८०	४०	११	घृत,शक्कर,छाया दान	१०	यमायत्त्वा मखायत्वा·
कृ·	९	९	११	१६	२८	सुवर्ण,गोदान	१०	अग्निमूर्धादिव·
रो·	७	७	९	१८	३०	सप्तधान्य,काली गौ दान	५	ब्रह्मजज्ञानं प्रथमम्·
मृग·	३०	९	५	७	१०	चावल,दही,गोदान	१०	इमं देवा असपत्नम्·
आर्द्रा	मृत्यु	०	१८	०	०	काला वृषभ,काला वस्त्र	१०	नमस्ते रूद्रमन्यव·
पुनु·	७	७	१४	२	२१	स्वर्ण,वस्त्र,कमल	१०	अदितिर्द्यौरदिति·
पुष्य	७	७	७	२०	२१	स्वर्ण,यव,पीला वस्त्र	१०	वृहस्पते अति·
श्ले·	मृत्यु	०	०	४१	०	काली गौ,छाया दान	१०	नमोस्तु सर्पेभ्यो·
मघा	२०	१५	७	१७	२०	वस्त्र,उड़द,तिल	१०	पितृभ्यः स्वधायिभ्यः·
पू·फा·	मृत्यु	०	१५	०	३०	स्विर्ण,यव,गो,उड़द	१०	भगप्रणेतर्भगसत्य·
उफा·	७	७	१४	७	६०	स्वर्ण,चाँदी,वस्त्र,अन्न,गौ	१०	देव्यावध्वर्यु आगतम्·
ह·	१५	१५	१७	१५	०	स्वर्ण,गो दान	५	बिभ्राड्बृहत्पिबतुः·
चि·	११	११	९	१९	१६	तैल,गुड़,वृषभ,छाया दान	१०	त्वष्टातुरीयो अद्भुतः·
स्वा·	मृत्यु	६०	१७	३०	०	स्वर्ण,लाल गौ,पकवान्न	१०	वायोयेते सहस्त्रिणोः·
वि·	१५	१५	०	४	१३	रक्त–पित्त वस्त्र,कृष्णवृषभ,छाया	१०	इन्द्राग्नीआगतम्·
अनु·	स्थिर	६०	१२	३६	३०	स्वर्ण, गौ, छाया दान	१०	नमोमित्रस्य वरुणस्य·
ज्ये·	मृत्यु	५९	९	६	४	सोना,तिल,नीलावस्त्र	५	त्रातरमिन्द्रमविता·
मूल	७	०	९	१५	६	गौ,वस्त्र,छाया दान	५	मातेव पुत्रं पृथिवी·
पू·षा·	मृत्यु	०	१५	२४	१०	सोना,वस्त्र,तिल,चावल,जलकुम्भ	५	आपाघपम किल्विष·
उ·षा·	३०	३०	२४	२६	१६	अन्न, वस्त्र, स्वर्ण	१०	विश्वदेवाःश्रृटणुतेमम्·
श्र·	११	६०	२४	६	९	यव, स्वर्ण, छाया दान	१०	विष्णोरराटमसि·
ध·	१५	१५	४	२०	२१	स्वर्ण,छत्र,गौ,घोड़ा,जूता	१०	वसोः पवित्रमसि·
श	११	०	४५	३	२	घट,तिल,स्वर्ण,अश्व,छायादान	१०	वरुणस्योत्तम्भनमसि
पू·भा·	मृत्यु	०	१२	२१	१९	स्वर्ण,चांदी,श्वेतवस्त्र,छाया दान	१०	उतनोहिर्बुध्न्यः
उ·भा·	०	१०	२	९	१५	चांदी,स्वर्ण,तिल,कालावस्त्र	१०	शिवोना मासि ।
रेवती	स्थिर	१८	१०	१९	२०	पीतल,चांदी	५	पूषन्तवव्रते ।

निर्देश– ①छायादान–कॉस्य कटोरी में घी डालकर रोगी उसमें अपना प्रतिबिम्ब देखे तथा उसे सदक्षिणा ब्राह्मण को दान दे।② गोदान– सवत्सा पयस्विनी गौ दान दें।③ रोगपीड़ा प्रतिकार – रोगोत्पादक नक्षत्राधिपति की स्वर्ण–प्रतिमा बना कर उसकी लिङ्गमन्त्र से सर्वोपचारपूर्वक पूजा करें। तब वह प्रतिमा योग्य ब्राह्मण को दान देने से रोगी शीघ्र आरोग्यता प्राप्त करता है।

समस्त शत्रुओं को नष्ट करने वाला मन्त्र –

ॐ ऐं श्रीं ह्रां ह्रीं हूं स्फ्रें ख्फ्रें ह्सौं हस्फ्रें ह्स्त्रौं ॐ नमो हनुमते राक्षसकुल-दावानल-द्वादशार्क-कोटयर्कप्रभञ्जवल्त- तनूरुह भीमनाद मम परस्य च दुष्ट-दुर्जन-महापकारक-वादि-विवादि-द्वेषकारक- कार्यभञ्जक- क्रूरप्रकृतिक- प्रवृद्धकोपावेशक-हन्तुकामुकादीन् दूरस्थान् समीपस्थान् भूत-भविष्यद्- वर्तमानान् पुं-स्त्री- नपुंसकांश्चातुर्वर्ण्यान् क्षणेन सत्वर हन हन दह दह संहरय संहरय मोहय मोहय मर्दय मर्दय द्वेषय द्वेषय मार्जार-मूषक-वत्सद्यः प्राणैर्वियोजय वियोजय विध्वंसय विध्वंसय छिन्धि-छिन्धि मूकय मूकय जारय जारय वर्धय वर्धय जृम्भय जृम्भय पातय पातय मम परस्य च पादताडक्रान्तान् कुरु कुरु दासीभूतान् सम्पादय सम्पादय हहहह हुं हुं हुं घेघेघे हुं फट् स्वाहा।

अथारिष्टशान्तये

शताक्षरगायत्रीमन्त्रजपविधिः

विनियोगः- ॐ अस्य श्रीशताक्षरगायत्रीमन्त्रस्य विश्वामित्रमरीचिकश्यपवसिष्ठऋषये गायत्री त्रिष्टुबनुष्टुपछन्दांसि सावित्री जातवेदस्त्र्यम्बकाः देवताः गायत्र्यक्षराणि बीजानि त्रिष्टुबक्षराणि शक्तयः अरिष्ट शान्तये जपे विनियोगः। विश्वामित्रमरीचिकश्यपवसिष्ठ ऋषिभ्योनमः शिरसि।गायत्रीत्रिष्टुबनुष्टुप्छन्दोभ्यो नमः मुखे।। सवितृजातवेदस्त्र्यम्बकदेवेभ्यो नमः हृदये।। गायत्र्यक्षराणि बीजानि गुह्ये।त्रिष्टुबक्षराणि शक्तये नमः पादयोः।। ॐतत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि हृदयाय नमः ॐ धियो यो नः प्रचोदयात् शिरसे स्वाहा।। ॐजातवेदसेसुनवामसोममरातीयतो निदहातिवेदः।शिखायै वषट्।ॐ स नः पर्षदतिदुर्गाणिविश्वानावेवसिन्धुदुरितात्यग्निः कवचाय हुँ। ॐ त्र्यम्बकं यजामहेसुगन्धिंपुष्टि वर्द्धनं नेत्रत्रयायवौषट्। ॐउर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् अस्त्राय फट्।। अथ ध्यानम्।-स्मर्तव्यखिललोकवर्ति सतत यज्जगमस्थावरम्। व्याप्तं येन च यत्प्रपंचविहितं मुक्तिश्च यत्सिद्धयति।।यद्य सततं प्रणवप्रभेदगहनं पृत्वा च यद्गीयते तद्वतकृक्षिति सिद्धयेऽस्तु वरदं ज्योतिस्त्रयोत्यं महः।।१।।एवं ध्यात्वाशताक्षरं भावयेत्।। अथ शताक्षरगायत्रीमन्त्रः।।ॐतत्सवितुर्वरेण्यंभर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ जातवेदसेसुनवामसोममरातीयतो निदहातिवेदः। स नः पर्षदतिदुर्गाणिविश्वानावेवसिन्धुदुरितात्यग्निः ॐत्र्यम्बकं यजामहेसुगन्धिंपुष्टिवर्द्धनम्। उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् स्वाहा।।

सन्तानगोपालमन्त्रविधिः

सन्तानगोपालमन्त्र – ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते।देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ग्लौं क्लीं ह्रीं श्रीं ॐ ।।विनियोगः– अस्य सन्तानगोपालमन्त्रस्य श्रीनारद ऋषिः,अनुष्टुप् छन्दः,श्रीकृष्णो देवता, ग्लौं बीजम्,नमः शक्तिः,पुत्रलाभार्थे जपे विनियोगः।अङ्गन्यासः–'देवकीसुत गोविन्द' हृदयाय नमः'वासुदेव जगत्पते'शिरसे स्वाहा'देहि मे तनयं कृष्ण'शिखायै वषट्'त्वामहं शरणं गतः' ॐ अस्त्राय फट्।ध्यानम् – वैकुण्ठादागतं कृष्णं रथस्थं करुणानिधिम्।किरीटिसारथिं पुत्रमानयन्तं परात्परम्।। अदाय तं जलस्थं च गुरवे वैदिकाय च।अर्पयन्तं महाभागं ध्यायेत् पुत्रार्थमच्युतम्।।सपादलक्ष जपः। तिलपायस घृतदशांशहवनं तद्दशांश तर्पणम् । तद्दशांश ब्राह्मणभोजनम्।

वास्तुविचार

शुभाशुभ भूमि विचार – गृहस्थस्य क्रियाः सर्वाः न सिध्यन्ति गृहं विना। यतस्तस्माद् गृहारम्भप्रवेश समयं ब्रुवे।।परगेहे कृताः सर्वाः श्रौतस्मार्तक्रियाः शुभाः। निष्फलाः स्युर्यतस्तासां भूमीशः फलमश्नुते।।

ग्रामवास विचार–मस्तके पञ्चलाभाय मुखे त्रीणि धनक्षयः।कुक्षौपञ्च धनं धान्यं षट्पादे च दरिद्रता।।पृष्ठे चैकपदक्षनिर्नाभौ चत्वारिसंपदः।गुह्ये चैकं भयं पीड़ा हस्ते चैकं तु क्रन्दनम्।वामे चैककरे भेदो ग्रामचक्रं नराकृतिः।।ग्रामयेज्जन्मनक्षत्रं ग्राम नक्षत्रतः सदा।।ग्राम के नक्षत्र से वास पुरुष के नक्षत्र तक गिने तदनन्तरं अधोलिखित चक्र में पुरुषाकृति देखे–

ग्राम नः से पु. जं नं	५	३	५	६	१	४	१	१	१
अवयव	मस्तक	मुख	पेट	पैर	पीठ	नाभि	गुदा	दायां हाथ	वाया हाथ
फल	लाभ	धन हानि	धन धान्य	स्त्री अभाव	पैर मे पीड़ा	धन सम्पत्ति	भय पीड़ा	रोदन	भेद या मतभेद

भूमिपरीक्षण–गृह निर्माण के पूर्व भूमि परीक्षण आवश्यक है।वास्तुशास्त्र के अन्तर्गत भूमि शोधन की बहुत सी विधियाँ दी गयी है।किन्तु लोकव्यवहार में ये विधियाँ अत्यधिक प्रचलित हैं जो अधोलिखित हैं।मध्ये गृहे हस्तमितं खनित्वा सम्पूरयेत्पांशुभिरशुतस्य। सम्पूरयित्वाऽधिकतामुपेते: पशुर्यदा तद्गृहमुत्तमं स्यात्।। तमे समं न्यूनतरे सदोषं न कारयेत्तत्र गृहं कदाचित्।। जिस भूमि पर मकान बनाना हो तो उसके बीचों बीच एक हाथ लम्बा,एक हाथ चौड़ा,एक हाथ गहरा गड्ढा खोदना चाहिये फिर उसी (निकली हुई) मिट्टी से उस गड्ढे को भर देना चाहिये यदि गड्ढा भरने से मिट्टी बच जाय तो उत्तम,बराबर हो जाय तो सम और मिट्टी कम हो जाय तो निकृष्ट होता है।इस भूमि पर मकान नहीं बनवाना चाहिये। "तदा निखाते तत्कृत्वा पानीयेन प्रपूरयेत्। प्रातर्दृष्टे जले वृद्धिः समः पङ्के व्रणे क्षयः।।" पूर्व विधि से गड्ढा खोदकर पानी से सायं काल में पूर्णरूप से भरकर प्रातःकाल देखने पर यदि जल दिखाई पड़े तो शुभ,केवल कीचड़ बच रहे तो सम और मिट्टी फट जाय तो भूमि हानिकारक होती है। वास्तुरत्नाकर के अनुसार जिस भूमि पर औषधियाँ,वृक्ष, लतायें तथा हरी भरी घासें हों एवं भूमि समतल हो ऐसी भूमि निवास हेतु प्रशस्त मानी गयी है।इत्यौषधिद्रुमलता मधुरा सुगन्धा स्निग्धा समा न सुषिरा च महीनराणाम्।अप्यध्वनि श्रमविनोदमुपागतानां धत्ते श्रियं किमुत शाश्वतमन्दिराणाम्।। यत्र वृक्षाः प्ररोहन्ति शस्यं हर्षप्रवर्धते। सा भूमिर्जीवितं श्रेयामृताख्याऽन्यथा बुधैः।

भूमि के लक्षणः–दक्षिणे पश्चिमे चैव नैर्ऋत्ये वायुकोणके। एभिरूच्च भवेद् भूमिर्गजपृष्ठोऽभिधीयते।।गजपृष्ठे भवेद्वासः सलक्ष्मीधनपूरितः।आयुःवृद्धि करी नित्य जायते नाऽत्र संशयः।।मध्ये तूच्चं भवेद्यत्र नीचं चैव चतुर्दिशम्।कूर्मपृष्ठे विजानीयात्तत्र वासं समाचरेत्।।कूर्मपृष्ठे भवेद्वासो नित्योत्साह सुखप्रदः।धनधान्यं भवेत्तस्य निश्चितं विपुलं धनम्।। पूर्वाग्निशम्भुकोणेषु उन्नतिश्च यदा भवेत्।पश्चिमे च यदानीचं दैत्यपृष्ठोऽभिधीयते।। दैत्यपृष्ठे कृते वासे लक्ष्मीर्नायाति मन्दिरम्।धनं पुत्रं पशूनां च हानिरेव न संशयः।। पूर्वपश्चिमयोर्दीर्घा दक्षिणोत्तर उच्चता।।नागपृष्ठं विजानीयात्कर्तुरूच्चाटनं भवेत्।। नागपृष्ठे यदा वासो मृत्युरेव न संशयः।पत्नीहानिः पुत्रहानिः शत्रुवृद्धिः पदे पदे।।

गजपृष्ठादि भूमि विचार :– गजपृष्ठ – जिस स्थान में दक्षिण,पश्चिम,नैर्ऋत्य और वायव्य कोण की ओर भूमि ऊँची हो उसको गजपृष्ठ कहा गया है।उस भूमि पर घर बनाकर रहने से धन–धान्य,सन्तान,आयु की वृद्धि होती है।**कूर्मपृष्ठ** : जहाँ की भूमि मध्य में ऊँची हो और चारों दिशाओं में झुकाव हो,वह कूर्मपृष्ठ भूमि कहलाती है। उस स्थान पर वास करने से नित्य उत्साह, धन–धान्य, सन्तान,आयु,आरोग्य,यश और प्रतिष्ठा की वृद्धि होती है। **दैत्यपृष्ठ** : ईशानकोण,पूर्व और अग्निकोण में भूमि ऊँची हो और पश्चिम में नीची हो तो वह दैत्यपृष्ठ कहलाती है। उसमें निवास करने से अशुभ फल मिलता है।**नागपृष्ठ** :– जहाँ दक्षिण और उत्तर दोनों दिशा में भूमि ऊँची हो,बीच में नीची हो तो वह भूमि नागपृष्ठ कहलाती है।यहाँ वास करने से सभी प्रकार की हानि होती है।**चारों वर्णो के आधार पर भूमि विवेचनः**– मधुरा दर्भसंयुक्ता घृतगन्धा च या मही।उत्तरप्लवणश्रेया ब्राह्मणानां च सा शुभा।।रक्तगन्धा कषाया च शरवीरेण संयुता। रक्तप्रवणा श्रेया क्षत्रियाणां च सा मही।। दक्षिण प्रवणा भूमिर्याऽम्ला दूर्वान्विता। अन्नगन्धा च वैश्यानां पीत वर्ण प्रशस्यते।। पश्चिमप्रवणा कृष्णा विकुष्ठा काश संयुता।मद्यगन्धा मही धन्या शूद्राणां कटुका तथा।।

स्पष्टार्थ चक्रः

ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	वर्ण
उत्तरप्लव	पूर्वप्लव	दक्षिणप्लव	पश्चिमप्लव	प्लव
मधुर	कषाय	अम्ल	कटु	रस
घृतगन्धा	रक्तगन्धा	अन्नगन्धा	मद्यगन्धा	गन्ध
दर्भयुक्त	शरयुक्त	दूर्वायुक्त	काशयुक्त	घास
श्वेतवर्ण	रक्तवर्ण	पीतवर्ण	कृष्णवर्ण	वर्ण

सूर्य चन्द्र वेध विचार :– चन्द्र वेधी मकान एवं सूर्य वेधी जलाशयः शुभ होता है।तालाब व वाटिका सूर्य एवं चन्द्र वेधी दोनों से शुभ होता है।पूर्व पश्चिम लम्बा मकान सूर्य वेधी और उत्तर–दक्षिण लम्बा मकान चन्द्रवेधी होता है। चन्द्रवेधी मकान में धन और कुल की वृद्धि एवं सूर्यवेधी मकान में धन–धान्य एवं सन्तति की क्षति होती है। बाग–बगीचा सूर्यवेधी और चन्द्रवेधी दोनो को प्रशस्त माना गया है।देवालय आदि के लिये सूर्यवेध और चन्द्रवेध का विचार नहीं होता है।पूर्व पश्चिमतो दैर्घ्यं सपादं दक्षिणोत्तरम्।शुभावह चन्द्रविद्धं सूर्यविद्धं न शोभनम्।।चन्द्रविद्धं गृहं कुर्यात् सूर्यविद्धं जलाशयः। वाटिकातूभयोर्विद्धा देवागारं तु वर्तुलम्।।"वास्तुरत्नाकरे" पिण्ड ज्ञानम्:–क्षेत्रे भवेत्क्षेत्रफलं चतुर्भुजे तत्कोटिदोर्घाततिवमायते। त्र्यस्रेऽपि दोःकोटिहतेर्दलं फलं दोःकोटिलम्बैर्विषमे च कल्पितम्।।मकान की लम्बाई × चौड़ाई = मकान का पिण्ड होता है।**भवन के आय आदि का विचार:**– पिण्डेवसुघ्ने गजनिघ्ननागगाब्धि नागैर्गुणिते क्रमेण। विभाजिते नागनगाङ्क सूर्य नागर्क्षतिथ्यर्क्षभानुभिश्च।।आयो वारोंऽशको द्रव्यं ऋणमृक्षं तिथिर्युतिः।आयुश्चाथ गृहेशर्क्षगृहैक्यं मृतिप्रदम्।।गृहपिण्ड को नव स्थानों में रखकर क्रम से ।८।९।६।८।३।८।८।४।८। इन अङ्कों से अलग २ का गुणा करके गुणनफल में–८।७।९।१२।८।२७।१५।२७।१२०।इन अङ्कों से भाग देने पर जो शेष बचे वह क्रमसे आय,वार,अंश,द्रव्य,ऋण,नक्षत्र,तिथि,योग और आयु होती है।क्रम आयु वाला मकान शुभ नहीं होता है।१-आयः– ध्वज ,धूम्र ,सिंह ,श्वान ,वृष ,खर ,गज ,उष्ट्र अथवा काक ये आठ प्रकार के होते हैं इसमें विषम आय(१,३,५,७)हो तो शुभ एवं सम हो (२,४,६,८)तो अशुभ होता है।वार तथा अंश:–सूर्य मंगल के वार राशियां और अंश(मेषादिनवांश) सर्वदा अशुभ दायक होता है।द्रव्य या धनः– यदि ऋण की अपेक्षा धन अधिक हो तो गृह शुभ होता है।ऋण अधिक हो तो अशुभ होता है।नक्षत्र :– गृह और गृह स्वामी का नक्षत्र एक हो तो गृह स्वामी की मृत्यु होती है। तिथि :–शुक्ल प्रतिपदा से आरम्भ करके अमान्त तक ३० तिथियां होती है, उनमें ये ४,९,१४,१९,२४,२९,२९,३० तिथियां अशुभ होती हैं तथा शेष शुभ होती हैं।योग :– अतिगण्ड ,शूल ,गण्ड, व्याघात ,वज्र ,व्यतीपात, परिघ एवं वैधृति ये योग गृह में वर्जित है।आयु :– दीर्घायु मकान शुभ होता है एवं अल्पायु अशुभ होता है। "आयु विहीने गेहे तु दुर्भगत्वं प्रजायते।राशि :– वासकर्ता का नाम राशि से २,५,९,१०,११ स्थानों में ग्राम की राशि हो तो वास कर्ता के लिये वह ग्राम, मुहल्ला शुभ एवं १,३,४,७,८और १२स्थानों में हो तो अशुभ होता है।**भवन के लाभ आदि का विचार :**– स्ववर्ग द्विगुणं कृत्वा पर वर्गेण योजयेत्।अष्टभिस्तु हरेद् भागंयोऽधिकः स ऋणी भवेत्।।अपनी–अपनी वर्ग संख्या को द्विगुणित कर उसमें ग्रामादि वर्ग संख्या को जोड़कर उसमें ८ का भाग देने से जिसका शेष अधिक हो वह ऋणी होता है।अतः वासकर्ता की काकणी से गाँव,मुहल्ला या शहर की काकणी हमेशा अधिक होनी चाहिये।**स्पष्टार्थ चक्रः** –

क्र.	वर्ग	नामाक्षर	वर्गेश	वर्ग सं.	वर्ग की दिशा या कोण
१	अवर्ग	अ,इ,उ,ए,ऐ,ओ,औ	गरुड	१	पूर्व दिशा
२	कवर्ग	क,ख,ग,घ,ङ	मार्जार	२	आग्नेय कोण
३	चवर्ग	च,छ,ज,झ,ञ	सिंह	३	दक्षिण
४	टवर्ग	ट,ठ,ड,ढ,ण	श्वान	४	नैऋत्य कोण
५	तवर्ग	त,थ,द,ध,न	सर्प	५	पश्चिम
६	पवर्ग	प,फ,ब,भ,म	मूषक	६	वायव्य कोण
७	यवर्ग	य,र,ल,व	मृग	७	उत्तर
८	शवर्ग	श,ष,स,ह	मेष	८	ईशान कोण

मण्डलानयन :–
पिण्ड की लम्बाई + चौड़ाई में नव से भाग देने पर क्रम से १-दाता २-भूपति ३-क्लीब ४-चोर ५-पण्डित ६-भोगी ७-धन्नाढ्य ८-दरिद्र ९-कुबेर ये नव प्रकार के मण्डल होते हैं।इनका फल नाम के सदृश होता है।
मण्डलेशानयन :–स्वामिहस्तप्रमाणेन दीर्घविस्तारसंयुतम्। द्विगुणं चाष्टभिर्भक्तं मण्डलाधिप उच्यते।।इन्द्रो विष्णुर्यमो वायुःकुबेरो धूर्जटिस्तथा।विधाता विघ्नराजश्च मण्डलेशाः प्रकीर्तिताः।।इन्द्र सौख्यं यशो विष्णुर्यमो दुःखं निरन्तरम्। वायुश्चोच्चाटनं कुर्यात् कुबेरो धनदो भवेत्।।धूर्जटिः कलहो नित्यं धाता सौख्यप्रवृद्धिदम्।सर्वसिद्धिं गणाधीशः फलमुक्तं मनीषिभिः।।

१	२	३	४	५	६	७	८	शेष
इन्द्र	विष्णु	यम	वायु	धन	महादेव	विधाता	गणेश	देव
सुखद	यश	दुःख	उच्चाटन	कुबेर	कलह	सुख शान्ति	सर्व सिद्धि	फल

आँगन विचार :– आँगन की लम्बाई चौड़ाई को आठ से गुणा करके नव से भाग देने पर क्रम से १-तस्कर २-भोगी ३-पण्डित ४-दाता ५-नृपति ६-नपुंसक ७-कुबेर ८-दरिद्र ९-भयदाता ये नव प्रकार के आँगन होते हैं।इनका फल नाम के समान होता है।बीच में आँगन ऊँचा और चारो तरफ नीचा शुभ फल दायक होता है।इसके विपरीत होने पर सन्तान नाशक होता है।वास्तुरत्नाकरे – मध्ये निम्नं त्वङ्गणाग्रं तयोच्चैः।शश्वच्चैवं पुत्रनाशाय गेहम्।।
चरणी विचार :– स्वामी हस्त प्रमाणेन दीर्घ विस्तार संयुतम्।अष्टभिश्च हरेद्भागं शेषं चरणिरुच्यते।।पशुहानिः पशोरोगः पशुलाभः पशुक्षयः।पशुनाशः पशोर्वृद्धि पशुभेदो बहुपशुः।।**स्पष्टार्थ चक्र** :

शेष	१	२	३	४	५	६	७	८
फल	पशु–हानि	पशु–रोग	पशु–लाभ	पशु–क्षय	पशु–नाश	पशु–वृद्धि	पशु–भेद	पशु–वृद्धि

राहु दिशा विचार:– देवालय,जलाशय और मकान के नींव खोदते समय राहु की दिशा का विचार आवश्यक होता है।देवालये गेहविधौ जलाशये राहोर्मुखं शम्भुदिशोर्विलोमतः। मीनार्के सिंहार्के मृगार्कतस्त्रिभेखाते मुखात्पृष्ठविदिक्शुभा भवेत्।।
स्पष्ट चक्रं :

गृहारम्भ	सिं.,क.,तु	वृश्चि.,ध.,म	कु.,मी.,मे.	वृ.,मि,क.
देवा–लयारम्भ	मी.,मे.,वृ.	मि.,क,सिं.	क.,तु.,वृश्चि.	ध.,म.,कु.
जला शयारम्भ	म.,कु.,मी.	मे.,वृ.,मि.	क.,सि.,क.	तु.,वृश्चि,ध.
राहु मुख	ईशान	वायव्य	नैऋत्य	आग्नेय
राहु उ	नैऋत्य	आग्नेय	ईशान	वायव्य
राहु पीठ	आग्नेय	ईशान	वायव्य	नैऋत्य

नींव या जलाशय आदि खोदते समय राहु के मुख भाग को छोड़कर पृष्ठभाग से खोदना शुभ होता है।
कक्ष विवेचनं मुहूर्तचिन्तामणौ :–
स्नानस्यपाकशयनास्त्रभुजेश्चधान्यभांडारदैवतगृहाणि च पूर्वतःस्युः।तन्मध्यतस्तु मथनाज्यपुरीष – विद्याभ्यासाख्यरोदनरतौषधसर्वधाम।।
स्पष्टार्थ चक्रं :

वायव्य — उत्तर — ईशान

कोष धान्य	मनोरंजन कक्ष	भाण्डार–गृह	औषधि गृह	देवता
भोजन कक्ष		ब्रह्मस्थल		सर्ववस्तु
विद्याभ्यास				स्नानगृह
शस्त्रागार	शौचालय	शयनकक्ष		रसोई

(बायें पश्चिम, दायें पूर्व)

नैर्ऋत्य — दक्षिण — आग्नेय

स्नान कक्ष :– वास्तु शास्त्र के अनुसार स्नान घर (बाथरूम) भवन के पूर्व में होना चाहिये। स्नान घर में गीजर,अन्य विद्युत् की मशीन आदि आग्नेय कोण में स्थापित करना चाहिये।कक्ष के फर्श की ढाल उत्तर दिशा या पूर्व दिशा में रखनी चाहिये।शौचालय स्नान कक्ष के अन्दर नहीं होना चाहिये।किन्तु देशकाल के अनुसार स्नान कक्ष में शौचालय रखना हो तो नैर्ऋत्य कोण व दक्षिण दिशा के मध्य तथा नैर्ऋत्य कोण व पश्चिम दिशा के मध्य में बनवाना चाहिये।नल फव्वारा इत्यादि उत्तर पूर्वी क्षेत्र में,हाथ साफ करने के लिये स्थान पश्चिम दिशा में होना चाहिये।
भोजनालय :– इसके लिये सबसे उत्तम स्थान भवन का आग्नेय कोण है। यह सम्भव न हो सके तो दूसरा स्थान दक्षिण दिशा में रखना चाहिये।भोजनालय में शुद्धजल हेतु नल ईशान कोण में व पूर्व दिशा के मध्य में गैस सिलेण्डर व गैसचूल्हा अग्नेय कोण में, खाद्यान्य भण्डार पूर्व दिशा में बरतन आदि दक्षिण या पश्चिम दिशा में रखना चाहिये।भोजन कक्ष पश्चिम दिशा में बनवाना चाहिये।भण्डार रूम (स्टोर रूम) वायव्य मे उत्तम होता है।
शयन कक्ष :– गृह स्वामी का शयन कक्ष दक्षिण व पश्चिम मे होना चाहिये।सर्वदा पूर्व या दक्षिण की तरफ शिर करके सोना चाहिये। "प्राक्शिरः शयने विद्याद् धनमायुश्च दक्षिणे।पश्चिमे प्रबला चिन्ता हानि मृत्युस्तथोत्तरे।।
पूजाघर :– ईशान कोण में महादेव का वास होता है।इसलिये ईशान में पूजा कक्ष शुभ होता है।पूजा के समय उत्तर दिशा या पूर्वदिशा की तरफ मुख होना चाहिये।पूजा कक्ष मे शयन नहीं करना चाहिये। स्थानाभाव में यदि शयन करना हो तो पूजा स्थल पर लाल परदा डाल कर रखें।हवन आदि की व्यवस्था अग्नि कोण में करना चाहिये।पूजा की दीवार एवं फर्श सफेद या हल्के पीले रंग का होना चाहिये। नैर्ऋत्य कोण में अस्त्र शस्त्र कक्ष,अग्नि कोण मे बिजली,जनरेटर अर्थात् ऊर्जा से सम्बन्धित कक्ष,उत्तर दिशा मे कोषागार,वायव्य में गोशाला,पूर्व दिशा के मध्य मे घृत दधिमथन आदि का कक्ष उत्तर पश्चिम में अतिथि कक्ष या सामान्य कक्ष, नैर्ऋत्य पश्चिम में अध्ययन कक्ष,वायव्य उत्तर में रति कक्ष, ईशान कोण मे चिकित्सा कक्ष,एवं नर्ऋत्य कोण में प्रसूति कक्ष बनवाना चाहिये।**सीढी** – उत्तर पूर्व को छोड़कर किसी भी दिशा में बनाई जा सकती है।दक्षिण-पक्षिम दिशा सीढी के लिए उपयुक्त स्थान होता है।क्योंकि यह स्थान निऋति नामक दैत्य का होता है।अतः सीढ़ियों का वजन रखना उत्तम होता है। पायदान (स्टेप) विषम होना चाहिए,जो इन्द्र,यम एवं राजा इस क्रम से गणना करनी चाहिए।यदि उत्तर मे यम आये तो अशुभ होता है।सीढ़ी दक्षिणावर्त होनी चाहिए (भूम्यारोहणभूर्ध्वतस्तदुपरि प्राग् दक्षिणांशस्यते)।**द्वार विवेचन** :– मकान की लम्बाई(जिस दिशा में द्वार बनाना हो उस दिशा की लम्बाई) बराबर–बराबर नव भाग करके पाँच भाग दाहिने और तीन भाग वायें की तरफ छोड़कर शेष भाग में द्वार बनाना चाहिये। "नवभागं गृहं कुर्यात् पञ्चभागं तु दक्षिणे।त्रिभागमुत्तरे कृत्वा शेषे द्वारं प्रकल्पयेत।।**दक्षिणादि निर्णय** :– मकान से निकलते समय जो दक्षिण भाग पड़े वह दक्षिण एवं बायें पड़े वह वाम भाग मानना चाहिये। "दक्षिणाश्च स वै प्रोक्तेः मन्दिरान्निःसृते सति,यो भूयाद्दक्षिणे भागे वामे भूयात्स वामगः।" (वास्तु रत्नाकरे) **भवन में जलभण्डार का विचार(जल टंकी)**:– भूमिगत टंकी उत्तर पूर्व दिशा में रखनी चाहिये एवं उपरी टंकी उत्तर–पश्चिम या दक्षिण–पश्चिम में रखनी चाहिये।इसमें भी दक्षिण पश्चिम सर्वोत्तम होता है।ऊपरी टंकी का स्पर्श मुख्य भवन से नहीं होना चाहिये।**नलकूप,ट्यूबवेल इत्यादि का विचार** :– इसके लिये उत्तर पूर्व, उत्तर दिशा के मध्य,उत्तर और पूर्व के बीच का स्थान शुभ होता है। "कूपे वास्तोर्मध्यदेशेऽर्थनाशस्त्वैशान्यादौ पुष्टिरैश्वर्य वृद्धिः। सूनोर्नाशः स्त्रीविनाशो मृतिश्च सम्पतपीडा शत्रुतःस्याच्च सौख्यम्।।" (मूहूर्त चिन्तामणि)
भवन में गैरेज :– भवन में गैरेज मार्ग की स्थिति पर निर्भर करता है।यदि भूखण्ड पूर्वोन्मुख है तो गैरेज को दक्षिण पूर्व दिशा में पूर्व की ओर,उत्तरोन्मुख है तो उत्तर पश्चिम में उत्तर की ओर पश्चिमोन्मुख है,तो दक्षिण पश्चिम की ओर एवं दक्षिणोन्मुख है तो दक्षिण पश्चिम की ओर बनाना चाहिये।
पोर्टिको (बालकनी) :– इसका निर्माण भूखण्ड की दिशा पर निर्भर करता है।यदि भूखण्ड उत्तरोन्मुखी है तो उत्तरी ईशान कोण में,वायव्योन्मुखी है तो पश्चिमी वायव्य कोण में,पश्चिमोन्मुखी है तो पश्चिमी वायव्य कोण में,आग्नेयोन्मुखी है तो आग्नेय कोण में,पूर्वोन्मुख में मार्ग उत्तर पूर्व की ओर है तो उत्तर पूर्व दिशा की ओर एवं पूर्व में भी बनवा सकते हैं।ईशानोन्मुख है और मार्ग उत्तर या पूर्व में हो तो उत्तर पूर्व में पूर्व दिशा की ओर,एवं उत्तर पूर्व में भी बनवा सकते हैं।पोर्टिका को सुविधा के अनुसार इस प्रकार बनवाया जा सकता है कि उत्तर एवं पूर्व दिशा दक्षिण एवं पश्चिम से नीचा रहे।
सेप्टिक टैंक– वायव्य कोण या उत्तर दिशा के मध्य में बनाना चाहिए।तथा यह भूमि तल से नीचा होना चाहिए,टैंक की लम्बाई पूर्व पश्चिम तथा चौड़ाई उत्तर दक्षिण दिशा की होनी चाहिए।
दीपक या बल्ब आदि का विचार–दीपक स्थान सर्वदा मकान के दक्षिण भाग मे रखना चाहिए,जिसका मुख पूर्व दिशा या उत्तर दिशा में होना चाहिए।जो आयु स्वास्थ्य एवं धन प्राप्ति के दृष्टि से उत्तम होता है।जहाँ पर दीपक का प्रयोग नहीं होता वहाँ दीपक की जगह बल्ब ट्यूबलाइट आदि समझना चाहिये। "दीपालयो दक्षिणदिग्विभागे सदा विधेयोऽर्गलया समानः।वामे च मध्ये न शुभाय गेहे सुरालये वामदिशीष्ट सिद्ध्यै।। (वास्तु राजवल्लभे ५/२१)
द्वार सव्यासव्य विचार :– यदि बाहरी द्वार से प्रवेश करने के बाद भीतरी (दूसरा) द्वार दायीं तरफ पड़े तो सव्य द्वार तथा वायीं तरफ पड़े तो अपसव्य द्वार होता है।सव्य द्वार शुभ होता है "विनाश हेतुःकथितोपसव्यः सव्यःप्रशस्तो भवनेऽखिलेसौ।।
द्वारवेध विचार :–रथ्याविद्धं द्वारं नाशाय कुमार दोषदं तरुणा पङ्कद्वारे शोको व्ययोम्बुनिःस्राविणि प्रोक्तः।कूपेनापस्मारो भवति विनाशश्च देवता विद्धे।स्तम्भेन स्त्रीदोषाः कुलनाशो ब्राह्मणाभि मुखे।।
द्वारवेध चक्रम :–

द्वारवेध	रास्ता	वृक्ष	पङ्क	पानी	कूप	मन्दिर	स्तम्भ या खम्भा	ब्राह्मण का मकान
फल	ग्रहपति नाश	बालक दोष	शोक	धनक्षय	मृगी रोग	विनाश	स्त्रीदोष	कुलनाश

रास्ता वृक्षादि यदि मकान के द्विगुणित ऊचाई से अधिक दूरी पर या मकान के पीछे या बगल में हों तो वेध दोष नहीं होता केवल सम्मुख रहने पर वेध होता है। "उच्छ्रायाद द्विगुणमितां व्यक्त्वा भूमि न दोषाय,पृष्ठतः पार्श्वयोर्वापि न वेधं चिन्तयेद् बुधः।।
गृह निर्माण काष्ठादि विचार–नूतन भवन में तत्सम्बन्धी समस्त सामग्री (काष्ठ,लोहा इत्यादि) नूतन ही प्रयोग करना चाहिए।ऐसा न करने से गृह स्वामी के लिए कष्टदायक होता है।नूतने नूतनं काष्ठं जीर्णे जीर्णं प्रशस्यते जीर्णे च नूतनं काष्ठं नो जीर्णं नूतने गृहे।
घर में करि (गाटर) का विचार :– करि (गाटर) की संख्या में ३ का भाग देने पर १ शेष बचे तो इन्द्र,२ बचे तो यम और ३ शेष में भूप का अंश होता है।यम का अंश मृत्युदायक होता है।करिसंख्या भवेद् गेहे त्रिभिश्चैव विभाजिते।इन्द्रः कालस्तथा भूपो यमांशे मरणं ध्रुवम्।।
जल प्रवाह विचार–शुभं मृतिश्च निर्धनं क्षयं च पुत्रनाशनम् सुखं च राज्य सम्पदा धनं क्रमेण पूर्वतः ।

दिशा	पूर्व	अग्नि	दक्षिण	नैर्ऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान
फल	शुभ	मृत्यु	निर्धन	क्षय	पुत्रनाश	सुख	राज्य सम्पदा	धनप्राप्ति

गृहारम्भे वास्तु पुरुष स्थिति ज्ञानम् –सवेदास्तिथयो द्विघ्ना नामाक्षर समन्विता।त्रिभिश्चैव हरेद्भागं शेषं पुरुषं उच्यते एके च वसते स्वर्गे द्वाभ्यां पाताल एव च शून्ये तु मृत्युलोके स्यादिति पाराशरोऽब्रवीत्

(अग्रिमे पृष्ठे द्रष्टव्यम्) →

→स्वर्गे लोके भवेद् लाभः पातालेषु सदा श्रियः मृत्युलोके भवेन्मृत्युर्विचिन्त्य गृहमारभेत् । गृहारम्भ की तिथि संख्या में ४ जोड़कर दूना करके उसमें गृहपति के नामाक्षर संख्या को जोड़कर ३ का भाग दें। यदि १ शेष बचे तो स्वर्ग, २ शेष बचे तो पताल एवं शून्य शेष बचे तो मृत्युलोक में वास्तु पुरूष का वास होता है। स्वर्ग एवं पताल में वास्तु पुरुष का निवास होने पर लाभ एवं लक्ष्मी की प्राप्ति होती है तथा मृत्युलोक में निवास होने पर कष्टदायक एवं मृत्युदायक होता है।

वास्तु चक्रम् –सूर्य नक्षत्रात् चन्द्र नक्षत्रावधि साभिजित् गणयेत्

स्थान	मस्तक	अग्रपाद	पृष्ठ पाद	पृष्ठ	वाम कुक्षि	दक्ष कुक्षि	पुच्छ	मुख
नक्षत्र	३	४	४	३	४	३	४	३
फल	अग्नि दाह	विनाश	स्थैर्य	धन	लक्ष्मी	शून्य	दारिद्र	मृत्यु

शिलान्यास :– पहले दक्षिण–पूर्व के कोण में नींव के अंदर पूजा करके शिला की स्थापना करनी चाहिये,बाकी ४ शिलाओं को स्तम्भ–शिला के चारों तरफ स्थापित करना चाहिये। **देव–मन्दिर के पास कभी भी मकान नहीं बनाना चाहिये । वास्तुदोष निवारण :–** १·घर में वास्तुदोष होने पर उचित यही है कि उसे यथासम्भव वास्तुशास्त्र के अनुसार ठीक करे । ध्यान रहे निर्मित मकान का अधिक तोड़ फोड़ करने से वास्तुभङ्ग दोष लगता है,ऐसी स्थिति में वास्तु दोष निवारणार्थ वास्तु शान्ति गणेश मूर्ति, मंगल कलश, स्वस्तिक तथा मत्स्य आकृति मुख्य द्वार के उपर पेंट कराना चाहिए अथवा वर्ष में कम से कम एक बार नवरात्रि में दुर्गासप्तशती का पाठ, रुद्राभिषेक, श्रीरामचरितमानस का पाठ अखण्ड कीर्तन या श्रीमद्भागवतपारायणादि अवश्य करना चाहिए । २·अमावस्या तिथि को गाय के उपले एवं शमी की लकड़ी तिल, चावल, जौ, शक्कर, गुग्गुल, जटामासी तथा चन्दन चूर्ण मिलाकर गायत्री मन्त्र द्वारा ११०० आहुति देने से वास्तुदोष दूर हो जाता है। घर में तुलसी के पौधे को छोड़कर अन्य किसी भी पौधे को वह चाहे सोने का पौधा ही क्यों न हो नहीं लगाना चाहिए। तुलसी लगाने से सुखशान्ति रहती है।

卐✱卐

अशौचविचार

भारतीय संस्कृति में शौचाशौच विचार महत्त्वपूर्ण है। जननाशौच एवं मरणाशौच भेद से अशौच(अशुद्धि) दो प्रकार का होता है। लोककल्याण हेतु इसे संक्षेप में यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है।

१·गर्भस्रावजन्य अशौच

प्रथम से चतुर्थमास के भीतर गर्भ नाश को स्राव एवं पांचवे मास से छठे मास के भीतर गर्भनाश को गर्भपात तथा सातवें से दशवें मास में गर्भ बाहर आये तो उसे प्रसव कहते हैं। आ चतुर्थाद्भवेत्स्रावः पातः पञ्चमषष्ठयोः। अत ऊर्ध्वं प्रसूतिः स्याद्दशाहं सूतकं भवेत्।। "ब्रह्मपुराण" के अनुसार सभी वर्णों में प्रथम से लेकर छठे मास के भीतर यदि गर्भनाश हो तो जितने महीने का गर्भ नष्ट होता है उतने दिनों के बाद ही माता की शुद्धि होती है। "षड्मासाभ्यन्तरे यावद्गर्भस्रावो भवेद्यदि। तदा माससमैस्तासां दिवसैः शुद्धिरिष्यते।।" सात मास से आगे गर्भपात या प्रसव में माता पिता के साथ साथ "सपिण्ड" (प्रथम से सात पीढी तक) को दस दिनों का, सोदक (आठ से चौदह पीढी तक) को तीन दिनों का, और सगोत्र (पन्द्रह से इक्कीस पीढी तक) को एक दिन का अशौच होता है। जननाशौच में दस दिनों तक माता को स्पर्श नहीं करना चाहिये। पिता आदि स्नानोपरान्त स्पर्शयोग हो जाते हैं। कुछ आचार्यों ने जननाशौच को जाति या वर्ण के अनुसार माना है। जाते विप्रो दशाहेन द्वादशाहेन भूमिपः। वैश्यःपञ्चदशाहेन शूद्रो मासेन शुद्ध्यति।। किन्तु महर्षि प्रचेता के अनुसार सभी वर्णों की शुद्धि दस दिनों में ही होती है, जो लोक व्यवहार में अधिक प्रचलित है –"सूतिका सर्ववर्णेषु दशरात्रेण शुद्ध्यति। ऋतौ च न पृथक् शौचं सर्ववर्णेष्वयं विधिः।।" पुत्र जननाशौच में माता को बीस दिनों एवं कन्या जननाशौच में एक मास तक पाक क्रिया (भोजन बनाना), देव पूजन आदि कार्य नहीं करना चाहिये। मरा हुआ बालक पैदा हो तब भी पूर्ववत् ही अशौच समझना चाहिये।

२·बालकमरण मे अशौच :

बालक की मृत्यु दन्तोत्पत्ति काल तक होती है तो उसी क्षण, चौलकर्म (मुण्डन संस्कार) होने के बाद होती है तो तीन रात का अशौच होता है। यदि दाँत जमने के पूर्व ही चौलकर्म हो चुका हो तो उस बालक की मृत्यु पर तीन रात्रि का अशौच होता है एवं व्रतवन्ध होने के बाद मृत्यु होने पर दस दिनों का अशौच होता है। चौलकर्म के बाद मृत्यु होने पर शास्त्रों में अग्नि संस्कार करने का विधान है। "दन्तजातेऽनुजाते कृतचूडे च संस्थिते। अग्नि संस्करणे तेषां त्रिरात्रमशुचिर्भवेत्।। आदन्त जन्मतः सद्यः आचूडान्नैशिकी स्मृताः। त्रिरात्रमाव्रतादेशं दश रात्रमतः परम्।।" जन्म से दो वर्ष के भीतर बालक या कन्या की मृत्यु होने पर उसे जमीन में गाड़ देना चाहिये। इससे ऊपर की उम्र के सभी वर्णों के मृत बच्चों को दग्ध करने का विधान है –ऊनं द्विवार्षिकं बालं भूमावेव निधापयेत्। न द्विवर्षस्य कर्तव्याः बान्धवैरूदक क्रिया।। दो वर्ष तक के मृत बच्चों की श्राद्धादिक क्रिया बन्धु वर्गों को नहीं करनी चाहिये। तीन वर्ष से छः वर्ष तक तीन दिनों का अशौच, इसमें अग्निसंस्कार, पिण्डोदक क्रिया एवं चौथे दिन ब्राह्मण भोजन कराना चाहिये। इसके बाद यज्ञोपवीत हुआ हो अथवा नहीं सभी को दस दिनों का अशौच और श्राद्ध करना चाहिये।

३·कन्यामरणजन्य अशौच :–

सभी वर्णों में जन्म से लेकर चूडाकरण की अवधि पर्यन्त कन्या की मृत्यु होने पर तत्कालिक अशौच होता है। वाग्दान पर्यन्त मृत्यु होने पर एक दिन का अशौच, वाग्दान हो जाने पर दोनों पक्षों में तीन दिनों का अशौच होता है। विवाह के पश्चात् जननाशौच हो या मरणाशौच पतिकुल में ही होगा। जैसा कि कृत्यसम्मुच्चय में कहा है। आजन्मनस्तु चूडान्तं यत्र कन्या विपद्यते। सद्यः शौचं भवेत्तत्र सर्ववर्णेषु नित्यशः।। ततो वाग्दानपर्यन्तं यावदेकाहमेव हि। अतः परं प्रवृद्धानां त्रिरात्रिमिति निश्चयः। वाग्दाने च कृते तत्र चोभयतस्त्र्यहम्। कन्या यदि पति को छोड़कर स्वन्त्रता पूर्वक अन्य को पतिरूप में स्वीकार कर लेती है तब उसके मरने पर पूर्वपति को अशौच नहीं होता । कामादक्षत योनिश्चेदन्यं गत्वा व्यवस्थिता। कन्या तस्य सगोत्रा सा यं त्वाश्रितवती स्वयम्।। विवाहिता पुत्री का पिता या पति के घर में मृत्यु होने पर माता पिता को तीन दिनों का एवं भाई बान्धवों (पितृव्यादिकों) को एक दिन का अशौच होता है। भाई के घर में बहन एवं बहन के घर में भाई की मृत्यु होने पर परस्पर तीन दिनों का अशौच होता है।

४·जमातामरणजन्य अशौच :–

जामाता के घर में सास और श्वसुर के मरण में जामाता को तीन दिनों का अशौच एवं घर में न रहने पर डेढ़ दिन का अशौच जमाता को होता है तथा जमाता के मरण में सास श्वसुर को भी तीन दिनों का अशौच होता है। श्यालक (साला) एवं श्यालिका (सरहज) की मृत्यु में बहनोई को एक दिन का अशौच होता है।

५·सगेसम्बन्धीजन्य अशौच –

मौसी, बुआ, मामी, भाभी, ममेरा भाई, नानी, भगिनी आदि के मरण में (डेढ दिनों) का अशौच होता है। यदि इनकी अपने घर में मृत्यु हो तो तीन दिनों का अशौच होता है। पितामह, पितृव्य आदि के मरण में विवाहिता पुत्री को एक दिन का अशौच होता है। मातामह, मातामही, आचार्य एवं श्रोत्रियों के मरण में तीन दिनों का अशौच होता है। "त्र्यहं मातामहाचार्यश्रोत्रियेषु शुचिर्नरः।" शिल्पी, बढई, जुलहा, धोबी, चर्मकार, वैद्य, दासी, दास, राजा, श्रोत्रिय (वेदपाठी) इनको अशौच नहीं होता। मरण के तत्क्षण ही शुद्धि हो जाती है। शिल्पिनः कारुका वैद्या दासी दासश्च नापिताः। राजानः श्रोत्रियाश्चैव सद्यः शौचाः प्रकीर्तिताः।।

६·अशौच में त्याज्यकर्म :–

सन्ध्या, पञ्चमहायज्ञ (ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, भूतयज्ञ, मनुष्ययज्ञ) नित्यकर्म, स्मार्तकर्म, अशौच काल में नहीं करना चाहिये। सन्ध्यां पञ्चमहायज्ञान् नैत्यिकस्मृति कर्म च। तन्मध्ये हापयेत्तेषां दशाहान्ते पुनः क्रिया।। अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम्। होमो दैवो बलिर्भौतो नृयज्ञोऽतिथि पूजनम्।। श्राद्धं वा पितृयज्ञः स्यात् पित्रोर्बलिरथापि वा।।

७·सूतककाल निर्णय :–

सूर्योदय के पूर्व जन्म या मरण हो तो पूर्वदिन और सूर्योदय के बाद जन्म मरण हो तो उसी दिन से सूतक मानना चाहिये। अग्निहोत्रियों को शवदाह के दिन से तथा सामान्य लोगों को मरणदिन से सूतक लगता है। मरणादेव कर्तव्यः संयोगः तस्य नाग्निना। दाहादूर्ध्वमशौचं स्याद्यस्य वैतानिकोविधिः।।

८·अशौचपरिहारः–

संकल्पितव्रत, विवाह, संकल्पितयज्ञ, श्राद्ध, हवन अर्चन तथा जपादि के आरम्भ कर देने पर यदि किसी का जन्म या मरण हो तो तज्जन्य अशौच नहीं होता है। पूर्व कथित व्रतादि के प्रारम्भ होने के पूर्व जन्म या मरण होने पर अशौच होता है। व्रतयज्ञविवाहेषु श्राद्धे होमार्चनेजपे। आरब्धे सूतकं न स्यादनारब्धे तु सूतकम्।। आरम्भो वरणं यज्ञे संकल्पो व्रतजापयोः। नान्दीश्राद्धं विवाहादौ श्राद्धे पाकपरिक्रिया।। निमन्त्रणं तु वा श्राद्धे प्रारम्भः स्यादिति स्मृतिः।। इसी प्रकार यज्ञ में ब्राह्मणों का वरण हो जाने पर (व्रत और जप में संकल्प हो जाने पर) विवाहादि में नान्दीश्राद्ध हो जाने पर, श्राद्ध में पाक (भोजन) की प्रक्रिया शुरू हो जाने पर अथवा श्राद्ध ब्राह्मणों के निमंत्रण दे देने पर तत् तत् कार्यों का आरम्भ मान लिया जाता है।

९·अशौचद्वयसंक्रमणविचारः –

यदि जननाशौच में मरणाशौच हो या मरणाशौच में जननाशौच हो तो मरणाशौच के अन्तर्गत जननाशौच की निवृति हो जाती है। "मरणोत्पत्तियोगेतु गरीयो मरणं भवेत्।" "सूतिका सर्ववर्णेषु दशरात्रेण शुद्ध्यति" इस महर्षि वाक्य के अनुसार सभी वर्णों की शुद्धि दस दिनों में होती है। प्रथम सम्पूर्ण अशौच के मध्य में द्वितीय सम्पूर्ण अशौच होने पर प्रथम सम्पूर्ण अशौच का दो भाग करे। यदि प्रथम अशौच दिन से पाँचवें दिन तक द्वितीय अशौच हो तो प्रथम अशौच के साथ ही द्वितीय अशौच की शुद्धि हो जायेगी। यदि प्रथम अशौच के छठे दिन से नव दिन पर्यन्त द्वितीय अशौच हो तब द्वितीय अशौच कालान्त के साथ प्रथम अशौच की शुद्धि होती है। जैसा कि ब्रह्मपुराण में कहा गया है। आद्यं भागद्वयं यावत् सूतकस्य तु सूतके। द्वितीये पतति त्वाद्यात्सूतकात् शुद्धिरिष्यते।। दसवें दिन (रात्रि में) द्वितीय अशौच प्राप्त हो तो दो दिनों की अशौच वृद्धि होती है। तत् पश्चात् प्रथम एवं द्वितीय अशौच क्षौरकर्म एव श्राद्धादि कार्य साथ साथ सम्पादित करना चाहिये। रात्रि समाप्ति के बाद अर्थात् प्रातः काल द्वितीय अशौच में तीन दिनों की अशौच वृद्धि होती है। इसके बाद दोनों अशौच का एक साथ श्राद्धादि कार्य सम्पन्न करना चाहिये। "यदि दशरात्राः सन्निपतेयुराद्यं दशरात्रामाशौचमानवादिवशादतउर्ध्वं द्विरात्रेण व्युष्टायांत्रिरात्रेण इति"।

१०·अस्थिसञ्चय का काल :–

ब्रह्मपुराण के अनुसार शवदाह के पश्चात् ब्राह्मणों को चौथे दिन, क्षत्रियों को पाँचवे दिन, वैश्यों को सातवें दिन, शूद्रो को दशवें दिन देश काल के अनुसार अस्थि संचय करना चाहिये। दस दिनों के अशौच में सभी वर्णों को चौथे दिन, तीन दिन के अशौच में दूसरे दिन और सद्यः अशौच में उसी क्षण अस्थि संचय करना चाहिये। चतुर्थे ब्राह्मणानान्तु पञ्चमेऽहनि भूभुजाम्। सप्तमे वैश्यजातीनां शूद्राणां दशमेऽहनि।। कर्तव्यं तु नरैः श्राद्ध देशकालविधानतः।। श्राद्धविवेक के अनुसार स्नान के बाद हड्डियों पर पञ्चगव्य का छिड़काव कर सुवर्ण, मधु, घी और तिल मिलाकर मृतपिण्डक में रखकर दक्षिण दिशा की ओर देखते हुये "ॐ नमोधर्माय का उच्चारण करते हुये जल में प्रवेश कर प्रेत के स्वर्ग की कामना से "वह मुझपर प्रसन्न हो ऐसा कहकर जल में हड्डियों को डाल दें। ऐसा करने से मृत प्राणी कल्पकल्पान्तर तक स्वर्ग में निवास करता है – एवं कृते प्रेतपुरे स्थितस्य स्वर्गे गतिःस्यात्तुमहेन्द्रतुल्या। गङ्गातोयेषु यस्यास्थिप्लवते शुभकर्मणि। न तस्य पुनरावृत्तिः ब्रह्मलोकात् कदाचन।। दशाहाभ्यन्तरे यस्य गङ्गातोयेऽस्थि मज्जति। गङ्गायां मरणे यादृक् तादृक् फलमवाप्नुयात्।। यावदस्थि मनुष्याणां गङ्गातोयेषुतिष्ठति। तावद्वर्षसहस्राणि स्वर्गलोके महीयते।।

मृतशरीरस्याप्राप्ते विचारः–

अत्र देहस्यैव सम्भवे दाहः आहिताग्नौ मृते सति कलेवरं निधेयं नाग्निभिर्यावत्तदीयैरपि दह्यते। यदि शरीर (शव) प्राप्त हो तो उसका दाह ब्रह्मपुराण में कहा गया है किन्तु यदि शरीर प्राप्त न हो तो केवल अस्थियों का संग्रह कर उसमें घी लगाकर तथा कुशाओं से आच्छादित कर दाह संस्कार करें।

अस्थ्याद्यलाभे पलाशादिनादाहविधिकथनम् :–

अस्थ्यामलाभे पर्णानि शकलान्युक्तयावृता। दाहयेदस्थिसंख्यानि ततः प्रभृति सूतकम्।। यदि अस्थि की प्राप्ति न हो तो पलाश पता का पुतला वनाकर दाह संस्कार कर श्राद्ध करें।

कुर्याद्दर्भमयं प्रेतं दर्भैस्त्रिशतषष्टिभिः। पलाशीभिः समिद्भिर्वा संख्या चैवं प्रकीर्तिता।।

तीन सौ साठ कुशाओं से प्रेत बनावें और पलाश या समिधाओं की भी ३६० संख्या ही कही गई है।

तत्रपलाशादिना प्रेतरूपीदेहस्य कल्पना निर्णयसिन्धौ यथाः–चत्वारिंशत् शिरःस्थाने ग्रीवायां च दशैव तु। बाह्वोश्चैव शतं दद्याद्विंशतिं च तयोरसि।। उदरेविंशतिं दद्यात् त्रिंशतं कटिदेशयोः। ऊर्वोश्चैव शतं दद्यात्त्रिंशतं जानुजङ्घयोः। पादाङ्गुलीषु दशवै एषा च प्रेतकल्पना।।

पर्णप्रेतदाहसंस्कारे कालविचारः –

चतुर्दशी तिथिं नन्दा, भद्रा शुक्ररवासरौ। सितेज्ययोरस्तमयं द्वयङ्घ्रिमं विषमाङ्घ्रिमम्। शुक्लपक्षं च सन्त्यज्य पुनर्दहनमुत्तमम्। वसूत्तरार्धतः पञ्चनक्षत्रेषु त्रिजन्मसु।। पौष्णब्रह्मर्क्षयोश्चैव दहनात् कुलनाशनम्। तिथि १४,१,६,११,२,७, १२ तिथियो में शुकवार, मंगलवार, गुर्वस्त तथा शुक्रास्त, द्विपुष्करयोग, त्रिपुष्करयोग, शुक्लपक्षपंच, तीनों जन्मताराओं में, रेवती तथा रोहिणी नक्षत्र में पुत्तल दाह नहीं करना चाहिये। करने से कुल नाश होता है ।

प्रोषितस्य द्वादशाब्दातिक्रमे विचारः– प्रोषितस्य तथा कालो गतश्चेदद्वादशाब्दिकः। प्राप्ते त्रयोदशे वर्षे प्रेतकर्माणि कारयेत्।।

यदि परदेश (देशान्तर) मे गये बारह साल का समय हो गया होतो तेरहवें साल में प्रेत के कार्यो को करा देना चाहिए। बृहस्पति –यस्य न श्रूयते वार्ता यावद् द्वादशवत्सरात्। कुशपत्रकदाहेन तस्य स्यादवधारणा।। भविष्य पुराणे–पितरि प्रोषिते यस्य न वार्ता नैव चागमः। उर्ध्वं पञ्चदशाद्वर्षात्कृत्वा तत्प्रतिरूपकम्।। कुर्यात्तस्य तु संस्कारं यथोक्तं विधिनाततः। तदादीन्येव सर्वाणि प्रेतकार्याणि कारयेत्।। द्वादशाब्द प्रतीक्षा पितृभिन्न विषयेति मदनरत्नेउक्तम्। पिता के देशान्तर में जाने के बाद जिसकी बात और आगमन हुआ न सुना होतो पन्द्रह साल के बाद उसका प्रतिरूप (पुत्तल) बनाकर प्रेत के कार्यो को करना चाहिए।

देशान्तरमृतस्य दिनाद्यज्ञाने–पराशरः–देशान्तरगतो नष्टस्तिथिर्न ज्ञायतेयदि । कृष्णाष्टमी ह्यमावस्या कृष्णा चैकादशी तथा।। उदकं पिण्डदानं च तत्र श्राद्धं च कारयेत्। देशान्तर मे जाकर मरने पर जिसकी तिथि का ज्ञान न हो तो कृष्ण पक्ष की अष्टमी, अमावश्या एवं एकादशी तिथि में उदक दान, पिण्ड दान तथा श्राद्धकर्म कराना चाहिये।

श्राद्धकर्म के अधिकारी – विष्णुपुराण के अनुसार पुत्र, पौत्र, प्रपौत्र अथवा भाई के सन्तान श्राद्ध के अधिकारी होते है । पुत्र के अभाव में पत्नी, पत्नी के अभाव में सहोदर इनके अभाव में कन्या पुत्र, कन्या पुत्र के अभाव में कन्या श्राद्ध के अधिकारिणी होती है । पुत्रः पौत्रःप्रपौत्रोवातद्व भ्रातृसन्ततिः प्रपौत्राभावे पत्नी तदभावे सहोदरः। पुत्री (बेटी) के अभाव में ८ पीढ़ी तक श्राद्धाधिकारी होते हैं । मनु के अनुसार जल तर्पण का समान अधिकार चौदह पीढ़ी के बाद समाप्त हो जाता है ।

समानोदकभावस्तु निवर्तेता चतुर्दशात् ।

भद्रादि दोषपरिहारः – (विश्वप्रकाशे) भद्रायां भूमिदानं स्यात् त्रिपादर्क्षे हिरण्यदः। वारेषु तत्तद्वर्णं तु वासोदानं विधीयते ।। एकाशीति पलं कांश्यं तदर्द्धं वा तदर्द्धकम् । नव षट् त्रिपलं वापि दद्याद् विप्राय शक्तितः ।। भद्रा में प्रेत कर्म करने के लिए भूमिदान, त्रिपाद नक्षत्र में स्वर्ण दान, मंगलवार में लालवस्त्र, शुक्रवार में श्वेतवस्त्र, शनिवार मे कालावस्त्र दान, नक्षत्र पंचक में पंचरत्न दान तथा सभी दोषों के निवारणार्थ ८१ पल (१ पल=३८·८८ ग्राम) या उससे आधा चौथाई अथवा ९,६ या ३ पल कांसा महाब्राह्मण को दान कर दाह सम्पन्न करना चाहिए। अथ विवाहेवाग्दानानन्तरं कुलमध्ये कस्यचिन्मरणप्राप्ते विचारः– स्मृतिचन्द्रिकायाम्–मेधाः–१·वाग्दानान्तरं यत्र कुलयोः कस्यचिन्मृतिः। तदा संवत्सरादूर्ध्वं विवाहः शुभदो भवेत्।। २·कृतेवाङ्निश्चये पश्चान्मृत्युः भवति गोत्रिणः। तदा न मङ्गलं कार्यं नारीवैधव्यदं ध्रुवम्।। ३·पितुराशौचमब्दं स्यात्तदर्द्धमातुरेव च। मासत्रयं च भार्यायात्तदर्धं भातृपुत्रयोः।। विवाह निश्चित होने पर यदि पिता की मृत्यु हो जाय तो एक वर्ष का अशौच और माता में छः मास, भार्या के मरण में तीन मास एवं भाईपुत्र के मरने पर डेढ़ मास तक अशौच होता है। इसके वाद कन्या का विवाह हो सकता है। ४·पिता पितामहश्चैव माता वापि पितामही। पितृव्यस्त्रीसुतोभ्राता भगिनी वा विवाहिता।।

५·एभिरेव विपन्नैश्च प्रतिकूलं बुधैः स्मृतम्। अन्यैरपि विपन्नैश्च केचिदूचुर्न तद्भवेत्।। पिता, पिता के पिता (बाबा) माता, दादी, चाची, पुत्र, भ्राता या विवाहिता बहन में से किसी की मृत्यु होने पर प्रतिकूलता विद्धानों ने बतलायी है। इसके अतिरिक्त अन्य लोगों के विपन्न होने पर प्रतिकूलता नहीं होती।

६·प्रतिकूले सपिण्डस्य मासमेकं विवर्जयेत्। विवाहस्तु ततः पश्चात्तयोरेव विधीयते।।

प्रतिकूल दोषाभाव :– ७·दुर्भिक्षे राष्ट्रभङ्गे च पित्रोर्वा प्राणसंशये। प्रौढायामपि कन्यायां प्रतिकूलं न दुष्यति।।

८·दीर्घरोगाभिभूतस्य दूरदेशस्थितस्य च। उदासवर्तिनश्चैव प्रतिकूलं न विद्यते।।

९·संकटे समनुप्राप्ते याज्ञवल्क्येन योगिना। शान्तिरुक्ता गणेशस्य कृत्वा तां शुभमाचरेत्।। दाने विवाहे यज्ञे च संग्रामे देशविप्लवे। आपद्मपि च कष्टानां सद्यः शौचं विधीयते ।।

卐卐卐

अक्षांश - रेखांश सारिणी

स्थान	अक्षांश	रेखांश
बिहार		
आरा	२५.३४	८४.३२
औरङ्गाबाद	२४.४५	८४.२५
कटिहार	२५.३०	८७.४०
कहलगाँव	२५.१६	८७.१७
खगड़िया	२५.३१	८६.२७
गया	२४.४९	८५.०१
गोगरी	२५.२८	८६.३८
गोपालगञ्ज	२६.२८	८४.२६
छपरा	२५.४७	८४.४७
जमालपुर	२५.१९	८६.३२
जयनगर	२६.३६	८६.०८
जहानाबाद	२५.१३	८४.५९
जोगबनी	२६.२३	८७.१६
झञ्झारपुर	२६.१६	८६.१७
टेकारी	२५.४०	८५.१२
डुमराँव	२५.३३	८४.१२
दरभङ्गा	२६.१०	८५.५४
दानापुर	२५.३८	८५.०५
देहरी सोन	२४.५३	८४.१४
धञ्जाइन	२५.१४	८४.१३
नया दुमका	२४.३०	८७.२०
नवादा	२४.५३	८५.३५
नालन्दा	२५.०७	८५.२५
नौगछिया	२५.२४	८७.०६
पुपरी	२६.२८	८५.४२
पटना	२५.३७	८५.१३
पारसनाथ	२४.००	८६.११
पूर्णिया	२५.४९	८७.३१
फारबिसगञ्ज	२६.१८	८७.१६
बक्सर	२५.३४	८४.०१
बगहा	२७.०८	८४.०४
बरौनी	२५.२८	८५.५९
बहेड़ी	२५.५७	८६.०३
बाँकीपुर	२५.३६	८५.०७
बाढ़	२५.२९	८५.४३
बिरौलसुपौल	२५.५७	८६.१५
बेगूसराय	२५.२५	८६.०८
बेतिया	२६.४८	८४.३३
बोध गया	२४.४१	८५.०२
भभुआ	२५.०४	८३.३९
भागलपुर	२५.१५	८७.०२
मधुबनी	२६.२१	८६.०७
मधेपुर	२६.११	८६.२३
मधेपुरा	२५.५७	८६.५१
मुंगेर	२५.२४	८६.५९
मुजफ्फरपुर	२६.०७	८५.२७
मोकामा	२५.२४	८५.५५
मोतीहारी	२६.४०	८४.५५
रक्सौल	२६.५८	८४.५८
राजगीर	२५.०१	८५.२६
रोसड़ा	२५.४५	८६.०२
लालगञ्ज	२५.५२	८६.१०
लौकहा	२६.३३	८६.२८
शेखपुरा	२५.०९	८५.५३
समस्तीपुर	२५.५५	८५.५०
सहर्षा	२५.५४	८६.३६
सासाराम	२४.५७	८४.०३
सिमरियाघाट	२५.२५	८६.००
सीतामढ़ी	२५.४०	८५.१२
सीवान	२५.४०	८५.१२
सुगौली	२६.४७	८४.४८
सोनपुर	२५.४०	८५.१२
हाजीपुर	२५.४१	८५.१४
झारखण्ड		
गढ़वा	२४.१०	८३.५२
गिरिडिह	२४.१०	८६.२१
गोविन्दपुर	२३.५१	८६.३१
घाटशिला	२२.३५	८६.२८
चतरा	२४.१२	८४.५६
चायबासा	२२.३३	८५.५१
जमशेदपुर	२२.४८	८६.११
झरिया	२३.५०	८६.३३
डाल्टेनगञ्ज	२४.०२	८४.०४
डोरण्डा	२३.२२	८५.२२
तिलैया	२४.२०	८५.३१
देवघर	२४.२९	८६.४३
धनबाद	२३.४७	८६.३०
पकौर	२४.३८	८७.५४
पलामू	२३.५२	८४.१७
पालकोट	२२.५२	८४.४१
पोराहट	२२.३६	८५.२८
बरवा	२३.१०	८४.१६
बसिया	२२.५२	८४.५३
बोकारो	२३.५१	८६.०२
मधुपुर	२४.१८	८६.३७
मानखेरी	२३.४०	८४.३३
मेस्सनजोर	२४.०५	८७.२१
मैथन	२३.५४	८६.५४
राँची	२३.२३	८५.२३
राजमहल	२५.०३	८७.५३
रामगढ़	२३.३८	८५.३४
लोहरदग्गा	२३.२६	८४.४२
सरायकेला	२२.४२	८५.५८
सारण्डा	२२.१६	८५.१५
साहबगञ्ज	२५.१३	८७.४०
सिन्दरी	२३.३९	८६.३१
हजारीबाग	२३.५९	८५.२५
उत्तर प्रदेश		
अमरोहा	२८.५५	७८.२८
अमेठी	२६.०८	८१.५०
अयोध्या	२६.४७	८१.१२
अलीगढ़	२७.५४	७८.०४
अहरौरा	२५.०१	८३.०२
आगरा	२७.०९	७८.००
आजमगढ़	२६.०३	८३.१०
इटावा	२६.४६	७९.०२
इलाहाबाद	२५.२७	८१.५०
उन्नाव	२६.३२	८०.३०
एटा	२७.३३	७८.३९
कन्नौज	२७.०२	७९.५५
कानपुर	२६.२८	८०.४१
काशी	२५:१८:३८	८३:००:३८
गाजियाबाद	२८.४०	७७.२६
गाजीपुर	२५.३४	८३.३६
गोण्डा	२७.०८	८१.५८
गोरखपुर	२६.४५	८३.२३
चुनार	२५.०८	८२.५४
चित्रकूट	२५.१३	८०.४८
जालौन	२६.०९	७९.२०
जौनपुर	२५.४४	८२.४१
झाँसी	२५.२७	७८.३४
देवरिया	२६.३१	८३.४८
प्रतापगढ़	२५.५२	८२.०२
पीलीभीत	२८.३७	७९.४८
फर्रुखाबाद	२७.२३	७९.३५
बरेली	२८.२०	७९.२४
बलिया	२५.४५	८४.०९
बस्ती	२६.४८	८२.४४
बहराइच	२७.३५	८१.३६
बाँदा	२५.२८	८०.२०
बाराबङ्की	२६.५६	८१.११
बिजनौर	२६.४४	८०.५४
बुलन्दशहर	२८.३०	७७.४९
मथुरा	२७.२८	७७.४१
मिर्जापुर	२५.०९	८२.३४
मुजफ्फरनगर	२९.२८	७७.४२
मुरादाबाद	२८.५०	७८.४५
मुगलसराय	२५.१७	८३.०८
मेरठ	२९.००	७७.४२
मैनपुरी	२७.१४	७९.०१
रामपुर	२८.४८	७९.०३
रायबरेली	२६.१६	८१.१६
राबर्ट्सगञ्ज	२४.४२	८३.०४
लखनऊ	२६.५०	८०.५४
ललितपुर	२४.४२	७८.२४
वृन्दावन	२७.३३	७७.४४
शाहजहाँपुर	२७.५३	७९.५५
शिकोहाबाद	२७.०७	७८.३५
सहारनपुर	२९.५८	७७.३३
सारनाथ	२५.२३	८३.०२
सुल्तानपुर	२६.१५	८२.०४
हमीरपुर	२५.५७	८०.०८
हरदोई	२७.२३	८०.०६
हाथरस	२७.३६	७८.०२
छत्तीसगढ़		
अम्बिकापुर	२३.१०	८३.१५
कवर्धा	२२.००३	८१.०१५
कांकेर	२०.१७	८१.३०
कोरबा	२२.२२	८२.४६
चांपा	२२.०२	८२.४३
चलगली	२३.१८	८३.४२
चिन्तलनर	१८.२०	८१.१८
छुइखदान	२१.१३	८१.०२
जगदलपुर	१९.०४	८२.०५
जाञ्जगीर	२२.०२	८२.३३
जशपुरनगर	२२.५२	८४.१४
दन्तेवारा	१८.५४	८१.२८
डोङ्गरगढ़	२१.१२	८०.५०
दुर्ग	२१.११	८१.२१
धमतरी	२०.४२	८१.३४
धर्मजयगढ़	२२.२८	८३.१५
पण्डरिया	२२.१५	८१.२७
प्रतापपुर	१९.५९	८०.५०
पर्लाकोट	१९.४५	८०.४८
फुलझड़	२१.१४	८२.५४
बिझी	१८.०२	८१.२४
बिलासपुर	२२.०५	८२.१३
भिलाई	२१.१३	८१.२६
भोपालपटनम	१८.५०	८०.२४
महासमुन्द	२१.०६	८२.०६
महेन्द्रगढ़	२३.२१	८२.२१
रतनपुर	२२.१७	८२.११
राजनन्दगाँव	२१.०५	८१.०५
राजिम	२०.५९	८१.५५
रामकोला	२३.४०	८३.०८
रायगढ़	२१.५४	८३.२६
रायपुर	२१.१५	८१.४१
वैकुण्ठपुर	२४.४३	८१.२५
सक्ति	२२.०१	८३.००
सराइगढ़	२१.३६	८३.०७
सोनहट	२३.२९	८२.३०
सोनाखान	२१.३६	८२.३६
सुनकम	१८.२२	८१.४६
उत्तरांचल		
अल्मोड़ा	२९.३६	७९.४०
उत्तरकाशी	३०.४४	७८.१९
ऋषिकेश	३०.०७	७८.१६
केदारनाथ	३०.४४	७९.०३
गङ्गोत्री	३०.५६	७९.०२
गढ़वाल	३०.१३	७९.३०
टनकपुर	२९.१०	७८.५३
टिहरी	३०.२०	७८.५३
देहरादून	३०.१९	७८.०३
नैनीताल	२९.२३	७९.२७
पिथौरागढ़	२९.३५	८०.१२
बदरीनाथ	३०.४४	७९.२९
मसूरी	३०.२७	७८.०६
रानीखेत	२९.४०	७९.३३
रुड़की	२९.५२	७७.५३
रुद्रप्रयाग	३०.१६	७८.५९
हरिद्वार	२९.५८	७८.०९
हलद्वानी	२९.१३	७९.३१
हिमाचल प्रदेश		
कल्पा	३१.३३	७८.१६
कसौली	३०.५४	७६.५७
कुल्लू	३१.५८	७७.०६
कांगरा	३२.०४	७६.१६
चम्बा	३२.३१	७६.१०
डलहौजी	३२.३२	७६.०१
दागशाइ	३०.५३	७७.०४
धर्मशाला	३२.१६	७६.२३
नहान	३०.३३	७७.१८
बनेद	३१.३०	७६.५५
बिलासपुर	३१.१९	७६.४९
भाखराबांध	३२.०५	७६.५०
मण्डी	३१.४३	७६.५५
मनाली	३२.१६	७७.१०
सोलन	३०.५४	७७.०६
शिमला	३१.०६	७७.१३
हमीरपुर	३१.३८	७६.३६
मध्य प्रदेश		
अमरकंटक	२२.४०	८१.४८
ओरछा	२५.२१	७८.३८
इटारसी	२२.३०	७७.५५
उज्जैन महाकाल मन्दिर	२३:१०:५८	७५:४५:५७
उमरिया	२३.३०	८०.५२
कटनी	२३.४७	८०.२७
कालिञ्जर	२५.००	८०.२९
कोठी	२४.४५	८०.४६
खण्डवा	२१.५०	७६.२३
खजुराहो	२४.५०	७९.५८
खरगोन	२१.४९	७५.३९
गढ़ा	२४.२५	७८.०३
गुना	२४.४०	७७.२०
गुलगञ्ज	२४.४२	७९.२२
ग्वालियर	२६.१४	७८.१०
चन्देरी	२४.४२	७८.११
छतरपुर	२४.५४	७९.३८
छिन्दवारा	२१.१३	८१.०२
जबलपुर	२३.१०	७९.५९
जयसिंहनगर	२३.३८	७८.३३
जियावन	२४.२०	८२.१७
झबुआ	२२.४५	७४.३८
टीकमगढ़	२४.४५	७८.५३
डिंडोरी	२२.५७	८१.०९
तेन्दुखेड़ा	२३.०८	७८.५५
दतिया	२५.३९	७८.२७
दमोह	२३.५०	७९.२९
देवगढ़	२१.५१	७८.५०
देवास	२२.५८	७६.०६
धार	२२.३५	७५.२०
नरसिंहपुर	२२.५८	७९.१५
नागोद	२४.३३	८०.३७
नीमच	२४.२७	७४.५२
पचमढ़ी	२२.३०	७८.२२
पन्ना	२४.४४	८०.१४
बरदी	२४.३०	८२.२८
बालाघाट	२१.४८	८०.१५
बेतूल	२१.८८	७७.९८
बुरहानपुर	२१.१७	७६.१६
ब्योहरी	२४.०३	८१.२३
भिण्ड	२६.३६	७८.४६
भोपाल	२३.१६	७७.३६
मइहर	२४.१६	८०.४९
मउगञ्ज	२४.४०	८१.५३
मनगाँवा	२४.३९	८१.३३
मन्दसौर	२४.०३	७५.०८
माण्डला	२२.४३	८०.३५
माण्डू	२२.२२	७५.२४
मुरवारा	२३.५१	८०.०२
मोरेना	२६.२३	७८.०४
म्हो	२२.३४	७५.४७
रतलाम	२३.३१	७५.०७
राजगढ़	२४.००	७६.४७
रामनगरसतना	२४.१२	८१.१०
रामनगरमाडला	२२.३६	८०.३४
रायसेन	२३.१५	७७.५०
रीवा	२४.३१	८१.१९
लश्कर	२६.१०	७८.१०
विदिशा	२३:३१:२५	७७:४८:३५
शहडोल	२३.००	८१.३०
शाहपुर	२१.१३	७६.१५
शाहपुरा	२३.१०	८०.४५
शिवपुर	२५.३९	७६.४१
शिवपुरी	२५.४०	७७.४४
सतना	२४.३४	८०.५५
सागर	२३.५०	७८.५०
सिधि	२४.२०	८२.३९
सिहोरा	२३.२९	८०.०९
सेओनी	२२.०६	७९.३५
सेहोर	२३.१२	७७.००
सोदरपुर	२३.२४	७८.२९
सोहवल	२४.३५	८०.५०
होशङ्गाबाद	२२.४६	७७.४५
दिल्ली		
आजादपुर	२८.४२	७७.११
बादली	२८.४७	७७.०६
नई दिल्ली	२८.३८	७७.१२
नरैना	२८.३७	७७.०८
नरेला	२८.५०	७७.०५
पालमअड्डा	२८.३४	७७.०४
शाहदरा	२८.४०	७७.१८
शकूरपुर	२८.४१	७७.०८
सीरी	२८.३२	७७.१३
राजस्थान		
अजमेर	२६.२७	७४.३८
आबू	२४.३९	७२.४७
उदयपुर	२४.३५	७३.४४
कोटा	२५.१०	७५.५२
चित्तौरगढ़	२४.५३	७४.३८
चुरु	२८.१८	७४.५८
जयपुर	२६.५५	७५.४९
जैसलमेर	२६.५५	७०.५७
जोधपुर	२६.१८	७३.०२
धौलपुर	२६.४२	७७.५६
बीकानेर	२८.०१	७३.१९
मारवाड़	२५.४३	७३.४५
रतनगढ़	२८.०५	७४.३९
हरियाणा		
अम्बाला	३०.२३	७६.४६
थानेश्वर	२९.५९	७६.४९
कुरुक्षेत्र	२२.३५	८८.२३
फरीदाबाद	२८.२५	७७.२२
गुरगाँव	२८.३७	७७.०४
हिसार	२९.१०	७५.४४
पानीपत	२९.२३	७७.०१
रोहतक	२८.५४	७६.३४
अन्य स्थान		
अगरतला	२३.४९	९१.१७
अहमदाबाद	२३.०२	७२.३६
अमृतसर	३१.३८	७४.५३
आसनसोल	२३.४२	८६.५८
बङ्गलूर	१२.५८	७७.३६
भुवनेश्वर	२०.१५	८५.५०
कन्याकुमारी	८.०४	७७.३४
चण्डीगढ़	३०.४४	७६.५३
चेन्नइमद्रास	१३.०४	८०.१५
कोचीन	९.५८	७६.१५
कोयम्बटुर	११.००	७६.५६
कटक	२०.२९	८५.५२
द्वारका	२२.१४	६९.५८
गौहाटी	२६.१०	९१.४५
होशियारपुर	३१.३२	७५.५७
हावड़ा	२२.३६	८८.१९
हैदराबाद	१७.२६	७८.२७
जालन्धर	३१.२०	७५.३४
जम्मू	३२.४३	७४.५२
कांचीपुरम	१२.५०	७९.४२
कोलकाता (प्रेसिडेंसी कॉलेज वेधशाला)	२२.३५	८८.२३
मदुरै	९.५८	७८.१०
मुम्बई	१८.५८	७२.५४
नागपुर	२१.०९	७९.०५
पोर्टब्लेयर	११.४०	९२.४६
पूणे	१८.३१	७३.५३
पुरी	१९.४८	८५.५०
रामेश्वरम	९.१८	७९.१८
शिलाङ्ग	२५.३५	९१.५३
श्रीनगर	३४.०६	७४.४८
सूरत	२१.१०	७२.५१
तञ्जौर	१०.४७	७९.०८
तिरुचिरापल्ली	१०.५०	७८.४२
तिरुपति	१३.४०	७९.२०
तिरुवनन्तपुर	०८.३१	७७.००
वडोदरा	२२.१८	७३.१३
विशाखापटनम	१७.४३	८३.१९
ढाका	२३.४३	९०.२५
बिराटनगर	२६.२९	८७.१७
काठमाण्डू	२७.४२	८५.१९
कोलम्बो	६.५६	७९.५२
कराँची	२४.५२	६७.०३
लाहौर	३१.३५	७४.१८
मुल्तान	३०.१२	७१.२८

विषुवत् से कोणीय दूरी को अक्षांश एवं ग्रीनविच से दूरी रेखांश है। प्राचीन भारत में उज्जैन से रेखांश मापते थे।❀

दरभंगा का रेखांस ८५:५४
दरभंगा का अक्षांस २६:१०
ये रेखांस दरभंगा है।
भारत का मानक
रेखांस ८२:३०
८५:५४–८२:३० = ०३:२४
१ अक्षांस = ४ मिनट
३:२४ × ४=+१३:३६ मि.।

शवशादायुर्बोधक चक्रम् :

दीर्घायुः	मध्यायुः	अल्पायुः
चरभे १ लग्नेशः चरभे १ अष्टमेशः	चरभे १ लग्नेशः स्थिरभे २ अष्टमेशः	चरभे १ लग्नेशः द्विस्वभावभे ३ ष्टमेशः
स्थिरभे २ लग्नेशः द्विस्वभावभे ३ ष्टमेशः	स्थिरभे २ लग्नेशः चरभे १ अष्टमेशः	स्थिरभे २ लग्नेशः स्थिरभे २ अष्टमेशः
द्विस्वभावभे ३ लग्नेशः स्थिरभे २ अष्टमेशः	द्विस्वभावभे ३ लग्नेशः द्विस्वभावभे ३ अष्टमेशः	द्विस्वभावभे ३ लग्नेशः चरभे १ अष्टमेशः

आयु निर्णय – १.लग्नेश अष्टमेश,२.शनि चन्द्र,३.लग्न, होरा लग्न से आयु का निर्णय करना चाहिए । लग्न एवं सप्तम भाव में चन्द्र होने पर शनि तथा चन्द्र से आयु निर्णय करना चाहिए । यदि ऐसा न हो तो होरा लग्न से आयु का निर्णय करना चाहिए ।चरे चरस्थिरद्वन्द्वाः स्थिरे द्वन्द्वचरः स्थिराः।द्वन्द्वे स्थिरद्वन्द्वचराः दीर्घमध्याल्पकाः क्रमात्।यदि लग्नेश अष्टमेश दोनों चर राशि में हों तो दीर्घायु, लग्नेश चर में अष्टमेश स्थिर में हो तो मध्यामायु, लग्नेश चर में और अष्टमेश द्विस्वभाव में हो तो अल्पायु होती है । इसी प्रकार उपर्युक्त चक्र से आयु का निर्णय करना चाहिए ।दीर्घायु के भेद–तीन प्रकार के दीर्घायु में १२० वर्ष, दो में १०८ वर्ष और एक में ९६ वर्ष की आयु होती है ।मध्यामायु के भेद–तीन प्रकार के मध्यामायु में ८० वर्ष, दो प्रकार के मध्यामायु में ७२ वर्ष एवं एक प्रकार के मध्यामायु में ६४ वर्ष होते है ।अल्पायु के भेद–त्रिविध अल्पायु में ४८वर्ष से ६३ तक, दो प्रकार में ३६ से ४७ वर्ष और एक में ३६ वर्ष से ३२ तक की आयु जानना चाहिए ।३२ से नीचे योगारिष्ट एवं बालारिष्ट जानना चाहिये ।आयुज्ञान की अन्य विधि – अल्पायुर्दिननाथस्य शत्रुलग्नाधिपो यदि।समत्वे मध्यमायुःस्यात् मित्रे दीर्घायुरादिशेत् । यदि लग्नेश सूर्य का शत्रु हो तो अल्पायु, सम हो तो मध्यायु एवं मित्र हो तो जातक दीर्घायु होता है। यदि द्वितीयेश और अष्टमेश में बलवान होकर जो केन्द्र (१,४,७,१०) में स्थित हो तो दीर्घायु, पणफर (२,५,८,११) में होने से मध्यायु और आपोक्लिम (३,६,९,१२) में हो तो जातक अल्पायु होता है।लग्नेश, दशमेश और अष्टमेश ये तीनो बलवान हो तो दीर्घायु, दो बली हो तो मध्यायु,इन तीनों में से एक बली हो तो जातक अल्पायु होता है ।**मारकेश निर्णयः**–पराशर के अनुसार द्वितीय एवं सप्तम स्थान मारक स्थान होता है । इसमें सप्तम की अपेक्षा द्वितीय प्रबल मारक होता है । द्वितीयेश, सप्तमेश और द्वितीय, सप्तम स्थान में स्थित पापग्रह एवं द्वितीयेश, सप्तमेश के साथ रहने वाले पापग्रह ये सभी मारक होते हैं। षष्ठ, अष्टम एवं द्वादश स्थान के अधिपति कष्टदायक होते हैं।व्ययेश एवं व्यय से सम्बन्धित ग्रह गौण रुप से मारक होते हैं। ३,६,८,११,१२ स्थान के अधिपति मारक स्थान में हों तो वे भी मारक होते हैं । यदि आयु खण्ड में उक्त मारक का समय प्राप्त न हो तो द्वादशेश सम्बन्धी शुभग्रह, अष्टमेश, मारकेश के सम्बन्धी अथवा केवल मारक ग्रह की दशा में निधन होता है।यदि शनि पाप फलद हो और उसका मारकेश के साथ सम्बन्ध हो तो वह स्वयं मारक होता है।मारकेश की दशा में षष्ठेश,अष्टमेश और द्वादशेश की अन्तर्दशा आदि में विशेष मृत्यु की सम्भावना होती है।कभी–कभी षष्ठेश की दशा भी मारक होती है।मारक ग्रहों में विशेष बलीग्रह की प्रधानता रहती है।राहु और केतु १,७,८,१२ में हों या मारकेश से सातवें अथवा मारकेश से साथ हों तो मारक होते हैं।यदि राहु ६,८,१२ में हो तो कष्टप्रद होता है । गुरु और शुक्र यदि केन्द्रेश होकर मारक स्थान में हों तो विशेष अशुभ होते हैं।सूर्य एवं चन्द्र को अष्टमेश का दोष नहीं होता है। लग्नेश का सम्बन्ध यदि २,३,६,७,८,१२ इन स्थानों के अधिपतियों के साथ हो तो शारीरिक कष्ट होता है।यदि लग्नेश का सम्बन्ध शुभग्रह से हो तो अनिष्ट फल कम होता है।

–: ग्रहों की शान्ति हेतु यजुर्वेदीय शान्ति मन्त्र न्यासध्यान सहितः–

सूर्यः–आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्न मृतम्मर्त्त्यंश्च।हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।हृदयादिन्यासः–आकृष्णेन रजसा हृदयाय नमः।वर्त्तमानो निवेशयन्न शिरसे स्वाहा।अमृतं मर्त्त्यंश्च शिखायै वषट्।हिरण्ययेन कवचाय हुँ।सविता रथेना नेत्रत्रयाय वौषट्।देवो याति भुवनानि पश्यन् अस्त्राय फट्।ध्यानम्–पद्मासनः पद्मकरो द्विबाहुः पद्मद्युतिः सप्ततुरङ्गवाहनः।दिवाकरो लोकगुरूः किरिटी मयि प्रसादं विदधातु देवः।।

चन्द्रमाः–ॐ इमन्देवा असपत्नꣳसुबध्वं महते क्षत्राय महते ज्येष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय।इमममुष्य पुत्रममुस्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानांꣳराजा।विनियोगः–इमन्देवेतिमन्त्रस्य गौतम ऋषिः,सोम देवता,विराट् छन्दः, सोमप्रीत्यर्थे जपे विनयोगः।ॐ इमन्देवा असपत्नꣳसुबध्वं हृदयाय नमः।महते क्षत्राय महते ज्येष्ठ्याय शिरसे स्वाहा।महते जानराज्याय इद्रस्येन्द्रियाय शिखायै वषट्।इमममुष्य पुत्रममुस्यै पुत्रमस्यै कवचाय हुँ।विश एष वोऽमी राजा नेत्रत्रयाय वौषट्।सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानांꣳराजा अस्त्राय फट्।ध्यानम्:– श्वेताम्बरः श्वेतविभूषणश्च श्वेतद्युतिर्दण्डधरो द्विबाहुः। चन्द्रोऽमृतात्मा वरदः किरिटी मयि प्रसादं विदधातु देवः।।

मङ्गलः–ॐ अग्नि मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽ अयमपा ꣳ रेताꣳसिजिन्वति॥
विनियोगः–ॐ अग्निर्मूर्द्धेति मन्त्रस्य विरूपाङ्गिरस ऋषिः,अग्निर्देवता,गायत्री छन्दः भौमप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।हृदयादिन्यासः– ॐ अग्नि मूर्द्धा हृदयाय नमः।दिवः ककुत् शिरसे स्वाहा। पतिः शिखायै वषट्।पृथिव्याऽअयं कवचाय हुँ।पा ꣳ रेताꣳसि नेत्रत्रयाय वौषट्।जिन्वति अस्त्राय फट्।ध्यानम्:–रक्तम्बरो रक्तवपुः किरिटी चंतुर्भुजो मेषगतो गदाभृत्।धरासुतः शक्तिधरश्च शूली सदायमस्यद्वरदः प्रसन्नः।।

बुधः–ॐ उद्बुध्यस्वाग्नेः प्रतिजागृहि त्वमिष्टा पूर्त्तेस ꣳ सृजेथामयञ्च।अस्मिन्त्सधस्ते अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत।विनियोगः–ॐ उदुध्यस्वेति मन्त्रस्य परमेष्ठी प्रजापति ऋषिः,त्रिष्टप्छन्दः बुधो देवता,बुधप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। हृदयादिन्यासः–ॐउद्बुध्यस्वाग्नेः प्रतिजागृहि त्व हृदयाय नमः।ष्टिा पूर्त्ते शिरसे स्वाहा।सꣳसृजेथामयञ्च शिखायै वषट्।अस्मिन्त्सधस्ते अध्युत्तरस्मिन् कवचाय हुँ।विश्वेदेवा यजमानश्च नेत्रत्रयाय वौषट्।सीदत अस्त्राय फट्।ध्यानमः– पीताम्बरः पीतवपुः किरीटी चतुर्भुजो दण्डधरश्च हरी।चर्मासिधृक् सोमसुतो गदाभृत् सिंहाधिरूढो वरदो बुधश्च।।

गुरुः–ॐबृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्युम द्विभाति क्रतुमज्जनेषु।यद्दीदयच्छवस ऋत प्रजात तदस्मासु द्रविणन्धेहि चित्रम्॥ विनियोगः–ॐ बृहस्पतेति मन्त्रस्य गृत्समद ऋषिः,अनुष्टुप्छन्दः,ब्रह्मा देवता, बृहस्पतिप्रीतयर्थे जपे विनियोगः।हृदयादिन्यासः–ॐ बृहस्पते अतियदर्यो हृदयाय नमः।अर्हाद्युम द्विभाति शिरसे स्वाहा।क्रतुमज्जनेषु शिखायै वषट्। यद्दीदय च्छवस कवचाय हुँ।ऋत प्रजात तदस्मासु नेत्रत्रयाय वौषट्। द्रविणन्धेहि चित्रम् अस्त्राय फट्।ध्यानम्:–पीताम्बरः पीतवपः किरीटी चतुर्भुजो देवगुरूः प्रशान्तः। तथाऽक्षसूत्रं च कमण्डलुश्च दण्डश्च बिभ्रद्वरदोऽस्तु मह्यम्।।

शुक्रः–ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिवत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ꣳ शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु।विनियोगः–अन्नात्परिस्रुतेति मन्त्रस्य प्रजातिऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः शुक्रो देवता शुक्र प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।हृदयादिन्यासः–ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं हृदयाय नमः।ब्रह्मणा व्यपिवत्क्षत्रं शिरसे स्वाहा।पयः सोमं प्रजापतिः शिखायै वषट्।ऋतेन सत्यमिन्द्रियं कवचाय हुँ। विपान ꣳ शुक्रमन्धस नेत्रत्रयाय वौषट्। इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु अस्त्राय फट्। ध्यानम्:–ॐ सन्तप्तकाञ्चननिभं द्विभुजं दयालं पीताम्बरं धृतसरोरूह केशयुग्मम्।क्रौञ्चासनं असुरसेवितपादपद्म शुक्रं भजे द्विनयनं हृदि पंकजेऽहम्।।

शनिः–ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।शंयोरभिस्रवन्तु नः॥विनियोगः–शन्नो देवीति मन्त्रस्य सिन्धुद्वीप ऋषिः,गायत्रीछन्दः आपो देवता,शनिप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। हृदयादिन्यासः–ॐ शन्नो देवी हृदयाय नमः।रभिष्टय शिरसे स्वाहा।आपो भवन्तु शिखायै वषट्।पीतये कवचाय हुँ।शंयोरभि नेत्रत्रयाय वौषट्। स्रवन्तु नः अस्त्राय फट्।ध्यानम्:– नीलाञ्जनसमाभासं रविपुत्र यमाग्रजम्।छायामार्तण्ड सम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम् ।।नीलाम्बरः शूलधरः किरीटी गृध्रस्थितस्त्रासकरो धनुष्मान्।चतुर्भुजः सूर्यसुतः प्रशान्तः सदाऽस्तु मह्यं वरदोऽल्पगामी।।

राहुः–ॐ कयानश्चित्र आभुवदूती सदावृधः सखा।कयाशचिष्टया वृता॥विनियोगः–कया नश्चित्रेति मन्त्रस्य वामदेव ऋषिः,गायत्रीछन्दः, राहुर्देवताः,राहुप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।हृदयादिन्यासः–ॐ कयानः हृदयाय नमः।चित्र आ शिरसे स्वाहा। भुवदूती शिखायै वषट्। सदावृधः सखा कवचाय हुँ। कया नेत्रत्रयाय वौषट्।शचिष्टया वृता अस्त्राय फट्।ध्यानम्:–नीलाम्बरो नीलवपुःकिरीटी करालवक्त्रः करवालशूली। चतुर्भुजश्चक्रधरश्च राहुः सिंहाधिरूढो वरदोऽसतु मह्यम्।।

केतुः–ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशोमर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः ॥विनियोगः– केतुं कृण्वन्निति मन्त्रस्य मधुच्छन्द ऋषिः,गायत्रीच्छन्दः,केतुप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। हृदयादिन्यासः–ॐ केतुं कृण्वन्न हृदयाय नमः।अकेतवे शिरसे स्वाहा।पेशोमर्या शिखायै वषट्।अपेशसे कवचाय हुँ।समुषद्भिः नेत्रत्रयाय वौषट्।अजायथाः अस्त्राय फट्। ध्यानम्:– धूम्रो द्विबाहुर्वरदो गदाधरो गृध्रासनस्थो विकृताननश्च ।किरीट केयूरविभूषितो यः सदाऽस्तु में केतुगणः प्रशान्तः।

-: ग्रहो के शान्ति हेतु वारव्रत विधि :-

यदि किसी जातक की कुण्डली में अशुभ ग्रह की स्थिति हो अथवा अशुभ ग्रह की दशा अन्तर्दशा चल रही हो तो निम्नलिखित विधि अनुसार अनिष्ट ग्रह की शान्ति हेतु तत्तद् व्रत रखने से कल्याण होता है।

रविवारव्रतविधि – समस्त कामनाओं की सिद्धि, नेत्र रोग और कुष्ठादि चर्म व्याधियों के नाश एवं आयु व सौभाग्य की वृद्धि के लिए रविवार का व्रत किया जाता है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम रविवार से प्रारम्भ करके एक वर्ष पर्यन्त अथवा कम से कम बारह व्रत करे। व्रत के दिन केवल गेहूँ की रोटी अथवा गुड़ से बना दलिया घी शक्कर के साथ भोजन करे। भोजन से पूर्व स्नानान्तर शुद्ध वस्त्र धारण करके ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः बीजमंत्र का जप पांच माला करे। फिर रविवार कथा श्रवण करे। तत्पश्चात सूर्य को गन्धाक्षत, लालफूल, दूर्वायुक्त जल से निम्न मन्त्र पढ़ते हुए अर्घ्य दें। ॐ नमः सहस्रकिरण सर्वव्याधिः विनाशनम्। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं संज्ञया सहितो रवे ।। फिर प्रदक्षिणा करके लाल चन्दन का तिलक लगाये अन्तिम रविवार हवन के पश्चात् ब्राह्मण दम्पति को भोजन कराकर यथाशक्ति लाल वस्त्र फल पुष्पादि एवं दक्षिणा दे ।

सोमवारव्रतविधि– यह व्रत श्रावण, चैत्र, वैशाख, कार्तिक या मार्गशीर्ष के महीनों के शुक्लपक्ष के प्रथम सोमवार से प्रारम्भ करना चाहिए। इस व्रत को पांच वर्ष, चौदह वर्ष अथवा सोलह सोमवार पर्यन्त श्रद्धा के साथ विधि पूर्वक धारण करे। चैत्र शुक्लाष्टमी तिथि आर्द्रा नक्षत्र सोमवार को अथवा श्रावण मास के प्रथम सोमवार को प्रारम्भ करने का विशेष माहात्म्य है। व्रतारम्भ करने वाले स्त्री पुरूष को चाहिए कि प्रातः काल जल में कुछ सफेद तिल डालकर स्नान करे। स्नानान्तर "ॐ नमः शिवाय" – आदि शिव मन्त्रों द्वारा तथा श्वेत फूलों, सफेद चन्दन, पंचामृत अक्षत, सुपारी, फल, गंगाजल, बिल्व पत्रादि से शिव–पार्वती का पूजन करे और पूजनोपरान्त ब्राह्मण को दान दक्षिणा देकर स्वयं भोजन करे। भोजन एक समय नमकरहित होना चाहिये। व्रत का उद्यापन भी उपरोक्त महीनों में करना श्रेयस्कर होता है। उद्यापन में दशांश जप का हवन करके सफेद पदार्थ, दूध, दही, चाँदी, सफेद फलों का दान करना चाहिये। यह व्रत करने से मानसिक शान्ति, धन, पुत्रादि सुखों की प्राप्ति तथा सर्व प्रकार के कष्टों से मुक्ति मिलती है।

मंगलवारव्रतविधि– यह व्रत पुत्र प्राप्ति के लिये, स्वास्थ्य की रक्षा के लिये, शत्रु, रोग, ऋण एवं भौमजन्य समस्त बाधाओं की निवृत्ति के लिए किया जाता है। यह व्रत शुक्लपक्ष के प्रथम मंगलवार से प्रारम्भ करके २१सप्ताह तक अथवा यथा शक्ति जीवन पर्यन्त रखें। इस व्रत में गेहूं और गुड़ सहित भोजन करे। भोजन एक समय नमकरहित करना चाहिये। व्रत में श्री हनुमान जी की लाल पुष्पों, फलों, ताम्र वर्तन और नारियल द्वारा पूजा व दान तथा श्री हनुमान चालीसा का पाठ करना चाहिए। "ॐ क्रां क्रीं, क्रौं सः भौमाय नमः का ५ माला जप करना चाहिए और गुड़, पीले लड्डुओं व लाल वस्त्रों का यथा शक्ति दान करना चाहिए।

बुधवारव्रतविधि – यह व्रत बुध ग्रह की शान्ति तथा धन, बुद्धि, विद्या और व्यापार में वृद्धि के लिए किया जाता है। यह व्रत विशाखा नक्षत्र युक्त बुधवार से प्रारम्भ कर सात अथवा प्रति बुधवार को करें। व्रत के दिन स्नानोपरान्त हरा वस्त्र पहनकर श्री विष्णु सहस्रनाम का पाठ तथा "ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः" का जप करना चाहिए। बुधवार के दिन एक समय नमक रहित भोजन घी, मूंग अथवा मूंग से बने मिष्ठान्न का दान कर, स्वयं भी इन वस्तुओं का भोजन करे। अन्तिम बुधवार मधु, दही और घृत के साथ हवन करे तदन्तर हरा वस्त्र, फल आदि का दान करे एवं गाय को हरा घास, शाकादि खिलाये ।

बृहस्पतिवारव्रतविधि – यह व्रत गुरू ग्रह की शान्ति, वैवाहिक सुख, विद्या सुख, सन्तानसुख एवं धन प्राप्ति के लिए उत्तम होता है। यह व्रत शुक्लपक्षीय अनुराधा नक्षत्र युक्त गुरुवार से करना चाहिए। यह व्रत ७ मास १३ मास अथवा १३ वर्ष तक करना चाहिए। स्नानोपरान्त पीला वस्त्र, पीला यज्ञोपवीत धारण करके बृहस्पति की पूजा स्वयं अथवा श्रेष्ठ ब्राह्मण द्वारा करवानी चाहिए। इस व्रत में पीले लड्डू का भोग लगायें तथा पादुका, उपानह, छाता, कमण्डलु, पीले रंग के पुष्प, चने की दाल, पीले कपड़े, पीला चन्दन, हल्दी व पीले चावल का दान करना चाहिए। तदन्तर केले के वृक्ष का पूजनकर, "ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः मंत्र का ५ माला जप कर नमक रहित भोजन करे। उद्यापन में दशांश मधु, दधि, घृत एवं हवनीय सामग्री द्वारा हवन करना चाहिए।

शुक्रवारव्रतविधि – यह व्रत धनप्राप्ति, वैवाहिक सुख, सन्तानजन्य सुख एवं भौतिक सुखों के लिए किया जाता है। यह व्रत श्रावण मास के प्रथम शुक्रवार से प्रारम्भ करना चाहिए। व्रत के दिन स्नानोपरान्त सफेद वस्त्र धारण कर श्रीलक्ष्मी की पूजा धूप, दीप, श्वेत चन्दन, चावल, श्वेत पुष्प, चीनी, सुपारी आदि से पूजा कर "ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः" की तीन माला का जप करे। बच्चों को श्वेत मिठाई, फल आदि दे एवं स्वयं भी एक समय नमक रहित भोजन करे। उद्यापन हवनादि के पश्चात् ब्राह्मण बटुक को खीर से युक्त भोजन करावे एवं श्वेत वस्त्र, खाण्ड चावल, चांदी, फल, सफेद पदार्थ, द्रव्यादि का दान करे।

शनिवारव्रतविधि – यह व्रत शनिग्रहजन्य अरिष्ट शान्ति, जीर्ण रोग, शत्रुभय, आर्थिक संकट एवं मानसिक सन्ताप के निवृत्ति के लिए किया जाता है। इसके करने से धन धान्य, व्यापार में उत्तरोत्तर वृद्धि होती है। यह व्रत श्रावणशुक्ल के प्रथम शनिवार से करना चाहिए। इस व्रत में लौह निर्मित शनिप्रतिमा को सविधि पूजन कर, "ॐ शं शनैश्चराय नमः" मन्त्र का कम से कम तीन माला का जप करना चाहिए। व्रत के दिन व्रती को नीला वस्त्र धारण करना चाहिए एवं तिल, नीलापुष्प, लौंगतेल, गंगाजल, दूध एक बर्तन में रखकर पश्चिमाभिमुख होकर पीपल की जड़ में डाले। इस व्रत में शिवोपासना या हनुमान जी की उपासना करे एवं शनि स्तोत्र का पाठ करे। १९ शनिवार के उपरान्त सविधि हवन कर उद्यापन करे। तदन्तर किसी शनि का दान लेने वाले को उड़द एवं तेल आदि से निर्मित पदार्थ, जूते, जुराव, नीलवस्त्र, ऊनी वस्त्र, तेल, स्वर्ण एवं लौह सामग्री का दान कर। उड़द, तैलादि से बने पकवान का भोजन करे।

राहुग्रह का अरिष्ट निवारण भी शनिव्रत से होता है। इसमें राहुबीजमन्त्र का जप करना उत्तम होता है। ब्राह्मणों को दान में नारियल, कम्बल, नीलावस्त्र, द्रव्यादि देना एवं पक्षियों को चारा खिलाना चाहिए।

केतु ग्रह की शान्ति हेतु "ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः मंत्र का कम से कम पांच माला जप एवं मंगलव्रत करना चाहिए।

अनिष्टग्रहाणां दानम्

ग्रह	सूर्यदानम्	चन्द्रदानम्	भौमदानम्	बुधदानम्	गुरूदानम्	शुक्रदानम्	शनिदानम्	राहुदानम्	केतुदानम्
दान वस्तु	माणिक्य गेहूँ, गुड़ सवत्सागौ कमल पुष्प लालचन्दन लाल वस्त्र सोना, ताँबा केसर, मूँगा दक्षिणा	घृत चावल श्वेत वस्त्र श्वेत चन्दन श्वेत पुष्प चाँदी, शंख दधि मोती, कपूर दक्षिणा	मूँगा, भूमि मसूर की दाल लाल वृष, गुड़ लाल चन्दन लाल वस्त्र लाल पुष्प सुवर्ण ताम्र केशर, कस्तूरी दक्षिणा	कांस्यपात्र हरितवस्त्र गजदंतघृत मूँग, पन्ना सुवर्ण, सर्वपुष्प कपूर अनेक फल षट्रस दक्षिणा	चने की दाल पीत वस्त्र सुवर्ण, घृत पीत पुष्प पुखराज हरदी, पुस्तक, मधु लवण, शर्करा भूमि, छत्र, दक्षिणा	तण्डुल श्वेतचन्दन श्वेत वस्त्र श्वेत पुष्प हीरा, रजत घृत, सुवर्ण श्वेताश्व दधि, श्वेतगौ दक्षिणा	माष, तैल नीलम, तिल कृष्णवस्त्र कुरथी, लोह कृष्णधेनु कृष्णपुष्प उपानह कस्तूरी, सुवर्ण दक्षिणा	माषान्न कस्तूरी हेमनाग गोमेद नीलवस्त्र छूरी, तिल तैल, लोह सूप, कम्बल सप्तधान्य दक्षिणा	माषान्न कम्बल वैदूर्य मणि कस्तूरी, तिल लोह, बकरा शस्त्र, सुवर्ण कृष्णपुष्प सप्तधान्य दक्षिणा
औषधि स्नान	मनसिल वड़ीइलायची देवदारू केसर, शहद कमल फूल लाल फूल	पंचगव्य, हाथी का मद शंखजल, सीप, श्वेत कमल	बेल, चन्दन, बला औषधि, लाल फूल, ईगुर, इन्द्रपुष्पी, मोलसरी, जटामासी	गोबर, चन्दन, चावल, फल, शहद, सीप, सुवर्ण	मिश्र बन्धु, शहद, बड़ी इलायची, मनसिल	बड़ी इलायची, मनसिल, फल, मूल, केसर	काली तिल, अञ्जन, लोध, बला, सौंफ, धान के लावा	लोध्र, कुश, तिल का पत्ता मुस्ता, हाथी का मदजल, हिरन की नाभि का जल	लोध्र, कुश, तिल का पत्ता मुस्ता, हाथी का मद जल, हिरन की नाभि जल एव बकरे का मूत्र
औषधि धारण.	बेलपत्र की जड़	खिरनी की जड़	अनन्त की जड़	बिधारा की जड़	नारंगी या केले की जड़	सरपोंखा की जड़	बिच्छू की जड़	सफेद चन्दन की जड़	असगंधा की जड़
	गुलाबी धागा	सफेद धागा	लाल धागा	हरा धागा	पीला धागा	सफेद धागा	काला धागा	नीला धागा	आसमानी धागा
	सूयेवार	चन्द्रवार	भौमवार	बुधवार	गुरूवार	शुक्रवार	शनिवार	बुधवार	गुरूवार

प्रत्येक ग्रह की जो औषधि कही गयी है उन सभी को जल में मिलाकर स्नान करने से ग्रह बाधा दूर हो जाती है। यथा सिद्धौषधै रोगा नश्येयुर्मन्त्रतो भयम्। तथास्नानविधानेन ग्रहदोषः प्रणश्यति।।

ग्रहाणामरिष्टनिवारणार्थयन्त्राणि

रवियन्त्रं१५ चंद्रयन्त्रं१८ भौमयन्त्रं२१

६	१	८	७	२	९	८	३	१०
७	५	३	८	६	४	९	७	५
२	९	४	३	१०	५	४	११	६

बुधयन्त्रं२४ गुरुयन्त्रं२७ शुक्रयन्त्रं३०

९	४	११	१०	५	१२	११	६	१३
१०	८	६	११	९	७	१२	१०	८
५	१२	७	६	१३	८	७	१४	९

शनियन्त्रं३३ राहुयन्त्रं३६ केतोर्यंत्रं३९

१२	७	१४	१३	८	१५	१४	९	१६
१३	११	९	१४	१२	१०	१५	१३	११
८	१५	१०	९	१६	११	१०	१७	१२

उपर्युक्त यंत्र को नवग्रह स्तोत्र के पाठ के पश्चात् अष्टगन्ध, अनार के कलम से भोजपत्र पर लिखकर धारण करें। अथ जपस्थानमाह–शुचिस्थाने स्वगृहे जलाशये देवालये वा शूचिर्भूत्वा विधिवज्जप कुर्यात्कारयेद्वा। तदुक्त स्मृतौ–गृहे त्वेकगुणं जाप्यं नद्यां तु द्विगुणं स्मृतम्। गवां गोष्ठे दशगुण अरन्यागारे शताधिकम्।। तीर्थादिषु सहस्र स्यादनन्तं विष्णुसन्निधौ।। देवब्राह्मणवन्दनाद् गुरुवचः सम्पादनात् प्रत्यहं, साधूनामपि भाषणच्छुतिरवः श्रेयः कथाकर्णनात्। होमादध्वर दर्शनाच्छुचिमनो भावाज्जपाद्यनतो नो कुर्वन्ति कदाचिदेव पुरुषस्यैवं ग्रहपीडनम् ।

अथग्रहाणां मन्त्राः तन्त्रसारोक्त		ग्रहाणां बीजमन्त्रः	जप सं.
ॐ घृणिः सूर्याय नमः	सूर्यः	ॐ ह्रीं ह्रौं सूर्याय नमः	२८०००
ॐ सों सोमाय नमः	चन्द्रः	ॐ ऐं क्लीं सोमाय नमः	४४०००
ॐ अं अंगारकाय नमः	भौमः	ॐ हुं श्रीं भौमाय नमः	४००००
ॐ बुं बुधाय नमः	बुधः	ॐ ऐं श्रीं श्रीं बुधाय नमः	३६०००
ॐ बृं बृहस्पतये नमः	बृह.	ॐ ह्रीं क्लीं हुं बृहस्पतये नमः	७६०००
ॐ शुं शुक्राय नमः	शुक्रः	ॐ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः	९४०००
ॐ शं शनैश्चराय नमः	शनि	ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः	९२०००
ॐ रां राहवे नमः	राहुः	ॐ ऐं ह्रीं राहवे नमः	७२०००
ॐ कें केतवे नमः	केतु	ॐ ह्रीं ऐं केतवे नमः	६८०००

ग्रहों की जपसंख्या 'कलौ चतुर्गुणाप्रोक्ता' इस वाक्य के अनुसार चतुर्गुणित ही संख्या लिखी गयी है अतः उपर्युक्त संख्या पर्यन्त जप करना चाहिये।

दान योग्य स्थान – दान का फल शास्त्रों में अनन्त कहा गया है तथापि दान का स्थल भी फल श्रुति में विशेष महत्वपूर्ण है। गृह में दान से जो पुण्य की प्राप्ति होती है। उससे दस गुणा पुण्य गोशाला में दान से, उससे दस गुणा शिवालय में दान से, उससे दस हजार गुणा शिव मन्दिर में, तीर्थस्थान में या अन्य देव स्थान तथा समुद्र तट पर दान से होता है। देश काल पात्रानुसार देना चहिए ।

ग्रहों के दान हेतु काल एवं नक्षत्र विवेचन –

पुष्य, पुनर्वसु, रोहिणी, उत्तरा-३, स्वाती, चित्रा, मृगशिरा, ये नक्षत्र ग्रहों मुख संज्ञक तथा रेवती, धनिष्ठा, अनुराधा, अश्विनी, आर्द्रा, मघा ये नक्षत्र हस्त (हाथ) संज्ञक एवं शेष पृष्ठ संज्ञक होते हैं। ग्रहों के हस्त एवं मुख संज्ञक नक्षत्र में दिया हुआ दान फल दायक होता है शेष में निष्फल होते हैं। शुक्र, सूर्य का दान प्रातः काल, मंगल का २ घटी उपरान्त, बुध का ६ घटी उपरान्त, शनि का दोपहर में चन्द्र गुरु का संध्याकाल में एवं राहु–केतु का दान रात्रि काल में करें।

ग्रहों की शान्ति हेतु यजुर्वेदीय मन्त्र

सूर्य - ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्त्यञ्च हिरण्ययेन सविता रथेन देवो याति भुवनानि पश्यन् । **चन्द्र** - ॐ इमं देवा असपत्नꣳसुबध्वं महते क्षत्राय महते ज्येष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्रममुस्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानांꣳराजा।। **मङ्गल**–ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयमपाꣳरेताꣳसिजिन्वति ।। **बुध**– ॐउद्बुध्यस्वाग्नेः प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्त्ते सꣳसृजेथामयञ्च। अस्मिन्त्सधस्ते अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत।। **गुरु**– ॐबृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्युम द्विभातिक्रतुमज्जनेषु । यद्दीदयच्छवस ऋत प्रजात तदस्मासु द्रविणन्धेहि चित्रम्।। **शुक्र**–ॐअन्नात्परिस्त्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिवत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानꣳशुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु।। **शनि**– ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये । शंयोरभिस्त्रवन्तु नः ।। **राहु** - ॐ कयानश्चित्र आभुवदूती सदावृधः सखा । कयाशचिष्टया वृता ।। **केतु**- ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशोमर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः ।।

ग्रहों की शान्ति हेतु सामवेदीय मन्त्र

सूर्य - ॐ उदुत्यञ्जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम् ।। **चन्द्र**–ॐ सन्ते पयांसि समयन्तुबाजाः संवृष्णयान्यभिमातिषाहः । आप्यायमानो अमृताय सोम दिवि श्रवांस्युत्तमानिधिष्व ।। **मङ्गल**–ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयमपां रेतांसि जिन्वति ।। **बुध** –ॐ अग्ने विवश्वदुषसश्चित्रां राहो अमर्त्य आदाशुषे । जातवेदो वहात्वमद्या देवो उषर्बुधः।। **गुरु**– ॐ बृहस्पते परिदीयारथेन रक्षोहामित्रां अपबाधमानः। प्रभञ्जत्सेनाः प्रमृणो युधाजयन्नास्माकं मेध्यविता रथानाम् ।। **शुक्र** –ॐ शुक्रन्ते अन्यद्यजन्ते अन्यद्विषुरूपे अहनी द्यौरिवासि विश्वाहि माया। अवसि स्वधावन् भद्रा ते पूषन्निह रातिरस्तु ।। **शनि** - ॐ शन्नो देवीरभिष्टये शन्नो भवन्तु पीतये । शंयोरभिस्त्रवन्तु नः।। **राहु** - ॐ कयानश्चित्र आभुवदूती सदावृधः सखा । कयाशचिष्टया वृता ।। **केतु**- ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशोमर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः ।।

गणेशषडक्षरमन्त्र – ॐ गं गणपतये नमः ।।

इस मन्त्र का पुरश्चरण ६ लाख का होता है। दूर्वा, पंचामृत के साथ सविधि हवन करना चाहिए। इससे निर्विघ्न कार्य की सिद्धि होती है ।

हनुमद् अष्टादशाक्षर मन्त्र –

।। ॐ नमो भगवते आंजनेयाय महाबलाय स्वाहा ।।

इस मन्त्र का ५ लाख जप विधि करना चाहिए। अन्त में ईख रस, खीर, पलास, पीपल, खैर की लकड़ी से हवन करना चाहिए। इससे सभी कार्यों की सिद्धि होती है ।

अरिष्टशान्तये महामृत्युञ्जयमन्त्रजपविधिः

आचम्य शान्तिपाठं पठित्वा सुमुखश्चेत्यादि गणेशस्मरणं च कृत्वा।। संकल्पः।। ॐ अद्य अमुक मासिऽमुकपक्षेऽमुकतिथौऽमुकगोत्रस्यास्यश्रीअमुकशर्म्मणः उपस्थितशरीराविरोधोनाखिला रिष्टझटित प्रशमनपूर्वक दीर्घा युस्त्व बलपुष्टिनैरूज्य प्राप्तिकामः अद्यारभ्य यथाकालं यजुर्वेदान्तर्गतमाध्यन्दिन शाखीय **ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्। उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्। भूर्भुवः स्वरों जूं सः हौं ॐ** इति महामृत्युञ्जयमन्त्रस्य एतत्सहस्रसंख्यकजपमहं करिष्यामि ।। ॐ अद्य अमुक मासिऽमुकपक्षेऽमुक तिथौ अमुकगोत्रस्यास्य श्री अमुक शर्म्मणः मत संकल्पित कर्मकतुम् अमुकगोत्रं श्री अमुकशर्म्माणं ब्रह्मणम् एभिः पुष्प चन्दन ताम्बूल पूगीफलाऽक्षत यज्ञोपवीत कटिसूत्रऽङ्गुरीयक वासोयुगैः आचार्यत्वेन त्वामहं वृणे। ॐ वृतोऽस्मि।ॐ यथाविहितं कर्मकुरू । ॐ करवाणि । **विनियोगः**-ॐ हौं ॐ जूं सः(समस्तमन्त्रः) अस्यश्रीमहामृत्युञ्जयमन्त्रस्यवामदेवकहोलवसिष्ठाः ऋषयः, पंक्तिर्गायत्र्यनुष्टुप् छन्दांसि सदाशिव महामृत्युञ्जयरूद्र देवता हौं बीजं जूं शक्तिः सः कीलकं महामृत्युञ्जयप्रीतये ममाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।ऋष्यादिन्यासः–वामदेवकहोलवसिष्ठाऋषिभ्यो नमः **शिरसि**। पंक्तिर्गायत्र्यनुष्टुप् छन्दांसि सदाशिव महामृत्युञ्जय रूद्रदेवताभ्यो नमः**हृदि**। हौं बीजाय नमः **नाभौ**। जूं शक्तये नमः **पादयोः**। सः कीलकाय नमः **सर्वाङ्गे**। **हृदयादिन्यासः**-ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं ॐ नमोभगवते रूद्राय शूलपाणये स्वाहा **हृदयाय नमः**।। ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः यजामहे, ॐ नमोभगवते रूद्राय अमृत मूर्त्तये मां जीवय **शिरसि स्वाहा**। ॐहौं ॐजूंसः भूर्भुवः स्वः सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनं, ॐ नमोभगवते रूद्राय चन्द्रशिरसि जटिने स्वाहा **शिखायै वषट्**। ॐहौं ॐजूंसः भूर्भुवः स्वः उर्व्वारूकमिव बन्धनात् ॐ नमोभगवते रूद्राय त्रिपुरान्तकाय ह्रां ह्रीं ह्रौं **कवचाय हुम्**। ॐहौं ॐजूंसः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय, ॐ नमोभगवते रूद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुः साममन्त्रत्रयाय **नेत्रत्रयाय वौषट्**। ॐहौं ॐजूंसः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमोभगवते रूद्राय अग्नित्रयाय उज्जवल- ज्वालाय मां रक्षरक्ष अघोराय **अस्त्राय फट्**।। **ध्यानम्**:–चन्द्रोद्भासितमूर्द्धजं सुरपतिं पीयूषपात्रं बहद्धस्ताब्जेन दधत्सुदिप्तममलं हास्यास्यपंकेरुहम्। सूर्येन्द्वग्निविलोचनं करतले पाशाक्षसूत्रं कुशाम्भोजं विभ्रतमक्षयंपशुपतिं मृत्युञ्जयं संस्मरेत्।। इति धयात्वा।।

।। लघुमृत्युञ्जयमन्त्रः- ॐ जूं सः ।।

प्रथमलग्नसारिणी-

इष्टार्कराश्यंतले घटीपलं स्वाभीष्टनाडीपलसंयुतञ्च। यद्राशिभागस्य तले स्थितं भवेत्तदेव लग्न कलानुपातात॥

अंश	००	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	०२	०२	०३	०३	०३	०३	०३	०३	०३	०३	०४	०४	०४	०४	०४	०४	०४	०५	०५	०५	०५	०५	०५	०५	०६	०६	०६	०६	०६	०६
०३	४७	५४	०१	०८	१६	२३	३०	३८	४६	५४	०३	११	१९	२८	३६	४४	५३	०१	१०	१८	२६	३५	४३	५१	००	०८	१६	२५	३३	४२
३८	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	२२	४४	०६	२८	५०	१२	३४	५६	१८	४०	०२	२४	४६	०८	३०	५२	१४	३६	५८	२०	४२	०४
वृष	०६	०६	०७	०७	०७	०७	०७	०७	०७	०७	०८	०८	०८	०८	०८	०९	०९	०९	०९	०९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
०४	५०	५८	०७	१५	१५	२३	३२	४०	४९	५९	०९	१९	२९	४९	५९	०९	१९	३०	४०	५०	००	१०	२०	३०	४०	५०	००	११	२१	३१
११	२६	४८	१०	३२	३२	५४	१६	३८	००	०६	१२	१८	२४	३६	४२	४८	५४	००	०६	१२	१८	२४	३०	३६	५२	४८	५४	००	०६	१२
मिथुन	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
०५	४१	५१	०१	११	२१	३१	४१	५२	०३	१४	२६	३७	३७	४९	००	१२	२३	४६	५७	०९	२०	३३	४३	५४	०६	१७	२९	४०	५२	०३
०३	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	२६	५२	१८	४४	४४	१०	३६	०२	२८	२०	४६	१२	३८	०४	३०	५६	२२	४८	१४	४०	०६	३२
कर्क	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
०५	१४	२५	३७	४९	००	१२	२३	३५	४६	५८	०९	२१	२१	३२	४४	५५	०७	३०	४२	५३	०५	१६	२८	४०	५१	०३	१४	२६	३७	४९
४३	५८	२४	५०	१६	४२	०८	३४	००	३४	०८	४२	१६	१६	५०	२४	५८	३२	४०	१४	४८	२२	५६	३०	०४	३८	१२	४६	२०	५४	२८
सिंह	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८
०५	०१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५५	०७	०७	१८	२९	४०	५२	१४	२५	३७	४८	५९	११	२२	३३	४४	५६	०७	१८	२९
४७	०२	३६	१०	४४	१८	५२	२६	००	१६	३२	४८	०४	०४	२०	३६	५२	०८	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२
कन्यां	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४
०५	४१	५२	०३	१४	२६	३७	४८	००	११	२२	३३	४५	४५	५६	०७	१८	३०	५२	०३	१५	२६	३७	४९	००	११	२२	३४	४५	५६	०७
३८	०८	२४	२०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	०४	२०	३६	५२	०८	४०	५६	१२	२८	४४	००	१५	३२	४८	०४	२०	३६	५२
तुला	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९
०५	१९	३०	४१	५२	०४	१५	२६	३८	४९	०१	१२	२४	३४	३५	३७	५८	१०	३३	४३	५६	०८	१९	३१	४३	५४	०६	१७	२९	४०	५२
४७	०८	२४	२०	५६	१२	२८	४४	००	३४	०८	४२	१६	१६	५०	२४	४८	३२	४०	१४	४८	२२	५६	३०	०४	३८	१२	४६	२०	५४	२८
वृश्चिक	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५
०५	०४	१५	२७	३८	५०	०१	१३	२५	३६	४७	५९	१०	१०	२२	३३	४५	५६	१९	३०	४२	५३	०५	१६	२७	३९	५०	०२	१३	२५	३६
४७	०२	३६	१०	४४	१८	५२	२६	००	२६	५२	१८	२४	२४	१०	३६	०२	२८	२०	४६	१२	३८	०४	३०	५६	२२	४८	१४	४०	०६	३२
धनु	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०
०५	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६	०८	१८	२८	३८	४८	४८	५८	०८	१८	२८	४९	५९	०९	१९	२९	३९	४९	५९	०९	१९	३०	४०	५०
४३	५८	२४	५०	१६	४२	०८	३४	००	०६	१२	१८	२४	२४	३०	३६	१२	४८	००	०६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	०६	१२
मकर	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५
०५	००	१०	२०	३०	४०	५०	००	११	१९	२७	३६	४४	४४	५२	०१	०९	२६	३४	४३	५१	५९	०८	१६	२४	३३	४१	४९	५८	०६	१५
०३	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	२२	४४	०६	२८	२८	५०	१२	३४	१८	४०	०२	२४	४६	०८	३०	५२	१४	३६	५८	२०	४२	०४
कुम्भ	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
०४	२३	३१	४०	४८	५६	०५	१३	२२	२९	३६	४३	५१	५१	५८	०५	१२	२७	३४	४१	४९	५६	०३	११	१८	२५	३३	४०	४७	५४	०१
११	२६	४८	१०	३२	५४	१३	३८	००	१६	३२	४८	०४	०४	४०	३६	५२	५७	४०	५९	११	५८	४०	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२
मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	००	००	००	००	००	००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०२	०२
०३	०९	१६	२३	३०	३८	४५	५२	००	०७	१४	२१	२१	३६	४३	५०	५८	०५	१२	१९	२७	३४	४१	४९	५६	०३	१०	१८	२५	३२	३९
२८	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१३	३२	४८	०४	२०	३६	५२	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२

उदाहरण :- कात्तिकशुक्लपञ्चमी रवि को इष्टदण्डादि ०२:३० है। इस दिन सूर्य के तुला राशि के १२ अंश के नीचे दण्डादि ३६:३४:१६ में इष्टदण्डादि ०२:३० जोड़ने से ३६:३४:१६ + ०२:३० = ३९:०४:१६ हुआ । यह दण्डादि तुला राशि के २४ अंश के आगे २५ अंश के नीचे प्राप्त हुआ । अतः उक्त समय में २५ से तुला लग्न प्राप्त हुआ। एवमेव सर्वत्र ज्ञातव्य है।

दशमलग्नसारिणी-

यत्सूर्यराश्यंशसमानकोष्ठे घट्यादिकं पूर्वनतेन हीनम्। प्रत्यग्नतेनाढ्यमियान् विशेषो मध्यस्य(दशमलग्नस्य)सिद्धैगणकैः प्रदिष्टः॥

अशं	००	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	०३	०३	०३	०४	०४	०४	०४	०४	०४	०४	०५	०५	०५	०५	०५	०५	०६	०६	०६	०६	०६	०६	०७	०७	०७	०७	०७	०७	०८	०८
	३३	४२	५१	००	१०	१९	२८	३८	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०७	१७
२७८	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६
वृष	०८	०८	०८	०८	०९	०९	०९	०९	०९	०४	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३
	२७	३७	४७	५६	०७	१७	२७	३७	४७	४७	०९	२०	३०	४१	५२	०३	१३	२४	३५	४६	५६	०७	१८	२९	४०	५०	०१	१२	२३	३३
२९९	१४	१२	१०	०८	०६	०४	०२	००	४६	५८	१८	०४	५०	३६	२२	०८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	०२	४८	३४	२१	०६	५२
मिथुन	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८
	४४	५५	०६	१६	२७	३८	४९	००	१०	२१	३२	४३	५३	०४	१५	२६	३६	४७	५८	०९	१९	३०	४१	५२	०९	१३	२४	३५	४६	५६
३२३	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	००	४६	३२	१८	०४	५०	३६	२२	०८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	०२	४८	३४	२०	०६	५२
कर्क	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४
	०७	१८	२९	३९	५०	०१	१२	२३	३२	४२	५२	०२	१२	२२	३२	४२	५२	०२	१२	२२	३२	४२	५२	०२	१२	२२	३२	४२	५२	०२
३२३	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	००	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६
सिंह	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
	१२	२२	३२	४२	५२	०२	१२	२२	३१	४०	४९	५९	०८	१७	२६	३६	४५	५४	०३	१३	२२	३१	४१	५०	५९	०८	१८	२८	३६	४५
२९९	१४	१२	१०	०८	०६	०४	०२	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२
कन्यां	२८	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३
	५५	०४	१३	२२	३२	४१	५०	००	०९	१८	२७	३७	४६	५२	०४	१४	२३	३२	४१	५१	००	०९	१९	२८	३७	४६	५६	०५	१४	२३
२७८	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२
तुला	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८
	३३	४२	५१	००	१०	१९	२८	३८	३७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०७	१७
२७८	०८	२४	४१	५६	१२	२८	४४	००	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६
वृश्चिक	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३
	२७	२७	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५८	०९	२०	३०	४१	४२	०३	१३	२४	३५	४६	५६	०७	१८	२९	४०	५०	०१	१२	२३	३३
२९९	१४	१२	१०	०८	०६	०४	०२	००	४६	३२	१८	०४	५०	३६	२२	०८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	०२	४८	३४	२०	०६	५२
धनु	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८
	४४	५२	०६	१६	२७	३८	४९	००	१०	२१	३२	४३	५३	०४	१५	२६	३६	४७	५८	०९	१९	३०	४१	५२	०३	१३	२४	३५	४६	५६
३२३	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	००	४६	३२	१८	०४	५०	३६	२२	०८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	०२	४८	३४	२०	०६	५२
मकर	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४
	०७	१८	२९	३९	५०	०१	१२	२३	३२	४२	५२	०२	१२	२२	३२	४२	५२	५२	१२	२२	३२	४२	५२	०२	१२	२२	३२	४२	५२	०२
३२३	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	००	५८	५६	५४	५२	५०	३८	४६	४४	४२	४२	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६
कुम्भ	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८
	१२	२२	३२	४२	५२	०२	१२	२२	३१	४०	४९	५९	०८	१७	२६	३६	४५	४५	०३	१३	२२	३१	४१	५०	५९	०८	१८	२७	३६	४५
२९९	१४	२२	१०	०८	०६	०४	०२	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२	०८	२४	२४	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२
मीन	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	००	००	००	००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०२	०२	०२	०३	०३	०३
	५५	०४	१३	२२	३२	४१	५०	००	०९	१८	२७	३७	४६	५५	०४	१४	२३	३२	४१	५१	००	०९	१९	२८	३७	४६	५६	०५	१४	२३
२७८	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२

नतकालसाधनम्-रात्रेः शेषमितं युतं दिनदलेनाह्नोः गतं शेषकम्।विश्लेष्यं खलु पूर्वपश्चिमनतं त्रिंशच्च्वयतं चोन्नतम् ॥ दशमसाधन के लिए पहले नतकाल जानना पड़ता है। सूर्योदय से वाञ्छित काल की दूरी इष्टकाल कहलाती है। स्पष्ट मध्याह्न से इष्टकाल की निकटतम दूरी को नतकाल कहते हैं। नतकाल बनाने की विधि-१.दिनार्ध से पहले का इष्टकाल हो तो पूर्वनत=(दिनार्ध-इष्टकाल)। २.दिनार्धा के बाद का इष्टकाल हो तो उन्नतकाल=(दिनमान-इष्टकाल) पश्चिमनत=दिनार्ध-उन्नतकाल।३.रात्रि अर्ध से पहले का इष्टकाल हो तो पश्चिमनत= दिनार्ध+(इष्टकाल- दिनमान)।

४.रात्रि अर्ध के बाद इष्टकाल हो ता पूर्वनत= दिनार्ध+(६० घटी- इष्टकाल)। उदाहरण:- कात्तिकशुक्लपञ्चमी रवि को इष्टदण्डादि ०२:३० है। नतकालनयनविधि से इस काल १३:५०-०२:३०=११:२० दण्ड पर पूर्वनत हुआ। इसे सर्य के तुला राशि के १२ अंश के नीचे दण्डादि ३५:२७:५० में घटाया तो ३५:२७:५०-११:२० =२३:५७:५० हुआ। यह फल कर्क राशि के २८ अंश के आगे २९ अंश के नीचे प्राप्त हुआ । अतः उक्त समय में २९ से कर्क दशमलग्न प्राप्त हुआ। एवमेव सर्वत्र ज्ञातव्य है।

ॐ वेलान्तर सारिणी ॐ

मास	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर
०१	−०३	−१४	−१२	−०४	+०३	+०२	−०३	−०६	+००	+१०	+१६	+११
०२	−०४	−१४	−१२	−०४	+०३	+०२	−०४	−०६	+००	+१०	+१६	+११
०३	−०४	−१४	−१२	−०४	+०३	+०२	−०४	−०६	+००	+११	+१६	+११
०४	−०५	−१४	−१२	−०३	+०३	+०२	−०४	−०६	+०१	+११	+१६	+१०
०५	−०५	−१४	−१२	−०३	+०३	+०२	−०४	−०६	+०१	+११	+१६	+१०
०६	−०५	−१४	−१२	−०३	+०३	+०२	−०४	−०६	+०१	+१२	+१६	+०९
०७	−०६	−१४	−११	−०२	+०३	+०१	−०५	−०६	+०२	+१२	+१६	+०९
०८	−०६	−१४	−११	−०२	+०४	+०१	−०५	−०६	+०२	+१२	+१६	+०९
०९	−०७	−१४	−११	−०२	+०४	+०१	−०५	−०६	+०२	+१२	+१६	+०८
१०	−०७	−१४	−११	−०२	+०४	+०१	−०५	−०५	+०३	+१३	+१६	+०८
११	−०८	−१४	−१०	−०१	+०४	+०१	−०५	−०५	+०३	+१३	+१६	+०७
१२	−०८	−१४	−१०	−०१	+०४	+०१	−०५	−०५	+०४	+१३	+१६	+०७
१३	−०८	−१४	−१०	−०१	+०४	+००	−०६	−०५	+०४	+१३	+१६	+०६
१४	−०९	−१४	−१०	−०१	+०४	+००	−०६	−०५	+०४	+१४	+१६	+०६
१५	−०९	−१४	−०९	+ ००	+०४	−००	−०६	−०५	+०५	+१४	+१६	+०५
१६	−१०	−१४	−०९	+ ००	+०४	−००	−०६	−०४	+०५	+१४	+१६	+०५
१७	−१०	−१४	−०९	+ ००	+०४	−०१	−०६	−०४	+०५	+१४	+१५	+०४
१८	−१०	−१४	−०८	+ ००	+०४	−०१	−०६	−०४	+०५	+१५	+१५	+०४
१९	−१०	−१४	−०८	+ ०१	+०४	−०१	−०६	−०४	+०६	+१५	+१५	+०३
२०	−११	−१४	−०८	+ ०१	+०४	−०१	−०६	−०४	+०६	+१५	+१५	+०३
२१	−११	−१४	−०८	+ ०१	+०४	−०१	−०६	−०३	+०७	+१५	+१४	+०२
२२	−११	−१४	−०७	+ ०१	+०४	−०२	−०६	−०३	+०७	+१५	+१४	+०२
२३	−१२	−१४	−०७	+ ०१	+०३	−०२	−०६	−०३	+०७	+१५	+१४	+०१
२४	−१२	−१३	−०७	+ ०२	+०३	−०२	−०६	−०३	+०८	+१६	+१४	+०१
२५	−१२	−१३	−०६	+ ०२	+०३	−०२	−०६	−०२	+०८	+१६	+१३	+००
२६	−१२	−१३	−०६	+ ०२	+०३	−०२	−०६	−०२	+०८	+१६	+१३	+००
२७	−१३	−१३	−०६	+ ०२	+०३	−०३	−०६	−०२	+०९	+१६	+१३	−०१
२८	−१३	−१३	−०५	+ ०२	+०३	−०३	−०६	−०२	+०९	+१६	+१२	−०१
२९	−१३	−१२	−०५	+ ०३	+०३	−०३	−०६	−०१	+०९	+१६	+१२	−०२
३०	−१३	——	−०५	+ ०३	+०३	−०३	−०६	−०१	+१०	+१६	+१२	−०२
३१	−१३	——	−०५	——	+०३	——	−०६	−०१	——	+१६	——	−०३

देशान्तर एवं वेलान्तरसंस्कारप्रकार - सम्पूर्ण भारत में स्टैण्डर्ड (मानक) समय समान है। इसके अनुसार एक ही समय हरेक जगह १० या १२ बजते हैं। परन्तु लोकल (स्थानीय) समय प्रत्येक जगह के भिन्न-भिन्न होता हैं। अतः स्थानीय समय बनाने के लिये वेलान्तर और देशान्तर ये दो संस्कार (योग या अन्तर) करना चाहिये। जैसे - १ जनवारी को देवघर के स्टैण्डर्ड (मानक) समय में ३ मिनट वेलान्तर ऋण एवम् १८ मिनट मानक देशान्तर धन कर देंगे तो देवघर (वैद्यनाथधाम) का लोकल (स्थानीय) समय हो जाएगा।

कुण्डली देखने की सामान्यविधि

१. जन्मकुण्डली के १,४,७,१० स्थान केन्द्र, २,५,८,११ पणफर तथा ३,६,९,१२भाव आपोक्लिम होता है।२. १,५,९ को त्रिकोण, परन्तु विशेषकर ५,९ को त्रिकोण की, एवं ३,६,१०,११ भावों की उपचय संज्ञा होती है।३. केन्द्र (१,४,७,१०) का स्वामी पापग्रह हो तो शुभ फल एवं शुभग्रह हो तो अशुभ फल देता है।४. त्रिकोण (५,९) का स्वामी शुभ ग्रह हो या पापग्रह हो ये सदा शुभ फल ही देते हैं।किन्तु नवमेश पंचमेश से बली होता है। केन्द्र (१,४,७,१०) के चारो स्थान उत्तरोत्तर बली होते है अर्थात् लग्न से चतुर्थ, चतुर्थ से सप्तम, सप्तम से दशम बली होता है। अतः यदि पापग्रह लग्न और चतुर्थ का स्वामी हो तो चतुर्थेश लग्नेश की अपेक्षा अधिक शुभदायक होता है। इसी तरह दशमेश पापग्रह हो तो सबसे अधिक शुभफल दायक एवं यदि दशमेश शुभग्रह हो तो सबसे अधिक अशुभफल दायक होता है। ५. अष्टमेश सदा अनिष्टकारी होता है। यदि अष्टमेश सूर्य अथवा चन्द्रमा हो तो अनिष्टकर नहीं होते।अष्टमेश यदि लग्नेश हो तो अष्टमेश का दोष नहीं होता है। यह केवल मेष और तुला लग्न के वाले जातक पर ही लागु होता है। जातक चन्द्रिका के अनुसार यदि अष्टमेश शुभग्रह के साथ हो तो शुभफल दायक होता है। ३,६,११ भावों के स्वामी पापफलद होते हैं। पापत्व में तीसरे से छठा, छठा से एकादश अधिक बली होती है। ६. ६,८,१२ भाव का स्वामी जिस भाव में होता है उस भाव के फल को ह्रास करता है।अथवा जिस भाव का स्वामी ६,८,वा १२ भाव में हो तो भी उस भाव के फल का ह्रास होता है।

ग्रहों की दृष्टि विचार –

प्रत्येक ग्रह अपने स्थान से सप्तम स्थान और सप्तम स्थानस्थ ग्रह को पूर्ण दृष्टि से देखता है। विशेषकर मंगल सप्तम के अतिरिक्त चतुर्थ–अष्टम को, इसी प्रकार शनि तृतीय–दशम, गुरु नवम–पंचम स्थान एवं स्थानगत ग्रह को देखता है।

❀ 卐 ❀

ज्योतिष में राजयोग

राजयोग का अर्थ क्या है – ऐसे योग जो मनुष्य को जीवन में मान प्रतिष्ठा, यश एवं वैभव प्रदान करते हैं।राजयोग धन की अपेक्षा मान, प्रतिष्ठा एवं यश में अधिक वृद्धि करते है। अच्छे राजयोग असीम लोकप्रियता देते हैं। राजयोग नहीं होने से व्यक्ति धनी होते हुए भी उनका उपभोग नहीं कर पाते हैं। और गुमनाम तथा अलोकप्रिय जीवन व्यतीत करते हैं। राजयोग की अनुपस्थिति निर्धनता, विपन्नता, चित्रकला एवं सामाजिक अस्तित्वहीनता का कारण बन सकती है। नाना प्रकार की परेशानियां, संघर्ष उत्पन्न हो सकते हैं। कुण्डली में निम्नलिखित विशेष स्थिति में राजयोग का निर्माण होता है –

(१) केन्द्र के स्वामी ग्रह का त्रिकोण के स्वामी ग्रह से संबंध राजयोग कारक हैं।

(२) नवमेश दशम में हो तथा दशमेश नवम में हो।

(३) नवमेश व दशमेश नवम या दशम में एकत्र हो।

(४) नवम में नवमेश का दशम में दशमेश अथवा दोनों में एक ग्रह अपने स्थान में हो।

(५) दो या तीन ग्रह अपने उच्च राशि, स्वराशि, मित्र राशि, मुल त्रिकोण राशि या नवमांश में शुभ स्थानों में हो।

(६) बलवान एवं केन्द्र व त्रिकोण में स्थित हो।

(७) लग्नेश व दशमेश का किसी शुभ स्थान में एकत्र होना अपना स्थान संबंध हो।

(८) एकादशेश का लग्नेश, धनेश, चतुर्थेश या पंचमेश से संबंध हो।

(९) चंद्रमा से दूसरे या बारहवें स्थानों में बलवान शुभ ग्रह हों।

(१०) सूर्य से दूसरे स्थान में चंद्रमा को छोड़कर कोई शुभ ग्रह बलवान स्थिति में हो।

(११) सूर्य से बारहवें स्थान में या दूसरे व बारहवें दोनों में बली शुभ ग्रह स्थित हो।

(१२) लग्न या चंद्र मे ६,७,८ भावें में बुध, गुरु, शुक्र तीनों हो तो प्रबल शुभ राजयोग होता है।

(१३) चतुर्थेश व नवमेश एक दूसरे से केन्द्र स्थानों में स्थित हो।

(१४) पंच महापुरुष योग मे से कोई एक योग हो।

(१५) विशिष्ट योग होने पर राजयोग होता है।

❀ 卐 ❀

नक्षत्र फल–

१. **अश्विनीनक्षत्र–** इस नक्षत्र के जातक वैज्ञानिक, वीर, धनी, लेखक, दानी, चतुर, राजासेवक, स्वस्थ, डाक्टर होता है।२. **भरणीनक्षत्र–** इस नक्षत्र के जातक धीर, क्रूर, चचंलबुद्धि, सत्य कम बोलने वाल, शत्रुओं से युक्त, नौकर–चाकर युक्त, अनेक पुत्रवाला होता है।३. **कृतिकानक्षत्र–**इस नक्षत्र के जातक बुद्धिमान, स्वाध्यायशील, कुलीन, धनिक, रुपयुक्त, धार्मिक, अकुपण होता है। ४. **रोहिणीनक्षत्र** –इस नक्षत्र में उत्पन्न जातक पुत्र, धन, पशु सम्पत्ति से युक्त, विद्वान, दानी, धैर्यशेली, कम बोलने वाला, स्थिरबुद्धि, दबंग, तेजस्वी होता है।
५. **मृगशिरानक्षत्र** – इस नक्षत्र के जातक विनीत, सौम्य, रुपवान, स्थिर, परिश्रमी, वेदाक चंचलबुद्धि, शक्तिवान होता है। ६. **आर्द्रानक्षत्र–**जातक क्रोधी, क्रूर, दबंग, परद्रव्य, आकृष्ट होने वाला, कठोरभाषी, बहुत धैर्यवाला होता है।
७. **पुनर्वसुनक्षत्र–**इस नक्षत्र के जातक का यश घटता बढ़ता रहता है। कई पुत्र वाला होता है।८. **पुष्यनक्षत्र–**इस नक्षत्र के जातककान्तिवान, सत्वुणयुक्त, बहुत अध्ययन शील, स्त्री सेवक व धन से युक्त, बड़े परिवार वाला, बड़े कार्य करने वाला, कुशलवक्ता होता है।९. **आश्लेषानक्षत्र–** इस नक्षत्र के जातक धीरे चलने वाला, चपटीनेत्र वाला, क्रूर, क्रोधी, ईर्षर्यलु, दानी, भोगी, शौकीन होता है।
१०. **मघानक्षत्र–**इस नक्षत्र के जातक माता–पिता का भक्त, पिता के कार्यो को आगे बढ़ाने वाला, पशुओं से मित्रता रखने वाला, अनेक मित्रों व शत्रुओं वाला होता है।११. **पूर्वाफाल्गुनीनक्षत्र–**ऐसे जातक बहुत भाग्यशाली, कमसन्ततिवाला, सौभाग्यशील, आकर्षकव्यक्तित्व, कमधनी, स्थूलतीव्रबुद्धि से रहित, दूसरे के भाग्य से प्रगति करने वाला।१२. **उत्तराफाल्गुनीनक्षत्र–**ऐसे जातकहाथी घोड़ों पर सवारी करने वाला, दानी, भोगी, घूमने का शौकीन, कोमलभाषी, गीतसंगीतप्रेमी, आमोद–प्रमोद से प्रेमकरने वाला, विद्वान होता है।१३. **हस्तनक्षत्र–**ऐसे जातक बड़े हाथ पैरों वाला, अनेक प्रकार के धन धान्य रखने वाला, ईर्ष्याभाव युक्त, धर्म, अर्थ व काम भोगने वाला, पुत्रयुक्त होता है।१४. **चित्रानक्षत्र–**इस नक्षत्र में उत्पन्न जातक सून्दर नेत्र वाला, सौभाग्यशली, पशुधनयुक्त, तीन पुत्रवाला, तकनीकी कार्य का जानकार, वेदों के अर्थ को जानने वाला होता है।
१५. **स्वातीनक्षत्र–**ऐसे जातक धर्मार्थकाम करने वाला, कुल में अग्रगण्य, कमशत्रुओं वाला, लोकविरुद्ध या लीक से हटकर कार्य करने वाला, अनेक लोगों का पालक, प्रिय, वक्ता होता है। १६. **विशाखानक्षत्र–**ऐसे जातक विरोधियों से नम्र व्यवहार रखने वाला, श्रीमान, अभिमानी, प्रसिद्ध, विद्वान, तीखा, धनी, यज्ञादिकर्ता होता है।१७. **अनुराधानक्षत्र–**ऐसे जातक धन लोभी, बहुत सुखी, तेजस्वी, पुत्र युक्त, पक्की दोस्ती करने वाला होता है। १८. **ज्येष्ठानक्षत्र–**जातक धनी, शत्रुनाशक, राजा द्वारा सम्मानित, तेजस्वी होता है।१९. **मूलनक्षत्र–**ऐसे जातक वृक्ष, चर्म आदि से जीविका चलाने वाला, क्रूर, कलहशील, दूसरों का पैसा पाने वाला, शत्रुसन्तापकर्ता, दानी, धनधान्यपति होता है।२०. **पूर्वाषाढ़नक्षत्र–** ऐसे जातक नाजुकशरीर, जलमार्ग से जीविका करने वाला, क्लेश सहने वाला होता है।२१. **उत्तराषाढ़नक्षत्र–**ऐसे जातक देवता–तीर्थ व साधुओं का सेवक होता है, भ्रमणशील, अनेक कलाओं से युक्त होता है।२२. **श्रवणनक्षत्र–**ऐसे जातक नीरोग, अपनी जाति या वर्ण में श्रेष्ठ, कुशल, उदार, धनी, दानी, शत्रुहीन होता है।२३. **धनिष्ठा नक्षत्र–**ऐसे जातक संगीतप्रेमी, सुखी, राजा द्वारा सम्मानित, धनी, यशकर्ता होता है।२४. **शतभिषानक्षत्र–**ऐसे जातक क्लेश सहनेवाला, वैद्य किन्तु स्वयं रोगी, बचत करने वाला, पक्के मित्रों वाला होता है।२५. **पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र–**ऐसे जातक तीखे स्वभाव वाला, क्रोधी, चंचल, डटकर मुकाबला करने वाला, रात मे विशेष प्रभावशली होता है।२६. **उत्तराभाद्रपद नक्षत्र–**ऐसे जातक यज्ञादि, अध्ययन में रुचि रखने वाला, अनेक पुत्रों वाला, राजा से सम्मानित, दानी होता है।२७. **रेवतीनक्षत्र–**ऐसे जातक विद्वान, प्रसिद्ध, भ्रमणशील, सम्पत्तियों का भोग करने वाला, दानशील, पशुधन से युक्त, अल्प सन्तति वाला होता है।

प्रश्नविचार :–

जन्माङ्ग के अनुसार ही प्रश्नाङ्ग का विचार करना चाहिए। प्रश्न कुण्डली का विचार करते समय देश भेद, प्रष्टा की परिस्थिति, प्रष्टा की चेष्टाएं, शारीरिक गतिविधि, हाव भाव, दिशा, उच्चारण, उसकी अवस्था, मुद्रा, ग्रहगणित तथा अन्य बातों का सूक्ष्मता से निरीक्षण कर शुभाशुभ फल बताने वाला ज्योतिषी कभी भी उपहास का पात्र नहीं होता एक विशेष बात का विशेष ध्यान दैवज्ञों को अवश्य रखना चाहिए कि प्रष्टा द्वारा जितना प्रश्न किया जा रहा हो उतने का सन्तुलित उत्तर देना चाहिए।उत्साह में आकर प्रश्नातिरिक्त उत्तर देने से ज्योतिषी तत्क्षण तो प्रसन्न हो सकता है किन्तु कालान्तर में हँसी का पात्र बन जाता है। दूसरी मुख्य बात यह है कि उत्तर का ज्ञान होते हुए भी बिनापूछे उत्तर नहीं देना चाहिए। यह तो नीति वाक्य भी है "नापृष्टं कस्यचिद् ब्रूयात्"। सभा के मध्य यदि प्रश्न पूंछा गया हो, कपट पूर्ण प्रश्न हो, किसी के अहित के लिये प्रश्न पूंछा गया हो, परीक्षा लेने के लिए प्रश्न किया जा रहा हो, सूर्यास्त के बाद यदि प्रश्न किया जा रहा हो, अन्यमनस्क होकर प्रश्न पूंछा जा रहा हो, अथवा शीघता में उत्तर चाहा जा रहा हो तो इन समस्त प्रश्नों का उत्तर ज्योतिषी को नहीं देना चाहिए। नीच, पाखण्डी, धूर्त, अश्रद्धालु तथा उपहासक के प्रति प्रश्नज्ञान यथार्थ (सत्यघटित) नहीं होता है।किन्तु भक्त, पीड़ित, दीनमुख, निर्धन तथा श्रद्धालु यदि इनके प्रश्नों का उत्तर दैवज्ञ नहीं देता है तो शीघ्र ही उसका ज्ञान विफल हो जाता है।यथा– **भक्तार्त्तदीनवदने दैवज्ञो न दिशेद्यदि। विफलं भवति ज्ञानं तस्मात्तेभ्यः सदा भवेत्॥**अतएव जिज्ञासु एवं अत्यन्त दुःखित व्यक्तिके लिये सदैव सर्वकाल में प्रश्नों का समाधान करना चाहिए।

सूर्यादि ग्रहों से विचारणीय विषयः–

सूर्य=पिता, आत्मा, प्रताप, आरोग्यता, आसक्ति व लक्ष्मी।
चन्द्रमा=मन, बुद्धि, राजा की प्रसन्न्ता, माता और धन।
मंगल=पराक्रम, रोग, गुण, भाई, भूमि, शत्रु और जाति।
बुध=विद्या, बन्धु, विवेक, मामा, मित्र और वाणी आदि।
गुरु=बुद्धि, शरीरपुष्टि, पुत्र और ज्ञान।
शुक्र=स्त्री, वाहन, भूषण, कामदेव, व्यापार।
शनि=आयु, जीवन, मृत्युकारण, विपत्ति, भृत्य।
राहु=पितामह (दादा)।
केतु=मातामह (नाना)।

" अथ तर्प्पण विधान "

एहि पंचांग में गृहस्थक लेल तर्पणक विधान उपस्थापित कएल गेल अछि जे कोनासँ देवता, ऋषि आ पितृ-ऋण सँ मुक्ति भेटैत छैक । गृहस्थाश्रममे रहनिहारके निम्न ५ टा कार्य नित्य-प्रति करक चाही संन्ध्या, तर्पण, जप, पूजा तथा अतिथि सत्कार । जाहि व्यक्तिक पिता जीवित छथिन्ह ओ व्यक्ति तर्पणक अधिकारी नहि ।

विधान :–तर्पण मे सोना, चाँदी, ताम्बा, कास्य पात्र व्यवहार करक चाही। एहिमे माटिक पात्र वर्जित अछि। देवताक तर्प्पण कुशक अग्र भागसँ करक चाही। ऋषि लोकनिक मध्य भागसँ आ पितृ तर्प्पण मूलाग्र भागसँ करब शास्त्र विहित अछि। एहि तरहे देवताक तर्पण पूर्वाभिमुख भऽ ऋषि तर्पण उत्तराभिमुख भऽ आ पितृ तर्पण दक्षिणाभिमुख भऽ करक चाही। तिल आ कुशसँ जे किछु श्रद्धापूर्वक पितर के देल जाइत छनि ओ अमृत तुल्य प्राप्त होइत छनि। देवताक लेल श्वेत तिलक व्यवहार कैल जाय, ऋषिक लेल भूरा आ पितर हेतु कारी तिलक व्यवहार करी ।

देवकार्य यज्ञोपवीत के सव्य राखि याने बामा कान्ह पर। ऋषिकार्य मे मालाकार याने दूनू कान्ह पर आ पितृकर्म मे अपसव्य याने दहिना कान्ह पर राखब विहित अछि। आब कोन रूपे हाथ कऽ किनका जल दियनि तकर विधान नीचा देल जाइत अछि। दहिना हाथक अग्रभागक–**अग्नि तीर्थ**। अंगूठाक मूल भाग के–**ब्रह्म तीर्थ**। सब आँगूरक अगिला भागके–**देव तीर्थ**। कनगुरियाक मूल भागके–**काय तीर्थ**। तर्जनीक मूल भागके–**पितृ तीर्थ**। **अञ्जलि**-देवता लोकनिके एक-एक अञ्जलि जल दियनि, ऋषिलोकनिके दु-दु अञ्जलि आ पितरके तीन-तीन अञ्जलि जाहिमे स्त्री वर्गके एक-एक अञ्जलि देबाक विधान अछि। **अगस्ति तर्प्पण**-शंखमे जल, श्वेत पुष्प याने काश पुष्प, अक्षत, फल, द्रव्य सभ वस्तु राखि दक्षिणाभिमुख भऽअगस्त तर्पण करी। आवाहन निम्न मन्त्र सँ–

ॐ आगच्छ मुनि शार्दूल तेजोरासे जगतपते ।
उदयन्ते लंका द्वारे अर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥

पठान्तरमे

ॐ कुम्भयोनि समुत्पन्न मुनीना मुनिसत्तम् ।
उदयन्ते लंका द्वारे अर्घोऽयं प्रति गृह्यताम् ॥

तदुपरान्त फल पुष्पाक्षतादियुक्त शंख लऽ–

ॐ शंखं पुष्पं फलन्तोयं रत्नानि विविधानि च ।
उदयन्ते लंका द्वारे अर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥

तहन काशक फूल लए–

ॐ काश पुष्प प्रतीकाश बह्निमारुत सम्भव ।
उदयन्ते लंका द्वारे अर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥

अर्घोपरान्त निम्न मन्त्र सँ प्रार्थना–

ॐ आतापी भक्षितो येन वातापी च महावलः ।
समुद्रः शोषितो येन स मेऽगस्त्यः प्रसीदतु ॥

प्रार्थनोपरांत अगस्ति पत्नी लोपमुद्राक तर्पण निम्न मन्त्रसँ–

ॐ लोपामुद्रे महाभागे राजपुत्रि पतिव्रते ।
गृह्यणर्घ्यम्मया दत्तं मित्रवारुणि बल्लेभे ॥ इतिः ।

॥०॥ वाजसनेयि तर्प्पण विधान (देव तर्पण) ॥०॥

स्नान संन्ध्यावन्दनोपरान्त बाँया हाथक मध्यमा तथा अनामिका मे कुशक विरणी आ दायाँ हाथक अनामिकामे सोना,चाँदी अथवा कुशक पवित्री धारण कऽयज्ञोपवीत सव्य राखि पूर्वाभिमुख भऽयव सहित तेकुशा अथवा सिर्फ कुशसँ देवतीर्थ द्वारा निम्न मन्त्र सँ तर्पण करी।

ॐतर्पणीया देवा आगच्छन्तु। ॐब्रह्मास्तृप्यताम्। ॐविष्णुस्तृप्यताम्। ॐ रुद्रस्तृप्यताम्। ॐ प्रजापतिस्तृप्यताम्। ॐ देवायक्षास्तथा नागा गन्धर्वाप्सरसोऽसुराः। क्रुराः सर्प्पाः सुपर्णाश्च तरवो जम्भकाः खगाः विद्याधारा जला-धारास्तथैवाकाश गामिनः। निराधाराश्च ये जीवाः पापे धर्मे रताश्चये तेषामाप्यायनायै तद्दीयते सलिलम्मया॥

तदुपरांत उत्तराभिमुख भऽ जनउके मालाकार कऽ काय तीर्थसँ तर्पण करी।

ॐ सनकादय आगच्छन्तु । ॐ सनकश्चसनन्दश्च तृतीयश्च सनातनः। कपिलश्चासुरिश्चैव वोढुः पञ्चशिखस्तथा सर्वे ते तृप्तिमायान्तु मद्दत्तेनाम्बुना सदा।

ऋषि तर्प्पणः-

पुनः पूर्वाभिमुख भऽ यज्ञोपवीतके सव्य कऽ देवतीर्थसँ–

ॐ मरीच्यादाय आगच्छन्तु । ॐ मरीचिस्तृप्यताम् । ॐ अत्रिस्तृप्यताम्। ॐ अङ्गिरास्तृप्यताम् । ॐ पुलस्त्यस्तृप्यताम् । ॐ पुलहस्तृप्यताम् । ॐ क्रतुस्तृप्यताम्। ॐ प्रचेतास्तृप्यताम्। ॐ वशिष्ठस्तृप्यताम्। ॐ भृगुस्तृप्यताम्। ॐ नारदस्तृप्यताम्।

तहन यज्ञोपवीतके अपसव्य कऽदक्षिणाभिमुख भऽमोड़ा,तिल,जल लऽपितृ तीर्थ द्वारा तर्पण करी।

दिव्य-पितृ तर्प्पणः-

ॐ अग्निष्वात्तास्तृप्यन्तामिदं जलन्तेभ्यः स्वधानमः–३ । ॐ सौम्यास्तृप्यन्तामिदं जलन्तेभ्यः स्वधानमः ॥ ॐ हविष्म-न्तस्तृप्यन्तामिदं जलन्तेभ्यः स्वधानमः । ॐ उष्मास्तृप्यन्तामिदं जलन्तेभ्यः स्वधानमः। ॐ सुकालिनस्तृप्यन्तामिदं जलन्तेभ्यः स्वधानमः । ॐ वर्हिषदस्तृप्यन्तामिदं जलन्तेभ्यः स्वधानमः । ॐ आज्यापास्तृप्यन्तामिदं जलन्तेभ्यः स्वधानमः ।

यम तर्पणः-

ॐ यामादय आगच्छन्तु–ॐ यमाय नमः । ॐ धर्मराजाय नमः । ॐ मृतवे नमः। ॐ कालाय नमः। ॐ अन्तकाय नमः । ॐ वैवस्वताय नमः । ॐ सर्वभूतक्षयाय नमः । ॐ औदुम्बराय नमः । ॐ दध्नाय नमः । ॐ नीलाय नमः । ॐ परमेष्ठिने नमः। ॐ वृकोदराय नमः । ॐ चित्राय नमः । ॐ चित्रगुप्ताय नमः । ॐ चतुर्दशैते यमाः स्वस्ति कुर्वन्तु तर्पिता ।

पितृ तर्पणः-

निम्न मंत्र सँ सब पितरके तीन-तीन अञ्जलि जल दी–

ॐ आगच्छन्तुमे पितरं इमं गृहं तपोञ्जलिम् ॥ ॐ अद्यामुक गोत्रः पिता अमुक शर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा-३। ॐ अद्यामुक गोत्रः पितामहोऽमुक शर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा-३। ॐ अद्यामुक गोत्रः प्रपितामहोऽमुक शर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा-३। ॐ तृप्यध्वम्-३। ॐ अद्यामुकगोत्रः मातामहोऽ मुकशर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा-३। ॐ अद्यामुकगोत्रः प्रमातामहोऽमुक शर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा-३ । ॐ अद्यामुकगोत्रः- वृद्धप्रमाता महोऽमुकशर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा-३ । ॐ तृप्यध्वम्-३ ॥

निम्न मंत्र सँ एक-एक अञ्जलि जल दी–

ॐ अद्यामुकगोत्रा माताऽमुकी देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा-१ । ॐ अद्यामुक गोत्रा पितामही अमुकी देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा- १ । ॐ अद्यामुक गोत्रा प्रपितामही अमुकी देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा- १ ॥ ॐ तृप्यध्वम्- १ । ॐ अद्यामुक गोत्रा मातामही अमुकी देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा- १ । ॐ अद्यामुक गोत्रा प्रमातामही अमुकी देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा- १ । ॐ अद्यामुक गोत्रा वृद्धप्रमातामही अमुकी देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा- १ । ॐ तृप्यध्वम्।

उपरोक्त तर्पणक बाद पत्नी,भाई, सम्बन्धी,आचार्य तथा गुरु के निम्न मन्त्रसँ तर्पण करक चाही।

ॐ येऽबान्धवा बान्धवा वा येऽन्यजन्मनि बान्धवाः ।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु यश्चास्मत्तोऽभिवाञ्छति ॥
ये मे कुले लुप्तिपिण्डा पुत्रदारा विवर्जिताः ।
तेषांहि दत्तमक्षय्यमिंदमस्तु तिलोदकम् ॥
आब्रह्मस्तम्ब पर्यन्तं देवर्षि पितृ मानवाः ।
तृप्यन्तु पितरः सर्वे मातृ मातामहोदयः ॥
अतीत कुल कोटीना सप्तद्विपनिवासिनाम् ।
आब्रह्म भुवनाल्लोकादिदमस्तु तिलोदकम् ॥

एहि मंत्रसँ अन्तिम अंजलि देलाक बाद निम्न मंत्रसँ स्नानकालक भीजल वस्त्रकँगाड़ि जल खसा दी।

ॐ ये चाऽस्माकं कुले जाता अपुत्रा गोत्रिणो मृताः ।
ते तृप्यन्तु मया दत्तैर्वस्त्रनिष्पीडिनोदकम् ॥

उपरोक्त तर्पणक बाद निम्नलिखित मन्त्रसँ सूर्यके तीन बेर अर्घ दी ।

ॐ नमो विवस्वते ब्रह्मन् भास्वते विष्णु तेजसे । जगत्सवित्रे शुचये सवित्रे कर्मदायिने ॥ एषोऽर्घ्यः ॐ भगवते श्रीसूर्य्याय नमः। ॐ विष्णुविष्णुर्हरिर्हरिः ।

॥ इति वाजसनेयि तर्प्पण विधान ॥

॥०॥ छन्दोग तर्प्पण विधान (देव तर्पण)॥०॥

ॐ देवास्तृप्यन्ताम्-३ । ॐ ऋषयस्तृप्यन्ताम्- ३ । ॐ प्रजापतिस्तृप्यन्ताम्-३ ।

तहन यज्ञोपवीतके अपसव्य कऽदक्षिणाभिमुख भऽमोड़ा,तिल,जल लऽपितृ तीर्थ द्वारा तर्पण करी ।

पितृ तर्पण

ॐ आगच्छन्तुमे पितरं इमं गृहं तपोञ्जलिम्॥ ॐ अद्यामुक गोत्रः पिताऽ मुकशर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा- ३ । ॐ अद्यामुक गोत्रः पितामहोऽमुक शर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा- ३ । ॐ अद्यामुक गोत्रः प्रपितामहोऽमुक शर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा- ३ । ॐ तृप्यध्वम्-३ । ॐ अद्यामुकगोत्रः मातामहोऽमुक शर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा- ३ । ॐ अद्यामुकगोत्रः प्रमातामहोऽमुक शर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा- ३ । ॐ अद्यामुकगोत्रः वृद्धप्रमातामहोऽमुकशर्मा तृत्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा- ३ । ॐ तृप्यध्वम्- ३ । ॐ अद्यामुक गोत्रा माताऽमुकी देवी तृत्यामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा-१। ॐ अद्यामुक गोत्रा पितामही अमुकी देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा-१। ॐ अद्यामुक गोत्रा प्रपितामही अमुकी देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा-१। ॐ तृप्यध्वम्-१। ॐ अद्यामुक गोत्रा मातामही अमुकी देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा-१। ॐ अद्यामुक गोत्रा प्रमातामही अमुकी देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा-१। ॐ अद्यामुक गोत्रा वृद्धप्रमातामही अमुकी देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा-१। ॐ तृप्यध्वम्-१॥

उपरोक्त तर्पणक बाद पत्नी,भाई,सम्बन्धी,आचार्य तथा गुरू के निम्न मन्त्रसँ तर्पण करक चाही।

ॐ येऽबान्धवा बान्धवा वा येऽन्यजन्मनि बान्धवाः । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु यश्चास्मत्तोऽभिवा ञ्छति ॥ ये मे कुले लुप्तपिण्डा पुत्रदारा विवर्जिताः। तेषांहि दत्तमक्षय्य मिंदमस्तु तिलोदकम् ॥ आब्रह्मस्तम्ब पर्यन्तं देवर्षि पितृ मानवाः । तृप्यन्तु पितरः सर्वे मातृ मामामहादयः ॥ अतीत कुल कोटीना सप्तद्विपनिवासिनाम् । आब्रह्म भुवनाल्लोकादिदमस्तु तिलोदकम् ॥

एहि मंत्रसँ अन्तिम अञ्जलि देलाक बाद निम्न मंत्रसँ स्नान कालक भीजल वस्त्रके गाड़ि जल खसा दी।

ॐ ये चाऽस्माकं कुले जाता अपुत्रा गोत्रिणो मृताः ।
ते तृप्यन्तु मया दत्तैर्वस्त्रनिष्पीडिनोदकम् ॥

उपरोक्त तर्पणक बाद निम्नलिखित मन्त्रसँ सूर्यके तीन बेर अर्घ दी ।

ॐ नमो विवस्वते ब्रह्मन् भास्वते विष्णु तेजसे । जगत्सवित्रे शुचये सवित्रे कर्मदायिने । एषोऽर्घ्यः ॐ भगवते श्रीसूर्य्याय नमः । ॐ विष्णुविष्णुर्हरिर्हरिः ।

॥ इति छन्दोग तर्प्पण विधान ॥

॥०॥ अथ वाजसनेयि संध्या-वन्दन विधि ॥००॥

स्नान कए शुद्ध वस्त्र पहिरि आसन पर सुविधानुसार पूर्वाभिमुख, उत्तराभिमुख वा ईशान कोणाभिमुख (पूर्वोत्तर भागमे) बैसि चानन कए दहिन हाथक अनामिका आंगूर मे कुशक पवित्री, सोना अथवा चाँदीक अंगूठी पहिरि हाथमे तेकुशा ग्रहण कए आ जल लए निम्नलिखित मन्त्र पढ़ि आचमन करी–

१. ॐ केशवाय नमः, २. ॐ नारायणाय नमः, ३. ॐ माधवाय नमः। हाथ धोली–**ॐ गोविन्दाय नमः, ॐ हृषीकेशाय नमः । विनियोग** मन्त्र-जल लय–**ॐ अपवित्रः पवित्रो वेत्यस्य वामदेव ऋषिः, विष्णुर्देवत, गायत्रीचछन्दः हृदि पवित्रकरणे विनियोगः ।** पुनः हाथमे जल लय अपन शरीर के सिक्त करी–''**ॐ अपवीत्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोपिवा यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स वाह्याभ्यन्तरः सूचिः सूचिः । ॐ पुण्डरीकाक्षः पुणातु, गंगा विष्णुः हरिर्हरिः।** अपना ऊपर जल सँ सिक्त कय सभ वस्तु के सिक्त करी । तकर बाद दहिन हाथक अनामिका आँगुरमे कुशक पवित्री (अंगुठी) धारण करी–**ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्य छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम् ॥** पुनः जल लय आसन के सिक्त करी (आसन पर छींटो)–**ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरु पृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसनोपवेशने विनियोगः ।**

दहिन हाथ सँ आसन स्पर्श कय मन्त्र पढ़ि आसन पवित्र करी–**ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका देवित्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥**

शिखा स्पर्श करी–**चिद्रूपिणि ! महामाये ! दिव्यतेजः समन्विते । तिष्ठ देवि ! शिखामध्ये तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे ॥**

चन्दन करी–**ॐ चन्दनं वन्द्यते नित्यं पवित्रं पाप नाशनम् आपदं** हरते **नित्यं लक्ष्मीर्वसतु सर्वदा ।** तकर बाद कुश आ जल लय सन्ध्याक संकल्प करी–

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः ॐ अद्य उत्पात्तदुरितक्षयपूर्वक श्रीपरमेश्वर-प्रीत्यर्थं संध्योपासनं करिष्ये ।

जल लय–**अघमर्षण सूक्तस्याधमर्षण ऋषिरनुष्टुप छन्दो भाववृतो देवता अश्व मेधाऽवभृथे विनियोगः । ॐ ऋतुञ्चसत्यञ्चाभीद्धात्तपसोध्यजायत। ततोरात्र्यजायत । ततः समुद्रो अर्णवः ॥ समुद्रादर्णवादाधेसंवत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विद्धद्विश्वस्य मिषतो वशी ॥ सूर्य्याचन्द्रमसौधाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः ।** एहि मन्त्रे जल के अभिमंत्रित कए ओहि जल सँ तीन बेर आचमन करी।

तदुत्तर बाद निम्न मन्त्रे जल के अभिमंत्रित कए रक्षा हेतु ओहि जल सँ देह के दहिना सँ पाछू दिश कए वेष्टित करी–**ॐ आपो मामभिरक्षन्तु ।** प्राणायाम सँ पूर्व ऋष्यादिक स्मरण करी–**ॐ कारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्रीच्छन्दोऽग्निर्देवता शुक्लो वर्णः सर्व्वकर्मारम्भे विनियोगः । ॐ सप्तव्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिः गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहतीपंक्तिस्त्रिष्टुब्जगत्यश्छन्दांस्यग्निवाय्वादित्य वृहस्पति-वरुणेन्द्रविश्वेदेवा देवता अनादिष्ट प्रायश्चित्ते प्राणायामे विनियोगः। गायत्र्याविश्वामित्रऋषिर्गायत्रीछन्दः सविता देवतोपनयने प्राणायामे विनियोगः। शिरसः प्रजापतिर्ऋषिर्ब्रह्माग्निवायुसूर्योदेवताः यजुः प्राणायामे विनियोगः ।**

ई विनियोग पढ़ैत ऋष्यादि स्मरण कय आसन स्थिर कय आँखि मुनि मौनभय प्राणायाम करी ताहि मध्य प्रथम दहिना हाथक अंगूठासँ नाकक दहिना पूड़ाके दाबि तीनि बेर मन्त्र पढ़ैत बाम पूराक द्वारा वायु ग्रहण करैत नाभिमे श्यामवर्ण चतुर्भुज विष्णुक ध्यान करैत पूरक नामक प्राणायाम करी। द्वितीय अनामिकासँ बाम पूड़ाके दावि तीन बेर मन्त्र पढ़ैत वायुके धारणकरैत हृदयमे कमलासनस्थ रक्तवर्ण चतुर्भुज ब्रह्माक ध्यान करैत कुम्भक नामक प्राणायाम करी। तृतीय दहिना पूड़ासँ अँगूठा छोड़ाय तीन बेरि मन्त्र पढ़ैत क्रमशः श्वास त्याग करैत ललाटमे शुक्लकर्ण त्रिनेत्र शिवक ध्यान रेचक नामक प्राणायाम करी ।

प्राणायामक मन्त्र– **ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् । ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात। ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्मभुर्भुवः स्वरोम् ।**

अतः पर प्राणायाम कए हाथमे जल लऽ–

सूर्य्याश्चमेति ब्रह्मा ऋषिः प्रकृतिश्छन्दः सूर्य्यो देवता प्रातराचमने विनियोगः । ॐ सूर्य्यश्च मामन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्योरक्षन्तां य्यद्रात्र्यापापमकार्षे मनसावाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना रात्रिस्तदवलुम्पतु यत्किञ्चिद्दूरितंमयि इदमहम्मामममृतयोनौ सूर्य्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा । एहि मन्त्रे प्रातःकालमे आचमन करी ।

आपःपुनन्त्विति विष्णुऋषिरनुष्टुप्छन्द आपो देवता मध्याह्नाचमने विनियोगः। ॐ आपः पुनन्तु पृथ्वीम्पृथ्वी पूता पुनातु माम । पुनन्तु ब्राह्मणस्पतिर्ब्रह्मपूता पुनातु माम । यदुच्छिष्टमभोज्यं च यद्बादुश्चरितंमम सर्व्वम्पुनन्तु ममांपोऽसताञ्च प्रतिग्रहथ्ठंस्वाहा । एहि मन्त्रे मध्याह्न कालमे आचमन करी ।

अग्निश्चमेति रुद्रं ऋषि प्रकृतिश्छन्दोऽग्निर्देवता सायं आचमने विनियोगः। ॐ अग्निश्चमामन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्तां य्यदह्ना पापमकार्षम् मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना अहस्तदवलुम्पतु यत्किञ्चिद्दुरितम्मयि इदमहम्मामममृतयोनौ सत्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा ।

एहि मन्त्रे सायंकालमे आचमन करी ।

तखन वाम हाथमे जल लए विनियोग वाक्य पढ़ि दहिन हाथक अंगुष्ठ आ अनामिका आंगुर सँ एक-एक मन्त्र पढ़ैत कुल सात मन्त्र सँ सात बेर माथ पर जल प्रक्षेप करी–**ॐ आपोहिष्ठेत्यादि ऋचस्य सिन्धुद्वीप ऋषिर्ग्गायत्री छन्दः आपो देवता मार्जने विनियोगः। १. ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवः। २. ॐ ता न ऊर्जे दधातनः। ३ ॐ महे रणाय चक्षसे। ४. ॐ यो वः शिवतमो रसः। ५. ॐ तस्य भाजयतेह नः। ६. ॐ उसतीरिव मातरः। ७. ॐ तस्मा अरङ्गमाम वः।** एहि मन्त्रे नीचा जलबिन्दु फेकिह–**ॐ यस्य क्षयाय जिन्वथ ।**

एहि मन्त्रे पुनः माथ पर जलकण प्रक्षेपकरी तदन्तर पुनः दहिना हाथमे जल लय ।

ॐ आपो जन यथा च नः ।

तदुत्तर दहिन हाथ मे जल लए एक बेर विनियोग वाक्य आ तीन बेर **''द्रुपदादिव''** इत्यादि मन्त्र पढ़ि ओहि अभिमन्त्रित जल के देह पर सिक्त करी–

द्रुपदादिवेति कोकिलो राजपुत्रऋषिरनुष्टुपछन्द आपोदेवताः सौत्रामण्यवभृथे विनियोगः । मन्त्रः–**ॐ द्रुपदादिव मुमुचानः स्विन्नः स्नातो मलादिव ॥ पूतं पवित्रेणेवाज्यमापः शुद्धन्तु मैनसः ।**

तदुत्तर दहिन हाथक तरहत्थी मे जल लए नाक मे जलक स्पर्श करैत श्वास धारण कएबे निम्नलिखित मन्त्र पढ़लाक बाद ओहि जल के अपन वाम भागमे विना देखने नीचा खसा दी–**ॐ अघमर्षण-सूक्तस्याघमर्षण ऋषिरनुष्टुप् छन्दो भाववृत्तो देवता अश्वमेधाऽवभृथे विनियोगः ।**

ॐ ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत । ततो रात्र्यजायत । ततः समुद्रो अर्णवः । समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत । अहोरात्राणि विद्धद्विश्वस्य मिषतो वशी । सूर्या-चन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत् । दिवं च पृथिवीं चाऽन्तरिक्षमथो स्वः । तदुत्तर दहिन हाथमे जल लए निम्नलिखित मन्त्र पढ़ि ओहि जल सँ आचमन करी–**ॐ अन्तश्चरसीति तिरश्चीन ऋषिरनुष्टुप् छन्दः आपोदेवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः ।**

ॐ अन्तश्चरसि भूतेषु गुहायां व्विश्वतोमुखः ।
त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कार आपो ज्योतिरसोऽमृतम् ॥

एहि मन्त्रे आचमन करी । तदुत्तर उठि प्राणाव्याहत सहित गायत्री मन्त्रे सूर्यक सम्मुख अर्घ प्रक्षेप कय ठाढ़ रहैत, प्रातः सायंकाल वद्धाञ्जलि मध्याह्नमे ऊर्ध्व बाहु सूर्य्योपस्थान करी । मन्त्रः–**ॐ उद्वियमिति हिरण्यस्तूपऋषिरनुष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः । ॐ उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम् । देवं देवत्रा सूर्य्यमजन्मञ्ज्योत्तिरुत्तमम् । उदुत्यमित्यस्य प्रस्कण्व ऋषिर्ग्गायत्री छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।ॐ उदुत्यञ्जातवेदसं देवँव्वहन्ति केतवः दृशे व्विश्वाय सूर्य्यम् ॥ चित्रमिति कौत्स ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्योदेवता सूर्योपस्थाने विनियोगः । ॐ चित्रन्देवानामुदगादनीकञ्चक्षुमित्रस्य वरूणस्याऽग्ने । आप्रा द्यावा पृथिवी अन्तरिक्ष ग्वं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च । ॐ तच्चक्षुरिति दध्यङ्गाथर्वण ऋषिरक्षरातीतपुर उष्णिक्छन्दः सूर्योदेवता-सूर्य्योपस्थाने विनियोगः । ॐ तच्चक्षुर्देवहितम्पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् । पश्येम शरदः शतञ्जीवेम शरदः शतंप्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतम्भूयश्च शरदः शतात्।**

॥०॥ गायत्री जप विधि ॥०॥

षडङ्गन्यासः– गायत्री मन्त्रके जपसँ पूर्व षडङ्गन्यास करबाक विधानअछि । अतः आगु लिखल एक-एक मन्त्रके उच्चारण करैत निचा देल क्रमशः हृदयादि अंगक स्पर्श करी ।

ॐ हृदयाय नमः । ॐ भूः शिरसे स्वाहाः । ॐ भूवः शिखायै वषट् । ॐ स्वः कवचाय हुं ॐ, भूर्भुवः स्वर्नेत्राभ्यां वौषट् । ॐ भूर्भुवः स्वः अस्त्राय फट् ।

तदन्तर कलजोड़ि ई विनियोग वाक्य पढ़ी–

ॐ कारस्य ब्रह्मऋषिर्गायत्रीछन्दोऽग्निर्देवता सर्वकर्मारम्भे विनियोगः । भूर्भुवःस्वरित्यस्यप्रजापतिऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छनदांस्याग्निवाय्वादित्या - देवता जपे विनियोगः । गायत्र्या विश्वामित्रर्ऋषिर्गायत्रीछन्दः सविता देवता जपे विनियोगः ।

तदुत्तर कलजोड़ि गायत्रीक ध्यानमंत्र पढ़ी–

ॐ श्वेतवर्णा समुद्दिष्टा कौशैयवसना तथा ।
श्वेतैर्विलेपनैः पुष्पैरलंकारैश्च भूषिता ॥
आदित्यमण्डलान्तःस्था ब्रह्मलोकगताऽथवा ।
अक्ष सूत्रधरा देवी पद्मासनगता शुभा ॥

एहि मन्त्रे गायत्रीक विनियोग तदुत्तर आवाहन करी–

ॐ तेजोऽसीति देवता ऋषयः शुक्रोदेवता गायत्रीच्छन्दो गायत्र्यावाहने विनियोगः।

ॐ तेजोऽसिशुक्रमस्यमृतमसि धामनामासि प्रियन्देवानामना मनाधृष्टन्देवय जनमसि ।

एहि मन्त्रे गायत्रीक आवाहन करी ।

परोरजस इति विमलऋषिरनुष्टुप्छन्दः परमात्मा देवता गायत्र्युपस्थाने विनियोगः ।

ॐ गायत्र्यस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्य पदसि नहि पद्यसे नमस्ते तुरीयाय दर्शताय पदाय परोरजस सावदोमाप्राप्त् ।

ई मन्त्र पढ़ि गायत्री उपस्थापन करी–

ॐ आगच्छ वरदे देवि त्र्यक्षरे ब्रह्मवादिनी गायत्रिच्छन्दसाम्मातर्जपे मे सन्निधीभव ॥

तदुत्तर न्यूनतम 10 बेर अथवा यथासाध्य 108 बेर गायत्री जपी–

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ ॥

तदन्तर एहि मन्त्र सँ कलजोड़ि भगवती गायत्रीके जप समर्पित करी–

ॐ उत्तरे शिखरे जाते भूम्यां पर्वतवासिनि। ब्रह्मणा समनुज्ञाते गच्छ देवि यथासुखम् ॥

तदन्तर अर्घामे जल लए ओहि जल सँ अगिला मन्त्रे सूर्य के अर्घ्य दी–

ॐ उत्तरे शिखरे जाते भूम्यां पर्वतवासिनि । ब्रह्मणा समनुज्ञाते गच्छ देवि यथासुखम् ॥

एहि मन्त्रे जल लय विसर्जन करी। पुनः जल लयएहि मन्त्रे सूर्यार्घ दी।

ॐ नमो विवस्वते ब्रह्मन् भास्वते विष्णुतेजसे। जगत्सवित्रे शुचयेसवित्रे कर्मदायिने ॥

एषोऽर्घः ॐ भगवते श्रीसूर्य्याय नमः । तखन सूर्य के प्रणाम करी–

ॐ जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम् । ध्वान्तारिं सर्वपाघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम् ॥

॥ इति संध्या वंदन विधि ॥

नोट–तर्पणाधिकारी व्यक्ति तर्पण कय सूर्य के अर्घ्य देथि।

॥०॥ अथ छन्दोग संध्या-वन्दन विधि ॥०॥

स्नान कए शुद्ध वस्त्र पहिर पवित्र आसन पर सुविधानुसार पूर्वाभिमुख उत्तराभिमुख वा ईशान कोणाभिमुख (पूर्वोत्तर कोणाभिमुख) बैसि चानन कए दहिन हाथक अनामिका अंगुरमे कुशक पवित्री अथवा सोना अथवा चाँदीक अंगूठी पहिरि अथवा हाथमे तेकुशा ग्रहण कए आ जल लए निम्नलिखित मन्त्र पढ़ि आचमन करी–

1. ॐ केशवाय नमः, २. ॐ नारायणाय नमः, ३. ॐ माधवाय नमः । हाथ धोली **ॐ गोविन्ददाय नमः, ॐ हृषिकेशाय नमः ।** मार्जन विनियोग मन्त्र-जल लय–**ॐ अपवित्रः पवित्रो वेत्यस्य वामदेव ऋषिः, विष्णुर्देवता, गायत्रीछन्दः हृदि पवित्रकरणे विनियोगः ।** पुनः हाथमे जल लय अपन शरीर के सिक्त करी–**ॐ अपवित्रः पवित्रे वा सर्वावस्थाङ् गतोऽपिवा । यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं सबाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥ ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, गंगा विष्णुः हरिर्हरिः ।** अपना ऊपर जल सँ सिक्त कय सभ वस्तु के सिक्त करी । तकर बाद दहिन हाथक अनामिका आँगुरमे कुशक पवित्रि (अंगुठी) धारण करी–**ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्य छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम् ॥** पुनः जल लय आसन के सिक्त करी (आसन पर छींटो)–**ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरु पृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसनोपवेशने विनियोगः ।** दहिन हाथ सँ आसन स्पर्श कय मन्त्र पढ़ि आसन पवित्र करी–

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवित्वं विष्णुना धृता । त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥

शिखा स्पर्श करी–**चिद्रूपिणि! महामाये ! दिव्यतेजः समन्विते। तिष्ठ देवि! शिखामध्ये तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे॥**

चन्दन करी–**ॐ चन्दनं वन्द्यते नित्यं पवित्रं पाप नाशनमापदं हरते नित्यं लक्ष्मीर्वसतु सर्वदा ।**

तकर बाद कुश आ जल लय संध्याक संकल्प करी–

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः ॐ अद्यः.....उपात्तदुरितक्षयपूर्वक-श्रीपरमेश्वर-प्रीत्यर्थं संध्योपासनं करिष्ये ।

आचमन–**अघमर्षण-सूक्तस्याघमर्षण ऋषिरनुष्टुप् छन्दो भाववृत्तो देवता अश्वमेधाऽवभृथे विनियोगः ।**

ॐ ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोध्यजायत। ततोरात्र्-जायत। ततः समुद्रो अर्णवः॥ समुद्रादर्णवादधि सम्वत्सरो अजायत । अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी । सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत् । दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः ॥

एहि मन्त्रे जल के अभिमंत्रित कए ओहि जल सँ तीन बेर आचमन करी। तकर बाद निम्न मन्त्रे जल के अभिमन्त्रित कए रक्षा हेतु ओहि जल सँ देह के दहिना सँ पाछू दिश दए वेष्टित करी–ॐ **आपो मामभिरक्षन्तु।**

तदुत्तर प्राणायाम सँ पूर्व ऋष्यादिक स्मरण करी–**ॐ कारस्य** ब्रह्मा **ऋषिर्गायत्रीच्छन्दोऽग्निर्देवता शुक्लो वर्णः सर्वकर्मारम्भे विनियोगः।**

सप्तव्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिः गायत्र्युष्णिग्-अनुष्टुब्बृहती-पङ्क्ति-स्त्रिष्टुब्जगत्यश्छन्दांस्यग्नि-वाय्वादित्य बृहस्पतिवरुणेन्द्र- विश्वेदेवा देवता **अनादिष्ट प्रायश्चित्ते प्राणायामे विनियोगः।** गायत्र्या **विश्वामित्रऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवताः उपनयने प्राणायामे विनियोगः। शिरसः प्रजापतिर्ऋषिः ब्रह्माग्नि-वायुसूर्यो देवताः यजुः प्राणायामे विनियोगः।**

ई विनियोग पढ़ैत ऋष्यादि स्मरण कय आसन स्थिर कय आँखि मुनि मौन भय अगिला मन्त्र तीन-तीन बेर अथवा एक-एक बेर पढ़ैत पूरक, कुम्भक आ रेचक नामक प्रणायाम करी–

प्राणायाम मन्त्रः–ॐ **भूः** ॐ **भुवः** ॐ **स्वः** ॐ **महः** ॐ **जनः** ॐ तपः ॐ **सत्यम्** ॐ। **तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।** ॐ **आपा ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम्।**

१. दहिना हाथक अँगूठा सँ नाकक दहिना पूड़ाके दाबि वाम पूड़ा सँ वायु ग्रहण करैत नाभिमे श्यामवर्ण चतुर्भुज विष्णुक ध्यान करैत पूरक नामक प्राणायाम करी।

२. तृतीया अनामिका आंगुर सँ वाम पूड़ा के दाबि वायुके धारण कनै हृदयसँ कमलासनस्थ रक्तवर्ण चतुर्भुज ब्रह्माक ध्यान करैत **कुम्भक** नामक प्राणायाम करी।

३. तृतीय दहिन पूड़ा सँ अँगूठा छोड़ाय शनैः शनैः वायु छोड़ैत, ललाटमे शुक्लवर्ण त्रिनेत्र शिवक ध्यान करैत **रेचक** नामक प्राणायाम करी।

प्राणायामक बाद तीन बेर आचमन कए वाम हाथमे जल राखि तेकुशा लए चारि बेर मार्जन करी अर्थात् ओहि जल सँ माथ के सिक्त करी– ●पहिल बेर–ॐ ई पढ़ी। ●दोसर बेर–भूर्भुवः स्वः ई पढ़ी। ●तेसर बेर–ॐ **तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्** ई पढ़ी। ●चारिम बेर–**ॐ आपो हिष्ठेत्यादित्र्यृचस्य सिन्धुद्वीप ऋषिर्गायत्री छन्दः आपो देवता मार्जने विनियोगः। १. ॐ आपो मयोभुवः। २. ॐ ता न ऊर्जे दधातन। ३. ॐ महेरणाय चक्षसे। ४. ॐ यो वः शिवतमो रसः। ५. ॐ तस्य भाजयतेह नः। ६. ॐ उशतीरिव मातरः। ७. ॐ तस्मा अरं गमाम वः। ८. ॐ यस्य क्षयाय जिन्वथ। ९. ॐ आपो जनयथा नः।**

ई पढ़ी। दुत्तर दहिन हाथक तरहत्थीमे जल लए नाकमे जल के स्पर्श करैत श्वास धारण कएने निम्नलिखित मन्त्र पढ़लाक बाद ओहि जल के अपन वाम भागमे विना देखने नीचा खसा दी–

ॐ **अघमर्षण–सूक्तस्याघमर्षण ऋषिरनुष्टुप् छन्दो भाववृत्तो देवता अश्वमेधाऽवभृथे विनियोगः। ॐ ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत। ततः समुद्रो अर्णवः। समुद्रादर्णवादधि संवत्सरे अजायत। अहोरात्राणि विदधद्–विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्या-चन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत्। दिवं च पृथिवीं चाऽन्तरिक्षमथो स्वः॥** तखन दहिना हाथमे जल लए निम्नलिखित मन्त्र पढ़ि ओहि जल सँ आचमन करी–

ॐ अन्तश्चरसीति तिरश्चीन ऋषिरनुष्टुप् छन्दः आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।

ॐ अन्तश्चरसि भूतेषु गुहायां विश्वतोमुखः।
त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कार आपो ज्योती रसोऽमृतम्॥

तखन सूर्यसम्मुख ठाढ़ भए अगिला मन्त्रें अर्घ्य दी–

ॐ भूर्भवःस्वः तत्सवितुर्वरेण्यं, भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।

एहि मन्त्र सँ सूर्य के अर्घ्य प्रदान कए प्रातः आ सायं कालमे बद्धाञ्जलि भए आ मध्याह्न कालमे ऊर्ध्वबाहु भए निम्नलिखित मन्त्र सँ सूर्यापस्थान करी–

प्रातः कालीन संध्याक समयमे सूर्यापस्थापन–

ॐ उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम।
ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकञ्चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याऽग्नेः।
आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च।
ॐ उद्वयं तमसः परिस्वः पश्यन्त उत्तरम्। देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्।

(नोट : तर्पणाधिकारी व्यक्ति तर्पण कयलाक बाद गायत्री मन्त्रक जप करथि)

॥०॥ गायत्री जप विधि ॥०॥

षडङ्गन्यासः–गायत्री मन्त्रके जपसँ पूर्व षडङ्गन्यास करवाक विधान अछि। अतः आगु लिखल एक-एक मन्त्रके उच्चारण करैत निचा देल क्रमशः हृदयादि अंगक स्पर्श करी।

ॐ हृदयाय नमः। ॐ भूः शिरसे स्वाहाः। ॐ भूवः शिखायै वषट्। ॐ स्वः कवचाय हुँ ॐ, भूर्भुवः स्वर्नेत्राभ्यां वौषट्। ॐ भूर्भुवः स्वः अस्त्राय फट्।

तदन्तर कलजोड़ि ई विनियोग वाक्य पढ़ी–

ॐ कारस्य ब्रह्मऋषिर्गायत्रीछन्दोऽग्निर्देवता सर्वकर्मारम्भे विनियोगः। ●**व्याहृतित्रयस्य प्रजापतिऋषिर्गायत्री उष्णिग्अनुष्टुभश्छन्दांस्यग्नि वाय्वादित्या देवता जपे विनियोगः।** ●**गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिर्गायत्रीच्छन्दः सविता देवता जपे विनियोगः।** तदुत्तर कलजोड़ि गायत्रीक ध्यानमंत्र पढ़ी–

ॐ श्वेतवर्णा समुद्दिष्टा कौशैयवसना तथा। श्वेतैर्विलेपनैः पुष्पैरलंकारैश्च भूषिता॥
आदित्यमण्डलान्तःस्था ब्रह्मलोकगताऽथवा। अक्ष सूत्रधरा देवी पद्मासनगता शुभा॥

कलजोड़ि अगिला मन्त्रे गायत्रीक आवाहन करी–

ॐ आगच्छ वरदे देवि त्र्यक्षरे ब्रह्मवादिनी। गायत्रिच्छन्दसां मातर्जपे मे सन्निधीभव॥ गायन्तं त्रायसे यस्माद् गायत्री त्वं ततः स्मृता॥

तदुत्तर न्यूनतम १० बेर अथवा यथासाध्य १०८ अथवा १००० बेर गायत्री मन्त्र जपी–

ॐ भूर्भुवः स्वः तत् सवितुर्वरेण्यं,भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ॥

तदन्तर एहि मन्त्र सँ कलजोड़ि भगवती गायत्रीके जप समर्पित करी–

ॐगुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि॥

तदन्तर अर्घामे जल लए ओहि जल सँ अगिला मन्त्रे गायत्री देवीक विसर्जन करी–

ॐ उत्तरे शिखरे जाते भूम्यां पर्वतवासिनि। ब्रह्मणा समनुज्ञाते गच्छ देवि यथासुखम्॥

तदन्तर अर्घा वा हाथमे जल लए अगिला मन्त्रे सूर्य के अर्घ्य दए प्रणाम करी–

ॐ नमो विवस्वते ब्रह्मन्! भास्वते विष्णुतेजसे। जगत्सवित्रे शुचये सवित्रे कर्मदायिने॥

एषोऽर्घः ॐ भगवते श्रीसूर्य्याय नमः।

तखन सूर्य के प्रणाम करी–

ॐ जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्। ध्वान्तारिं सर्वपाघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्॥

॥ इति छन्दोग संध्या वंदन विधि॥

नित्य पार्थिव पूजन विधि

देवताओं की पूजा दिनमे उत्तर या पूर्वाभिमुख होकर और रात्रिमे उत्तराभिमुख होकर करे। पूजा के आरम्भमे दिनमे सूर्यादि पञ्चदेवता आ विष्णु की तथा रात्रिमे गणपत्यादि पञ्चदेवता एवं विष्णु की पूजा करें।

१. पञ्चदेवत पूजा–तेकुशा अक्षत् लेकर आवाहन करी–ॐ **भूर्भुवः स्वः सूर्यादिपञ्चदेवताः इहागच्छत इह तिष्ठत।** जल लेकर–**एतानिपाद्य-अर्घ्य-आचमनीय-स्नानीय-पुनराचमनीयानि ॐ सूर्यादिपञ्चदेवताभ्यो नमः।**

चन्दन–**इदमनुलेपनम् ॐ सूर्यादिपञ्चदेवताभ्यो नमः।**

अक्षत्–**इदमक्षतम् ॐ सूर्यादिपञ्चदेवताभ्यो नमः।**

पुष्प–**एतानि पुष्पाणि ॐ सूर्यादिपञ्चदेवताभ्यो नमः।**

जल से प्रसादादि उत्सर्ग करें–

एतानि गन्ध-पुष्प-धूप-दीप-ताम्बूल-यथाभाग नानाविध-नैवेद्यानि ॐ सूर्यादिपञ्चदेवताभ्यो नमः।

जल–**इदमाचमनीयम् ॐ सूर्यादिपञ्चदेवताभ्यो नमः।**

फूल लेकर पुष्पांजलि दें–

एष पुष्पाञ्जलिः ॐ सूर्यादिपञ्चदेवताभ्यो नमः।

२. विष्णु पूजा : जौ तिल लेकर आवाहन करें–

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवन् श्रीविष्णोः इहागच्छ इहतिष्ठ।

जल–**एतानि पाद्य-अर्घ्य-आचमनीय-स्नानीय पुनराचमनीयानि ॐ भगवते श्रीविष्णवे नमः।**

चन्दन–**इदमनुलेपनम् ॐ भगवते श्रीविष्णवे नमः।**

यवतिल–**एते यवतिलाः ॐ भगवते श्रीविष्णवे नमः।**

पुष्प लय–**इदं पुष्पम् ॐ भगवते श्रीविष्णवे नमः।**

तुलसी पत्र–**इदं तुलसी पत्रम् ॐ भगवते श्रीविष्णवे नमः।**

जल से प्रसादादि उत्सर्ग करें–**एतानि गन्ध-पुष्प-धूप-दीप-ताम्बूल-यथाभाग-नानाविध नैवेद्यानि ॐ भगवते श्रीविष्णवे नमः।**

जल–**इदमाचमनीयं भगवते श्रीविष्णवे नमः।**

दुनू हाथमे फूल ले–**एष पुष्पाञ्जलिः ॐ भगवते श्रीविष्णवे नमः।** (मूर्ति या शालीग्राम हो तो आवाहन-विसर्जन नहीं करें) इसके बाद स्पष्टदेवता की पूजा जप आदि करें।

३. कीर्त्तिमुख पूजा : तेकुशा अक्षत् लेकर आवाहन करी–

ॐ भूर्भुवः स्वः कीर्त्तिमुख इहागच्छ इह तिष्ठ। जल लेकर–**एतानि पाद्य-अर्घ्य-आचमनीय-स्नानीय- पुनराचमनीयानि ॐ भूर्भुवः स्वः कीर्त्तिमुखाय नमः।**

चन्दन–**इदमनुलेपनम् ॐ कीर्त्तिमुखाय नमः।**

अक्षत्–**इदमक्षतम् ॐ कीर्त्तिमुखाय नमः।**

पुष्प–**एतानि पुष्पाणि ॐ कीर्त्तिमुखाय नमः।**

विल्वपत्र–**एतानि विल्वपत्राणि ॐ कीर्त्तिमुखाय नमः।**

पुष्प–**एतानि पुष्पाणि ॐ कीर्त्तिमुखाय नमः।**

जल से प्रसादादि उत्सर्ग करें–**एतानि गन्ध-पुष्प-धूप-दीप-ताम्बूल-यथाभाग-नानाविध-नैवेद्यानि ॐ कीर्त्तिमुखाय नमः।**

जल–**इदमाचमनीयम् ॐ कीर्त्तिमुखाय नमः।**

फूल लें पुष्पांजलि दें–**एष पुष्पाञ्जलि ॐ कीर्त्तिमुखाय नमः॥**

४. पार्थिव पूजन : **ॐ हराय नमः** इस मन्त्र से पवित्र मृत्तिका ग्रहण कर **ॐ महेश्वराय नमः** इस मन्त्र से महादेव बनाकर **शूलपाणये नमः: ॐ शूलपाणे इस सुप्रतिष्ठितो भव।** इस मन्त्र से अक्षत् लगाकर पात्र में शिव को सामने रख ध्यान करें–**ॐ ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं। रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्॥ पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं। विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥** पश्चात् **ॐ पिनकधृगिहागच्छ इह तिष्ठ** से आवाहन कर। जल लेकर–**एतानि पाद्य-अर्घ्य-आचमनीय- स्नानीय-पुनराचमनीयानि ॐ साम्बसदाशिवाय नमः।** चन्दन–**इदमनुलेपनं ॐ साम्बसदाशिवाय नमः।** अक्षत–**इदमक्षतम् ॐ साम्बसदाशिवाय नमः।** पुष्प–**एतानि पुष्पाणि ॐ साम्बसदाशिवाय नमः।** विल्वपत्र– **एतानि विल्वपत्राणि ॐ साम्बसदाशिवाय नमः।** जल से प्रसादादि उत्सर्ग करें–**एतानि गन्ध-पुष्प-धूप-दीप- ताम्बूल-यथाभाग-नानाविध-नैवेद्यानि ॐ साम्बसदाशिवाय नमः, पशुपतये नमः।** जल–**इदमाचमनीयम् ॐ साम्बसदाशिवाय नमः, पशुपतये नमः।** फूल लें पुष्पांजलि दें–**एष पुष्पाञ्जलि ॐ साम्बसदाशिवाय नमः, पशुपतये नमः॥** इसके बाद पुष्पाक्षत चन्दन-जल से महादेव के पूर्व, ईशान, उत्तर आदि चारों ओर तथा अन्त में महादेव के उपर अष्टमूर्त्ति की पूजा करें–**१. ॐ शर्वाय क्षितिमूर्त्तये नमः** पूर्व में। **२. ॐ भवाय जलमूर्त्तये नमः** ईशानकोण में। **३. ॐ रुद्रायाग्निमूर्त्तये नमः** उत्तर दिशा में। **४. ॐ उग्राय वायुमूर्त्तये नमः** वायव्यकोण में। **५. ॐ भीमायाकाशमूर्त्तये नमः** पश्चिम में। **६. ॐ पशुपतये यजमानमूर्त्तये नमः** नैऋत्यकोण में। **७. ॐ महादेवाय नमः सोममूर्त्तये नमः** दक्षिण में। **८. ॐ ईशानाय सूर्यमूर्त्तये नमः** अग्निकोण में। **९. ॐ महादेवाय नमः** पार्थिव लिंग पर। अन्त में जलपुष्पाक्षतचन्दनादि से **ॐ ब्रह्मणे नमः** इस मन्त्र से ब्रह्मा की पूजा भूमि पर करें। इसके यथा योग्य पाठ-जप स्तुत्यादि कर, पूजाक्रम से जल लेकर विसर्जन करें। **ॐ सूर्यादिपञ्चदेवताः पूजिताः स्थः क्षमध्वं स्वस्थानं गच्छत। ॐ भगवन् विष्णो पूजितोऽसि प्रसीद क्षमस्व स्वस्थानं गच्छ। ॐ कीर्त्तिमुख पूजितोऽसि प्रसीद क्षमस्व स्वस्थानं गच्छ। ॐ साम्बसदाशिव पूजितोऽसि प्रसीद क्षमस्व स्वस्थानं गच्छ।** तदुत्तर **ॐ विष्वक्सेनाय नमः** मन्त्र से भगवान पर से तथा **ॐ चण्डेश्वराय नमः** इससे महादेव पर से निर्माल्य हटावें।

अथ कलश-स्थापन विधि

गोबर सँ नीपल भूमि पर पूबमुहे वा उत्तर मुहे आसन पर बैसि तिलक लगाय सन्ध्यावंदन, पञ्चदेवता ओ विष्णुक पूजा कय कुश-तिल-जल लय कलशस्थापनक संकल्प करी :–

ॐ अद्य अमुके मासि अमुके पक्षे अमुक तिथौ अमुक गोत्रस्य मम श्री अमुक शर्मणः सकलदुरितोपसर्गापच्छान्ति-दीर्घायुष्ट्व-बल-पुष्टि-नैरुज्य-प्राप्तिपूर्वकश्रीदुर्गाप्रीतिकामःश्रीदुर्गापूजाङ्ग-कलशस्थापनमहं करिष्ये।

भूमिके गंगाजल सँ सिक्त कय एक हाथ चौकोर भूमि नापि ओहि पर चारि आंगुर ऊँच बालु पसारि ओकर बीचमे बिन्दुगर्भ षट्कोण अथवा अष्टदल यन्त्र बनाबी ओहि पर आधार शक्तिक पूजा करी। अक्षत लय–

ॐ कलशाधारशक्ते इहागच्छ इह तिष्ठ। एतानि पाद्यादीनि ॐ कलशधारशक्तये नमः। इदमनुलेपनं., इदं सिन्दूरं, इदम् अक्षतं, एतानि पुष्पाणि, एतानि गन्धपुष्प-धूपदीप-नैवेद्यानि, इदमाचमनीयं, एष पुष्पाञ्जलिः कलशाधारशक्तये नमः। तखन भूशुद्धिकरी। भूमिके स्पर्श कय–**ॐ भूरसि भूमिरस्यादितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री। पृथिवीं यच्छ, पृथिवीं दृग्वंह, पृथिवीं मा हिग्वंसीः॥ ई मन्त्र पढ़ी।** जल मिश्रित गोबर छिटैत ई मन्त्र पढ़ी–**ॐ मानस्तोके तनये मा न आयुषि मानो गोषु मानो अश्वेषु रीरिषः। मानो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे॥** ओहि पर यव वाउग करी– **ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणाय त्वोदनानाय त्वा व्यानाय त्वा दीर्घामनुप्रसिति मायुषेधाम्। देवो वः सविता हिरण्यपाणि प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वा महीनां पयोऽसि॥१॥ ॐ यव त्वं यवरूपोऽसि यज्ञार्थे निर्मितो विधेः। देवानां तृप्तिकृद् यस्मात् तस्मात्त्वं वरदो भव॥२॥ ॐ जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी। दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वधा स्वाहा नमोऽस्तु॥३॥ ॐ दुर्गे दुर्गे! रक्षिणि स्वाहा॥४॥** ओहि पर धातुनिर्मित वा माँटिक एहन घट स्थापित करी जे दृढ़(दढ़ ओ मजगूत)हो एवं कारी नहि होतकर मन्त्र :–**ॐ आजिघ्रं कलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः। पुनरूर्जा निवर्तस्व सा नः सहस्त्रं धुक्ष्वोरुधारा, पयस्वती पुनर्मा विशताद् रयिः॥** तदुत्तर कलश पर निम्नांकित वस्तु सभ मन्त्र पढ़ि दए दी–

१. दही एवं अक्षतः **ॐदधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभिनो मुखाकरत् प्रण आयूंषि तारिषत॥** →

॥ अथ कर्मकाण्ड विमर्श ॥

पंचोपचार पूजा

गन्धः पुष्पं च धूपश्च दीपो नैवेद्यमेव च ।
पंचोपचाराः कथिता देवानां प्रीतिहेतवः ॥

षोडशोपचार पूजा

आसनं स्वागतं चार्घ्यं पाद्यमाचमनं तथा ।
मधुपर्काचमनस्नानवसनाभरणानि च ॥
गन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्यं चन्दनं तथा ।

पंचगव्यम्

गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिः कुशोदकम् ।
पञ्चगव्यमिदं प्रोक्तं महापातकनाशनम् ॥

पंचामृतम्

शर्करा मधु दुग्धं च घृतं दधि समांशकम् ।
पञ्चामृतमिदं प्रोक्तं देहशुद्धौ विधीयते ॥

पञ्चरत्नानि

वज्रमौक्तिकवैदूर्यपुष्परागेन्द्रनीलकम् ।
पञ्चरत्नमिदं प्रोक्तं मन्त्रैः कुम्भेषु निःक्षिपेत्॥

पञ्चपल्लवाः

अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षचूतन्यग्रोधपल्लवाः ।
पञ्चपल्लव इत्युक्तः सर्वकर्मसु शोभनः ॥

सप्तमृत्तिकाः

गजाश्वरथवल्मीकसंगमाद्ध्रद्गोकुलात् ।
राजद्वारप्रवेशाच्च मृदमानीय निःक्षिपेत् ॥

सर्वौषधिः

मुदा मांसी वचा कुष्ठं शैलेयं रजनीद्वयम्।
शुण्ठी चम्पकमुस्तं च सर्वौषधिगणः स्मृतः॥
सर्वौषधीनामभावे तु दद्यादेकां शतावरीम्।

सप्तधान्यम्

यवगोधूमधान्यानि तिलाः कंकुस्तथैव च ।
श्यामकं चणकं चैव सप्तधान्यमुदाहृदम् ॥

हवने शाकल्यनिर्णय

तिलार्धं तण्डुलं प्रोक्तं तण्डुलार्धं यवा स्मृता।
यवार्द्धं शर्करा दद्यात् सर्वार्थं च घृतं स्मृतम्॥

प्रदक्षिणा विचार

एका चण्ड्या, रवेः सप्त, तिस्त्रःकार्याविनायके।
हरेश्चतस्त्रः कर्तव्याः शिवस्यार्धप्रदक्षिणा ।
(आह्निकसूत्र)

नवग्रह-समिधा (लकड़ी)

अर्कः पलाशः खदिरस्त्वपामार्गोऽथ पिप्पलः ।
औदुम्बरशमीदूर्वाकुशाश्च समिधः क्रमात् ॥
अर्क(मदार), पलाश, खदिर (खैर), अपामार्ग (चिड़चिडि),पीपल,औदुम्बर(गूलर),शमी, दूर्वा और कुशा-ये नव ग्रहोंकी समिधाएँ कही गई हैं।

महिष्यादि प्रसव दोषः

माघेबुधे च महिषी श्रावणे बडवा दिवा ।
सिंहे गावः प्रसूयन्ते स्वामिनो मृत्युदायकाः ॥

विल्वपत्र विचार

अर्पितान्यपि विल्वानि प्रक्षाल्यापि पुनःपुनः ।
शंकरायार्पणीयानि न नवानि यदि क्वचित् ॥

दूर्वादि विचार

दूर्वाःस्वाभिमुखग्राःस्युर्बिल्वपत्रमधोमुखम् ।
दूर्वादो अपनी ओर और बिल्वपत्र नीचो मुखकर चढ़ाना चाहियें ।

धूप विचार

पूजनस्थल के बायें भाग में धुपदानी (अगरबत्ती) स्थापित करना चाहियें ।

दीप विचार

घी का दीपक दायीं ओर और तेल का दीपक बायीं ओर स्थापित करना चाहिये ।

जपस्थान विशेष

शुचिस्थाने स्वगृहे जलाशये देवालये वा शूचि-
र्भूत्वा विधिवज्जपं कुर्यात्कारयेद्वा तदुक्तं स्मृतौ ।
गृहे त्वेकगुणं जाप्यं नद्यां तु द्विगुणं स्मृतम् ॥
गवां गोष्ठे दशगुणं अग्न्यागारे शताधिकम् ।
तीर्थादिषु सहस्त्रं स्यादनन्तं विष्णुसन्निधौ ॥

प्रतिमाके स्थापनामे दिशाका निर्णय

(देवतामूर्तिप्रकरण ३।२४-२७)

पूर्वापरास्यं देवानां मुखं, नो दक्षिणोत्तरम् ।
ब्रह्मा विष्णुः शिवार्केन्द्रा गुहः पूर्वपराङ्मुखः ॥
शिवब्रह्मजिना विष्णुः सर्वाशाभिमुखाः शुभाः ॥
गणेशो भैरवश्चण्डी नकुलीशो ग्रहास्तथा ।
भूताद्या धनदाश्चैव दक्षिणास्याः शुभाः स्मृताः ॥
मातृणां सदनं कार्यं दक्षिणोत्तरदिङ्मुखम् ।
हनुमान् वानरश्रेष्ठो नैर्ऋतारयो विदिङ्मुखः ॥

मंदिर के लिए प्रतिमाका परिमाण

(देवतामूर्तिप्रकरण ३।२४-२७)

सौम्या तु हस्मात्रा वसुदा हस्तद्वयोच्छ्रिता प्रतिमा ।
क्षेमसुभिक्षाय भवेत् त्रि-चतुर्हस्तप्रमाणा वा ॥
मन्दिरक लिए एक हाथकी प्रतिमा सैम्यताको प्रदान करने वाली,दो हाथकी प्रतिमा धनको देनेवाली, तीन हाथकी प्रतिमा कल्याणको देनेवाली और चार हाथ की प्रतिमा सुभिक्षको देनेवाली होती है ।

घर के लिए प्रतिमाका परिमाण

(भविष्यपुराण)

अंगुष्ठपर्वादारम्य वितस्तियोवदेव तु ।
गृहेषु प्रतिमा कार्या निाधिका शस्यते बुधैः ॥
अंगुष्ठ पर्व से लेकर वितस्ति (वित्ता) परिमाणतककी प्रतिमा घरों में रखनी चाहिए, इससे अधिक प्रमाण की प्रतिमा विद्वानों ने अप्रशस्त कही है ।

घर में प्रतिमा रखने का विचार

गृहे, लिंगद्वयं नार्च्यं शालग्रामद्वयं तथा ।
द्वे चक्रे द्वारकायास्तु नार्च्यं सूर्यद्वयं तथा ॥
शक्तित्रयं तथा चार्च्यं गणेशत्रयमेव च ।
द्वौ शङ्खौ नार्चयेच्चैव भग्नां च प्रतिमां तथा ॥
नार्चयेच्च तथा मत्स्यकूर्मादिदशकं तथा ।
गृहेऽग्निदग्धा भग्नाश्च नार्च्याः पूज्या वसुन्धरे ॥
एतासां पूजनान्नित्यमुद्वगं प्राप्नुयाद् गृही ॥
घरमे दो लिंग, दो शालिग्राम, दो द्वारिकाचक्र, दो सूर्य, तीन शक्ति, तीन गणेश, दो शंख, खण्डित प्रतीमा और मत्स्य, कूर्म आदि दशो अवतारों की एक साथ प्रतिमाओं का तथा अग्नि से दग्ध (जली) एवं भग्न (खण्डित) मूर्तिका पूजन नहीं करना चाहिए । इस प्रकार की मूर्तियों के पूजन करने से गृहस्थ नित्य हो उद्वेग (संकट) को प्राप्त होता है ।

घर में शालीग्राम रखने का विचार (पद्मपुराण)

शालग्रामाः समाः पूज्याःसमेषु द्वितीयं न हि ।
विषमा नैव पूज्यास्तु विषमेष्वेक एव हि ॥
शालग्रामशिला भग्ना पूजनीया सचक्रका ।
खण्डिता स्फुटित वापि शालिग्रामशिलाशुभा ॥
शालिग्राम भगवान का सम चार छः आदि रूप से पूजन करना चाहिए । समरूपमे भी दो शालिग्राम की पूजा नहीं करनी चाहिए । विषम रूप में एक शालग्राम ही पूजा करना चाहिए (तीन शालिग्राम आदिपूजन नहीं करना चाहिए ।)

खण्डित मूर्ति का विचार

१. खण्डित मूर्ति यदि काष्ठा की हो तो उसे अग्नि में समर्पित कर दें ।
२. यदि पत्थर की हो तो जल में प्रवाह करें और यदि रत्न या धातु की हो उसे आगाध जल में डबो देना चाहिए । जो मूर्ति खण्डित हो गई हो उन खण्डित अंग को वस्त्र आदि से ढककर मूर्ति को सवारी में रखें । तत्पश्चात् उसे गाजे बाजे के साथ किसी शुद्ध जल वाले जलाशय तक ले जाकर जल में डुबो दें । जिस परिणाम की मूर्ति खण्डित हुई हो उसी परिमाण की दूसरी मूर्ति तैयार करके पहली मूर्ति वाले खाली स्थान पर यथा विधि प्रतिष्ठा करनी चाहिए ।

यज्ञ में दशदान का विवरण

गो-भू-तिल-हिरण्याज्य-वासो-धान्य-गुडानि च।
रौप्यं लवणमित्येवं दशदानं प्रकीर्तितम् ॥
गौ, भूमि, तिल, सुवर्ण, घृत, वस्त्र, धान, गुड़, चाँदी और नमक-ये दश वस्तु दानके लिए कही गई है।

गोदान का महत्त्व

गोप्रदानं तारयते सप्त पूर्वान् परांस्तथा ।
यथाकथञ्चिद्दत्त्वा गां धेनुं वाऽधेनुमेव वा ॥
अरोगामपरिक्लिष्टां दाता स्वर्गे महीयते ॥
गोदान से सात पीढ़ी के पूर्वजों तथा सात पीढ़ीके आगे होने वाले वंशजो का निरस्तार करती है।

भूमिदान का महत्त्व

षष्टिं वर्षहस्त्राणि स्वर्गे वसति भूमिदः ।
उच्छेत्ता चानुमन्ता च तावन्ति नरके वसेत् ॥
यत्किञ्चित्कुरुते पापं जन्मप्रभृति मानवः ।
अपि गोचर्ममात्रेण भुमिदानेन शुद्धयति ॥
भूमिदान करनेवाला पुरुष साठ हजार वर्षोतक स्वर्ग में निवास करता है और जो दी हुई भूमि हरण करता है या हरण करने का सलाह देता है वह उतने ही वर्ष नरकमे रहता है। मनुष्य जन्मसे लेकर जो कुछ भी पाप करता है उसकी निवृत्ति के लिए यदि वह गायके चामके बराबर भी भूमिदान करें, तो वह शुद्ध हो जाता है ।

अग्नि को प्रज्वलित करने का विचार (देवीभागवत ११।२२।५-६)।

न पाणिना न शूर्पेण न च मेध्याजिनादिभिः।
मुखेनोपधमेदग्निं मुखादेव व्यजायत ॥
पटकेन भवेद् व्याधिः शूर्पेण धननाशनम्।
पाणिना मृत्युमाप्नोति कर्मसिद्धिर्मुखेन तु ॥
यज्ञाग्नि को न तो हाथसे दहकावे, न सूप से और न पवित्र मृगचर्म आदि से(आदि पदसे वस्त्र का ग्रहण है)। मुखसे ही यज्ञाग्निको धौंके, क्योंकि वह मुखसे उत्पन्न हुआ है। वस्त्र (चर्म आदि) से अग्नि को धौंकने पर व्याधि(रोग) होती है, सूप से धौकने पर धन-नाश होता है, हाथस धौंकने पर मरण होता है, किन्तु मुखसे धौंकने पर कर्मसिद्धि होती है ।

विधिहीन अग्नि में हवन करने से हानि (वायुपुराण ७५।६२)।

अप्रबुद्धे सधूमे च जुहुयाद्यो हुताशने ।
यजमानो भवेदन्धः सोऽपुत्र इति नः श्रुतिः ॥
जो यजमान अग्निके ठीक-ठीक न जलने पर और धूमके रहते हुए अग्नि में हवन करताहै, वह अन्धा और पुत्रहीन होता है ।

पूर्णाहुति खड़े होकर ही करना चाहिए

(अग्निपु मूर्धादिनिवः०,(शु.य. ७।२४)।

मूर्धानं दिवमन्त्रेण संस्तुवेण च धारयेत्।
दद्यादुत्थाय पूर्णां तु नोपविश्यकदाचन ॥

इस मन्त्रके द्वारा स्त्रुव से घृतकी धाराको खड़े होकर पूर्णाहुति करना चाहिये,बैठकर नहीं। जानना चाहिये ॥

कर्म-विशेष में अग्निके भिन्न-भिन्न नाम (देवीपुराण १२३)।

प्रत्येक कर्मके लिये अग्निके अलग-अलग नाम हैं। अतः जिस कर्मके लिये जिस अग्निका आचार्यों ने नाम-निर्देश किया है,उसी अग्नि का सविधि आवाहन एवं स्थापन कर हवन करना चाहिए। गर्भाधान-**भरत**,पुंसवन संस्कार में-**वर**, सीमन्तोन्नयन संस्कार में-**मंगल**, जातकर्म में-**स्वभू** और नामकर्म में-**बल**, अन्नप्राशन संस्कार में-**अंगिरा**, चूड़ाकरण में **समुद्भव**,उपनयन में **जय**,गोदान अर्थात् समावर्तन में **रुद्र**,विवाह में **संयुग** अग्नि कहा गया है। अग्निहोत्र में **व्यालिक**, गृहकर्म में **भव** और पितृकर्म में **विश्वदेव**, उदरकी अग्निका नाम **अनल है**, मृत (शव) का भक्षण करने में अग्निका नाम **कलमष है**। महाहोम में **वह्निका**,जल में प्रवाह करने में अग्नि का नाम **जल** है। पूर्णिमा के होम में **शशांक**,प्रलय में अग्नि का नाम **संवर्तक** है। काठसे उत्पन्न अग्निका नाम **घोर** है। वाँसो से उठी अग्नि का नाम **परान्त** है। समुद्र में रहनेवाली अग्नि **वडमाग्नि** है। पाक (अन्नपाक) करने में दक्ष,वसोर्धारामे जिसमें हवन किया जाता है उस अग्नि का नाम **निधीश** है। धूपसे निकली अग्निका नाम **कामदेव** है। धान आदि के तुष (भूसी) की अग्निका नाम **कामहा** है। रथ्या (चत्वर चौराहो) में स्थित अग्निका नाम **कामहा** है। क्षुधा उत्पन्न करनेवाली अग्निका नाम **बिभत्सु** है। राजाके घर में उत्पन्न अग्नि का नाम **विजय** है। वृक्षों से उत्पन्न अग्नि का नाम **धूम्र** है। दीपक में स्थित अनामिका नाम **कृष्णपथ** है। हेमन्त आदि की अग्नि का नाम **वाद्य** है। मातृमन्दिरमे उत्पन्न अग्नि का नाम **अजित** है। म्लेछ लोगों में जो अग्नि रहती है उसका नाम **शंकर** है। ईंटोकी भट्टीकी अग्निका नाम **संघ** है। प्रायश्चित में अथवा व्रत खण्डित होने पर **शुद्धि** नामक अग्नि और शुक्र शुक्र के आधान में अर्थात वीर्याधानमें **जय** जय नामक अग्नि जानना चाहिये ॥

रुद्राक्ष के एक-मुख आदिके नाम और उनका फल

एकवक्त्रः शिवः साक्षाद् ब्रह्महत्यां व्यपोहति ।
अवध्यत्वं प्रतिस्त्रोती बह्निस्तम्भं करोति च ॥
द्विबक्त्रो हरगौरी स्याद् गोवधाद्यधनाशकृत्॥ ....(शिवरहस्य के अनुसार)

एक मुखबाला रुद्राक्ष साक्षात् 'शिव' है, जो ब्रह्महत्या को दूर करता है और समस्त स्रोतों को अवध्य तथा अग्नि को रोकता है । **दो मुखवाला रुद्राक्ष** 'हरगौरी' (शिव, पार्वती) है, जो गोहत्या आदि पापों को दूर करता है । **तीन मुखवाला रुद्राक्ष** 'अग्निजन्मा' है, जो पाप-समूहों को दूर करता है । **चार मुखवाला रुद्राक्ष** 'ब्रह्मा' है, जो मनुष्य की हत्या के पाप को नष्ट करता है । **पाँच मुखवाला रुद्राक्ष** 'कालाग्नि' है, जो अगम्य स्त्रीके साथ गमन तथा अभोज्य के भोजन करनके पापको नष्ट करता है । **छः मुखवाला रुद्राक्ष** 'गुह' है, जो भ्रूण-हत्या के पाप को नष्ट करता है । **सात मुखवाला रुद्राक्ष** 'अनन्त'है, जो सुवर्ण की चोरी के पापको नष्ट करता है । **आठ मुखवाला रुद्राक्ष** 'विनायक' है, जो समस्त प्रकार के असत्यों का नाश करता है । **नौ मुखवाला रुद्राक्ष** 'भैरव' है, जो शिवसायुज्य (मोक्ष) को देता है । **दश मुखवाला रुद्राक्ष** 'विष्णु' है, जो भूत एवं प्रेतके भयको हरण करता है । **ग्यारह मुखवाला रुद्राक्ष** 'रुद्र' है, जो अनेक प्रकारके यज्ञोंके फल को देता है । **बारह मुखवाला रुद्राक्ष** 'आदित्य' है, जो समस्त प्रकार के रोगों को दूर करता है । **तेरह मुखवाला रुद्राक्ष** 'काम' है, जो समस्त कर्मों में सफलता देता है और **चौदह मुखवाला रुद्राक्ष** 'श्रीकण्ठ' है, जो वंशका उद्धार करता है।

॥ अथ यज्ञ विमर्श ॥

अनाधिकारी को यज्ञ कराने से हानि (मनुस्मृति ३।६५)

अयाज्ययाजनैश्चैव नास्तिक्येन च कर्मणाम् ।
कुलान्याशु विनश्यन्ति यानि हीनानि मन्त्रतः ॥

जिनको यज्ञ करने का अधिकार अथवा योग्यता नहीं है, इसके द्वारा यज्ञ कराने से कर्मो की नास्तिकतासे और वेदमन्त्रों से रहित होने से कुल शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं ।

पतित को यज्ञ कराने से हानि

पतितं याजयित्वा तु कृमियोनौ प्रजायते ।
तत्र जीवति वर्षाणि दश पञ्च च भारत ॥
कृमिभावाद् विमुक्तसतु ततो जायति गर्दभः ।
गर्दभः पञ्च वर्षाणि पञ्च वर्षाणि सूकरः ॥
कुक्कुटः पञ्च वर्षाणि पञ्च वर्षाणि जम्बुकः ।
श्वा वर्षमेकं भवति ततो जायति मानवः ॥

पतित पुरुषको यज्ञ करानेवाला ब्राह्मण कीडा बनकर उत्पन्न होता है और हे भरतवंशी राजन्! वह पन्द्रह वर्ष तक कीड़े की योनि को भोगता है। कीड़े की योनिसे छुटकर वह गधा होता है, फिर वह पाँच वर्ष में गधे की योनि से छुटकर सूअर होकर उत्पन्न होता है और पाँच वर्ष तक मुर्गे की, गीदड़की तथा एक वर्ष तक कुत्ते की योनि को भोग कर फिर वह मनुष्य योनि में जन्म लेता है ।

शूद्र को यज्ञ कराने से हानि (पाराशरस्मृति १३।३६)

दक्षिणार्थे तु यो विप्रः शूद्रस्य जुहुयाद्धविः ।
ब्राह्मणस्तु भवेच्छूद्रः शूद्रस्तू ब्राह्मणो भवेत् ॥

जो ब्राह्मण दक्षिणा के लोभसे शूद्रको यज्ञ करता है,वह शूद्र हो जाता है।

यज्ञ में ब्राह्मणों के पूजन से ही कर्म की पूर्णता होती है

ब्राह्मणानां नित्यपूजा कार्या वित्तानुसारतः ।
यावद् विप्रो न पूज्यन्ते न तावत् पूर्णतां व्रजेत् ॥
पूजितेषु तु विप्रेषु सर्वं सम्पूर्णतां व्रजेत् ।
प्रतिमा तेऽधिकं पुण्यं ब्राह्मणस्य तु पूजने ॥

यज्ञ में प्रतिदिन अपनी शक्तिके अनुसार ब्राह्मणों का पूजन करनी चाहिए । क्योंकि जब तक ब्राह्मणों का पूजन नहीं किया जाता, तब तक यज्ञ पूर्ण नहीं होता । देवताओं से भी अधिक यज्ञके ब्राह्मणों के पूजन करने का महत्त्व है, अतः ब्राह्मणों का पूजन होने पर ही यजमानके समस्त कार्य परिपूर्ण होते हैं ।

स्त्री और नपुंसक के द्वारा हवन करनेवाले यज्ञ का निषेध (मनु. ४।२०६)

अश्लीकमेतत्साधूनां यत्र जुह्वत्यमी हविः ।
प्रतीतमेतद्देवानां तस्मात्तत्परिवर्जयेत् ॥

जिस यज्ञमें स्त्री और नपुंसक हवन करते हो वह यज्ञ सज्जनों लिये लक्ष्मी का विनाशक है औ इस प्रकार का यज्ञ देवताओं के लिये भी विरुद्ध है, अतः ऐसे यज्ञका त्याग कर दे ।

यज्ञादि में धार्मपत्नी की आवश्यकता

पत्नी धर्मार्थकामानां कारणं प्रवरं स्मृतम् ।
अपत्नीको नरो भूप कर्मयोग्यो न जायते ।
ब्राह्मणः क्षत्रियो वापि वैश्यः शूद्रोऽपि वा नरः ॥

पत्नी धर्म, अर्थ तथा कामकी सिद्धि का श्रेष्ठ साधन है । कोई भी पत्नी-रहित पुरुष चाहे वह ब्राह्मण हो, क्षत्रिय हो, वैश्य हो अथवा शूद्र हो, धार्मिक कर्म करने के योग्य नहीं हो सकता । **"अयज्ञो वा** एष **योऽपत्नीकः ।"** (तैत्तिरीयब्राह्मण २।२।२) जो पुरुष पत्नी से रहित है वह यज्ञ के अयोग्य है । **एकचक्रो रथा यद्वदेकपक्षो यथा खगः । अभार्योऽपि नरस्तद्वदयोग्यः सर्वकर्मसु ।** (भविष्यपुराण)–जिस प्रकार एक पहियेवाला रथ और एक पंखवाला पक्षी चलने या उड़ने में असमर्थ होता है उसी प्रकार भार्यारहित पुरुष समस्त कर्मो में अयोग्य है ।

पत्नी के अनुपस्थित में (वाधूल स्मृति)

यस्य भार्या विदूरस्था पतिता वा रजस्वला ।
अनिष्टा प्रतिकूला वा तस्याः प्रतिनिधौ क्रिया ॥
अन्यां कुशमयीं पत्नीं कृत्वा तु प्रतिरूपिकाम् ।
क्वचिच्छरमयीं पत्नीं नित्यकर्मणि कारयेत् ॥

जिनकी पत्नी दूर हो, रजस्वला हो, अनष्टि करनेवाली हो अथवा अनुकूल न हो, ऐसी स्थिति में भी अपनी पत्नी के प्रतिनिधि रूपमें कुशल की पत्नी का निर्माण कर नित्यकर्म करें ।

कर्म विशेष में पति के समीप पत्नी के बैठने का निर्णय

सर्वेषु धर्मकार्येषु पत्नी दक्षिणतः शुभा ।
व्रतबन्धे विवाहे च चतुर्थी- सहभोजने ।
व्रते दाने मखे श्राद्धे पत्नी तिष्ठति दक्षिणे ॥
वामे सिन्दुरदाने च वामे चैव द्विरागमने ।
वामेऽशनैकशय्यायां भवेज्जाया प्रियार्थिनी ॥
आशीर्वादेऽभिषेके च पादप्रक्षालने तथा ।
शयने भोजने चैव पत्नी तूत्तरतो भवेत् ॥

समस्त धार्मिक कार्यों में पत्नीके लिये अपने पति के दक्षिण भागमें बैठना शुभ कहा जाता है। व्रतबन्ध में विवाहमें, चतुर्थी कर्ममें, सहभोजन में, दान में, यज्ञ में और श्राद्ध में पत्नी को पति के दक्षिण भाग में बैठना चाहिये। विवाह के समय सिन्दुरदान में, द्विरागमन में, पति के साथ बैठकर भोजन करते समय और पति के साथ शयन करते समय पत्नी को सर्वदा अपने पति के वाम भाग में ही रहना चाहिये। ब्राह्मणों के द्वारा आशीर्वाद प्राप्त करते समय, ब्राह्मणों के पाद-प्रक्षालन के समय, अभिषेकके समय भी अपने पतिसे वामभागमें बैठना चाहिये।

स्त्री को पति की आज्ञा के बिना यज्ञादि करने का निषेध (मनुस्मृति ५।१५५)

नास्ति स्त्रीणां पृथज्ञो न व्रतं नाप्युपोषणम् ।
पतिं शुश्रूषते येन तेन स्वर्गे महीयते ॥

स्त्रियों को पतिकी आज्ञा के वगैर स्वतन्त्ररुपेण यज्ञ व्रत तथा उपवस करने का अधिकार नहीं है । स्त्री तो केवल पति-सेवारुपी यज्ञके प्रभाव से ही स्वर्ग में आदर प्राप्त करती है ।

यज्ञादि में संकल्प की आवश्यकता (भविष्यपुराण में)

संकल्पेन विना कर्म यत्किञ्चित्कुरुते नरः ।
फलं चाप्यल्पकं तस्य धर्मस्यार्द्धक्षयो भवेत् ॥

मनुष्य संकल्पके बिना जो कुछ भी कर्म करता है उसका फल बहुत थोड़ा होता है। उसके आधे पुण्यका क्षय हो जाता है। **संकल्पमूलः कामो वै यज्ञाः संकल्पसम्भवाः। व्रतानि यमधर्माश्च सर्वे संकल्पजाः स्मृताः ॥**

यज्ञादि में न्यास की आवश्यकता

पूजाजपार्चना होमाः सिद्धमन्त्रकृता अपि ।
अङ्गविन्यासविधुरा न दास्यन्ति फलान्यामी ॥
न्यासं विना जपं प्राहुरासुरं विफलं बुधाः ।
न्यासात्तदात्मको भूत्वा देवो भूत्वा तु तं यजेत् ॥

सिद्ध मन्त्र करने पर भी पूजन, जप, अर्चन तथा होमकर्म अंगन्यासके बिना फलप्रद नहीं होते। न्यासके बिना किया हुआ जप आसुरी कहाता है, उसका कुछ फल नहीं होता । इसलिए न्यासादि कर्मद्वारा तदाकार बनकर अर्थात् देवस्वरूप होकर देवार्चन करना चाहिए–**देवो भूत्वा देवान् यजेत्। न्यासहीनं तु यत्कर्म गृह्णन्त्यर्द्धे तु राक्षसाः।** न्यासके बिना जो कर्म किया जाता है, उसका आधा फल राक्षस ले लेते हैं।

यज्ञादि में एक वस्त्र धरण निषेध

स्नानं दानं जपं होमं स्वाध्यायं पितृतर्पणम। नैकवस्त्रो द्विजः कुर्याच्श्राद्धभोजनसत्क्रियाः॥ एकवस्त्रो न भुञ्जीत श्रौते स्मार्ते च कर्मणि। न कुर्याद्दैवकार्याणि दानं होमं जपं तथा॥

प्रशस्त आसन

शमी काश्मरी शल्लः कदंबो वरणस्तथा । पञ्चसनानि शस्तानि श्राद्धे देवार्चने तथा ॥ कौशेयं कम्बलं चैव अजिनं पट्टमेव च । दारुजं तालपत्रं वा आसनं परिकल्पयेत् ॥

शमी,गम्भार,शोणवृक्ष,बदंब और खैर,रेमश,कंबल, मृगचर्म, काष्ठ और तालपत्र इनका आसन श्राद्ध तथा देवार्चन में प्रशस्त गहे गये हैं।

आसन के विभिन्न फल

कृष्णाजिने ज्ञानसिद्धि-मोक्षश्रीव्याघ्रचर्मणा। वंशाजिने व्याधिनाशः, कम्बले दुःखमोचनम्॥ अभिचारे नीलवर्णे रक्तं वश्यादिकर्मणि। शान्तिके कम्बल प्रोक्तः सर्वेष्टं चित्रकम्बलः॥ वंशासने तु दारिद्र्यं पाषाणे व्याधिसम्भवः। धरण्यां दुःखसमभूतिर्दौर्भाग्यं छिद्रदारुजे॥ तृणे धनयशोहानिः पल्लवे चित्तविभ्रमः ॥

काले मृगचर्म पर ज्ञानसिद्धि,व्याघ्र चर्म पर मुक्ति, वंशवल्कल पर व्याधिसे मुक्ति, कम्बल पर दुःखनिवृत्ति। अभिचार कर्म में (मारण, मोहन, उच्चाटन आदि में) नीला आसन, किसी को वश में करने के लिए लाल आसन पर, ग्रहपीड़ा, महामारी आदिकी शान्तिके निमित्त किये जा रहे कर्म में कम्बल का आसन कहा गया है। चित्र कम्बल समस्त कार्यों के लिये कहा गया है। बांसके आसन पर दरिद्रता,पत्थर पर व्याधि, भूमि पर दुःख, छिद्रवाले काठ पर दौर्भाग्य, तृणासन पर धन और यशका नाश तथा पल्लवासन पर चित्त-भ्रम होता है ।

पूजन के समय प्रौढपाद (जाँघपर पैर रखकर) नहीं बैठना चाहिए

स्नानं दानं जपं होमं भोजनं देवतार्चनम्। प्रौढपादो न कुर्वीत स्वाध्यायं पितृतर्पणम्॥

स्नान, दान, जप, होम, भोजन, देवपूजन, वेदका स्वाध्याय और पितृतर्पण में जाँघ पर पैर रखकर नहीं बैठना चाहिए । (अत्रिसंहिता ३१८)

दक्षिणा देने की आवश्यकता

यज्ञ दक्षिणया सार्धे पुत्रेण च फलेन च । कर्मिणां फलदाता चेत्येवं वेदविदो विदुः॥ कृत्वा कर्म च तस्यैव तूर्णं दद्याच्च दक्षिणाम् । तत्कर्म फलमाप्नोति वेदैरुक्तमिदं मुने॥ कर्ता कर्मणि पूर्णेऽपि तत्क्षणात् यदि दक्षिणाम् । न दद्यात् ब्राह्मणेभ्यश्च दैवेनाज्ञानतोऽवा ॥ मुहूर्ते समतीते च द्विगुणा सा भवेद् ध्रुवम् । एकरात्रे व्यतीते तु भवेद्रसगुणा च सा ॥ दक्षिणासे युक्त यज्ञ पुत्ररुप फलके साथ यजमानों को फल प्रदान करता है । तथा कर्म कराकर ब्राह्मणों को शीघ्र दक्षिणा देने से यजमान को तत्काल फल की प्राप्ति होती है। यज्ञादि कर्म के पूर्ण हो जाने पर भी दैववश अथवा अज्ञानवश ब्राह्मणों को दक्षिणा न देने से प्रतिक्षण वह दक्षिणा द्विगुणित हो जाती है। एक रात बीत जाने पर वह छ गुनी ....।

॥०॥ तिलक (चन्दन) धारण की आवश्यकता ॥०॥

स्नानं सन्ध्या पञ्चयज्ञान् पैत्र्यं होमादिकर्मः यः।
विना तिलकदर्भाभ्यां कुर्यात्तन्निष्फलं भवेत् ॥

स्नान, सन्ध्या, पञ्चमहायज्ञ, तर्पण, श्राद्ध आदि पितृ कर्म तथा होम आदि कार्य तिलक और दर्भ (कुश) के बिना करता है, उसका फल निष्फल जाता है ।

॥ यज्ञादि में धौत वस्त्र पहनना चाहिए॥(वशिष्ठ)।

जपहोमोपचारेषु धौतवस्त्रपरो भवेत् ।
अलंकृतः शुचिर्मौनी श्राद्धादौ विजितेन्द्रियः ॥

जप, होम आदि शुभ कृत्यों में धोती पहन कर ही कर्म करना चाहिए और श्राद्ध आदि कृत्यमे पवित्र वस्त्र को धारण कर तथा जितेन्द्रिय एंव मौनी बनकर श्रद्धापूर्वक कर्म करना चाहिए ।

॥ कुशके पवित्री (अंगुठी) की महत्ता ॥

जपहोमहमरा ह्येते असुरा दैत्यरूपिणः ।
पवित्रकृत- हस्तस्य विद्रवन्ति दिशो दश ॥
यथा वज्रं सुरेन्द्रस्य यथा चक्रं हरेस्तथा ।
त्रिशूलं च त्रिनेत्रस्य ब्राह्मणस्य पवित्रकम् ॥

जप और होम के फलकी हरण करनेवाले दैत्यरूपी असुर हाथमे पवित्र धारण किए हुए ब्राह्मण को देखकर दशों दिशाओं में भाग जाते हैं । जैसे इन्द्र का वज्र, विष्णु का चक्र और शिव का त्रिशूल शस्त्र कहा गया है, वैसे ही ब्राह्मण का रक्षक शस्त्र पवित्री कहा गया है ।

॥०॥ पवित्री में कुश की संख्या विचार ॥०॥

चतुर्भिर्दर्भपिञ्जूलैर्ब्राह्मणस्य पवित्रकम् । एकैकन्यूनमुद्दिष्टं वर्ण वर्णे यथाक्रमम् ॥
सर्वेषां वा भवेद् द्वाभ्यां पवित्रं ग्रथितं नवम् । चतुर्भिः शान्तिके कार्यं पौष्टिके पञ्चभिस्तथा ॥
पैतृके तु त्रिदर्भाश्च द्वौ दर्भौ नित्यकर्मणि ॥

अर्थात् ब्राह्मणके लिये चार कुशों का पवित्री धारण करने के लिये कहा है । क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र के लिए क्रमसे एक-एक कुश कम कर देना चाहिए । अथवा सभी वर्ण के लिए नूतन और ग्रन्थियुत दो कुशों का पवित्री होना चाहिए । शान्ति कर्म में चार कुशों का, पौष्टिक कर्म में पाँच कुशों का, पितृकर्म में तीन कुशों का और नित्यकर्म में दो कुशों का पवित्री बनाना चाहिए ।

॥ जप करते समय हाथ से माला गिरने या टूट जाने पर प्रायश्चित्त ॥

लाक्षा कुसीदं (रक्तचन्दनम्) सिन्दूरं गोमयं च करीषकम्। एभित्रिय गुटिकां जपसंख्या तु कारयेत्॥
नाक्षतेर्हस्तपर्वैर्वा न धान्यैर्न च पुष्पकैः। न चन्दनैर्मृत्तिकया जपसंख्यां तु कारयेत् ॥

लाख, लालचन्दन, कमगलगट्टा, सिन्दूर, गोबर के गुटिका बनाकर जपकी गणना करनी चाहिए । अक्षत् से, हाथके पर्व से, धान्य से, पुष्प से, चन्दन से और मृत्तिका से जप की गणना न करें।

॥ यज्ञादि में यज्ञोपवीत धारण की आवश्यकता ॥

द्विज को सर्वदा यज्ञोपवीती होकर औरशिखा बाँधकर रहना चाहिए । शिखा और यज्ञोपवीत के बिना वह जो कुछ कर्म करता वह न किए हुए के सदृ ही होता है।

॥०॥ यज्ञ में जलयात्रा की आवश्यकता ॥०॥

शान्तिकं पौष्टिकं वापि जलयात्रां विना बुधः । कुरुते यदि वा मोहात्कर्म तस्य च निष्फलम् ॥
तडागादिप्रतिष्ठासु देवतायतनादिषु । लक्षहोमे कोटिहोमेऽयुतहोमे तथैव च ॥
व्रतोत्सर्गे महादाने यज्ञे वा वितते शुभे । जलयात्रां पुरा कृत्वा श्रेष्ठं कर्म समाचरेत् ॥

जो शान्तिक वा पौष्टिक यज्ञादि कर्म जलयात्राके बिना करता है, तो उसका वह कर्म निष्फल जाता है। तडाग आदिकी प्रतिष्ठा करनी हो, देवमन्दिर आदिकी स्थापना करनी हो, लक्षहोम, कोटिहोम तथा अयुत हवन करना हो, एकादशी आदि व्रतका उद्यापन करना हो, सुवर्णका तुलादान, भूमिदान आदि महादान करना हो एवं मंगलमय महायज्ञ करना हो, तो पहले जलयात्रा करके तदुपरान्त श्रेष्ठ शुभ कर्मका अनुष्ठान करना चाहिये ।

॥०॥ शत्रुनाशक बगलामुखी प्रयोग मंत्र ॥०॥

ॐ ह्लीं बगलामुखी सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा ।

विनियोगः–ॐ अस्य श्री बगलामुखी मन्त्रस्य नारद ऋषिःत्रिष्टुप् छन्दः श्रीबगलामुखी देवता, ह्लीं बीजं,स्वाहा शक्तिः, ॐ कीलकं ममाभीष्ट सिद्ध्यर्थे च शत्रुणां स्तंभनार्थे जपे विनियोगः ।

करन्यास–ॐ ह्लीं **अंगुष्ठाभ्यां नमः**,ॐ श्रीबगलामुखी **तर्जनीभ्यां नमः** सर्वदुष्टानां **मध्यमाभ्यां नमः**,वाचं मुखं पदं स्तंभय **कवचाय हुम्**। जिह्वां कीलय **कनिष्ठिकाभ्यां नमः**,बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा **करतलपृष्ठाभ्यां नमः**।

षडङ्गन्यास–ॐ ह्लीं **हृदयाय नमः**, ॐ श्रीबगलामुखी **शिरसे स्वाहा**, सर्वदुष्टानां **शिखायै वषट्**, वाचं मुखं पदं स्तंभय **कवचाय हुम्**, जिह्वां कीलय **नेत्रत्रयाय वौषट्**, बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा **अस्त्राय फट्** ।

ध्यान–सौवर्णासन संस्थिता त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीम् हेमाभाङ्गरुचिं शशांक मुकुटां सच्चम्पक सम्युताम्। हस्तैर्मुद्‌गर पाश वज्र रसनाः संबिभ्रतीं भषणै र्व्याप्ताङ्गीं बगलामुखी त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिंतयेत् ॥

॥०॥ बगलामुखी शाबर मंत्र ॥०॥

शाबर मंत्र शीघ्र प्रभावी होते हैं–'**ॐ मलयाचल बगला भगवती महाक्रूरी महाकराली राजमुखबंधनं ग्राम मुखबंधनं ग्राम पुरुमुखबंधनं कालमुख बंधनं चौरमुखबंधनं व्याघ्रमुखबंधनं सर्वदुष्टग्रहबंधनं सर्वजनंधनं वशीकुरु कुरु हुं फट् स्वाहा** ।

→ २. जल : ॐ **वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनी स्थो, वरुणस्य ऋतसदन्यसि । वरुणस्य ऋतसदनमसि, वरुणस्य ऋतसदनमासीद ॥**

३. गंगाजल : ॐ **गङ्गाद्याः सरितः सर्वाः समुद्राश्च सरांसि च । सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि जलदा नदाः॥ आयान्तु यजमानस्य दुरितक्षयकारकाः॥**

४. पञ्चरत्न : ॐ **हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यातुमेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥**

५. पञ्चपल्लव : ॐ **अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिः कृता । गोभाज इत् किलासथ यत् सनवथ पूरुषम् ।**

६. सप्तमृत्तिका : ॐ **स्योना पृथिवी नो भव नृक्षरा निवेशनी । यच्छा नः शर्म सप्रथाः ॥**

७. सर्वौषधि : ॐ **या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा । मनैनु बभ्रूणामहग्वं शतं धामानि सप्त च ॥**

८. नारिकेर एवं सुपारी : ॐ **या फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः । बृहस्पति-प्रसूतास्ता नो मुञ्चत्वग्वं हसः ॥**

९. लालवस्त्र : ॐ **युवा सुवासाः परिवीत आगात् स उ श्रेयान् भवति जायमानः । तं धीरासः कवयः उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः ॥**

१०. तदुत्तर कलश पर हाथ दय स्थिर करबाक मन्त्र पढ़ी : ॐ **स्थिरो भव वीड्वङ्ग आशुर्भव वार्ज्यवन् । पृथुर्भव सुखदस्त्वमग्ने पुरीषवाहनः ॥**

११. फूल : ॐ **श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् । इष्णन्निषाणामुम्म इषाण सर्वलोकम्म इषाण ॥**

१२. चन्दन : ॐ **गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् । ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥**

१३. ताम्बूल (पान): ॐ **प्राणाय स्वाहा, अपनाय स्वाहा,व्यानाय स्वाहा॥**

१४. दूर्वाक्षत : ॐ **काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि । एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ॥**

१५. दीप : ॐ **अग्निर्ज्योति ज्योंतिरग्निः स्वाहा, सूर्यो ज्योति ज्योंतिः सूर्यः स्वाहा । अग्निर्वर्चो ज्योति र्वर्चः स्वाहा, सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा, ज्योतिः सूर्यः सूर्योज्योतिः स्वाहा ॥**

तदुत्तर अक्षत लय कलश पर गणेशादि देवताक प्राणप्रतिष्ठा करी

"ॐ मनोजूति र्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर् यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ग्वं समिमं दधातु विश्वेदेवास इह मादयन्तामोम् प्रतिष्ठ"। ॐ शान्तिकलशाधिष्ठित गणेशादि देवता इह सुप्रतिष्ठिता भवन्तु ॥ एतानि पाद्यदीनि ॐ गणेशादि देवाभ्यो नमः । इदमनुलेपनं., इदं सिन्दूरं, इदमक्षतं, एतानि पुष्पाणि, एतानि गन्धपुष्पधूपदीप नैवेद्यानि, इदम् आचमनीयं, एष पुष्पाञ्जलिः ॐ गणेशादि देवताभ्यो नमः ॥

॥ इति कलश स्थापन ॥

अथ दुर्गापूजन विधि

शान्तिकलशक लग श्रीदुर्गाक चित्र राखि फूल चानन ओ अच्छत सँ "ॐ दुर्गे इह सुप्रतिष्ठिता भव"–ई कहि ओहि पर दुर्गा के प्रतिष्ठित करी । तदुत्तर सभ देवताक पूजा कलश पर करी :–

१. **इन्द्रादि दश दिक्पाल-पूजन**–ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्रादि दश दिक्पालाः इहागच्छत इह तिष्ठत । एतानि पाद्यादीनि ॐ इन्द्रादिदशदिक्पालेभ्यो नमः । इदमनुलेपनं.,इदम् अक्षतं,एतानि पुष्पाणि, एतानि गन्धपुष्प धूप दीप नानाविधनैवेद्यानि, इदमाचमनीयम्, एष पुष्पाञ्जलिः ॐ इन्द्रादि दशदिक्पालेभ्यो नमः ॥

२. **नवग्रह-पूजन** : ॐ भूर्भुवः स्वः नवग्रहाः इहागच्छत इह तिष्ठत । एतानि पाद्यादीनि ॐ नवग्रहेभ्यो नमः । इदमनुलेपनं, इदम् अक्षतं, एतानि पुष्पाणि, एतानि गन्धपुष्प धूपदीप नैवेद्यानि, इदमाचमनीयम् एष पुष्पाञ्जलिः ॐ नवग्रहेभ्यो नमः ॥

३. **श्री दुर्गापूजनम्** : ॐ भूर्भुवः स्वः भगवति दुर्गे इहागच्छ इह तिष्ठ–ॐ आगच्छ चण्डिके देवि अष्टाभिः शक्तिभिः सह । पूजाभागं गृहाणेमं सान्निध्यमिह कल्पय ॥ एतानि पाद्यार्घाचमनीय-स्नानीय-पुनराचमनीयानि ॐ सपरिवारायै भगवत्यै श्रीदुर्गायै नमः। इदमनुलेपनं, इदं सिन्दूरं, इदम् अक्षतं, एतानि पुष्पाणि, इदं विल्वपत्रं, इदं द्रोण पुष्पं, इदं माल्यं, इदं रक्तवस्त्रं, इदमाचमनीयं, एतानि गन्धपुष्प-धूप-दीप-ताम्बूल-नानाविध-नैवेद्यानि, इदमाचमनीयम् ॐ सपरिवारायै भगवत्यै श्री दुर्गायै नमः। ततः पुष्पाञ्जलिः–

ॐ दुर्गे दुर्गे महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि।
त्वं काली कमला ब्राह्मी त्वं जया विजया शिवा ॥
त्वं लक्ष्मीर्विष्णुलोकेषु कैलासे पार्वती तथा ।
सरस्वती ब्रह्मलोके चेन्द्राणी शक्रपूजिता ॥
वाराही नारसिंही च कौमारी वैष्णवी तथा ।
त्वमापः सर्वलोकेषु ज्योतिस्त्वं सूर्यरूपिणि ॥
योगमाया त्वमेवासि वायुरूपा नभःस्थिता ।
सर्वगन्धवहा पृथ्वी नानारूपा सनातनी ॥
विश्वरूपे च विश्वेशे विश्वशक्तिसमन्विते ।
प्रसीद परमानन्दे दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते ॥
नानापुष्पसमाकीर्णं नानासौरभसंयुतम् ।
पुष्पाञ्जलिञ्च विश्वेशि ! गृहाण भक्तवत्सले !

एष पुष्पाञ्जलिः साङ्सायुध-सवाहन-सपरिवारायै दक्षयज्ञविनाशिन्यै महाघोरायै योगिनीकोटि-परिवृतायै भद्रकाल्यै सर्वशक्तिस्वरूपायै ॐ ह्रीं भगवत्यै श्री दुर्गायै नमः ॥

४. **गौरी-शङ्कर पूजनम्**–ॐभूर्भुवः स्वः गौरी शङ्करौ इहागच्छतम् इह तिष्ठतम्। एतानि पाद्यादीनि ॐ गौरीशङ्कराभ्यां नमः । इदमनुलेपनं, इदं सिन्दूरं, इदम् अक्षतं, एतानि पुष्पाणि, एतानि विल्वपत्राणि, एतानि गन्धपुष्पधूपदीप नानाविधनैवेद्यानि, इदमाचमनीयं, एष पुष्पाञ्जलिः ॐ गौरी शङ्कराभ्यां नमः ।

५.**ब्रह्मपूजनम्**–फूल अच्छत चानन एकहि बेरि कलस पर दियन्हि–ॐब्रह्मणे नमः॥

आरती : कर्पूरक बत्ती जराय

ॐ **कर्पूरवर्तिसंयुक्तं वह्निनां दीपितञ्च यत् । नीराजनं च देवेशि ! गृह्यतांजगदम्बिके ॥ इदं नीराजनम् । इदमाचमनीयं ॐ सपरिवारायै भगवत्यै** श्री दुर्गायै नमः ॥ ततः स्तुतिपाठः "न मन्त्रं नो यन्त्रम्" ।

प्रदक्षिणम् : ॐ **सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते । भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते ॥** ई मन्त्र पढ़ि प्रणाम कए केवल **एक बेर प्रदक्षिणा** करी । तदुत्तर फूल चानन अक्षत लय श्रीदुर्गा सप्तशती **पुस्तकक पूजा** एहि मन्त्र सँ करी–ॐ **नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः । नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्राणताः स्म ताम् ॥**

ॐ **श्री दुर्गासप्तशती पुस्तकाय नमः ॥**

तदुत्तर साङ्ग श्रीदुर्गासप्तशतीक पाठ कए चरणामृत एवं प्रसाद ग्रहण करी ।

सायंकाल कलश लग धूप-दीप-प्रसाद दए जलसँ उत्सर्ग करी–

ॐ **जयन्ती मङ्ला काली भद्रकाली कपालिनी । दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वधा स्वाहा नमोस्तुते ॥** ॐ एतानि गन्धपुष्प धूपदीपताम्बूल यथाभाग-नानाविध-नैवेद्यानि ॐ सपरिवारायै भगवत्यै श्री दुर्गायै नमः । इदमाचनमीयम् ॐ सपरिवारायै भगवत्यै श्री दुर्गायै नमः ॥ **तखन आरती करी**–इदमार्तिक्यं ॐ सपरिवारायै भगवत्यै श्री दुर्गायै नमः । इदमाचमनीयम् । तखन "न मन्त्रं नो यन्त्रम्" इत्यादि स्तुतिपाठ कए दण्डवत् प्रणाम करी ।

नवरात्र मे प्रतिदिन पूजन विधि एवं नवमी पर्यन्त प्रतिदिन प्रातः (१) पञ्चदेवता, (२) विष्णु, (३) शान्तिकलसाधिष्ठित गणेशादि देवता, (४) इन्द्रादिदश दिक्पाल, (५) सूर्यादिनवग्रह, (६) श्री दुर्गा, (७) गौरीशङ्कर, (८) ब्रह्मा ओ (९) पुस्तकक पूजा कए कलसक नीचाँ जल सँ "जयन्ती मङ्ला काली" इत्यादि मन्त्र पढ़ि जयन्ती मे जल दी सायं काल सेहो जल दी ।

-: हवन विधि :-

नवमी दिन श्री दुर्गासप्तशती पाठ नवावृत्ति वा दशावृत्ति समाप्त कए हवन करी । कुश-तिल-जल लय संकल्प करी–

ॐ अद्य साङ्सायुध-सवाहन-सपरिवार श्रीदुर्गाप्रीतिकामः अष्टोत्तरशत-नवार्ण-मन्त्रेण (श्र दुर्गासप्तशतीस्वोत्रमन्त्रैः) हवनमहं करिष्ये ॥ (आनक हेतु 'करिष्ये' एकर बदला 'करिष्यामि' कहियैक) । यदि हजार मन्त्र सँ हवन करबाक हो तँ 'अष्टोत्तर शहस्त्र-" कहियैक ।

एक हाथ चौखुट भूमि के हाथ सँ नापि, कुश सँ बहारि ओहि कुशके ईशान कोण दिस फेकि, गोबर सँ भूमि के नीपि ओहि पर हाथक प्रादेश (औंठा ओ तर्जनी के पसारल नाप) सँ पूव मुहे तीन ठाम नापी (पहिने दच्छिन, तखन ताहि सँ उत्तर, तखन फेर ताहि सँ उत्तर) । ओहिं नपलहा स्थानपर ओहिक्रमे स्रुवक जड़ि सँ तीन टा रेखा (पच्छिम सँ पूव दिस) करी । स्रुव के दच्छिन दिस राखि दहिना हाथक औंठा ओ अनामिका सँ ओहि रेखा पर सँ ओहि क्रमे माँटि लय ईशान कोण मे फेकि दी । गंगाजल सँ स्थान के सिक्त कए काँसाक (फुलही) थारी वा वाटीमे आगि लए ओहि रेखा पर अपना दिस कए आगि खसाबी–**"ॐ भूर्भुवः स्वः"** । तखन आमक ठहुड़ी दए आगि के पजारी । तखन काँसाकवाटीमे गोघृत दए आगि पर चढ़ाए उतारि स्रुव सँ घृत लय ओकर अग्रभाग सँ सोझे अग्नि मे एहि मन्त्र सँ हवन करी–"ॐ भूः स्वाहा, इदं भूः । ॐ भुवः स्वाहा, इदं भुवः । ॐ स्वः स्वाहा इदं स्वः । ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा, इदं भूर्भुवः स्वः" ।

तदुत्तर केराक पात पर साकल्य बनाए नवार्णमन्त्र वा श्रीदुर्गासप्तशतीक एक-एक मन्त्रसँ एक-एक आहुति हाथ सँ प्रज्वलित अग्नि मे दी । औंठा, मध्यमा ओ अनामिका सँ साकल्य उठाय सोझ हाथे अग्रभाग सँ आहुतिक प्रक्षेप करी । **नवार्णमन्त्र–"ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे"** । **नवाक्षर मन्त्र–"ॐ दुर्गे-दुर्गे रक्षिणि स्वाहा"** ।

दुर्गासप्तशती मे जाहि-जाहिठाम मन्त्रक संख्या देल छैक ततय-ततय 'स्वाहा' लगाय प्रत्येक आहुति दी । केवल चारिम अध्याय मे–"शूलेन पाहिनो देवि–"इत्यादि छओ मन्त्र सँ हवन नहि कए ओकर स्थान मे नर्वाण मन्त्र सँ ओतेक आहुति दी । **साकल्य बनएबाक विधान**–तिल, तकर आधा आरब चाउर, तकर आधा जौ, तकर आधा शक्कर–ई सभ मिलाय जतेक हो तकर आधा गोघृत दए ओहिमे थोड़ेक वेलपात ओ सरर दियैक । सभके मिलाए साकल्य तैयार करी । वेलपात ओ सरर आवश्यक नहि ।

वामा हाथे माला धरी ओ दहिना हाथे हवन करी । सप्तशतीहवन पक्ष मे मालाक काज नहि । यथोचित हवन कए स्रुव पर छुट्टा पान, सौंस सुपारी ओ पुष्ट सँ धृत दए ऊठि एहि मन्त्र सँ पुर्णाहुति अग्नि मे दए दी–

ॐ मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम् ।
कविग्वं सम्राजमतिथिं जनाना-मासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः स्वाहा ॥

जँ पुरोहित हवन करथि तँ यजमान हुनक दहिना केहुनीक स्पर्श कएने रहथि। तखन आसन पर बैसि स्रुवक पृष्ठभाग सँ आगि सँ भस्म बहार कए अनामिका आङुर सँ भस्म लय स्वयं मन्त्र पढ़ि लगाबथि–"ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः"–कपार पर,"ॐकश्यपस्य त्र्यायुषम्"–कण्ठ मे,"ॐ यद् देवेषु त्र्यायुषम्"–दहिना बाँहिक ऊपर,"ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषम्"–हदय पर। एहिना यजमानोके लगाकी,ततए "तन्नो अस्तु" केर स्थान मे "तत्ते अस्तु" कहियैक। सधवाक हेतु स्रुव पर सिन्दूर मिलाए भस्म लगएबाक हेतु स्रुव दए दियैन्हि। ओ स्वयं लगाबथि वा पति लगाए देथिन्ह।

जयन्ती छेदन ओ विसर्जन - नवरात्र मे यात्रादिन जयन्ती काटल जाइछ । मुदा आन अवसर पर हवनक बाद ओहि दिन विसर्जन भए सकैछ वा तरक प्रातो कए सकैत छी । नित्यकृत्य कय सर्वप्रथम कलसक नीचाँ सँ जयन्ती के हाँसू वा चक्कू सँ काटी–**ॐ जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी । दुर्गाक्षमा शिवा धात्री स्वधा स्वाहा नमोऽस्तुते ॥** (एहि मन्त्रे जयन्ती देवताके चढ़ाबी ओ स्वयं वा अनको माँथ पर दी ।) तखन यथोचित पूर्वनिर्दिष्ट पूजा कए विसर्जन करी–(१) ॐसूर्यादि पञ्चदेवताः पूजिता स्थ क्षमध्वं स्वस्थानं गच्छत। (२) ॐभगवन्विष्णो पूजितोऽसि प्रसीद क्षमस्व स्वस्थानं गच्छ। (३) ॐकलसाधिष्ठित गणेशादि देवताः पूजिताः स्थ क्षमध्वं स्वस्थानं गच्छत । (४)ॐ इन्द्रादि दश दिक्पालाः पूजिता स्थ क्षमध्वं स्वस्थानं गच्छत । (५) ॐनवग्रहाः पूजिताः स्थ क्षमध्वं स्वस्थानं गच्छत । (६) ॐ सपरिवारे भगवति श्री दुर्गे पूजितासि प्रसीद क्षमस्व स्वस्थानं गच्छ ।

ॐ विधिहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं यदार्चितम् । पूर्णं भवतु तत्सर्वं त्वत्प्रसादान्महेश्वरि ॥

(७)ॐगौरीशङ्करौ पूजितौ स्थः क्षमेयाथां स्वस्थानं गच्छतम् ।(८)ॐब्रह्मन् पूजितोऽसि प्रसीद क्षमस्व स्वस्थानं गच्छ।

शान्तिकलशाभिषेक विधिः

एहि मन्त्र सँ कलश के हिलाबी–**ॐउत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्ते महेऽउपप्रयन्तु मरुतः सुदानव इन्द्र प्राशुर्भ वासवाः॥** कलश पर सँ वस्त्रादि हटाए पल्लव सँ ओकर जल लय निम्नांकित मन्त्र पढ़ि लोक सभ के अभिषिक्त करी–

ॐ सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः । वासुदेवो जगन्नाथ स्तथासंकर्षणो विभुः ॥१॥
प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च भवन्तु विजयाय ते । आखण्डलोऽग्निर्भगवान् यमोवै निर्ऋतिस्तथा ॥२॥
वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा शिवः । ब्रह्मणा सहितः शेषो दिक्पालाः पान्तुतेसदा ॥३॥
कीर्त्तिर्लक्ष्मी र्धृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धोदया मतिः । बुद्धिर्लज्जावपुः शान्तिः तुष्टिः कान्तिश्चमातरः ॥४॥
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु देवपत्न्यः समागताः । आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुधजीव सितार्कजाः ॥५॥
ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तु राहुः केतुश्च तर्पिताः । देवदानवगन्धर्वा यक्षराक्षस किन्नराः ॥६॥
ऋषयोमनवोगावा देवमातरएवच । देवपत्न्योद्रुमानागा दैत्याश्चप्सरसां गणाः ॥७॥
अस्त्राणिर्वशास्त्राणि राजानो वाहनानिच । औषधानिच रत्नानि कालस्यावयवाश्चये ॥८॥
सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदानदाः । एतेत्वामभिषिञ्चन्तु सर्वकामार्थ सिद्धये ॥९॥
क्षेमंकरीमहाकाली चानिरुद्धासरस्वती । मातंगीचान्नपूर्णा च राजराजेश्वरी तथा ॥१०॥
ॐउग्रचण्डाप्रचण्डा च चण्डोग्राचण्डनायिका । चंडाचंडवतीचैव चण्डरूपाति चण्डिका ॥११॥
ॐउग्रदंष्ट्रामहादंष्ट्रा शुभदंष्ट्रा कपालिनी । भीमनेत्राविशालाक्षी मंगलाविजयाजया ॥१२॥

एतेत्वामभिषिञ्चन्तु सर्वकामार्थ सिद्धये॥

ततो **दक्षिणा**–कुश तिल जल लय–ॐ अद्य कृतैतद् दुर्गापूजन कर्म प्रतिष्ठार्थम् एतावद्-द्रव्यमूल्यक-हिरण्यमग्निदैवतं यथानाम गोत्राय ब्राह्मणाय दक्षिणामहं ददे ।

दक्षिणा उत्सर्गि ब्राह्मण के दए चरणामृत एवं प्रसाद वितरण करी तथा ब्राह्मण भोजन कराय स्वयं भोजन करी ।

॥ इति दुर्गाजनविधिः ॥

श्रीसूक्त

विनियोगः-ॐ अस्य श्रीसूक्तस्य आनन्द कर्दम चिक्लीथ ऋषिः, अग्निर्देवताः आदौत्रयस्य अनुष्टुप् छंदः शेषांसा प्रसार पंक्तिः, त्रिष्टुप् अनुष्टुप् पुनः प्रसार पंक्तिश्छंदः, हिरण्यं वर्णां बीजं, तां आवह इति शक्तिः कीर्तिमृद्धि ददातु इति कीलकं श्री महालक्ष्मी वर प्रसाद सिद्धयर्थ पाठे जपे विनियोगः ।

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णजतस्त्रजाम् ।
चन्द्रां हिरणमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ॥१॥
तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्चं पुरुषानहम् ॥२॥
अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनाद प्रमोदिनीम् ।
श्रियं देवीमुप ह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥३॥
कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्ता तर्पयन्तीम् ।
पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोप ह्वये श्रियम् ॥४॥
चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् ।
तां पद्मिनीमीं शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे ॥५॥
आदित्यवर्णे तपसोऽधि जातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु या अन्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः ॥६॥
उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धि ददातु मे । ॥७॥
क्षुत्पिपासामालां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वांनिर्णुद मे गृहात् ॥८॥
गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहो ह्वये श्रियम् ॥९॥
मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥१०॥
कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम ।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥११॥
आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे ।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥१२॥
आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनी ।
चन्द्रां हिरण्मयी लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ॥१३॥
आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।
सूर्यां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ॥१४॥
तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ॥१५॥
यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ।
सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् । ॥१६॥
पद्मानने पद्मपिद्मपत्रे पद्मप्रिये पद्मदलायताक्षि ।
विश्वप्रिये विष्णुमनोऽनुकूले त्वत्पादपद्मं मयि सं नि धत्स्व ॥१७॥
पद्मानने पद्मऊरू पद्माक्षि पद्मसम्भवे ।
तन्मे भजसि पद्माक्षि येन सौख्यं लभाम्यहम् ॥१८॥
अश्वदायि गोदायि धनदायि महाधने ।
पुत्रपौत्रधनं धान्यं हस्त्यश्वाश्वतरी रथम् ।
प्रजानां भवसि माता आयुष्मन्तं करोतु मे ॥२०॥
धनमग्निर्धनं वायुर्धनं सूर्यो धनं वसुः ।
धनमिन्द्रो बृहस्पतिर्वरुणो धनमश्विना ॥२१॥
वैनतेय सोमं पिब सोमं पिबतु वृत्रहा ।
सोमं धनस्य सोमिनो मह्यं ददातु सोमिनः ॥२२॥
न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा मतिः ।
भवन्ति कृतपुण्यानां भक्त्या श्रीसूक्तजापिनाम् ॥२३॥
सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतरांशुकगन्धमाल्यशोभे ।
भगवतिहरिवल्लभेमनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम् ॥२४॥
विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधवप्रियाम् ।
लक्ष्मीं प्रियसखीं भूमिं नमाम्यच्युत-वल्लभाम् ॥२५॥
महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि ।
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ॥२६॥
आनन्दः कर्दमः श्रीदश्चिक्लीत इति विश्रुताः ।
ऋषयः श्रियः पुत्राश्च श्रीर्देवीदेवता मताः ॥२७॥
ऋणरोगादि-दारिद्र्यपापक्षुदपमृत्यवः
भयशोकमनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा ॥२८॥
श्रीर्वर्चस्वमायुष्य-मारोग्य-माविधाच्छोभमानं महीयते ।
धनं धान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः॥२९॥

॥०॥ ऋग्वेदोक्तं श्रीसूक्तं सम्पूर्णम्॥०॥

चमत्कारी लक्ष्मी महामन्त्र प्रयोग विधि

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः । विनियोगः-अस्य श्रीमहालक्ष्मीमन्त्रस्य ब्रह्माऋषि गायत्री छन्दः, महालक्ष्मी देवता, श्रीं बीजं ह्रीं शक्तिः सर्वार्थसिद्धये जपे विनियोगः । (एक अर्घाजल छोड़ दें) ।
ऋष्यादिन्यास-ॐ ब्रह्मणे ऋषये नमः शिरसि, गायत्रीछन्दसे नमः मुखे, ॐ महालक्ष्मीदेवतायै नमः हृदये, ॐ श्रीं बीजाय नमः गुह्ये, ॐ ह्रीं शक्तये नमः पादयोः । करन्यास-ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले श्रीं ह्रीं श्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये श्रीं ह्रीं श्रीं तर्जनीभ्यां नमः, ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं मध्यमाभ्यां नमः, ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं अनामिकाभ्यां नमः, ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै श्रीं ह्रीं श्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं नमः श्रीं ह्रीं श्रीं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः । हृदयादिन्यास-ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले श्रीं ह्रीं श्रीं हृदयाय नमः, ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये श्रीं ह्रीं श्रीं शिरसे स्वाहा, ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं शिखायै वषट्, ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं कवचाय हुम्, ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै श्रीं ह्रीं श्रीं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं नमः श्रीं ह्रीं श्रीं अस्त्राय फट् । ध्यान-सिन्दूरारुणकान्तिमब्जवसतिं सौन्दर्यवारां निधिं,कोटी-रांगद-हार-कुण्डल-कटी-सूत्रादि-भिर्भूषिताम्।हस्ताब्जैर्वसुपात्राब्जयुगलादर्शौ वहन्तीं परा,मावीतां परिचारिकाभिरनिशं ध्यायेत्प्रियां शार्ङ्गिणः॥

दीपावली या किसी शुभ मुहूर्त मे (धन-धान्यादि वृध्यर्थ श्रीमहालक्ष्म्याः पूजनं तथा जपं करिष्ये या कारिष्ये) लक्ष्मी जी का विधिवत् पूजनादि कर जप करना चाहिए यदि केवल दीपावली दिन ही करना चाहते हैं तो ११००० जप कर अन्तमे दशांश हवन, तर्पण, मार्जनोपरान्त पूर्णाहूति दें । पूजन आरती कर यथा ज्ञान संतुष्ट करने से लक्ष्मी जी साक्षात् निवास करते हैं। जपमाला-स्फटिक/कमलगट्टा। जप संख्या-११०० प्रतिदिन । पुरश्चरण-१,२५,०००। हवन द्रव्य-घी,शहद एवं चक्कर से युक्त बेलफल ।

॥०॥ पुरुषसूक्त ॥०॥

ॐ सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात् ।
सा भूमिः सर्वत स्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥१॥
पुरुष एवेदः सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम् ।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥२॥
एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः ।
पादोऽस्य विश्वा भुतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥३॥
त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत् पुन ।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि ॥४॥
ततो विराडजायत विराजो अधि पुरुषः ।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भुमिमथो पुरः ॥५॥
तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम् ।
पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्भ्याश्च ये ॥६॥
तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे ।
छन्दाःसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तास्मादजायत ॥७॥
तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः ।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः ॥८॥
तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः ।
तेन देवा अजयन्त साध्या ऋषयश्च ये ॥९॥
यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन् ।
मुखं किस्यासीत् किं बाहू किमूरू पादा उच्येते ॥१०॥
ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः ।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याःशूद्रो अजायत ॥११॥
चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत ।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ॥१२॥
नाभ्या आसीदन्तरिक्षःशीर्ष्णो द्यौः समवर्तत ।
पद्भ्यां भुमर्दिशः श्रोत्रात्तथ लोकाँ२अकल्पयन् ॥१३॥
यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत ।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः ॥१४॥
सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः ।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुम् ॥१५॥
यज्ञेन यज्ञमजयन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
ते ह नाकं महिमानः सचन्तः यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥१६॥

॥ इति पुरुष सूक्तम् ॥

॥०॥ सङ्कटा-स्तुतिः॥०॥

प्रयोजन-महालक्ष्मी, महासरस्वती व महाकाली क कृपा तथा दर्शन कराने वाला अमोघ व परम तेजस्वी स्तोत्र। इसी स्तोत्र द्वारा महाकवि कालिदास ने मां भद्राकली की उपासना कर साक्षात् दर्शन किये थे तथा वेद उपनिषदों का ज्ञान आशीर्वाद स्वरूप पाकर ज्ञानियों में सर्वश्रेष्ठ ज्ञानी हुए थे ।)

अयि गिरि-नन्दिनी नन्दित-मेदिनि
विश्व-विनोदिनी नन्दिनुते
गिरिवर-विन्ध्य-शिरोऽधि-निवासिनि
विष्णु-विलासिनि जिष्णुनुते ।
भगवति हे शितिकण्ठ-कुटुम्बिनि
भूरि-कुटुम्बिनी भूतिकृते ।
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि
रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥१॥
सुर-वर वर्षिणि दुर्धर-धर्षिणि
दुर्मुख-मर्षिणि हर्षरते ।
त्रिभुवन-पोषिणि शंकरतोषिणि
कल्मषमोषिणि घोषरते ।
दनुज-निरोषिणि दुर्मदशोषिणि
दुर्मुनिरोषिणि सिन्धुसुते
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि
रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥२॥
अयि जगदम्ब कदम्बवन-
प्रियवासिनि तोषिणि हासरते
शिखर-शिरोमणि-तुङ्ग-हिमालय-
शृङ्ग-निजालय-मध्यगते ।
मध-मधुरे मधु कैटभ-गञ्जिनि
महिष-विदारिणि रासरते
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि
रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥३॥
अयि निजहुंकृति-मात्रनिराकृत-
धूम्रविलोचन- धूम्रशते
समरथिशोषित-रोषित-शोणित-
बीजसमुद्भव- बीजलते ।
शिव-शिव शुम्भ-निशुम्भ-
महाहव-तर्पित-भूत-पिशाचरते
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि
रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥४॥
अयि शतखण्ड-विखण्डित-रुण्ड-
वितुण्डित-शुण्ड-गजाधिपते
निजभुजदण्ड-निपातितचण्ड
विपाटित- मुण्ड-भटाधिपते ।
रिपुगजगण्ड-विदारण-चण्डपराक्रम-शौण्ड-मृगाधिपते
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि
रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥५॥
धनुरनुषङ्ग-रणक्षणसङ्ग-परिस्फुरदङ्ग-नटत्कटकेकनक-
पिशङ्ग-पृषत्कनिषङ्ग-रसद्भटशृङ्ग-हताबटुके ।
हत-चतुरङ्ग-बल-क्षितिरङ्ग-घटद्-बहुरङ्ग-रटद्-बटुके
जय जय हे महिषासुर-मर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥६॥
अयि रणदुर्मद-शत्रुवधाद्धुर-दुर्धर-निर्भर-शक्तिभृतेचतुर-
विचार-धुरीण-महाशय-दूतकृत प्रमथाधिपते ।
दुरित-दुरीह-दुराशय-दुर्मति-दानवदूत-दुरन्तगते
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥७॥
अयि शरणागत-वैरिवधूजन-वीरवराभय-दायिकरे
त्रिभुवनमस्तक-शूलविरोधि-शिरोधिकृतामल-शूलकरे।
दुमिदुमितामर-दुन्दुभिनाद-मुहुर्मखरीकृत-दिङ्नि करे
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥८॥
सुरललना-ततथेयित-थेयित-धाभिनयोत्तर-नृत्यरते
कृतकुकुथा-कुकुथोदि-डदादिक-तालकुतूहल-गानरते ।
धुधुकट-धूधुट-धिन्धि-मितध्वनि-घोरमृदङ्ग-निनादरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥९॥
जय जय जाप्यजये जयशब्द-परस्तुति-तत्पर-विश्वनुते
झणझण-झिमझिम-झिंकृत-नूपुर-शिञ्जिल-मोहित-भूतपते।
नटितनटार्थ-नटीनटनायक-नाटन-नाटित-नाट्यरते
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥१०॥
अयि सुमनः-सुमनः-सुमनः-सुमनः सुमनोरमकान्तियुते
श्रितरजनी-रजनी-रजनी-रजनी-रजनीकर-वक्त्रभृते ।
सुनयन-विभ्रमर-भ्रमर-भ्रमर-भ्रमर-भ्रमराभिदृते
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥११॥
महित-महाहव-मल्ल-मतल्लिक-वल्लित-रल्लित-भल्लिरते
विरचितवल्लि-कपालिक पल्लिक-झिल्लिक-भिल्लिक-वर्गवृते
श्रुतकृत फुल्ल-समुल्ल सितारुण-तल्लज-पल्लव-सल्ललिते
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥१२॥
अयि सुदतीजन-लालस-मानस-मोहन-मन्थरराजसुते
अविरल-गण्ड-गलन्-मदमेदुर-मत्त-मतङ्गजराजगते ।
त्रिभुवन-भूषण-भूत-कलानिधिरूप-पयोनिधि-राजसुते
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥१३॥
कमल-दलामल-कोमलकान्ति-कलाकलितामल-भालमते
सकल-विलास-कलानिलय-क्रमकलिचलत्-कलहंसकुले ।
अलिकुल-सङ्कुल-कुन्तल-मण्डल-मौलिमिलद्-बकुलालिकुले
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥१४॥
करमुरलीरव-वर्जित-कूजित-लज्जित-कोकिल-मञ्जुमते
मिलित-मिलिन्द-मनोहरगुञ्जित-रञ्जित-शैल-निकुञ्जगते
निजगण-भूतमहा-शबरीगण-रङ्गणसम्भृत-केलिरते
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥१५॥
कटितटपीत-दुकूलविचित्र-मयूख-तिरस्कृत-चण्डरुचे
जितकनकाचल-मौलिमदोर्जित-गर्जित-कुञ्जर-कुम्भकुचे ।
प्रणत-सुराऽसुर-मौलिमणि-स्फुरदंशुलसन्नखचन्द्ररुचे
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥१६॥
विजित-सहस्त्रकरैक-सहस्त्रकरैक-सहस्त्रकरैकनुते
कृतसुतारक-सङ्गरतारक-सङ्गरतारक-सूनुनुते
सुरथसमाधि-समानसमाधि-समानसमाधि-सुजाप्यरते
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥१७॥
पदकमलं करुणालिये वरिवस्यति योऽनुदिनं सुशिवे
अयि कमले कमलानिलये कमलानिलयः स कथं न भवेत्।
तव पदमेवं परं पदमस्त्विवति शीलयतो मम किं न शिवे
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥१८॥
कनकलसत्-कलशीक जलै रनुषिञ्चति तेऽङ्गणरङ्गभुवं
भजति स किं न शची-कुच-कुम्भ-नटीपरिरम्भ- सुखानुभवम्
तव चरणं शरणं करवाणि सुवाणि पथं मम देहि शिवं
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥१९॥
तव विमलेन्दुकलं वदनेन्दुमलं कलयन्न नुकूलयते
किमु पुरुहूत-पुरीन्दुमुखी-सुमुखीभिरसौ विमुखीक्रियते।
मम तु मतं शिवमानधने भवती कृपया किमु न क्रियते
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥२०॥
अयि मयि दीनदयालुतया कृपयैव त्वया भवितव्यमुमे
अयि जगतो जननीति यथाऽसि मयाऽसि तथाऽनुमतासि रमे।
यदुचितमत्र भवत्पुरगं कुरु शाम्भावि देवि दयां कुरु मे
जय जय हे महिषासुर मर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥२१॥
स्तुमितिमां स्तिमितः सुसमाधिना,नियमतो यमतोऽनुदिनं पठेत्
परमया रमया स निषेव्येते
परिजनोऽरिजनोऽपि च तं भजेत्॥२२॥

॥ इति श्रीसङ्कटा-स्तुतिः सम्पूर्णा ॥

॥०॥ रुद्रसूक्त ॥०॥

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः ।
बाहुभ्यामुत ते नमः ॥१॥
या ते रुद्र शिवा तनुरघोराऽपापकाशिनी ।
तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि ॥२॥
यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे ।
शिवां गिरित्र तां कुरु मा हिꣳसीः पुरुषं जगत् ॥३॥
शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामसि ।
यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मꣳसुमना असत् ॥४॥
अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक् ।
अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च यातुधान्योऽधराचीः परा सुव ॥५॥
असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः ।
ये चैनꣳरुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशोऽवैषाꣳहेड ईमहे॥६॥
असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः ।
उतैनं गोपा अदृश्रन् नदृश्रन्दुदहार्यः स दृष्टोमृडयाति ॥७॥
नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे ।
अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योकरं नमः ॥८॥
प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरात्र्योर्ज्याम् ।
याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो वप ॥९॥
विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ२ उत ।
अनेशन्नस्य या इषव आभुरस्य निषङ्गधिः ॥१०॥
या ते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः ।
तयाऽस्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परि भुज ॥११॥
परि ते धन्वनो हेतिररस्मान्वृणक्तु विश्वतः ।
अथो य इषुधिस्तवारे अस्मन्नि धेहि तम् ॥१२॥
अवतत्य धनुष्ट्वꣳसहस्राक्षशतेषुधे ।
निशीर्यशल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव ॥१३॥
नमस्त आयुधायानातताय धृष्णवे ।
उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने ॥१४॥
मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तुला मा न उक्षितम् ॥
मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः॥१५॥
मा नस्तोके तनये मान आयुषि मा नो गोषु मानो अश्वेषु रीरिषः॥
मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे ॥१६॥

॥ इति रुद्रसूक्त ॥

॥०॥ भवान्यष्टकम् ॥०॥

न तातो न माता न बन्धुर्न दाता,न पुत्रो न पुत्री न भृत्यो न भर्ता।
न जाया न विद्या न वृत्तिर्ममैव गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥१॥
भवाब्धावपारे महादुःखभीरुः प्रतप्तः प्रकामी प्रलोभी प्रमत्तः ।
कुसंसारपाशप्रबद्धः सदाहं गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥२॥
न जानामि दानं न च ध्यानयोगं न जानामि तन्त्रं न च स्तोत्रमन्त्रम् ।
न जानामि पूण्यं न जानामि न्यासयोगम् गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥३॥
न जानामि पुण्यं न जानामि तीर्थं न जानामि मुक्तिं लयं वा कदाचित्।
न जानामि भक्तिं व्रतं वापि मातः गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥४॥
कुकर्मी कुसङ्गी कुबुद्धिः कुदासः कुलाचारहीनः कदाचारलीनः ।
कुदृष्टिः कुवाक्यप्रबद्धः सदाहम् गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥५॥
प्रजेशं रमेशं महेशं सुरेशं दिनेशं निशीथेश्वरं वा कदाचित् ।
न जानामि चान्यत् सदाहं शरण्ये गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥६॥
विवादे विषादे प्रमादे प्रवासे जले चानले पर्वते शत्रुमध्ये ।
अरण्ये शरण्ये सदा मां प्रपाहि गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥७॥
अनाथो दरिद्रो जरारोगयुक्तो महाक्षीणदीनः सदा जाड्यवक्त्रः ।
विपत्तौ प्रविष्टः प्रणष्टः सदाहं गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥८॥

॥०॥ रूद्राष्टक ॥०॥

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं, विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपं ।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं, चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहम् ॥१॥
निराकारमोङ्कारमूलं तुरींय गिरा ज्ञान गोतीतमीशं गिरीशं ।
करालं महाकाल कालं कृपालं गुणागार संसारपारं नतोऽहम् ॥२॥
तुषाराद्रि संकाश गौरं गभीरं मनोभूत कोटि प्रभा श्री शरीरं ।
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गंगा लसद्भालबालेन्दु कण्ठेभुजंगा ॥३॥
चलत्कुंडलं भ्रू सुनैत्रं विशालं प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालं ।
मृगधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि ॥४॥
प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं अखण्डं अजं भानुकोटिप्रकाशं ।
त्रयः शूल निर्मूलनं शूलपाणिं भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यम् ॥५॥
कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी ।
चिदानं संदोह मोहापहारी प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी ॥६॥
न यावद् उमानाथ पादारविन्दं भजंतीह लोके परे वा नराणाम् ।
न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासम् ॥७॥
न जानामि योगं जपं नैव पूजां । नतोऽहं सदा सर्वदा शम्भु तुभ्यं ।
जरा जन्म दुःखौघ तातप्यमानं प्रभो पाहि आनन्नमामीश शम्भो ॥८॥
रूद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरोष्ये। ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति ॥९॥

॥ इति श्रीगोस्वामीतुलसीदासकृतं श्रीरुद्राष्टकं सम्पूर्णम्॥

॥०॥श्रीकाल भैरवाष्टकम्॥०॥

देवराजसेव्यमानपावनाङ्घ्रिपङ्कजं
व्यालयज्ञसूत्रमिन्दुशेखरं कृपाकरम् ।
नारदादियोगिवृन्दवन्दितं दिगम्बरं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥१॥
भानुकोटिभास्वरं भवाब्धितारकं परं
नीलकण्ठमीप्सितार्थदायकं त्रिलोचनम् ।
कालकालमम्बुजाक्षमशूलमक्षरं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं ॥२॥
शूलटङ्कपाशदण्डपाणिमादिकारणं
श्यामकायमादिदेवमक्षरं निरामयम् ।
भीमविक्रमं प्रभुं विचित्रताण्डवप्रियं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥३॥
भुक्तिमुक्तिदायकं प्रशस्तचारुविग्रहं
भक्तवत्सलं स्थितं समस्तलोकविग्रहम् ।
विनिक्वणन्मनोज्ञहेमकिङ्किणीलसत्कटिं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥४॥
धर्मसेतुपालकं त्वधर्ममार्गनाशकं
कर्मपाशमोचकं सुशर्मदायकं विभुम् ।
स्वर्णवर्णशेषपाशशोभिताङ्गमण्डलं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥५॥
रत्नपादुकाप्रभाभिरामपादयुग्मकं
नित्यमद्वितीयमिष्टदैवतं निरञ्जनम् ।
मृत्युदर्पनाशनं करालद्रंष्ट्रमोक्षणं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥६॥
अट्टहासभिन्नपद्मजाण्डकोशसन्ततिं
दृष्टिपातनष्टपापजालमुग्रशासनम् ।
अष्टसिद्धिदायकं कपालमालिकन्धरं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥७॥
भूतसंघनायकं विशालकीर्तिदायकं
काशिवासलोकपुण्यपापशोधकं विभुम् ।
नीतिमार्गकोविदं पुरातनं जगत्पतिं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥८॥
कालभैरवाष्टकं पठन्ति ये मनोहरं ज्ञानमुक्तिसाधनं विचित्रपुण्यवर्धनम् । शोकमोहदैन्यलोभकोपतापनाशनं ते प्रयान्ति कालवैरवाङ्घ्रिसंनिधिं ध्रुवम् ॥

॥ श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचित कालभैरवाष्टकं सम्पूर्णम्॥

॥०॥ मधुराष्टकम् ॥०॥

अधरं मधुरं वदनं मधुरं
नयनं मधुरं हसितं मधुरम् ।
हृदयं मधुरं गमनं मधुरं
मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥१॥
वचनं मधुरं चरितं मधुरं
वसनं मधुरं वलितं मधुरम् ।
चलितं मधुरं भ्रमितं मधुरं
मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥२॥
वेणुर्मधुरो रेणुर्मधुरः
पाणिर्मधुरः पादौ मधुरौ ।
नृत्यं मधुरं सख्यं मधुरं
मधुरापितेरखिलं मधुरम् ॥३॥
गीतं मधुरं पीतं मधुरं भुक्तं
मधुरं सुप्तं मधुरम् ।
रूपं मधुरं तिलकं मधुरं
मधुरापितेरखिलं मधुरम् ॥४॥
करणं मधुरं तरणं मधुरं
हरणं मधुरं रमणं मधुरम् ।
वमितं मधुरं शमितं मधुरं
मधुराधिपेरखिलं मधुरम् ॥५॥
गुञ्जा मधुरा माला मधुरा
यमुना मधुरा वीची मधुरा ।
सलिलं मधुरं मकलं मधुरं
धुराधिपेरखिलं मधुरम् ॥६॥
गोपी मधुरा लीला मधुरा
युक्तं मधुरं मुक्तं मधुरम् ।
दृष्टं मधुरं शिष्टं मधुरं
मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥७॥
गोपा मधुरा गावो मधुरा
यष्टिर्मधुरा सृष्टिर्मधुरा ।
दलितं मधुरं फलितं मधुरं
मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥८॥

॥ इति श्रीमद्वाल्लभाचार्यकृतं मधुराष्टकं सम्पूर्णम्॥

सर्वारिष्टनिवारण हनुमद्-वडवानल-स्तोत्रम

संकल्पः-ॐ अस्य श्रीहनुमद्-वडवानलस्तोत्र-मन्त्रस्य श्रीरामचन्द्र ऋषिः,श्रीवडवानलहनुमान् देवता,मम समस्त रोग प्रशमनार्थे आयुरारोग्यैश्वर्याऽभिवृद्ध्यर्थं समस्त पापक्षयार्थं सीतारामचन्द्रप्रीत्यर्थं च हनुमद्वडवानलस्तोत्र पाठमहं करिष्ये।

ध्यानम्-मनोजवं मारूत-तुल्य-वेगं,जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्। वातात्मजं वानरयूथ-मुख्यं,श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये।। ॐ ह्रां ह्रीं ॐ नमो भगवते श्रीमहाहनुमते प्रकटपराक्रम सकलदिङ्मण्डल यशोवितान धवलीकृत जगत् त्रितय वज्रदेहरूद्रावतार लङ्कापुरीदहन उमा अर्गलमन्त्र उदधिबन्धन दशशिरः कृतान्तक सीताश्वसन वायुपुत्र अञ्जनीगर्भसम्भूत श्रीरामलक्ष्मणा नन्दकर कपिसैन्यप्राकार सुग्रीवसाह्यरण पर्वतोत्पाटन कुमार ब्रह्मचारिन् गभीरनादसर्व पापग्रहवारण सर्वज्वरोच्चाटन डाकिनी विध्वंसन ॐ ह्रां ह्रीं ॐ नमो भगवते महावीरवीराय सर्वदुःखनिवारणाय ग्रहमण्डल-सर्वभूत मण्डल सर्वपिशाचमण्डलोच्चाटन भूतज्वर एकाहिकज्वर द्व्याहिकज्वर त्र्याहिकज्वर चातुर्थिकज्वर सन्तापज्वर विषमज्वर तापज्वर माहेश्वर वैष्णवज्वरान् छिन्धि छिन्धि यक्ष ब्रह्मराक्षस भूत प्रेत पिशाचान् उच्चाटय उच्चाटय। ॐ ह्रां श्रीं ॐ नमो भगवते श्रीमहाहनुमते ॐ ह्रां ह्रीं हूं हैं ह्रौं ह्रः आं हां हां हां हां ॐ सौं एहि एहि एहि ॐ हं ॐ हं ॐ हं ॐ नमो भगवते श्रीमहाहनुमते श्रवणचक्षुर्भूतानां शाकिनीडाकिनीनां विषमदुष्टानां सर्वविषं हर हर आकाशभुवनं भेदय भेदय छेदय छेदय मारय मारय शोषय शोषय मोहय मोहय ज्वालय ज्वालय प्रहारय प्रहारय शकलमायां भेदय भेदय। ॐ ह्रां ह्रीं ॐ नमो भगवते महाहनुमते सर्वग्रहोच्चाटन परबलं क्षोभय क्षोभय सकलबन्धनमोक्षणं कुरू कुरू शिरः शूल गुल्मशूल सर्वशूलान्निर्मूलय निर्मूलय नागपाशानन्त वासुकि तक्षक कर्कोटकालियान् यक्षकुलजगत् रात्रिंचरदिवाचर सर्पान्निर्विषं कुरू कुरू स्वाहा। राजभय चोरभय परमन्त्र परयन्त्र परतन्त्र परविद्याश्छेदय छेदय स्वमन्त्र स्वयन्त्र स्वतन्त्रकाविद्याः प्रकटय प्रकटय सर्वारिष्टान्नाशय नाशय सर्वशत्रून्नाशय नाशय असाध्यं साधय साधय हुँ फट् स्वाहा।यह स्तोत्र शनिवार से प्रारम्भ कर ११ दिन में ११०० पाठ नियमपूर्वक करना चाहिए।अन्त में सविधि हवन करें।।

नष्टवस्तुज्ञानम् -

प्रश्नकालीन तिथि वार नक्षत्र और लग्नांक जोड़ मे तीन और जोड़कर पाँच से भाग दें।१ शेष बचे तो भूमि पर प्राप्य,२ बचे तो जल में अप्राप्य,३ बचे तो किसी ऊँचे स्थान पर अप्राप्य,४ बचे तो नष्ट,५ शेष में केवल शोक सन्ताप ही होगा।

चोरी गई वस्तु का ज्ञान -

अन्धाक्ष	रो,पु,उ.फा.,वि,पू.षा,ध,रे	पूर्व	शीघ्रप्राप्ति
मन्दाक्ष	मृ,श्ले,ह,अनु,उ.षा,श,अश्वि	दक्षिण	३ दिन
मध्याक्ष	आ,म,चि,ज्ये,अभि,पूभा,भ	पश्चिम	६४ दिन
सुलोचन	पुन,पूफा,स्वा,मू,श्र,उभा,कृ	उत्तर	अप्राप्त

खोये हुए पशु का ज्ञान-सूर्य नक्षत्र से अभीष्ट नक्षत्र तक ज्ञान करें।

स्पष्टार्थ चक्र -

नक्षत्र ९	निर्जन स्थान में, विलम्ब से प्राप्त।
नक्षत्र ६	गांव के समीप।
नक्षत्र ७	घर में ।
नक्षत्र २	परिश्रम करने पर प्राप्त ।
नक्षत्र ३	अप्राप्ति।

नष्ट वस्तुओं की दिशा तथा चोर ज्ञानचक्र

अथ शिववास फल चक्रमिदम्

शुक्लपक्षतिथि	कृष्णपक्षति.	शिववासं	फलम्
१,८,१५	७,१४	श्मशाने	मृत्युः
२,९	१,८,३०	गौरी सन्निधौ	शुभम्
३,१०	२,९	सभायाम्	तापकारकम्
४,११	३,१०	क्रीडायाम्	विशिष्टकष्टं
५,१२	४,११	केलाशे	सुखम्
६,१३	५,१२	वृषे	श्री प्राप्तिः
७,१४	६,१३	भोजने	कष्ट प्राप्तिः

पार्थिवशिवपूजायां विहिततिथयः-

शुक्लपक्षे-२;५;६;९;१२;१३।कृष्णपक्षे-१;४;५;८;११;१२;३०। वधिः-(शुक्लादितिथिसं × २+५)÷ ७=१;२;३ शेषे शुभम्। अन्यदशुभम् । १ शेषे कैलाशे,२ शेषे गौरिसन्निधौ, ३ शेषे वृषारुढः शिवः अभीष्टदः स्यात् ।

सिमरियाधाम में महाकुम्भयोग

**ताटङ्कमण्डलविभूषितगण्डभागं चूड़ामणिप्रभृतिमण्डनमण्डिताङ्गीम्।
कौशेयवस्त्रमणि-मौक्तिकहारयुक्तां ध्यायेद्विदेहतनयां शशिगौरवर्णाम्॥
ध्यायेत् कल्पतरोरथः प्रवितते सौवर्णचिन्तामणौ नानारत्नविराजितेऽत्र भवने सद्रत्नसिंहासने ।
दूर्वानूतनपत्रसुदरतनुं चापंसवानुं चापं सवाणं महद्विभ्राणं मुकुटादि-भूषणयुतं पीताम्बरं राघवम्॥
(यातलसारोद्धार, मिथिलाखण्ड,पटल ५, श्लोक ७९-८०)
लक्ष्मीः कौस्तुभ-पारिजातक-सुरा धन्वन्तरिश्चन्द्रमाः धेनुः कामदुघा सुरेश्वरगजो रम्भादि-देवाङ्गनाः।
अश्वःसप्तमुखो विषं हरिधनुः शङ्खोऽमृतं चाम्बुधेः रत्नानीति चतुर्दश प्रतिदिनं कुर्वन्तु नो मङ्गलम्॥
(मधुस्रविणीमीमांसा, पृ.१९)**

जिस धराधाम के गर्भ अवतार लेकर महालक्ष्मी-जगज्जननी-जानकी जी ने 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः' के अनुसार माता की तरह पृथ्वी संरक्षण-आदर-सम्मान का सन्देश सम्पूर्ण विश्व को दिया है, जहाँ से जनक- गौतम-यज्ञवल्क्य-मण्डन-वाचस्पति-कुमारिल आदि राजर्षि-महर्षि-ब्रह्मर्षियों ने प्रवृत्तिमुलक(कर्मप्रधान) वेदान्त, त्यागपूर्वक सांसारिक जीवण-यापन,योग के साथ भोग का समन्वय, यज्ञ-दान-तप-विद्याध्ययन की महत्ता एवम् आत्मतत्त्व पर प्रकाश डालते हुए, शुक्लयजुर्वेद-शतपथब्राह्मण-बृहदारण्यकोपनिषत्-छन्दोग्यांपनिषत्-ईशावास्यो पनिषत् - रामायण - श्रीमद्देवीभागवत - ब्रह्मसिद्धि - भामती - तन्त्रवार्तिक आदि ग्रन्थरत्नों के माध्यम से लोककल्याणार्थ ज्ञानराशि प्रसारित किया है,जहाँ से कात्यायनी-मैत्रेयी-गार्गी-भारती एवं विद्योत्तमा सदृशी महिला विदूषियों की विद्वत्ता का प्रकाश सर्वत्र फैल रहा है, ऐसे सर्वत्र विख्यात परम पुण्यप्रद तीरभुक्ति (तिरहूत) क्षेत्र के सिमरियाधाम में, शास्त्रमन्थन की भाँति क्षीरसागर का मन्थन कर देवताओं ने अमृतकुम्भ (अमृतकलश-अमृतघट) प्राप्त कर यहीं सितरियाधाम में उत्तरवाहिनी गंगातट पर बैठकर अमृतपान किया था।

ऋग्वेद, शतपथब्राह्मण आदि प्राचीन ग्रन्थों के अनुसार यह भूभाग जलमयप्रदेश (आर्द्रभूमि) के रूपमें था। राजा विदघ (विदेह), माथव (माधव) तथा अनके पुरोहित रहूगुण गौतम ने वैश्वानर की उपासनापूर्वक यज्ञ द्वारा इस भूभाग को उर्वराशक्ति सम्पन्न तथा वासयोग्य बनाया । श्री मद्देवीभागवतमें भी इस क्षेत्र की, हिमालय के पार्श्व (बगल) तथा सागर के अतिसन्निकट में अवस्थिति कही गई है। तथा- राजाऽपि विमना भूत्वा गौतमं प्रत्यपूजयत्। इयाज हिमवत्पार्श्वो सागरस्य विशेषतः॥ (स्कन्ध 06,अध्याय १४,श्लोक ३५)। आधुनिक भूगर्भवैज्ञानिक, इतिहासकार एवं भूगोलशास्त्र के विशेषज्ञ भी इस को स्वीकार करते है।

कुम्भपर्व मुख्यतया क्षीरसागरमन्थनपूर्वक अमृतप्राप्ति कथा से सम्बद्ध है। क्षीरसागरमन्थन की कथा स्कन्दपुराण (०१:०९:१२), विष्णुपुराण (०१:०९),मत्स्यपुराण (अध्याय २४९-२५१),पद्मपुराण के माहेश्वर खण्ड में प्राप्त कथानुसार-देवगुरू बृहस्पति के अपमान के फलस्वरूप स्वर्गलक्ष्मी के रूष्ट हो जाने के कारण देवराज इन्द्र लक्ष्मीविहीन हो गए। इसी मध्य असुरों ने उक्त वृतान्त सुनकर स्वर्ग पर आक्रमण कर सारी सम्पत्ति लूट ली, किन्तु अभिशप्तत्वात् बलि आदि असुरों के हाथ से उक्त सारी सम्पत्ति क्षीरसागर (क्षीरोदकोद सागर सङ्गम) में गिर पड़ी। इस देवता एवं दैत्य-दोनों श्रीविहीन हो जाने के कारण दुःखी रहने लगे।

अन्य कथानुसार, शिव प्रदत पारिजातपुष्पमाल्य को दुर्वासा द्वारा उपहारस्वरूप देने के पश्चात् देवराज इन्द्र ने स्वयं धारण नहीं कर एक हाथी को पहना दिया। हाथी ने उस माला को अपने शुण्ड से उतारकर पांव से कुचल दिया । फलतःदुर्वासा ने इन्द्र के इस कृत्य पर कुपित होकर त्रैलाक्यलक्ष्मीविहीन होने का शाप दे दिया। इस शाप के कारण देव-दानव-गन्धर्व-यक्ष-किन्नर-मनुष्य-पशु-पक्षी प्रभृति सभी प्राणी दुःखी हो गए। दुःखनिवृति के लिये उपायान्तर नहीं देखते हुए देवता एवम् असुरगण अपने-अपने गुरू बृहस्पति एवं शुक्राचार्य से परामर्श कर देवाधिदेव महादेव के नेतृत्त्व में नष्ट लक्ष्मी-अमृतप्राप्ति के लिए क्षीरसागर मन्थन का निश्चय किया । यथा-

अथ-रामो महाप्रज्ञो विश्वामित्रं महामुनिम्। प्रपच्छ प्राञ्जलिर्भूत्वा वियाला मुत्तनां पुरीम्॥ श्रूयतां राम शक्रस्य कथां कथयतः श्रुताम्। अस्मिन् देशे हि यद्वृत्तं श्रृणु तत्त्वेन राघव ।।पूर्वं कृतियुगे राम दितेः पुत्रा महाबलाः। अदितेश्च महाभागा वीर्यवन्तः सुधार्मिकाः॥ ततोस्तेषां नपव्याघ्र! बुद्धिरासीन् महात्मनाम्। अमरा विजराश्चैव कथं स्यामो निरामयाः॥ ततो निश्चित्य मथनं योक्त्रं कृत्वा तु वासुकिम्। मन्थानं मन्दरं कृत्वा ममन्थुरमितौजसः॥ उत्पपाताग्निसङ्काशं हालाहलमहाविषम् । तेन दग्धं जगत्सर्वं सदेवासुरमानुषम्॥ हालाहलं विषं घोरं सञ्जग्रहामृतोपमम् । देवान् विसृज्य देवेशो जगाम भगवान् हरः॥ उच्चैःश्रवा हयश्रेष्ठो मणिरत्नं च कौस्तुभम्। उदतिष्ठन् नरश्रेष्ठ! तथैवामृतमृत्तमम्॥

(वाल्मीकिरामायण बालकाण, सर्ग ४५ श्लोक ११,१४,१६,१८,२०,२६,२९)

अर्थात्, देवराज इन्द्र द्वारा सुनी हुई कथाको धनुर्यज्ञावसर पर जनकपुर जाते हुए गंगा पार करने के पश्चात् महामुनी विश्वामित्र भगवान श्रीराम को सुनाते हुए कहते है कि पांचीनकाल मे कृतयुग में इस तीभुक्ति क्षेत्र में हिमालय पर्यन्त समुद्र का विस्तार था। उसी के उत्तर तट पर कैलाश से थेड़ी दूर पर गंगासागर का संगम तथा वहीं दक्षिण तट पर मन्दारपर्वत भी था। इसी स्थान पर अजरत्व-अमरत्व एवं आरोग्य-लाभ के लिए देवता एवं राक्षसों ने मिलकर वासुकी को डोरी,कच्छप के पीठ पर स्थिर कर मन्दार वर्पत को मथनी बनाकर समुद्र मन्थन कर अमृत प्राप्त किया । यह स्थान सम्प्रति बिहार प्रान्त के बेगुसराय जिला मुख्यालय मे नैर्ऋत्यकोण में अवस्थित शाल्मलीवन (सिमरियाधाम) सिद्ध होता है। इसी तरह रूद्रायामलोक्तामृतीकरणप्रयोग ग्रन्थ में भी कहा गया है-

**आर्यावर्त्तस्य पूर्वस्यां समुद्रोऽस्ति सनातनः । हिमवद्वनपर्यन्तं विस्तारोऽभूत् कृते युगे ॥
तस्योत्तरस्मिन् पुलिने गंगासागरसंगमः । ततोऽप्यनतिदूरे वै मम स्थानं सनातनम् ॥
जाह्नव्या दक्षिणे भागे मन्दारकुसुमैर्यतः । यत्र वृक्षकृतच्छाये साक्षान्नारायणः स्वयम् ॥
मन्दारस्य गिरेः पार्श्वे पुरा सिन्धुर्बभूव ह । जाह्नवी चापि तत्रैव संगता सागर प्रति ॥
मुरारिचरणाज्जाता गच्छन्ती चोत्तरां दिशम् । जाह्नवी सा महापुण्यं विशिष्टा शाल्मलीवने ॥
तत्रैव कमठपृष्ठे दण्डं संस्थाप्य पर्वतम् । मन्दारं शेषनागञ्च रज्जुं कृत्वा सुरासुराः ॥
ममन्थुः सागरं सर्वे विष्णुं कृत्वा तु सन्निधौ । अमृतैकान्तचित्तस्तु ममन्थुः सागरं शुभे ॥
ततोऽमृतघटं धृत्वा भासायन् तेजसा भुवम् । आविर्बभूव सहसा देवि! धन्वन्तरिः पुमान् ॥
त्रयोदश्यां कृष्णपक्षे तुलार्के च शुभे दिने । कार्त्तिके मासि सूर्यश्च तुलारूढ़ो यदा भवेत् ॥
चन्द्रोऽपि देवकार्यार्धमसिते मम वासरे । गुरावपि तुलारूढ़े पिबन्त्यमृतक्षयम् ॥**

(श्लोक १४,१५,२०,२६,४३,२७,२८ पूर्वार्द्ध ३९,४०,८८ उत्तरार्द्ध ८९)

उक्त वचनों के आधार पर कार्त्तिककृष्ण त्रयोदशी-चतुर्दशी-को तुलागत सूर्य-चन्द्र-बृहस्पतियोग में पूर्वोक्त स्थान (शाल्मलीवन) में क्षीरसागरमन्थन एवम् अमृतप्राप्ति सिद्ध होती है।

वर्त्तमान समय में उक्त सिमरियाधाम के दक्षिण भूभाग के बौंसी क्षेत्र में अवस्थित मन्दार पर्वत, सन्थाल-परगना के दारूकवन में वासुकिनाग द्वारा स्थापितवासुकिनाथ महादेव, जनकपुर से ५० मील उत्तर ठोसे मेगजेन नामक स्थान पर ''जूटा पोखरि'' नाम से प्रसिद्ध पुष्करिणी के मध्य भाग में विषपानोत्तर नीलकण्ठ महादेव का विश्रामस्थल,अहल्यास्थान से पश्चिम ब्रह्मपुर में गौतमकुण्ड तक प्रवाहित क्षीरोदकी (क्षिरोई) नदी, नेपाल का सागरमाथा जिला एवं दरभंगा से ईशानकोन में अवस्थि बलिराजगढ़-उक्त विषय में प्रमाणस्वरूप अद्यापि विद्यमान हैं। इस प्रसंग में मधुस्त्राविणीमीमांसा (डॉ रामकिशोर झा विभाकर), रूद्रयामलोक्तमृतीकरणप्रयोग (अनुवादक डॉ. विद्येश्वर झा प्रभृति) एवं वाराद पुराणाङ्क कल्याण भी द्रष्टव्य है। अमृतपानार्थ देवताओं-दानवों में भयंङ्कर युद्ध छिड़ गया। इस क्रम में सूर्य,चन्द्र एवं बृहस्पति ने अमृतघट की रक्षा करते हुए ११ वर्ष तक ११ स्थानों-कामख्या, पुरी आदि में विश्राम क्रम में संरक्षित किया। अन्त में १२ वें वर्ष में उसी सिमरियाधाम में भगवान विष्णु के माहिनीरूप के प्रभाव से देवताओं ने दीपावली के दिन अमृतपान किया। यथा वाल्मीकिरामायण के बालकाण्ड के सर्ग ४५ में श्लोक ४०-४३ में कहा गया है-

अथ तस्य कृते राम महानासीत् कुलक्षयः । अदितेस्तु ततः पुत्रा दितिपुत्रानयोधयन् ॥ एकतामगमन् सर्वे आसुरा राक्षसैः सह। युद्धमासीन्हाघोरं वीरं त्रैलोक्यमोहनम्॥ यदा क्षयं गतं सर्व तदा विष्णुर्महाबलाः।अमृतं सोहरत्तूर्णं मायामास्थाय माहिनीम्॥ ये गताभिमुखं विष्णुमक्षरं पुरूषोत्तमम्। सम्पिष्टास्ते तदा युद्धे विष्णुना प्रभविष्णना॥ रुद्रायामलोक्तामृतीकरणप्रयोगग्रन्थके श्लोक ६१,६४,८७ एवं ८८ पूर्वार्द्ध में भी कहागया है-

एतस्मिन्नन्तरे काले विष्णुर्नारायणः स्वयम् । मोहिनारूपमास्थाय ययौ दैत्यान् विमोहितान्॥ सम्मान्य तदा दैत्यराजो बलिरूवाच ह। सुधा त्वया विभक्तव्या सर्वेषां सममेव च॥ अत्रैव जाह्नवीतीरे ह्युत्तरे तु महद्वनम्। शाल्मल्याः शोभते देवि गंगा चोत्तरवाहिनी॥ पुलिने तत्र पपुर्देवाः स्नात्वा सुविमले जले ॥

धर्मसम्राट् परमहंस स्वामी करपात्रिमहोदय ने भी अपने कुम्भपर्वनिर्णय ग्रन्थ की पृष्ठसंख्यां २२ में देवताओं १२ दिनों में अथवा मुनुष्यों के १२ वर्षो में १२ कुम्भपर्व होने का उल्लेक्ष किया है। यथा-**देवानां द्वादशहोभिर्मात्यौर्द्वादशवत्सरैः। कुम्भ पर्वानि जायन्ते तथा द्वादशसंख्यया॥** उक्त सफल द्वादश कुम्भयोग घटित द्वादश स्थान के विषय में रूद्रयामलोक्तमृतीकरणप्रयोग ग्रन्थ में इस प्रकार वर्णन किया गया है-

देवाश्चागत्य मज्जन्ति तत्र मांस वसन्ति च । तस्मिन् स्थानेन दानेन पुण्यमक्षय्यमाप्नुयात् ॥ सिंहे युतौ च रेवत्यां मिथुने पुरूषोत्तमे। मीनभे ब्रह्मपुत्रे च तत्र क्षेत्रे वरानने ॥ धनूराशिस्थिते भानौ गंगासागरसगंमे। कुम्भराशौ तु कावेर्यां तुलार्के शाल्मलीवने॥ वृश्चिकके ब्रह्मसरसि कर्कटे कृष्णशासने। कन्यायां दक्षिणे सिन्धौ यात्राहं रामपूजिताः॥ अथाप्यन्योऽपि योगोस्ति यत्र स्नानं सुधोपमम्। मेषराशिस्थिते भानौ कुम्भे चैव गुरौ स्थिते ॥ गंगाद्वारे भवेद्योगो भुक्तिमुक्तिप्रदः शिवे। मेष गुरौ तथा देवि! मकरस्थे दिवाकरे॥ त्रिवेण्यां जायते योगः सद्योऽमृतफलं लभेत्। शिप्रायां मेषगे सूर्यो सिंहस्थे च बृहस्पतौ॥ मांस यावन्नरः स्थित्वाऽमृतत्वं यान्ति दुर्लभम्॥

(श्लोक ११२-१२८)

अर्थात, सूर्य, चन्द्र एवं बृहस्पति के यथोक्तयोगवशात् सिंहराशि में नासिक (महाराष्ट्र) में, मिथुनराशि में जगन्नाथ (ओडिशा) में, मीनराशि में कामख्या (आसाम) में, धनुराशि में गंगासागर (बंगाल) में, कुम्भराशि में कुम्भकोण (तमिलनाडु) में, तुलाराशि में शाल्मलीवन अर्थात् सिमरियाधाम (बिहार) में, वृश्चिकराशि में कुरूक्षेत्र (हरियाणा) में, कर्कराशि में द्वारका (गुजरात) में, कन्याराशि में रामेश्वरम (तमिलनाडु) में, मेषार्क - कुम्भराशिगत बृहस्पति में हरद्वार (उत्तराखण्ड) में, मकरार्क-मेषराशिगतबृहस्पति में प्रयाग (उत्तरप्रदेश) में एवं मेषार्क-सिंहस्थ बुहस्पति में उज्जैन (मध्यप्रदेश) में, कुम्भयोग होता है। इन सभी तीर्थस्थानों में अमृतघट के संयोग से जल अमृतमय कहा गया है। अतएव इन स्थानों में स्नान, दान, दर्शन, मार्जन, जप, पूजन एवं विविध धर्मानुष्ठान से अक्षय पुण्य की प्राप्ति होती है।

विदेशी शासनकाल में धार्मिक कृत्यों पर कुठाराघात करने के क्रम में कुम्भ जैसे महापर्व का आयोजन बन्द हो गया। कुछ दिनों के पश्चात्लगभग १५०० वर्ष पूर्व सम्राट् हर्षवर्द्धन के समय मात्र ४ कुम्भपर्वो (हरद्वार, प्रयाग, उज्जैन एवं नासिक) का आयोजन प्रारम्भ हुआ। शेष ८ कुम्भ लुप्तप्राय हो गया। मात्र सिमरियाधाम में प्रतिवर्ष कल्पवास होता रहा। इन्हीं कुम्भपर्वो को पुनः प्रतिष्ठित करने हेतु सर्वमंगला अध्यात्म योग विद्यापीठ सिद्धाश्रम माँ कालीधाम गंगातट, सिमरियाधाम, मिथिलाञ्चल, बेगुसराय; (बिहर) के संस्थापक धर्मसम्रट् करपात्री परमहंस स्वामी चिदात्मन् जी महराज के प्रस्ताव को विचार-विमर्श के पश्चात् कामेश्वरसिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय के पण्डितसभा द्वारा दिनांक १५:१२:२०१० ईको सर्वसम्मति से समर्थन किया गया। पुनः इसे पर्व एवं समयशुद्धि हेतु आयोजित पण्डितपरिषद् द्वारा भी अनुमोदित किया गया। इसके फलस्वरूप आदिकुम्भस्थली सिमरियाधाम में कार्त्तिकमास (तुलार्क) में दिनांक १८:१०:२०११ ई.से दिनांक १७:११:२०११ ई. तक अर्द्धकुम्भ के सफल आयोजन में स्थानीय सांसदों, विधायकों, शङ्कराचार्यो, महामण्डलेश्वरों, धर्माचार्यो, सन्तों, महात्माओं, चिद्वानों एवं राज्य सरकार का पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ। पुनः परमहंस श्रीचिदात्मन् स्वामी जी के सत्यप्रयास के फलस्वरूप दिनांक ०५-०७ जुलाई २०१७ ई. तक आयोजित काशी विद्वत् परिष्द् एवं सर्वमंगला मिथिला विद्वत् परिषद् के निर्णयानुसार कार्त्तिकमास (तुलार्क) में दिनांक १८:१०:२०१७ ई.से दिनांक १८:११:२०१७ ई. तक महाकुम्भ का सफल आयोजन हुआ। इस पकार श्रीचिदात्मन् जी महराज के सदुद्योग से लुप्तप्राय सभी महाकुम्भपर्वों का आयोजन होने लगा है।

तीरभुक्ति या मिथिलाक्षेत्र वैकुण्ठलोक के समान है। अतएव यहाँ वास करने से मनुष्य जीवन्मुक्त होता है। यहाँ की यात्रा पारम पुण्यप्रद कही गई है। काशी से एकवर्ष वास से एवं प्रयाक तथा पुष्कर में तीन वर्षो तक वास से जो फल मिलता है वही फल मिथिला में एकदिन वास मात्र से प्राप्त होता है। अयोध्या के समान फल देने वाली मिथिलापुरी है। जैसे यामलसारोद्धर के मिथिलाखण्ड में कहा गया है- **वैकुण्ठगान् पुरस्कृत्य लोकाल्लंक्ष्मीरवातरत्। वैकुण्ठस्तु नियाशेन मिथिलाभूमिमाविशत्॥ अतो निवासभमिस्ते सर्वस्थानाद्विशिष्यते। वैकुण्ठात्र कलान्यूना दृश्यते मिथिला मया॥**

(तृतीयपटल,श्लोक १५-१६)॥

अविमुक्ते मम क्षेत्रे संवत्सरनिवासतः। यत्फलं लभते मर्त्यो मिथिला दिने दिने॥ तीर्थराजे विधिक्षेत्रे वर्षत्रयनिवासतः। यत्फलं समवाप्नोति मिथिलायां दिनेन तत्॥ अयोध्यायां निवासेन यत्फलं लभते नृप। तत्फलं समवाप्नोति समानं मात्र संशयः। (षष्ठपटल, श्लोक २९ उत्तरार्द्ध-३२ पूर्वार्द्ध यावत्)

बृहद्विष्णुपुराण के मिथिलामाहात्म्य में भी कहा गया है- **कथञ्चित्तत्र चेद्धास उद्धाराय भवेदलम्। तत्र यात्रा महापुण्या सर्वकासमृद्धिदा॥ (अध्याय १, श्लोक१७)॥ मिथिला ये नमस्यन्ति देशान्तरगता अपि। तेषां भुक्तिश्च मुक्तिश्च तद्भक्तुाः सह मोदते॥ (अध्याय २, श्लोक ३९)॥ मिथिलावासमासाद्य जीवन्मुक्तो भवेन्नरः। देहान्ते राघवं प्राप्य नराः संयन्ति योग्यताम्॥ (अध्याय ४, श्लोक १९)॥ महापुण्यातिरेकश्च अनुर्लब्ध्वा च भारते । मिथिलाया निवासस्य (अध्याय ६, श्लोक १३)॥** अतएव धर्मानुरागियों, साधु-सन्तों एवं विद्वज्ज्नों से करबद्ध निवदन है कि उक्त विषय के आलोक में २०२३ ई. के **चैत्रकृष्णपक्षः मास कामख्या में** आयोज्यमान **महाकुम्भ** में पधारकर स्नान-दान-जपार्चनादि विविध धर्मानुष्ठान कर पुण्य के भागी बनें।

गंगादशहर
०९:०६:२०२२

नवेदक :
स्वामी रवीन्द्र जी ब्रह्मचारी

॥श्री॥ नम्र निवेदनम् ॥श्री॥

वयमिह पदविद्यां तर्कमान्वीक्षिकीं वा, यदि पथि-विपथे-वा-वर्तयामः स पन्थाः ।
उदयति दिशि यस्यां भानुमान् सैव पूर्वा, न हि तरणि रूदिते दिक् पराधीन वृत्तिः ॥ (उदयनाचार्य)

जगज्जननी जगदंबा जानकी की जन्म भूमि जनक-याज्ञवल्क्य की तपो-भूमि गौतम-वाचस्पति उदयन पक्षधर की ज्ञान भूमि मिथिलांचल के दक्षिण द्वारस्थ उत्तर वाहिणी माँ गंगा के पावन पुलिन पर अवस्थित सर्वमंगला अध्यात्म योग विद्यापीठ अपने परम-पूज्य गुरूदेव करपात्री अग्निहोत्री परमहंस संत शिरोमणि स्वामी चिदात्मन जी महाराज के विमल आदर्शोन्मुख पद चिह्नों पर चलते हुए अध्यात्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राष्ट्रिय विचारधारा से समाज के अंतिम पंक्ति में खड़े लोगों को जोड़ने का प्रयास प्रायः ०५ दशकों से अनवरत करता आ रहा है। आध्यात्मिक धरातल पर मानवीय मूल्य के मौलिक उद्देश्यों को वैश्विक क्षितिज पर रेखांकित करना ही हमारा परम लक्ष्य है। गुरू कृपा से प्राप्त चारित्रिक शुचिता वैचारिक पारदर्शिता एवं नैतिक दृढ़ता के बल पर हम निरंतर अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर है। आदिकुम्भस्थली सिमरियाधाम अति प्राचीन काल से सद्शास्त्र विश्रुत द्वादश कुंभस्थलियों में आदि रूप स्थान निरूपित करते हुए न केवल मिथिला मगध एवं अंग प्रदेश की पुण्य संगम स्थली है अपितु सम्पूर्ण भारत वर्ष में आदि कुम्भ स्थली के रूप में सुप्रतिष्ठित रहा है। राजा जनक काल से ही यहां याज्ञिक अनुष्ठान् धार्मिक कृत्य, बौद्धिक प्रवचन, संगोष्ठी पारंपरिक रूप से प्रचलित थे। ऐतिहासिक काल खंड के काले अध्याय में विधर्मी आंक्रांताओं के द्वारा न केवल मठ मंदिरों को नष्ट किया गया अपितु धर्म और आस्था के सांस्कृतिक धरोहर कुम्भ पर्व को भी बंद करवा दिया गया।

धर्मप्राण मिथिला भूमि जो कुम्भ प्रथा बन्द होने पर भी कार्तिक मास मेला के रूप में प्रतिवर्ष इस स्थान की एतिहासिक विरासत को अक्षुण रखा। परम् पूज्य गुरूदेव जो आदि कुम्भ स्थली के साथ लुप्त प्राय: ०७ अन्य कुम्भ स्थलियों को पूर्णः जागृत करने हेतु प्रथम प्रेरक युग पुरूष के रूप में जन जागरण कर अपने प्राचीन धरोहर को पुन: उत्थापित करने हेतु कार्यारंभ किए। मिथिला शरीर शास्त्र और समुद्र मंथन की स्थली द्वादस नामो एंवं पांच कारणों से विश्व विख्यात है। आज भी यहाँ ऐसे रत्न हैं जिन्होंने राजनितिक प्रतिष्ठा को कभी भी महत्व नहीं दिया, अधिकार की भी लिप्सा नहीं की, धन को कभी भी अपने जीवन का लक्ष्य नहीं बनाया। इनके जीवन धर्म हैं, त्याग, संयम और मर्यादा। जिनपर न केवल मिथिला वासी अपितु सम्पूर्ण देशवासी गर्व करते हैं। जिन्होंने शास्त्री आधार विधि से कुम्भ पर्व प्रमाणित कर भारतवासियों का सर ऊँचा किया है। इनमें विद्वत् समाज, विशिष्ट संत समाज, प्रशासक वर्ग, पत्रकार बंधुओं, राजनेताओं, कानूनविदों बिहार सरकार के साथ विश्व हिन्दू परिषद् राष्ट्रीय स्वंय सेवक संघ, भारतीय विकास परिषद एवं वनवासी कल्याण आश्रम, स्वायतशासी संस्था, व्यवसायीवर्ग एवं समाजिक सांस्कृतिक संस्था के साथ-साथ कुम्भ सेवा समिति की समन्वयात्मक भूमिका सराहनीय है। मूलतः ज्योतिषीय गणना के आधार पर शास्त्रीय सिद्धांत के आलोक में प्रत्येक राशि पर वर्ष में एक बार सूर्य, चन्द्र और बृहस्पति का योग होता है और इसी पूर्ण योग से तीर्थ स्थली विशेष में महाकुंभ पर्व सिद्ध होता है । ''द्रष्टव्य रूद्रयामल तंत्र ।'' आदि कुंभ स्थली सिमरियाधाम में वेदांग ज्योतिष शास्त्र एवं पौराणिक मान्यताओं से संदर्भित कुंभ महापर्व शास्त्र मंथन का तीन दिवसीय कार्यक्रम आयोजन किया गया । इसमें मिथिला विद्वत्परिषद के माननीय अध्यक्ष पूर्व कुलपति एवं अद्वितीय दैवज्ञ पंडित प्रवर डॉ. रामचंद्र झा जी के साथ मिथिला के विशिष्ट विद्वान एवं काशी विद्वत्परिषद के माननीय अध्यक्ष वयोवृद्ध प्रोफेसर राम यत्नशुक्ल, प्रोफेसर शिवजी उपाध्याय, प्रोफेसर राम नारायण द्विवेदी के साथ काशी के अन्य विद्वत विभूति साथ ही हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी, सम्पूर्णानन्द विश्वविद्यालय वाराणसी, इलाहाबाद, लखनऊ, दिल्ली, गुजरात, पुणे, जगन्नाथपुरी, कोलकाता, असम, काठमांडु, संस्कृत विश्वविद्यालय दरभंगा, मिथिला विश्वविद्यालय दरभंगा, पटना विवि., भागलपुर, दुमका विवि. ऐसे सुप्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थान के लब्धप्रतिष्ठ विषय विशेषज्ञ, चारों धाम के तीर्थ पुरोहितों, प्रयाग बाल सभा, अखाड़ा परिषद के सदस्य, विभिन्न धार्मिक सम्प्रदाय के प्रतिनिधियों ने भाग लिया । विचारोपरांत २०१७-१८ वर्षीय विवि. पञ्चाङ्ग का लोकार्पण करते हुए महामहिम राज्यपाल गोवा एवं अन्य विशिष्ट विद्वत् विभूतियों ने आदि कुम्भस्थली, सिमरियाधाम, महाकुम्भ पर्व स्नान तिथि निश्चित किया । इसी प्रकार द्वादश कुम्भ योग के अंतर्गत जिन पुण्य तीर्थों में पुनीत मुहूर्त प्राप्त हुए वहां के धर्म प्राण जन समुदाय, तीर्थ पुरोहितों एवं शासन, प्रशासन के सौजन्य से सर्वमंगला परिवार अपनी शाखाओं के साथ श्रद्धा समन्वित अलभ्य युग का अध्यात्मिक लाभ प्राप्त किया । परम् पूज्य गुरूदेव स्वामी प्रायः अपने आशिर्वचनों में वेद एवं वेदांग ज्योतिष की अलौकिकता का अमर संदेश मानवता के रक्षा एवं विश्व शांति के सूत्र रूप में उद्धरित करते हैं- शब्दशास्त्रं मुखं ज्योतिषं चक्षुषी, श्रोत्रमुक्तं निरूक्तं च कल्पः करौ । या तु शिक्षास्य वेदस्य सा नासिका छन्दबुधैः पाद पद्म द्वयम् ॥

अथार्त, (वेद भगवान का मुख व्याकरण नेत्रद्वय ज्योतिष शास्त्र, निरूक्त श्रवणेन्द्रिय और दोनों हाथ कल्पशास्त्र, शिक्षा शास्त्र, नासिका तथा छन्द शास्त्र दोनों पांव हैं ।) इसी सूत्र का आश्रय ग्रहण करते हुए सर्व मंगला अध्यात्म् योग विद्या पीठ एवं स्वामी चिदात्मन वेद विज्ञान अनुसंधान संस्थान सर्वमंगला विद्वत्परिषद एवं सर्वमंगला विद्वत्परिवार से विमर्शोपरांत श्रावण मास से पञ्चाङ्ग प्रकाशन हेतु निर्णय लिया है । धर्म और संस्कृति के समुन्नयन के साथ राष्ट्रिय विकास एवं वैश्विक शांति की कामना से प्रकाशित

कोशिकौन्तु सभारभ्य गडकीमभिगम्य वै। योजनानि चतुर्विंशद्व्यायामः परिकीर्तितः॥
गङ्गाप्रवाहमारभ्य यावद्धैमवतं वनम् । विस्तारः षेडश प्रोक्तो देशस्य कुलनन्दन ॥
मिथिला नाम नगरी तत्रास्ते लोकविश्रुता॥ (वृहद्विष्णुपुराण, मिथिलामात्म्य, अध्याय १४, श्लोक ४२-४४)

जाता सा यत्र सीता सरिदमलजला वाग्वती यत्र पुण्या, यत्रास्ते सान्निधाने सुरनगरनदी भैरवो यत्र लिङ्गम्।
मीमांसान्यायवेदाध्ययनपटुतरैः पण्डितैर्मण्डिता या, भूदेवो यत्र भूपो यजन वसुमती साऽस्ति मे तीरभुक्तिः॥
(श्रीशङ्करमिश्र,(१४४०-१५३० ई.) कृत, द्रष्टव्य विद्याकरसहस्त्रक, म.म उमेशमिश्रसम्पादित, १९४२ ई. प्रयागविश्वविद्यालय प्रकाशित)

गङ्गा वहथि जनिक दक्षिणदिशि पूर्व कौशिकीधारा। पश्चिम वहथि गण्डकी उत्तर हिमवत वन विस्तारा॥
कमला त्रियुगा अमृता धेमुरा वागमती कृतसारा। मध्य वहथि लक्ष्मणा प्रभृति से मिथिला विद्यागारा॥ (कवीश्च चन्दा झा)।

उपर्युक्त प्रमाणों के आधार पर कोशी से गण्डकी (हरिहरक्षेत्रस्थ शालग्रामी या नारायणी) तक, पूर्व से पश्चिम तक २४ योजन (९६ कोश) लम्बा एवं गङ्गाप्रवाह से हिमालय वन (दक्षिण से उत्तर) तक १६ योजन (६४ कोश) चौड़ा मिथिला अथवा तीरभुक्ति कहा गया है। इस आधार पर वर्तमान समय में उत्तर से दक्षिण तक क्रमशः नेपाल के तराई क्षेत्र (दक्षिणीभाग) से मुङ्गेर तक तथा पश्चिम से पूर्व तक क्रमशः चम्पारण-वैशाली से पूर्णियाँ-भागलपुर तक का क्षेत्र तिरहुत अथवा मिथिलाक्षेत्र है। १८१५-१७ ई. में सुगौली सन्धि के समय विविध राजनीतिक स्थितिवश उक्त तराई क्षेत्र नेपाल के अधीन हो गया। किन्तु आचार-विचार, सभ्यता-संस्कृति की दृष्टि से आज भी सर्वथा साम्य है। वेद, शतपथब्राह्मण, उपनिषद्, रामायण, भागवत, गीता, पुराण, महाभारत आदि प्राचीन ग्रन्थों एवं विविध भाषा के मानक (ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, धार्मिक आदि) ग्रन्थों में मिथिला का महत्त्वपूर्ण वर्णन मिलता है। प्राचीनकाल से ही यह नगरी विद्या, उपासना एवम् आध्यात्मिक चिन्तन के क्षेत्र में विश्वविख्यात रही है। यहाँ देवरात, मिथि, निमि, जनक, विशाल, गार्गी, मैत्रेयी, याज्ञवल्क्य, अष्टावक्र, वाल्मीकि, गौतम, कपिल, कणाद, मण्डन-भारती, अयाची, वाचस्पति, उदयन, कालिदास, विद्योतमा, श्रीधर, रामदत, वीरेश्वर, विद्यापत, महात्मा बुद्ध, भगवान् महावीर, महामहोपाध्याय रुधर, तान्त्रिकशिरोमणि मदन उपाध्याय, भक्तशिरोमणि बाबासाहेबराम, सन्तशिरोमणि लक्ष्मीनाथ गोस्वामी परमहंस, नव्यन्यायप्रवर्तक गङ्गेशोपाध्याय, महामहोपाध्याय, गोकुलनाथ, महार्घ्य मुसूदन ओझा, देवीकान्त ठाकुर, गोविन्द ठाकुर, महामहोपाध्याय परमेश्वर झा, दैवज्ञरत्न गेनानाल चौधरी, महामहोपाध्याय जयदेव मिश्र, महामहोपाध्याय डॉ. सर गङ्गानाथ झा, सर्वतन्त्रस्वतन्त्र बच्चा झा, महामहोपाध्याय बालकृष्ण मिश्र, महामहोपाध्याय हर्षनाथ झा, आचार्य जानकीवल्लभशास्त्री, राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर, गोपाल सिंह नेपाली, रामवृक्ष बेनीपुरी, भिखारी ठाकुर, फणीश्वरनाथ रेणु, बैद्यनाथ मिश्र यात्री-नागार्जुन, सुरेन्द्र झा सुमन आदि अनेक मनीषिगण हो चुके हैं जिनके कार्यकलापालोक से समस्त विश्व आलोकित हो रहा है। **सिमरियाधाम में क्षीर सामरमन्थन से अमृतप्राप्ति** (रुद्रयामलोक्तामृतीकरणप्रयोग, श्लोक ११-४२, १२३-१२८, वाल्मीकिरामायण, बालखण्ड सर्ग ४५, यामलसारोद्धार, मिथिलाखण्ड, पटल ४, श्लोक ४-३) वैकुण्ठांशनिर्मित मिथिला (तत्रैव, पटल ३,श्लोक १५-१६) एवं मिथिलायात्रा महापुण्यप्रद तथा वास से मोक्ष (बृहद्विष्णुपुराण-मिथिलामाहात्म्य, अध्याय १३,श्लोक १७, अध्याय १६,श्लोक १३८) सुप्रसिद्ध है।

सीतामढ़ी में दुर्भिक्षनिवारणार्थ सम्पन्न हलेष्टियज्ञ के पश्चात् सीरध्वज जनक द्वारा स्वर्णहलप्रवाहावस[illegible] पुण्[illegible] (पुनौराधाम) में भूगर्भ से **आदिशक्ति जगज्जननी जानकी** का प्रादुर्भाव (यामलसारोद्धार, मिथिलाखण्ड, पटल २१, श्लोक ३६, वाल्मीकिरामायण, बालकाण्ड सर्ग ६६,श्लोक १३-१४), **याज्ञवल्क्य** का ब्रह्मविद्योपदेश (श्रीमद्भागवत, स्कन्ध १२ , अध्याय ०६, श्लोक ६१-७३ एवं बृहदारण्यकोपनिषद्), **बलराम-श्रीकृष्ण** की मिथिलायात्रा (हरिवंशपर्व,अध्याय ३९,श्लोक २३, २८, श्रीमद्भागवत, स्कन्ध १०, अध्याय ८६, विष्णुपुराण, ०३।०५), कर्म की प्रधानता निरूपणावसर पर भगवान् श्रीकृष्ण द्वारा **''कर्मणैव हि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः''** (श्रीमद्भगवद्गीता, अध्याय ०३,श्लोक २०) जनकादि का उदाहरण के रूप में उल्लेख तथा पिता (श्रीव्यास) जी की आज्ञा से शुकदेवजी द्वारा मिथिला के अधिपति जनक से (श्रीमद्देवीभागवतमहापुराण) स्कन्ध ०१, अध्याय (१४-१९) गार्हस्थ्य धर्मोपदेश एवम् आत्मज्ञान की प्राप्ति सर्वविदित ही है। अतएव कहा गया है–

''नमस्ते मिथिले पुण्ये सीतारामपदाङ्किते।''

हिमालय के सान्निध्य एवं गङ्गादि विविध नदियों के प्रवाह होने के कारण यहाँ का वातावरण शुद्ध एवं भूमि ऊर्वराशक्ति सम्पन्न है। अतएव सम्पूर्ण क्षेत्र जीवनोपयोगी कन्द, मूल, वनस्पति, लता, गुल्म, फूल, फल, औषधि तथा शरद, वसन्त एवं ग्रैष्मिक धान्यादि विविध वस्तुओं के उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है। विशेषतः हाजीपुर का केला, मुजफ्फरपुर का शाही लीची, समस्तीपुर का विविध कृषि उत्पादन, चम्पारण का धान, भागलपुर का कतरनी धान का चूड़ा, दरभङ्गा का मालदह एवं [illegible] मिथिलाञ्चल का पान, माँछ तथा मखान विख्यात है। यहाँ के लोग शालीनता, कर्मठता,सौम्यस्वरूप,आचार-विचार, प्रतिभा, मनीषिता एवम् उच्चविचार के लिए प्रसिद्ध है।यहाँ के मनोरंजन, हास्य, गीत, सङ्गीत, नृत्य, रामलीला, भजन, सङ्कीर्त्तन, कथा-प्रवचन, लौकिक, दीनाभद्री, विहुला, राजा सल्हेश, सामाचकेवा, कठपुतली एवं जट-जटिन आदि सुप्रसिद्ध है।

यहाँ के मनोरंजन, हास्य, गीत,सङ्गीत, नृत्य, रामलीला, भजन, सङ्कीर्त्तन, कथा-प्रवचन, लोरिक,दीनाभद्री,विहुला,राजासल्हेश, सामाचकेवा, कठपुतली एवं जट-जटिन आदि सुप्रसिद्ध है।

यह सम्पूर्ण क्षेत्र शक्तिपीठ के नाम से विख्यात है। आदिशक्ति सती के योगाग्निदग्ध शरीर के विभिन्नावयवपात से जब इस धराधाम पर ५१ शक्तिपीठ बन गए तो जहाँ उनका तीन बार (आङ्गिरस विप्र के वेदवती कन्या के रूप में (यामलसारोद्धार तन्त्रोक्तमिथिलामाहात्म्य, चतुर्थपटल, श्लोक ०४-११), शाल्मलीवन-सिमरियाधाम में क्षीरसागरमन्थन के पश्चात महालक्ष्मी के रूप में (रुद्रयामलोक्तामृतीकरणप्रयोगग्रन्थोक्त सिमरियाकुम्भदर्पण, श्लोक ३२) तथा सीरध्वज जनक के यहाँ धरणीगर्भ से आविर्भूत जानकी के रूप में (यामलसारोद्धार तन्त्रोक्तमिथिलामाहात्म्य, प्रथमपटल, श्लोक ३६) साक्षात् प्राकट्य हो उस धाम के सम्बन्ध में कुछ कहने की आवश्यकता ही क्या है? यहाँ हरिहरनाथ, सोमेश्वरनाथ, गरीबनाथ, उग्रनाथ (उगना), कपिलेश्वर, सिंहेश्वर, कुशेश्वर, कल्याणेश्वर, जलेश्वर, हलेश्वर, विदेश्वर, क्षीरेश्वर, त्रिपुरसुन्दरी, चण्डी, कात्यायनी, छिन्नमस्तिका, रमेश्वरीश्यामा, काली, कङ्काली, दुर्गा, उग्रतारा जयमङ्गला, बगला, वनदुर्गा, भुवनेश्वरी, राजराजेश्वरी, अहल्यागौतमस्थान, गिरिजास्थान (फलहर), जानकीस्थान, जनकपुरधाम आदि शिवशक्तिक्षेत्र सतत् प्रेरणास्रोतस्त्वेन विद्यमान है। यह विश्व में एकमात्र क्षेत्र है जिसमें वैवाहिक सम्बन्ध हेतु अधिकारमूलक जानकारी के लिए पंजीप्रबन्ध की व्यवस्था है। यहाँ की मिथिलाचित्रकला सर्वत्र विख्यात है। यह भूमि (चम्पारण) महात्मा गाँधी एवं (मुजफ्फरपुर) जयप्रकाशनारायण की कर्मभूमि रही है। इस तरह हर क्षेत्र में इसका अपना महत्त्वपूर्ण अवदान अतिप्राचीनकाल से ही रहा है।

उपर्युक्त परिप्रेक्ष्य में अन्य विद्याओं के साथ-साथ ज्यौतिष के क्षेत्र में भी तीरभुक्ति का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। यहाँ अनेक ग्रन्थकार, टीकाकार एवं सम्पादक हुए हैं जिनकी कृति ज्यौतिष जगत् में सदैव शिरोमणि की तरह समादृत है। इनमें सिद्धान्तशेखरकार श्रीपति एवं तट्टीकाकार बबुआजी (श्रीकृष्ण) मिश्र, कृत्यचिन्तामणिकार चण्डेश्वर, सिद्धान्तसुधाकार महामहोपाध्याय परमानन्द ठाकुर, ग्रहणमालाकार महामहोपाध्याय हेमाङ्गद ठाकुर, रत्नशतककरा जीवेश्वर दैवज्ञ, अणुतदर्पणकार महामहोपाध्याय माधव, सिद्धान्तसेतु रचयिता एवं सिद्धान्तशिरोमणि प्रभाटीकाकार, मुरलीधरठाकुर, सिद्धान्ततत्त्वाविवेकटीकाकार गङ्गाधरमिश्र, गोलप्रकाशकार नीलाम्बर, भावकुतूहलादि ग्रन्थकार जीवनाथ दैवज्ञ, व्यवहाररत्नकार भानुनाथ चापीय त्रिकोणमिति-गोलीयरेखागणितटीकाकार चन्द्रशेखर झा, चापीयत्रिकोणमितिटीकाकार महावीर पाण्डेय, ज्योतिपरत्नाकरकार देवकीकदर सिंह मोखतार, आर्यभटीयग्रन्थटीकाकार बलदेव मिश्र, मरकन्दोपपत्तिकार गोकुलनाथ, शताधिकग्रन्थप्रणेता विद्यावाचस्पति मधुसूदन ओझा, सिद्धान्ततत्त्वविवेकादिग्रन्थ सम्पादक महामहोपाध्याय मुरलीधर झा, बहुज्जातक-सूर्यसिद्धान्तादिटीकार सीतराम झा, बृहत्सहितादिग्रन्थटीकाकार अच्युतानन्द झा, जातकक्रोडग्रन्थकारी कृष्णदत्त झा, टिप्पणीदिवरणकार बुद्धिनाथ झा,सूर्यसिद्धान्त टीकाकार कपिलेश्वरचौधरी, कुण्डलीदर्पणादिग्रन्थकार अनूप मिश्र एवं बीजगणितादिटीकाकार देवचन्द झा, आदि प्रमुख है। वर्तमान समय में भी उच्च कोटि के ग्रन्थकार, टीकाकार, सम्पादक, अध्यापक एवं चिन्तक ज्योतिर्विंद यहाँ है।

सभी प्रकार के शास्त्रीय एवं व्यवहारिक कार्यों के लिये शुभमुहूर्त का ज्ञान अपेक्षित होता है। शुभमुहूर्त की जानकारी ज्यौतिषशास्त्र की गणवानुसार निर्मित पञ्चाङ्ग से ही होती है। तदनुसार विवाहादि सकल शास्त्रीय एवं वास्तुप्रभृति व्यावहारिक शुभकार्य सम्पन्न किये जाते हैं। तीरभुक्ति क्षेत्र में प्राचीनकाल से ही पञ्चाङ्ग निर्माण की परम्परा है मुद्रण व्यवस्था से पूर्व हस्तलिखित पञ्चाङ्ग का प्रचलन था। तत्पश्चात् शनैः शनैःमुद्रित पञ्चाङ्ग का प्रचलन हुआ। मुद्रित पञ्चाङ्गकारों में गोवर्द्धन-टुमनी-बालकृष्ण-रूपनारायण-लाकनाथ-कण्टीर-महीधर-उमानाथ-उमाकान्त-झारिखण्डी-महेन्द्रनारायण-विद्यानाथ-जगदीश-अम्बिकानाथ-जगन्नाथ-जयनारायण-हरिनन्दन-वासुदेव-लक्ष्मीनारायण-लषणलाल-अभिराम-रमानन्द-पुलकित-यशस्पति-कपिलेश्वर-परमानन्द-बलदेब-ब्रजकिशोर-अयोध्यानाथ-लक्ष्मीकान्त आदि ज्योतिर्विंदों के नाम प्रमुख है।

सर्वमंगला पञ्चाङ्ग का प्रथम पुष्प लोक सेवा हेतु सादर प्रस्तुत है । जिसमें स्थानीय बेगूसराय का प्रतिहार षष्ठि प्रातःकालिक अर्धदान सूर्योदय काल विशेष रूप से निर्दिष्ट किया गया है । अन्य व्रतोपवासादि के साथ दैनिकचर्या मंत्रादि दुर्लभ किंच उपयोगी मंत्रों का लघु रूप परिशष्ट पृष्ठों पर अंकित हैं । सर्वान्ततः सुधी-साधक-सारस्वतः-दैवज्ञों, शास्त्र चिंतकों, तीर्थ पुरोहितों, पंडितों से सादर निवेदन है कि प्रथम प्रयास का प्रस्फुटित पुष्प इस पञ्चाङ्ग में टंकणजन्य त्रुटि अथवा विषयगत विभेद के संदर्भ में अपना स्पष्ट मंतव्य प्रदान करने की कृपा करेंगे । आपके द्वारा दी गयी सम्यक् सम्मति हमारे लिए उपहार के रूप में स्वीकार होगा । आपकी सम्मति ही हमारी धरोहर है ।

पञ्चाङ्गमस्तु जगतीतल पुण्यहेतोः, सिद्धाश्रमस्य महिमान्वित सर्वमंगला ।
गंगा तरंग मिथिला महिमान्विता या, कुम्भ प्रभाव जननी किल शाल्मली तटा ॥

जानकी नवमी — जय माँ — नवेदक :
१०:०५:२०२२ — घनश्याम झा

ॐ विशिष्ठपर्व सूची ॐ

पर्व	तिथि	मास	वार	पर्व	तिथि	मास	वार
मौनापञ्चमी	१८	जुलाई	सोम	मामाविसर्जनं	०७	नवम्बर	सोम
मधुश्रावणी व्रतं	३१	जुलाई	रवि	वीड पञ्चमी	१३	नवम्बर	रवि
नागपञ्चमी	०२	अगस्त	मंगल	पा.रविव्रतारंभ	२७	नवम्बर	रवि
रक्षाबन्धन	१२	अगस्त	शुक्र	विवाह पञ्चमी	२८	नवम्बर	सोम
स्वतन्त्रता दिवस	१५	अगस्त	सोम	गीता जयन्ती	०४	दिसम्बर	रवि
कृष्णाष्टमी व्रतं	१९	अगस्त	शुक्र	दशतारकारम्भः	२२	दिसम्बर	गुरू
कुशीमावश्या	२७	अगस्त	शनि	दशतारकान्तः	०१	जनवरी	रवि
हरितालिका व्रतं	३०	अगस्त	मंगल	मकर संक्रान्ति	१५	जनवरी	रवि
चौठचन्द्रव्रतं	३०	अगस्त	मंगल	नरक निवारणं	२०	जनवरी	शुक्र
इन्द्रपूजारम्भ	०७	सितम्बर	बुध	गणतंत्र दिवस	२६	जनवरी	गुरू
अनन्त १४ व्रतं	०९	सितम्बर	शुक्र	सरस्वती पूजा	२६	जनवरी	गुरू
अगस्त्यार्घदान	१०	सितम्बर	शनि	अचला सप्तमी	२८	जनवरी	शनि
पितृपक्षारम्भ	११	सितम्बर	रवि	शिवरात्रि व्रतं	१८	फरवरी	शनि
जिमूतवाहन व्रतं	१७	सितम्बर	शनि	सोमवती अमा.	२०	फरवरी	सोम
विश्वकर्मापूजा	१७	सितम्बर	शनि	होलिकादहन	०७	मार्च	मंगल
पितृपक्षान्त	२५	सितम्बर	रवि	कुलदेवता पूजन	०७	मार्च	मंगल
कलशस्थापन	२६	सितम्बर	सोम	होली भस्मधारणं	०८	मार्च	बुध
बेलनौती	०१	अक्टूबर	शनि	वा. नवरात्ररम्भ	२२	मार्च	बुध
निशापूजा	०२	अक्टूबर	रवि	वा. छठि व्रतं	२७	मार्च	सोम
गाँधी जयन्ती	०२	अक्टूब्र	रवि	रामनवमी	३०	मार्च	गुरू
महाष्टमी व्रतं	०३	अक्टूबर	सोम	वा.विजयादशमी	३१	मार्च	शुक्र
महानवमी व्रतं	०४	अक्टूबर	मंगल	सतुआईन	१४	अप्रैल	शुक्र
विजयादशमी	०५	अक्टूबर	बुध	जूड़शीतल	१५	अप्रैल	शनि
कोजागरा	०९	अक्टूबर	रवि	अक्षय तृतीया	२३	अप्रैल	रवि
धनतेरस	२२	अक्टूबर	शनि	जानकी नवमी	२९	अप्रैल	शनि
काली पूजा	२४	अक्टूबर	सोम	षा.रविव्रतान्त	०८	अप्रैल	रवि
सोमवती अमा.	२४	अक्टूबर	सोम	वटसावित्री व्रतं	१९	मई	शुक्र
दीपावलि	२४	अक्टूब्र	सोम	गंगा दशहारा	३०	मई	मंगल
भातृद्वितीया	२७	अक्टूबर	गुरू	निर्जला ११ व्रतं	३१	मई	बुध
छठि व्रतं	३०	अक्टूबर	रवि	जगन्नाथरथ यात्र	२०	जून	मंगल
अक्षय नवमी	०२	नवम्बर	बुध	हरिशयन ११व्रतं	२९	जून	गुरू
देवोत्थान ११	०४	नवम्बर	शुक्र	आषाढ़ीगुरू पू.	०३	जुलाई	सोम

ॐ पञ्चक (भदवा) आरम्भान्तकाल: ॐ / ॐ विशिष्ठव्रतं सूची ॐ

पञ्चकारम्भ:	पञ्चकान्त:	एकादशी कृष्णपक्षः	एकादशी शुक्लपक्षः	त्रयोदशी व्रतं कृष्णपक्षः	त्रयोदशी व्रतं शुक्लपक्षः	चतुर्दशी व्रतं कृष्णपक्षः	चतुर्दशी व्रतं शुक्लपक्षः	पूर्णिमा
१५ जुला. शुक्र रा.०९:०४	२० जुला. बुध सं.०६:०६							११ अग. गुरू
११ अग. गुरू रा.०३:५७	१६ अग. मंगल रा.०१:५३	२४ जुला रवि	०८ अग. सोम	२५ जुला. सोम	०९ अग. मंगल	२७ जुला. बुध	१० अग. बुध	०९ सित. शुक्र
०८ सित. गुरू दि.०१:२८	१३ सित. मंगल दि.०९:३७	२३ अग. मंगल	०६ सित. मंगल	२४ अग. बुध	०८ सित. गुरू	२५ अग. गुरू	०८ सित. गुरू	०९ अक्ट. रवि
०५ अक्टू. बुध दि.०९:३८	१० अक्टू. सोम सं.०५:२९	२१ सित. बुध	०६ अक्टू. गुरू	२३ सित. शुक्र	०७ अक्टू. शुक्र	२४ सित. शनि	०८ अक्टू. शनि	०७ नव. सोम
०१ नव. मंगल रा.०४:५१	०६ नव. रवि रा.०१:०८	२१ अक्टू. शुक्र	०४ नव. शुक्र	२२ अक्टू शनि	०५ नव. शनि	२३ अक्टू रवि	०६ नव. रवि	०७ दिस. बुध
२९ नव. मंगल रा.०१:५४	०४ दिस. रवि दि.०८:४८	२० नव. रवि	०४ दिस. रवि	२१ नव. सोम	०५ दिस. सोम	२२ नव. मंगल	०६ दिस. मंगल	०६ जन. शुक्र
२६ दिस. सोम रा.०९:५९	३१ दिस. शनि दि.०४:३४	१९ दिस. सोम	०२ जन. सोम	२१ दिस. बुध	०४ जन. बुध	२२ दिस. गुरू	०५ जन. गुरू	०५ फर. रवि
२२ जन. रवि रा.०५:०३	२७ जन. शुक्र रा.१२:२२	१८ जन. बुध	०१ फर. बुध	१९ जन. गुरू	०३ फर शुक्र	२० जन. शुक्र	०४ फर शनि	०६ मार्च सोम
१९ फर. रवि दि.०२:०७	२४ फर. शुक्र दि.०८:०८	१६ फर. गुरू	०३ मार्च शुक्र	१८ फर शनि	०४ मार्च शनि	१८ फर शनि	०५ मार्च रवि	०५ अप्रैल बुध
१८ मार्च शनि रा.१०:१२	२३ मार्च गुरू दि.०३:५७	१८ मार्च शनि	०१ अप्रैल शनि	१९ मार्च रवि	०३ अप्रैल सोम	२० मार्च सोम	०४ अप्रै. मंगल	०५ मई शुक्र
१५ अप्रैल शनि दि.०६:१८	१९ अप्रैल बुध रा.११:५४	१६ अप्रैल रवि	०१ मई सोम	१७ अप्रैल सोम	०३ मई बुध	१८ अप्रैल मंगल	०४ मई गुरू	०३ जून शनि
१२ मई शुक्र दि.०२:३१	१७ मई बुध दि.०७:५१	१५ मई सोम	३१ मई. बुध	१७ मई बुध	०१ जून. गुरू	१८ मई गुरू	०२ जून. शुक्र	०३ जुला. सोम
०८ जून गुरू रा.१०:४९	१३ जून मंगल दि.०३:५७	१४ जून. बुध	२९ जून गुरू	१५ जून गुरू	०१ जुला. शनि	१६ जून शुक्र	०२ जुला. रवि	

-: सन् २०२२-२३ ई. का मुहूर्त्तादि :-

मुण्डनः- नवम्बर.२०२२ ई.-२५,२८,३०। दिस.-५,९। जन.२०२३ ई.२३,२६,२७। फर-१,३,१०, १२,२२,२३,२४। मर्च-१,२,३,९,१०। अप्रैल-२४,२६,२७। मई-१,३,८,२२,२४, २९,३१। जून-१,२,८,२१,२८।

उपनयनः- जन. २६,३१। फर.-१,२२,२४। मार्च-१, २,३। मई-१,२२, २४,२९,३०,३१।

विवाहः- नव. २०२२ ई.-२०,२१,२४,२५,२७,२८, ३०। दिस-४,५,७,८,९,१४। जनवरी.२०२३ ई.-१८,१९,२२,२३,२५,२६,२७,३०। फरवरी:-१,६,८,१०,१५,१६,१७,२२,२४,२७ । मार्च-१,६,८,९,१३। मईः-१,३,७,११, १२,१७,२१,२२,२६,२९, ३१। जूनः-५,७, ८,९,१२,१४,१८,२२,२३,२५,२८।

गृहारम्भः- जुलाई-२०२२ ई.-१५। अगस्त-८,१०,११, १२,१३। दिस-३,५,७,८,९,१०,१२। फर. १,३,१०। मार्च-२,३,९,१०। मई-१,५,३१। जून-३,५,२८,२९। जुलाई-२।

गृहप्रवेशः- अग.२०२२ ई.-३,४,६,८,१०। नव.-२८,३०। दिस-३,५। जन.-२७, २८,३०। फर.-१,३। मार्च-१,२,३,४। मई-१,३,२४,२९,३१। जून.-१,२८ २९,३०। जुलाई- १।

॥ द्वादश ज्योतिर्लिङ्गानि ॥

सौराष्ट्रे सोमनाथं च
श्रीशैले मल्लिकार्जुनम् ॥
उज्जयिन्यां महाकालम्
ॐ कारममलेश्वरम् ॥१॥
परल्यां वैद्यनाथं च
डाकिन्यां भीमशंकरम् ॥
सेतुबंधे तु रामेशं
नागेशं दारूकावने ॥२॥
वाराणस्यां तु
विश्वेशं त्र्यंबकं गौतमीतटे ॥
हिमालये तु केदारम्
घुश्मेशं च शिवालये ॥३॥
एतानि ज्योतिर्लिङ्गानि
सायं प्रातः पठेन्नरः ॥
सप्तजन्मकृतं पापं
स्मरणेन विनश्यति ॥४॥

॥०॥ आवश्यक मन्त्र ॥०॥

चौठचन्द्रः- सिंहः प्रसेनमवधीत् सिंहो जाम्बवता हतः। सुकुमारक मा रोदीस्तव ह्येषः स्यमन्तकः ॥

प्रर्थनाः- दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसंभवम् । नमामि शशिनं भक्त्या शम्भोर्मुकुटभूषणम् ॥

अनन्तधारणः- अनन्तसंसारमहासमुद्रेमग्नं समभ्युद्धरवासुदेव।अनन्तरूपे विनियोजयस्व ह्यनन्तरूपाय नमोनमस्ते ॥

अगस्त्यार्घदानः- कुम्भयोनिसमुत्पन्न मुनीनां मुनिसत्तम।उदयन्ते लंकाद्वारे अर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥
शंख पुष्प फलं तोयं रत्नानि विविधानि च।उदयन्ते लंकाद्वारे अर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥
काशपुष्पप्रतीकाश वह्निमारूतसंभव ।उदयन्ते लंकाद्वारे अर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥

प्रार्थनाः- आतापी भक्षितो येन वातापी च महाबलः। समुद्रः शोषितो येन स मेऽगस्त्यः प्रसीदतु ॥

उल्काभ्रमणः- शस्त्राशस्त्रहतानां च भूतानां भूतदर्शयोः । उज्ज्वलज्योतिषा देहं निर्दहे व्योमवह्निना ॥
अग्निदग्धाश्च ये जीवा येऽप्यदग्धाः कुले मम।उज्ज्वलज्योतिषा दग्धास्ते यान्तु परमाङ्गतिम् ॥
यमलोकं परित्यज्य आगता ये महालये । उज्ज्वलज्योतिषा वर्त्मं प्रपश्यन्तो व्रजन्तु ते ॥

देवोत्थानः- ब्रह्मेन्द्ररूद्रैरभिवन्द्यमानो भवानृषिर्वन्दितवन्दनीयः।
प्राप्ता तवेयं किल कौमुदाख्या जागृष्व जागृष्व च लोकनाथ ॥
मेघा गता निर्मलपूर्णचन्द्र शारद्यपुष्पाणि मनोहराणि।
अहं ददानीति च पुण्यहेतोर्जागृष्व जागृष्व च लोकनाथ ॥
उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविन्द त्यज निद्रां जगत्पते।
त्वया चोत्थीयमानेन प्रोत्थितं भुवनत्रयम् ॥
उतिष्ठ कमलाकान्त लक्षम्यां सह जगतपते।
शेषं द्वादशी प्राप्तां तस्यां जागरणं कुरू ॥
सुप्ते त्वयि जगन्नाथः जायते सर्वं प्रलीयते।
त्वयि जाग्रनिदेवेशः विश्वमेतद तवदुतिष्ठति ॥

शरीरान्कालिकवैतरणी दानम्:- ॐकृष्णगव्यै नमः ३।ॐ ब्राह्मणाय नमः३।तत् ॐ उष्णे वर्षति शीते वा मारूते वाति वा भृशम्।दातारं त्रायते यस्मात्तस्माद्वैतरणी स्मृता।।ॐ यमद्वारे महाघोरे कृष्णां वैतरणी नदी। ता सन्तर्तन्ददाम्येतां कृष्णां च वैतरणींच गाम्।।इति पठित्वा कुशत्रयतिलजलान्यादाय-ओमद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुक शर्मणः यमद्वारस्थित वैतरणीनदी सुखसन्तरण काम इमां गां रूद्रदैवतां यथानामगोत्राय ब्राह्मणायाहं ददे।ततो ग्रहीता स्वस्तीति वदेत्।तत् कुशत्रयतिलजलान्यादाय-ओमद्य कृतैतत्कृष्णगवीदान प्रतिष्ठार्थमेतावद द्रव्यमूल्यक हिरण्यमग्निदैवतं यथा नामगोत्राय ब्राह्मणाय दक्षिणामहन्ददे।ततः स्वस्तीत्युक्त्वा ग्रहीता दक्षिणां स्वीकुर्यात्।गोरभावे एतावद् द्रव्यमूलक कृष्णगव्यै नमः इति पठित्वा।शेषं यथावत् ।मातृपक्षे गोत्राया मातुरमुकदेव्या इति पठित्वा।।

दाहसंस्कारविधिः- स्नातः शुचिवस्त्रादिधरः पूर्वाभिमुख अपविष्टः कुशहस्तः कर्त्ता नूतनमृद्भाण्ड जलं कृत्वा शवञ्च दक्षिणशिरसं कृत्वा- ॐ [illegible]दीनि च तीर्थानि ये च पुण्याः शिलोच्चयाः।कुरूक्षेत्रं च [illegible] यमुना च सरिद्वाराम् ।।कौशिकी चन्द्रभागाश्च सर्वपापप्रणाशिनी।भद्रावकाशा सरयुं गण्डकीं तमसा तथा।।धैनवञ्च [illegible] पिण्डारकं तथा। पृथिव्यां यानि तीर्थानि चत्वारः सागरास्तथा।।इत्यनेन तीर्थानि ध्यायन् जले आवाह्य तेन जलेन श[illegible] नूतनवस्त्रयज्ञोपवीतपुष्पमाल्यचदनादिभिरलंकृत्य दारूविरचितचितायां कुशोपरि पुरूषमधोमुखं स्त्रियश्चोत्तानं मुर्ध्वा मुत्तरशिरसं शाययेत्।ततोऽपसव्यं कृत्वा दक्षिणाभिमुखो वामपाणिनोल्मुकं गृहीत्वा-ॐ कृत्वा सुदुष्करं कर्म जानता वाप्यजानता।मृत्युकालवशं प्राप्तं नरं पञ्चत्वमागातम्।धर्माधर्मसमायुक्तं लोभमोहसमावृतम्। दहेयं सर्वगात्राणि दिव्यान् लोकान् स गच्छतु।इति मन्त्रद्वयं पठित्वा शवं त्रिः प्रदक्षिणीकृत्य शिरोदेशे ज्वलदुल्मुकं दद्यात्। ततस्तृणकाष्ठघृतादिकं चितायां निःक्षिप्य कपोतावशेषं दहेत्।ततः प्रादेशमात्रक-सप्तकाष्ठिकाभिः सह प्रदक्षिणसप्तकं विधाय कुठारेण उल्मुकोपरि प्रहारसप्तकं विधाय ॐ क्रव्यादयः नमस्तुभ्यम् इति पठित्वा एकैकां काष्ठिकां चितायां क्षिपेत्।ततः ॐअहरर्हन्यमानो गामश्व पुरूषं पशुम्।वैवस्वतो बालपुरस्सराः शवानुगमकर्त्तारः पादेन पादस्पर्शमकुर्वाणाः जलाशयं गत्वा स्नात्वा च ओमद्यामुकगोत्र अमुकप्रेत एष तिलतोयांजलिस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम तित्यनेन तिलांजलिं दद्यात।स्त्रिया पक्षे ओमद्यामुकगोत्रे अमुकप्रेत्रे इति पठेयुः।